हिन्दी मुहावरा कोश

Edition · 1991

मूल्य 150.00

प्रकाशक
हिन्दी बुक सेन्टर
4 5 बी, आसफ अली रोड
नयी दिल्ली– 110 002



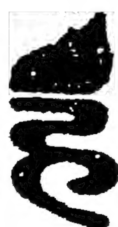
Tiwari, Bholanath
HINDI MUHAWRA KOSH
Rs. 150/-
Published by Hindi Book Centre
4/5 B, Asaf Ali Road, New Delhi 110002

Printed at .
Unique Color Carton
A-28/2 Mayapuri, Ph-I
New Delhi.

हिन्दी मुहावरा कोश

[Dictionary of Hindi Idioms]

डॉ० भोलानाथ तिवारी



हिन्दी बुक सेन्टर
4/5 बी० आसफ अली रोड नयी दिल्ली– 110 002

अपनी दिवगता बेटियों

दिव्या

और

सुषमा

के नाम

जो मेरे सघर्ष के दिनों में

मेरी फटेहाली का

शिकार हो गई।

—भोलानाथ तिवारी

'मुहावरा' और हिन्दी में उसकी परम्परा

'मुहावरा' शब्द

'मुहावरा' शब्द मूलत अरबी भाषा का है और इसकी धातु है 'हे-वाव-रे', जिसका अर्थ है 'लौटाना', इसी से शब्द बनता है 'हावर', जिसका अर्थ है 'बातचीत करना', 'प्रश्नोत्तर करना' या 'उत्तर का उत्तर देना'। 'हावर' का क्रियार्थक सज्ञा रूप अरबी भाषा मे है **'मुहावरत'** जिसका फारसी रूप मिलता है **'मुहावर.'**। 'मुहावरा' इसी का हिन्दी रूप है। उर्दू मे लिखते हैं **'मुहावरः'**, किन्तु हिन्दी की तरह ही कहते हैं **'मुहावरा'**।

सस्कृत भाषा मे मुहावरो का प्रयोग तो है, किन्तु उनके लिए अलग से कोई स्वीकृत नाम नही है। यो कुछ लोग इसके लिए **'वाग्रीति, 'वाग्धारा', 'वाग्वृत्ति', 'भाषा-संप्रदाय'** आदि का प्रयोग करते हैं, किन्तु ये कदाचित् नये बनाये हुये शब्द है, सस्कृत साहित्य मे इस अर्थ मे कम-से कम मुझे इनमे से किसी का भी प्रयोग नही मिला। सस्कृत काव्यशास्त्र की दृष्टि से सभी मुहावरे रूढा **लक्षणा** कहे जाते हैं, अर्थात् ये मूलत लक्षणा हैं, प्रयोग मे रूढ हो जाने के कारण इन्हे 'रूढा लक्षणा' के अतर्गत रखा जाता है। वस्तुत 'रूढा लक्षणा' रूढ हो जाने के कारण अभिधा के समीप पहुँच जाती है, इसीलिए रूढा लक्षणा को **अभिधा पुच्छभूता** कहा जाता है। काव्यशास्त्रियो की इस परम्परागत मान्यता से थोडा हटते हुए प्रस्तुत प्रसग मे मैं यह कहना चाहूँगा कि मुहावरे लक्षणा के अतर्गत आते हैं, किन्तु वे अपने जन्म से 'रूढा लक्षणा' नही होते। प्रारम्भ मे जब कोई मुहावरा नया-नया प्रचलित होता है या बनता है तो वह **'प्रयोजनवती लक्षणा'** के अतर्गत आता है, और जब बहुप्रयुक्त होकर वह अपने विशिष्ट अर्थ मे रूढ हो जाता है, वह 'रूढा लक्षणा' के अतर्गत आ जाता है। इस स्थिति मे आकर ही मुहावरे को **'अभिधा पुच्छभूता लक्षणा'** के अतर्गत माना जाना चाहिए।

मुहावरों का जन्म

सामान्य भाषा सामान्य प्रयोग करती है—वाचक शब्द का, वाच्यार्थ का। शब्द-शक्तियो की दृष्टि से कहना चाहे तो अभिधा शक्ति का। मुहावरो के जन्म का सबध इस सामान्य प्रयोग से नही है। जब वक्ता या लेखक अपने भावो की अपेक्षित अभिव्यक्ति मे इस सामान्य प्रयोग अथवा सामान्य भाषा को असमर्थ पाता है तो वह सामान्य प्रयोग की कारा को तोडकर विचलन करता है। नये मुहावरो का जन्म इसी विचलन से होता है। यह जन्म सामान्य बातचीत मे भी हो सकता है, काव्य-भाषा मे भी। मान लीजिए, कोई किसी से कहना चाहता है 'यह कैसी है तुम्हारी आदत ? जब देखो कहकर मुकर जाते हो', किन्तु उसे लगता है कि इस सामान्य भाषा मे वह चुभन नही है, वह चोट नही है, जो वह अपनी अभिव्यक्ति मे भरना चाहता है, वह तुरन्त अपनी कल्पना के सहारे सादृश्य की सहायता लेता है और बोल उठता है 'यह कैसी है तुम्हारी आदत ? जब देखो, थूक कर चाटने लगते हो।' इस प्रकार एक मुहावरा जन्म लेकर उसकी अभिव्यक्ति मे मर्मभेदी चुभन भर देता है।

मुहावरो के जन्म के आधार

मुहावरो का जन्म अनेक आधारो पर होता है, जिनमे से कुछ मुख्य निम्नाकित है—

(क) सादृश्य के आधार पर—सबसे अधिक मुहावरे सादृश्य पर आधारित होते हैं

थूक कर चाटना=ऐसा करना जैसे कोई थूककर चाट रहा हो, दिमाग सातवें आसमान पर होना=दिमाग का इतना ऊपर उठ जाना, जैसे वह सातवें आसमान पर हो; दही मे मूसल का होना=बीच में ऐसे आ जाना, जैसे दही मे मूसल (अनुपयुक्त) आ गया हो, बीच मे आकर मजा ऐसे किरकिरा कर देना, जैसे खाने वाले के सामने परसी सुस्वादु दही मे मूसल टाल कर कोई उसका मजा किरकिरा कर दे, दांत काटी रोटी होना–दोनो मे इस प्रकार पटना, जैसे वे इतने घनिष्ठ हो कि एक के द्वारा दांत से काटी रोटी को दूसरा बिना भेद-भाव, घृणा-नफरत के खा जाय, दांत कुरेदने को तिनका न होना=अपना सब कुछ इस प्रकार गँवा देना कि पास में जैसे दांत खोदने के लिए एक तिनका भी न बचा हो। ऐसे ही, गागर मे सागर भरना, अडा सेना अँधेरे घर का उजाला, अगाडी-पिछाडी लगाना, ढिढोरा पीटना आदि। कुछ मे तो यह सादृश्य बहुत स्पष्ट होता है (कैंची-सी जबान चलना, कुदन सा चमकना, सोने मे सुहागा होना, सोने मे सुगध होना), किन्तु सभी मे नही।

(ख) प्रतीको के आधार पर––कभी कभी कुछ शब्दो को प्रतीक मान कर उनके आधार पर मुहावरे बना लेते हैं। उदाहरण के लिए 'ढाई' शब्द का प्रतीक है, खास-तौर पर जहाँ हजारो की बात हो ढाई चावल की खिचडी पकाना, ढाई ईंट की मस्जिद बनाना, ढाई दिन की बादशाहत करना, ढाई माशे का आदमी, आदि।

(ग) विशेष परिस्थिति मे होने वाली मुद्रा के वर्णन के आधार पर––दांतो तले-उंगली दबना, दांत निपोरना, ओठ बिचकाना, सिर हिलाना, आँख मारना, आदि।

(घ) भौतिक स्थिति के वर्णन के आधार पर––जैसे अँतडिया कुलबुलाना। बहुत भूख लगने पर अँतडियाँ कुलबुलाने लगती हैं, अत अंतडियाँ कुलबुलाना' का प्रयोग बहुत भूख लगने के लिए होने लगा है। ऐसे ही बहुत भूख लगने पर ऐसे लगता है, जैसे पेट मे चूहे कूद रहे हो, अत 'पेट मे चूहे कूदना', 'अंतडियो मे आग लगना' भी इसी श्रेणी के मुहावरे हैं।

(ङ) व्यग्य मे उलटी बात के आधार पर––जैसे, अक्ल का अजीर्ण होना। अजीर्ण ज्यादा खाने से होता है, अत यह आधिक्य का सूचक है। यहाँ 'अक्ल का अजीर्ण' का अर्थ 'अक्ल का आधिक्य' न होकर व्यग्य मे उलटा, अर्थात् 'अक्ल का अभाव' है।

(च) ऐतिहासिक घटनाओ के आधार पर––चाम के दाम चलाना, एक लाख का सवा लाख होना, आदि।

(छ) कथाओ के आधार पर––टेढी खीर होना, बोझ की आखिरी लकडी होना।

(ज) असम्भव स्थिति के आधार पर––कभी-कभी असम्भव स्थिति को शब्द-बद्ध करके भी मुहावरे बनाये जाते हैं आसमान के तारे तोडना, जान हथेली पर रखना, छठी का दूध याद आना, जान होठो पर आना, आदि।

मुहावरा विशेषताए और परिभाषा

मुहावरो की विशेषताएं निम्नाकिन हैं––

(क) मुहावरा भाषा विशेष का होना है। ऐसा शायद ही कोई मुहावरा मिले, जो सभी भाषाओ की सामान्य रूप से सम्पत्ति हो।

(ख) मुहावरा वह अभिव्यक्तिक इकाई होती है, जिसमे प्राय एकाधिक शब्द होते हैं,

(अपवादत पहुँचा हुआ आदि) तथा जिसमे प्राय एक क्रिया का भाव अवश्य (अपवादतः 'दिल का बादशाह आदि') होता है।

(ग) मूहावरे मे प्राय कोशार्थ या मुख्यार्थ का बोध होता है तथा उसका प्रयोग लक्ष्यार्थ के लिए क्रिया जाता है, तथा लक्ष्यार्थ मे ही मुहावरा भाषा-विशेष मे रूढि हो जाता है।

(घ) मुहावरे मे शब्दो को प्राय बदला नही जा सकता। उदाहरणार्थ, 'पानी-पानी होना' को 'जल-जल होना' या 'आसमान से बातें करना' को 'गगन से बातें करना' नही कहा जा सकता।

(ङ) मुहावरे प्रयुक्त होने पर वाक्य के अभिन्न अग बन जाते हैं, लोकोक्ति की तरह वे अलग नही रहते।

(च) मुहावरो का ठीक अनुवाद प्राय एक भाषा से दूसरी भाषा मे करना कठिन होता है। उदाहरणार्थ, अग्रेजी to pay back in the same coin को हिन्दी मे उतारना कठिन है तो 'ईंट का जवाब पत्थर से देना' को अग्रेज़ी मे।

निष्कर्षत सक्षेप मे **मुहावरा भाषा-विशेष मे प्रचलित उस आभिव्यक्तिक इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ि लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।**

मुहावरो का वर्गीकरण

मुहावरो का वर्गीकरण कई आधारो पर किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, मुहावरा बनने के आधार के आधार पर (जैसे ऐतिहासिक घटना, कोई कथा, पौराणिक आख्यान आदि), प्रयोक्ता के आधार पर (स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे,—इस प्रकार का उर्दू मे एक स्वतत्र सग्रह ('मुहावराते निस्वाँ') प्रकाशित हो चुका है खिलाडियो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे, सेना मे प्रयुक्त मुहावरे, दलालो द्वारा प्रयुक्त मुहावरे आदि), स्रोत के आधार पर (जैसे सस्कृत से आये मुहावरे, फारसी से आये मुहावरे, अग्रेज़ी से आये मुहावरे आदि) तथा विषय के आधार पर (सामाजिक, स्वास्थ्य-विषयक, युद्ध-विषयक आदि) इत्यादि।

हिन्दी मुहावरो की परम्परा

जैसा कि स्वाभाविक है, हिन्दी मुहावरा की परम्परा सस्कृत तक जाती है। हमारे बहुत से मुहावरे सस्कृत से आये हैं तथा मध्य काल मे कुछ मुहावरे पश्तो, तुर्की और फारसी से आये हैं। आधुनिक काल मे अग्रेज़ी ने भी प्रभावस्वरूप हमे काफी मुहावरे दिये हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दी ने काफी-कुछ अपने मुहावरे भी विकसित किये हैं। इस प्रकार हिन्दी मुहावरो के ये पाँच-छ प्रमुख स्रोत हैं।

कुछ लोगो (डॉ० हरदेव बाहरी, पर्शियन इन्फ्लुएस ऑन हिन्दी, १९६०, इलाहाबाद, पृ० ५९) का विचार है कि सस्कृत मे मुहावरे बहुत कम थे, किन्तु वस्तुत बात ऐसी नही है। हर भाषा मे मुहावरो का प्रयोग होता है और सस्कृत भी अपवाद नहीं है। उदाहरणार्थ, मधुजिह्व (मधुरभाषी), तृणम्मन्ये (नाचीज़ समझना), हिरण्यवर्ण (निष्कपट), लोम्नि लोम्नि (रोम-रोम में), अन्नभिवमन्यते (सामान्य समझना), न इव (नही के बराबर), कुभीम् पर्यादिधाति (दूसरे की हँडिया पर आशा लगाना), द्यूनभूषति (दिनो की शोभा बढाना), पृष्णी अपि श्रृण (कमर तोडना), मृत्यु-मुखात्प्रमुच्यते (मौत के मुँह से छूटना), चक्षुर्गच्छति (दृष्टि जाना), ख मुष्टिनापि जिघृक्षन्ति (मुट्ठी मे आसमान बन्द करना), प्राणस्य प्राण (प्राणो के प्राण), गाढ प्रसुप्तः (गाढी नीद मे), पुष्पिताम् वाचम् (दिखाऊ बात) आदि। पालि प्राकृत, अपभ्रंश भाषाएँ भी मुहावरो से भरी-पूरी हैं· भणम्मुद्दिआये जीहाये (खुली जीभ से कहना), मुहेसुमुद्दा (मुँह पर मुहर), भक्कड-घुग्घिऊ (बन्दर-घुडकी), आदि। जैसा कि स्वाभाविक है, मुहावरो के प्रयोग की यह परम्परा सस्कृत से पालि-प्राकृत-अपभ्रंश होती हिन्दी मे आई है।

हिन्दी मे आदिकाल से ही मुहावरो का प्रयोग मिलने लगता है। गोरख, चदबरदाई, विद्यापति, मुल्ला दाऊद आदि हिन्दी के प्राचीनतम कवियो के कुछ उदाहरण हैं—

मन काहू कै न आवै हाथि—गोरख
अहकार तूटिवा निराकार फूटिवा—गोरख
तव सोवौ पांव पसारी—गोरख
थरहर धर ढिल्लीपुर कपिउ—चद
के हनि अभागील वैरिनि रे, भागलि मोर निन्द—विद्यापति
विन पानी सातू कस सानसि—मुल्ला दाउद
गउव सिह एक पथ रेंगावइ—मुल्ला दाउद
साध मरत हौं वीरन लोर दिखावहु मोहि—मु० दाऊद

इनमे विशेषत गोरखनाथ तथा मुल्ला दाऊद मे तो मुहावरे काफी हैं, क्योकि इन दोनो कवियो की भाषा जनभाषा है। चदवरदाई मे अपेक्षाकृत कम मुहावरे प्रयुक्त हुए हैं, जिसका कारण उनकी भाषा का जनभाषा से दूर होना है। नरपति नाल्ह की भाषा भी इसी श्रेणी की है, किन्तु उनमे भी मुहावरो का एकान्त अभाव नही है—

स्वामी घी विणाजियउ नइ जीमियउ तेल।
दुहुँ रे काया मिलउ एक पराण।

कवीर जनकवि हैं। उन्होंने स्वय कहा है—

मोहि आग्यां दई दयाल दया करि काहू कू समझाई।
कहि कवीर मै कहि-कहि हार्‌यो अव मोहि दोस न लाई।।

इसी कारण उनकी भाषा जनभाषा के वहुत निकट है, जिसके परिणामस्वरूप उनमे मुहावरे भी पर्याप्त हैं। कवीर में अग-सम्वन्धी मुहावरे (अग लगना, अग मोड़ना, कलेजे मे छेद करना, दिल वांधना, दिल खोजना, कठ गहना, लम्बा पैर पसारना, सिर सौंपना, गला काटना, शीश उतारना, हाथ मलना, हृदय मे वसना आँखें प्यासी होना, कुछ हाथ न आना, आदि) वहुत अधिक हैं। परम्परा की दृष्टि से कवीर ने क्लैसिकल मुहावरो का प्रयोग किया तो है, किन्तु कम। जैसे—

(क) कहै कवीर राजा राम राम भजन सौं नवनिधि होइगी चेरी।
(ख) कहै कवीर सोई जन तेरा, खीर नीर का करैनिवेरा।
(ग) पांच कुटुम्वी महा हरामी अम्रित मैं विख घोलै।

इस प्रकार के मुहावरे ही अधिक हैं। उदाहरण के लिए, 'नीर-क्षीर (की तरह) मिलना' क्लैसिकल मुहावरा है, जिसके स्थान पर 'आटे-नमक (की तरह) मिलना' सामान्य मुहावरा है। कवीर कहते हैं—

कवीर गुर गरवा मिला मिलि गया आटैं लौन।

कवीर मे निश्चित सख्या के, अनिश्चित सख्या के लिए प्रयोग वाले मुहावरे भी हैं—

(क) कवीर नौवति आपनी दिन दस लेहु वजाइ।
(ख) दिवस चारि का पेखना अति खेह की खेह।

कवीर द्वारा प्रयुक्त कुछ वहुत व्यजक मुहावरे इस प्रकार हैं—

(क) कोई काहू को नहीं, सब देखी ठोंकि वजाइ।
(ख) हरिजन हरि सौं ऐसैं मिलिया जस सोनैं सग सुहागा।
(ग) निखावत जो होइगा पीवैगा झख मारि।

(घ) सील धरम जप भगति न कीन्हीं हौं अभिमान टेढ़ पगरी।
(ङ) काम क्रोध तिसनां के मारे बूडि मुएहु बिनु पानी।
(च) साधु सगति हरि भगति बिनु कछू न आवै हाथ।
(छ) बातन ही असमानु गिरावहि।

जायसी मे भी सर्वाधिक मुहावरे अग-सबधी ही हैं। उदाहरण के लिए, शरीर मिट्टी करना काया पीली होना, बाल बाँका होना, रोवाँ पसीजना, सिर नवाना, सिर धुनना, सिर देकर पैर धरना, सिर देना, सीस फिरना, मुँह मे कालिख लगना, पलक बिछाना, दृष्टि बिछाना, जीभ उघेलना, जीभ खोलना, हाथ मरोरना, हाथ मे जी लेना, पीठ देना, मन मारना, हृदय फटना आदि। कुछ मुहावरे सोना (बारह बानी होना, सोने मे सुहागा होना, कसौटी पर कसना), रग (रग न होना, सफेद-पीला होना), सख्या (दस-पाँच, चार दिन), जानवर (शेर के मुँह मे हाथ डालना, गाय-सिंह का एक घाट पानी पीना) आदि से सम्बद्ध भी हैं।

जायसी के कुछ प्रयोग देखिये—

(क) दूध पानि सो करइ निरारा।
(ख) पदुमावति हँसि दीन्ह झरोखा।
(ग) कनक सुगध दुआदसबानी।
(घ) उलटि बहा गगा कर पानी।
(ङ) को अस हाथ सिंह मुख घाला।
(च) लंका छाडि पलका परा।
(छ) तपि कै पाव उभरि कर फूला।
(ज) परै पहार न बाँके बारू।
(झ) लाग बुहूँ जस लोन।
(ञ) तस ये दुवौ जीव पर खेलहिं।

सूरदास उन हिन्दी कवियो मे आते हैं, जिन्होने मुहावरो का सर्वाधिक प्रयोग किया है। इनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरे डेढ हज़ार के लगभग होगे, जिनमे अग-विषयक कुछ प्रमुख मुहावरे ये हैं---नख-शिख रोना, फूले न समाना, सिर धुनना, मूड उघाडना, मूड चढाना, शीश पर नाचना, बाल या केस न खसना, भौ मरोडना, दृष्टि लगना, आँखो मे धूल देना, आँख जलना, नैन जुडाना, गाल बजाना, मूँछो पर ताव दिखाना, कान काटना, कान करना, मुँह न लगाना, मुँह सँभाल कर बोलना, आँसुओ से मुंह धोना, दांत चबाना, दांत पीसना, अँगुली दाँतो मे देना, रसना तालू से न लगना, रसना हारना, कर मोडना, कर मीजना, हाथ फैलाना, बाँह पसार कर कहना, हाथ बिकना, हाथ आना, हिया काँपना, हृदय जलना, छाती जलना, उदर भरना, पीठ दिखाना, पीठ देना, बुद्धी का मोटा, कच्ची मति, दो नाव पर पाँव धरना, फूंक-फूंक पग धरना, प्राण पर खेलना, प्राण अधर तक आना, मन चुराना, मन मूसना, मन मारना, चित्त बिकना, चित्त में बैठना, कच्चा मन आदि। सूर के मुहावरो मे विविधता बहुत है। अग के अतिरिक्त पशु, धातु, रग, सख्या, वस्त्र आदि विषयक उनके मुहावरे प्रमुख है। कुछ प्रयोग इस प्रकार हैं—

(१) सूरदास के प्रभु सो करियै होइ न कान कटाई।
(२) कबहुँक फूलि सभा मे बैठ्यो मूँछनि ताव दिखायो।
(३) व्याकुल होइ हरे ज्यों सरबस आँखिन धूर दई।
(४) तब नख सिख तें रोयो।
(५) तुरत मन सुख मानि लीन्हो नारि तेहि रँग हरी।
(६) जरे उपर लोन लावहि को है उनते बावरे।
(७) खैंचि कहत हौं लीको।
(८) सूर काढि डार्यो ब्रज तें ज्यो दूध माँझ ते माखी।
(९) दाई आगे पेट दुरावति वाकी बुद्धि आज मैं जानी।

(१०) जरो पर चूनो ।
(११) कौन पै होत पीरी-कारी ।
(१२) पाँच की सात लगायो ।
(१३) सुरपति निज बैर सँभार्यो ।
(१४) हम तौ रीझि लटू भई लालन ।
(१५) अपनौ पट देखि पसारहि लात ।

मीरा के कुल लगभग दो सौ ही छन्द ऐसे हैं, जिन्हे उनका निश्चित रूप से कहा जा सकता है, किन्तु इतने कम छन्दो मे भी काफी मुहावरे मिलते हैं। ये मुहावरे अग, रग, सख्या, वाजा, दीपक आदि विषयक हैं। अग-विपयक प्रमुख मुहाव , फूले अग न समाना, सीस चढाना, वदन जोहन, मुख खोलना, नयनो मे समाना, पलक न लगना, आँख लगाना, हाथ गहना, हाथ मीजना, छाती भरना, कलेजा टुकडे-टुकडे होना, चित्त लगना, हृदय फटना, हृदय मे बसना तथा पांव उडना आदि है। कुछ प्रयोग देखिए—

(१) देखाँ माई हरि मण काठ किया ।
(२) णेणा चचल अटकणा माण्या परहथ गयां विकाय ।
(३) नेण बिछार्स्यूं हिवडो डार्स्यूं ।
(४) अजूं मुनी मुख खोल ।
(५) हम बालू की भीत ।
(६) दाध्या ऊपर लूण लगायां ।
(७) हो गए स्याम दूइज के चन्दा ।

हिन्दी मे मुहावरो के प्रयोग की दृष्टि से तुलसी का विशेष स्थान है। उनके द्वारा प्रयुक्त मुहावरो की सख्या तो काफी है ही—विशेपत मानस तथा कवितावली मे—साथ ही उनके मुहावरो मे बहुत विविधता है तथा वे बहुत ही सुन्दर ढग से प्रयुक्त हुए हैं। अन्य हिन्दी कवियो की तरह तुलसी मे भी अग-विपयक मुहावरे सर्वाधिक हैं—तन वारना, सिर नवाना, मूड मे वार न होना, माथा धुनना, भ्रकुटि चढना, लोचन निहाल करना, आँख दिखाना, आँख मे रखने योग्य होना, कान करना, दूसरी जीभ करके कहना, गिरा से न गहा जाना, दांत टेना, गाल करना, बडे गाल होना, गाल बजाना, हाथ बिकना, विना हाथ के होना, हाथ मलना, हाथ लगना, चना चवाकर हाथ चाटना, वाँहो मे बसना, मुट्ठी भार देना, उँगली लगाना, उर मे धरना, हृदय हारना, हृदय तपना, हिय हेरना, हि[illegible] मे वसना [illegible], [illegible], [illegible] भांजना, पांव पडना, गोड पसार कर सोना, मन से उठना, मन रखना, मन देना, हाड गडना तथा प्राण न्योछावर करना आदि। तुलसी मे क्लैसिकल मुहावरे भी हैं—

(१) चार पदारथ करतल ताके। प्रिय पितु मातु प्राण सम जाके।
(२) वानि जानि सुधा तजि पियनि जहर की।

तुलसी मे ऐसे भी मुहावरे काफी है, जो प्रायः अन्य कवियो मे नही मिलते। उदाहरणार्थ—

(१) तुलसी को बाजी राखी राम हीं के नाम न तु
भेंट पितरन को न मूडहू मे बात है।
(२) आपने चना चबाइ हाथ चाटियतु है।
(३) मीजो गुरु पीठ अपनाइ गहि बाँह बोलि,
(४) देखे नर नारि कहैं साग खाइ जाए माइ,
(५) मसक की पाँसुरी पयोधि पाटियतु है।

कुछ अन्य सुन्दर प्रयोग देखिए—

(१) चतुरग चमू पल मे दलिकै रन राढ के हाड गढ़े।
(२) गालु करब केहि कर बलु पाई।
(३) फूटि-फूटि निकसत लोन रामराय को।
(४) चोट बिनु मोट पाई भयो न निहाल को?
(५) बापुरो विभीषण घरौंधा हुतो बालु को।
(६) नृपगति, अगह गिरा न जाति गही है।
(७) अब कछु कहब जीभ कर दूजी।

रहीम, गग, नन्ददास तथा रसखान आदि मे अपेक्षाकृत मुहावरे कम है, यद्यपि प्रयोग प्राय पर्याप्त सुन्दर है—

ऊजर होन लगे अँग नीके। कचन भूषन ह्वै चले फीके—नन्ददास
किधौं नदनदन मद मुसकि तुम्हरे मन मूसे—नन्ददास
डाँडी मारत बिरह की चित चिता घटि जात—रहीम
ताहि अहीर की छोकरियाँ छछिया भरि छाछ पर नाच नचावैं—रसखान
एते इलाज बिकाज करौ रसखानि को काहे को जारे पै जारौ—रसखान
देखत मोल भयो अँखियान को—रसखान
कोयल की कुहक करेजा जारियत—गग
मोहू को चातुरता बहरावति मौसिन सौं ननसार की बातैं—गग

कठिन काव्य के प्रेत केशव मे मुहावरो का बहुत अधिक न मिलना सहज ही है। छन्दो के प्रयोग तथा भाषा की असहज सस्कृतनिष्ठता की ओर ध्यानस्थ कवि सहज अभिव्यजक मुहावरो की खोज मे भला कहाँ जाता? फिर भी कुछ प्रयोग तो मिल ही जाते हैं—

(१) काहे को काहू को कीजै परेखो अब जीजें री जीव की नाक दै चुनो।
(२) ता लगि मेद महीपन को घृत घोरि दियो न सिरातो हियोरे।
(३) जानत हौ बीस बिसै राम भेस काम है।

रीतिकालीन कवियो मे सेनापति, बिहारी, भूषण, पद्माकर, देव तथा घनानद के नाम मुहावरो की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। सेनापति के कुछ मुहावरे देखिए—

(१) कहाँ एती चतुराई पढ़ी आप जदुराई,
आँगुरी पकरि पहुँचा कौं पकरत हौ।
(२) लोचन जुगल मेरे ता दिन सफल ह्वै हैं।
(३) रही बाँह-छाँह राजा राम की, जनम भारि।

बिहारी मे मुहावरो के बडे सुन्दर प्रयोग मिलते है—

दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर चित प्रीत।
परति गाँठ दुरजन हिये, दई नई यह रीत।

यद्यपि उनकी सख्या अधिक नही है। इस कमी का बहुत कुछ कारण है, कदाचित् उनके द्वारा प्रयुक्त दोहे जैसा लघु छन्द एव मुक्तक काव्य-विधा, सवैया, कवित्त, पद जैसे बडे छन्द तथा प्रबधकाव्य निश्चय ही मुहावरो के प्रयोग के लिए अधिक उपयुक्त है। यों बिहारी ने [illegible] भी है। विहारी के कुछ अन्य मुहावरे इस प्रकार हैं—

(१) आँखिन आँखि लगी रहै,
(२) आँग न आँग समात।

(३) भरे भौन मैं करत हैं नैनन्नु हीं सो बात ।
(४) हियो पसीजि-पसीजि ।

भूपण मे अपेक्षाकृत अधिक मुहावरे है। विदेशी शब्द हिन्दी मे आदिकाल से ही आने लगे थे और मुहावरो मे भी उनका प्रयोग होने लगा था, किन्तु भूपण मे ही प्रथम बार इस प्रकार के मुहावरे अधिक मिलते हैं, जिनमे अरवी-फारसी शब्द है। उदाहरणार्थ, बे-आब होना, दिल-दरियाव, गुमान झाडना, खाक करना, गर्द मे मिलाना, छाती बीच दाग देना, कमाई होना, रोशनी चढना, खता खाना, इज्जत बचाना आदि। जैसा कि स्वाभाविक ही है कि बिहारी मे यदि शृ गारोचित मुहावरे अधिक है तो भूषण मे ऐसे मुहावरे काफी हैं, जिन्हे युद्ध या वीर रस से विशेषग रूप से सम्बद्ध माना जा सकता है। कुछ इस प्रकार के हैं और कुछ अन्य हैं—

(१) कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को।
(२) महलन मे मचाय महाभारत के भार को।
(३) अरि मुख घाव दै दै कूदि परं कोट पै।

भूषण के दो अन्य प्रयोग हैं—

(१) खाए मलिच्छन के छोकरा, पै तऊ डोकरा को डकार न आई।
(२) मति नाह दिवाल की राहन धाओ।

पद्माकर मे भी मुहावरे काफी हैं, यद्यपि प्रयोग की दृष्टि से उनमे कोई बहुत उल्लेख्य विशेषता नही हैं। कुछ उदाहरण हैं—

(१) कैसी भई तुम्हे गग की गैल मे गीत मँदारन के लगे गावन।
(२) एक दिना नहि एक दिना कयहूँ फिरि वे दिन फेर फिरंगे।
(३) कीन्हे गरद गुनाह सब।

रीतिकालीन कवियो मे सर्वाधिक मुहावरे देव मे है। देव के मुहावरो की सबसे वडी विशेपता यह है कि वे भाषा के प्रवाह मे घुलमिल गये है। रीतिकालीन पच्चीकार कवि बिहारी इस क्षेत्र मे देव से बहुत पीछे है। उनमे जहां मुहावरो का प्रयोग प्राय चमत्कार के लिए है, वहां देव मे वह भाव-अभिव्यक्ति को सहज रूप से सशक्त बनाने के लिए है, कुछ उदाहरण हैं—

(१) बेगि ही बूडि गई पँखियाँ अँखियाँ मधु की मखियाँ भई मे॰ .
(२) खेलिबोऊ हँसिबोऊ कहा सुख सो बसिबो बिसे बीस बिस॰.र।
(३) कोमल कूकि कै क्वैलिया कूर करेजनि की किरचै करती क्यो।
(४) लाज ज्यों बाज चिरी झपटी, कपटी कुल के उर अतर कैंची।

यो कुछ प्रयोग चमत्कार के उद्देश्य से भी किये ज्ञात होते हैं—

पन्नग की मनि कीन्हे तुम्हें, तुम पन्नग की किचुली कियो चाहत।

मुहावरो के क्षेत्र मे घनानद भी देव के समकक्ष हैं। एक प्रमुख अतर यह है कि घनानद में वे मुहावरे ही अधिक हैं जो बहुत प्रचलित हैं, जब कि देव मे नष्ट या अल्प प्रचलित प्रयोग भी काफी हैं। रीतिकालीन कवियो मे ये दोनो कवि मुहावरों की दृष्टि से सर्वोपरि हैं। घनानद के कुछ प्रयोग हैं—

(१) बदरा बरसै रितु मै घिरिकै नितही अँखियाँ उघरी बरसै।
(२) निरधार अधार दै धार-मझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
(३) वहै लडकौली बानि आनि उर मैं अरति है।
(४) अब जिय जारत कहौ धौं कौन न्याय है।

इन कवियो के अतिरिक्त अनेक अन्य रीतिकालीन कवियो ने भी न्यूनाधिक रूप मे मुहावरो का सुन्दर प्रयोग किया है। उदाहरण के लिए, अवधी-भोजपुरी का एक मुहावरा है, 'सातू बान्ह के पीछे पडब'। रीतिकालीन कवि बरकतुल्ला प्रेमी विरहिणी की भावनाओ को स्वर देते हुए कहते हैं—

देखो, जेठ निलज्ज को परो है सतुवै बांध।

पिछली सदी के आधुनिककालीन साहित्यकारो मे प्राय सभी, ने अपने गद्य एव पद्य को काफी मुहावरेदार रखा है। कवियो मे सर्वाधिक मुहावरे भारतेन्दु मे हैं। सख्या पर आधारित कुछ मुहावरे हैं—

(१) 'हरीचद' वे तो बावन रहे तुम छप्पन निकसे गिरधारी।
(२) तीन बुलाए तेरह आवै, निज-निज बिपदा रोइ सुनावै।
(३) कबहू याके निकट न आवत लाख कहो न बनाई।
(४) यह दिन चार बसेरा है।

कुछ अन्य सुन्दर प्रयोग देखिए—

(१) सिथिल भई हाथ यह काया है, जीवन ओठ पर आया।
(२) जानत भए अजान कहो क्यो रहे तेल दै कान।
(३) सब गुरु जन को बुरा बतावै, अपनी खिचड़ी अलग पकावै।

इस सदी के साहित्यकारो मे मुहावरो का सर्वाधिक प्रयोग हरिऔध तथा प्रेमचन्द मे मिलता है। इस दृष्टि से हरिऔध जी का 'बोलचाल' नामक ग्रथ उल्लेखनीय है। इसमे कोई सन्देह नही कि इस ग्रथ मे मुहावरो की सख्या बहुत अधिक है, किन्तु इसकी सबसे बडी कमजोरी यह है कि मुहावरो की गिनती भर है, उनका प्रयोग प्रायः बहुत थोडा है। इसी कारण बोलचाल मे मुहावरो के शरीर ही हैं, उनकी आत्मा नही। उदाहरण के लिए—

आंख ने धूल आंख मे झोकी, कर गई आंख-आंख साथ ठगी।
क्यो नहीं आंख खुल सकी खोले, क्यो लगे आंख जबकि आंख लगी।

अथवा

नाक जब है सिकोडने हित सुन, किस तरह नाक को बचावेंगे।
नाक पर बैठने न दे मक्खी नक-कटे नाक ही कटावेंगे।

अथवा

आंख यों ही बन्द मुंह भी बन्द है, मुंह उठाकर कौन मुंह ताका नहीं।
सिल गया मुंह आज दिन भी है सिला, टूट मुंह का तो सका टांका नहीं।

प्रेमचद न केवल आधुनिक हिन्दी साहित्य मे, अपितु पूरे हिन्दी (और हिन्दी ही क्यो, उर्दू भी) साहित्य मे मुहावरो के सम्राट कहलाने के अधिकारी हैं। उन्होने मुहावरो का सर्वाधिक प्रयोग तो किया ही है, साथ ही इतना सफल प्रयोग किया है कि कम साहित्यकार उनके सामने टिक सकते हैं। प्रेमचन्द मे प्रयुक्त मुहावरो की सख्या लगभग तीन हजार है। प्रेमचन्द के मुहावरो की सूची देने की यहाँ आवश्यकता नही। इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि आधुनिक हिन्दी के बहुप्रचलित एव बहुव्यजक प्राय सभी मुहावरे उनमे किसी न किसी रूप मे मिल जाते है।

मुहावरो के काफी प्रयोग श्री मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओ मे भी हैं, देखिए—

(१) लिखी कबूलन हुई निशानी कटला बैठे हाथ।
(२) त्रैलोक्य को अँगुलियो पर हूँ नचाती।

(३) कै वार कहूँ सिर हाथ न मेरा खा तू।
(४) अव भी वर्जे चैन की वशी उस माई के लाल की।

किन्तु वहुत अच्छे प्रयोग कम ही हैं। वस्तुतः यह एक अजीव वात है कि उर्दू भाषा के जानकार हिन्दी साहित्यिकों मे ही मुहावरो का सफल एव सुन्दर प्रयोग विशेष रूप से मिलता है। इसका कारण यह कि मुहावरो का जितना ध्यान प्राचीन उर्दू कवियो ने रक्खा है, हिन्दी कवियो ने नही। इसके पीछे दरवारी वातावरण, फारसी से प्रत्यक्ष सम्पर्क (फारसी मुहाव रो से भरी-पूरी भाषा है, यद्यपि सस्कृत भी मुहावरो मे पीछे नही है, किन्तु हमारे प्राचीन कवियो मे कम का ही उससे सर्वदा सीधा सम्पर्क रहा, जव कि फारसी के राजाश्रय के कारण प्राय शायरो को उससे सीधा सम्पर्क रखना पडा), काव्य-गुरु की अनिवार्यता और इसके कारण भाषा मे परिमार्जन, मुशायरे का प्रचलन (श्रोता को प्रभावित करने के उद्देश्य से मुहावरो का चमत्कार लाने या अधिक मार्मिक अभिव्यक्ति के प्रयास के कारण) आदि अनेक वाते हैं।

आधुनिक कालीन छायावादी काव्य मे मुहावरो का प्रयोग वहुत कम हुआ है। प्रगतिवादी काव्य इस दिशा मे कुछ आगे है। मुक्तक की तुलना मे प्रवध मे मुहावरे अधिक आये है। गद्य मे उपन्यास-कहानी एव रेखाचित्र मे मुहावरो का प्रयोग सर्वाधिक हुआ है, तथा आलोचना (सैद्धातिक विशेष रूप से, यो कुछ अपवादो को छोडकर व्यावहारिक भी) एव गद्य-काव्य मे सवसे कम। नाटक वीच मे आता है।

मुहावरो के सम्वन्ध मे आधुनिक हिन्दी कवियो मे एक वहुत गडवडी यह मिलती है कि वे शव्दो का पर्याय रख देते हैं। उदाहरण के लिए, 'हाथ पसारना के स्थान पर कामायनी मे 'मत कर पसार निज पैरो चल' है। वस्तुत 'हाथ पसार' की अभिव्यजना 'कर पसार' से नहीं होती। मैथिलीशरण गुप्त मे भी यह प्रवृत्ति मिलती है, 'दांत खट्टे करना' का प्रयोग है—

करते थे रिपु के अम्ल दंत।

इसी प्रकार 'उँगली पकडकर पहुँचा पकडना' को उन्होने लिखा है—

कहते हैं इसको ही अंगुली पकड प्रकोष्ठ पकड लेना।

हिन्दी मे वहुत से मुहावरे तो सस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्र श से परम्परागत रूप से आये हैं, किन्तु कुछ पश्तो, तुर्की फारसी तथा अग्रेजी से भी आये हैं। इस प्रकार के कुछ आगत मुहावरे नीचे दिये जा रहे हैं—

पश्तो—टस-से मस न होना, पानी पर लाठी मारना, तहस-नहस करना, दम-दिलासा देना, हाडे खाना (प्रार्थना करना)।

तुर्की—पांचो उँगली घी मे होना, डडे खाना, आँख लडना, वाल खिचडी होना।

फारसी—दांतो-तले उँगली दवाना (अगुश्त व दन्दाँ), उँगली उठाना (अगुश्त निहादन), अक्ल गुम होना (अक्ल गुम शुदन), कटिवद्ध होना, कमर कसना, कमर वाँधना (कमर वस्तन), रास्ते पर आँखें विछाना (चश्म व राह दाश्तन), खून करना (खून कर्दन) सिर आँखो पर (चश्म वर सर), पानी-पानी होना (आव शुदन), मुँह मे पानी आना (आव दर दहान आमदन), कमर सीधी करना (कमर सीख कर्दन), वाज आना (वाज आमदन), आँखें चार या दो-चार होना (चश्म चहार या दो-चहार शुदन), आँख दिखाना (चश्म नमूदन), तारे गिनना (अरतर शुमुर्दन), हाथ से ज ना (अज दस्त रफ्तन), जान हथेली पर रखना (जान वर कफ निहादन), आँख मारना (चश्म जदन), जान की वाजी लगाना (वाजि-ए-जान करदन), दांत दिखाना (दन्दान नमूदन), जवान-दराजी करना (जवान दराज़ करदन), हाथ झाडना (दस्त अफशान्दन), आग वरसना (आतिश वारीदन), हाथ आना (दस्त आवुर्दन), जवान पर लाना (वर ज़वान आवुर्दन), पानी जाना (आव रफ्तन), जान से हाथ धोना (दस्त अज़ जान शुस्तन), जवान देना (जवान

दादन), सर करना (सर करदन), हाथ पर हाथ धरे बैठना (दस्त बर दस्त निशस्तन), तेवर बदलना (तेवर तब्दील करदन), हाथ मलना (दस्त गजीदन), आस्तीन चढाना (आस्तीन बर चीदन), दांत खट्टे करना (ददाँ तुर्श करदन), हाथ खींचना (दस्त कशीदन), हाथ-पैर मारना (दस्तवपा ज़दन), आसमान मे सुराख करना (आसमान रा सुराख़ करदन), जबान खोलना (जबान कुशादन), दिल पर भार होना (बल दिल बार निहादन), दिल देना (दिल दादन), गला फाडना (गरदन खारीदन), प्राण देना, जान देना (जान दादन), पीठ दिखाना (पुश्त नमूदन), सिर देना (सर दादन), सिर खुजलाना (सर खारीदन), मगज खाना (मग़ज़ खुरदन), मुह चढ़ाना (रू कशीदन), सिर मारना (सर जदन), जामे से बाहर होना (अज़ जाम-बैरू आमदन), हवा होना (बाद शुदन), शपथ खाना, क़सम खाना (क़सम खुरदन), बाग़-बाग़ होना (बाग़-बाग़ शुदन), नशा चढना (नशा बलद शुदन), आस्तीन का सांप (मारे आस्तीन), चिराग़ गुल करना (चिराग गुल करदन), धोखा देना (फरेब दादन), राह देना (राह दादन), सब्जबाग़ देखना (सब्ज बाग़ दीदन), रग लाना (रग आवुर्दन), तग आना (तग आमदन), गम होना (गर्म शुदन), धोखा खाना (फरेब खुर्दन), आपे बाहर होना (अज खुद दर रफ्तन), बिना सिर-पैर की (बे सर-ओ-पा), जमीन आसमान एक करना (जमीन ओ आसमान यक करदन), टट्टी की ओट शिकार करना (दर पर्दा शिकार करदन), दिल का बुखार निकालना (बुखार-ए-दिल आवुर्दन), कान मे रूई डालना (पुम्बा दर गोश निहादन), अगूर खट्टे होना (अगूर तुर्श शुदन), नक्कारखाने मे तूती की आवाज होना (आवाजे तूती नक्कारखानेह)।

अग्रेजी——प्रकाश डालना (Throw light), कलेजा मुंह को आना (Have one's heart in one's mouth), आँखो मे धूल झोकना (Throw dust into one's eyes), दो रायें न होना (निश्चित होना) जैसे——(There can't be two opinions——इस सम्बन्ध मे दो रायें नहीं हो सकतीं)। रंगे हाथो (Red handed), रिकार्ड तोडना (Break the record), खून का प्यासा होना (To get blood thirsty), लाल फीता (Red tape), पीली पत्रकारिता (Yellow journalism), चोर बाज़ार (Black market), कीचड़ उछालना (To throw mud), सफेद झूठ (White lie), सफेद हाथी (White elephant), दायां हाथ (Right hand), कठिन जिंदगी (hard life), विहगम दृष्टि (Birds eye view), बडे पैमाने पर (On a large scale), कखग जानना (Know a b c), आग मे ईधन डालना (To add fuel to flame), हवाई क़िले बनाना (Build castles in the air), स्वर्ण अवसर (Golden opportunity), गहरा सम्बन्ध (Deep relation), घडियाली आंसू, मगरमच्छ के आंसू (Crocodile's tears), मोटी बुद्धिवाला (Fat brained, fat headed), भावनाओ को ठेस पहुँचाना (To hurt one's feelings), पद-चिह्नो पर चलना (To follow the footprints), किस्मत आजमाना (Try one's fortune), मील का पत्थर (Milestone), बाल-बाल बचना (Hair breath's escape), हाथ बनाना (Make hands), आँख खोलना (To open one's eyes), आँख खोलने वाला (eye opener), प्रकाश मे आना (Come to light), अक्षरशः अनुवाद (literal translation), सकीर्ण हृदय (Narrow hearted), खुला प्रश्न (open question), इशारे पर नाचना (Dance to one's tune), अँधेरे मे होना (To be in the dark about something), शीत युद्ध (Cold war), आधे दिल से (Halfheartedly), पलक झपकते ही, पलक मारते ही (In the twinkling of an eye), प्रश्न नहीं उठता (Question does not arise), आग से खेलना (Play with fire), जीवन के उतार-चढाव (Ups and downs of life), समुद्र बूंद मे (A drop in the ocean)।

इस कोश मे मुहावरे देखने के सम्बन्ध मे

साधारणत. कोशो मे जो अक्षरक्रम रखा जाता है, उसी का अनुसरण यहाँ भी किया गया है। सक्षेप केवल दो हैं

उ०=उदाहरण, प्रयोग
दे०=देखिए

कुछ बातें विशेष कहनी हैं। मुहावरो का प्रयोग कभी-कभी प्रधान शब्द का पर्याय रखकर भी किया जाता है। आँख लेना, दृष्टि लेना, डीठ लेना, दीदा लेना आदि के प्राय एक ही अर्थ है और प्राय एक ही अर्थ मे ये प्रयुक्त होते हैं, यद्यपि अधिक प्रचलित मुहावरा 'आँख लेना' ही है। अब यदि आँख के इस प्रकार सारे पर्यायो के साथ लेना' जोड़कर यहाँ रक्खा जाता और इसी प्रकार अन्य मुहावरो के पर्यायो की ओर भी ध्यान दिया जाता तो पुस्तक शायद प्रस्तुत रूप का अठगुना रूप लेकर भी पूर्ण न होती। अत प्राय. अधिक प्रचलित शब्द के साथ ही मुहावरा दिया गया है। इसी प्रकार कुछ शब्दो की वर्तनी (Spelling) के कारण (वापस, वापिस, सर, सिर, बरबाद, बर्बाद आदि) भी प्राय दो या अधिक रूप हो जाते हैं। इनमे भी प्राय एक ही के साथ मुहावरा मिलेगा। देखने वाले को यदि मुहावरा अपने उचित स्थान पर न मिले तो इस प्रकार के सम्भव अन्य स्थलो पर भी देख लेना चाहिए। मुहावरो मे 'ना', 'जाना' आदि लगाकर कई रूप बनते हैं। जैसे, कूच करना, कूच कर जाना आदि। अधिक मुहावरो के साथ दोनो रूप दे दिये गये हैं। जहाँ केवल 'ना' या केवल 'जाना' हो, आवश्यकतानुसार दूसरे को भी वहाँ माना जा सकता है। कहीं-कहीं 'ना' और 'जाना' से अर्थ मे फर्क भी हो जाता है, ऐसे मुहावरे प्रायः अलग-अलग दे दिये गये हैं।

अ

अंक करना—स्वीकार करना। उ० भगवान सुख-दुख जो भी दे उसे अक करो।

अंक देना—१ गले लगाना। उ० होली के दिन लोग दुश्मन को भी अक देते हैं। २. नम्बर देना। उ० राम को परीक्षा मे अच्छे अक दिये गए हैं।

अंक भरना—लिपटा लेना, गोद मे भर लेना। उ० कौशल्या ने अक भरकर सीता को विदा दी।

अंकमाल देना—दे० 'अक लगाना' १.।

अंक लगना—गले लगना। उ० आज वे दोनो अक लगे।

अंक लगाना—१ आलिगन करना, गले लगाना। उ० परीक्षा मे पास होने की खुशी मे उसने अपने जानी दुश्मन को भी अक लगाया। २ नम्बर डालना। उ० आजकल पृष्ठो पर अक लगाने के लिए एक मशीन का आविष्कार हो गया है। ३ नबर देना।

अंक लेना—१ आलिगन करना। २ गोदमे लेना।

अँकवार देना—दे० 'अक देना' १।

अँकवार भरना—१ लिपटा लेना, गले लगाना। उ० विदाई के समय औरतें अपने प्रियजनो को अँकवार भरती हैं। २ गोद भरना, बाँझ न रहना। उ० भगवान न करे कि दुराचारिणी स्त्रियो की कभी अँकवार भरे।

अंकित करना—१ अच्छी तरह जमा देना, छाप लगा देना। उ० मैं ही जानता हूँ कि गरीबी ने धनिको के प्रति कितनी घृणा मेरे हृदय पर अकित कर दी है। २ बनाना, चित्रित करना। उ० उसने कपडे पर गाधी जी का एक बडा सुन्दर चित्र अकित किया है।

अकित होना—बैठ जाना, जम जाना। उ० उसकी करुण मृत्यु का दृश्य मेरे हृदय-पटल पर सर्वदा के लिये अकित हो गया है।

अंकुरित होना—प्रारम्भ होना, उगना। उ० तुम्हारे भी मन मे विद्रोह अकुरित होने लगा है।

अंकुश देना—१ दबाव डालना। उ० अकुश देकर काम कराना मुझे बिलकुल पसद नही। २. वश मे करना, वश मे रखना, नियत्रण रखना। उ० लड़कों पर अंकुश देना बहुत ही आवश्यक है। ३ दुख देना। उ० यदि आप अकुश देंगे, तो मुझसे फूल की आशा कैसे कर सकते हैं।

अंकुश मानना—दबाव मानना। उ० बडो का अकुश कौन नही मानता ?

अंकुश रखना—दबाव मे रखना, स्वतत्रता न देना। उ० अकुश न रखने से लड़के बिगड जाते हैं।

अंकुश रहना, अंकुश होना—नियंत्रण रहना, नियत्रण होना।

अँखिगर बनना—१ देखने वाला बनना, आँखवाला बनना। २. होशियार बनना। उ० मुझसे अँखिगर न बनिए, मैं आपकी रग-रग से वाकिफ हूँ।

अँखिफोर होना—बुद्धिमान होना। उ० आप अँखिफोर है, तो अपने घर के। मुझे शिक्षा न दें।

अंग-अंग—प्रत्येक अग, पूरा शरीर। उ० मारकर अग-अग तोड दूँगा।

अंग-अग खिल जाना—१ जवानी आना। २ प्रसन्नता अग-अग से टपकना।

अग-अग टूटना—बदन मे दर्द होना। उ० अग-अग टूट रहे हैं। लगता है कि ज्वर आयेगा।

अंग-अंग ढीला होना—दे० 'अग ढीला होना।'

अंग-अंग फूले न समाना—दे० 'अग फूले न समाना।'

अंग उभरना—जवानी के लक्षण दिखाई पडना। उ० शादी की चिंता करो, सीता के अग उभरने लगे हैं।

अंग करना—अपनाना, स्वीकार करना। उ० भगवान ने जो दिया उसे अग करो। अब पछताने से क्या होगा ?

अंग छूना—अग या सर छूकर शपथ खाना। उ० यह बात तुम्हारे अग छूकर भी मैं कहने को तैयार हूँ।

अंग टूटना या टूट जाना—१ दर्द होना। उ० आज मेरे अग टूट रहे हैं। २ थक जाना, शिथिल हो जाना। ३ काम करते-करते आज अग टूट गए।

अंग ढीला पड़ जाना—दे० 'अग ढीला होना।'

अग ढीला होना—१ थक जाना। उ० काम करते-करते मेरे अग ढीले हो गये हैं। २ शिथिल हो जाना। उ० बुढापे मे अग ढीले हो जाते हैं।

अगड़ाई तोडना—आलस्य मे बैठे रहना। आलस्य के कारण अंगडाई लेते रहना। उ० आजकल उसके पास कुछ काम नही है, दिन भर अँगडाई तोडना है।

अंगड़ाई लेना—१ चेतना जगना २ अपनी यथार्थ स्थिति पहचानना। ३ क्राति करना।

अंग तोड़ना—अँगडाई लेना। उ० क्यो अग तोड रहे हो, नीद आ रही है क्या?

अंग देना—थोडा लेट रहना, आराम करना। उ० आजकल अग देने की भी फुरसत नही मिलती।

अंग धरना—पहनना। उ० कम से कम एक वनियाइन तो अग धर लो। नगे देख कर लोग क्या कहेगे?

अंग पड़ना—हिस्से पडना।

अंग फडकना—१. शुभ-अशुभ द्योतक (किसी अग मे) स्पन्दन होना। २ लडने आदि के लिए जोश आदि से अग फडकना।

अंग फूले न समाना—बहुत प्रसन्न होना। उ० विवाह के अवसर पर उसके अग फूले नही समा रहे थे।

अंग भरना—युवावस्था के लक्षण दिखलाई देना। उ० प्राचीनो के अनुसार अग भरने के पहले कुमारियो का विवाह हो जाना चाहिये।

अंग मुसकराना—१. बहुत प्रसन्न होना। उ० जीत के कारण उसके अग मुस्करा रहे हैं। २ अगो का बहुत सुन्दर होना। उ० जवानी मे किसके अग नहीं मुस्कराते?

अग मे अंग चुराना—सकुचित होना, शर्मा जाना। उ० अग मे अग चुराना स्त्रियो का एक बहुत बडा सौन्दर्य है। उ० वह तो मुझे देखकर अग मे अग चुराती है।

अग मे अग न समाना—बहुत प्रसन्न होना।

अग बनना—अपना बनना, सदस्य बनना। उ० अब सीता भी परिवार का अग है।

अग मोडना—१ पीछे हटना। उ० अब अग मोडने से क्या लाभ? इधर खाई, उधर कुआँ। २ अँगडाई लेना।

अंग लगना—१ हज़म होकर शरीर को लाभ पहुँचाना। उ० बेमन का खाया अग नहीं लगता। २ काम मे आना, उपयोग मे आना, सध जाना। उ० किसी के अग लगा तो, मैं तो समझता था कि फेंकना ही पडेगा। ३ हिल-मिल जाना।

अंग लगाना—१ लिपटा लेना, गले लगाना। उ० कौन धनिक दीनो को अग लगाता है? २ पहनना। उ० किसी दूसरे के अग लगाए कपडे मैं नही पहनता। ३ सहारे कर देना। उ० बेचारा गरीब आदमी है, किसी के अग लगा देते तो अच्छा होता। ४ विवाह कर देना। उ० शीला को बिना सोचे-समझे किसी के अग लगा देना ठीक नही। ५ विवाह कर लेना। उ० इसे अपने अग लगा लो। ६. स्वीकार करना। उ० उनकी दी हुई चीजो को अग लगाना ठीक नही। ७ महत्व देना।

अंग लाना—गले से लगाना, आलिंगन करना। उ० बडे-छोटे सभी को अग लाना बडो का ही काम है।

अंगड-खंगड समझना—व्यर्थ या रद्दी समझना। उ० पैसे लगे हैं, अगड-खगड समझ कर खुले मे मत छोडो।

अंगार उगलना—कठोर बातें कहना, जली-कटी सुनाना। उ० छोटी-सी बात पर इतना अगार न उगलो।

अंगार बनना—लाल हो जाना, क्रोधित होना। उ० क्षीणकाय लोग थोडी सी बात पर भी अगार बन जाते हैं।

अंगार बरसना—१ बहुत गर्मी पडना, तेज़ धूप होना। उ० गर्मियो मे दोपहर को अगार बरसने लगता है। २ जली-कटी बातें कहना। उ० उनके मुँह से तो दिन-रात अगार बरसते रहते हैं। ३ दैवी आपत्ति आना। उ० ईश्वर का जाने मैंने क्या बिगाडा है? जभी देखो मुझ पर अगार बरसने लगते हैं।

अंगार सिर पर धरना—कठिन दुःख सहना। उ० इस जीवन मे अगार सिर पर धरने ही पडते हैं।

अंगार होना—दे० 'अगार बनना'।

अंगारों पर पैर रखना—१ जान-बूझकर हानि का काम करना। उ० अगारो पर पैर रखने की बुद्धिमानी तुम जैसे अंधे ही कर सकते हैं। २ खतरे का काम करना। उ० अपनी माँ के अकेले बेटे हो, इस तरह अगारो

पर पैर रखना उचित नही ।

अंगारो पर लोटना–१ क्रोध से लाल होना । उ० एक शेर दूसरे को देख कर अगारो पर लोटने लगता है । २ दुख सहना । उ० मैं जीवन भर अंगारो पर लोटता रहा हूँ । ३ डाह करना, ईर्ष्या करना । उ० तुम्हारे अगारो पर लोटने से मेरा कुछ बनने-बिगडने का नही ।

अंगारो पर लोटाना–बहुत कष्ट देना । उ० अगारो पर लोटाकर मेरे ऊपर तुम विजयी नही हो सकते । वह असहाय है तो उसे अगारो पर लोटा लो, दूसरा रहता तो बताता ।

अंगिया की बखिया उधेड़ना–नुक्ता चीनी करना । उ० तुम्हारी यही आदत अच्छी नही लगती । जब देखो अंगिया की बखिया उधेडते रहते हो ।

अँगुरियाना–परीशान करना । उ० ज्यादा न अँगुरियाओ, नही तो वह भी कम शैतान नही है ।

अँगुली करना–परीशान करना । उ० बहुत अँगुली करोगे तो मुझसे काम न होगा ।

अँगुली काटना–पश्चाताप करना । उ० काम बिगड जाने पर अँगुली काटना बेकार है ।

अँगुली चमकाना–बातचीत या लडाई करते समय अँगुलियो को हिलाना या मटकाना । उ० अँगुली चमकाना औरतो को ही शोभा देता है ।

अँगूठा चटाना–तुच्छ समझना, नाचीज समझना ।

अँगूठा चूमना–१ चापलूसी करना । उ० आजकल विद्वानो को भी रुपये के लिये धनिको के अँगूठे चूमने पडते हैं । २. वश मे होना, किसी के अधीन रहना । उ० अँगूठा चूमने वाले सुख से रहना क्या जानें ?

अँगूठा दिखाना–१ वक्त पर नाही कर देना, ऐन मौके पर जवाब दे देना । उ० दोस्त मौके पर अँगूठा नही दिखाते, और जो अँगूठा दिखा देते है, वे दुश्मन से भी बुरे है । २ चिढाना । उ० कल तक जो मेरे अँगूठे चूमते थे, आज मुझे अँगूठा दिखा रहे है । वाह रे समय !

अँगूठा नचाना–चिढाना । उ० समय का फेर है, कि मेरे सामने के बच्चे भी अब अँगूठे नचाने लगे हैं ।

अँगूठी का नगीना–जोडा मिलना । उचित दपति । उ० गाँधी और कस्तूरबा वास्तव मे अँगूठी के नगीने थे ।

अँगूठे पर मारना–कुछ न समझना, परवाह न करना । उ० आप जैसे दोस्त को मैं अँगूठे पर मारता हूँ ।

अंगूर चटकना–दे० 'अगूर तडकना' ।

अंगूर तड़कना–भरते घाव के ऊपर के पतले चमडे का तडकना । उ० अगूर तडकने पर फिर परीशान होगे । दो-चार दिन और बचा दो ।

अंगूर फटना–दे० 'अगूर तडकना' ।

अंगूर बँधना–घाव भरना, घाव के ऊपर नई झिल्ली चढना । उ० अब तुम्हारे फोड़े का अगूर बँध रहा है ।

अगूर भरना–दे० 'अगूर बँधना' ।

अँचरा पसारना–दे० 'अचल पसारना' ।

अंचल डालकर लेना–माँ की तरह वात्सल्य-पूर्वक लेना ।

अचल पसारना–१ माँगना । उ० आजकल बेचारी रोज ही देवी के स्थान पर अचल पसारने जाती है । २ किसी चीज के माँगने के लिए दयनीयता और नम्रता दिखलाना । उ० अंचल पसार कर मैं अपना सुहाग माँगती हूँ । हे देवी ! दया करो ।

अचल से बँधना–विवाह होना ।

अँचार करना–खूब मारना । उ० चुप रहो नही तो अँचार कर दूँगा ।

अँचार डालना–अँचार बनाना । उ० नीबू का अँचार डाल दो ।

अँचार बनाना–१ खूब मारना । उ० उस दिन तो तुमने राम को ऐसा अँचार बनाया कि वह आज तक बीमार है ।

अछर पढ़ कर मारना–मन्त्र फूंकना । उ० पडित जी कुछ अछर पढकर मार दीजिये, ताकि मेरा बुखार छूट जाय ।

अंछर मारना–१ जादू मारना । उ० उस आदमी ने अछर मार कर यहाँ से कुर्सी गायब कर दी । २ मोह लेना, वश मे कर लेना । उ० खूब अछर मारी । अब चन्द्रा तो जैसे तुम्हारी परछाही बन गई है ।

अजन लगाने का न होना–तनिक भी न होना ।

अंजर-पंजर ढीला करना–१ खूब मारना । उ० अभी तुम्हारा अजर-पजर ढीला करता हूँ । २. शिथिल कर देना, थका देना । उ० बाप रे बाप ! चलाते-चलाते अजर-पजर ढीला कर

दिया । ३ खराब कर देना, जीर्ण-शीर्ण कर देना । उ० एक ही महीने तो साइकिल पर चढ़े और मारा कि उसका अजर- पजर ढीला कर दिया ।

अंजर-पजर ढीले होना—१ अधिक दिन का हो जाने के कारण खराब या बेकार हो जाना । उ० अब तो उस मोटर के अजर-पजर ढीले हो गए । २ थक जाना । उ० बस ! यही हिम्मत थी । दो कोस भी नही आए और अजर- पजर ढीले हो गए । ३. अकड भुला देना, गर्व ठडा कर देना । उ० कितनो के हाथ तुम्हारे अजर-पजर ढीले हुए पर तुम्हे तनिक भी शर्म नही । जाने किस बात पर तुले हो ?

अजाम देना—पूरा करना । उ० वायदा तो मैने कर लिया लेकिन उसे अजाम देना आसान नही है ।

अंटा गुडगुड होना—१ गहरी चोट से बेहोश हो जाना । २ भाँग के नशे मे धुत्त होना । एक अँग्रेज जनरल आक्टर लोनी थे, जो भरतपूर दखल करने के लिए भेजे गए थे । चढाई का नकशा ठीक कर दुरबीन से किले की ओर देख रहे थे, उसी समय किले पर से एक गोला आकर लगा और मर गए । कहा जाता है कि 'अटा गुडगुड' 'आक्टर लोनी' का ही बिगडा रूप है ।

अंटाचित गिरना—चित्त या पीठ के बल गिरना ।

अंटाचित होना—१ कुछ न बोल सकना, मुग्ध हो जाना । उ० उसकी बात सुनकर मै तो अटाचित हो गया । २ बेहोश होना । उ० ज्वर से राम अटाचित हो गया है । ३ काम बिगडना । उ० बीमारी के कारण उसकी खेती अटाचित हो गई ।

अंटी करना—मार लेना, चुपके से ले लेना । धीरे से चुरा लेना । उ० यह अटी करना तुमने कब से सीखा ?

अंटी काटना—जेब काटना । उ० आज पुलिस ने कई अटी काटने वालो को गिरफ्तार किया है ।

अंटी देना—गरदनिया देना ।

अंटी पर चढ़ना—१ हाथ या वश मे आना । २ दाँव पर चढना ।

अंटी मारना—१ चाल चलना । उ० ऐसी अटी मारी कि बच्चू चारो खाने चित्त हैं । २ कुश्ती मे एक दाव मारना । ३. जुए मे कौडी आदि छिपा कर धोखा देना । चुपके से लेना । उ० जो लेना चाहो, माँग कर ले लो । अटी मारना ठीक नही । ५ तराजू से तौलने मे डंडी मारना ।

अंटी रखना—छिपा कर रख लेना । उ० साझे की चीज अटी रख लेना मै पसन्द नही करता ।

अंड-बंड करना—१ खराब करना । २ गड़बड़ करना । ३ गायब करना । उ० इनमे से कोई चीज अंड-बंड न करना ।

अंड-बंड कहना—बुरा भला कहना, गाली देना । उ० सभी को अंड-बंड कहना ठीक नही । ऐसी आदत रही तो किसी दिन जूते खाओगे ।

अंड-बंड बकना—१ पागल जैसी बाते करना, बिना सिर-पैर की कहना । उ० देख नही रहे हो, अंड-बंड बक रहा है । यह जरूर पागल है । २ गाली देना । उ० अंड-बंड बकोगे तो लात खाओगे ।

अंडा चटकना या चटक जाना—अंडा फूटना । उ० मुर्गी के अंडे चटक गये ।

अंडा ढीला होना—कमजोर हो जाना, दुर्बल हो जाना । उ० अरे तुम्हारा तो अंडा ढीला हो गया ! परिश्रम अधिक करना पड़ा क्या ?

अंडा सरकना या सरक जाना—१ दे० 'अंडा ढीला होना' २ बेहोश होना । उ० ऐसी मार मारूँगा कि अंडा सरक जायगा । ३ हाथ-पाँव हिलाना ।

अंडा सरकाना—१ हाथ-पैर हिलाना, अंग डुलाना । कुछ काम करना । उ० अब अंडा सरकाओ तो काम चले ।

अंडा सेना—१ बच्चा गोद मे लेकर सोना । २ चिड़ियो का अंडो पर बैठ कर गर्माना । ३ किसी चीज की [illegible] । उ० क्या अंडा से रहे हो ? यह इतनी जल्दी खराब नही होगा । ४ बेकार या निकम्मा बैठना । उ० कुछ कमाओ-धमाओ, अंडा सेते रहने से काम नही चलने का ।

अंडे का शाहजादा—वह व्यक्ति जो कभी घर से बाहर न निकला हो, अनुभवहीन । उ० अंडे के शाहजादे को क्या पता है, कि दुनियाँ मे क्या हो रहा है ?

अंडे-बच्चे—कच्चे-बच्चे, बहुत से छोटे-छोटे बच्चे । उ० अरे भाई इतने अंडे-बच्चे ! अभी तो तुम्हारी शादी चार ही पाँच साल पहले हुई थी ?

अंड़ुआ बैल बनना—सुस्त बनना । उ० इसी उम्र मे अड़ुआ बैल मत बनो ।

अंत करना—१ समाप्त करना । उ० आज मैने उसके जीवन का अत कर दिया । २ नष्ट करना । उ० उसके यश का अत न करो । ३ हद कर देना, अति कर देना । उ० अब अन्त मत करो, आखिर हर चीज़ की एक सीमा होती है ।

अंत की बेर—मरते समय ।

अंतडियाँ कुलबुलाना—तेज भूख लगना । उ० मेरी तो अँतडियाँ कुलबुला रही है, कुछ खाना दे दो ।

अंतड़ियाँ गले पड़ना—दु ख मे पडना । उ० सच्चा मित्र वही है जो अँतडियाँ गले पडने के समय सहायता करे ।

अंतड़ियाँ जलना—१ खूब भूख लगना । उ० अँतडियाँ जल रही हो तो सत्तू भी हलवा लगता है. । २ खाने को न मिलना । उ० इस महँगाई मे जाने कितनो की अँतडियाँ जल रही हैं ।

अंतड़ियाँ टटोलना—पेट छू कर या टटोल कर यह देखना कि खाने को मिला है या नही । उ० घर आने पर माँ अँतडियाँ टटोलने लगती है ।

अंतड़ियाँ लगना या लग जाना—भूख से सूख जाना । उ० उस भिखारी की अँतडियाँ लग गई हैं ।

अंतडियो का 'कुल ओह अल्लाह' पढना—अधिक क्षुधित होना, भूख से परीशान होना । उ० इधर मेरी अँतडियाँ 'कुल ओह अल्लाह' पढ रही हैं, और तुम्हे लडके ही से फुरसत नही । अच्छी बीबी मिली हो !

अंतड़ियो के बल खोलना—कई दिन न खाने के बाद भर पेट खाना । उ० मैं आज चार दिन उपवास के बाद अँतडियो के बल खोल रहा हूँ ।

अंतड़ियो मे आग लगना—भूख से परीशान होना । उ० आज मेरी अँतडियो मे आग लगी है, जल्दी कुछ दो ।

अंतड़ियो मे बल पड़ना—पेट या आँतो मे दर्द होना । उ० आज तो हँसते-हँसते मेरी अँतडियो मे बल पड गए ।

अंतडी की बात जानना—१ किसी को भली भाँति जानना । २. मन की बात जानना । उ० तुम्हारी अँतडी की बात बस मैं जानता हूँ ।

अंत न पाना—रहस्य न जान पाना, समझ न पाना । उ० उसका अत बडे-बडे नही पाते, तो मैं भला किस खेत की मूली हूँ ?

अंत पाना—रहस्य जान लेना । उ० मोहन बडा होशियार आदमी है, उसका अत पाना आसान नही ।

अत बनना या बन जाना—१ परलोक बनना । उ० अत बने या न बने, मैं इन धूर्त साधुओ को एक पैसा भी नही दे सकता । २ किसी काम का अत अच्छा होना । उ० अत बन जाय तो बीच की खराबियाँ ढक जायँ ।

अत बनाना—१. परलोक बनाना । उ० यहाँ की चिंता क्या करूँ, अत बना लूँ, वही बहुत है । २ आखिरी हिस्से को अच्छा करना ।

अत बिगड़ना—१ फल बुरा होना । उ० आदि बन कर ही क्या होगा यदि अत बिगड गया । २ परलोक बिगडना । उ० रास्ता ऐसा चलो कि अत न बिगडे ।

अतर का पट खोलना—१. ज्ञान प्राप्त करना, ज्ञान के चक्षु खोलना । उ० अतर के पट खोल रे तोको पीव मिलेंगे । २ किसी के सामने अपना हृदय खोल कर सब बातें साफ-साफ कह देना । उ० अतर का पट खोल देने पर भी विश्वास नही करते तो मैं क्या करूँ ?

अंतर खोलना—दे० 'अतर का पट खोलना' ।

अंतरपट साजना—छिप कर बैठना, ओट मे रहना । उ० क्या अतरपट साज रहे हो, क्यो नही सामने आते ?

अंतर पडना—खटक जाना, भेद पडना । उ० मैं खूब समझता हूँ, आजकल मियाँ-बीबी मे अवश्य कुछ अतर पड गया है ।

अंतरिक्ष होना—गायब होना । उ० रहते हो, रहते हो, जाने कहाँ अतरिक्ष हो जाते हो । आखिर यह किताब पूरी करनी है या नही ?

अंतर्निविष्ट करना—१ मन मे रखना, दिल मे जमाना । उ० पहले मेरी बात अर्तानविष्ट कर लो तो फिर काम मे हाथ लगाओ ।

अंतर्निविष्ट होना—१ भीतर बैठना । उ० यह बात मेरे हृदय मे अर्तानविष्ट हो चुकी है । २ दिल मे धँसना । उ० उसका करुण दृश्य अर्तानविष्ट हो गया है ।

अंत लेना—१. भेद लेना । रहस्य जान लेना ।

उ० उसने तो बात ही बात मे मेरा अत ले लिया। २ मार डालना।

अत होना–१ मृत्यु होना, नाश होना। उ० आज मेरे हाथ से एक कुत्ते का अत हो गया। २ बहुत बडा नुकसान होना। उ० उनका तो इस डाके मे अत हो गया।

अतिम घडियाँ गिनना– मरणासन्न होना।

अंतिम साँस गिनना या लेना–मरणासन्न होना।

अंते जाना–अन्यत्न जाना। उ० अते जा रहा हूँ, ज़रा मेरा भी घर देखना।

अंदर-अदर कड़ाही मे गुड पकना–१ भीतर ही भीतर कुछ होते रहना २ गुप्त मत्रणा होना।

अदर होना–जेल मे होना।

अंदाज उडाना–अनुमान करना। उ० तुम भी विना सोचे-समझे अदाज उडाते हो। इस टिन मे भला १० सेर घी अट सकता है!

अदेशा करना–शका करना, आशकित होना, भय करना। उ० किसी वात का अदेशा मत करो। अव इस जगल मे एक भी जानवर नही रहा।

अंध भक्त–विना सोचे-समझे श्रद्धा या भक्ति (किसी के प्रति) रखने वाला।

अधा आइना–धुँधला शीशा। उ० अधे आइने मे मुँह देखना वुरा कहा गया है।

अधा करना–ज्ञानशून्य करना।

अधा कुआँ–१ सूखा कुआँ। उ० यह अधा कुआँ है। २ व्यर्थ की चीज, जिससे किसी भी प्रकार की आशा करना व्यर्थ हो।

अधा घोडा–जूता। उ० उस वेचारे के पैर मे तो अधा घोडा भी नही है। (इसका प्रयोग साधू-फकीर ही विशेप रूप से करते रहे हैं।)

अंधा झोपड़ा–पेट। उ० इस अधे झोपडे मे जो ही डालो, सव ठीक है। (इसका प्रयोग विशेपत साधुओ द्वारा होता है।)

अंधा तारा–नेपच्यून तारा। उ० अधा तारा हम से बहुत दूर है।

अंधा दीया–धुंधले प्रकाश का दीपक। उ० यहाँ यह अधा दीया न रक्खो।

अंधाधुंध मचाना–१ अधेर मचाना। उ० अच्छी अधाधुध मचा रक्खी है। कही दिन मे विजली जलाई जाती है! २ अन्याय करना। उ० इन अधाधुध मचाने से शासन एक दिन भी नही चलेगा।

अधाधुंध लुटाना–विना सोचे-समझे वहुत ज्यादा खर्च करना। उ० पैसे को अधाधुध लुटाना ठीक नही। सदा समय एक सा नही रहता।

अंधा वनना–१. आगा-पीछा कुछ न देखना, तनिक भी परवाह न करना। उ० इस प्रकार अधे मत बनो, नही तो खाने-खाने को मुहताज होना पडेगा। २ जान-बूझकर किसी के अन्याय या गलती को न देखना। उ० तुम अधे वने हो और वह लडकी गिरती जा रही है।

अंधा बनाना–१ धोखा देना। उ० तुम मुझे अधे वनाने के फेर मे क्यो हो? तुमने जितना चून खाया होगा, उतना मैंने नून खाया है। २ मूर्ख वनाना। ३ ज्ञानशून्य करना।

अंधा शीशा–दे० 'अधा आइना'।

अंधा होना–वेफिक्र होना, सामने की चीज़ का भी ध्यान न रखना। उ० अधे हो गए हो क्या? कुछ पता है कि गोपाल कितना रोज़ ले जाता है।

अधी खाई के वीच होना–वहुत फर्क होना।

अंधी खोपडी–मूर्ख। उ० उस अंधी खोपडी से मैं कुछ नही कह सकता।

अधी सरकार–ऐसा शासन या राज्य जहाँ अधेर हो। उ० स्वर्गीय श्री पटेल ने इन अधी सरकारो का खात्मा कर, भारतवासियो का अनन्य उपकार किया।

अधे की लकडी–एक ही सहारा। उ० वही तो अधे की लकडी है, उसे छोडकर वेचारा कहाँ जाय!

अधे की लाठी–दे० 'अधे की लकडी'।

अधे कुएँ की ओर दौड़ना–प्यासे का निरर्थक प्रयत्न करना।

अधे के आगे रोना–१. निष्ठुर या न सुनने वाले को अपनी व्यथा सुनाना। २ मूर्ख के सामने कुछ कहना। ३ अज्ञानी को कुछ सुनाना।

अंधे के हाथ वटेर लगना–१. मूर्ख या अयोग्य व्यक्ति को अनायास कुछ ऐसा मिल जाना, जिसका पात्र वह न हो।

अंधेर करना–अन्याय करना। उ० बहुत अधेर न करो।

अंधेरखाता–१ वेइन्साफ, अन्याय, उ० आज-कल पचायतो मे बड़ा अधेरखाता है। २.

२ हिसाब ठीक न होना । उ० ऐसे अधेर खाते मे तो एक पैसे का भी लाभ सभव नही। ३ गडबड होना।

अंधेर गुप–१ बिलकुल अँधेरा । उ० अरे ? आज तो इस बदली के कारण अभी अधेर गुप हो गया। २ बहुत धाँधली। कुप्रबध। उ० इस राज्य मे तो बडा अधेर गुप है।

अंधेर छाना–गडबडी फैलना। उ० औरगजेब के समय देश मे इतना अधेर छाया था कि हिन्दुओ का जीवन दूभर हो गया था।

अंधेर नगरी–जहाँ बहुत धाँधली या अन्याय हो। उ० अधेर नगरी चौपट राजा । टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

अंधेर मचना–गडबडी होना। कुप्रबध होना। उ० आजकल पुलिस मे बडी अधेर मची है। जिसको जब चाहा बद कर दिया।

अधेर छाना–शोक छाना । उ० गान्धी जी के मरते ही देश मे अधेरा छा गया।

अंधेरा छोड़ना–प्रकाश के सामने से हटना। उ० अधेरा छोडो, मुझे भी पढना है।

अँधेरा होना–१ बुरा समय आना २ कुछ न सूझना।

अँधेरी कोठरी–१ न जानने योग्य या गुप्त जगह । उ० चीन विदेशियो के लिये अँधेरी कोठरी है। २ गर्भ। उ० अँधेरी कोठरी के विषय मे मैं क्या कहूँ ? उसे भविष्य ही स्पष्ट करेगा।

अँधेरी झुकना–बहुत अँधेरा होना। उ० आज ऐसी अँधेरी झुकी है कि हाथ की चीज भी नही दिखाई पडती।

अंधेरी डालना–किसी की आँखें बन्द करके दुर्गति करना। आँखें बद करके मारना, ताकि वह मारने वाले को पहचान न सके। उ० यह आदमी तो बडा परीशान करता है। इस पर भी अँधेरी डालने की ज़रूरत है।

अँधेरी देना–दे० 'अँधेरी डालना'।

अँधेरे-उजेले–वक्त-बेवक्त, सुख-दु ख मे। उ० अँधेरे-उजेले, वही काम आता है, तो दूसरा किसे अपना कहे ?

अँधेरे घर का उजाला या दीपक–इकलौता पुत्र। उ० बुरा या अच्छा यही तो इसके अधेरे घर का उजाला है। भला इसे वह कब कष्ट दे सकता है ?

अंधेरे मुंह–प्रात काल, तडके। उ० अँधेरे मुंह मेरे यहाँ आ जाना, तो दवा दे दूंगा।

अंधेरे मे टटोलना–१. स्थिति अज्ञात तथा अस्पष्ट होने पर भी जानने का यत्न करना। २. व्यर्थ का प्रयत्न करना।

अंधेरे में तीर मारना–दे० ऊपर।

अंधेरे मे रखना–(किसी को) ठीक स्थिति न बताना। उ० अपने मित्र को ही अँधेरे मे रखोगे तो हो चुका तुम्हारा काम।

अंबर के तारे गिनना–१ वियोग या दु ख के कारण रात को नीद न आना। २ असभव काम करने का प्रयास करना। उ० तुम्हारा एम् पी के लिए खडा होना अबर के तारे गिनना है।

अंबर के तारे डिगना–अविश्वसनीय और असभव बात का होना। उ० तुम्हारा १८ फीट कूदना अबर के तारे डिगना है।

अकंटक राज्य करना–बिना किसी विरोध आदि के राज्य करना या आनद लूटना।

अकड जाना–हठ करना, मिजाज़ दिखाना। उ० बात-बात मे अकड जाना शिष्टाचार नही है।

अकडे बैठना–जिद्द पर रहना, ज़िद्द पर अडे रहना। उ० तुम तो लडको की तरह अकडे बैठे हो।

अकेले चने का भाड़ नहीं फोडना–अकेले कुछ न हो सकना। उ० केवल तुमसे क्या समाज सुधरेगा ? अकेला चना भाड नही फोडता।

अकेला दम–अकेला, कोई आगे-पीछे नही। उ० मेरा क्या है, अकेला दम हूँ। जहाँ भी रहूँ, सुखी रह सकता हूँ।

अकेली कहानी–एक पक्ष द्वारा कही गई बात। उ० अकेली कहानी पर तुमने फैसला क्यो दिया ?

अकेले घर मे छकेला मारना—घर मे अकेला होने के कारण खूब मौज उडाना। उ० तुम्हारा क्या है, तुम तो अकेले घर मे छकेला मारते हो। अब न मोटे होगे तो कब होगे ?

अकेले-दुकेले—अकेले, एकाकी । उ० अँधेरी रात मे अकेले-दुकेले न जाया करो।

अकेले राम—अकेला होना, किसी और के साथ होने का बधन न होना। उ० तुम तो अकेले राम ठहरे, आज यही रुको। घर जाने की जल्दी क्या है ?

अक़्ल का अन्धा होना—मूर्ख होना। उ० वह तो अक्ल का अंधा हो गया है। देखते नही सयानी लडकी को मित्र के यहाँ छोड़ आया है।

अक़्ल का अजीर्ण होना—१ अक्ल का मारा जाना, बेवकूफ होना। उ० आजकल मटर बो रहे हो! अक्ल का अजीर्ण हो गया है क्या? २. बुद्धिमान आदमी का कोई उलटा काम करना। उ० आजकल इन नेताओ को अक्ल का अजीर्ण हो गया है। रोज़ नई स्कीम शुरू करते हैं और दो दिन चलाकर बन्द कर देते हैं।

अक़्ल का घास खाना या चरने जाना—१. अक्ल काम न करना। २ बेअक्ल होना।

अक़्ल का दुश्मन—बेवकूफ, मूर्ख। उ० हो तुम अक्ल के पूरे दुश्मन। अरे! कही मेरे जाने से बात बनेगी, हाँ बिगड जाए तो कोई अचरज नही।

अक़्ल का पुतला—मूर्ख (व्यग्य मे)। उ० वाह रे अक्ल के पुतले! यह क्या कर डाला? खीर मे कही नमक डाला जाता है?

अक़्ल का पूरा—बेवकूफ। उ० तुम जैसा अक्ल का पूरा आदमी मिलना मुश्किल है। न तो अपने काम करते हो और न मुझे ही करने देते हो।

अक़्ल की कोताही—बुद्धि की कमी। उ० जिसमे अक्ल की कोताही है, उसका पढना और न पढना बराबर है।

अक़्ल की गठरी—मूर्ख। उ० तुम सचमुच अक्ल की गठरी हो। कही चाय के बाद पानी पीते हैं?

अक़्ल की गाँठ खुलना—समझ मे आना, अक्ल का काम करना।

अक़्ल के घोडे दौड़ाना—१ अन्दाज़ लगाना, कल्पना करना। उ० अक्ल के घोडे दौडाने मे बीरबल बडा तेज़ था। २ बहुत दूर तक सोचना। उ० अक्ल के घोडे दौडाओ तो शायद यह पहेली समझ मे आ जाय।

अक़्ल के पीछे लाठी लिये फिरना—बिना अक्ल के काम करना। मूर्खता करना। उ० तुम भी खूब अक़्ल के पीछे लाठी लिए फिर रहे हो। सीधी सी बात थी और समझ मे न आई।

अक़्ल खर्च करना—गभीरता से विचारना, बुद्धि लडाना। उ० अक्ल खर्च करो तो कुछ समझ सकोगे, यो मुँह क्या देखते हो?

अक़्ल चकराना—दे० 'अक्ल चक्कर मे आना'।

अक़्ल चक्कर मे आना—दग रह जाना, हैरत मे आ जाना। उ० प्रदर्शनी मे उस काठ की मूर्ति का काम देख कर अक्ल चक्कर मे आ गई।

अक़्ल चरने जाना—बुद्धि का काम न करना। उ० इस प्रश्न को करते समय तुम्हारी अक्ल क्या चरने गई थी?

अक़्ल दग रह जाना—चक्कर मे पडना, आश्चर्य-चकित हो जाना। उ० कल का दृश्य देखकर तो मेरी अक्ल दग रह गई। आग लोग छूते नही हैं और वह खा रहा था।

अक़्ल दंग होना—दे० 'अक्ल दंग रह जाना'।

अक़्ल देना—१ राय देना। उ० आपके अक्ल देने की आवश्यकता नही। २ समझाना। उ० उसे अक्ल देने लायक तुम नही हो।

अक़्ल दौडाना—गभीरता से सोचना, बुद्धि लगाना। उ० तुम जैसे बेवकूफ आदमी का किसी भी काम मे अक्ल दौडाना बेकार है।

अक़्ल पर ईंट या पत्थर या परदा पडना—अक्ल खराब हो जाना। उ० तुम्हारी अक्ल पर तो पत्थर पड गया है, कोई चीज़ तुम्हारी समझ मे आती ही नही।

अक़्लमद की दुम बनना—अपने को बहुत होशियार समझना। उ० अक्लमद की दुम न बनो। तुम्हारी बिसात किसी से छिपी नही है।

अक़्ल मारी जाना—१ घबरा जाना, कुछ समझ मे न आना। उ० इस समय कोई काम मुझ-से सही नही हो सकता, सचमुच मेरी अक्ल मारी गई है। २ मूर्ख होना। अक्ल न रहना। उ० उसकी तो अक्ल मारी गई है, वह काम क्या करेगा?

अक़्ल लडाना—दे० 'अक्ल दौडाना।'

अक़्ल सठियाना—बुद्धि बिगडना। उ० लोग कहते हैं कि बुड्ढो की अक्ल सठिया जाती है।

अक़्ल से सरोकार न होना—कुछ न समझना, बेवकूफ होना। उ० उसकी बात न करो। उसका तो अक़्ल से कोई सरोकार ही नही है।

अक़्ल हवा हो जाना—किंकर्तव्यविमूढ हो जाना, अक्ल काम न करना।

अक़्ली गद्दे लडाना—बेकार मे तर्क-वितर्क करना।

अक्षर घोटना—हरफ-ब-हरफ याद करना। उ० अक्षर घोटने से क्या लाभ? उसे समझने की कोशिश करो।

अक्षर से भेंट न होना—१. बिल्कुल अनपढ

होना । उ० भारत मे बहुत से ऐसे आदमी हैं जिनसे अक्षर से भी भेंट नही हुई है । २ अनभिज्ञ होना । उ० अर्थशास्त्र के एक अक्षर से भी मेरी भेंट नही हुई है, तुम्हे बतलाऊँ तो क्या ?

अखज करना—१ चुनना, अख्तियार करना । उ० इनमे से कोई भी रास्ता अखज कर लो । २ बात मे से बात निकालना । उ० अखज करने मे वह इतना तेज़ है कि उससे बहस करने की हिम्मत नही होती ।

अखरने लगना—बुरा लगना । उ० मालूम होता है कि मेरा रोज का यहाँ आना तुम्हे अखरने लगा है ।

अखाडिया होना—नामी या सशक्त होना । उ० वह तो अखाडिया है । उसका मुकाबिला तुम क्या खाकर करोगे ।

अख्तियार करना—१ मानना, स्वीकार करना । २ पसद करना । ३ चुनना । ४ काम मे लाना । उ० मैं यही रास्ता अख्तियार करूँगा ।

अख्तियार मिलना—१ अधिकार मिलना । उ० अख्तियार मिलने पर सभी लोग अपने को लगाते है । २ कानूनी इजाजत मिलना । उ० अख्तियार मिल जाय तो मैं उसी मकान मे रहूँगा । देखें कौन क्या करता है ?

अख्तियार मे होना—काबू या वश मे होना । उ० जब वह अपने अख्तियार मे है तो करेगा क्यो नही ?

अख्तियार लेना—अधिकार लेना । उ० इस ज़मीन का अख्तियार मैंने ले लिया है ।

अख्ती घोडी—ऐसी औरत जिसके स्तन स्पष्ट न दिखाई दे । उ० इसे जवान कौन कहेगा, यह तो अख्ती घोडी है । (इसका प्रयोग बाजारू ज़बान मे होता है ।)

अगर मगर करना—१ बेकार बकवाद करना । उ० विद्वानो के सामने ऐसी बातो पर अगर मगर करना व्यर्थ है । २ टाल मटोल करना । उ० अगर मगर करने से क्या लाभ ? न देना हो तो साफ कह दीजिए ।

अगले जमाने का आदमी—ईमानदार, सीधा-साधा । उ० तुम जैसे अगले ज़माने के आदमी की भगवान मदद करता है ।

अगाडी-पिछाडी लगाना—बधन मे डालना, प्रतिबध लगा देना । उ० पिताजी ने ऐसी अगाडी-पिछाडी लगा दी है कि एक मिनट के लिए भी बाज़ार आना सभव नही ।

अगाड़ी मारना—शत्रु की सेना को जल्दी से हरा देना । जल्दी से जीत लेना । उ० उनके दल ने अगाडी मार ली ।

अगिया बेताल—१ बडा उत्साही, बहुत तेज । उ० मोहन सचमुच अगिया बेताल है । वह इस काम को हाथ मे लेगा तो करते देर न लगेगी । २ धुधकारी । उ० तुमने तो ऐसे अगिया बेताल का साथ पकडा है कि मैं डरने लगा हूँ ।

अगिया बैताल—दे० 'अगिया बेताल' ।

अगुआ होना—१ नेता होना । २ विवाह या खरीद-फरोख्त मे मध्यस्थ होना । उ० अगुआ होने वाले प्रायः मार खाते हैं ।

अचार करना—दे० 'अँचार करना' ।

अचार डालना—दे० 'अँचार डालना' ।

अचार बनाना—दे० 'अँचार बनाना' ।

अच्छा आना—ठीक समय पर आना । उ० अच्छे आए, नही तो अब मोटर छूटने ही वाली थी ।

अच्छा करना—१ चगा कर देना । उ० डाक्टर ने कहा कि मैं इसे दो घटे मे अच्छा कर दूँगा । २ काम खराब कर देना । उ० आपने अच्छा किया ! अब होश रहा तो कभी आपके साथ न आऊँगा ।

अच्छा कहना—१ मौके की बात कहना । उ० अच्छी कही । भले आदमी होगे तो कई जन्म तक याद रक्खेंगे । २ तारीफ करना । उ० उसका क्या है, सभी के बारे मे अच्छा ही कहता है । ३ अच्छा भाषण देना । उ० अच्छा कहता है, ज़रा बुलद नही है ।

अच्छा खासा—१ अच्छा, बढिया । उ० वह अच्छा खासा आदमी है, उसी से शादी कर दी । २ स्वस्थ, भला चगा । उ० कौन उसे बीमार कहता है, यह तो अच्छा खासा है ।

अच्छा बिच्छा—भला चगा । उ० दो-चार दिन मे मैं अच्छा बिच्छा हो जाऊँगा, चिंता की कोई बात नही ।

अच्छा लगना—१ भला जान पडना । उ० तुम्हारे सिर पर यह टोपी नही अच्छी लगती । २ रुचिकर होना । उ० हमे यह फल अच्छा नही लगता ।

अच्छी बीतना—आनन्द से दिन कटना । उ० महँगी मे कम लोगो की अच्छी बीतती है ।

अच्छे-अच्छे–१ प्रसिद्ध-प्रसिद्ध, वडे-वडे। उ० अच्छे-अच्छे देख लिए गए तो आप किस खेत की मूली हैं? २ सुन्दर, उमदा, वढिया। उ० उसकी वारात मे अच्छे-अच्छे घोडे आए है।

अच्छे घर वायन देना–ऐसे को छेडना जो छठी का दूध याद करा दे।

अच्छे थान का घोड़ा–मशहूर जगह या जाति का घोडा। उ० अरवी घोडे तो अच्छे थान के होते है।

अच्छे दिन–सुख सम्पत्ति का दिन। उ० उसने अच्छे दिन देखे हैं।

अच्छे दिन आना–सौभाग्यशाली होना, भाग्य लौटना। उ० भगवान चाहेगा तो थोडे ही दिन मे उसके अच्छे दिन आने वाले है।

अच्छे दिन देखना–सुखी होना, गरीवी की दशा विता कर अमीर वनना। उ० मेरे भाग्य मे अच्छे दिन देखना नही वदा है।

अच्छे मिलना–१ खूव मिलना। उ० आजकल अन्न की महँगी से किसानो को रुपये अच्छे मिल रहे हैं। २ जरूरत के समय मिलना। उ० आज आपसे कुछ काम था आप अच्छे मिल गये। ३ वुरे मिलना (व्यग्य मे)। उ० मुझे तो आप अच्छे मिले। रुपया भी खर्च हो गया और कुछ हाथ भी नही आया।

अच्छे रहना–१ स्वस्थ रहना। उ० इधर तो मैं अच्छा ही रहा। २ सफल होना, लाभ मे होना। उ० और तो खाली हाथ आए पर तुम अच्छे रहे।

अछरकट्टू होना–साधारण पढा-लिखा होना। उ० अछरकट्टू है, उससे लिखने पढने का काम नही हो सकता।

अछरौटी वर्त्तनी–हिज्जे, वर्त्तनी, स्पेलिंग। किसी शब्द के प्रत्येक वर्ण का अलग-अलग करना। उ० उसे तो अभी अछरौटी-वर्त्तनी भी नही आती, उसका नाम चार मे कैसे लिखा जायगा?

अछूता–१ कोरा, नया। उ० मेरे पास तीन अछूती धोनियाँ हैं। कालिदास की उपमाएँ अछूती हैं। २ दूर, निर्लेप। उ० अवगुणो मे अछूता आदमी पाना आसान नही। ३ तनिक भी गति न होना। उ० वह इस विपय मे अछूता है।

अछूती कोख–वह औरत जिसका कोई वच्चा न मरा हो। उ० आजकल वहुत कम औरतें अछूती कोख की हैं।

अटकल पच्चू–१ मनगढत। उ० अटकल पच्चू वाते कहने से क्या लाभ? २ कोरे अनुमान पर आधारित वात। उ० तुमने देखा है या अटकल पच्चू कह रहे हो।

अटकल पच्चू हाँकना–मनगढत या अनुमान मे लम्वी-चौडी वातें कहना। उ० अटकल पच्चू हाँकने वाले का कौन विश्वास करेगा?

अटकल पच्छू–दे० 'अटकल पच्चू'।

अटकाना–फँसाना, उलझाना। उ० सव रुपया तो तुम अटकाए हो, मैं दूँ तो कहाँ से?

अटकाव–सहारा। उ० इस पेड पर चढने के लिये आपका थोडा भी अटकाव मेरे लिये काफी है।

अटपट वोलना–१ अडवड कहना। उ० यार तुम तो निरे मूर्ख हो सवसे अटपट वोला करते हो। २. गाली देना। ३ विना समझे वूझे कहना। उ० अटपट वोलने से चुप रहना अच्छा है।

अटवाटी-खटवाटी या अटवास-खटवास लेकर पडना–वेकार पडा रहना, काम-काज छोड कर पडा रहना। उ० नौजवान के लिए अटवाटी खटवाटी लेकर पडा रहना ठीक नही।

अटेरन कर देना–दाव मे डाल कर चकरा देना। उ० तुमने तो उसे अटेरन कर दिया।

अटेरन होना–वहुत दुवला-पतला होना। उ० वीमारी से वह अटेरन हो गया है।

अट्ट-सट्ट–१ इधर-उधर की। उ० लाभ-हानि का ध्यान दिये विना अट्ट-सट्ट मत खाओ। फिर पड जाओगे। २ अनुचित सवध। उ० उन दोनो मे अट्ट-सट्ट है।

अट्टहास करना–वहुत जोर से हँसना। उ० हर समय अट्टहास करना असभ्यता है।

अठखेलियाँ करना–१ खेल करना, खेलवाड करना। उ० कृष्ण सखियो से अठखेलियाँ किया करते थे। २ मजाक करना। उ० हर समय अठखेलियाँ करना अच्छा नही लगता।

अठखेलियाँ सूझना–मस्ती सूझना, मजाक सूझना। उ० मित्र तुम्हे तो हर समय अठखेलियाँ ही सूझा करती है।

अड्डा जमाना–रोज ही रहने लगना, हर वक्त जमा रहना। उ० ऐसे लोगो का यहाँ अड्डा जमाना ठीक नही। उन्हे मना कर दो।

अड्डे पर आना–ठीक रास्ते पर आना।

अडंगा लगाना–अडचन डालना, रोकना। उ०

आपका हर एक काम मे अडगा लगाना ठीक नही। कभी आप गहरे चक्कर मे पड़ जायगे।

अडचन डालना—रुकावट डालना। उ० तुम मेरे हर एक काम मे अडचन डाला करते हो। आखिर आदमी हो या शैतान।

अडतल पकडना—१. शरण मे जाना। उ० अन्त मे उसे तुम्हारी अडतल पकडनी ही पडी। २ बहाना करना। उ० अडतल पकडने से क्या लाभ? अरे साफ इन्कार ही कर देते।

अडतल लेना—दे० 'अडतल पकडना'।

अडियल टट्टू—रुक-रुक कर काम करने वाला। उ० ऐसे अडियल टट्टू से काम पडा है कि काम इस वर्ष तो खतम होने का नही।

अडिया करना—जहाज के लगर की रस्सी खीचना। उ० अडिया करना आसान काम नही है। हाथ भर जाता है।

अडे पर काम आना—दु ख मे काम आना। उ० अपने ही आदमी अडे पर काम आते हैं।

अडोस-पडोस—दे० 'पास-पडोस'।

अडोसी-पडोसी—पडोसी इत्यादि। उ० अडोसियो-पडोसियो को तो खिला दो।

अढाई चावल की खिचडी अलग पकाना—दे० 'ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना'।

अढाई दिन की हुकूमत—थोडे दिनो का अधिकार। उ० महाशय जी आपकी अढाई दिन की हुकूमत है, जो मन चाहे कर लें। मगर बाद के लिए होशियार रहिएगा।

अतिरजित करना—खूब लम्बी-चौडी कहना। उ० तुम हर एक बात को अतिरजित करके कहते हो।

अतिसार होकर निकलना—दस्त के रास्ते निकलना। उ० हमारा जो कुछ तुमने खाया है वह अतिसार होकर निकलेगा।

अतीत की मिट्टी खोदना—बीती या पुरानी बातो को याद करना या सुनाना।

अथाह मे पडना—विपत्तियो मे पडना। उ० अथाह मे पडने पर सच्चा मित्र ही मदद करता है।

अथ से इति तक—शुरू से अन्त तक। उ० अथ से इति तक देखने के बाद ही इस पुस्तक के बारे मे कुछ कहा जा सकता है।

अटक जाना—डर जाना। उ० यह दिल का दौरा नही है, थोडा अटक गया है।

अदक समाना—डर जाना, भय समाना। उ० उसके हृदय मे अदक समा गई। रात मे वह यहाँ नही आ सकता।

अदब करना—आदर करना। उ० मैं हर समय अपने से बडो का अदब करता हूँ।

अदन का रास्ता लेना—मर जाना। उ० अब क्या सिंगार-पटार करूँ, अब तो अदन का रास्ता लेने का वक्त आया।

अदला-बदली—हेर-फेर, पहले का दूसरे स्थान पर और दूसरे का पहले स्थान पर आना। उ० अदला-बदली करके रक्खो तो शायद ऊँचाई ठीक हो जाय।

अदा करना—पालन करना, पूरा करना। उ० सबको अपना फर्ज अदा करना चाहिये।

अदालत करना—मुकदमा लडना। उ० अदालत न करो, व्यर्थ मे रुपया बरबाद होगा।

अदालत होना—मुकदमा चलना। उ० उस पर अदालत हो गई है।

अदालती कोड़ा—बहुत मुकदमेबाज।

अधकचरी बात—अनिश्चित या अप्रामाणिक बात।

अधभेसर होना—मूर्ख होना। उ० वह तो बडा अधभेसर है, उसकी राय लेकर क्या करोगे?

अधर चबाना—गुस्सा के कारण दाँतो से ओठ दबाना। उ० उसे मैंने कभी भी अधर चबाते न देखा। पता नही वह इन्सान है या देवता।

अधर मे झूलना—१ अधूरा पडना, पूरा न होना। उ० यह काम अधर मे झूल रहा है, किसी तरह पूरा कर देते। २ दुविधा मे पडना। उ० किस लिए अधर मे झूले हो? जो करना हो जल्दी करो।

अधर मे पडना—दे० 'अधर मे झूलना'।

अधर मे लटकना—दे० 'अधर मे झूलना'।

अधूरा कर देना—बलहीन या दुर्बल कर देना। उ० चार दिन के बुखार ने ही उसे अधूरा कर दिया।

अधूरा जाना—बिना समय के गर्भपात होना। उ० भाई उसकी तकदीर ही खोटी है, इसे लेकर उसके तीन बच्चे अधूरे गये है।

अधूरा होना—१ बिना समझ के होना। उ० आज मैं उस समाचार से अधूरा हो गया हूँ, कोई भी बात समझ मे नही आ रही है। २ आधा बल होना। उ० स्वर्गीय पटेल के बिना नेहरू जी अधूरे हैं।

अधोड़ी तनना—अच्छी तरह पेट भर जाना।

उ० इस कन्ट्रोल मे बहुतो की अधोडी नही तनती ।

अनकही देना—अवाक् रहना, मौन हो जाना । उ० सूर अनकही दै गोपिन सो, स्रवन मूँदि उठि धायो ।—सूर ।

अनखिली कली—दे० 'कच्ची कली' ।

अनखुन खोजना—झगडा आदि करने के लिये जबर्दस्ती बहाना खोजना । उ० यदि यो मौका नही मिलता तो अनखुन खोज कर ही उसे एक दिन मारो ।

अनजान बनना—जानते हुए भी न जानने वाला बनना । उ० भाई तुम्हारी यह आदत ठीक नही कि, दूसरे के काम पर अनजान बन जाते हो ।

अनबन रहना—न पटना । उ० जब एक जगल मे दो शेर हैं तो अनबन रहना भी आवश्यक है ।

अनरस बोलना—प्रेम से बात न करना । उ० उसके यहाँ कौन जायेगा ? सभी से अनरस बोलता है ।

अनसुनी करना—बात न सुनना, ध्यान न देना । उ० किससे कहे ? सभी तो अनसुनी कर रहे है ।

अनी पर अडना—मरना, कटना ।

अनी पर कनी खाना—आन पर हीरा की कनी चाटकर आत्महत्या करना ।

अनोखा गुल खिलना—१ विचित्र बात होना । उ० उनके पत्र आने से एक अनोखा गुल खिल गया । २ विचित्र अफवाह या खबर उडना । उ० आज चार दिन से शहर मे अनोखे गुल खिल रहे हैं ।

अन्न अग न लगना—मोटा न होना । उ० मैं कितना भी खाता हूँ, पर अन्न अग ही नही लगता ।

अन्न का कन्न करना—१ किसी चीज को खराब करना । उ० तुम्हे तो बस अन्न का कन्न करना आता है । २ अच्छी रसद से खराब भोजन बनाना । उ० ऐसी औरत है कि अन्न का कन्न कर डालती है ।

अन्न का सन्न होना—अन्न मे ही शक्ति होना । उ० फल-दूध से ही ताकत नही आएगी । कुछ रोटी-ओटी खाओ । जानते नही अन्न मे ही सन्न है ।

-जल उठना—रहने का सयोग न रहना, ...िविका का न रहना । उ० मालूम होता है ... तुम्हारा यहाँ से अन्न-जल उठ गया है, नही तो उनकी मजाल नही थी कि हटा देते ।

अन्न-जल करना—१ जलपान करना । उ० भाई बहुत दिन पर आये हो, कुछ अन्न-जल तो कर लो । २ खाना-पीना । उ० उसके यहाँ गया तो अवश्य था, किंतु अन्न-जल करने का मौका ही नही मिला, नही तो भला यो कैसे आता ?

अन्न लगना—खाना लगना, खाने का रस शरीर मे मिलना । उ० सेत का अन्न लग गया है, इसी से बात नही करते । तुम्हे ससुराल का अन्न नही लगता, जब भी जाते हो दुबले होकर आते हो ।

अपनपा खोना—अहकार छोडना ।

अपनपा पाना—अपने को समझना ।

अपना उल्लू कहीं नहीं जाना—किसी का नुकसान हो या फायदा अपना मतलब निकल ही आना । उ० उनके मरने से क्या हुआ ? जब तक उनकी स्त्री है, अपना उल्लू कही नही गया ।

अपना उल्लू सीधा करना—अपना काम निकालना । उ० अपना उल्लू सीधा करने के लिए लोग गदहे को भी दादा कहते है ।

अपना करना—अपना बनाना, घनिष्ठता स्थापित करना । उ० मनुष्य अपने व्यवहार से सभी को अपना कर सकता है ।

अपना कर लेना—दे० 'अपना लेना' ।

अपना कान देखे बिना कौए के पीछे दौडना-किसी के कहने से वास्तविक स्थिति को जाने बिना प्रयत्नशील होना ।

अपना काम करना—अपना प्रयोजन निकालना । उ० सभी तो अपना काम करते है, दूसरे के लिए कौन परीशान होता है ?

अपना किया पाना—कर्म का फल पाना । उ० दुनिया मे सभी अपना किया पाते हैं । यदि ऐसा न हो तो कोई किसी को भला रहने न दे ।

अपना गीत गाना—१ अपनी बात कहना । उ० आप मे यह बडी बुरी आदत है कि आप हर समय अपना गीत गाते रहते है । २ अपनी बडाई करना । ३ अपना गीत गाते तुम्हे शर्म नही आती ?

अपना घर समझना—बिना सकोच रहना । उ० जब तक यहाँ रहना हो, इसे अपना घर समझो ।

अपना टका सीधा करना—१ किसी तरह रुपया कमाना । उ० ससार मे बहुत से लोग ऐसे है जो बेईमानी और ईमानदारी को कुछ नही जानते । उन्हे तो केवल अपना टका सीधा

करन की धुन रहती है। २ कही से फँसा रुपया निकालना। उ० उम्मीद तो नही थी पर डरा-धमका कर मैंने अपना टका सीधा कर लिया।

अपना ठिकाना करना—१ अपने रहने का प्रवन्ध करना। २ अपनी जीविका का इतजाम करना। ३. अपना काम या अपनी नौकरी लगाना। उ० अपना ठिकाना कर लूँ, तो तुम्हारे लिए भी कुछ कर दूँगा।

अपना तमाचा अपने मुँह पडना—दूसरे की हानि करने के यत्न मे अपनी हानि कर लेना।

अपना दिल हाथ मे रखना—अपने को काबू मे रखना। उ० जरा अपना दिल हाथ मे रक्खो नही तो किसी दिन जूते खाओगे।

अपना-पराया अपना-दूसरा, शत्रु-मित्र, मेरा-तेरा। उ० छोटे आदमियो का अपना-पराया बहुत आता है।

अपना राग अलापना—दे० 'अपना गीत गाना'।

अपना राग गाना—१ अपने ही मतलब की कहना। २ दूसरो की अनसुनी कर अपनी ही सुनाए जाना। उ० ये बुड्ढे तो हर वक्त अपना ही राग गाते हैं।

अपना रास्ता लेना—अपना काम करना।

अपना रुपया खोटा होना—दे० 'अपना सोना खोटा होना'।

अपना लेना—अपना बना लेना। उ० भारत का बच्चा-बच्चा जब अपने पडोसी को भी अपना लेगा, तभी कल्याण सभव है।

अपना सा करना—शक्ति भर उठा न रखना। उ० क्या करूँ, अपना सा बहुत किया पर वह आ न सका।

अपना-सा मुँह लेकर चले या लौट जाना—लज्जित होकर चले जाना।

अपना-सा मुँह लेकर रह जाना—शरमिन्दा हो जाना। उ० लडाई तय करने मैं वहाँ गया तो था किंतु जब मेरी कुछ न सुनी गई तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाना पडा। आज तो मैंने ऐसी लगती बात कही की वे अपना-सा मुँह लेकर रह गए।

अपना सोना खोटा होना—अपने व्यक्ति या अपनी मे दोष वस्तु होना।

अपनी-अपनी गाना—१ सबका विचार भिन्न-भिन्न होना। उ० अपनी-अपनी गाने से कोई बात तय नही हो सकती। २ अपनी ही अपनी सुनाना। उ० सभी तो अपनी-अपनी गा रहे हैं, आखिर सुनें तो किसकी-किसकी?

अपनी-अपनी देखना—केवल अपना ही अपना या अपने स्वार्थ का ख्याल करना। उ० जब सभी अपनी-अपनी देखते हैं, तो मैं भी वही करूँगा।

अपनी अपनी पड़ना—सबका स्वार्थी होना। उ० यहाँ सभी को अपनी-अपनी पडी है तो मैं ही क्यो प्राण दूँ?

अपनी आँख से देखना—अपने दृष्टिकोण से विचार करना।

अपनी ओटना—अपनी ही बात करना। दूसरे की न सुनना। उ० तुम तो बस अपनी ओटते हो। आखिर मुझे भी कुछ कहने दोगे?

अपनी ओसाना—अपनी ही बात करते जाना और दूसरे की न सुनना। उ० तुम तो अपनी ओसाने लगते हो जैसे तुम्हारा मुँह ही नही थकता।

अपनी खचाना—दूसरे के तर्क को न सुन कर अपनी बात पुष्ट करते जाना। उ० सूर प्रभु अपनी खचाई रही निगमन जीति।

अपनी ओर निहारना—अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखना। उ० अपनी ओर निहारे बिना, तुमने यह कर डाला। कोई भी इसे अच्छा नही कहेगा।

अपनी खाट के नीचे देखना—अपना दोष देखना।

अपनी खाल मे मस्त रहना—अपनी हालत मे प्रसन्न रहना। उ० जो अपनी खाल मे मस्त रहता है, वही सुखी है।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—अलग रहना, सब के साथ न चलना। उ० भाई यदि सब लोग अपनी खिचडी अलग पकाएँगे तो देश की उन्नति हो चुकी।

अपनी खुशी से जीना—दे०'जीना अपनी खुशी से'।

अपनी गली का शेर होना—अपने क्षेत्र या हल्के मे बली होना।

अपनी गाँठ का—दे० 'अपनी गिरह का'।

अपनी गाँठना—अपना मतलब निकालना। उ० अपनी गाँठने मे तो आप बडे तेज है।

अपनी गाना—दे० 'अपनी ओसाना'।

अपनी गिरह का—अपनी जेब का, अपने पास का। उ० अपनी गिरह का एक पैसा भी न जाय, तो कौन नही दानी बनना चाहेगा?

अपनी गुड़िया सँवार देना—१ अपनी शक्ति के अनुसार बेटी की शादी कर देना। उ० जहाँ तक बन पडता है, सभी अपनी गुडिया सँवार देते है। २ अपनी चीज सुन्दर बनाना।

अपनी चलाना—दे० 'अपनी गाना'।

अपनी जांघ का सहारा होना—अपने साधनो का भरोसा होना।

अपनी ढाई ईंट की मस्जिद अलग उठाना—दे० 'अपनी ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना'।

अपनी ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना—अपनी राय सबसे अलग रखना। उ० सबको अपनी ढाई चावल की खिचडी अलग पकानी है, तो साझे का काम हो चुका।

अपनी नाक काट कर या कटा कर दूसरे का शकुन बिगाडना—किसी की थोडी हानि करने के लिए अपनी बहुत बडी हानि कर डालना। मूर्खता करना।

अपनी नींद सोना—१ निश्चिन्त रहना। उ० बडे आदमियो को अपनी नीद सोना भी नसीब नही होता। २ मन के अनुसार सोना। उ० क्या करूँ मेरा जीवन ऐसा दुखमय हो गया है कि आज तक कभी अपनी नीद नही सोया।

अपनी नींद सोना अपनी भूख खाना—दे० 'अपनी नीद सोना अपनी नीद उठना'।

अपनी नींद सोना अपनी नींद उठना—किसी से मतलब न रख कर आजादी और आराम से दिन बिताना। उ० आपका क्या है, आप तो अपनी नीद सोते हैं और अपनी नीद उठते है।

अपनी बात का एक—बात का सच्चा, वादे का पक्का। उ० दुनिया मे बहुत कम व्यक्ति अपनी बात के एक होते हैं।

अपनी बात पर आना—ज़िद् पकडना, हठ करना। उ० आप लडको की तरह हर घडी अपनी बात पर क्यो आ जाया करते हैं?

अपनी बिल्ली का खौंखियाना—अपने ही व्यक्ति का नाराज़ होना।

अपनी बीती—अपने पर सही हुई, अनुभूत। उ० मैं अपनी बीती आपसे क्या कहूँ? सुनेंगे तो विश्वास न होगा।

अपनी बालियो पर आना—दे० 'अपनी वाली पर आना'।

अपनी वाली पर आना—अपनी ज़िद्द और हठ पर आना। उ० अपनी ही वाली पर आना था, तो पचो को क्यो बुलाया?

अपनी हाँकना—दे० 'अपनी ओटना'।

अपने आगे किसी को कुछ न गिनना—अपने को बडा या बुद्धिमान तथा अन्य सभी को नाचीज या मूर्ख समझना।

अपने को उड़ेलना—अपनी सारी बातें कहना।

अपने को खोना—१ आत्म-विस्मृत होना। २ अहकार छोडना ३ किसी काम या बात मे अपने को पूणत तल्लीन करना।

अपने को खाना—अपनी ही हानि करना।

अपने को लाट समझना—अपने को बडा समझना। उ० वह अभी कल तक पैसे-पैसे का मुहताज था, आज चार पैसे पाने लगा तो अपने को लाट समझता है।

अपने ख्याल मे मस्त रहना—दूसरे की तनिक भी चिंता न करना।

अपने ख्याल मे रहना—अपने सिवा किसी की भी फिक्र न करना। उ० घर के मालिक का हर समय अपने ख्याल मे रहना उचित नही।

अपने गिरह का कुछ न जाना—अपना कुछ भी खर्च न होना। उ० अपने गिरह का कुछ न जाय तो मुझे चलने मे कोई एतराज नही।

अपने गिरेबान मे मुंह डालना—अपनी हैसियत या योग्यता आदि का ध्यान करना। उ० हर एक आदमी को अपने गिरेबान मे मुँह डाल कर काम करना चाहिये।

अपने चलते—भरसक, यथासाध्य। उ० अपने चलते कोशिश करूँगा, चाहे काम हो या न हो।

अपने टिक्के लगाना—अपने ही मतलब और गरज़ की बात कहना। उ० अपने टिक्के लगाना था तो मुझे क्यो बुलाया?

अपने ढग का—विचित्र। उ० यह मकान अपने ढग का है।

अपने तईं खींचना—अपना लाभ चाहना। उ० सर्वदा अपने तई खीचना उचित नही, कुछ परोपकार भी सीखो।

अपने तक रखना—किसी से न कहना। उ० कृपया मेरी बात अपने तक रखियेगा।

अपनेपन पर आना—अपने बुरे स्वभाव के अनुसार काम करना। उ० अपनेपन पर आओगे तो यही परिणाम होगा।

अपने पर आना—किसी विपत्ति या समस्या का सामना होना। उ० दूसरे को सीख सभी देते है पर जब अपने पर आती है तो सब कुछ भूल जाता है।

अपने पाँव मे आप कुल्हाड़ी मारना—जानकर अपनी बुराई करना, जान-बूझकर सकट मे पडना। उ० आप उससे झगडा करके अपने पाँव मे आप कुल्हाडी मार रहे है। अब भी चेत जाइए।

अपने पैरो पर खड़ा होना—स्वावलम्बी होना। जीविका-उपार्जन करने योग्य बनना। उ०

आजकल के लडके अपने पैरो पर खडा होना जानते ही नही ।

अपने फैंज को पहुँचना—अपने कर्म का उचित फल पाना। उ० घबराइए नही, अपने फैंज को पहुँचेंगे तब पता चलेगा।

अपने भावें—अपने अनुसार। उ० अपने भावे तो मैंने कोई वात उठा नही रक्खी, काम न हुआ तो मैं क्या करूँ ?

अपने मुंह मियां मिट्ठू वनना—अपनी वडाई आप करना। उ० अपने मुँह मियाँ मिट्ठू वनना गँवारो का ही काम है।

अपने मुंह मे थप्पर मारना—अपना अहित या अपनी वढता भी कराना।

अपने सिर ओढना या लेना—अपने ऊपर लेना। उ० तुम विलकुल न डरो। मैं सारा दोष अपने सिर लेने को तैयार हूँ।

अपने से—शक्ति के अनुसार। उ० मैंने अपने से सब कुछ किया, वह न आ सका तो मैं क्या करूँ ?

अपने से वाहर होना—दे० 'आपे से वाहरहोना'।

अपने हक मे कांटे बोना—अपनी बुराई आप करना। उ० उस चोर आदमी को अपने घर मे रख कर मैं अपने हक मे काँटे नही वो सकता।

अपने हक मे जहर या विष बोना—दे० 'अपने हक मे काँटे वोना'।

अपने हाथो—स्वय।

अपने हाथो अपनी इज्जत की कब्र खोदना—स्वय अपनी इज्ज़त वर्वाद करना।उ० आपने मुझसे झगडा करके अपने-हाथो अपनी इज्जत की कब्र खोदी है। अव परिणाम देखने के लिए होशियार हो जाइए।

अपने हाथो कब्र खोदना—अपनी मृत्यु का स्वय कारण बनना। उ० यह क्या अपने हाथो कब्र खोद रहे हो ? वह यहाँ आकर क्या तुम्हे रहने देगा ?

अपने हाथो कुआँ खोदना—दे० 'अपने हाथो कब्र खोदना'।

अपने हाल मे न रहना या होना—होश मे न रहना। उ० कभी तो वह अपने हाल मे रहता ही नही, क्या कहूँ और क्या न कहूँ ?

अफर कर चलना—अकड कर चलना। उ० छोटे आदमियो के पास थोडा भी पैसा हो जाता है तो अफर कर चलते हैं।

अफलातून समझना—बहुत योग्य, बडा या तीस-मार खाँ समझना।

अफलातूनी करना—डीग हाँकना। उ० क्या अफलातूनी करता है, मैं तेरी तीन पुश्त से परिचित हूँ।

अफवाह उडाना—झूठी खबर फैलाना। उ० युद्ध नीति मे अफवाह उडाना भी बडा काम करता है।

अफवाह गर्म होना—बहुत चर्चा होना।

अवका—इस समय का। उ० अब का ज़माना पहले की अपेक्षा बहुत खराब है।

अवकी—इस बार। उ० अबकी हराना तो तुम्हे कुछ समझूंगा।

अव जाकर—इतनी देर बाद। उ० महीनो से काम मे लगा था, अव जाकर तो समाप्त हुआ है।

अव तव करना—बहाना करना, हीला-हवाला करना। उ० कोई भी चीज़ उससे माँगो वह अव-तव करने लगता है।

अव-तव होना—१ परीशान होना। उ० मारे गर्मी के अव-तब हो रहा है। २ मरने के करीव होना। उ० वह तो अब-तब हो रहा है। अब दवा देने से क्या होगा ?

अव भी—इस समय भी, इतने पर भी। उ० इतनी हानि उठाई, पर अव भी नही चेतते !

अ व स जानना—दे० 'क ख ग जानना'। [यह To know A B C का ही अनुवाद है।]

अवसे—आगे, भविष्य मे। उ० अबसे वह ऐसा काम नही करेगा।

अवे-तवे करना—१ रेरी मारना। २ असभ्यता से बाते करना। उ० पढे-लिखे आदमी को अवे-तवे करना उचित नही। ३ गाली देना। उ० अवे-तवे करोगे तो जवान खीच लूंगा।

अवे-तवे बकना—दे० 'अवे-तवे करना'।

अब्तर करना—बिगाडना, खराब करना। उ० क्यो उसकी इज्ज़त अब्तर करते हो ?

अब्र उठना—वादल से आसमान का भर जाना। उ० अब्र उठ रहे हैं, पानी वरसेगा।

अभयदान देना—रक्षा का वचन देना। उ० जब उन्होंने अभयदान दे दिया तो डरना क्या ?

अभय देना—दे० 'अभय दान देना'।

अभय वचन देना—दे० 'अभय दान देना'।

अभय बाँह देना—दे० 'अभय दान देना'।

अभिनय करना—तमाशा करना, स्वाँग रचना, नकल उतारना। उ० आपका सर सचमुच दर्द कर रहा है, या अभिनय कर रहे है ?

अमचुर हो जाना—दुवला-पतला हो जाना। उ० आप तो दो दिन के उपवास मे ही अमचुर हो गये।

अमल-पानी करना—नशा सेवन करना। उ० अच्छी तरह अमल पानी कर लो, आज वहुत चलना है।

अमान माँगना—रक्षार्थ प्रार्थना करना। उ० अमान माँग रहा है, हटाओ जाने भी दो।

अमृत का घड़ा—अमूल्य चीज़। उ० अमृत का घडा नही लाए हो। इतनी शेखी मत बघाडो।

अम्मर की घरिया छीनना—कोई वहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण चीज़ छीनना। उ० अम्मर की घरिया नही छीन रहा है, जाने भी दो।

अम्मर की घरिया पीना—अमर होना, मृत्यु को जीत लेना। उ० अम्मर की घरिया पीकर तो आए नही हो, जो कुछ करना हो जल्दी कर डालो।

अरक-अरक होना—पसीने से तरवतर होना। उ० धूप मे चलने से वे अरक-अरक हो गए है।

अरकस-वथुआ गिनना या समझना—दे० 'गाजर मूली समझना'।

अरकस-वथुआ वटोरना—वेकार चीज़ो का सग्रह करना।

अरण्य रोदन—ऐसा कहना, जो निरर्थक हो, जिसे कोई न सुने या सुनकर भी अनसुनी कर दे।

अरमान आना—१ दुखी होना, पछताना। उ० हज़ारो खून करके भी अरमान नही आयेगा। तुम इन्सॉ हो। २. इच्छाओ का पैदा होना। ३ घमड होना।

अरमान ठडे पड़ना—इच्छाओ का जहाँ-का-तहाँ दवा रह जाना। उ० पत्नी के मरते ही अर-मान ठडे पड गये। अव तो जीना भी भार ही है।

अरमान दिल मे रह जाना—मन की वात मन ही मे रह जाना।

अरमान निकालना—इच्छा पूरी कर लेना। उ० अपने अरमान निकाल लो, कौन जाने फिर वक्त मिले या नही।

अरमान भरा होना—१. जोश या उमग मे होना, उत्सुक होना। उ० यह वडा अरमान भरा लडका है, देखें कैसा होता है ? २ इच्छाओ से भरा होना। उ० अभी क्या, अभी तो मेरा दिल अरमान भरा है।

अरमान रह जाना—दिल की दिल मे रह जाना, हविश पूरी न होना। उ० तलवार खूँ मे रग लो, अरमान रह न जाये। 'विस्मिल' के सर पर कोई एहसान रह न जाय।

अरमान रहना—१ इच्छा होना। उ० अरमान रहे जव तक तुम थी, तुम गई और अरमान गए। २ इच्छा पूरी न होना।

अरमान सिराना—दे० 'अरमान ठडे पडना'।

अरमानो पर पाला पड़ना—इच्छाओ का जहाँ-का-तहाँ रह जाना।

अर्धचन्द्र देना—गर्दन पकड कर वाहर निकालना। उ० अर्धचन्द्र दूँ या अपना रास्ता लोगे।

अलंग पर आना या छा जाना—घोडी का मस्ताना। उ० तुम्हारी घोडी अलग पर आ गई है।

अलख जगाना—१ पुकार कर भगवान का नाम लेना। उ० अव तुम चुपचाप अलख जगाओ। २ भगवान के नाम पर भीख माँगना। उ० भारत मे अलख जगाने वालो की कमी नही।

अलल वछेडा—अनुभवहीन। उ० अभी तो वेचारा अलल वछेडा है, हुआ ही कितने दिन का ?

अलिफ नंगा—दे० 'नगा मादरज़ाद'।

अल्ला का वेटा—१ वहुत वडा। उ० आप तो अपने को अल्ला का वेटा समझते है। २ पैगंवर। उ० आप अल्ला के वेटे नही हैं कि आपका कहा सच मान लिया जाय।

अल्लाह को प्यारा होना—मर जाना।

अवकाश ग्रहण करना—रिटायर होना। उ० इसी महीने वे अवकाश ग्रहण कर रहे हैं।

अवटि मरना—मारे-मारे फिरना। उ० रामचन्द्र वहुत दिनो तक जगलो मे अवटि मरते रहे।

अवतार करना—दे० 'अवतार लेना'।

अवतार धरना—दे० 'अवतार लेना'।

अवतार लेना—१ उतरना, पैदा होना, शरीर ग्रहण करना। उ० धर्म की रक्षा के लिए भगवान अवतार लेते है। कलकी नाम से विष्णु अवतार लेंगे। २ मूर्त रूप मे होना, प्रतीक होकर आना। उ० तुमने तो सत्य का अवतार लिया है।

अवतार होना–पैदा होना। उ० भगवान के आज तक २४ अवतार हुए हैं।

अवतारी–१ शरारती। उ० वह बडा अवतारी लडका है। २. ईश्वरीय शक्ति वाला, अलौकिक, चमत्कारी। उ० वह अवतारी काम कर दिखाता है।

अवतारी पुरुष–बडा, श्रेष्ठ, असाधारण। उ० गाधी अवतारी पुरुष थे।

अवधि गिनना–इतज़ार करना।

अवधि देना–दे० 'अवधि बदना'।

अवधि बदना या बद देना–'समय नियत करना'। उ० आज उन्होंने अवधि बद दी, यदि उस दिन तक नही देंगे तो अदालत मे जाना ही होगा।

अवसर चूकना या हाथ से जाना–मौका को हाथ से खो देना। उ० अवसर चूकने पर पछताना बेकार है।

अवसर ताकना–मौका देखना। उ० अवसर ताकने से नही आता।

अवसर मारा जाना–समय निकल जाना। उ० अवसर मारे जाने पर तो आप काम करने चले हैं।

अवसर हाथ आना–सुयोग मिलना।

अवस्था ढलना–बुढापा आना। उ० अब आपकी अवस्था काफी ढल गई।

अव्वल दर्जे का–दे० 'प्रथम श्रेणी का'।

अशर्फियों की लूट और कोयलों पर मुहर लगाना–मूल्यवान वस्तु की परवा न कर व्यर्थ की चीज़ को महत्व देना।

अहंकार का पुतला–बहुत घमडी। उ० रावण अहकार का पुतला था।

अहाता करना–घेर देना। उ० उस जगह को अहाता कर दो नही तो नगरपालिका ले लेगी।

अहिरचपाट होना–पूरा मूर्ख होना। उ० वह तो अहिरचपाट है, उसके कहने का ख्याल मत करना।

अहीर होना–मूर्ख होना। उ० तुम तो अहीर मालूम पडते हो।

आ

आँख–नज़र, दृष्टि। उ० मेरी कलम उसी ने चुरायी होगा, इस पर उसकी आँख बहुत दिनों से लगी थी।

आँख अटकना–मोहब्बत होना। आज कल अक्सर लडके-लडकियो की आँखे अटक जाती हैं।

आँख अटकाना–प्रेम लगाना। उ० राह चलते आँख न अटकाओ।

आँख आई हुई होना–दे० 'आँख आना'।

आँख आना–आँख मे दर्द तथा लाली आदि होना। उ० आज चार दिन से मेरी आँख आ गई है।

आँख उघारना–सतर्क या सचेत होना।

आँख उठना–१ दे० 'आँख आना'। २ दया दृष्टि होना। ३ बुरी नज़र उठना, बुरी नज़रो से देखा जाना।

आँख उठाकर न देखना–१ ध्यान न देना। उ० मैं वहाँ आध घटे तक खडा था, पर उसने आँख उठाकर देखा तक नही। २. उपेक्षा करना।

आँख उठाना–१ नुकसान पहुँचाने के ख्याल से देखना, कुदृष्टि से देखना। उ० इन निर्दोषो की ओर आँख न उठाओ। २ देखना। उ० जरा आँख उठाओ तो ज्ञात हो। ३ देखने की हिम्मत करना।

आँख उलझना–आकर्षित होना, प्रेम होना।

आँख उलट जाना–१ पुतली का ऊपर चढ जाना। उ० ज्यो ही वह ज़मीन पर गिरा उसकी आँखें उलट गई। २ मरने के समीप होना। ३ गर्व होना। ४. पुराना भाव न रहना।

आँख ऊँची न होना–लज्जा से आँख ऊपर न उठना। उ० बुरे काम करने वालो की आँखें ऊँची नही होती हैं।

आँख ऊँची रखना–मानदड ऊँचा रखना।

आँख ऊपर न उठना–लज्जा से दृष्टि ऊपर न होना। उ० बुरे काम करोगे तो आँख ऊपर नही उठेगी।

आँख ओझल–ओट मे, आडे। उ० आँख ओझल तो सभी गाली देते हैं, पर सामने कोई नही बोलता।

आँख ओट–दे० 'आँख ओझल'।

आँख कड़आना–१. नीद की झपकी आना। उ० मेरी आँख कडवा रही है, आज मैं पढ नहीं सकता। २. आँखो मे कडुआपन ज्ञात होना या उनका दुखना।

आँख करना–ध्यान देना।

आँख कहीं और दिल कहीं और रहना–१ आँखें दूसरी जगह, दिल दूसरी जगह रहना, ध्यान

न जमना। उ० आँख कही और दिल कही और रहने से तो यह काम न होगा। २ किसी की याद मे मशगूल रहना।

आँख का अन्धा गाँठ का पूरा—धनवान किंतु बेवकूफ।

आँख का आँजन—मात्रा मे बहुत थोडा। उ० वहाँ से भी क्या आया है, आँख का आँजन है ?

आँख का काँटा—खटकने वाला व्यक्ति।

आँख का तारा—बहुत प्रिय व्यक्ति।

आँख-कान खुला रखना—होशियार रहना। उ० राम तुम्हारे बहुत से दुश्मन है। तुम्हे हर समय आँख-कान खुले रखने चाहिये।

आँख-कान देना—देख-सुनकर ध्यान देना।

आँख-कान से दुरुस्त होना—अच्छा और बिना ऐब का होना। उ० कुछ भी हो, दुलहा आँख-कान से तो दुरुस्त है।

आँख का पानी—हया, लज्जा।

आँख का सच्चा—बुरी दृष्टि से न देखने वाला।

आँख का सुरमा—दे० 'आँख का आँजन'।

आँख की पुतली फिरना—आँखो का मरते समय पथरा जाना। उ० डाक्टर को बुलाने से क्या लाभ, उसके आँखो की तो पुतली फिर गई।

आँख की पुतली समझना—बहुत प्रेम करना। उ० मैं अपने छोटे भाई को आँख की पुतली समझता हूँ।

आँख की पुतली होना—बहुत प्यारा होना। उ० बुढिया का [illegible] बेटा उसकी आँख की पुतली है।

आँख की हया—१ किसी की लाज। उ० कम से कम बडो के आँख की तो हया करो। २ किसी का लिहाज, देखने की लाज, शील। उ० केवल तुम्हारे आँख की हया है, नही तो इसे मजा चखा देता। ३ लाज, शर्म। उ० उसकी आँख की हया तो चली गई है।

आँख खुलना—१ होशियार होना। स्थिति को समझना। उ० इतना जुल्म सहने के बाद भारतीयो की आँख खुली है। २ आराम होना। उ० डाक्टर के आते ही उसकी आँख खुल गई। ३ नीद टूटना। उ० आज तो लडके की आँख खुल गई।

आँख खोलना—१ ख्याल करना। उ० आँख खोल कर देखो। २ आँख का इलाज करना। उ० तुमने तो बहुत सी आँखें खोली होगी। ३ चेत करा देना, होश करा देना। उ० उसकी आँख खोल दो, नही तो पछतायेगा।

आँख गड जाना—दे० 'आँख गडना'।

आँख गडना—१ लालच होना। उ० उसकी आँख इस चीज पर गडी है। २ कुदृष्टि होना। उ० होशियार रहो, सरकार की आँख तुम्हारे पर भी गडी है।

आँख गड़ाना—१ टकटकी जमाना, नज़र जमाना। उ० सूरज की तरफ आँख गडा कर कोई नही देख सकता। २ लालच करना। उ० इस चीज़ पर बेकार आँख न गडाओ, मैं दे नही सकता। ३ बुरी दृष्टि करना। उ० खबरदार, उस लडकी पर आँख न गडाना। ४ ध्यान मे रखना।

आँख गरम करना—किसी की सुन्दरता देख कर आँखो को ठंडी करना। उ० आप यहाँ आँख गरम करने आते है या कीर्तन करने ?

आँख घुलना—चार आँखें होना। उ० दोनो की आँखो के घुलते ही प्रेमाश्रु टपक पडे।

आँख चढना—१ आँखे उनीदी तथा लाल होना। उ० मैं दो रात का जगा हूँ, मेरी आँखे चढी हुई है। बुखार के कारण उसकी आँख चढी हुई हैं। २ क्रोध के लक्षण दिखाई देना। उ० उनकी आँख चढते देर ही नही लगती।

आँख चढाना—गुस्सा करना। उ० बच्चे को स्नेह करो, आँखे न चढाओ।

आँख चमकना—प्रसन्न होना।

आँख चरने जाना—सामने की चीज़ दिखाई न देना। उ० क्या तुम्हारी आँखे चरने गई हैं कि तुम्हे किताब नही दिखाई दे रही है।

आँख चार होना—आँख से आँख मिलना। उ० आँख चार हुई और प्रेम पैदा हुआ। इन लडको की दुनिया विचित्र है।

आँख चीर कर देखना—१ ध्यान से देखना। उ० इस कागज पर क्या लिखा है, आँख चीर कर तो देखो। २ घूरना। उ० किसी की ओर यह आँख चीर कर देखने की कौन सी आदत सीख रहे हो ?

आँख चुरा कर कुछ करना—छिप कर कुछ करना। उ० आँख चुरा कर क्यो जा रहे हैं। मैं रोकूँगा थोडे।

आँख चुरा कर देखना—छिप कर देखना। उ० क्या आँख चुरा कर देख रहे हो, क्यो नही सामने आते ?

आँख चुरा जाना–आँख बचाकर निकल जाना। उ० आप आँख चुराकर जाना चाहते थे, पर सयोग से पकड गए।

आँख चुराना–१ धोखा देना, बात से टल जाना। उ० पहले विश्वास देकर समय पर उसने आँख चुरा ली। २ बात करने मे लजाना। ३ शान के कारण किसी की ओर भर आँख न देखना। उ० पद पा गया अब तो अपनो से भी आँख चुराता है। ४ छिपना, सामने न आना, कतराना।

आँख चूकना–जरा भी लापरवाह होना या न देखना। उ० आँख चूकते ही आजकल के नौकर चोरी कर लेते हैं।

आँख चौंधियाना–आँखो मे चकाचौंध छा जाना। उ० सूरज की तरफ देखने से आँख चौंधिया जाती है।

आँख छत से लगना–१ आँखें टँग जाना। २ इतजार मे रात भर जगते बीतना।

आँख छिपाना–१ कतरा कर जाना, बच कर निकल जाना। उ० उस दिन आँख छिपा कर वह निकल गया। २ शर्माना। ३ आमने-सामने न देखना। ४ सामने न होना।

आँख जमना–नजर स्थिर होना। उ० तेज रोशनी के आगे आँख नही जमती।

आँख जमीन से लगना–शर्मा जाना।

आँख जाना–आँख फूटना, अधा होना।

आँख जोडना–प्रेम करना, चार आँख करना। उ० यहाँ तो आँख जोड लो, वहाँ जब भडाफोड करूँगा तो पता चलेगा।

आँख झपकना–नीद आना। उ० अब तुम्हारी आँख झपक रही है।

आँख झुकना–१ आँख नीची होना। उ० कोई बात है जरूर। वह जब भी मुझे देखता है, उसकी आँखे झुक जाती हैं। २ शर्मा जाना।

आँख झेंपना–दे० 'आँख झुकना'।

आँख टँग जाना–मृत्यु निकट आना। उ० अब तो उसकी आँखे टँग गई, डाक्टर को बुलाना बेकार होगा।

आँख टँगना–टकटकी लगाना। उ० उसका वह रूप देखकर मेरी तो आँख ही टँग गई।

आँख टिमटिमाना–झपकी लेना। उ० क्यो आँख टिमटिमा रहे हो, जाकर सो जाओ।

आँख टूटी पड़ना–बहुत नीद आना।

आँख टोरना–शर्मिन्दा होना। उ० नायक को देखते ही नायिका ने आँख टोर ली।

आँख ठडी करना–किसी के दर्शन मे तृप्ति प्राप्त करना। उ० आज प्रदर्शनी मे आँखे खूब ठडी कर लेना, पता नही फिर अवसर मिले या नही।

आँख ठडी होना–१ तृप्त होना। उ० क्या रूप भगवान ने दिया है? देखकर आँखें ठडी हो गई। २ सतोष होना। ३ प्रसन्नता होना।

आँख डबडबाना–आँखो मे आँसू आ जाना। उ० उसे बेरहमी से सिपाही का मारना देखकर मेरी तो आँखे डबडबा आई।

आँख डालना–जल्दी से देखना। उ० केवल आँख डालने से काम न चलेगा, इसमे तो अधिक समय देना पडेगा।

आँख तरसना–किसी वस्तु को देखने की इच्छा होना। उ० मोहन को देखने के लिये मेरी आँखे तरस रही है।

आँख तरेरना–गुस्से मे देखना। उ० तुम्हारा आँख तरेरना बेकार है, तुम मेरा कुछ नही कर सकते।

आँख तले न लाना–कुछ न समझना। उ० लोग छोटो को आँख तले भी नही लाते।

आँख-ताँख निकल जाना–मृत्यु समीप आना। उ० चोट अधिक लगी है, देखने नही आँख-ताँख निकल गई है।

आँख दिखाना–क्रोध करना, बिगडना। उ० आप बात-बात मे क्यो मुझे आँख दिखाते है? नौकर बना लिया है क्या?

आँख देखते–जान-बूझकर, सामने। उ० आँख देखते मैं यह पाप का काम नही होने दूँगा।

आँख देखा–अपने देखा, खुद देखा। उ० किसी से सुनकर मैं नही कह रहा हूँ, यह आँख देखी घटना है।

आँख दौडाना–हर तरफ देखना। उ० मैंने बहुत आँख दौडाई, पर चोर दिखाई न पडा।

आँखें धोई-धुलाई होना–दिल साफ होना। उ० आप उसमे वहम कर रहे। अभी उसकी आँख आपकी ओर से धोई-धुलाई नही हैं।

आँख न उठना–१ शर्म से आँखो का गड जाना। उ० उसने ऐसा काम किया है कि उसकी आँख ही नही उठती है। २ बहुत कमजोरी होना। उ० ज्वर के कारण उसकी आँख नही उठ रही है। ३ आँखो से न देखा जाना।

आँख न खोलना–१ बेहोश रहना, अचेत रहना। उ० बुखार के कारण आज दिन भर उसने आँख न खोली। २ जरा भी ध्यान न देना।

आँख न जमना–दे० 'आँख न ठहरना'।

आँख न ठहरना–१ एक टक न देखा जाना, आँखें एक जगह न टिकना। उ० सूर्य की रोशनी के सामने आँखें नही ठहरती। २. किसी चीज का बहुत चमकीला होना। ३ किसी चीज का अत्यत सुन्दर होना।

आँख न डालना–जरा भी न देखना। उ० वह पराये स्त्री पर आँख भी नही डालता।

आँख न पसीजना–दया न आना। उ० यह दृश्य देखकर भी तुम्हारी आँख नही पसीजती।

आँख न मिलना–लज्जा का अनुभव करना।

आँख नचाना–पुतली इधर-उधर करना।

आँख निकालना–१ गुस्से से देखना। उ० थोडी सी बात पर आँख क्या निकालते हैं? २ आँख फोडना। उ० सच कहता हूँ कि अगर तुम नही मानोगे तो तुम्हारी आँख निकाल लूँगा। ३. आश्चर्य करना। उ० मेरी बात सुनकर वे लोग आँख निकालने लगे।

आँख नीची होना–१ लज्जा पैदा होना। उ० पुरुषो के देखते ही स्त्रियो की आँखें नीची हो जाती हैं। २ सकोच आदि के कारण बराबर न देख सकना। उ० उस दिन मुँह की खाने के बाद वह जब भी मिलता है, उसकी आँखें नीची हो जाती है।

आँख नीली-पीली करना–अधिक नाराज होना। उ० छोटी सी बात के लिये क्यो आँख नीली-पीली करते हो?

आँख नीली-पीली होना–अधिक नाराज होना। उ० न तो आँख नीली-पीली होते देर लगती है और न खुश होते। आखिर तुम आदमी हो या पायजामा?

आँख पटपटा पाना–आँख फूट जाना।

आँख पडना–ख्याल जाना। उ० मौज की बात है, अगर आँख पड गई तो सरकार तुम्हारे लिए कुछ अवश्य कर देंगे।

आँख पथराना–१ आँख थक जाना। उ० आज चार दिन से तुम्हारी राह देखते-देखते मेरी आँखें पथरा गईं। २ मरने के समीप होना। उ० आज तक उसका जीवित होना सदिग्ध है। कल ही उसकी आँखें पथरा गई थी।

आँख पर चढना–१ दृष्टि पर आ जाना, दिखाई देना। उ० वह चीज मेरी आँख पर चढ गई है। २ प्रेम तथा विश्वास होना। उ० तुम तो उसकी आँखो पर चढे हो। ३. अखरना। उ० सबकी आँखो पर चढे हो।

आँख पर तिनका रखना–जान-बूझकर परवाह न करना। उ० आपने अपनी आँख पर तिनका रख रक्खा है, और इसी से चुन्नू दिन-पर-दिन बनता जा रहा है।

आँख पर पट्टी बँधना, आँख पर परदा पडना–१. कम दिखाई देना कुछ न सूझना। उ० आँख पर परदा पडा है कि वह सामने की चीज दिखाई नही देती? २. मूर्ख, लापरवाह या अज्ञानी होगा। ३. बुद्धिभ्रष्ट होना।

आँख पर पलकों का बोझ न होना–अपनो पर व्यय करना न खलना। उ० अरे तुम निस्सकोच ठहरो। आँखो पर कही पलको का बोझ होता है?

आँख पर बिठाना–बहुत आवभगत या इज्जत करना। उ० आँख जिससे देश की ऊँची हुई, क्यो न आँखो पर बिठाएँ हम उसे।

आँख पर रखना–आदर और आराम से रखना। उ० जब भी मैं राम के यहाँ जाता हूँ, वह मुझे अपनी आँख पर रखता है।

आँख पलट जाना–१ गुस्सा हो जाना। उ० कमजोर आदमी की आँख जल्दी पलट जाती हैं। २ दृष्टि बदल जाना, भाव बदल जाना। उ० काम खतम होने के बाद आँख पलट जाना स्वाभाविक ही है।

आँख पसारना–१. दूर तक देखना। उ० मैंने सडक पर बहुत आँख पसारी पर कही मोटर आती दिखाई न पडी। २ किसी के सप्रेम स्वागत के लिए तैयार रहना। उ० आज नेहरू के लिए पूरा इलाहाबाद आँख पसारे है।

आँख पसीजना–आँखो मे आँसू आना। उ० इस बेचारे दुखिया की रुलाई सुनकर मेरी आँखें पसीज गई।

आँख पहचानना–सकेत समझना। उ० मैं तुरन्त आपकी आँख पहचान गया।

आँख पाना–१ आँख का (आँख की रोशनी) फिर से मिलना। उ० भगवान की दया से मैंने आँखें पा ली, यही क्या कम है? २ प्यारी वस्तु का मिलना। ३ इशारा पाना। उ० मैं खूब समझता हूँ, यदि आपकी आँख न पाते

तो यह करने की उनके बाप की भी हिम्मत न पड़ती।

आँख फटना–आश्चर्यचकित होना। उ० आज की घटना देख कर तो मेरी आँखें फट गईं।

आँख फड़कना–भला या बुरा शकुन होना। उ० मेरी आज बाईं आँख फड़क रही है, देखें क्या होता है?

आँख फरकना–दे० 'आँख फड़कना'।

आँख फाड़कर देखना–१ घूर कर देखना। उ० किसी अजनबी की ओर आँख फाड़कर देखना अशिष्टता है। २ प्रेम से देखना। ३ आश्चर्य से देखना।

आँख फिर जाना–दे० 'आँख पलट जाना'।

आँख फूटना–दिखाई न देना। ज्ञान न होना। उ० सचमुच तुम्हारी आँखें फूट गई हैं क्या, जो सारा तेल फैला दिया?

आँख फेरना–विरुद्ध होना। पुराने अनुकूल भाव बदलना। तोताचश्म होना। उ० इस तरह आँखें न फेरो, आखिर मैं भी तुम्हारा हूँ।

आँख फैलाकर देखना–ताज्जुब से देखना।

आँख फोड़ना–१ किसी की प्रतीक्षा करने मे कष्ट उठाना। उ० आज चार दिन से उनकी प्रतीक्षा करते-करते आँख फूट गई। २ आँख की रोशनी खराब करना। उ० दिन-रात सिलाई करके क्यो अपनी आँख फोड़ते हो? ३ अधा कर देना। उ० चोरो ने उसकी आँख फोड़ दी।

आँख बन्द करके काम करना–बेसुध होकर काम करना, बिना ध्यान दिए काम करना। उ० आँख बन्द करके काम करना हो तो मैं नही करवाऊँगा।

आँख बन्द करना–१ बेहोश हो जाना। २ मर जाना। उ० कल शाम को उसने आँख बन्द की, आज उसका लड़का भी चल बसा।

आँख बन्द होना–१ मर जाना। उ० आज सबेरे उसकी बीमारी बहुत बढ गई और १० बजे आँखें बन्द हो गईं। २ बेहोश होना, ३ ध्यान न देना। उ० इस वक्त तो तुम्हारी आँखें बद हैं, पर बाद मे पछताओगे।

आँख बचाना–१ छिपना। उ० आँख बचाकर भाग जाते हो? २ ख्याल बँटना। उ० आँख न बचाओ, नही तो काम खराब हो जाएगा।

आँख बदल जाना–१ सहानुभूति न रहना। उ० जाने क्यो उसकी आँख मेरी ओर से बदल गई है। २ विरुद्ध हो जाना।

आँख बनवाना–१ आँख की दवा करना। उ० अब आपको आँख बनवानी पड़ेगी। २ आँख का आपरेशन करवाना। उ० जाड़े मे आँखें बनवाई जाती हैं।

आँख बरसना–रोना, आँखो से आँसू ढुलकना।

आँख बराबर करना–चार आँखें करना, आमने-सामने देखना, बराबरी मे देखना। उ० वे अगर भलेमानुस होंगे तो कम-से-कम इस ज़िंदगी मे आँखें बराबर नहीं ही कर सकते।

आँख बवा जाना–१. मर जाना। उ० आँख बवा गई, अब ले चलो। २ आश्चर्य-चकित हो जाना।

आँख बहना–आँख से कीचर बहना।

आँख बहाना–रोना।

आँख बिछाना–आदर से स्वागत करना। उ० आपके लिए वह तो आँखें बिछाता है और आप उससे बोलते तक नही।

आँख बैठ जाना या बैठना–आँख के ढेले का भीतर चला जाना, आँख फूट जाना। उ० चेचक की बीमारी मे अक्सर आँख बैठ जाती है।

आँख भर आना–आँखो मे आँसू आना। उ० पिता की मृत्यु पर आँख भर आना तो दूर रहा, उसका चेहरा भी नही उदास हुआ।

आँख भर (कर) देखना–दृष्टि गड़ाकर या अच्छी तरह देखना। उ० मैंने कभी उसे आँख भरकर नही देखा, बात करना तो दूर की बात है।

आँख भर लाना–आँखो मे आँसू ले आना। उ० बात-बात पर आँख भर लाना मर्दों को शोभा नही देता।

आँख भौं चढाना–क्रोध करना। उ० क्या छोटी सी बात पर आँख भौं चढा रहे हो?

आँख भौं टेढी करना–दे० 'आँख भौं चढाना'।

आँख भौं सिकोड़ना–पसन्द न करना। उ० मेरी खरीदी चीजो पर कोई आँख-भौं सिकोड़ेगा तो ठीक न होगा।

आँख मटकाना–१ नाज़ व नखरे करना। उ० वेश्यायें नाच मे खूब आँख मटकाती हैं। २. आँख से इशारा करना। उ० आँख क्यो मट-काते हो, मुँह से कहो।

आँख मारते या मारते-मारते–एक क्षण मे, पलक झपकते।

आँख मारना–१. इशारा करना। उ० उसने

आते ही आँख मारी और हम दोनो चल दिये। उ० तुमने आँखे मार दी नही तो मैं हाथ उठा दिए होना।

आँख मिचकाना—१ इशारा करना। उ० आप का आँख मिचकाना उसने ताड लिया। २ बुरा समझना। उ० हर चीज पर तो आप आँख ही मिचकाते है।

आँख मिलाना—१ आँख लडाना, प्रेम करना। उ० हर जगह आँख मिलाने की आदत अच्छी नही। २ आमने-सामने खडा होना, बराबरी करना। उ० तुम्हारी हिम्मत कि मुझसे आँख मिलाओ।

आँख मूंद कर—बिना सोचे-समझे।

आँख मूंद कर सोना—निश्चित या बिना कुछ किए बैठे रहना।

आँख मूंदना—१ मर जाना। उ० उस बुढिया ने आज आँख मूंद ली। २ ध्यान न देना। उ० आप मेरी बातो पर तो आँख मूंद लिया करते है।

आँख मे आँख डालना—आँख मिलाना, आँखे चार करना। उ० आँखो मे आँखे डालकर वे मान हो गए।

आँख मे कव्वा बैठना—आँख फूट जाना। न दीखना। उ० तुम्हारे आँख मे कव्वा बैठा है क्या, जो दिखाई नही देता? [यह एक गाली है, जिसे स्त्रियाँ ही प्राय देती हैं।]

आँख मे गडना—बुरा लगना। उ० उसका पढना तुम्हारी आँख मे गडता है।

आँख मे पानी न होना—लज्जाहीन होना। उ० आजकल की औरतो के आँख मे पानी नही है।

आँख मे मिर्च का आँजन करना—[illegible] करना। उ० आँख मे मिर्च का आँजन न करो, मैं तुम्हारा काम कर दूँगा।

आँख मे मैल लाना—दिल खट्टा होना या करना। उ० आप [illegible] वात कहते हैं कि मेरी आँखो मे मैल आ जाती है।

आँख मे रखना—बडे ही एहतिआत से रखना। उ० बेटा इस बच्चे को मेरे साथ जाने दो, अपने और लडको की तरह इसे भी आँख मे रखूँगी।

आँख मे टेसू या सरसो फूलना—१ मस्ती मे होना, प्रसन्न होना। २ सभी तरफ अपनी मतवाली वात ही दिखाई पडना।

आँख रखना—ख्याल रखना। उ० मैं जा रहा हूँ, जरा बच्चे पर आँख रखना, कही गिर न जाय। २ मुहब्बत रखना। उ० अच्छा, अब आप भी उस पर आँख रखने लगे हैं।

आँख लग जाना—दे० 'आँख लगना'।

आँख लगना—१ नीद आना। आँखिन आँखि लगी रहे, आँखें लागत नाहिं। २ प्रेम होना। उ० तुम दोनो की आँखें लग गई हैं। आँखिन आँख लगी रहे, आँखें लागत नाहि। ३ किसी चीज को पाने की ताक मे होना।

आँख लगाना—मोहब्बत करना। आँख लगाकर धोखा देना उचित नही।

आँख लगी—प्रेमिका। उ० मैं तुम्हारी आँख लगी को खूब जानता हूँ।

आँख लड जाना—दे० 'आँख लडना'।

आँख लडना—मोहब्बत होना, चार आँख होना। उ० भरे भवन मे आँख लडना तो मैंने यही देखा है!

आँख लडाना—१ नजर मिलाना। उ० दूसरे की स्त्री से आँख लडाना गुनाह है। २ प्रेम करना। उ० अब उससे भी आँख लडाना चाहते हो क्या?

आँख लजाना—लज्जित होना। उ० खडा होते ही जिसकी आँख लजाती है, वह भाषण क्या देगा?

आँख ललचाना—देखने को मन चाहना। उ० आँखें ललचाती ही रह गई, पर वे नही ही आए।

आँख लाल करना—गुस्सा करना। उ० तुम तो विचित्र आदमी हो! थोडी सी बात पर आँख लाल कर लेते हो।

आँख लाल होना—क्रोधित हो जाना। उ० मैंने क्या कहा कि आपकी आँखे लाल हो गई?

आँख लेना—१ दे० 'आँख बदल जाना'। २ अंधा करना। आँख फोड देना। उ० भगवती तुम्हारी आँख लेकर तो छोडेगी।

आँख वाला—होशियार। उ० आँख वाले हर जगह सफल होते है।

आँख सीधी करना—मेल-मिलाप करना। उ० अरे अब चलते समय तो आँख सीधी कर लो।

आँख सीधी होना—मेल होना। उ० अब उन दोनो की आँखें सीधी हो गई।

आँख से आँख जुडना—नजर से नजर मिलना।

आँख से आँख घुलना—नजर से नजर मिलना। उ० अब तो दोनो की रोज आँख से आँख घुलती हैं।

आँख से ओझल होना—गायब होना। कही दूर चला जाना। उ० देखते ही देखते साँप आँख

से ओझल हो गया।

आँख सेंकना—देखने का सुख लूटना। उ० आप यहाँ भाषण सुनने आए हैं या आँख सेकने ?

आँख से नमस्कार करना—आँखें नीची करके या झपका कर नमस्कार करना। उ० आँख से नमस्कार करना सभ्यता के विरुद्ध है। आँख से नमस्कार करने से तो नमस्कार न करना अच्छा है।

आँख से सलाम लेना—घमड के कारण किसी का नमस्कार आँख से ही स्वीकार करना। उ० आजकल उनकी तो पूछो नहीं, अब वे आँख से सलाम ले रहे हैं।

आँख होना—१ जानकारी या ज्ञान होना। उ० तुम्हारे जैसे आदमियो के साथ रह कर तो बिना पढे ही आँख हो जाती है। २ नजर होना। उ० मैं खूब जानता हूँ, उस लडकी पर तुम्हारी आँख है।

आँखें आई हुई होना—आँख आना (एक बीमारी)। उ० मेरी आँखें आई हुई हैं।

आँखें उमडना या उमड आना—१ भीड होना। उ० काग्रेस अधिवेशन मे लाखो आँखें उमड आई हैं। २ दर्शन की बडी आकाक्षा होना। उ० भक्तो की आँखें साधुओ के दर्शन के लिए उमड आती हैं।

आँखें कहीं और दिल कहीं और होना—१ अपने प्रेमी के ध्यान मे लीन रहना। उ० उसका तो अजीब हाल है। आँखें कही और हैं, और दिल कही और। २ ध्यान से न करना। उ० इस पढने से क्या लाभ जब आँखें कही और हैं, और दिल कही और।

आँखें खिल उठना—दे० 'आँखें खिलना'।

आँखें खिलना या खिल जाना—खुश होना। उ० तुम्हे देख कर उसकी आँखे खिल जाती हैं।

आँखें खींचना—ध्यान आकर्षित करना।

आँखें खुल जाना—दे० 'आँखें खुलना'।

आँखें खुलना—१ ज्ञान होना। उ० आपके उपदेश से हम सब की आँखे खुल गई। २ चौकन्ना हो जाना। उ० जब सारा घर लुट गया तो आपकी आँखे खुली। ३ सो कर उठना। उ० ८ बजे तो आपकी आँखें खुलती हैं, आप घूमने कैसे चलेंगे ?

आँखें खुली की खुली रह जाना—१ मर जाना। उ० जो करना हो कर लो, नही तो एक दिन आँखें खुली की खुली रह जायँगी। २ आश्चर्य-चकित रह जाना। उ० इस बात को सुनकर उसकी आँखे खुली की खुली रह गई।

आँखें खोल कर देखना—१ ध्यान से सोचना। उ० आँखे खोल कर देखो तो तुम्हे असली बात का पता चले। २ गौर से देखना। उ० आँखें खोल कर देखो, वहाँ कोने मे साँप बैठा है।

आँखें गीली होना—आँखो मे आँसू आ जाना।

आँखें गुद्दी मे होना या रहना—१ मूर्ख होना। उ० तुम कोई भी काम ठीक से नही करते हो। तुम्हारी तो आँखे गुद्दी मे हैं। २ दिखाई न देना। उ० तुम्हारी आँखें तो जैसे हमेशा गुद्दी मे रहती हैं। उधर से ही आ रहे हो, यह नही नही हुआ कि मुन्नू को उठाते तो आवें। बेचारा कब का रो रहा है।

आँखें गोल हो जाना—आश्चर्य होना।

आँखें चढाना—गुस्सा मे आना। उ० ज़रा सी बात पर आँखे न चढाओ।

आँखें चमकाना—१ आँखो मे इशारा करना। उ० तुम्हारी आँखें चमकाना मै तुरन्त समझ गया। २ शान दिखलाना। उ० आँखें कही और चमकाना, यहाँ तो तुम्हारी रत्ती-रत्ती जानता हूँ। ३ नाज़-नखरे दिखलाना। उ० देखा तुमने ! शीला ने स्कूल जाना शुरू किया कि आँखें चमकाने लगी।

आँखें चार होना—'आँख चार होना'।

आँखें चारो तरफ चकर-मकर करना—१ आँखो का स्थिर न रहना। उ० आपकी आँखें चारो तरफ चकर-मकर कर रही हैं, क्या बात है ? २ चकाचौंध होना।

आँखें चारो तरफ रहना—हर एक बात का ख्याल रखना। उ० मेरी आँखे चारो तरफ रहती हैं, मुझे कोई भुलावा नही दे सकता।

आँखें चारो तरफ होना—दे० 'आँखें चारो तरफ रहना'।

आँखें जमीन से लग जाना—शरमा जाना, आँखें नीची होना। उ० उसी दिन की डाँट के बाद वह जब-कभी मेरे सामने आता है, उसकी आँखें ज़मीन से लग जाती हैं।

आँखें ज़मीन से लगाना या लगा लेना—दे० 'आँखें ज़मीन से लग जाना'। उ० तुम्हे देखकर वह अपनी आँखे ज़मीन से लगा लेता है।

आँखें ज़मीन से सिली होना—शरम से दृष्टि हर समय नीचे रहना। उ० सुशील लडकियो की आँखे हमेशा ज़मीन से सिली हुई रहती हैं।

आँखें जलना–१ दाह पैदा होना। उ० मेरी तरक्की देख कर तुम्हारी आँखें जलती क्यो है? २ कष्ट होना। उ० वह दृश्य याद कर आज भी मेरी आँखें जलने लगती हैं। ३ क्रोधित होना। उ० उसे देखता हूँ तो मेरी आँखें जलने लगती हैं।

आँखें जाती रहना–आँखें फूट जाना।

आँखें जुड़वाना–दिल या आँखो को तृप्त करना। उ० बेटा, आज मरते समय आकर तुमने मेरी आँखें जुड़वा दी।

आँखें जुड़ाना–१ दे० 'आँखें ठडी होना'। २. किसी की आँखो या दिल को तृप्त करना। उ० ये मेरी आँखें जुड़ाने आए थे या फोडने?

आँखें टँगी रहना–प्रतीक्षा करना।

आँखें टेढ़ी करना या कर लेना–१ रोष या क्रोध दिखाना। उ० यहाँ आँखें टेढी करके क्या करेंगे? कोई आपका रिआया तो है नही, जो डर जाय। २ दया-दृष्टि हटाकर कुदृष्टि करना। उ० आप भी आँखें टेढी कर लेंगे तो कौन सहारा होगा?

आँखें टेढ़ी करना–नाराज करवाना। उ० वे उनकी आँखें लाख टेढ़ी करवाएँ, मेरा कुछ होने-हवाने का तो है नहीं।

आँखें टेढ़ी होना–नाराज होना। उ० उनकी आँखें हजार टेढ़ी हों, मैं उनके सामने झुकने से रहा।

आँखें ठंडी रहना–सुख से रहना, कभी किसी बात के लिये न रोना, बाल बच्चो से भरा-पुरा रहना। उ० भगवान करे आपकी आँखें ठडी रहें।

आँखें ठंडी होना या हो जाना–हृदय का शात होना, अत्यधिक तृप्ति होना। उ० आज वहू को देख कर मेरी आँखें ठडी हो गई।

आँखें तरसना–देखने के लिए लालायित होना। उ० उनके लिये मेरी आँखें तरसती हैं और वे पूछते तक नही।

आँखें तलवो से लगना–आदर होना। उ० मैं जब कभी अपने मित्र के यहाँ जाता हूँ, उसकी आँखें तलवो से लगी रहती हैं।

आँखें तिरमिराए जाना–चकाचौंध होना, विस्मित होना।

आँखें दुखना–१ आँखें आना। उ० आज दो रोज से मेरी आँखें दुख रही हैं। २ बुरा लगना, किसी चीज को देखकर कष्ट पाना। उ० उसे देखकर तुम्हारी आँखें दुखती क्यो हैं?

आँखें धोना–देखने के लिए आँखो को साफ करना (व्यग्य)। उ० पहले आँखें धो आओ तो मुझे देखना।

आँखें पसारना–आँखें लगाना, देखना, उत्सुकता या आदर से देखना।

आँखें पाना–१ सकेत मिलना। उ० आँखें पाते ही वह चला गया। २ देखने की शक्ति पाना।

आँखें पैदा करना–१ शहूर या तमीज़ सीखना उ० पहले आँखें पैदा करो, फिर सामने खड़े होना। २ किसी चीज़ या समस्या को अच्छी तरह समझने की शक्ति हासिल करना। उ० पढकर पहले आँखें पैदा करो, तब उसके दोष निकालना।

आँखें प्यासी होना–देखने की इच्छा होना। उ० उन्हे क्या पता कि ये आँखें कितनी प्यासी हैं?

आँखें फोड़ देना–दे० 'आँखें फोडना'।

आँखें फोड़ना–१ ध्यान से देखना। उ० चिट्ठी पानी से भीग गई है। अगर आँख फोड कर देखोगे तो शायद पढ़ सको। २ अधा करना, आँखो को फोड देना। उ० उसकी आँख क्यो फोडते हो?

आँखें बंद करना–दे० 'आँखें बंद कर लेना'।

आँखें बंद कर लेना–१ मुँह फेर लेना। उ० तुम सबकी सुनते हो पर मेरी ओर से आँखें बद कर लेते हो। २ मर जाना। उ० आज बेचारी ने आँख बन्द कर ली।

आँखें बंद किए जाना–बिना डर-भय के जाना। उ० यह जगल तो अपना है, तुम आँखें बद किये जा सकते हो।

आँखें बंद होना–१ न देखना। २ मर जाना। उ० आज शाम को उसकी आँखें बद हो गई।

आँखें बदलना–रुख बदल जाना।

आँखें माँगना–देखने की ताकत माँगना। उ० डाक्टर साहब, आपसे आँखें माँगती हूँ, दया कीजिए।

आँखें मिट जाना–अधा हो जाना। उ० यदि दूसरो का बुरा देखूँ तो मेरी आँखे मिट जायँ।

आँखें मिलना–दे०, 'आँखें पाना'।

आँखें मूँद लेना–१ किसी बुराई को जान-बूझ कर होने देना। उ० ऐसी बातो के लिए तुम कैसे आँख मूद लेते हो? २ मर जाना। उ० आज उसने आँख मूँद ली।

आँखें राह मे बिछाना–उत्सुकता या आदर से प्रतीक्षा करना।

आँखें रो रो कर सुजाना—अधिक रोना, रो-रो कर आँखो को फुलाना। उ० आँखें रो-रो कर सुजाना बेकार है। अब वह लौट तो सकता नही।

आँखें रोशन करना—खुश होना। उ० आपके दर्शन से ही आँखें रोशन कर लेता हूँ।

आँखें रोशन होना या हो जाना—१ प्रसन्न होना। २ ज्ञान की आँखो का खुल जाना। उ० साधु के दर्शन से ही आँखें रोशन हो गई।

आँखें लाल पीली करना—नाराज होना।

आँखें सफेद हो जाना—दे० 'आँखें सफेद होना'।

आँखें सफेद होना—अधा हो जाना, आँखो मे जाला पडना। उ० इसी उम्र मे मेरी दोनो आँखें सफेद हो गईं, भला अब कैसे मेरा काम चलेगा।

आँखें सर्वदा को मूंद लेना—मर जाना। उ० दो दिन की बीमारी मे ही उसने अपनी आँखें सर्वदा को मूंद ली।

आँखें होना—१. ज्ञान होना। उ० ठोकर खाने के बाद आँखें होती हैं। २ दिखाई देना, समझ पडना। उ० अब तुम्हे आँखें हो गई। भगवान को धन्यवाद है।

आँखों-आँखों मे बातें होना—आँखो के इशारे से बातें होना। नैन-नैन कीन्हो सब बात,—सूरदास

आँखो का अन्धा—बेवकूफ। उ० मुझे आप आँखो का अन्धा न समझिये, आपकी यहाँ कुछ भी न चलेगी।

आँखों का उजाला—प्रिय, अत्यन्त प्रिय।

आँखों का काँटा होना—१ दुश्मन होना। उ० आप उसकी आँखो के काँटे क्यो हो रहे हैं, इसका नतीजा अच्छा न होगा। २ आँखो मे खटकना।

आँखों का काजल चुरा लेना—बडी बारीकी से चोरी करना, चोरी की कला मे बहुत दक्ष होना। उ० उसे तुम ऐसा-वैसा चोर मत समझना। वह आँखो का काजल चुरा लेता है।

आँखों का खिलखिलाना—बहुत प्रसन्न होना। उ० आज तो उसकी आँखें खिलखिला रही हैं। कही से कुछ मिल गया क्या ?

आँखों का जाती रहना—दिखाई न देना। उ० क्या करूँ ? इसी उम्र मे मेरी आँखें भी जाती रही। अब तो और भी कोई नही पूछेगा।

आँखों का टोना लगना—आँखें लगना, प्रेम मे पडना। आँखो का टोना लगा है, अब वह किसी के कहे मे नही रह सकता है।

आँखो का ढूंढना—देखने को जी चाहना। उ० मेरी आँखें भगवान को ढूंढती हैं।

आँखों का तारा—अत्यन्त प्यारा। उ० उसे मैं अपनी आँखो का तारा समझता हूँ।

आँखो का तेल निकालना—बहुत बारीक काम करना। उ० इस कसीदे को काढना आँखों का तेल निकालना है।

आँखो का नूर—बहुत प्यारा। उ० मेरी माँ आँखो का नूर है।

आँखों का परदा उठाना या खुलना—अज्ञानावस्था का रुका होना।

आँखो का परदा उठा देना—लज्जा छोड देना। उ० आजकल की औरते आँखो का परदा उठा देना ही सभ्यता का चिह्न मानती हैं।

आँखो का परदा हटना—ज्ञान की आँखें खुलना या ज्ञान होना। उ० जब तक आपकी आँखो का परदा न हटेगा, आप कुछ भी नही समझ सकते।

आँखों का पानी ढलना या ढल जाना—बेहया होना। उ० जिस औरत की आँखो का पानी ढल गया है, वह सब कुछ कर सकती है।

आँखो का रोना—देखने के लिए तरसना। उ० आपके लिए दिन-रात उसकी आँखें रोती रहती हैं और आप इसे महसूस तक नही करते।

आँखो की कसम—यदि झूठ बोलूं तो आँखें फूट जायें। उ० आँखो की कसम, मेरे पास एक भी रुपया नही है, नही तो अवश्य दे देता।

आँखो की राह दिल मे आना—दिल और आँख दोनो का बहुत प्यारा होना। उ० आँखो की राह दिल मे आने वाला तो बस एक था, अब वह भी चल बसा। इस जिन्दगी से मौत भली।

आँखों के आगे अँधेरा छा जाना या छाना—१ ससार सूना दिखाई पडना। उ० इकलौते पुत्र के मरते ही उसके आँखो के आगे अँधेरा छा गया। २ कमज़ोरी या अधिक कष्ट के कारण साधारण बेहोशी आ जाना। उ० ऐसी मार मारूंगा कि आँखो के आगे अँधेरा छा जायगा।

आँखो के आगे अँधेरा होना—दे० 'आँखो के आगे अँधेरा छाना'।

आँखों के आगे चाँदना—१ आँखो से स्पष्ट दिखाई देना। उ० उसकी आँखो के आगे

चाँदना है। उसे सारी बुराई-भलाई दिखाई देती है। २ न दिखाई देना । उ० तुम्हारी आँखो के आगे तो जैसे चाँदना है।

आँखों के आगे आना—१ अपने किए का फल भोगना । उ० मनुष्य जैसा करता है, वैसा उसकी आँखो के आगे आता है। २ सामने आना। उ० उतावली क्यो करते हो ? एक मिनट मे सब आँखो के आगे आयेगा।

आँखों के आगे चिनगारी छूटना—१ चकाचौंध होना। उ० तेज बिजली की रोशनी की तरफ देखने से आँखो के आगे चिनगारी छूटने लगती है। २ शिथिलता आना। उ० तनिक भी चलता हूँ तो आँखो के आगे चिनगारी छूटने लगती है।

आँखों के आगे तारे छूटना—कमजोरी के कारण शिथिलता या थकावट आना। उ० इन दिनो बडी जल्दी आँखो के आगे तारे छूटने लगते हैं।

आँखो के आगे नाचना—हर समय याद रहना। उ० आप तो आजकल जिले भर की आँखो के आगे नाचते रहते हैं। भगवान इज्जत दे तो ऐसे ।

आँखों के आगे फिरना—दे० 'आँखो के आगे नाचना'।

आँखो के आगे रखना—हर समय साथ या सामने रखना। उ० भाई क्या करूँ अब यही तो एक लडका है, इसे हर समय आँखो के आगे न रक्खूँ तो चैन नहीं मिलता।

आँखों के आगे लौ छूटना—दे० 'आँखो के आगे चिनगारी छूटना'।

आँखो के तले खून उतरना—दे० 'आँखो के तले लहू उतरना'।

आँखो के तले लहू उतरना—क्रोध मे लाल हो जाना। उ० तुम जल्द से जल्द यहाँ से चले जाओ नही तो झगडा हो जायगा। देखते नही, उसकी आँखो के तले लहू उतर गया है।

आँखों के तारे होना—अत्यन्त प्रिय होना।

आँखो के नाखून लेना—शऊर सीखना । उ० पहले आँखो के नाखून लो तो बातें करना।

आँखों के पाँवड़े बिछाना—आतुरता तथा प्रेम से प्रतीक्षा करना।

आँखों के बल—शौक से, सहर्ष । उ० वह आँखो के बल जाने को तैयार है।

आँखो के बल चलना—ध्यान से देखकर चलना। उ० आँखो के बल चलो, रास्ते मे काँटे बहुत हैं।

आँखों को खो बैठना—न दिखाई देना, आँखो का जाती रहना। उ० मैं अब आँखो को भी खो बैठी, भला ऐसे का संसार मे कौन सहारा है ?

आँखो को पकड़ना—आकर्षित होना।

आँखो देख कर—जान-बूझकर। उ० आँखो को देख कर मैं जहर नही पी सकता।

आँखो देख के—जान बूझकर। उ० आँखो देख के मैं पाप का काम नही कर सकता।

आँखो देखते—दे० 'आँखो देख के'।

आँखो देखा न कानों सुना—विचित्र, नया। उ० मैंने तो ऐसी मशीन न कभी आँखो देखी, न कानो सुनी।

आँखो देखी—सामने की। उ० सुनता तो शायद विश्वास न करता पर आँखो देखी को कैसे इनकार करूँ ?

आँखो देखी कहना—सामने की बात कहना। उ० यह मैं आँखो देखी कह रहा हूँ कोई झूठ कैसे साबित करेगा ?

आँखो पर ऐनक लगाना—देखने की तमीज हासिल करना। उ० पहले आँखो पर ऐनक लगाओ तो मुझे देखना।

आँखो पर ठीकरे रख लेना—१ जान-बूझकर अनजान बनना। उ० आँखो पर इस प्रकार ठीकरे रख लेना तो मैंने नही देखा ! क्या तुम देखते नही कि तुम्हारी शीला जाने किसके साथ घूमने जाती है ? २ बेहया होना। उ० उसे क्या शर्म ? उसने तो आँखो पर ठीकरे रख लिए हैं।

आँखों पर परदा डालना—१ जान-बूझकर अधा बनना। उ० तुम अपनी आँखो पर परदा डाल लो, पर मुझसे बर्दाश्त नहीं हो सकता। २ अधा बनाना, मूर्ख बनाना। उ० मेरी आँखो पर आप पर्दा नही डाल सकते।

आँखों पर परदा पडना—अधा होना दिखाई न देना। उ० खरीदते वक्त आँखो पर परदा पडा था क्या, जो ऐसी सडी दाल ले आए ?

आँखों पर बैठाना—बहुत सत्कार करना। उ० जब भी मैं उसके यहाँ जाता हूँ, वह मुझे अपनी आँखो पर बैठा लेता है।

आँखों पर रखना—दे० 'आँखो पर बैठाना'।

आँखो पर हाथ रखना—जान-बूझकर अधा बनना। उ० खबरदार, यहाँ ऐसी हरकत नही

हो सकती । मै अपनी आँखो पर हाथ नही रख सकता ।

आँखों मे आँखें गडाना या डालना—आँखो से मोह लेना । प्रेम करना । उ० जब जाना ही है तो आँखो मे आँखे क्यो डालते हो ?

आँखो मे आँख पडना—प्रेम होना । उ० क्यो छिपाते हो । क्या मुझे ज्ञात नही है कि तुम दोनो की आँखो मे आँखें पड गई है ।

आँखो मे कहना—इशारा करना । उ० अगर अधिक लोग हो तो किसी तरह आँखो मे कह देना, बात ज़रूरी है, यो मत लौटना ।

आँखों मे कूट-कूट कर मोती भरना—आँखो का अत्यन्त सुन्दर होना । उ० उसकी आँखो मे तो जैसे कूट-कूट कर मोती भरा है ।

आँखों मे खटकना—नज़रो मे बुरा लगना । उ० आप उसी दिन से उसकी आँखो मे खटकने लगे हैं ।

आँखो मे खाए जाना—इशारे से धमकाना, आँख दिखाकर डराना । उ० आँखो मे क्यो खाये जाते हो, जो कहना हो साफ कहो ।

आँखो मे खाक की चुटकी डालना—१ कभी थोडी भी भलाई का कार्य न करना । उ० ऐसे लपटो की आँखो मे खाक की चुटकी डालना ही अच्छा है । २ द० 'आँख मे धूल झोकना' ।

आँखो मे खार होना—दे० 'आँखो मे खटकना' ।

आँखो मे खून उतरना—गुस्से से आँखो का लाल होना । उ० आपको देखते ही उसकी आँखो मे खून उतरने लगता है ।

आँखो मे गडना—१ बुरा लगना । उ० उसकी उन्नति सबकी आँखो मे गडती है । २ आँखो को प्यारा लगना । आँखो मे जम जाना । उ० उसकी सूरत आँखो मे गड गई है ।

आँखो में गिरना—किसी की दृष्टि मे गिर जाना ।

आँखो मे घर करना—हृदय मे स्थान करना । उ० मुझे सब पता है । वह तुम्हारी आँखो मे घर कर गई है ।

आँखों मे चरबी छाना—घमण्ड मे चूर होना । उ० अच्छा, आपकी आँखो मे भी अब चरबी छा रही है ! कल के दिन भूल गए क्या ?

आँखो मे चुभना—१ दे० 'आँखो मे गडना' । २ पसद आना । उ० उसका बैग मेरी आँखो मे चुभ गया है । उसे मैं अवश्य लूंगा ।

आँखों मे चोब आना—आँखे लाल होना (चोट आदि के कारण) ।

आँखों मे जगह करना—किसी के दिल मे सम्मान की जगह पाना । उ० काग्रेसियो ने अपने त्याग से जनता की आँखो मे जगह कर लिया था, पर अब वह बात जाती रही ।

आँखो मे जरा भी मैल न होना—गलती करके दड पाने पर भी धृष्ट होना । बेहया होना । उ० उसकी आँखो मे तो जरा भी मैल नही है । कल उसी काम के लिए पीटा गया और आज फिर कर रहा है ।

आँखो मे जान आना—१ ठडा ज्ञात होना । उ० धूप से छाए मे जाओ तो आँखो मे जान आए । २ आँखो का आरोग्य होना । उ० अस्पताल की दवा से तो कुछ आँखो मे जान आ रही है ।

आँखो मे डर न होना—तनिक भी लाज या डर न होना । उ० उसकी आँखो मे डर नही है, चाहे जो कहो ।

आँखो मे तरावट आना—ताज़गी आना । उ० भूख लगी है, खाना खालूँ तो आँखो मे तरावट आ जाय ।

आँखो मे तितलियाँ उड़ना—कमज़ोरी से थक जाना ।

आँखो मे तीसी फूलना—दे० 'आँखो मे सरसो फूलना' ।

आँखो मे धूल झोकना—१ चालबाजी से हानि करना । उ० आँखो मे धूल झोक कर उसने मेरा सब कुछ ले लिया । २ धोखा देना । उ० तुम मेरी आँखो मे धूल नही झोक सकते ।

आँखो मे नमक देना—१ दे० 'आँखो मे धूल झोकना' । २ अधा बनाना । उ० जरा सँभाल कर देखा करो, नही तो वह आँखो मे नमक दे देगा । ३ बुराई करना । उ० जो बुरा है, उसकी आखो मे नमक दो ।

आँखो मे नासूर हो जाना—१ नेत्रो से सर्वदा पानी गिरना । उ० ज्यादा धुआँ मे रहने से उसकी आँखो मे नासूर हो गया है । २ आँखो के कोनो का पक जाना या सड जाना ।

आँखो मे नाचना, फिरना, बसना, रमना, रहना—(किसी की) बराबर स्मृति आना ।

आँखो मे नूर होना—दिखलाई देना । उ० जब तक आँखो मे नूर है, कोई देखने से नही रोक सकता ।

आँखो मे नोन झोकना—दे० 'आँखो मे नमक देना' ।

आँखों में पालना–सस्नेह पालन करना। उ० मैंने उसे आँखो मे पाला है और तुम मारते हो।

आँखो मे फिरना–सदा स्मरण रहना। उ० उसकी प्रेमभरी बातें मेरी आँखो मे फिरा करती हैं।

आँखों मे फीका लगना–पसद न आना, उदास लगना। उ० एक भाई साहब के न आने से सारा उत्सव आँखो मे फीका लगता है।

आँखों मे बसना–दे० 'आँखो मे जगह करना'।

आँखों मे बात होना–आँखो से ही बातचीत होना, इशारे से बात होना। उ० उन दोनो मे तो अब आँखो मे बात होने लगी हैं।

आँखों मे मछली तैरना–रोना, आँसू आना।

आँखो मे मिर्च झोकना–दे० 'आँखो मे नमक देना'।

आँखो में मुरव्वत होना–लिहाज़ या शील होना। उ० जिसकी आँखो मे मुरव्वत नही है, वह भी क्या आदमी है ?

आँखों मे मोहिनी होना–आँखो मे ऐसी शक्ति होना कि आदमी देखते ही मोह जाय। उ० तुम्हारी आँखो मे मोहिनी है, देखने पर फिर तुम्हे छोडने को जी नही चाहता।

आँखो मे रसीलापन होना–आँखो मे दिल आकर्षित करने की शक्ति होना। उ० तुम्हारी आँखो मे तो रसीलापन है, सभी को खीच लेते हो।

आँखो मे रात कटना–पूरी रात जगते हुए बीतना। उ० आज तो तकलीफ के मारे आँखो मे रात कटी।

आँखों मे रात काटना–रात भर जागते रहना। उ० आज तो मरीज़ के पास बैठे-बैठे आँखो मे रात कटी।

आँखों मे शील होना–लिहाज़ या शर्म होना। उ० उसकी आँखो मे तो शील का नाम ही नही है, मुँहफट उत्तर देता है।

आँखो में समाना–१ आँखो मे बसना। उ० कृष्ण मेरी आँखो मे समा गए हैं। २ बहुत प्यारा होना। उ० वह तो तुम्हारी आँखो मे समाया हुआ है।

आँखों मे सरसो फूलना–खुशी होना। गद्‌गद् होना। उ० अपना परीक्षा-फल देखकर उसकी आँखो मे सरसो फूल गयी।

आँखो मे सरूर होना–नशे आदि से आँखो का लाल होना। उ० देखो आँखो मे सरूर है, इसने जरूर मद्यपान किया है।

आँखो से–स्वय। उ० मैंने कलकत्ता म्युज़ियम आँखो से देखा है।

आँखो से उतरना–१ अच्छा न लगना। उ० यह आदमी तो आज सभी की आँखो से उतर गया है। २ प्रतिष्ठा न रहना। उ० वह बेईमानी करने से ही सबकी आँखो से उतर गया है।

आँखो से एक आँसू न निकलना–थोडा भी दुःख न होना। उ० इतना प्रेम दिखाता था परन्तु उसके मरने पर आँखो से एक आँसू भी न निकला।

आँखो से ओझल होना–सामने से गायब होना। उ० आँखो से ओझल होकर वह बच नही सकता।

आँखो से कबूल होना–स्पष्ट हाँ न करना, परन्तु हृदय से स्वीकार करना। उ० सभी को आप का प्रस्ताव आँखो से कबूल है।

आँखो से कभी-कभी देखना–सयोगवश कभी देखने को मिल जाना। उ० इन गरीबो ने ऐसी चीजें आँखो से कभी-कभी देखी होगी।

आँखो से करना–दिल लगा कर काम करना। उ० वह बेगारी नही करता है, बल्कि काम आँखो से करता है।

आँखों से गिरना–दे० 'आँखो से उतरना'।

आँखो से चिनगारी छूटना–१ क्रोध से आँखें लाल हो जाना। उ० इतनी सी बात पर आपकी आँखो से चिनगारी छूटने लगी। अरे जरा शात भी तो रहिए। २ अत्यधिक कमजोरी होना। उ० दो कदम भी चलता हूँ तो आँखो से चिनगारी छूटने लगती है।

आँखो से ज़माना देखना–हर तरह के ज़माने का अनुभव होना। बहुत अनुभव होना, बहुत अनुभवी होना। उ० उसने आँखो से ज़माना देखा है, उसे भला तुम क्या मूर्ख बना सकते हो ?

आँखो से जान निकलना–प्रतीक्षा की हद होना। उ० आज तो आपके लिए आँखो से जान निकल गई।

आँखो से न देखना–बिलकुल पसद न करना। उ० और तो और, मैं तो ऐसी चीज आँखों से भी न देखूंगा।

आँखो से रस बरसना–स्नेह से देखना।

आँखों से लगाना—बहुत प्यार करना, हृदय से लगा लेना। उ० आपका पत्र उसने अपनी आँखो से लगाया।

आँखों से लहू टपकना—बहुत दुख होना। उ० भारत की वर्तमान दशा देख कर आँखो से लहू टपकता है।

आँखों से वह देखना जो कभी न देखा—अजीबो-गरीब चीज़ देखना। उ० आज तो आँखो से वह ज़माना देख लिया, जो कभी न देखा था।

आँखों ही आँखों मे—केवल सकेत से। उ० आँखो ही आँखो मे वे बात करते हैं।

आँच आना—ज़रा भी कष्ट मिलना। उ० चन्द्र-गुप्त के समय मे युद्ध के समय भी कृषको को आँच नही आती थी।

आँच का खेल—भयावना कार्य। उ० राज्य के प्रति विद्रोह करना आँच का खेल है। न जाने क्या परिणाम हो?

आँच खाना—१ गर्म होना। उ० ज्यादा आँच खाने से जल जाएगा। २ क्रोधित होना। उ० इतनी सी बात पर आँच न खाओ, नही तो ठीक कर दूंगा।

आँचल दबाना—दूध पीना। उ० उसके बच्चे की तबियत बहुत खराब है। वह कई दिनो से आँचल भी नही दबा रहा है।

आँच दिखाना—१ बरबाद करना। उ० वह निर्दोष है, उसे आँच न दिखाओ। २ गर्मी पहुँचाना। उ० इसे थोडी सी आँच दिखा दो।

आँच न आने देना—ज़रा भी आघात या सदमा न पहुँचने देना। उ० इतना सब हुआ परन्तु उसने अपने आदमियो पर आँच तक न आने दी।

आँचल दबाना—स्तन मुँह मे लेकर दूध पीना। उ० बच्चा तो इतना कमजोर है कि आँचल भी नही दबा सकता।

आँचल देना—लडके को दूध पिलाना। उ० बच्चे को हर समय आँचल देना ठीक नही है। समय से दूध पिलाना चाहिये।

आँचल पर बैठाना—पूर्णरूप से आवभगत करना। उ० वह तो अपने आगतुको को आँचल पर बैठाती है।

आँचल पसारना—१ भिक्षा माँगना। उ० बुढ़िया क्षमा-दान के लिए आँचल पसारती है। २ देवता या किसी बडे से गिडगिडा कर कुछ माँगना या किसी बात के लिये प्रार्थना करना।

आँचल फाडना—१ पर्दानशीन औरत का दूसरो से बात करना। उ० नौकरो के सामने वह आँचल नही फाडती है। २ टोटका करना। उ० दूसरो के बच्चे के लिये क्यो आँचल फाडती हो?

आँचल बिछाना—दे० 'आँचल पर बैठाना'।

आँचल मुँह पर लेना—घूंघट निकालना। उ० वह गैर को देखते ही मुँह पर आँचल ले लेती है।

आँचल मे बाँधे रहना—हर समय साथ रखना। उ० क्या उस आवारे को आँचल मे बाँधे रहती हो? कोई देखेगा तो क्या कहेगा?

आँचल मे बात बाँधना—कभी न भूलना, अच्छी तरह याद रखना। उ० यह बात आँचल मे बाँध रक्खो कि गरीबो की हर समय मदद करनी चाहिये।

आँचल मे सात बातें बाँधना—१ टोना करना। २ जादू करना।

आँचल लेना—स्वागत करना। उ० अतिथियो की अच्छी तरह आँचल लो।

आँचल सँभालना—देह को ठीक से ढकना। उ० औरतो को घर से बाहर आँचल सँभाल कर चलना चाहिये।

आँच से खेलना—जान के जोखिम का कार्य करना। उ० स्वतत्रता सग्राम मे भाग लेना, आँच से खेलना था।

आँट ढालना या डाल देना—दुश्मनी करवाना। उ० तुमने व्यर्थ ही हम दोनो मे आँट डाल दी।

आँट पड़ना—मनमोटाव होना। उ० बात ही बात मे आँट पड गयी।

आँट पर चढ़ना—घात पर चढना। उ० अच्छा आज तो जाओ, जब आँट पर चढोगे तो बतलाऊँगा।

आँट लगाना—अवरोध पैदा कर देना। उ० काम करीब-करीब पूरा हो चुका है, अब यदि आँट लगाओगे तो बडी गडबडी होगी।

आँट होना—खटपट होना, दुश्मनी होना। उ० आजकल दोनो मे आँट हो गई है, नही दाँत-काटी रोटी खाते थे।

आँटी काटना—जेब काटना। उ० मेले मे आँटी काटने वाले बहुत रहते हैं।

आँटी गर्म करना—१ घूस देना। उ० आजकल तो आँटी गर्म करने का ही ज़माना है।

२ घूस लेना। उ० उसने आँटी गर्म करके तो मेरा काम किया।

आँटी गर्म होना–रुपया मिलना। उ० आजकल तो खूब आँटी गर्म हो रही है।

आँडे-बाँडे खाना–इधर-उधर मारा-मारा फिरना। उ० यह लडका तो मुझे बिलकुल पसद नही। दिन भर आँडे-बाँडे खाता फिरता है।

आँतें कुलकुलाना–खूब भूख लगना। उ० मेरी आँतें कुलकुला रही है, मुझे कुछ खाने को दो।

आँतें कुलबुलाना–दे० 'आँतें कुलकुलाना'।

आँतें गले पडना, आँतें गले मे आना–बहुत परीशानी मे होना। उ० आपकी वजह से मेरी आँतें गले मे आ गई हैं।

आँतें मुँह मे आना–दे० 'आँतें गले मे आना'।

आँतें समेटना–भूख सहना। उ० आज तो व्रत का दिन है। आँतें समेटनी ही पडेगी।

आँतें सूखना–दे० 'आँतें कुलबुलाना'।

आँतो का बल खुलना–भर पेट भोजन करना। उ० आज महीनो के बाद मेरी आँतो का बल खुला है।

आँतो का बल खुलवाना–भर पेट खिलाना।

आँतो मे बल पडना–पेट मे दर्द होना। उ० उसकी कहानी सुन कर हँसते-हँसते आँतो मे बल पड गया।

आँतो से बातें निकाल लेना–किसी के मन की बात निकलवा लेना।

आँधी उठाना या उठा देना–१ धूम-धाम मचाना। उ० सीधे १०-५ को लेकर शादी कर आओ, क्यो आँधी उठाते हो? २ बवाल पैदा करना। उ० तुम तो जहाँ भी जाते हो, आँधी उठा देते हो।

आँधी के आम–बहुत सस्ती चीज़। उ० इन मिठाइयो को आँधी के आम न समझो। १६) सेर खरीदी गई हैं।

आँधी रोग होना–बहुत दूर होना, रास्ता पूरा न होना। उ० उस दिन तो रास्ता आँधी रोग हो गया था।

आँधी हो जाना–बहुत तेज़ चलना। उ० तुम्हारे साथ मैं नही जाऊँगी। तुम तो रास्ते मे आँधी हो जाते हो।

आँवल नाल गडना–मातृभूमि होना। उ० भारत मे मेरा आँवल नाल गडा है। तुम्हारा आँवल नाल गडा है क्या, जो रोज़ वहाँ पहुँचे रहते हो?

आँसुओ का तार न टूटना–दे० 'आँसुओ का तार बँधना'।

आँसुओ का तार बँधना या बँध जाना–बहुत रोना। बहुत आँसू गिरना। उ० स्त्री के मर जाने से उसके आँसुओ का तार बँध गया है, जरा सान्त्वना तो दे आओ।

आँसुओ की झडी बँधना–दे० 'आँसुओ का तार बँधना'।

आँसुओ से मुह धोना–दे० 'आँसुओ का तार बँधना'।

आँसू गिराना–रोना। उ० अब आँसू गिराना बेकार है, जो होने को था, वह तो हो ही गया।

आँसू डबडबाना या डबडबा आना–रोने को होना। उ० तुम्हारी याद आते ही आँखो मे आँसू डबडबा आते थे।

आँसू ढालना–दे० 'आँसू गिरना'।

आँसू थमना–रुलाई बन्द होना। उ० मेरे बहुत समझाने पर तो उसके आँसू थमे है।

आँसू निकल पडना–सहसा रो देना। उ० उसकी याद आते ही आँसू निकल पडे।

आँसू का घूँट पीकर रह जाना–हृदय का दुःख प्रकट न कर सकना। दुःखी होने पर भी न रोना। आँसुओ को रोक लेना। उ० उस दिन मैं सबके होने से वहाँ आँसू पीकर रह गया नही तो बहुत रोता।

आँसू पोछना–दिलासा देना। सात्वना देना। उ० उसका लडका मरा है। ज़रा आँसू तो पोछ आओ।

आँसू बहाना–रोना। उ० व्यर्थ मे आँसू न बहाओ। आँख खराब हो जाएगी।

आँसू भर लाना–रोने लगना। उ० क्या औरतो की तरह बात-बात पर आँसू भर लाते हो?

आइना होना–१ साफ-साफ होना। उ० देखिए तो इनके पूछ लेने पर सारी बात आइना हो गई। २ स्वच्छ हो जाना। चमकने लगना। उ० देखो तो, एक उसने अपने बर्तन साफ किये हैं। कैसे आइना हो गए हैं।

आइने मे मुँह देखना–१ अपनी सूरत देखना। उ० आइने मे मुँह देख कर उसमे सबध करो। २ अपनी योग्यता देखना। उ० पहले आइने मे मुँह देखो तब इस नौकरी के फेर मे पडो।

आई गई होना–दे० 'आए गए होना'। परिचित हो जाने से महत्व जाता रहना। उ० अब तो वह बात आई-गई हो गई। उसकी तरफ भला कौन ध्यान देगा?

आई बाई पचना–दे० 'बाई पचना'।

आए-गए होना–१ पुराना होना। उ० अब तो आप यहाँ के लिए आए गए हैं। २ खतम

होना । उ० रोज ही कितनी चीजे आई-गई होती हैं । आप जैसे कितने ही आए और गए ।

आक की बुढ़िया—बहुत वृद्ध स्त्री । उ० उस आक की बुढ़िया को कौन नौकरी देगा ?

आकबत बिगड़ना—परलोक बिगडना ।

आकबत मे दिया दिखाना—परलोक मे काम आना । उ० अरे एक पाव सीधा तो दे देने दो । यही तो आकबत मे दिया दिखाएगा ।

आकाश के तारे तोड लाना—१ असम्भव कार्य कर डालना । उ० तुम तो पास होकर आकाश के तारे तोड लाए । २ बहुत बडा काम कर डालना ।

आकाश खुलना—१ रास्ता साफ होना । उ० अब तो शायद आकाश वहाँ के लिए खुल गया । २ बदली न रहना । उ० दो दिन बाद तो आकाश खुल ही जायगा ।

आकाश चूमना—१ गगनचुंबी होना । उ० जयपुर का हवा महल आकाश चूमता है । २ बहुत बढ कर बातें करना ।

आकाश छूना—दे० 'आकाश चूमना' ।

आकाश पर दिया जलाना—ऐंठना, गर्व करना । उ० चार पैसे हो गए, तो आप आकाश पर दिया जलाने लगे ।

आकाश-पाताल एक करना—१ कोई प्रयत्न उठा न रखना । उ० कोरिया का युद्ध बंद करने के लिए नेहरू ने आकाश-पाताल एक कर दिया । २ बढ-बढ कर बातें करना । उ० यो तो वह आकाश-पाताल एक करता रहता है, परन्तु समय आने पर सब भूल जाता है ।

आकाश-पाताल का अन्तर होना—बहुत बडा अन्तर होना । उ० तुम्हारे और मेरे सिद्धान्तो मे आकाश-पाताल का अन्तर है ।

आकाश-पाताल के कुलाबे मिलाना—दे० 'आकाश-पाताल एक करना' ।

आकाश-पाताल सोचना—बहुत दूर-दूर तक सोचना ।

आकाश बाँधना—१ असम्भव बात करना । उ० सन् ४७ के पहले भारत की स्वतंत्रता की बात करना आकाश बाँधना ही था । २ असम्भव काम करना । ३ बहुत दौड-धूप करना ।

आकाश से बातें करना—१ बहुत ऊँचा होना । उ० न्यूयार्क के भवन आकाश से बातें हैं । २ बहुत बढ-बढ कर बात करना । तुम्हारा आकाश से बातें करना अभी निकल जायगा ।

आखिर करना—१ पूरा करना । उ० आज मैं इस काम का आखिर करूँगा । २ मार डालना । उ० बिना तुम्हारा आखिर किये मुझे चैन नही ।

आखिर को—अंत मे । उ० कब तक छिपेंगी कैरियाँ पत्तो की आड मे । आखिर को आम बन कर बिकेंगी बाजार मे ।

आख़िरत सँवारना—आकबत सँवारना, परलोक बनाना । उ० आख़िरत सँवारने के लिए हज करना जरूरी है । (इस मुहावरे का प्रयोग केवल मुसलमान करते हैं ।)

आखिरी बहार—१ ढलती जवानी । उ० आखिरी बहार है, जो मौज लेना हो ले लो । २ किसी काम के करने का आखिरी मौका ।

आखूर की भरती—१ अलाय-बलाय या निकम्मी चीजें । उ० आखूर की भरती मेरे ही यहाँ भेजनी थी । २ निकम्मे आदमियो का समूह । उ० यह आखूर की भरती कहाँ से बटोर लाए ?

अखोर की भरती—दे० 'आखूर की भरती' ।

आख्ता करना—बधिया करना । उ० इस बैल का आख्ता कर दो ।

आग उगलना—१ गोले बरसाना । उ० उसकी फौजे आग उगल रही थी । २ जोशीला एवं बगावत की भावनाओ से युक्त भाषण देना । उ० प० परमानंद भाषण क्या देते थे, आग उगलते थे । ३ असह्य बाते कहना । उ० आग न उगलो, मैं खुद जा रहा हूँ ।

आग उठाना—लडाई-झगडा मोल लेना । उ० तुम इतनी शांत-प्रकृति होकर क्यो आग उठाते हो ?

आग करना—१ आग जलाना । उ० चाय के लिए दमकले मे आग करो । २ अधिक गरम करना । उ० तुमने तो इसे आग कर दिया ।

आग का पुतला—बहुत क्रोधी । उ० नादिरशाह आग का पुतला था ।

आग का बाग—१ आतिशबाजी । उ० आज नुमाइश मे आग का बाग देखने चलो । २ सुनार की अँगीठी ।

आग के मोल—बडी महँगी । उ० आजकल तो सारी वस्तुएँ आग के मोल बिकती हैं ।

[आग को] हवा देना—क्रोध या आवेग को और ।

आग खाना—१ उपद्रव करना । उ० बहुत आग न खाओ । २ अपना नाश स्वय करना ।

आग खाना अगार हगना—जैसा करना वैसा फल पाना । उ० इसके आफत मे पडने का मुझे किंचित भी दुःख नही है । जो आग खायेगा, वह अवश्य ही अगार हगेगा ।

आग ठंढी पड़ना—क्रोध शात होना ।

आग तलवे से लगाना—बहुत क्रोधित होना । उ० बात जानते ही उसके तलवे से आग लग गई ।

आग दिखाना—आग की थोडी गर्मी से गर्म करना । उ० घी निकल नही रहा है क्या ? जरा आग दिखा दो ।

आग देना—१ नष्ट करना । उ० उन्हे आग न दो । २ गर्म करना । उ० पानी को आग दे दो । ३ आग लगाना, दूर करना, हटाना । उ० रतनावलि पति राग रगि दै विराग मे आगि ।

आग निकलना—१ बहुत गर्म होना । उ० अब तक पानी से आग निकल रही है । २ घर्षण से आग पैदा होना । उ० जगल मे पेडो से आग निकलती है ।

आग पड़ना—१ महँगी होना । उ० आजकल तो हर जगह आग पड रही है । २ बहुत गर्मी पडना ।

आग पर आग डालना—कष्ट पर कष्ट देना । उ० यो ही मेरा सारा धन चोरी चला गया था, आज डाकुओ ने बाकी को भी लूट लिया । इसी को आग पर आग डालना कहते हैं । मेरे पास तो यो ही एक पैसा नही है, तुम नालिश करके आग पर आग न डालो । '

आग पर घी डालना—किसी के क्रोध को और भडकाना । उ० आप चुप रहिए, और बोल कर आग पर घी डालने की आवश्यकता नही ।

आग पर पानी डालना—१ समझा-बुझा कर शात करना । उ० हमने जाकर आग पर पानी डाल दिया, नही तो आज बडा तूल हो जाता । २ झगडा खतम कर देना या दबा देना ।

आग पर लोटना—शोक या विरह मे व्याकुल होना । उ० वह उसके बिना आग पर लोट रही है ।

आग पानी का बैर—जन्म की शत्रुता । अमेरिका और रूस मे तो आग पानी का बैर है ।

आग पानी में लगाना—१ शांत स्थान मे झगडा-फसाद कराना । उ० वह तो पानी मे आग लगाता फिरता है, और इसी की रोटी खाता है । २ असभव काम करना ।

आग फाँकना—१ हानि उठाना । उ० व्यापार क्या है जब कि हमेशा आग ही फाँकना पडता है । २ जान-बूझकर अपने को खतरे मे डालना या अपनी बुराई करना । ३ डीग हाँकना ।

आग फूँकना—१ बहुत क्रोधित होना । उ० तुम ऐसी बातें ही करते हो कि शरीर मे आग फूँक दे । २ बहुत गर्मी होना । उ० आज तो आग फूँक दी है ।

आग फूँकना या फूँक देना—१ क्रोध को और बढाना । उ० आग को न फूँको, नही तो खून हो जायगा । २ गुस्सा पैदा करना । ३ गर्मी करना । उ० आज की थोडी वर्षा ने तो और आग फूँक दी ।

आग फूस का बैर होना—जन्म की या स्वाभाविक शत्रुता । उ० बिल्ली और चूहे मे तो आग फूस का बैर है ।

आग फूस की मैत्री—दो विरोधी प्रकृति के मनुष्यो की मित्रता जो सफल नही हो सकती । उ० तुम दोनो चाहे जैसे भी रहो मैं जानता हूँ कि आग फूस की मैत्री चल नही सकती ।

आग बढना—१ गुस्से का बहुत बढ जाना । उ० इस समय बातें न करो, नही तो आग बढ जायगी । २ लडाई-झगडे का और विकट रूप धारण करना । उ० तुम्हारे ही बोलने से आग बढी है ।

आग बन जाना—दे० 'अगार बनना' ।

आग बबूला बनना—दे० 'आग बबूला होना' ।

आग बबूला होना—अत्यन्त क्रोधित होना । उ० कमजोर आदमी बहुत जल्द आग बबूला हो जाते हैं ।

आग बरसना—खूब लू चलना । उ० आग बरस रही है । इस गर्मी मे कौन निकलेगा ?

आग बरसाना—१ गोलियाँ चलाना । उ० सिपाहियो ने शत्रु के किले पर खूब आग बरसाई । २ बहुत क्रोधित होकर बिगडना । जली-कटी सुनना । उ० आग बरसाने मे आप बडे तेज हैं । ३ बहुत गर्मी देना । उ० आजकल तो सूरज आग बरसा रहा है ।

आग बुझना—१ लडाई-झगडा शात होना । उ० बडी देर के बाद तो आग बुझी । २ भूख

शात होना । उ० जब कुछ पेट मे जाय तो आग बुझे ।

आग बुझाना या बुझा लेना—१ बदला चुकाना । उ० कही अकेले मे मिल गया तो अपनी आग बुझा लूं । २ अपने हृदय को शात कर लेना या अपनी इच्छा पूर्ण कर लेना ।

आग बोना—१ आग लगाना, झगडा लगाना । उ० खूब आग बो लो, पर अगर उन दोनो मे किसी को भी पता चला तो तुम्हारी खैर नही । २ चुगली खाना ।

आग भडकना—लडाई पैदा होना । उ० दोनो भाइयो मे आजकल खूब आग भडकी हुई है ।

आग भडकाना—झगडा लगाना । उ० तुमने ही यह आग भडकाई है, न ही तो भला उसे क्या पता था ?

आग भभूका होना—गुस्से से लाल होना । उ० बात सुनते ही वह आग भभूका हो गया । यदि मैं न रहता तो खून हो जाता ।

आग भी न लगाना—तुच्छ समझना । कोई मूल्य न करना । उ० वह अपने को क्या समझता है ? मैं तो उसके धन मे आग भी नही लगाऊँगा ।

आगम बांधना—आगे की सोचना । भविष्य के बारे मे प्रोग्राम बनाना । उ० हमारा तो आगम बांधना हमेशा पूरा होता है ।

आग में आग डालना—व्यर्थ काम करना ।

आग मे ईंधन डालना—विरोध, लड़ाई या क्रोध को और बढने का कारण उपस्थित करना ।

आग मे उतरना—किसी भयकर झगडे मे भाग लेना । उ० उनके लिए तुम क्यो आग मे उतरते हो ।

आग में करना—दूर फेंकना नष्ट करना । उ० आग मे करो ऐसे आदमी को । मैं उसे नही बुला सकता ।

आग मे कूदना—आफत में पडना, जान-बूझकर आफत मोल लेना । उ० उस चोर की जमानत करके आप व्यर्थ मे आग में न कूदें ।

आग मे घी डालना—दे० 'आग पर घी डालना' ।

आग मे झोंकना—सकट मे डाल देना । उ० दूसरे के लडके को तो सभी आग मे झोकते हैं, अपने को झोको तो समझें ।

आग मे पाँव डालना—जान-बूझकर खतरे मे पडना ।

आग मे पानी डालना—झगड़ा शात करना । उ० दोनो मे घमासान युद्ध हो जाता पर उस बूढ़े बेचारे ने आग मे पानी डाल कर बड़ा उपकार किया ।

आग मे पेशाब करना—दे० 'आग में मूतना' ।

आग मे मूतना—उत्पात करना । उ० यह तुम्हारा आग मे मूतना तुम्हे खाकर रहेगा । रावण और कस की कहानी भूल गये क्या ?

आग लगना—१ डाह या कुढ़न होना । उ० जाने क्यो किसी की बढती देखकर आग लग जाती है । २ क्रोधित होना । उ० बेइज्जती की बातें सुनते ही शरीर मे आग लग गई । ३ महँगी होना । उ० सब चीजों मे तो आग लगी है । ४ हृदय के किसी उद्गार का उमड़ना । उ० पत्र पाते ही दिल में आग लग गई । ५ बरबाद होना । उ० उसके धन में आग लगे जो निर्धनो को नहीं देता । यह एक गाली भी है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं । उ० आग लगे ऐसे मकान मे ।

आग लगा कर तमाशा देखना—झगड़ा पैदा करके अपना मनोरंजन करना या मौज लेना । उ० आग लगा कर तमाशा देखना दुष्टों का काम है ।

आग लगाकर पानी को दौड़ना—झगड़ा पैदा करके फिर उसे शांत करने की कोशिश करना । उ० आप ही ने तो हम दोनो को लड़ाया, और फिर अच्छा बनने के लिए शांत कर रहे हैं । यह आग लगाकर पानी को दौड़ना ठीक नही है ।

आग लगाना—१ उपद्रव मचाना । उ० कम्युनिस्टो ने तो पूर्वी जिलो मे आग लगा दी है । २. पेट मे गर्मी पैदा करना । उ० गर्मी में चाय पी लो । बदन मे आग लगा दी । ३ व्याकुलता होना । उ० प्रेमिका के दिल मे प्रेमी बिना आग लगी है । ४ त्याग देना । उ० ऐसे स्कूल में आग लगाकर दूसरी जगह चलो । ५. झगड़ा बढा देना । उ० तुमने तो उसकी शिकायत करके और भी आग आग लगा दी । ७. चुगलखोरी करना । उ० उसके आग लगाने से ही तो उन्होने तुम्हे निकाल दिया है । ८ नष्ट-भ्रष्ट करना । उ० बको न, नही तो तुम्हारे घर मे आग लगा कर चला जाऊँगा ।

आग लगे पर कुँआ खोदना—ऐन मौके पर विपत्ति निवारण का पयत्न करना । उ० सारी गर्मी बीत गई परन्तु तुमने घर का कोई प्रवन्ध नहीं

किया। अब बरसात आ गई तो आग लगे पर कुँआ खोदने चले हो!

आग लगे मेह मिलना—समय पड़ने पर किसी काम के योग्य वातावरण होना। उ० परीक्षा की तैयारी कर ही रहा था कि उसके भाई भी आ गए, इसी को आग लगे पर मेह मिलना कहते है।

आग लेने आना—उल्टे पाँव लौटना, तुरत लौटना, बहुत थोडी देर के लिए आना, तुरत जाने के लिए आना। उ० आग लेने आना हो तो मेरे पास न आया करो।

आग से खेलना—कोई ऐसा काम करना, जो अपने लिए बहुत ही घातक हो।

आग से पानी होना—क्रोध शात होना। शात हो जाना। उ० बेचारा मेरा बहुत लेहाज करता है। मेरे समझाते ही वह आग से पानी हो गया।

आग होना—गर्म होना। उ० बात-बात पर तो आप आग हो जाते हैं, कुछ आदमियत भी है या नही?

आगा तागा लेना—आदर सत्कार करना। उ० आगा तागा लेने के लिए पूरा प्रबन्ध कर दो नही तो बारात वाले क्या कहेगे?

आगा पीछा करना—१ हीला-हवाला करना। उ० जब तुम्हारा भी जाना जरूरी है तो आगा पीछा क्यो करते हो? २ हिचकिचाना। उ० यदि खरीदना है तो खरीद लो आगा पीछा करने से क्या लाभ? वह यहाँ आने मे आगा पीछा कर रहा है, कोई बात है क्या?

आगा पीछा देखना, विचार[illegible], सो[illegible] भले बुरे फल पर विचार करना। उ० [illegible] भी काम करना हो तो [illegible] आगा [illegible] सोच लिया करो।

आगा भारी हो[illegible] [illegible] रहना। उ० विचित्र बात है [illegible] अभी [illegible] बच्चा [illegible] महीने का भी नहीं हुआ, [illegible] आगा फिर भारी हो गया।

आगा मारना—किसी की उन्नति मे रुकावट डालना। उ० किसी का आगा मारना कौन अच्छा कहेगा?

आगा मारा जाना—भविष्य की उन्नति मे बाधा पहुँचाना। उ० पिता जी की मृत्यु मे मेरा आगा मारा गया।

आगा रोकना—हमला रोकना। उ० आगा रोकने के लिए किसी बली को भेजो।

आगा सँभालना—सामने का प्रहार रोकना। उ० आगा सँभालने के लिए किसी मजबूत आदमी को भेजो।

आगी-पानी होना—१ बडा उपद्रवी होना। उ० वह तो आगी-पानी है, उसे यहाँ क्यो बुलाते हो? २. जल्दबाज होना। ३ क्षण में गर्म और क्षण मे ठडा होने वाला।

आगी होना—दे० 'गर्म होना'।

आगे आगे—शनै शनै। उ० आगे आगे यह लडका और बढता ही जाएगा।

आगे आना—सामने आना। उ० जैसा तुमने किया है वैसा अब आगे आएगा ही।

आगे करना—१ सामने करना। उ० वह मुझे ही आगे करके स्वय गालियाँ देने लगा। २. विपत्ति मे फँसाना। उ० गलती दोनो की है परतु उसने तुम्ही को आगे कर दिया।

आगे का उठा-जूठा। उ० शास्त्र के अनुसार आगे का उठा भोजन कुत्ते को भी न देना चाहिए।

आगे का कदम पीछे पडना—अवनति होना। उ० एक वक्त ऐसा था कि इगलैड ससार मे सबसे शक्तिशाली था, पर अब तो उसका भी आगे का कदम पीछे पड रहा है।

आगे का कपडा खींचना—घूँघट काढना। उ० ससुरजी आ रहे है, आगे का कपडा खींच लो।

आगे डालना—बिना प्रेम मे दे देना। उ० जूठा कुत्ते के आगे डाल दो।

आगे डोलता—लडका। उ० मेरे कौन आगे डोलता है, जिसके लिए धन जमा करूँ?

आगे धरना—अपना आदर्श बनाना। उ० गाधीजी के सिद्धान्तो को आगे धर के काम करो।

आगे-पीछे चलना—१. दो[illegible] की बाते करना। २ दो विरोध की बात करना।

आगे-पीछे [illegible]न होना—कुल मे कोई न होना। उ० उसके तो आगे-पीछे कोई नही है [illegible]

आगे पीछे फिरना—१ सदा साथ रहकर खुशामद करना। उ० वह तो कायस्थो के आगे-पीछे फिरता है। २ सर्वदा साथ रहना। उ० उनके तो आगे-पीछे सी० आई० डी० फिरते हैं।

आगे पीछे रहना—दे० 'आगे पीछे फिरना'।

आगे-पीछे होना—कुल मे और लोगो का होना। उ० हमारे आगे-पीछे तो बीसो आदमी हैं। अपनी जमीन तुम्हारे नाम क्यो लिखूं ?

आगे फिरना—दे० 'आगे डोलना'।

आगे बढना—१ पथ-प्रदर्शन करना। उ० गाधी जी देश के आगे बढे। २ मुकाबिला करना। उ० चाहे मरो या जियो अब आगे जरूर बढो। ३ जाना। उ० आगे बढकर स्वागत करो। ४ प्रगति करना। उ० वह अपने काम मे आगे बढता जा रहा है। ५ सामने आना। उ० आगे बढो तो मजा चखाऊँ।

आगे रग लाना—१ और सुन्दर होना। उ० यह फूल आगे रग लाएगा। २ आगे बरबाद करना। उ० शराब का पीना आगे रग लाएगा। ३ आगे बुराई पैदा करना। उ० इसकी दोस्ती आगे रग लाएगी। ४ उन्नति करना। उ० तुम्हारी पढाई आगे रग लाएगी।

आगे रखना—१ पेश करना। उ० मैंने तो सारी चीजे उनके आगे रख दी। २ बतलाना। उ० मैंने सारी बातें तुम्हारे आगे रख दी और अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

आगे से—भविष्य मे। उ० अब तक उसके साथ घूमे, आगे से ऐसा मत करना।

आगे से लेना—अच्छी तरह आगे बढकर किसी आते हुए व्यक्ति का स्वागत करना। उ० अतिथियो को आगे से जाकर लो।

आगे होकर लेना—दे० 'आगे से लेना'।

आगो-मागो करना—मूर्खता करना। उ० आगो-मागो करना हो तो मेरे साथ काम न करो।

आज-कल करना—टाल मटोल करना। उ० देना हो तो दे दो, व्यर्थ मे आज-कल मत करो।

आज-कल मे—जल्दी ही, एक-आध दिन मे। उ० वह आज-कल मे आने वाला है।

आज-कल लगना—१ मृत्यु का इतजार होना। उ० अब तो उनकी आज-कल लगी है। २ देर होना। उ० काम मे आज-कल क्यो लगा है ? ३ टाल मटोल होना। उ० मैं जानता कि काम मे उनकी ओर से आज-कल लगेगी तो उन्हे कभी न देता।

आज-कल होना—जल्दी ही होने या सामने आने की आशा होना। उ० उनके प्रसव का दिन अब आज-कल है। दो दिन और रुक जाने दो।

आज को—आज, इस समय। उ० आज को यदि गाधीजी रहते तो काग्रेस का यह हाल न होता।

आज तक—अब तक। आज तक उसने रुपया नही दिया।

आज दिन—इस जमाने मे। उ० आज दिन अमेरिका की तरह धनी देश कोई नही है।

आज मरे कल दूसरा दिन होना—मरने पर चाहे जो भी हो उसकी चिंता न होना। उ० वृद्धो को घर का कुछ भी ध्यान नही रहता। उनके लिए तो आज मरे कल दूसरा दिन होता है।

आ जाना—समागम मे स्खलित हो जाना। (इसका प्रयोग अनिष्ट बाजारू भाषा मे ही होता है।)

आजिज आना या आ जाना—तग हो जाना। उ० मैं तो इस नौकर से आजिज आ गया।

आजिज होना—१ असमर्थ होना। उ० किसी सहायक बिना मैं आजिज हूँ, नही तो कुछ कर डालता। २ परेशान होना। उ० मैं तो तुमसे आजिज हूँ।

आजिजी करना—गिडगिडाना। उ० क्या आजिजी करते हो, वह कभी किसी की नहीं सुनता।

आज्ञा माथे या सर-आँखो पर होना—आज्ञा स्वीकार होना।

आटा-आटा करना या कर देना—चूर्ण विचूर्ण कर देना। पीस डालना। उ० मारते मारते आटा-आटा कर दूंगा।

आटा-आटा होना या हो जाना—बरबाद हो जाना। टुकडे-टुकडे या चूर्ण हो जाना। उ० सारी मिठाई आटा-आटा हो गई।

आटा गीला होना—आफत का सामना होना। आफत पर आफत आना। उ० आजकल जमाने भर का आटा गीला हो गया है।

आटा-दाल का भाव न मालूम होना—सासारिक व्यवहार का ज्ञान न होना। उ० तुम क्या परदेश करोगे, तुम्हे तो आटे-दाल का भाव भी मालूम नही है।

आटा-दाल का भाव मालूम होना—होश ठिकाने होना। उ० आज ऐसी मार लगाऊँगी कि आटा-दाल का भाव मालूम हो जायगा।

आटा-दाल की फिक्र होना—जीविका की चिंता होना। उ० बाप मरा, अब तो तुम्हे आटा-दाल की फिक्र होनी चाहिए।

आटा-दाल के फेर मे रहना—कमाने खाने की झझट मे पडना। उ० अभी तो लडके हो बडा शौक सूझता है। आटे-दाल के फेर मे पडोगे तो मै बात करूँगा।

आटा-दाल होना—१ कोई नई चीज होकर सामान्य होना। २ अत्यन्त आवश्यक होना।

आटा माटी करना—बरबाद करना। उ० तुम ने तो उसका आटा माटी कर दिया।

आटा माटी होना—बरबाद होना। उ० तुम्हारी ही वजह से उसका आटा माटी हुआ।

आटे की आया—भोली-भाली स्त्री। उ० वह बेचारी दुनियादारी क्या जाने, वह तो आटे की आया है।

आटे के साथ घुन पिसना—अपराधी के साथ निरपराधी का भी दंडित होना। उ० आटे के साथ तो घुन पिसता ही है। तुमने उसका साथ पकड़ा ही क्यों ?

आटे मे नमक—इतना कम कि जाना न जा सके। उ० उतनी ही चाल चलो, जितना आटे मे नमक। नहीं तो पता चल जायगा तो तुम्हारी हड्डी-पसली भी नही बच सकती।

आठ-आठ आँसू रोना—बहुत रोना। उ० अभी क्या देखते हैं ? मुसीबत तो ऐसी आयेगी कि आठ-आठ आँसू रोना पड़ेगा।

आठ आना—आधा।

आठों गाँठ कुम्मैत होना—चतुर होना। चालाक होना। उ० जरा मेरे मुकाबिले मे आइए तो आपके आठो गाँठ कुम्मैत होने का पता चले।

आठों पहर चौंसठ घड़ी—हर समय, दिन-रात। उ० तुम तो आठो पहर चौसठ घडी काम मे व्यस्त रहते हो, यह भी कोई जिंदगी है।

आडंबर फैलाना—१ दिखावे के लिए करना। उ० दावत मे इतना आडबर फैलाने की क्या आवश्यकता थी ? २ ढोंग रचना। उ० हिन्दू धर्म ने व्यर्थ मे इतना आडबर फैला रखा है।

आड़े आना—अवरोध डालना। व्याघात पहुँचाना। उ० किसी के काम मे आडे न आओ।

आड़े-तिरछे होना—दे० 'तेवर बदलना'।

आड़े हाथों लेना—ताना देकर शर्मिन्दा करना। मीठे शब्दो मे व्यग्य करना। उ० उसे तो आज ऐसा आडे हाथो लिया कि परेशान हो गया।

आतिश का परकाला—दे० 'अगिया बैताल'।

आतिश रश्क मे जलना—१ किसी के धन-दौलत को देख कर जलना। २ रुकावट करना। उ० वे तो दोनो ही आतिश रश्क मे जलते हैं।

आत्मा कलपाना—दे० 'आत्मा सताना'।

आत्मा ठंडी होना—प्रसन्न होना, तुष्टि होना। उ० बेटा तुम से मेरी आत्मा ठडी हुई है, भगवान तुम्हारा भला करे।

आत्मा मसोसना—१ भूख को दबाना। उ० जाने कितने आदमी अन्न न मिलने मे आत्मा मसोस कर रह जाते हैं। २ इच्छाओ को दबाना।

आत्मा मे डालना—१ पेट मे डालना, खाना। २ खिलाना। उ० पहले कुछ आत्मा मे डालो तो बातें करूँ।

आत्मा मे पड़ना—भूख मिटना। पेट मे पड़ना। उ० पहले आत्मा मे कुछ पडे तो बात करूँ।

आत्मा सताना—दिल दुखाना। उ० किसी की आत्मा न सताओ।

आत्मा होना—सार होना। सब कुछ होना। प्रधान करने वाला होना। उ० इस आन्दोलन की आत्मा तो तुम्ही हो।

आदमियत उठ जाना—इन्सानियत या तमीज का जाता रहना। उ० इस नए जमाने के लोगो मे से तो आदमियत उठ गई है।

आदमियत करना—मनुष्यत्व का व्यवहार करना। उ० बड़े-छोटे सबसे आदमियत करनी चाहिये।

आदमियत पकड़ना—सभ्यता या आचार सीखना। उ० बड़ो के साथ रह कर भी तो आदमियत पकडो।

आदमी के लिबास मे आना—शिष्टाचार से बर्तना। उ० आदमी हो तो आदमी के लिबास मे आओ।

आदमी बनना—१ सभ्यता सीखना। उ० पहले आदमी बनो फिर बात करना। २. बडा नामी या गुनी हो जाना। उ० कलकत्ते जाने से वह भी आदमी बन गया।

आदमी बनाना—आदमी कहाने योग्य, लायक़ शिष्ट, सभ्यता, गुणी बनना। उ० किसी तरह उसे भी अपने साथ रखकर आदमी बनाओ।

आदमी होना—१ सच्चे अर्थ मे मनुष्य बनना। उ० हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य आदमी होना है। २ बालिग़ होना। उ० यह तो बड़ी जल्दी आदमी हो गया। ३ बडा होना,

इज्ज़तदार होना। उ० वह तो अब आदमी हो गया नही तो कोई पूछता भी नही था। ४ गुणी, सभ्य या शिष्ट होना।

आदाब बजाना—बडा मानना, झुकना, सिफारिश करना। उ० क्या उनकी आदाब बजाते हो, वे वो तिल हैं जिनमे तेल नही होता।

आ धमकना—अचानक आ जाना। उ० उस की बात ही हो रही थी कि वह आ धमका।

आधा तीतर आधा बटेर होना—१ न इधर न उधर का होना। २ दोरगा होना। ३ दो जबान वाला होना। उ० तुम तो आधे तीतर आधे बटेर हो, तुम्हारा किस को विश्वास ? ४ बेमेल या बेढगा होना।

आधा मुर्गा आधा बटेर होना—दे० 'आधा तीतर आधा बटेर होना'।

आधान से होना—गर्भवती होना।

आधार होना—१ सहारा होना। उ० प्रत्येक चीज़ का एक आधार होता है। २. पेट मे पडना। उ० पहले कुछ आधार ही तो फिर बात हो।

आधा होना—दुबला-पतला हो जाना। उ० वह तो बीमारी से आधा हो गया है।

आधी कौड़ी का—मामूली, तुच्छ, नाचीज़।

आधी बात कहना—१ थोडा सा डाँटना या कुछ कहना। उ० तुमने तो अपने नौकरो को आधी बात भी न कही होगी। २ साफ न कहना। उ० क्या आधी बात कहते हो, कुछ मालूम नही होता।

आधी बात न पूछना—बिलकुल ध्यान न देना। कुछ भी इज्ज़त न करना। उ० मेरा आदमी गया था, पर उसने आधी बात तक न पूछी, क्या यही इनसानियत है ?

आनंद के ढोल बजाना—प्रसन्नता मनाना। प्रसन्नता और मस्ती से जीवन बिताना। उ० पास हो जाने पर वह आनन्द के ढोल बजाता है। तुम तो आनन्द के ढोल बजा रहे हो।

आनंद के तार बजाना—दे० 'आनन्द के ढोल बजाना'।

आन की आन में—१ बहुत जल्दी। उ० बस आप देखते रहिए आन के आन में सब हो जाएगा। २ प्रतिष्ठा का ध्यान करके। उ० उसने आन की आन मे कल लाखो खर्च कर डाला।

आन की आन में आना—अपनी प्रतिष्ठा के रोब मे आना। उ० आन की आन मे आकर उसने अपनी पूरी सपत्ति अनाथो को दे दी।

आन छोडना—प्रण छोडना।

आन तोड़ना या तोड़ देना—१ सम्मान घटाना। उ० आपने उससे सबन्ध करके अपनी आन तोड दी। २ प्राण छोडना। उ० वाह ! क्या अपनी आन तोड कर हँसी कराऊँ ? ३ हठ त्यागना। उ० आन तोड दो, इसी मे भला है।

आनन-फानन—तुरत, उसी समय।

आन पडना—दे० 'आ पडना'। उ० जब आफत आन पडी तो भागने से काम नही चल सकता।

आन बोलना—दुहाई देना।

आन मानना—१ लज्जित होना। उ० न्यूयार्क के भवनो के सामने हिमालय की चोटियाँ भी आन मानती हैं। २. डर मानना, आतंक मानना, रोब मानना।

आन मे आना—लोक लाज से मरना, लोक लाज या अपनी इज्ज़त का ध्यान करना। उ० आन मे आकर उसने यह काम किया है, वर्ना कभी नही करता।

आन रखना—१ जिद्द रखना। उ० आखिर उसने आन रख कर ही छोड़ा। २ इज्ज़त रखना। उ० किसी तरह मेरी आन रख लो।

आन सँभालना—इज्ज़त कायम रखना। उ० सब कुछ खोकर आन सँभालना ही बुद्धिमत्ता है।

आन होना—रोक होना। उ० थोड़े दिनो तक विदेशी माल पर आन थी।

आनाकानी करना—दे० 'टाल मटोल करना'।

आनी-जानी—नश्वर, क्षणभगुर।

आप अपने हक़ मे कांटे बोना—ऐसा काम करना जिससे अपनी हानि हो। उ० आप अपने हक में कांटे बोने की होशियारी तुम्हारे जैसे बुद्धिमान ही कर सकते हैं।

आप-आप करना—खुशामद करना। उ० मुझे आप-आप करना नही आता, चाहे काम हो या न हो।

आप आपकी—अपनी अपनी। उ० सभी को आप-आपकी पड़ी है।

आप आप की पडना–अपना अपना ख्याल होना। स्वार्थ मे रत होना। उ० देश भर को आप आप की पडी है तो देश का भला हो चुका।

आपको आसमान पर खींचना–१ खुद को बहुत बडा जानना। उ० अब तो वह आप को आसमान पर खीचता है। उसका पैर तो जैसे ज़मीन पर है ही नही। २ अपनी बहुत बडाई करना। उ० आप को आसमान पर खीचते तुम्हे शर्म नही आती।

आपको दूर जानना–अपने को दूर की बात सोचने वाला समझना। उ० हिटलर आप को दूर जानता था, पर जब सामना पडा तो छट्ठी का दूध याद आ गया।

आपको भूलना–१ अपने को न समझना। उ० अब तक भारत आपको भूले हुए था। २ होश मे न रहना। उ० छोटे इज्जत पाकर आपको भूल जाते है।

आ पडना–किसी दुखदाई चीज का ऊपर आना। उ० अब तो आ पडी है, सब सहना ही पडेगा।

आप मे आना या आ जाना–होश-हवाश टिकाने होना। उ० एक थप्पड मे आप-आप मे आ जाएँगे।

आप रूप–परमेश्वर। उ० लडके तो आप रूप होते है। उनका कहना पड जाता है।

आपस मे गिरह पडना–मनमोटाव होना। उ० जब आपस मे गिरह पड गई तो फिर वह बात कहाँ? अब उनके यहाँ जाना ठीक नही।

आपस में रहना–व्याभिचारिक सम्बन्ध [illegible]। उ० वे दोनो आपस मे रहते हैं।

आप से आप–अपने आप। उ० [illegible] आ जाएगा, तुम क्यो घबरा[illegible]

आप ही अपना जवाब होना–लाजवाब होना, अप्रतिम होना। [illegible] गाधीजी तो आप ही अपना जवाब [illegible]

आप ही आप बातें करना–पागल होना। उ० न होश खोने अगर इस परी की बातो पर, तो आप ही आप ये बातें न किया करते तुम।

आप ही नाक (नाम) चोटी गिरफ्तार होना–अपनी इज्जत का बहुत ख्याल होना।

आपा खोना–१ नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० समाज के हित के लिए आपा खो देना उचित ही है। २ अपना गुण मिटा देना। उ० घी शहद मिलकर अपना आपा खो देते हैं। ३ गर्व छोडना, नम्र होना। उ० धनी होते हुए भी ऐसा आपा खोकर बोलता है कि तबियत प्रसन्न हो जाती है।

आपा खोलना–मन के सारे भेद खोल देना, मन की सारी बातें कह डालना।

आपा तजना–अहम् भाव को छोडना। उ० आपा तजने से ही प्रतिष्ठा होगी।

आपाधापी पडना–अपनी अपनी पडना। उ० कौन किसे पूछता है? सभी को तो आपाधापी पडी है।

आपाधापी होना–दे० 'आपाधापी पडना'।

आपा मिटाना–अभिमान जाता रहना। उ० उसका आपा इस गरीबी मे भी नही मिटा।

आपे मे आना–१ सुध बुध मे होना। होश मे आना। उ० घन्टो बाद तो आपे मे आया है। जाओ कुछ पूछ लो। २ ज़रा दम लेना, साँस लेना। उ० अभी बहुत थका हूँ ज़रा आपे मे आलूँ तो तुम्हारा हिसाब कर दूँ। ३ सुधरना या सँभलना। उ० इतनी हानि हुई है कि कम मे कम इस वर्ष तो आपे मे नही आ सकते।

आपे मे न रहना या न होना–बहुत क्रोधित होना। उ० वह तो कभी आपे मे रहता ही नहीं, तुरन्त उखड जाता है। २ बहुत प्रसन्न होना। उ० उसे आज एक लाख रुपये मिले है। अब वह आपे मे नही है। ३ बहुत घमंड करना।

आपे से निकलना–दे० 'आपे से बाहर होना'।

आपे से बाहर होना–१ क्रोधित होना। उ० वह बात सुनते ही आपे से बाहर हो गया। २ बहुत घमडी होना। ३ बहुत प्रसन्न होना।

आफत उठाना–१ विपत्ति भोगना। उ० हमे तो इस साल वर्ष भर आफत उठानी पडी। २ उपद्रव मचाना। उ० जगली जानवरो ने तो चारो ओर आफत उठा रक्खी है।

आफत का टुकडा–१ चुस्त तथा पटु। उ० ऐसे कामो मे तो वह आफत का टुकडा है। २ विद्रोही। उ० सदा से बलिया वाले आफत के टुकड़े रहे हैं। ३ अबाध गति से यत्न करने वाला। उ० तुम तो यार आफत के टुकडे हो। ४ बहुत खुराफाती। उ० तुम जैसे आफत के टुकडे मुझे नही मिले।

आफत का परकाला–दे० 'आफत का टुकडा'।

आफत का मारा–विपत्ति से सताया हुआ। उ० बेचारा आफत का मारा है उसे शरण दे दो।

आफत टूटना–मुसीबत आना।

आफत मचाना–१ जल्दी करना। उ० देखो आफत न मचाओ नही तो सब काम बिगड जायगा। २ उद्विग्न करना। ३ उपद्रव मचाना।

आफत मे पडना–दे० 'आफत सिर पर लेना'।

आफत मोल लेना–दे० 'आफत सिर पर लेना'।

आफत सिर पर लेना–१ झगडा मोल लेना। उ० आपने उससे छेडखानी करके आफत सिर पर ले ली। २ झझट लेना। उ० मैंने शादी क्या की, एक आफत सिर पर ले ली। ३ हानिकारक उत्तरदायित्व लेना। उ० निमत्रण लेकर आफत सिर पर ले ली। पता नही कितना खर्च करना पडे।

आब आना–गुलजार होना। जँचना। रौनक आना। उ० मकान पर अब जाकर आब आई है। अब उसके मुँह पर आब आई है।

आब आब करना–अप्रचलित भाषा का प्रयोग कर कोई वस्तु माँगना। उ० क्या आब आब करते हो ? अरे ! सीधा बोलो तब तो समझूँ।

आब आब होना–१ लज्जित हो जाना। उ० मुझे देखते ही वह आब आब हो गया।

आब चढ़ाना–१ वार्निश से चमक देना। उ० कुर्सियो पर आब चढाओ। रग निखारना। उ० उसने मोतियो पर ऐसा आब चढाया कि नए दीख रहे हैं।

आब जाना–१ रौनक का जाता रहना। उ० यह मोती नकली था। इसी से इसका आब जाता रहा। २ इज्ज़त जाती रहना। उ० उनका आब जाता रहा, अब उन्हे कौन पूछता है ?

आबदस्त लेना–पाखाना के बाद पानी से गुप्ताग धोना। उ० यूरोप मे लोग कागज़ से आब-दस्त लेते हैं।

आबदाना उठना–जीविका न रहना। उ० भारत से अग्रेज़ो का आबदाना उठ गया।

आबदाना लगना–नौकरी लगना।

आब देना–चमक देना। उ० चाकू के फल पर आब दे दो।

आबनूस का कुंदा–बहुत काला तथा मोटा ताजा आदमी। उ० उस आबनूस के कुदे से कौन विवाह करेगा ?

आबपाशी करना–१ दम देना। उ० तुम्हारे आबपाशी करने से वह मेरे खिलाफ नही उठ सकता। २ सीचना, खेतो मे पानी देना।

आब रखना–१ रौनक कायम रखना। २ इज्ज़त रखना।

आबरू उतारना–बेइज्ज़त कर देना। उ० तुम दूसरे की आबरू उतारोगे तो तुम्हारी आबरू भगवान उतारेगा।

आबरू का लागू होना–इज्ज़त के पीछे पडना। उ० क्यो उसके आबरू के लागू हो गए हो, उसने तो तुम्हारा कुछ बिगाडा भी नही है ?

आबरू के दर पै होना–दे० 'आबरू का लागू होना'।

आबरू खाक मे खोना–अपनी इज्जत व्यर्थ के लिए गँवाना। उ० तुमने अपनी आबरू खाक मे खो दी।

आबरू खाक मे मिलाना–अपनी या दूसरे की इज्ज़त खराब करना। उ० उसकी आबरू खाक मे न मिलाओ।

आबरू पर आ बनना–इज्जत खतरे मे होना।

आबरू पर पानी फिरना–इज्ज़त खराब होना। प्रतिष्ठा मे धक्का लगना। उ० इस नालायक के कारण मेरी आबरू पर पानी फिर गया।

आबरू पैदा करना–इज्ज़त पैदा करना। उ० गाँधीजी ने खूब आबरू पैदा की।

आबरू मिट जाना–इज्ज़त बरबाद हो जाना। उ० उसने ऐसा काम किया कि उसकी आबरू मिट गई।

आबरू मे फरक आना–दे० 'आबरू मे बट्टा लगना'।

आबरू मे बट्टा लगना–प्रतिष्ठा मे दाग लगना। इज्ज़त मे धब्बा आना। उ० केवल इसी काम से तुम्हारी आबरू मे बट्टा लग गया।

आबरू रहना–इज्जत रहना। उ० आबरू जग मे रहे तो जान जाना पश्म है।

'आ बला गले पड' कहना–बिना किसी लाभ के झझट सर पर लेना। जान बूझकर झझट सर पर लेना। जान-बूझकर झझट लेना। उ० तुम्ही ने तो 'आ बला गले पड' कहा, अब पछता क्यो रहे हो ?

आबहवा बिगड़ना—१ जलवायु दूषित होना। उ० यहाँ की आबहवा बिगड गई है। २ वातावरण खराब होना। उ० कांग्रेस के ढीले शासन से देहात की आवहवा बिगड गई है। कोई भी किसी को दिन-दहाडे लूट सकता है।

आब होना—१ रौनक़ होना। उ० उसके चेहरे पर तो आब ही नही है। २ इज्जत होना।

आबाद करना—फूला फला करना। उ० उसे आबाद करना चाहते हो, तो पहले उसके दुश्मनो को खतम करो।

आबाद रहना—भरा पूरा रहना। उ० ईश्वर करे तुम सर्वदा आबाद रहो।

आबे लौंडे जाबे लौंडे करना—काम मन से न करना, इधर-उधर मे समय बिताना। उ० यह नौकरानी तो दिन भर आबे लौंडे जाबे लौंडे किया करती है। इसे हटाना पडेगा। (इसका प्रयोग बड़े-बड़े मुसलमानो के घरो मे ही विशेष होता है।)

आ बैल मुझे मार—दे० 'आ बला गले पड'।

आबोहवा का रास आना—जलवायु का अनुकूल होना।

आम और मछली की भेंट होना—१ असभव बात का संभव होना। उ० किसी बात का असंभव होना। उ० मेरी समझ मे तुम्हारा पास होना तो आम और मछली की भेंट है।

आम के आम गुठली या गुठलियो के दाम मिलना—दुगना लाभ मिलना। उ० इस बार तुमने परिश्रम तो किया नही फिर भी आम के आम गुठलियो के दाम मिले। इसी को भाग्य कहते हैं।

आमदरफ्त होना—आने-जाने का व्यवहार होना। उ० उन दोनो मे आमदरफ्त है।

आमीं आमीं करने वाले—हाँ मे हाँ मिलाने वाले। उ० आमीं आमीं करने वालो से मुझे बडी घृणा है।

आयु घटना—आयु कम होना। आयु समाप्त होना। उ० कुछ कर लो नही तो आयु खुटाते देर नहीं लगती।

आराम करना—१ सोना। उ० अब मैं आराम करने जा रहा हूँ। २ बिना काम के बैठना। उ० अब कुछ दिन आराम करो, चार-छ: महीने बाद फिर काम मिलेगा।

आराम मे आना—सुख मे होना। तुम तो कभी आराम मे आए ही नही।

आराम मे होना—१ सुख से बिताना। उ० वह तो शुरू से ही आराम मे है। २ शयन करना। उ० शायद साहब इस समय आराम मे हैं।

आराम से गुजरना—चैन से दिन कटना। उ० सभी तो कष्ट मे हैं। बहुत कम लोगो की आराम से गुजरती है।

आराम से जाना—चैन से दिन कटना। उ० औरो की वह क्या जाने ? खुद तो आराम से जा रहा है।

आराम से पाँव फैलाना—बेफिक्र सुख से सोना। उ० सारी झंझटो से दूर होकर वह आराम से पाँव फैलाए है।

आराम होना—१ सहूलियत मिलना। उ० पक्की सडक बन जाने मे आराम हो गया है। २ फायदा होना। उ० टहलने से उसे आराम है। ३ आरोग्य होना। उ० अब इस जीवन मे उसे आराम होने की सभावना नही है।

आरी आना—घबडा जाना। उ० अब तो मैं तकलीफो से आरी आ गया।

आरु आना—दु ख मे सवेदना प्रकट करने वाले या अपने दु:ख का अनुभव करने वालो को देखकर करुणा से आँसू आना। उ० मुझे देखते ही उसे आरु आ गई और रोने लगा।

आ लेना—सहसा हमला करके पकड़ लेना। उ० पोरस के सिपाही सो रहे थे कि सिकदर के सैनिको ने आ लिया।

आल्हा गाना—अपना दु ख-सुख या हाल सुनाना। उ० अब अधिक आल्हा न गाओ मैं जा रहा हूँ।

आवाँ का आवाँ बिगडना—सब बिगड जाना। उ० यहाँ तो आवाँ का आवाँ बिगडा है। स्कूल मे एक भी ऐसा लडका नही है जो अच्छी तरह पास हो।

आवाज़ उठाना—१. खिलाफत करना। उ० हिंदू कोड बिल के लिए अनेक हिन्दुओ ने आवाज़ उठाई। २ आन्दोलन करना। उ० समाजवादी दल ने वर्तमान सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठाई है।

आवाज़ ऊँची करना—दे० 'आवाज़ उठाना'।

आवाज़ कसना—व्यग्य बोलना। उ० क्या आवाज़ कसते हो कभी मेरा भी समय आएगा।

आवाज़ होना–जोर से पुकारना। उ० द्वार पर खड़े होकर आवाज दो, तो सुनेगा।

आवाज़ पड़ना–१ बुलाहट होना। उ० द्वार पर आवाज पड रही है। २ गला फँस जाना। ज्यादा बोलने से आवाज़ पड जाना। उ० ज्यादा बोलने से आवाज पड गई है।

आवाज़ पर लगना–ध्वनि का सकेत समझ कर काम करना। उ० बहुत से जानवर आवाज़ पर लगते हैं।

आवाज़ बुलन्द करना–विरोध करना। उ० तुम्हारे आवाज बुलन्द करने से कुछ नही होगा, मैं जो चाहूँगा वही करूँगा।

आवाज़ बैठना–दे० 'आवाज़ पडना'।

आवाज़ भर्राना–दुख से आवाज़ फटना। स्वर्गीय पति की बात चलते ही राधा की आवाज़ भर्रा गई।

आवाज़ भारी होना–१ गला भर आना। २ आवाज़ मोटी होना।

आवाज़ मारना–दे० 'आवाज देना'।

आवाज़ मे आवाज़ मिलाना–हाँ मे हाँ मिलाना। उ० अरे भाई अपने जमीदार हैं आवाज मे आवाज न मिलाएँगे तो नाराज हो जाएँगे।

आवाज़ लगाना–दे० 'आवाज देना'।

आवारा करना–भ्रष्ट बनना, आचरणहीन करना। उ० इस सस्था ने अनेक युवको को आवारा कर दिया।

आवारा होना–चरित्रहीन तथा लपट आदि बनना। उ० गुडो के साथ में पड कर अवारा हो गया है।

आशा पर तुषारापात होना या पानी फिरना–आशा पूरी न होना, आशा खडित हो जाना।

आशा बाँधना–आशा होना, उम्मीद होना।

आशिक होना–मोहित होना। उ० मजनू लैला पर आशिक था।

आस करना–मुँह ताकना। उ० जवानी मे किसी की आस करना ठीक नहीं।

आस टूटना–निराश होना। उ० उसने आकर कह दिया कि भाई साहब नही आएँगे। बेचारी की आस टूट गई।

आस ताकना–दूसरे की आशा देखते-देखते स्वय कुछ न करना। उ० उनकी आस कब तक ताकते रहोगे, खुद भी तो कुछ करो।

आसन उखड़ना–१ अपनी जगह से हिल जाना। उ० घोडा इतना तेज दौडा कि उसका आसन उखड गया। २ जमी-जमाई जगह से या व्यव-स्थित जगह से हटना। उ० इस वार उनका आसन उखड़ा तो कही के न होंगे।

आसन उखाड़ना–१ स्थायी रूप से पाँव न जमने देना। उ० वहाँ से अच्छे-अच्छो के आसन उखाड दिए जाते हैं। २ जमा-जमाया स्थान बिगाड देना।

आसन उठना–जगह छूट जाना। उ० उसका आसन वहाँ से उठ गया।

आसन करना–१ रुकना, ठहरना। उ० मैं यहाँ आज आसन करूँगा। २ योगशास्त्र के अनु-सार शरीर को तोडना। उ० दयानन्द सरस्-वती आसन करने मे पटु थे।

आसन कसना–१ शरीर को आसन की दशा मे करके बैठना। उ० वह आसन कस कर बैठा है। २ कुश्ती मे आसन नामक दाव लगाना। उ० वह आसन कसने मे बडा सुस्त है।

आसन छोडना–चला जाना। उ० यहाँ कई आदमियो ने आसन छोड दिया, तो तुम क्या खाकर टिकोगे?

आसन जमाना–१ किसी एक जगह पर जम कर रहना। उ० क्या इस साल यही आसन जमाओगे? २ आशा पर रहना। उ० उसके पर आसन न जमाओ, उसका क्या ठीक? ३ टिकाऊ असर होना। उ० पहले आसन जमा लूँ, तो कुछ करूँ। ४ निश्चिन्त बैठना। उ० आसन जमाने का समय नही है, उठो।

आसन डिगना–दे० 'आसन डोलना'।

आसन डिगाना–१ मन को चलायमान करना। उ० उसका रूप देखकर आपने अपना आसन डिगा दिया। २ किसी की स्थिति डाँवाडोल कर देना। उ० उसका आसन तो तुमने ऐसा डिगाया कि अब की उसका जमना असभव है।

आसन डोलना–१ सहानुभूति होना। उ० भला इन असहायो की दशा देखकर भी इन पूँजी-पतियो का आसन नही डोलता। २ डर से कपित हो जाना। उ० गाँधीजी की तपस्या से अग्रेजी शासन का आसन डोल गया। ३ मन मे लालच होना। उ० धन देख कर तो सभी का आसन डोल जाता है। ४ दिल हिल

जाना। उ० औरंगजेब का अत्याचार देखकर सभी का आसन डोल गया।

आसन तले आना–वश मे आना। उ० अब तो आप आसन तले आ गए है। कही जा नही सकते।

आसन देना–आदर से स्थान देना। उ० पहले सब को उचित आसन दो।

आसन पाटी लेकर पडना–क्रोध के साथ चारपाई पर पडना। उ० क्यो आसन पाटी लेकर पडे हो। उठो खा लो, अब ऐसी गलती न होगी।

आसन बाँधना–जांघो से जकडना। कुश्ती का एक पेंच लगाना। उ० इतना बनते हो तो आओ आसन बाँधूं और उठो।

आसन लगाना–१ टिकना, ठहरना। उ० बाबा जी अब कुछ दिन यही आसन लगायेंगे। २ आसन लगाकर बैठना। उ० आसन लगाओ पूजा का सामान आ रहा है।

आसन होना–सम्भोग के लिये उद्यत होना। उ० ऊँट का आसन होना बहुत विचित्र होता है।

आस पूजना या पुज जाना–आशा पूरी होना। उ० यदि बूढी को एक नाती हो गया तो बेचारी की आस पुज जायगी।

आस पूरना–दे० 'आस पूजना'।

आस बँधना–१ आस होना, उम्मीद होना। उ० उसके आने की आस अब भी बँधी हुई है। २ ढाढस होना। उ० जब मैं नदी से बाहर आया तो आस बँधी।

आसमान के तारे तोडना–कठिन से कठिन काम करना। उ० आपके लिए यह आसमान के तारे भी तोडने को तैयार है, जाने कौन सा जादू आपने चला दिया है।

आसमान-ज़मीन एक करना–दे० 'जमीन-आसमान एक करना'।

आसमान ज़मीन का अंतर–दे० 'आकाश पाताल का अतर'।

आसमान ज़मीन के कुलाबे मिलाना–दे० 'ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना'।

आसमान झाँकना–अकडना, अभिमान से सिर ऊपर उठा। उ० अब किसके बूते पर आसमान झाँक रहे हो ?

आसमान टूट पडना–१ सहसा आफत आ जाना। उ० देश पर खाद्य-समस्या के कारण आसमान टूट पडा। २ भयानक दुर्घटना होना। उ० गाधीजी के मरने से आसमान टूट पडा। ३ डर से काँप जाना। बहुत डर जाना। उ० तुम्हारा क्रोध देखकर तो मुझ पर आसमान टूट पडता है।

आसमान दिखाना–१ पछाड देना। उ० तुमने जो बात की बात मे उसे आसमान दिखा दिया। २ दाव दे जाना। ऐन मौके पर धोखा दे जाना। उ० उस दिन तो आपने देने का वादा किया और आज आसमान दिखा रहे है ?

आसमान दीखना या सूझना–होना, दुरुस्त होना, विरोधी स्थिति के आभास से घबगहट होना।

आसमान पर उडना–१ ऐंठना, इतरा कर चलना। उ० उसे जीतना दूर की बात है, जीत कर तो आसमान पर उडना। २ सामर्थ्य से बाहर का कार्य करने का निश्चय करना। उ० जब अपनी शक्ति जानते हो तो उससे होड लेने के लिए क्यो आसमान पर उडते हो।

आसमान पर कदम रखना–अपने को समझना। उ० क्यो आसमान पर कदम रखते हो, तुम से भी बडे लोग है।

आसमान पर चढना–अभिमान दिखान। अपने को बहुत बडा समझना। उ० चार पैसे हो गए है और उसका दिमाग अब आसमान पर चढ गया है।

आसमान पर चढाना–१ बहुत बडाई करना। उ० तुमने तो ऐसी बात की कि उसे आसमान पर ही चढा दिया। २ झूठी प्रशसा करना। उ० जब सब लोग असलियत जानते है तो आसमान पर चढाने से क्या लाभ।

आसमान पर थूकना–१ उत्तम मनुष्यो का निरादर करना। उ० ईसा मसीह को बुरा कहना आसमान पर थूकना है। २ बेवकूफी करना।

आसमान पर दिमाग चढना–बहुत घमड होना। नौकरी मिलते ही उसका दिमाग आसमान पर चढ गया।

आसमान फट पडना–दे० 'आसमान टूट पडना'।

आसमान फाडे डालना–बहुत शोर करना।

आसमान मे उडना–दे० 'आसमान पर उडना'।

आसमान मे चकती लगाना–दे० 'आसमान मे थिगली लगाना'।

आसमान में छेद करना–दे० 'आसमान मे थिगली लगाना'।

आसमान मे छेद होना–अतिवृष्टि। उ० चेरापूंजी मे सदैव ही आसमान मे छेद हुआ रहता है।

आसमान मे थिगली लगाना–१ कठिन काम या असंभव काम करना। उ० अब तृतीय युद्ध से बचना आसमान मे थिगली लगाना ही जान पडता है। उसकी इग्लैंड जाने की कोशिश आसमान मे थिगली लगाने के बराबर है। २ आश्चर्यजनक काम करना। उ० वह यदि पास हो गया तो कहना पडेगा कि उसने आसमान मे थिगली लगा दी।

आसमान सिर पर उठाना–१ उपद्रव या शोर-गुल करना। उ० असभ्य आदमी है। लोग तिनके के लिए भी आसमान सिर पर उठा लेते हैं। २ वहुत परिश्रम करना। उ० इसमे रक्खा क्या है जो आसमान सिर पर उठाते हो।

आसमान सिर पर टूटना–दे० 'आसमान टूट पडना'।

आसमान से गिर कर खजूर पर अटकना–१ एक कष्ट से छूट कर दूसरे कष्ट मे फँसना। उ० उमके स्वास्थ्य का क्या कहूँ, ज्वर ने छोड़ा तो फोडा हो गया। वेचारा आसमान से गिर कर खजूर पर अटक गया। २ किसी काम का बडी जगह मे ठीक होकर छोटी जगह मे रुक जाना। उ० बडे साहव ने ठीक कर दिया था पर वाद मे किसी वावू ने रोक दिया और काम आसमान से गिरकर

आसमान से गिरना–१ आप से आप आ जाना। उ० अगर आपने यह कलम यहाँ नही रक्खा है तो क्या यह आसमान से गिरा है? २ विना मेहनत के प्राप्त होना। उ० जानते नही हो कि रोटी कितनी महँगी है, आसमान से नहीं गिर सकती।

आसमान से टक्कर लेना–दे० 'आसमान से वातें करना'।

आसमान से वातें करना–दे० 'आकाश मे वातें करना'।

आसमानी पिलाना–ताडी पिलाना। उ० शराव न सही तो आसमानी ही पिलाओ।

आसमानी बला–दैवी प्रकोप। उ० अतिवृष्टि एक आसमानी वला है।

आसरा टूटना–१ भरोसा न रहना। उ० आज तक तो प्रतीक्षा मे था कि वह आएगा, पर जब आज उसका पत्र आ गया तो आसरा टूट गया। २ अशरण होना। उ० उस विधवा का वह भी आसरा टूट गया।

आसरा ताकना–आशा करना। उ० केवल भगवान का आसरा ताको।

आसरा ढूंढना–सहायक ढूंढना। अब तो तुम्हे कोई और सहारा ढूंढना ही पडेगा।

आसरा देना–१ वचन देना। उ० आपने आसरा दे दिया था, इसी से मैं आया, नही तो कभी न आता। २ शरण देना। उ० मुझे भी आसरा दे दो।

आस होना–१ सहारा होना। उ० केवल भगवान की आस है। २ सतान होने की उम्मीद होना। उ० अभी तो तुम्हारे घर कोई आस नही है? ३ आशा होना। उ० अभी तक तो आस है कि वह आ जाएगा।

आसामी बनाना–१ काश्तकार वनाना। उ० कुछ खेत देकर इसे आसामी वना लो, काम करेगा। २ किसी को कुछ काम करके या कुछ दे ले के ऐसा बनाना कि उससे हमेशा कुछ न कुछ लाभ हुआ करे। उ० अगर खूब लाभ चाहते हो तो इन्हे आसामी वनाओ।

आसामी समझना–अपने वश का समझना। उ० आप मुझे आसामी समझते हैं क्या, कि हर वक्त विगडा करते है।

आसुरी माया–षड्यंत्र, चाल। उ० मुझे आशा नही थी कि तुम उसकी आसुरी माया समाप्त कर सकोगे।

आसेब उतारना–मंत्र से भूत प्रेत उतारना। उ० आसेव उतारने मे आज के लोगों का विश्वास नही है।

आस्तीन का साँप–ऐसा आदमी जो ऊपर से मित्र और अन्दर से शत्रु हो। उ० उसे आप मित्र न समझें, वह तो आस्तीन का साँप है।

आस्तीन चढाना–कुश्ती लडने के लिए तैयार होना। उ० गर्म होकर इतनी जल्दी आस्तीन न चढाओ, कुछ सब्र भी तो करो।

आस्तीन मे साँप पालना–दुश्मन को अपने पास रख कर उसका पोषण करना। उ० आप जानते नही है कि ये कैसे आदमी है, वास्तव मे आप आस्तीन मे साँप पाल रहे है।

आह करना–कलपना। उ० वुढिया का आह

करना तुम्हारे पर अवश्य पडेगा।

आह खींचना—ठढी साँस भरना। बेचारी ने आह खीच कर लाम पर जाते हुए पति को विदा दी।

आह पड़ना—शाप पडना। उ० आपने जवानी मे गरीबो को खूब सताया था, अब उसी की आह पड रही है।

आह भर कर रह जाना—कुछ न कर सकने के कारण मन मे मसोस कर रह जाना। उ० अग्रेजी अत्याचार से हम सभी आह भर कर रह जाते थे।

आह लेना—किसी पर जुल्म करके उसका शाप लेना। उ० गरीबो को सता कर उनकी आह न लो।

इ

इंगित पर नाचना—इशारे पर नाचना। उ० वह तो इंगित पर नाच सकता है, हाँ, यदि कोई नचाने वाला हो तब।

इंद्र का अखाडा होना—१ खूब सजा हुआ मकान होना। उ० कुछ ही रुपए और लगाने से उसका मकान इंद्र का अखाडा हो गया है। २ बहुत सजी हुई सभा होना, जिसमे खूब नाच रंग होता हो।

इंद्र की परी होना—बहुत ही सुन्दर होना। उ० वह तो इंद्र की परी है।

इंद्र बनना—सजना, सँवरना। उ० आज सुबह ही इंद्र बन कर कहाँ चल दिये?

इंद्रायन का फल—देखने मे सुन्दर पर भीतर से बुरा या कटु। उ० अरे भाई, वह तो इंद्रायन का फल निकला! उसके स्वभाव से आशा थी कि काम कर देगा, पर करना तो दूर रहा उसने उलटे और बिगाड दिया।

इक्सठ बासठ करना—दे० 'सरका कूटना'।

इक्कीस बिस्वे होना या इक्कीस होना—बढ़कर बढकर होना।

इक्के दुक्के—बिना साथी के, अकेले दुकेले। उ० भाई, इक्के-दुक्के न जाना, वहाँ खतरा है।

इजलास पर चढाना—मुकदमा करना। उ० अब कभी ऐसी गलती किया तो इजलास पर चढा कर छोडूँगा।

इज्जत उतारना—मर्य्यादा नष्ट करना। उ० ज़रा सी बात के लिए वह इज्ज़त उतारने पर तैयार हो जाता है।

इज्जत अपने हाथ होना—मर्यादा वश मे होना। उ० सबकी इज्ज़त अपने हाथ है, जैसा जो काम करेगा वैसी इज्ज़त पायेगा।

इज्जत कमाना—नाम कमाना। उ० धन के साथ साथ इज्ज़त कमाना सब के बस का नही है

इज्जत करना—सम्मान करना, मर्यादा करना उ० अपने गुरु की इज्ज़त करना विद्यार्थियों का प्रथम कर्तव्य है।

इज्जत के पीछे पड़ना—इज्ज़त बिगाडने पर तुला होना। उ० तुम मेरी इज्ज़त के पीछे पडे हो तो कही तुम्हे प्राण से हाथ न धोना पडे।

इज्जत खाक मे मिला देना—दे० 'इज्ज़त मिट्टी कर देना।'

इज्जत खोना—बेइज्ज़त होना। उ० नीच मनुष्यो को इज्ज़त खोने की कुछ भी परवाह नही रहती।

इज्जत गँवाना—आबरू खोना। उ० इज्ज़त गँवाना बडा आसान है पर उसे बनाना बडा कठिन है।

इज्जत जाना—बेइज्ज़ती होना। उ० पैदल चलने से क्या तुम्हारी इज्ज़त चली जायगी?

इज्जत डुबोना—इज्ज़त खराब करना। उ० आपने थोडे से लाभ के लिए आज अपनी इज्ज़त डुबो दी।

इज्जत देना—१ आबरू खोना। उ० थोड़े से लाभ के लिए मैं अपनी इज्ज़त दे दूँ, यह कहाँ तक उचित है? २ सम्मान देना। उ० बारात मे शरीक होकर आपने मुझे बडी इज्ज़त दी।

इज्जत दो कौडी की करना—इज्ज़त बिलकुल बरबाद करना। उ० इस चाडाल ने मेरे कुल की इज्ज़त दो कौडी की कर दी।

इज्जत पर पानी फेरना—इज्ज़त बर्बाद करना। उ० बाप दादो की बनी बनाई इज्ज़त पर पानी फेरने के अतिरिक्त तुम जैसे दुष्ट लडको से आशा ही क्या की जा सकती है?

इज्जत पर हाथ डालना—बेइज्जत करने की कोशिश करना, बेइज्जत करना।

इज्जत पाना—प्रतिष्ठा प्राप्त करना। उ० उन्होंने इस दरबार मे बड़ी इज्जत पाई।

इज्जत बिगाड़ना—आबरू नष्ट करना। उ० भलेमानुसो की इज्जत बिगाडने में उसे ज़रा भी देर नही लगती।

इज्जत बेचना—आबरू खोना, प्रतिष्ठा गवाना। उ० इस मकान को बेचकर क्या पुरखों की इज्जत बेचना चाहते हो ?

इज्जत मिट्टी करना या कर देना—आबरू खराब करना। उ० उसने नीच काम करके अपने पूर्वजो की भी इज्जत मिट्टी कर दी।

इज्जत मिलना—बडा पद मिलना, प्रतिष्ठित होना। उ० भगवान करें तुम्हें इज्जत मिले।

इज्जत मे बट्टा लगना—आबरू खराब होना। उ० इस नीच काम के करने की वजह से तुम्हारी इज्जत मे बट्टा लग गया।

इज्जत में बट्टा लगाना—इज्जत खराब करना। उ० तुम ऐसे नालायक हो कि बाप दादो की इज्जत मे बट्टा लगाकर तो चैन लोगे।

इज्जत रखना—इज्जत बचा लेना। उ० रुपये देकर तुमने हमारी इज्जत रख ली।

इज्जत लेना—बेइज्जत करना। उ० किसी की इज्जत लेने से आपको क्या लाभ होता है ?

इतने मे—इसी बीच मे। उ० इतने मे रन-ठौर, रुधिर नदी प्रगटत भई। वह जुआ खेल रहा था, इतने मे पुलिस आ पहुँची।

इति होना—समाप्त होना, अत होना। उ० अब तुम्हारी पढाई की इति हो गई।

इत्तफाक पड़ना—सयोग पडना, मौका आना। उ० मुझे अकेले सफर करने का इत्तफाक कभी नही पडा।

इत्तफाक बढ़ना—मेलजोल बढना, मोहब्बत का बढना। उ० उन दोनो मे आजकल बहुत इत्तफाक बढ रहा है।

इत्तफाक होना—विशेष मित्रता होना। उ० उन दोनो से इत्तफाक होना ही चाहिये, इसी मे सब का भला है।

इत्तला लिखना—राज कर्मचारियो का किसी बात की सूचना लिखना। उ० बिना घूस के थाने वाले इत्तला भी नहीं लिखते।

इत्ते-पित्ते जलना—बहुत क्रोधित होना।

इधर उधर—१ यहाँ वहाँ, अडोस-पडोस मे। उ० क्या इधर-उधर घूम रहे हो ? २ इनारे किनारे, आस-पास। उ० तुम्हारे घर के इधर उधर कोई नाई हो तो भेज देना। ३ चारो ओर। उ० आज तो मैदान के इधर उधर पुलिस है।

इधर उधर करना—१ तितर-बितर करना। उ० जहाँ मैं कमरे से बाहर गया तुम मेरी सब चीजें इधर उधर कर देते हो। २ हीला हवाला करना। उ० जब भी हम अपना रुपया माँगते हैं तो तुम इधर उधर करने लगते हो।

इधर उधर की बात—१ अफवाह। उ० इधर उधर की बात पर विश्वास नही करना चाहिये। २ बेठिकाने की बात। उ० तुम कोई काम तो करते नही, व्यर्थ इधर उधर की बात किया करते हो।

इधर उधर की लगाना—चुगली करना। उ० अगर फिर इधर उधर की लगाए तो बिना पीटे न छोड़ूँगा।

इधर उधर की हाँकना—१ झूठ-मूठ बकवाद करना। उ० तुमसे कोई काम नही हो सकता, तुम तो सिर्फ इधर उधर की हाँकना जानते हो। इधर उधर की हाँकने वाले का तो कोई विश्वास भी न करेगा। २ ठीक विषय पर बात न कर इधर उधर की बात करना। ३ इधर-उधर की न हाँको, ठीक विषय पर आओ।

इधर उधर मे रहना—बेकार काम मे व्यस्त रहना, इधर उधर बेकार घूमना। उ० दिन भर इधर उधर में रहने वाला कोई मतलब काम क्या कर सकता है ?

इधर उधर रहना—पीछे लगा रहना। उ० चार पाँच माह से हर समय पुलिस मोहन के इधर उधर रहती है।

इधर उधर से—किसी से भी, कही से भी। उ० जब तक काम न मिले इधर-उधर से माँगकर दिन काटो।

इधर उधर होना—१ उलट पुलट होना। उ० हवा से सब कागज इधर उधर हो गए। २ टाल मटोल होना। उ० महीनो से इधर उधर हो रहा है, देखें रुपया कब मिलता है ? ३ भाग जाना ... के आने ही सब लोग

इधर उधर हो गए। ४ तितर बितर हो जाना। उ० पुलिस को देखते ही भीड इधर उधर हो गई।

इधर का उधर होना–१ बदल जाना। उ० दो मिनट उससे बात नही की और इधर के उधर हो गए। यही तो तुम्हारा व्यक्तित्व है। २ उलट-पुलट जाना। गडबड हो जाना। उ० सामान इधर का उधर हो गया।

इधर का होना न उधर का–कही का न होना। उ० इतना पढ लिख कर भी वह न इधर का हुआ न उधर का। २ किसी पक्ष मे न उसकी रहना। उ० हमारी शिकायत उनसे और हमसे करते थे, अत मे न इधर के हुए न उधर के। ३ दो विरुद्ध उद्देश्यो मे से किसी एक का भी पूरा न होना।

इधर की उधर करना–दे० 'इधर की उधर लगाना'।

इधर की उधर लगाना–कान भरना, चुगली करना। उ० इधर की उधर लगाना नीचो का काम है।

इधर की दुनिया उधर करना–बहुत परिश्रम या दौड-धूप करना। उ० इधर की दुनिया उधर कर डालो पर तुम्हारा काम सिद्ध होने का नही।

इधर की दुनिया उधर होना–चाहे जो कुछ होना। उ० इधर की दुनिया उधर हो जाय पर मै आज उसे अवश्य ही मारूँगा।

इधर कुआँ उधर खाई (बावडी) होना–दोनो ओर सकट होना।

इधर से उधर करना–गडबड या अव्यवस्थित कर देना। उ० तुम क्यो सब सामान इधर मे उधर कर देते हो ?

इधर से उधर फिरना–चारो ओर फिरना। उ० तुम व्यर्थ इधर से उधर फिरा करते हो।

इनायत करना–१ कृपा करके देना। उ० ज़रा कलम तो इनायत कीजिये। २ रहने देना। उ० इनायत कीजिए, मैं आप की चीज नही लेता।

इने गिने–थोडे से ही। उ० मेरे पास इने गिने अच्छे कपडे है। इने गिने आदमियो मे उसका मुकाबिला क्या करोगे ?

इन्ही पावो लौटना–तुरन्त लौटना।

इमली घोटना–विवाह के समय लडके या लडकी के मामा का एक रस्म विशेष करना और यथा शक्ति अपनी बहन को दक्षिणा देना। उ० तुम्हारे मामा इमली घोटाने आए या अभी नही ?

इलाइची बाँटना–दावत देना। उ० बडे लडके की शादी है, पूरे गाँव मे इलाइची बाँटनी पडेगी।

इल्लत कटना–झगडे का निर्णय होना। झगडा खतम होना। उ० कुछ भी हो आपके आने से इल्लत तो कटी।

इल्लत काटना–१ किसी तरह शीघ्र समाप्त करना। उ० इल्लत काटने से अच्छा है कि काम को छोड दो। २ आफत हटाना। उ० हे भगवान! किसी तरह यह इल्लत काटो।

इल्लत पालना–झझट लगा लेना। उ० इस मुकदमे मे गवाह बनकर तुमने व्यर्थ मे इल्लत पाल ली है।

इल्लत लगना–बेकार की झझट सर पर होना। उ० यह तो अच्छी इल्लत पीछे लगी।

इशारे पर नाचना–किसी के सकेत पर कुछ करना।

इशारो का गुलाम–किसी की इच्छानुसार काम करने वाला।

इस कान सुनना उस कान उड़ा देना–ध्यान मे न सुनना। उ० तुमसे कैसी ही बात क्यो न कही जाय, तुम इस कान सुन कर उस कान उडा देते हो।

इस पर न जाना–१ ऐसा न सोचना। उ० इस पर न जाओ कि वह भला आदमी है, आजकल भले भी विश्वास के योग्य नहीं हैं। २ इस पर गर्व न करना। उ० इस पर न जाओ कि उसने तो मदद करने का वचन दे दिया है।

इस पर न भूलना–इस पर भरोसा न करना। उ० इस पर न भूलो कि वह तुम्हारा सहायक है। हर घडी कोई साथ नही रहता।

इस हाथ देना, उस हाथ लेना–जैसा काम वैसा फल मिलना। उ० मैं उधार नही करता, सीधा हिसाब है, इस हाथ से पचास रुपये दो, और उस हाथ ले जाओ।

इस्तिजा लडना–अत्यन्त मित्रता होना। दाँत काटी रोटी होना।

इस्तिजा लडाना–घनिष्ठ मित्रता करना। उ० आजकल वे दोनो इस्तिजा लडा रहे हैं।

इस्तिजे का ढेला–अनादृत व्यक्ति, तुच्छ मनुष्य। उ० वह तो इस्तिजे का ढेला है।

ई

ईंगुर होना—बहुत लाल होना । उ० धाम के कारण उसका चेहरा ईंगुर हो गया है ।

ईंट का घर मिट्टी करना—घर नष्ट करना । अच्छा घर वर्बाद करना । उ० बुरे कामो मे फँस कर उसने अपना ईंट का घर मिट्टी कर डाला ।

ईंट का छल्ला देना—कच्ची दीवाल से सटाकर ईंट की इकहरी जोडाई करना । उ० ईंट का छल्ला दे दो नही तो वरसात मे दीवाल गिर जायगी ।

ईंट का जवाब पत्थर से देना—कडा जवाब देना, किसी के किए के उत्तर मे और भी कडे कदम उठाना ।

ईंट चुनना—जोडाई करना, दीवाल बनाना । उ० यह मिस्त्री ईंट चुनने का काम वडा अच्छा करता है ।

ईंट तक विकवाना—सब कुछ ले लेना । निर्धन बना देना । उ० तुम मेरी ईंट तक विकवा दो पर मुझे अपने सामने झुका नही सकते ।

ईंट-पत्थर—वेकार, कुछ नही । उ० साल भर परदेस से कमा कर क्या लाये हो, ईंट-पत्थर ?

ईंट से ईंट बजना—किसी नगर या घर का ध्वस हो जाना । उ० एटमबम के कारण जापान के दो नगरो की ईंट से ईंट बज गई ।

ईंट से ईंट बजाना—१ फूट डालकर लडाई करवाना । उ० मोहन ने दोनो भाईयो मे ईंट से ईंट बजा दी, फिर भी दोनो उसे अपना समझते हैं । उनसे वडा वेवकूफ मिलेगा कहाँ ? २ नष्ट-भ्रष्ट कर देना । उ० तुमने तो उसकी ईंट से ईंट वजा दी ।

ईद का चाँद—बहुत दुर्लभ वस्तु, जिसका दर्शन बहुत कम हो । उ० तुम तो आजकल ईद के चाँद हो गए हो ।

ईद के पीछे टर—समय पर काम न हो तो वेकार है । उ० परसो वारात आएगी, और तुम चौथे रोज शामियाने का प्रवन्ध करोगे । इसी का ईद के पीछे टर कहत है ।

ईमान काँपना—डरना । उ० भाई इस बुरे काम को करने मे मेरा ईमान काँप रहा है ।

ईमान का सौदा—ऐसा सौदा जिसमे वेईमानी न हो, विश्वास का काम । उ० आप की खुशी हो आप लें या न ले पर इतना मैं अवश्य कहूँगा कि यह ईमान का सौदा है ।

ईमान की कहना—दे० 'ईमान की बात कहना' ।

ईमान की बात कहना—सच सच कहना । उ० भाई मैं तो ईमान की बात कहूँगा, आप खुश हो या नाराज़ ।

ईमान ठिकाने न होना—धर्म भाव दृढ न रहना । दिल मे वेईमानी होना । उ० जिसका ईमान ठिकाने नही है, उसका क्या विश्वास ?

ईमान डिगना—मन मे वेईमानी आ जाना । उ० इस तुच्छ चीज़ के पीछे ही ईमान डिग गया तो तुम्हारा विश्वास कैसे किया जाय ?

ईमान डोलना—दे० 'ईमान डिगना' ।

ईमान देना—सत्य छोडना, वेईमानी करना । उ० श्रेष्ठ पुरुष ईमान देने से मरना अच्छा समझते हैं ।

ईमान बगल मे दबाना—वेईमानी करना । उ० ईमान वगल मे दवा कर काम करना हो तो तुमसे काम कराने से मैं बाज़ आया ।

ईमान बह जाना—धर्म नष्ट हो जाना । वेईमानी समा जाना । उ० तुम्हारा तो ईमान बह गया है, तुमसे साझा कौन करेगा ?

ईमान वेचना—बेईमान होना, वेईमानी करना । उ० ईमान वेच कर कमाया गया रुपया किसी के काम नही आता ।

ईमान मे फर्क आना—नियत विगडना । दिल में वेईमानी आना । उ० दो रुपए के पीछे जिसके ईमान मे फर्क आ गया, उसे आदमी कौन कहेगा ?

ईमान से कहना—सच कहना । उ० ईमान से कह रहा हूँ, मैंने आपके रुपये नही लिये हैं ।

ईमान हवा होना—दिल मे वेईमानी आ जाना । उ० कौडी-कौडी के पीछे जिसका ईमान हवा हो जाय, उसका क्या विश्वास ?

ईश्वर को प्यारा होना—मर जाना । उ० सुना है कि रविवार को तुम्हारे मैनेजर ईश्वर को प्यारे हो गये ।

उ

उँगलियो पर आ जाना–समीप या सर पर आ जाना।

उँगलियो पर नचाना–दे० 'उँगली पर नचाना।'

उँगली उठना–१ इशारा होना। उ० वह जिधर जाता है उँगली उठने लगती है। २ बुरा कहना। उ० उँगली उठेगी तो ठीक न होगा। 'मैं जो कुछ करता हूँ अपने घर करता हूँ।

उँगली उठाना–बुरा कहना। उ० उस पर उँगली उठाना मजाक नहीं है। २ इशारे से कुछ कहना।

उँगली करना–हैरान करना। उ० बेकार मे क्यो उँगली करते हो? यार, दिन रात उँगली ही किए रहते हो कि कभी कुछ लाभ भी कराओगे?

उँगली काटना–विस्मय मे पडना। उ० इस मकान की खूबसूरती देखकर जमाना उँगली काटता है।

उँगली कान मे देना–कुछ न सुनना। उ० दुनियाँ जी भर कर बकवास कर ले, हमने तो कानो में उँगली दे ली है।

उँगली चमकाना–जनखो की तरह हाथ मटकाना। उ० क्यो उँगली चमका रहे हो? क्या तुम्हे भी वही समझा जाय?

उँगली तोडना–थकावट दूर करने के लिए उँगली चटकाना। उ० जरा मेरी उँगली तोड दो।

उँगली दाँत से काटना–दे० 'उँगली काटना'।

उँगली दिखाना–निंदा करना। शिकायत करना। उ० आजकल लोग उनकी ओर उँगली दिखा रहे हैं।

उँगली पकडकर पहुँचा पकडना या **पकड़ लेना**–थोडा सा लेकर पूरा लेने की इच्छा करना। उ० भाई, तुम्हारा विश्वास मैं नहीं कर सकता। ऐसे ही लोग उँगली पकड़ कर पहुँचा पकडते है।

उँगली पर नचाना–१ परेशान करना। उ० तुम सबको तो उँगली पर नचाया करते हो, आखिर दुर्दिन मे किसी का सहारा भी लोगे या नही? २ पूर्णत वश मे रखना। उ० वह तो तुम्हें उँगली पर नचाता है।

उँगली पर नाचना–किसी के वश मे होना। कहने के अनुसार चलना। उ० आजकल मोहन के पडोसी उसकी उँगली पर नाच रहे हैं।

उँगली फोड़ना–दे० 'उँगली तोडना'।

उँगली रखना–दोष दिखाना। उ० मेरे ऊपर कोई उँगली रखने वाला आज तक जन्मा ही नही।

उँगली लगाना–१ किसी काम को छू तक देना या थोडा सा करना। उ० तुम तो घर के किसी काम मे उँगली भी नही लगाते हो? २ थोडी सी मदद करना। उ० कम तुम उँगली भर लगा दो, पूरा तो मै करूँगा।

उखडी-उखडी बातें करना–गुस्सा से भरी बातें करना। उ० थोडी सी बात पर आप क्या उखडी-पुखडी बाते कर रहे है।

उखड़ी पुखड़ी सुनाना–अंड बंड सुनाना। उ० उखडी पुखड़ी सुनाओगे तो मैं भी वैसा ही करूँगा।

उखाड देना–बिगाड़ देना, समाप्त कर देना। उ० किसी दूसरे का क्या कहना, जब बडे भाई ने ही व्यापार उखाड दिया है।

उखाड़ पछाड–इधर का उधर, उलट-पलट। उ० यहाँ उखाड पछाड़ न करो।

उखाड़ी उखड़ना–कुछ किया हो सकना। उ० तुम्हारी उखाडी यहाँ कुछ न उखड़ेगी।

उगल उगल के खाना–१ बिना भूख के खाना। उ० उगल उगल के खाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। २ अच्छी तरह स्वाद लेकर न खाना। उ० उगल उगल खा रहे हो, क्या अच्छा नहीं बना है?

उगल देना–भेद की बात या माल बता देना। उ० बहुत कच्चे चोर हो, दो हाथ पडते ही सब उगल दिया।

उघटापुरान करना–गाली-गलौज करना। अपनी पुरानी या बाप-दादा की गलतियो के आधार पर शर्मिंदा करना। उ० पढ़े-लिखे होकर क्या उघटापुरान कर रहे हो?

उघड़ पडना–खुल पडना। अपने असली रूप मे प्रकट होना। उ० ज़रा भी बहका दोगे तो उघड पड़ेगा।

उघर कर नाचना–लोक लज्जा छोड कर मनमाना काम करना। उ० अब हौं उघरि नचन चाहत हौं तुमहिं विरद विनु करिहौ।

उचक ले जाना–उडा ले जाना, भगा ले जाना। उ० उस लडकी को कोई उचक ले गया।

उचट जाना–१ न लगना, हट जाना। उ० मेरा दिल यहाँ से उचट गया है।

उछंग लेना–आलिंगन करना, हृदय से लगाना। उ० सूर स्याम ज्यो उछँग लई।

उछल कूद करना–१ वढ वढ कर बातें करना। उ० क्या उछल कूद करते हो, तुम्हारी हकीकत किसी से छिपी नहीं है। २ चचलता करना।

उछल पड़ना–खूब खुश होना। खुशी या जोश से कूदने लगना। उ० मोहन परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की खबर सुनते ही उछल पडा।

उजड़ जाना–लुट जाना, बरबाद हो जाना। उ० उस बैल के मर जाने से मैं तो उजड गया।

उजड़ा घर बसना–एक स्त्री के मरने के वाद फिर से शादी होना। उ० उस वेचारे का उजडा घर बस गया, यह बहुत अच्छा हुआ।

उजड़ा पुजड़ा–रद्दी, वेकार, खराब। उ० उजडे पुजडे सामान मैं नही लेता।

उजड़ी कोख–वेऔलाद, नि सन्तान।

उजरत पर देना–किराए या भाडे पर देना। उ० यो न देना हो तो उजरत पर दे दो।

उजला मुँह करना–महत्त्व बढाना, इज्जत बढाना, चार चाँद लगाना। उ० शावास! तुमने आज मैदान मारकर सारे परिवार का उजला मुँह कर दिया।

उजली गुज़रान–आराम से जिंदगी बिताना। उ० उजली गुज़रान वाले हम गरीबो का दुख दर्द क्या समझें?

उजली तबियत–१ सुलझी हुई तबियत, होशियार अक्ल। उ० वह उजली तबियत का आदमी है। २ रगीन तवीयत, रस लेने वाली तबीयत।

उजली समझ–बात की तह मे जल्दी पहुँचने वाली बुद्धि। उ० उसकी बडी उजली समझ है। वह तो तुरत ताड जाएगा।

उजला मुँह करना–महत्व वढाना, इज्ज़त बढाना, चार चाँद लगाना। उ० शावास! तुमने आज मैदान मार कर सारे परिवार का मुँह उजला कर दिया।

उटक्कर का फतीहा–व्यर्थ का घूमने वाला। उ० तुम जैसा उटक्टर का फतीहा मैंने नही देखा।

उठ खड़ा होना–बीमारी से अच्छा होना। उ० भगवान की कृपा से साल भर के वाद मै उठ खडा हुआ हूँ।

उठ जाना–१ खर्च हो जाना। उ० जो कुछ मेरे पास था, इस यात्रा मे सब उठ गया। २ मर जाना।

उठती उम्र–यौवन का प्रारभ।

उठती कोपल–१ जवानी। उ० मोहन की उठती कोपल है, अब जोश न होगा तो कब होगा?

उठती जवानी–चढती जवानी, नया यौवन। उ० उठती जवानी मे कुछ पाप हो ही जाते हैं।

उठते बैठते–हर समय। उ० उठते बैठते आपकी याद मुझे सताया करती है।

उठना बैठना–आना जाना। उ० मैंने अब उसके यहाँ उठना बैठना बद कर दिया है।

उठाऊ चूल्हा–वह आदमी जो एक जगह जमकर न रहे। उ० तुम्हारा क्या ठिकाना? तुम तो उठाऊ चूल्हे हो।

उठा देना–१ किराए पर दे देना। उ० उन्होंने अपना मकान उठा दिया। २ सर पर बोझ उठा देना। उ० उठा दो तो मै भी चलूँ।

उठा बैठी–हैरानी, दौड धूप। उ० इतनी उठा बैठी वेकार हुई।

उठा मारना–दे मारना, ज़मीन पर गिरा देना। उ० उस छोटे पहलवान ने अखाडे मे उतरते ही ऐसा उठा मारा कि लोग दग रह गए।

उठा रखना–छोड रखना, बाकी रखना। उ० विश्वास रक्खो, मै तुम्हारे लिये कुछ भी नहीं उठा रक्खूँगा।

उड आना–शीघ्र आना। उ० तुम तैयार हो जाओ। वह तो उड आएगा।

उड चलना–१ नौ दो ग्यारह होना, भाग जाना। उ० मोहन! तुम यहाँ से उड चलो, नहीं तो पुलिस तुम्हे पकड लेगी। २ शोभित होना। ३ मजेदार होना। ४ गुमराह होना।

उड़ता बनना–दे० 'उडता होना'।

उड़ता होना—१. गायब होना, भाग जाना। उ० चोर मेरा सब धन लेकर उड़ता हो गया।

उड़ती खबर—अफ़वाह। उ० उड़ती खबर पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिये। उसकी बदनामी की खबर अभी उड़ती है।

उड़ती चिड़िया के पंख गिनना—१ बहुत चतुर होना। २. थोड़े आभास से स्थिति भांप लेना।

उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाना—बहुत होशियार होना। उ० वह उड़ती चिड़िया को हल्दी लगाता है। तुम्हारे चक्कर मे कभी न आएगा।

उड़ती चिड़िया पहचानना—गूढ रहस्य जान जाना, मन की बात जानना। उ० मित्र, मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूँ। मुझसे क्या छिपा रहे हो!

उड़ती नज़र—सरसरी निगाह।

उड़कर पढ़ना—छोटा मुँह बड़ी बात करना। उ० अरे बेटा उड़ कर न पढ़ो, मैं तुम्हारी तीन पुश्तों तक जानता हूँ।

उड़द के आटे की तरह ऐंठना—बहुत नाराज होना। उ० तुम तो यार, उडद के आटे की तरह ऐंठे हो।

उड़द पर सफेदी—बहुत कम। उ० उनमे सौंदर्य क्या है, उड़द पर सफेदी है।

उड़द मारना—टोना झाड़ना, भूत भगाना। उ० ओझा का उड़द मारना एक ढोंग होता है।

उड़न छू होना—लापता हो जाना। उ० मुझे मार कर राम उड़न छू हो गया।

उड़नखाई—धोखा, जुए की चालाकी। उ० उसकी उड़ानखाई से होशियार रहना। [इसका प्रयोग जुआड़ियों की भाषा मे होता है।]

उड़ान भरना—उड़ान मारना, बहुत दूर तक आना जाना। उ० आजकल आप खूब उडान भर रहे हैं। आखिर बात क्या है?

उड़ान मारना—दे० 'उड़ान भरना'।

उड़ाना—१. धोखा देना। उ० आप मुझ गरीब को उड़ाकर क्या पावोगे? २. बहकाना। ३. मार लेना, चुरा लेना। उ० उसने मेरा कोट उड़ा लिया।

उड़ा रखना—प्रसिद्ध कर देना। उ० लोगो ने झूठी खबर उड़ा रखी है कि आज यहाँ नाटक होगा।

उड़ा लाना—मार लाना, झटक लाना, चुरा लाना। उ० कहो, क्या उड़ा लाए?

उड़ी-उड़ी बातें करना—बेमन से बातें करना।

उड़ेंच निकालना—ऐब निकालना। उ० बेकार किसी के काम में उड़ेंच निकालने से क्या लाभ?

उतर कर—कुछ कम। उ० मैं तुमसे उतर कर ही धूर्त्त हूँ।

उतरती उम्र—ढलती आयु।

उतरा कर चलना—गर्व करना। उ० नौकरी पा गया तो उतरा कर चलने लगा। यही तो आज के लडको का हाल है।

उतार चढाव बताना—धोखा देना, बहकाना। उ० आपके उतार चढाव बताने मे वह नही आ सकता।

उतारू होना—तत्पर होना। उ० राम मुझसे लडने के लिये उतारू हो गया है।

उत्तम मध्यम कहना—भला बुरा कहना। उ० आपका उत्तम मध्यम कहना बेकार है। मैंने साफ कह दिया कि इस काम मे मेरा बिलकुल हाथ नही था।

उतारे का माल—चोरी का या मुफ्त का माल। उ० उतारे का माल नही है, जो इतना सस्ता मिल जायेगा।

उत्तू-उत्तू करना या कर देना—मारते-मारते बदन उधेड देना। उ० उसने तो उस गरीब भिखारी को उत्तू-उत्तू कर दिया।

उत्तू करना—१ बेवकूफ बनाना। उ० उत्तू न करो, तुमने जितना चून खाया है, उतना मैंने नून खाया है। २ बडी मार मारना।

उत्तू हो जाना—बेवकूफ होना, बिना बुद्धि का होना। उ० उसके आगे तो तुम उत्तू हो जाते हो। केवल मुझ पर रोब गालिब करना तुम्हें आता है।

उथल-पुथल करना—१ उलट पुलट देना। उ० मेरे कमरे की सब चीजें किसने उथल-पुथल कर दी हैं। २ क्रांति करना।

उदय से अस्त तक—दे० 'उदय से अस्त लौं'।

उदय से अस्त लौं—सारी जमीन पर। उ० उदय से अस्त लौं भ्रमण करके देख लो, उसके जैसा शरारती आदमी मिलना मुश्किल है।

उदर जिलाना—पेट पालना। उ० नौकरी क्या करता हूँ, किसी तरह उदर जिला रहा हूँ।

उदर भरना—पेट भरना। उ० किसी तरह उदर भरता है।

उधर का चाला नहीं होना—उस ओर जाने लायक दिन न होना। उ० उधर का चाला नही है तो क्यो जाते हो, शायद कुछ हो जाय तो ?

उधार खाये बैठना—१ किसी आशा मे बैठे रहना। उ० क्या बेकार मे उधार खाए बैठे हो ? कुछ करते धरते क्यो नही ? २ कर्जदार होना। उ० वह तो मेरा उधार खाए बैठा है, देने का नाम नही लेता।

उधेड़ देना—१. भेद कह देना। उ० मुझे परेशान करोगे तो मैं तुम्हारा और किस्सा उधेड दूँगा। २ खूब पीटना।

उधेड़बुन—सोच-विचार। उ० तुम कई दिन से किसी उधेडबुन मे हो, आखिर बात क्या है ?

उधेड़बुन मे पड़ना—किसी समस्या के सोचने-विचारने मे परेशान या व्यस्त होना। उ० पड़ गये हो उधेडबुन मे क्यो, तुम गए बार-बार बीछे हो।

उन्नीस—१. कमजोर। उ० यह पहलवान उससे कुछ उन्नीस है। २ कम। उ० इसका दाम कुछ उन्नीस होना चाहिए।

उन्नीस बिस्वे—प्राय, अधिकाशत.। उ० मुझे तो उन्नीस बिस्वे उनके न आने की ही आशा है।

उन्नीस-बीस का फर्क होना—बहुत कम अतर होना। उ० उन्नीस-बीस का फर्क कोई फर्क नहीं है।

उन्नीस-बीस होना—बहुत थोडा अतर होना।

उन्नीस होना—कम होना। उ० तुमसे उन्नीस कौन है ?

उपरी-उपरा—चढा-उपरी, एक दूसरे से बढ जाने की इच्छा। उ० उन दोनो मे आजकल खूब उपरी-उपरा चल रही है।

उफन जाना— गुस्सा हो जाना। उ० छोटी सी बात पर उफन जाना ठीक नही है।

उफन पड़ना—दे० 'उफन जाना।

उबटना खेलना—मिलना। [इसका प्रयोग मुस-लमानो की भाषा मे होता रहा है।]

उबल पड़ना—गुस्से में आना, गुस्से मे दिल की गुबार निकालना, जली-कटी सुनाना। उ० बस उबल पड़े ! यही तो आपकी बिसात है, और समझते हैं अपने को गाधी का चेला।

उभर जाना—१ हालत ठीक होना। उ० अब वह बहुत उभर गया है। २ निकल आना। ३ उन्नति करना।

उभरना या उभर चलना—१ गर्व करना। उ० धनी होने का यह अर्थ थोडे है कि उभर चलो। २ जवान होना। उ० वह अब उभरे चला। ३ उन्नति करना। उ० आदमी ईमान-दारी से रहे तो उभरते देर नही लगती। ४. किसी गुप्त बात को बताना। उ० पहले तो कुछ नही बतलाता था पर बाद मे ऐसा उभरा कि सारा कच्चा-चिट्ठा खोल दिया।

उभर देना—१ उकसा देना। उ० तुमने मेरे भाई को उभार दिया और वह मुझसे लड बैठा। २ खोल देना। उ० इस सीयन को उभार दो।

उभार पर होना—उन्नति पर होना। उ० यह मान लिया कि तुम उभार पर हो, किन्तु सबसे झगडना ठीक नही है।

उभार लाना—उठा लाना। उ० अगर मैं उभार लाऊँगा तो तुम क्या करोगे ?

उभार लेना—ऊपर आना। उ० डूबने के पूर्व बेचारे ने दो एक उभारें ली होगी, पर यहाँ था ही कौन, जो बचाता ?

उभारा लेना—किसी बीमारी का जाकर फिर से उभरना। उ० ज़रा ठीक से रहो, यह ज्वर यदि उभारा लेगा तो बचना मुश्किल हो जायगा।

उमडना-घुमड़ना—चारो तरफ छाना। उ० आज बादल खूब उमड़-घुमड रहे हैं।

उमर के दिन भरना—दुख से जिंदगी बिताना। उ० भाई, मैं उमर के दिन भर रहा हूँ, अब इस जीवन मे कोई आकर्षण नही।

उमर टेरना—किसी प्रकार जीवन के दिन पूरे करना। उ० किसी तरह उमर टेर रहा हूँ।

उमर पड़ना—बुढापा आना।

उमर भर का पट्टा लिखाना—हमेशा के लिए वचनबद्ध होना। उ० आपका मैंने उमर भर का पट्टा नही लिखाया है, अब आप खुद कमायें और अपना काम चलाएँ।

उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेना—जीवन भर के खाने-पीने का प्रबन्ध कर लेना। उ० मैं दो वर्ष भी आप के यहाँ नौकरी कर लूँगा तो उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लूँगा।

उम्मीद होना—गर्भ होना, सतान की आशा होना। उ० मेरी घरवाली को अब कुछ उम्मीद

है। इन दिनो भाई साहब के घर मे कुछ उम्मीद है। आशा है लड़का ही होगा।

उम्र—'उम्र' के मुहावरो के लिए दे० 'उमर'।

उर लाना—प्यार करना। उ० अपने बच्चे को उर लाने से कौन माँ रोकी जा सकती है?

उरिण होना—ऋण-मुक्त होना?

उलझन मे पड़ना—चक्कर में पड़ना, फेर मे पड़ना। उ० मैं इस समय बड़ी उलझन मे पड़ गया हूँ।

उलझा सुलझा—भला बुरा, टेढ़ा सीधा। उ० उलझा सुलझा कुछ भी बतला दो।

उलट जाना—मदहोश हो जाना। उ० तुम तो पीते ही उलट गये।

उलट पड़ना—१. नाराज़ होना। उ० मैंने कौन सी ऐसी बात कही कि आप उलट पड़े? २ एक को छोड़ दूसरे पर आ जाना। उ० यार, तुम्हे उलट पड़ते तो देर नहीं लगती! कल तक उसे बुरा कह रहे थे, आज मुझे ही कहने लगे।

उलट-पेंच की बात करना—चालाकी की बात करना। उ० मैं आपकी उलट-पेंच की बात करना समझ रहा हूँ, आप मुझे धोखा नही दे सकते।

उलटा घड़ा बांधना—और का और करना। उ० उसे न दो, नही तो वह उलटा घड़ा बाँध देगा।

उलटा ज़माना—बुरा ज़माना। उ० आज-कल उलटा ज़माना है, सबको बहुत होशियारी से रहना चाहिये।

उलटा तवा—बहुत काला। उ० उसे सुन्दर कह रहे थे! अरे वह तो उलटा तवा है।

उलटा पाठ पढाना—दे० 'उलटी पट्टी पढाना'।

उलटा लटकना—किसी चीज के लिये बहुत परिश्रम करना। उ० अगर तुम उलटा लटक जाओ तो भी इस साल परीक्षा मे नही पास हो सकते।

उलटा सीधा—भला बुरा। उ० अच्छा अब आप चुप रहें, बहुत उलटा सीधा बोल चुके।

उलटी आँते गले मे आना या पड़ना—दे० 'उलटी टाँगे गले आना'।

उलटी खोपड़ी—बेवकूफ। उ० उलटी खोपड़ी के आदमी अपने को सबसे होशियार समझते हैं।

उलटी गंगा बहाना—अनहोनी बात करना। उ० आप क्या उलटी गंगा बहा रहे हैं? [illegible] बन्दर भी लिख सकता है?

उलटी छूरी से काटना—बहुत दुःख देना। उ० भाई, क्यो उलटी छूरी से काट रहे हो? इससे तो अच्छा है कि जान से ही मार दो।

उलटी टाँगे गले मे आना—अपनी करनी से आप फँसना। उ० अक्ल रखते हो या पत्थर? इस बात से तो उलटी टाँगें गले में आएँगी!

उलटी पट्टी पढाना—बहकाना। उ० आप की उलटी पट्टी पढाना मैं समझ रहा हूँ। मुझे बेवकूफ न समझिये। तुमने उसे ऐसी उलटी पट्टी पढाई कि अपने बाप से लड़ बैठा।

उलटी माला फेरना—बुराई करना, किसी के बुरे के लिए भगवान से प्रार्थना करना। उ० कोई तुम्हारी बुराई करे तब भी तुम उलटी माला न फेरो।

उलटी साँस चलना—मरने के निकट होना। उ० आज सुबह ही से उसकी उलटी साँस चल रही है।

उलटी सीधी सुनाना—बुरा भला कहना। उ० आपने मुझे बहुत उलटी सीधी सुनायी, अब चुप रहिये, नहीं तो खैरियत नहीं है।

उलटे काँटे तौलना—कम तौलना। उ० सबके लिये तुम उलटे ही काँटे तौलते हो।

उलटी हवा बहना—विपरीत अवस्था होना। उ० उलटी हवा बह रही है। एक स्त्री ने अपने पति को विष दे दिया।

उलटे छुरे से मूँड़ना—मूर्ख बनाना। उ० उसने तो मुझे उलटे छुरे से मूँड़ लिया।

उलटे पाँव फिरना—फौरन लौट जाना। उ० मुझे देखते ही वह उलटे पाँव फिर गया।

उलटे पाँव लौटना—तुरत लौटना। उ० मोहन आज मेरे यहाँ आया और उलटे पाँव लौट गया।

उलटे पाँव वापिस आना—दे० 'उलटे पाँव लौटना।'

उलटे बाँस बरेली भेजना—जहाँ जिस वस्तु की जरूरत न हो वहाँ उसे भेजना। उ० तुमने प्रयाग अमरूद भेजे हैं। अजीब आदमी हो, उलटे बाँस बरेली भेजते हो।

उलटे मुँह गिरना—दूसरो को नीचा दिखाने के प्रयास मे खुद नीचा देखना। उ० आप मेरे फेर मे थे और उलटे मुँह गिरे। ईश्वर बुरे का भला कभी नहीं करता।

उलाहना उतारना—दे० 'ओलाहना उतारना'।

उलाहना देना—शिकायत करना। उ० मुझसे उसका उलाहना देकर क्या करोगे ? मैं उससे इसके बारे मे कुछ भी नही कह सकता।

उल्लू का गोश्त खिलाना—बेवकूफ बनाना। उ० मुझे उल्लू का गोश्त भी नही खिला सकते !

उल्लू का पट्ठा—बेवकूफ। उ० यार तुम तो पूरे उल्लू के पट्ठे हो, तुमसे कुछ भी नही हो सकता।

उल्लू की लकड़ी फेरना—मूर्ख बनना।

उल्लू के से दीदे—डरावनी और बडी-बडी आँखें। उ० अरे तुम्हारे तो उल्लू के से दीदे हैं ! तुम्हें देखकर तो भूत भी डर जायगा !

उल्लू फँसाना—१ अपने वश मे करना। उ० आजकल आपने उसे खूब उल्लू फँसाया है। २ बेवकूफ बनाना। उ० तुम्हारे मे क्या रक्खा है, वह बडो-बड़ो को उल्लू फँसाता है।

उल्लू फाँसना—दे० 'उल्लू फँसाना।'

उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना। उ० मुझे क्या उल्लू बनाते हो ? मैं तो बड़ों को भी चराता हूँ !

उल्लू बोलना—उजाड होना। उ० जहाँ अच्छे अच्छे शहर थे, वहाँ आज उल्लू बोलता है।

उल्लू सीधा करना—काम बनाना। उ० उल्लू सीधा करना हो तो उसकी शिफारिश करो।

उसास छोड़ना—दुःख या शोक की साँस छोडना। उ० दशरथ उसास छोडते परमधाम गए।

उसी पाँव लौट आना—तुरत लौट आना।

उस्ताद होना—छली, धूर्त या गुरुघटाल होना। उ० तुम भी तो उस्ताद हो। तुम्हारे साथ ऐसा करके उसने कोई बुरा तो नही किया।

ऊ

ऊँच नीच—भला बुरा, आला और अदना, बडा और छोटा। उ० दानव देव ऊँच अरु नीचू।

ऊँच नीच समझना—हानि-लाभ सोचना। उ० ऊँच नीच समझ कर किसी काम मे हाथ डालना चाहिये।

ऊँच नीच समझाना—भली बुरी बताना। उ० मैंने ऊँच नीच समझा दिया है, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने।

ऊँच नीच सुनना—भली बुरी सुनना। उ० बेफायदे में किसी की ऊँच नीच सुनने क्यो जाऊँ।

ऊँच नीच सूझना—उचित ध्यान होना। बुरा भला दिखलाई देना। उसका ग्रेजुएट होना बेकार है, जब उसे ऊँच नीच भी नही सूझता।

ऊँच नीच सोचना—अच्छी तरह सोच-विचार लेना। भला बुरा समझ लेना। ऊँच-नीच सोच-कर तो काम शुरू करो नही तो पछताना पड़ेगा।

ऊँचा करना—ऊपर उठाना, तारीफ करना। उ० आप उसको ऐसे ही ऊँचा कर रहे हैं। वह इस काबिल नही हैं।

ऊँचा नीचा दिखाना—१ हानि लाभ दिखाना। २, बहकाना। उ० उसे ऊँचा नीचा दिखाकर तुमने अपना काम बना लिया।

ऊँचा नीचा सुनाना—खरी खोटी सुनाना। डाँटना-फटकारना।

ऊँचा सुनना—कुछ कम सुनना। उ० मेरे भाई कुछ ऊँचा सुनते हैं।

ऊँचा स्वर—ऊँची आवाज़।

ऊँचा होना—अधिक होना, बढकर होना। उ० अगर सही-सही पूछते हैं तो वे किसी भी बात में ऊँचे नही हैं।

ऊँची नाक होना—अपनी इज्जत का बहुत ध्यान होना।

ऊँची-नीची पचाना—भली-बुरी बातो को बर्दास्त करना या छिपा लेना।

ऊँची नीची सुनना—भला बुरा कहना, फटकारना। उ० उसके पिता ने उसे आज खूब ऊँची-नीची सुनाई।

ऊँची साँस लेना—दुःख या शोक मे मग्न होना। उ० लेकर उन्होने श्वास ऊँचा बदन नीचा कर लिया।

ऊँची हवा मे होना—अपने को बहुत बडा समझना।

ऊँचे-खाले पैर पड़ना—१ गलती होना। भ्रष्ट होना। २ व्यभिचार मे पुरुष या स्त्री का फँसाना। ३ ऊँचे खाले पैर किसके नही पडते ?

ऊँचे चढ़कर कहना—पुकार कर कहना। सबसे कहना। उ० मैं ऊँचे चढकर कह रहा हूँ कि जिसे हाथ मिलाना हो सामने आए।

ऊँचे चढ़ना—१ अभिमान करना। उ० आजकल

आप बहुत ऊँचे चढ रहे हैं। २. उन्नति करना।

ऊँचे नीचे पैर पड़ना—दे० 'ऊँचे खाले पैर पडना।'

ऊँचे बोल का मुँह नीचा होना—घमडी का घमड भग होना। उ० ससार मे यह देखा जाता है कि ऊँचे बोल का मुँह अवश्य नीचा होता है।

ऊँट का किसी करवट में बैठना—मामले मुकदमे या झगडे मे फैसला होना। उ० देखें ऊँट किस करवट बैठता है?

ऊँट का सुई की नाक मे जाना—असभव काम। उ० तुम्हारा उसे पछाड देना ऊँट का सुई की नाक मे जाना है।

ऊँट के मुँह मे जीरा देना—अधिक आवश्यकता पर थोडी वस्तु देना। उ० मेरे लिये एक पाव दूध। क्या ऊँट के मुँह मे जीरा दे रहे हो?

ऊँट होना—१ लम्बी गर्दन वाला होना। २ बहुत लबा होना। ३ ऊँट हो गए और शऊर नही आया।

ऊधम उठाना—दे० 'ऊधम मचाना'।

ऊधम जोतना—दे० 'ऊधम मचाना'।

ऊधम मचाना—उपद्रव करना। उ० क्या ऊधम मचा रहे हो, एक थप्पड मे तो जमीन पकड लोगे।

ऊधो की लेना न माधो की देना—किसी से कुछ सवध न रखना। उ० मुझसे किसी से क्यो झगडा होगा? मैं न ऊधो की लेता हूँ न माधो को देता हूँ।

ऊपर ऊपर की—दिखावटी। उ० उनकी और आपकी दोस्ती बस ऊपर-ऊपर की है।

ऊन की दून करना—छोटी सी बात को बडी बनाना।

ऊपर ऊपर जाना—१ न रुकना। तुरन्त जाना। उ० आप तो आते हैं और ऊपर ही ऊपर चले जाते हैं। २ किसी खास काम मे न खर्च होकर यो ही खर्च हो जाना। उ० सारा रुपया ऊपर ही ऊपर चला गया। ३ नीचे की चीजो को छोडना या न देखना। ४ केवल ऊपर-ऊपर या ऊपरी चीजो को देखना। उ० कोई आता भी है तो ऊपर ही ऊपर चला जाता है।

ऊपर की आमदनी—इधर उधर की कमाई। उ० मेरी ऊपर की आमदनी ही तो कुछ है, नही तो भला वेतन मे क्या रक्खा है?

ऊपर की दोनो जाना—अधा होना, दिखाई न देना। उ० जब से मेरी ऊपर की दोनो गईं, मुझे बडा कष्ट है।

ऊपर की साँस ऊपर और नीचे रह जाना—दे० 'नीचे की साँस नीचे और ऊपर की साँस ऊपर रह जाना'।

ऊपर को दम भरना—१ ऊँची साँस लेना। उ० क्यो ऊपर को दम भरते हो? २ ऊपरी मुहब्बत करना। उ० तुम्हारे सब दोस्त तो ऊपर को ही दम भरने वाले हैं।

ऊपर चढ़ना—आक्रमण करना। उ० थानेदार विना कुछ पूछे मुडे के ऊपर चढ गया।

ऊपर छार पड़ना—मर जाना। उ० जो लौं ऊपर छार नहि परै। तौ लौ यह तृष्णा नहि मरै।

ऊपर तले के—एक के वाद दूसरा। तर उपरिया। उ० उसके ऊपर तले के तीन पुत्र हैं।

ऊपर मढना—जिम्मे करना। डालना। उ० यह अपराध आप मेरे ऊपर क्यो मढ रहे हैं?

ऊपर वाला—भगवान। उ० ऊपर वाला बडा दयालु है।

ऊपर से ऊपर खा जाना—विना किसी के जाने ले लेना या चट कर जाना। उ० घूस का सारा रुपया ये ऊपर से ऊपर खा जाते हैं, मुझे कुछ भी नही मिलता।

ऊपर से ऊपर लेना या ले लेना—१ पहले ही ले लेना। उ० आम आए थे, परन्तु तुम लोगो ने ऊपर से ऊपर ही ले लिए। २ ऐसा ले लेना कि किसी को पता न चले।

ऊपर ही ऊपर खा जाना—दे० 'ऊपर से ऊपर खा जाना'।

ऊपर ही ऊपर लेना—दे० 'ऊपर से ऊपर लेना'।

ऊपर होना—आगे बढ जाना। उ० अब वह मुझसे पढाई में बहुत ऊपर हो गया है।

ऊपरी खर्च—फुटकर खर्च। उ० १०) तो उसका ऊपरी खर्च है।

ऊपरी दिल से—नकली तौर पर, यथार्थत नही। उ० मैं जानता हूँ, वह तुम्हे ऊपरी दिल से चाहता है।

ऊल-जलूल—बेकार की बात। उ० क्या ऊल जलूल बकते हो?

ऊसर की खेती—१ व्यर्थ का काम। २ असभव काम।

ऋ

ऋण उतारना–कर्ज़ अदा होना। उ० हमारा ऋण उतर गया है।

ऋण करना–अपने ऊपर कर्ज़ा करना। उ० पिता जी ऋण करके मर गए, अब मुझे ही चुकाना है।

ऋण काढ़ना–कर्ज़ा लेना। उ० ऋण काढकर करने से कुछ न करना अच्छा है।

ऋण खाना–कर्ज़ लेना। उ० दुनिया भूखी मर जाये पर ऋण खाने वाला कभी भूखा नहीं मरता।

ऋण चढना–कर्ज़ होना। कर्ज़ बढना। उ० मेरे ऊपर बहुत ऋण चढ गया, अब देने का उपाय करना चाहिए।

ऋण चढाना–कर्ज़ बढाना। उ० ऋण बढाना बहुत बुरा होता है।

ऋण पटना–कर्ज़ वसूल होना। उ० इस आदमी से ऋण पट जाय तो बड़ा भाग्य समझो।

ऋण पटाना–कर्ज़ वसूल कराना। उ० उनसे ऋण पटा दो तो तुम्हें भी कुछ हिस्सा दे दूँ।

ऋण मढ़ना–किसी पर ऋण छोड़ जाना। उ० मेरे भाई मेरे ऊपर ऋण मढ़ कर अपने विदेश चले गये।

ऋण शुद्धि होना–कर्ज़ का अदा हो जाना। उ० किसी तरह ऋण शुद्धि हो जाती तो ईश्वर को धन्यवाद देता।

ऋद्धि-सिद्धि पाना–समृद्धि और सफलता पाना। उ० उसने तो ऐसी ऋद्धि-सिद्धि पाई है कि देखते ही बनता है।

ए

ऍंच करना–देर लगाना। उ० ऍंच न करो, इसको जल्दी समाप्त करो।

ऍंच पेंच डालना–उलझन या अटकाव डालना। उ० ऍंच पेंच डालकर उसने मेरा काम रोक दिया।

ऍंच पेंच बताना–चालबाज़ी करना। उ० मुझे ऍंच पेंच न बताओ, मैं तुमको अच्छी तरह जानता हूँ।

ऍंड़ी बेंड़ी सुनाना–फटकारना, भला बुरा कहना। उ० रोज ऍंड़ी बेंडी सुनाओगे तो ठीक न होगा।

एक अंक–दे० 'एक आँक'।

एक अंग भी कच्ची न होना–अविचलित रहना।

एक आँक–एक ही बात। निश्चित रूप से। उ० एक आँक कहता हूँ कि मैं उससे कभी भी नहीं बोल सकता।

एक आँख देखना–एक झलक लेना।

एक आँख न भाना–ज़रा भी अच्छा न लगना। उ० आपका काम मुझे एक आँख भी नहीं भाता।

एक आँख से देखना–एक सा समझना। एक सा व्यवहार करना। उ० राजा को अपनी सारी प्रजा को एक आँख से देखना चाहिये।

एक-आध–कुछ, थोड़े से। उ० आज भी एक आध आदमी आ सकते हैं, अतः कुछ प्रबन्ध अवश्य रखना।

एक-एक–१. बारी बारी। उ० एक-एक करके मैं सबको हरा सकता हूँ। २. अलग अलग। उ० एक-एक लड़ते तो बताता। ३. हर एक। उ० एक-एक को पीटूँगा।

एक-एक के दो-दो करना–दूना लाभ लेना। बहुत लाभ लेना। उ० एक-एक के दो-दो करने वालो की दूकान कभी नहीं चलती।

एक-एक कोना छान मारना–सब जगह खोजना। उ० मैंने घर का एक-एक कोना छान मारा, पर मुझे अपनी कमीज़ नहीं मिली।

एक-एक नस पहचानना–सच्चाई जानना। उ० मैं आपकी एक-एक नस पहचानता हूँ। आप चुप ही रहें तो अच्छा है।

एक-एक पग चलना दूभर होना–निर्बलता से बिल्कुल चल न पाना। उ० मुझे तो एक-एक पग चलना दूभर हो रहा है, मैं भला वहाँ तक कैसे जा सकता हूँ?

एक और एक ग्यारह होना–मेल से बहुत बल बढ जाना। उ० तुम दोनो मिल कर हमला करो फिर देखो कि क्या गुल खिलता है? जानते हो, एक और एक ग्यारह होते हैं!

एक कलम—पूर्णत, बिलकुल। उ० उसको नेक कलम बर्खास्त कर दिया।

एक कहना न दस सुनना—किसी को भला बुरा न कहो न उसका सुनना पडे। उ० नही भाई मैं उनसे बात भी नहीं करूँगा। मैं न एक कहूँ न दस सुनूँ वाला सिद्धान्त पसद करता हूँ।

एक कान से सुनना दूसरे से निकाल देना—(किसी) बात पर ध्यान न देना।

एक की अट्ठारह लगाना, एक की चार जोडना, एक की कई बनाना—बढाचढाकर कहना या सीकायत करना।

एक की दस सुनाना—एक के उत्तर मे दस कहना, एक ताने के बदले मे दस कडे शब्द कहना। उ० भाई तुम एक की दस सुनाओ, मैं कभी भी बुरा नही मानूंगा।

एक की दो कह लेना—दुगुना बदला लेना। उ० यदि मेरे कहने पर नाराज हो, तो एक की दो कह लो।

एक की दो-चार-अट्ठारह-लाख-जडना-जोडना-लगाना—बढा-चढाकर कहना।

एक के पीछे दूसरा—धीरे-धीरे, बारी-बारी से। उ० एक के पीछे दूसरे चलते बने।

एक खपडे का नहलाया होना—दे० 'एक तरकश के तीर होना'।

एक खालसा सवा लाख होना—हिम्मत बहुत बडी चीज होना। उ० जानते हो, एक खालसा सवा लाख होता है। हिम्मत करो तो क्या नही हो सकता?

एक जबान—दे० 'एक बात'।

एक जबान होना—दे० 'एक बात होना'।

एक जान—बिलकुल हिले-मिले, बहुत बडे मित्र। उ० वे दोनो एक जान हैं।

एक जान करना—मरना और मारना। उ० अगर फिर कुछ कहेगे तो एक जान कर दूंगा।

एक टक—बिना पलक गिराए। उ० वह तुम्हे एक टक देख रहा था।

एक टाँग खडा रहना—काम करने को हर वक्त तैयार रहना। उ० मेरा नौकर दिन-रात एक टाँग खडा रहता है।

एक टाँग पर खडा रहना—दे० 'एक टाँग खडा रहना'।

एक टाँग पर घूमना—लगातार घूमना। उ० सुबह से वह एक टाँग पर घूम रहा है।

एक डाल पर रहना—१ बात न बदलना। उ० मैं तो मरते दम तक एक डाल पर रहने वाला हूँ। २ एक ओर रहना, एक पक्ष का समर्थन करना। उ० एक डाल पर रहो, नही तो दूध की मक्खी की तरह फेंक दिए जाओगे।

एक ढेले से दो चिडिया मारना—१ एक चाल से दो को हराना, २ एक काम से दुहरा लाभ करना।

एक तरकश के तीर होना—एक गुट्ट के होना, एक सा होना। स्वभाव मे बिलकुल एक होना। उ० तुम दोनो ही तो एक तरकश के तीर हो। किसे अच्छा कहूँ और किसे बुरा?

एक तहसील गायब होना—दे० 'एक बाजार बद होना'।

एक तार—बराबर। उ० दोनो एक तार हैं। कोई भी फर्क नही है।

एक थैली के चट्टे बट्टे होना—दे० 'एक तरकश के तीर होना'।

एक दो तीन बोलना—१. नीलाम करना। उ० कल उसका सभी सामान एक दो तीन बोल दिया जायगा। २ दौड इत्यादि शुरू करवाना। उ० जल्दी चलो। निर्णायक एक दो तीन बोलने वाले हैं।

एक दो तीन होना या हो जाना—१. नीलाम होना। २ दौड आदि खेलो का आरंभ होना। ३. चल देना। उ० है वह विचित्र का स्वार्थी। अपने काम पर तो यहाँ रुकता है, और नहीं तो एक दो तीन हो जाता है।

एक न चलना—कोई उपाय न लगना। उ० मेरे रहते उसकी एक न चलेगी।

एक पंथ दो काज करना—एक उपाय से दो काम करना। उ० घूमने तो चल ही रहे हैं, लौटते हुए पुस्तक भी ले लेंगे। एक पंथ दो काज कर लेंगे।

एक पर एक होना—एक से एक बढकर होना। उ० ससार मे अनेक विद्वान एक पर एक हैं।

एक परगना गायब होना—दे० 'एक बाजार बद होना'।

एक पान के दो टुकडे करके खाना—बहुत घनिष्ठ होना।

एक पास—पास पास। उ० रचीसार दोनो एक पासा।

एक पेट के—सहोदर भाई। उ० वे दोनो एक पेट के हैं।

एक पैर भीतर यहाँ एक पैर बाहर वहाँ होना—स्थिर न होना, दुचित्ता होना।

एक बाजार बन्द होना—काना होना। उ० उनका तो खुद एक बाजार बद है, वे क्या मुझे एचा-तान कहेंगे?

एक बात—१ पक्का वादा । उ० मैं एक बात कहता हूँ, आप इस पर विश्वास करें। २ ठीक या निश्चित बात । उ० एक बात कहना तो तुम जानते ही नही हो ।

एक बात पर होना—जो कहे उसी पर अटल रहने वाला होना । उ० अगर एक बात पर हो तो मेरे साथ चलो, और नही तो स्वीकार करो कि तुमने कल असत्य कहा था ।

एक माँ-बाप का होना—१ मिल कर रहना । उ० एक माँ-बाप का होने से ही उन्नति सभव है। २ असल का होना, एक बाप का होना। उ० अगर एक माँ-बाप के होंगे तो अब मुझसे न बोलेंगे ।

एकमुँह बोलना—१ एक राय होना । उ० सब पच एक मुँह बोल रहे हैं तो अन्यथा कैसे हो सकता है ? २ जरा-सा बोलना । बोल देना। उ० वह जाने अपने को क्या समझता है कि जाने पर एक मुँह बोलता तक नही ।

एकमुँह से कहना—एकमत होना, एक की राय दूसरे से मिलना । सब का एकसाथ कहना। उ० पचायत मे सब एक मुँह से कहने लगे कि उसका कुछ भी दोष नही है ।

एकमुँह होना—दे० 'एक मुँह बोलना' ।

एकमुश्त—एकसाथ, इकट्ठे । उ० उसने एकमुश्त १०० रु० दिए ।

एक म्यान मे दो तलवार होना—एक अपेक्षित की जगह दो होना जो उचित या सभव न हो ।

एक में एक करना—उलटा-सीधा करना । उ० सब सामान एक में एक क्यो कर दिया ? ठीक से रक्खो ।

एक रंग आना एक रंग जाना—मुँह पर हवाई उडना । उ० इस समाचार से उसके चेहरे पर एक रग आता और एक रग जाता था ।

एक लाठी से हाँकना—सबके साथ एक-सा व्यवहार करना । उ० सबको एक लाठी से हाँकना ठीक नही है। योग्य-अयोग्य, बडा-छोटा का विचार कर लेना चाहिये ।

एक लेना न दो देना—कोई सबध न रखना । उ० सब ते निस्पृह प्रेमिक लोय । लेना एक न देना दोय ।

एकसमान होना—बराबर होना । उ० तुम दोनो मेरे लिए एकसमान हो ।

एक साँचे के ढले—१ एक ही शक्ल-सूरत के । उ० ये दोनो बैल एक ही साँचे के ढले हैं ।२ एक स्वभाव के । उ० तुम्हारा विश्वास नही तो उसका क्या ? आखिर तुम दोनो ही तो एक साँचे के ढले हो ।

एक-सा होना—दे० 'एकसमान होना' ।

एक सुर से बोलना—सब की एक आवाज होना, एक होंना, मेल होंना । उ० खोलते तो कान कैसे खोलते, एक सुर से बोलते ही जब नही ।

एक से इक्कीस करना—१ बढाना । भगवान तुम्हे एक से इक्कीस करे । २ तिल का ताड करना । बहुत बढा-चढा कर कहना । उ० कुछ सच भी बोला करो । इस एक से इक्कीस करने से क्या लाभ ?

एक से इक्कीस होना—फलना-फूलना, बढ़ना । उ० अगर तुम मुझ गरीब को एक पैसा दोगे तो भगवान की दया से एक से इक्कीस होगे ।

एक से एक—एक दूसरे से बढ-चढ कर । उ० ये तीनो एक से एक धनी हैं ।

एक से दिन न जाना—दु ख या सुख हमेशा नही रहना । उ० प्रकृति का कुछ ऐसा नियम है कि एक से दिन नही जाते ।

एक से दिन न रहना—सर्वदा एक ही हालत न होना । उ० मित्र ! एक से दिन नही रहते, आज दु ख है तो कल सुख भी आयेगा ।

एक स्वर बोलना—दे० 'एकमुँह से कहना' ।

एक स्वर से बोलना—दे० 'एक सुर . ' ।

एक हाथ से ताली न बजना—१ केवल एक आदमी से झगडा न होना । २. झगडे मे केवल एक पक्ष का दोष न होना । उ० रहने भी दो, एक हाथ से ताली नही बजती । तुम्हारे बेटे ने भी अवश्य गलती की होगी ।

एक ही टाट के—१ भाई-बधु एक जाति के । उ० हम सब एक ही टाट के हैं। २ एक ही विचार के ।

एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—दे० 'एक ही टाट के' ।

एक ही भाव तोलना—सब को बराबर समझना । उ० मैं तो एक ही भाव तोलता हूँ, चाहे कोई अमीर हो या गरीब ।

एक ही हुक्के के—एक ही बिरादरी के । उ० एक ही हुक्के के हो तो शादी करने मे क्या हर्ज ?

एक ही होना—अप्रतिम होना । एकला होना । अपने गुण और धर्म मे अकेला होना । उ० फोटो खीचने मे तो वह शहर मे एक ही है ।

एक होना–१ मेल कर लेना । उ० दोनो झगड करके फिर एक हो गये । २ दे० 'एक ही होना' ।

एड देना–१ घोडे को ठोकर देकर चलाना । उ० एड देते ही घोडा वडा तेज़ भागा । २ ठोकर मारना । उ० चुप रहो नही तो ऐसी एड दूँगा कि लोट जाओगे । ३ व्याघात पहुँचाना । वाधा पहुँचाना । उ० तुम्हारी एड देने से मैं नही डरता, भगवान चाहेगे तो कार्य होकर रहेगा ।

एड लगाना–दे० 'एड देना ।'

एड़ियाँ घिसना-रगडना–१ वहुत श्रम करना, २ दुख सहना ।

एडी चाटना–खुशामद करना । उ० वडे साहव की एडी चाटना छोड दो । उससे कुछ नही मिल सकता ।

एडी घिसना–१ कष्ट सहना । उ० वेचारा महीनों चारपाई पर एडी घिस कर मरा है । २ वहुत दौडना । उ० इतनी एडी घिस कर पैदा किया गया पैसा किसे न प्यारा होगा । ३ वहुत प्रयत्न करना । उ० मैं एडी घिस कर मर गया, पर वे नही ही आए ।

एडी-चोटी का जोर लगाना या पसीना एक करना–वहुत परिश्रम या प्रयास करना । उ० इस काम के लिए एडी-चोटी का पसीना एक करना होगा ।

एडी-चोटी पर से वारना–तुच्छ समझना । उ० तुम जैसो को तो मैं एडी-चोटी पर से वारता हूँ ।'

एडी रगडना–दे० 'एडी घिसना' ।

एडी से चोटी तक–पूरे शरीर पर । उ० सेठ जी की लडकी की शादी पर उसे एडी-चोटी तक गहनो से लाद दिया गया था ।

एडी से चोटी तक आग लगना–जलना, वहुत क्रोधित हो जाना । उ० मुझे देखते ही उसे एडी से चोटी तक आग लग जाती है ।

एतवार उठना–विश्वास का हट जाना । उ० उन पर से एतवार उठ गया ।

एतवार जमना–विश्वास उत्पन्न होना । उ० एतवार जमा है तव तक जो चाहो ले लो ।

एहसान उठाना–दे० 'एहसान लेना' ।

एहसान करना–ऐसा काम करना जिससे करने वाले के प्रति किसी को आभारी या एहसानमद होना पडे । किसी के साथ भलाई या नेकी करना । उ० आप मेरे ऊपर एहसान न करे, मैं यह नही चाहता ।

एहसान का टोकरा लादना–एहसान करना या एहसान करके उसकी याद दिलाना । यह मुहावरा प्राय व्यग्य मे प्रयुक्त होता है ।

एहसान का नमदा कसना–एहसान लादना ।

एहसान जताना–अपने किए काम की याद दिलाना । उ० तुम्हे एहसान जताने मे शर्म नही आती ?

एहसान मानना–शुक्रगुजार होना, आभारी होना । उ० यदि आप इस काम को कर दें तो मैं ताजिंदगी एहसान मानूँगा ।

एहसान फरामोश होना–एहसान या आभार को भुला देने वाला होना । उ० इस दुनियाँ मे एहसान फरामोश होना सीखो, नही तो गुज़र नही ।

एहसान रखना–आभारी वनाना । उ० वह मेरे ऊपर एहसान रखकर यह करना चाहता है ।

एहसान लेना–शुक्रगुजार या ममनून वनना । एहसानमद होना । आभारी होना । उ० मैं इस छोटे से काम के लिए उनका एहसान नही लेना चाहता ।

ऐ

ऐंचातानी–तनाव, विरोध । उ० ऐंचातानी मे ही नौकरी से हाथ मत धो लेना ।

ऐंचातानी करना–खीचातानी करना । अपनी-अपनी ओर लेने का प्रयत्न करना । उ० ऐंचातानी न करो नही तो खिलौना टूट जायेगा ।

ऐंठ-ऐंठ कर रह जाना–दिल मसोस कर रह जाना । उ० पिता जी के रहने से एंठ-ऐंठ कर रह जाना पडा, नही तो ऐसी सुनाता कि उनकी यहाँ आने की फिर हिम्मत भी न पडती ।

ऐंठ कर चलना–गर्व से चलना । उ० पहलवान ऐंठ कर चलते हैं ।

ऐंठ जाना–१ क्रोधित हो जाना । उ० जरा-सी वात मे ऐंठ जाते हो । २. कडा पड जाना । उ० वात-वात मे ऐंठते क्यो हो ? ३ जिद करना । उ० तुम तो लडको की तरह ऐंठ जाते हो ।

ऐंठ रखना—दे० 'ऐंठ लेना'।

ऐंठ लेना—धीरे से ले लेना, दबा लेना। उ० वह बड़ा नीच है, जहाँ किसी की कोई चीज देखता है, तुरत ऐंठ लेता है।

ऐंठ निकल जाना—गर्व दूर हो जाना।

ऐंड़ हो जाना—१ निकम्मा हो जाना। उ० वह तो ऐंड हो गया। २ नष्ट-भ्रष्ट होना।

ऐंडा-ऐंड़ा डोलना—दे० 'ऐंडा-ऐंडा फिरना'।

ऐंड़ा-ऐंडा फिरना—घमड मे चूर रहना। उ० आजकल तो वह ऐंडा-ऐंड़ा फिरता है।

ऐन मैन—ठीक वैसा ही। उ० मेरा बैल ऐन मैन तुम्हारे बैल जैसा है।

ऐबजोई करना—दोष खोजना, छिद्रान्वेषण करना। उ० तुम क्यो सबकी ऐबजोई किया करते हो?

ऐरा गैरा नत्थू खैरा—टुटपुंजिया। उ० ऐसे ऐरे गैरे बहुत देखे हैं।

ऐरे गैरे पँचकल्यानी—ऐसा आदमी जिसे कोई जानता न हो तथा जो बिलकुल ज़िम्मेदार न हो। उ० ऐरे गैरे पँचकल्यानी को मैं वह चीज कैसे दे सकता हूँ?

ऐसा-तैसा—साधारण, तुच्छ, नाचीज़। उ० तम उनको ऐसे तैसे समझते होगे, पर वे असल मे वहाँ के हीरे हैं।

ऐसी की तैसी करना—कोई परवाह न करना।

ऐसी-तैसी करना—इज्ज़त नष्ट करना।। उ० अगर ज्यादा बकोगे तो यहीं ऐसी-तैसी करके छोडूँगा।

ऐसी-तैसी में जाना—बरबाद हो जाना। उ० जब वह हमारे काम आता ही नही है तो ऐसी-तैसी मे जाय। मुझ से क्या मतलब?

ऐसा-वैसा न होना—असाधारण होना, विशेष होना। उ० मोहन कोई ऐसा-वैसा नही है। उससे झगडना हो तो जरा समझ कर आगे बढना।

ऐसा-वैसा होना—नाश होना। उ० बुढिया ने रुष्ट होकर शाप दिया—'तुम्हारा ऐसा-वैसा हो'।

ऐसी-वैसी बात करना—कोई गदी या ओछी बात करना। उ० देखो, भाई के सामने कोई ऐसी-वैसी बात मत कर देना।

ऐसे भोले होना—बहुत चतुर होना, भोले न होना। उ० आप ऐसे भोले हैं कि एक पाई भी अतर नही पड सकता।

ऐसे लडके बहुत खिलाये होना—ऐसो को तो बच्चे की तरह खिलाये होना और जरा भी परवाह नही करना। उ० तुम शात रहो, मैं नही डरता। ऐसे लडके तो बहुत खिलाए है।

ओ

ओठ—ओठ के मुहावरो के लिए ओठ, होठ और होठ देखिए।

ओक लगाना—अँजुरी लगाना। उ० ओक लगा कर पानी पी लो।

ओखली मे सिर देकर मूसलो को क्या गिनना/डरना—काम प्रारभ कर के कष्टो या कठिनाइयो के लिए क्या डरना।

ओखली मे सिर देना—विपत्ति मे जान कर पडना। उ० तब भला वह मूसलो को क्या गिने, जब किसी ने ओखली मे सिर दिया।

ओछा—कमीना, नीच, छिछला। उ० वह ओछा आदमी है, उसका विश्वास मैं नही करूँगा।

ओछा होना—१ कम होना। २ छोटा होना। ३ नीच होना।

ओछी कोख होना—ऐसी कोख होना, जिससे उत्पन्न लडके मर जायँ। उ० उस बेचारी की ओछी कोख है। अब उसका वश न चलेगा।

ओछा हाथ पड़ना—हलकी चोट पडना। उ० चोट गहरी नही है, हाथ ओछा ही पडा है।

ओछे की प्रीति—नीच के साथ मित्रता। उ० ओछे की प्रीति बालू की भीत कही गयी है।

ओझाई करना—१ रूठे आदमी को मनाना। २ भूत आदि झाडना। उ० ओझा ओझाई करने आए हैं।

ओट में—आड मे, बहाने। उ० धर्म की ओट मे अनेक पाप होते हैं।

ओट लेना—दे० 'ओढ लेना'।

ओठ उखाडना—परती खेत को पहली बार जोतना। उ० आज ओठ उखाडना है, जरा बैलो को अच्छी तरह से खिला देना।

ओठ काँपना—१ अधिक जाडे से ओठ काँपना। उ० आज रात भर मेरा ओठ काँपता रह

गया। २ क्रोध मे ओठ काँपना। क्रोध के कारण ओठ फडकना। उ० गुस्से के कारण उसका ओठ इतना काँप रहा था कि वह कुछ बोल भी न सका।

ओठ काटना—गुस्से मे ओठ को दाँतो तले दवाना। वहुत क्रोधित होना। उ० वह ओठ काटता ही रह गया, पर कुछ न कर सका।

ओठ चवाना—क्रोधित होना। गुस्सा आ जाना। उ० तुम क्यो ओठ चवाते हो ? तुम्हे तो उसने कुछ भी नही कहा।

ओठ चाटना—१ स्वाद लेने की इच्छा होना। उ० ओठ क्या चाट रहे हो ? कहो तो और खीर दे दूं। २ झेंप जाना। मैंने तो ऐसी वात कह दी कि वे ओठ चाटने लगे।

ओठ चूसना—ओठो का चुम्वन लेना।

ओठ तक न हिलाना—मुख से शब्द न निकालना। उ० ऐसा डर गया है कि ओठ तक नही हिला सकता, कोतवाली मे वयान देना तो दूर की चीज़ है।

ओठ पपडाना—हवा या खुश्की के कारण ओठ पर पपडी पडना।

ओठ फड़कना—१ क्रोध से ओठो का काँपना। उ० उस दिन उसके अत्याचार देखकर मेरे ओठ फडकने लगे। २ कहने की इच्छा होना। उ० कवि सम्मेलनो मे एक कवि को कविता सुनाते देख दूसरो के ओठ फडकने लगते हैं।

ओठ विजकाना—१ घृणा प्रदर्शित करना। २ पसंद न होने का भाव प्रकट करना।

ओठ मटकाना—कुछ कहने की इच्छा होना फिर कुछ सोच-समझ कर न कहना। उ० वेकार मे क्या ओठ मटका रहे हो, जो कहना चाहते तो कह डालो।

ओठ मलना—कड़ुई वात कहने का दंड देना। उ० चुप रहो, नही तो तुम्हारे ओठ मल दूंगा।

ओठ सी देना—चुप करा देना। उ० वह वात नही कर सकता उसके, ओठ सी दिये गये हैं।

ओठ हिलाना—कुछ धीरे-धीरे कहना। उ० क्या ओठ हिला रहे हो, साफ कहो ?

ओठों पर आना—कहे जाने के समीप आना। उ० उस दिन वह वात मेरे ओठो पर आकार रह गई। यदि जरा भी प्रसग आता तो मैं जरूर कह दिए होता।

ओठों पर नाचना—१ कुछ-कुछ याद आना। उ० उसका नाम मेरे ओठो पर नाच रहा है, मैं अभी वतलाता हूँ। २ विलकुल याद या वर्राक होना। उ० कोर्स की पुस्तकें उसके ओठो पर नाचती हैं।

ओठो पर लाना—मन मे कहना, धीरे से कहना। उ० आपकी वुराई मैं ओठो पर भी नहीं ला सकता, आप विश्वास रक्खें।

ओठो मे कहना—धीमे से कहना। उ० ओठो मे कहना हो तो जरा समीप आओ।

ओठों से खाना—ऐसी नरम चीज़ खाना जिसमे दाँत लगाने की जरूरत ही नही हो। उ० आज तुमको ऐसा खाना खिलाऊँगा कि तुम ओठो से खा जाओगे।

ओठो से टूटना—वहुत मुलायम होना। उ० आज की पूडियाँ तो ओठो से टूट रही हैं।

ओठो से मुसकराना—उ० आप ओठो से मुसकरा कर रह जाते हैं, जरा खुल कर हँसिये।

ओढ़ना उतारना—१ गुप्त वात खोलना। उ० मेरा ओढना उतार कर तुम क्या पाओगे ? २ वनी वनाई प्रतिष्ठा विगाड़ना। उ० मैं तुम्हारा ओढना उतार कर चैन लूंगा।

ओढना-विछौना वनाना—हर समय काम मे लाना। साधारण चीज़ समझना। उ० यह महँगी चीज़ है इसको ओढना-विछौना न वनाओ।

ओढना-बिछौना वाँधना—चलने का उपक्रम करना। उ० मालूम होता है कि तुम्हें भी अपना ओढना-विछौना वाँधना पडेगा।

ओढना-विछौना समेटना—दे० 'ओढना-विछौना वाँधना'।

ओढ़नी डालना—विधवा की सगाई करना (छोटी जाति की एक रस्म)। उ० आज चमेली को ओढनी डाली जायेगी।

ओढनी बदलना—सखी वनाना। उ० तुम महलो मे रहने वाली मुझ ग़रीव से क्या ओढनी वदलोगी ?

ओढ लेना—अपने पर लेना। ज़िम्मेदारी लेना। उ० मेरा सारा कर्ज़ उसने अपने पर ओढ लिया। दूसरे की वदनामी ओढ लेने वाला संसार मे कौन होगा ?

ओढे या बिछावें—क्या करें। उ० यह आपकी पुस्तक हम ओढ़े या विछावें ?

ओर आना–नाश का समय आना। उ० हँसता ठाकुर खँसता चोर। इन दोनो का आया ओर।

ओर निबाहना–दे० 'ओर निभाना'।

ओर निभाना–अंत तक फर्ज अदा करना। कर्त्तव्य का पालन करना, वादा पूरा करना। ओर निभाने वाले संसार मे कम हैं।

ओर लेना–पक्ष लेना। उ० आप तो उनका ओर ले रहे हैं। इस तरह फैसला नही हो सकता।

ओलहना उतारना–जी छुडाना, काम मन से न करना। उ० ओलहना उतार रहे हो या काम कर रहे हो। इस करने से तो न करना अच्छा था।

ओस का मोती–सुन्दर पर जल्दी नाश होने वाला। उ० भाई, यह ससार ही ओस का मोती है।

ओस चाटना–दिल को भुलावा देना। आवश्यकता से बहुत कम पाना या मिलना।

ओस पड़ना या पड़ जाना–१ शर्म करना। उ० उस पर तो सभी को देख कर ओस पड जाती है। २ हौसला पर धक्का पहुँचना। उ० उसके मरते ही तुम पर ओस पड़ गई। ३. मलीन हो जाना। उ० पौदो पर ओस पड़ गई है।

ओसाना–१ फटकारना। २ बहुत बात करना। उ० वह बहुत ओसाता है।

औ

औंट डालना–१ परीधान करना। २. गर्मी से भूंज डालना।

औंधी खोपड़ी का होना–बेवकूफ होना। उ० वह समझ नही सकता, औंधी खोपड़ी का है।

औंधी समझ–उलटी समझ, जड़ बुद्धि। उ० वह औंधी समझ का आदमी है।

औंधे मुंह गिरना–बुरी तरह धोखे मे आना। उ० मित्र क्या करूँ, ऐसे औंधे मुंह गिरा हूँ कि उठना भी कठिन है।

औंधे होना–१ बेसुध होना। उ० थोडी देर मे वे औंधे होकर गिर पड़े। २ गिर पडना।

औघट घाट उतारना–आफत मे डालना।

औचट में पड़ना–सकट मे पडना। उ० मैं ऐसी औचट मे पडा हूँ कि कुछ कहे नही बनता।

औझड़ मारना–दे० 'औझड लगाना'।

औझड़ लगाना–धडाधड चाँटे लगाना। उ० वह औझड लगाने लगता है तो दम नही लेता।

औतारी–१. विचित्र, अनोखा। उ० यह लडका औतारी मालूम हो रहा है। २ शैतान। ३. देवता की शक्तिवाला, असाधारण। उ० सचमुच ही गांधी जी औतारी थे।

औने-पौने करना–जो कुछ मिले, उसी मे बेच डालना। उ० औने-पौने करने से दुकान मे बडा घाटा होगा।

औने-पौने निकालना या बेचना–हानि से बेचना। मुझे बाहर जाना है, इसलिये अपनी सारी चीजें औने-पौने बेच रहा हूँ।

और इरादा–बुरी नीयत। उ० इस सुन्दरी को देखकर बडे-बडो के इरादे और हो जाते हैं।

और का और–कुछ का कुछ।

और का और हो जाना या होना–बदल जाना। स्थिति मे परिवर्तन आ जाना। कुछ का कुछ हो जाना। उ० मैं क्या जानता था, इतनी जल्दी और का और हो जायगा।

और घर देखना–दूसरे के यहाँ जाना। उ० जाओ बाबा घर देखो यहाँ कुछ नही मिलने का।

और ही कुछ होना–अनोखी बात होना। उ० मुझे पूरा विश्वास है कि आज और ही कुछ होगा।

और ही रंग खिलना–कुछ विचित्र होना। अनोखा कार्य होना। उ० तुम जैसे जहाँ दो लड़के इकट्ठे होंगे, और ही रग खिलेगा।

औसान उड़ना–दे० 'औसान जाता रहना'।

औसान खता होना–दे० 'औसान जाता रहना'।

औसान जाता रहना–१ धैर्य न रहना। उ० अकेले जगल में भेड़िया देख कर मेरे औसान जाते रहे। २. सुध-बुध भूलना। ३ मतिभ्रम होना।

औसान भलना–दे० 'औसान जाता रहना'।

क

कँउधा होना—अच्छा और चमकीला होना, पर क्षणिक होना। उ० तुम्हारा सारा ठाटवाट कँउधा है।

कंकड़-पत्थर—वेकार की चीजें। उ० इस ककड-पत्थर की यहाँ आवश्यकता नही है।

कक होना—१ भुक्खड और लालची होना। २ दे० 'खक होना'।

कगन बोहना—पजा मिलाना। उ० कगन वोहो तो जोर का पता चले।

कघी-चोटी—सिंगार-पटार, बनाव-सिंगार। उ० कघी-चोटी मे ही रहोगी कि कुछ और काम भी होगा ?

कघी-चोटी करना—शृ गार-पटार करना। उ० कघी-चोटी करके मैं आप के साथ घूमने चलूंगी।

कघी-चोटी मे रहना—वनाव-चुनाव मे ही रहना। उ० तुम तो दिन-रात कघी-चोटी मे ही रहती हो, आखिर कुछ घर का काम-काज भी होगा या नही।

कचन का कौर खिलाना—किसी के लिए वहुत खर्च करना। उ० आपको तो वह कचन का कौर खिलाने को तैयार है।

कचन वरसना—१ वहुत धन प्राप्त होना। उ० आजकल रमेश का क्या पूछना है, उसके यहाँ तो कचन वरस रहा है। २ शोभा देना। उ० काली के मदिरो पर कचन वरसता है।

कटक होना—वाधा होना। उ० इस काम मे आप क्यो कटक हो रहे हैं ?

कठ करना—कठस्थ कर लेना। उ० इस कविता को कठ कर लो।

कंठ का हार वनना—दे० 'कठ का हार होना'।

कठ का हार होना—१ वहुत प्रिय होना। उ० आप मेरे कठ के हार हैं, भला आपको मैं कैसे भूल सकता हूँ। २ सदा साथ रहना। उ० उसके कठ का हार न हो जाओ, नही तो लोग क्या सोचेंगे ?

कठ खुलना—आवाज निकलना। उ० कठ भी तो खुले, आखिर क्या चाहते हो ?

कंठ न खुलना—१. कुछ न वोलना। उ० कम-जोरी के कारण मेरा कठ नही खुल रहा है। २ गला फँसना। उ० जुकाम से मेरा कठ नही खुलता है। ३ वोलने में सकोच करना या शर्माना। वोलने की हिम्मत न पडना। उ० उसके सामने तो आपका कठ ही नही खुलता।

कंठ फूटना—१ ठीक-ठीक शब्द निकलना। उ० वच्चे का अव कठ फूट रहा है। २. गले की घाँटी का निकलना। उ० तुम्हारा कठ अभी नही फूटेगा।

कठ फूट निकलना—दे० 'कठ फूटना'।

कठ वैठना—आवाज़ भारी होना। गले का वैठ जाना। उ० आज मेरा कठ वैठ गया है, मैं गा नही सकता।

कठ रखना—याद रखना। उ० इस कविता को उस दिन के लिए कठ रक्खो।

कठ सींचना—पानी या किसी भी पेय [प्राय थोडी मात्रा मे] से गला तर करना, कुछ प्यास वुझाना।

कठ सूखना—गला सूखना। उ० प्यास के मारे कठ सूख रहा है।

कठी उठाना—कसम खाना। दे० 'कठी छूना'।

कठी छूना—अपनी कठी की कसम खाना। उ० कठी छूकर कह रहा हूँ, मैंने उनसे नही कहा था।

कठी छोड़ना—सकल्प तोडना। उ० शराव की वोतल देखते ही उसने कंठी छोड दी।

कंठी देना—चेला मूंडना। उ० उसने वहुतो को कठी दी है।

कठी बाँधना—१ चेला वनाना। उ० उन्होने मुझे आज कठी वाँधी है। २ ससार मे विरक्त होना। उ० उसने कठी वाँध ली है। ३ विना सोचे-विचारे चेला वनाना। उ० उसने तुम्हे कठी वाँध दी है, यह अच्छा नही हुआ। ४ नशीली चीज छोडना। उ० अव भी कंठी वाँध लो।

कठी लेना—चेला वनना। उ० योग्य आदमी से कठी लेना चाहिये। २. साधु वनना। उ० कठी लेने से स्वर्ग नही मिलता।

कडा होना—१ सूख कर उपले की तरह कडा होना। उ० पूरियाँ तो कडा हो गई हैं। २ दुवला हो जाना, शरीर में केवल हड्डी रह जाना। उ० तुम क्यो कडा होते जा रहे हो।

कंदल गलाना—चाँदी और सोने को एकसाथ गलाना। [इसका प्रयोग सोनारो की भाषा मे होता है।]

कधा डाल देना—मदद करने से इन्कार करना, समय पर सहायता करने से जी चुराना । उ० जब कि कधा था लगाना चाहता, आह ! हमने डाल अब कधा दिया ।

कधा डालना—१ हिम्मत छोड देना । उ० बहुतो ने इस काम मे कधा डाल दिया, अब आप चले है ! २ बैल का कंधे से जुआ अलग कर देना । उ० यह बैल तो कधा डाल रहा है, शायद कधे मे दर्द हो । ३ थक कर बैठ जाना । उ० इतने ही काम मे कधा डाल दिया !

कधा देना—१ मदद करना । उ० अगर आप इस काम मे कधा दे दिये होते तो अवश्य मै इसे पूरा कर लेता । २ लाश की टिकटी कधे पर रखना । उ० घाट तक न जाओगे तो न जाओ पर कम से कम थोडी दूर तक कधा तो दे आओ ।

कंधा पकड कर चलना—१ दूसरे के सहारे काम करना । उ० तुम हर काम मे कधा पकड कर क्यो चलना चाहते हो ? २. बहुत कमजोर होना । उ० वह तो कधा पकड कर चलने लगा है ।

कधा लगना—गाडी के जुए से रगडकर बैल का कधा छिल जाना । उ० इस बैल का कधा लगा हुआ है, इसे न जोतो ।

कधा लगाना—१ बोझ उठाना, २ छाना को कधा देना, ३ किसी की सवारी मे सम्मान के लिए कधा देना ।

कधे उचकाना—अनजान बनना । उ० मेरा परिचय सुनकर उसने कधे उचका दिये ।

कँधेला डालना—साडी का छोर बाएँ कधे पर से ले जाना । ऐसा करने मे सर पर साडी नही रक्खी जाती । उ० वह बहे तो कँधेला डालती रहेगी ?

कधे लगाना—बच्चे को उठाना । उ० राजू को कधे लगा लो । चुप हो जायगा ।

कधे से कधा छिलना—बहुत भीड होना । उ० आज मेले मे कधे से कधा छिल रहा था ।

कंधे से कधा मिलाकर करना—मेल से करना, एक राय होकर करना । उ० जाति की और देश की सेवा लोग कधे-से कधा मिला कर करें ।

कधो पर उठाना—जिम्मेदारी लेना ।

कँपकँपी चढना—१ जाड़े से ठिठुर जाना । उ० इस ठडी हवा मे सबको ही कँपकँपी चढ रही है । २ बहुत डर कर काँपने लगना । ३ जाडा देकर आने वाले ज्वरो मे ज्वर के पहले जोर का जाडा लगना । उ० कँपकँपी चढ रही है, अब ज्वर आएगा ।

कँपा मारना—दे० 'कँपा लगाना' ।

कँपा लगाना—१ किसी को फँसाने के लिए जाल बिछाना । २ चिडियो को फँसाने के लिए बाँस की तीलियो पर गोद लगा कर रखना । उ० आज कँपा लगाओ, गोश्त खाने को जी चाहता है ।

कँपास लगाना—किसी को फँसाने के घात मे लगना । उ० देखो कँपास लगा रहा हूँ, शायद वह फँस जाय ।

कंपू का बिगडा हुआ—१ बगावत करने वाला, क्रातिकारी । २ बदमाश । उ० उस कपू के बिगडे को अपने घर न आने दिया करो ।

कबल ओढाकर लूटना—मूर्ख बना कर रुपया निकालना । उ० आप कबल ओढा कर मुझे लूट नही सकते, इस तरह जितना माँगिये मैं मैं देने को तैयार हूँ ।

कबल तानकर/ओढ कर सोना—निश्चिन्त होना ।

ककडी के चोर को कटारी से मारना—छोटे कसूर पर कठिन दड देना । उ० प्राचीन काल मे ककडी के चोर को कटारी से मारा जाता था, इसी से अपराध कम होते थे । ककडी के चोर को कटारी से मारना कहाँ का न्याय है ?

ककडी-खीरा करना—कुछ कदर न करना । उ० जब ककडी-खीरा करना है तो मुझे अपने यहाँ बुलाते क्यो हो ?

ककड़ी-खीरा समझना—दे० 'ककडी-खीरा करना' ।

कक्कन छोडना—१ बहुत मारना । २ बहुत परिश्रम कराना । उ० आज तो उसने तुम्हारा कक्कन छोडा दिया ।

क ख ग—आरम्भ । साधारण ज्ञान । शुरू का ज्ञान । उ० मैं तो अग्रेजी का क ख ग भी नही जानता ।

कचकच करना—झगडा करना । उ० तुम्हारा हर समय का कचकच करना ठीक नही है । दिन-रात का कचकच करना अच्छा नही लगता ।

कचकच मचाना—दे० 'कचकच करना' ।

कचर-कचर कर खाना—पेट भर खाना। खूब खाना। उ० आज तो दावत मे खूब कचर-कचर कर खाए होगे।

कचर कूट करना—खूब मारना। उ० अगर अधिक बोलेगा तो कचर कूट करने लगूँगा।

कचर कूट खाना—खूब खाना। उ० तेल की चीज़ है, कचर कूट मत खाओ नही तो हैज़ा हो जायगा।

कचर-पचर खाना—दे० 'गजर-बजर खाना'।

कचहरी के कुत्ते—कुत्ते की तरह कचहरी आने वालो का मुँह जोहने वाले। उ० ये वकील मुख्तार तो कचहरी के कुत्ते हैं।

कचहरी चढ़ना—१ अदालत मे मुकदमा ले जाना। उ० कचहरी चढकर भी आप मेरा कुछ नहीं कर सकते। २ कचहरी के अफसरों का आना। उ० आज तो उस गाँव के पास कचहरी चढी है।

कचहरी लगना—बहुत से आदमियो का बैठा रहना। उ० तुम्हारे यहाँ तो हर वक्त कचहरी लगी रहती है, मैं आऊँ भी तो कब?

कचालू करना—खूब मारना। उ० अगर ज्यादा बोलोगे तो कचालू कर दूंगा।

कचालू बनाना—दे० 'कचालू करना'।

कचोची बैंटना—दाँत पीसना।

कचोची बँधना—दाँत बैठ जाना। उ० बेहोशी मे उसकी कचोची बँध [illegible]

कचोची लेना—[illegible] भय खाना। उ० मरीज कचो[illegible] है, अब कोई आशा नही है।

कचूमर कर[illegible]—दे० 'कचूमर निकालना'।

कचूमर [illegible]लना—१ खूब मारना। उ० उसने छोटे [illegible] अपराध के लिए लडके का कचूमर निकाल दिया। २ खराब कर देना। उ० तुमने तो घडी का कचूमर दिया। ३ ज्यादा जोर से कूटना। उ० इन चीज़ो का कचूमर न निकालना।

कचूर होना—कचूर की तरह खूब हरा होना। उ० तुम्हारा खेत तो यो ही कचूर हुआ है, उसमे पानी देने की क्या आवश्यकता? नयन कचूर भरे जनु मोती।

कच्चा करना—१ झूठा ठहरना। उ० उसने सारी बातें कच्ची कर दी। २ लज्जित करना। उ० उसे कच्चा न करो, नही तो इसका फल बुरा होगा। ३ कच्ची सिलाई करना। उ० उसने कच्चा कर दिया है, दर्जी से सिलवा लो। ४ उत्साहहीन करना। उ० बार-बार ऐसी बातें कह कर उसे कच्चा न करो।

कच्चा खा जाना—बहुत क्रोधित होकर मारने की धमकी देना। उ० ज्यादा शरारत मत करो नही तो कच्चा ही खा जाऊँगा। तुम मेरा गुस्सा नही जानते।

कच्चा खाना—दाल, भात, रोटी आदि ऐसे भोजन जो पूर्णत. घी मे न बनाए गए हो। उ० ब्राह्मण सबके हाथ का कच्चा खाना नही खाते।

कच्चा खेल खेलना—ऐसा काम करना जिससे अबुद्धिमत्ता टपके, मूर्खता करना।

कच्चा घड़ा—एक बार ही प्रयोग मे आने वाली वस्तु। उ० कौमार्य कच्चा घडा होता है।

कच्चा चबाना—दे० 'कच्चा खा जाना'।

कच्चा-चिट्ठा खोलना—गुप्त बातो को खोलना। भडा-फोड करना। उ० व्यर्थ मे उसका कच्चा-चिट्ठा खोल कर तुमको क्या मिला?

कच्चा-चिट्ठा सुनाना—१ दे० 'कच्चा-चिट्ठा खोलना'। २ रोना रोना। उ० क्या अपना कच्चा चिट्ठा सुनाते रहते हो। ३ बहुत छोटी-छोटी बातें भी विस्तार से बतलाना। उ० वह अपना पुराना कच्चा-चिट्ठा सुनाने लगा, इसी मे देर हो गई।

कच्चा जाना—गर्भपात हो जाना। उ० उसके घर मे तो कई बार कच्चा गया।

कच्चा ठहरना—दे० 'कच्चा होना'।

कच्चा धागा—१ अविश्वसनीय। उ० तुम्हारी बात तो कच्चा धागा है, कभी भी टूट सकती है। २ अस्थायी। उ० यह नौकरी तो कच्चा धागा है, कोई और ठीक कर दो।

कच्चा-पक्का करना—१ ठीक न करना। निश्चित न करना। उ० हमारी उनकी बातें अभी कच्ची पक्की की गई हैं, बाद मे निश्चित होगी। २ अपूर्ण छोडना। उ० हाथ मे लेकर कच्चा-पक्का करना हमे नही आता। ३ खराब कर देना। उ० बना-बनाया काम तुमने कच्चा पक्का कर दिया।

कच्चा जी—छोटे दिलवाला, विचलित होने वाला। उ० ऐसी आशा न थी कि तुम इतने कच्चा जी होगे।

कच्चा पड़ना—१. असत्य सिद्ध होना, झूठा पड़ना। उ० आपकी हर एक बात कच्ची पड़ जाती है। २ नीचा देखना। उ० वह तो हर जगह कच्चा पड़ता है।

कच्चा बैठना—१ आँख का फूट जाना। उ० कच्चा बैठा है क्या कि सामने की चीजें दिखाई नही देती ? २. दाँत बैठ जाना।

कच्चा मकान—मिट्टी का बना मकान। उ० बरसात मे बहुत से कच्चे मकान गिर जाते हैं।

कच्चा मन—दे० 'कच्चा जी'।

कच्चा होना—१ धैर्य का जाता रहना। उ० अगर इस समय आप कच्चे हो जायेंगे तो कही के भी नही रहेंगे। २ झूठा होना। उ० हर जगह आप कच्चे होते हैं।

कच्ची कली—छोटी उमर की तरुणी। उ० वह तो अभी कच्ची कली है।

कच्ची कली टूटना—छोटी उम्र मे मरना।

कच्ची खा जाना—उत्साह न रहना, हिम्मत का छूट जाना। उ० जब आप अभी कच्ची खा गये, तो बाद मे कुछ नही कर सकते।

कच्ची गोटी खेलना—१. अनाड़ी होना, अनुभवहीन होना। उ० उससे क्या कहूँ, इस मामले मे वह भी अभी कच्ची गोटी खेलता है। २ बेवकूफी करना, ऐसा काम करना जिसमे असफलता हाथ रहे। उ० तुम तो हमेशा कच्ची गोटी खेलते हो।

कच्ची गोली खेलना—दे० 'कच्ची गोटी खेलना'।

कच्ची नींद—अधूरी नीद।

कच्ची-पक्की—१ उलटी-सीधी, भली-बुरी। २. गाली। उ० कच्ची-पक्की न निकालो, नही तो ठीक न होगा।

कच्ची-पक्की खिलाना—उचित भोजन न देना। उ० घर मे सब लोग चारपाई पर पड़े हैं, क्या करूँ, किसी तरह उन्हें कच्ची-पक्की खिलाता हूँ।

कच्ची बात—लज्जाजनक बात। उ० ऐसी कच्ची बात मुँह से न निकालो।

कच्ची बात सुनना—डाँट-फटकार या बुरी बात सुनना। अपमान की बात सुनना। उ० क्यो भला बात हम सुनें कच्ची, हैं न बच्चे न कान के कच्चे।

कच्चे घड़े की पीना—नशे मे अनाड़ीपन करना। उ० यार तुम तो जैसे कच्चे घड़े की पिये हो, ऐसा करना हो तो नशा न किया करो।

कच्चे घड़े चढ़ना—ताड़ी पीना। उ० तुम्हारी आँखें कह रही हैं कि तुम कच्चे घड़े चढे हुए हो।

कच्चे घड़े पानी भरना—१ कठिन कार्य करना। उ० संसार मे कच्चे घड़े पानी भर कर ही नाम पैदा होता है। २ असभव कार्य करना। ३ कच्चे घड़े पानी भरने के लिए क्यो सर खपाते हो ?

कच्चे घड़े पानी भरवाना—असंभव या मुश्किल काम कराना। उ० कच्चे घड़े पानी भरवाना चाहो तो मैं नही कर सकता।

कच्चे दिन—गर्भ का तीसरा-चौथा महीना। कच्चे दिनो मे मेले न ही जाओ तो अच्छा है।

कच्चे दिल का—दुर्बल मन, दिल का कमजोर।

कच्चे-बच्चे—छोटे-छोटे बच्चे। उ० घर मे कच्चे-बच्चे इतने हैं कि देख कर ही तबीयत घबड़ा जाती है।

कच्छ की उखेड़—कुश्ती मे नीचे वाले का ऊपर के पहलवान द्वारा विशिष्ट रीति से चित किया जाना। उ० प्राय: पहलवान कच्छ की उखेड़ देखकर कुश्ती मार लेते हैं। [यह मुहावरा पहलवानो की बोली मे प्रयुक्त होता है।]

कछनी काछना—१ घुटनो तक धोती पहनना। उ० देहातो मे लोग कछनी काछे खेतो मे दिखाई पड़ते हैं। २ धोती को ऊपर उठाकर फेंटे मे खोंसना। धोती खूँटना।

कज निकालना—१. दोष दिखाना। उ० प्रत्येक बात मे कज निकालना ठीक नही है। २. वक्रता मिटाना। उ० अब इस छड़ी का कज निकालना कठिन है। ३ दोष दूर करना। उ० पहले अपने कज निकालो तब दूसरो के निकालना।

कजा आना—मौत या मुसीबत आना। उ० क्या कज़ा आई है जो इस तरह भाग रहे हो ?

कट-कट के मरना—१ जान देना। उ० देश की स्वतन्त्रता के लिए कट-कट के मरना ही पड़ता है। २. आपस मे झगड़ना। उ० कुछ दिनो पूर्व हिंदू-मुस्लिम कट-कट के मरते थे।

कट-कट जाना—१ लज्जित होना। उ० घर मे एक के नालायक हो जाने से सब कट-कट-

जाना पडता है । २ कुढन होना, कुढना । ३. वह तो मेरी उन्नति देखकर कट-कट जाता है ।

कटकटा कर चढ़ बैठना—दे० 'कुत्ते ऐसा चढ बैठना' ।

कटका भरना—चोच मारना । उ० कौवे शुको को कटका भर कर मार डालते हैं ।

कटजाना या कटना—१ हार जाना । उ० कल की बहस मे वह कई बार कट गया । २ मोहित होना । उ० उसकी तिरछी नजर से बहुतो को कट जाना पडता है । ३ छेद हो जाना । उ० घडा कट गया और सब पानी बह गया । ४. दूसरी ओर जाना । उ० उसी दिन से वह मुझे देखते ही कट जाता है । ५. मर जाना । उ० शरीर की साथकता सत्कर्मो के लिए कट जाने मे ही है । २ समाप्त होना । उ० गप-शप मे ही दिन कट गया । ७ दूर होना । उ० तीर्थ करने से सारे पाप कट जाते हैं । ८ गलत सिद्ध होना । उ० दास द्वारा तिलक का उत्तरीध्रुववाद कट गया । ९ बिक जाना । उ० माल की कमी के कारण सारा माल ही कट गया । १० जलन होना । उ० एक-दूसरे का उत्थान देख कर लोग कट जाते हैं । ११ झेंप जाना । उ० मेरी बातो से वह ऐसा कटा कि फिर बोलने की हिम्मत भी न हुई ।

कटती नाक बच जाना—जाती इज्जत बच जाना ।

कटती कहना—मार्मिक बात कहना । उ० लडका जवान हुआ और तुम सदा कटती कहते रहते हो, भला सोचो तो

कटनी काटना—इधर-उधर काट कर भागना । उ० चूहे-बिल्ली के खेल मे कटनी काट कर भागना ही चतुरता है ।

कटनी मारना—खेत को जोताई के पहले साफ़ करना । उ० कटनी मार कर जोतना अधिक लाभदायक होगा ।

कटवाँ व्याज—वह व्याज जो थोड़ा कर्ज दे देने पर लगे । उ०किश्त दे दो, कटवाँ व्याज देना पडेगा । नही तो सारे रुपयो पर व्याज लगेगा ।

कटहल फोड़ना—अत्यावश्यक कार्य करना । उ० वहाँ कौन-सा कटहल फोड रहे थे कि नहीं आए ? [इसका प्रयोग व्यंग्य में किया जाता है ।]

कटी उँगली पर न मूतना—थोड़ी भी भलाई न करना ।

कटे पर नमक छिडकना—१ दुखी को और दुःखी बनाना । उ० आजकल सरकार किसानो पर तरह-तरह के कर लगा कर कटे पर नमक छिडक रही है । २ नाराज आदमी को चिढ़ाना । उ० वह तो क्रोधित है ही तुम कटे पर नमक मत छिडको ।

कटोरा चलाना—मन्त्र से कटोरा चला कर अपराधी पहचानना । उ० अशिक्षित मनुष्यों में कटोरा चलाने की प्रथा अब भी है ।

कट्टे लगना—१ दूसरे को खटकने वाली चीज़ का नष्ट होना । उ० हमारी घडी तुम्हें बडी खटकती रही, आज भीड मे वह कट्टे लग गई । २ दूसरे के द्वारा अपनी वस्तु नष्ट होना । उ० इतने दिन की बची-बचाई चीज़ तुम्हारे कट्टे लगी ।

कठपुतली की तरह नाचना—दूसरे के कथनानुसार काम करना । दूसरे के वश में होना । उ० मैं उनके वश मे तो हूँ नही कि उनके इशारो पर कठपुतली की तरह नाचूं ।

कठपुतली होना—१ खिलौने की तरह वश मे होना । उ० वह तो अपनी औरत के हाथ की कठपुतली है । २ चुपचाप रहना । उ० विद्वानो की मडली मे मूर्ख का कठपुतली होना ही अच्छा है ।

कटती जबान—कठोर वचन ।

कड़ाका गुजरना—दे० 'कडाका बीतना' ।

कड़ाका बीतना—तकलीफ मे उपवास करके दिन काटना । उ० भारतीय किसानो के घर सदैव ही कडाका बीतता है ।

कड़ाके का—बहुत जोरदार । उ० टुंड्रा मे कडाके का जाडा पडता है । माल तो है कडाके का ।

कड़ा पड़ना—कठोर पडना, न दबना । उ० मेरे ज़रा कड़ा पड़ते ही नौकर ने चोरी क़बूल दी ।

कड़ाही चढना—खाने के लिए पकवान तैयार होना । उ० आज उनके बच्चे का जन्म-दिन है, इसलिए कड़ाही चढी हुई है ।

कड़ाही में हाथ डालना—कड़ी परीक्षा करना । उ० कड़ाही मे हाथ डाल कर देख सकते हो कि मैं कैसा आदमी हूँ ।

कड़ियल जवान—हट्टा-कट्टा जवान । उ० वह बडा कड़ियल जवान है ।

कड़ी आँख रखना—दे० 'कड़ी नज़र रखना'।

कडी उठाना—कठिनाई झेलना। उ० प्रताप को जगलो मे कडी उठा कर ही अपनी आजादी कायम रखनी पडी।

कड़ी-कडी सुनाना—दे० 'कडी कहना'।

कडी कहना—खरी-खोटी सुनाना। उ० कोई उनका तावेदार थोडे हूँ कि सदा कडी कहा करते हैं।

कड़ी झेलना—दे० 'कडी उठाना'।

कडी धरती—१ वह प्रदेश जहाँ लोग मोटे-ताज़े हो। उ० पहाड मे कडी धरती होती है, इसलिए गोरखे वहादुर होते हैं। २ भूत के रहने की जगह। उ० रात को जहाँ कडी धरती हो, न जाना चाहिये।

कडी नजर रखना—सदा देखभाल करना। उ० १० से १६ वर्ष के बच्चों पर कडी नजर रखनी चाहिये।

कडी नजर रहना—१ ईर्ष्या रहना। उ० समाजवादियो की सरकार पर कडी नज़र रहती है। २ पूरा ध्यान रखना। उ० चोरो पर पुलिस की कडी नज़र रहती है।

कड़ी नजर होना—दे० 'कडी नज़र रहना'।

कडी बोलना—धरन चटकने की आवाज़ निकलना जो रहने वाले के लिए वुरा शकुन समझा जाता है। उ० कडी बोल रही है, हे भगवान क्या होगा ?

कड़ुआ करना—१ कुछ और रुपया लगाना। और खर्च करना। उ० जव थोडा और कडुआ करने से ही इज्जत वनेगी तो ले लो। २ खराव करना। उ० जलसे को क्यो कडुआ करते हो ?

कड़ुआ घूंट—१ कठिन काम। २ अरुचिकर काम। उ० उसे तो सभी ने किया, अव कडई घूंट पीने को कोई भी तैयार नही है।

कडुआ लगना—वुरे दिल का। उ० सेठ को कम मत समझना, वह कडुआ करैला है।

कडुआ करैला—वुरे दिल का। उ० सेठ को कम मत समझना, वह कडुआ करैला है।

कड़ुआ होना—वुरा लगना। उ० अभी तो मेरा कहना तुम्हे कडुवा लग रहा होगा, पर वाद मे तुम इसे ठीक समझोगे।

कडुआ होना—१ वुरा वनना। उ० आज के ससार मे कडए होकर नही रह सकते। २ नाराज़ होना। उ० थोडी-सी वात पर क्यो कडए होते हो ?

कडुए-कसैले दिन—वुरे दिन। उ० कडवे-कसैले दिन के लिए कुछ वचाते चलो।

कडुए मुख—कडी वात वोलने वाला। उ० हम भाई कडए मुख वालो को कतई पसद नही करते। खीरा को मुख काटिए, मलिए लोन लगाय। रहिमन कडुवे मुखन को, चहियत यही सजाय।

कडे दम होना—मज़बूत होना।

कढ जाना—किसी के साथ भाग जाना। उ० आज रात को उनकी लडकी कढ गई।

कढी का सा उवाल होना—क्षणिक जोश होना। उ० आज के नवयुवको मे केवल कढी का-सा उवाल है।

कढी मे कोयला होना—१ किसी अच्छी वस्तु मे छोटा-सा दोष होना। २ दे० 'दाल मे कुछ काला होना'।

कतरनी-सी जवान चलना—१ बहुत जल्दी-जल्दी वोलना। उ० उसकी तो-कतरनी-सी जवान चलती है। २ सव को काटते चलना। उ० तुम्हारी तो कतरनी-सी ज़बान चलती है, तुम से कौन वहस कर सकता है ?

कतरव्योत करना—१ किफायत करना। उ० कोई कितना ही वडा क्यो न हो, सवको कतरव्योत करनी चाहिये। २ काट-छाँट करना। तरकीव से वनाना। उ० कपडा कम है तो क्या, कतरव्योत करने से एक कमीज़ तो वन ही सकती है। ३ सोच-विचार मे पडा रहना। उ० गाधीजी जीवनपर्यन्त भारतीय स्वाधीनता के लिए कतरव्योत करते रहे।

कतरव्योत मे लगा रहना—१ नई-नई तजवीज सोचते रहना। उ० वह हमेशा कतरव्योत मे लगा रहता है। अव तक केवल प्रकाशक था, अव मुद्रक भी हो गया। २ इधर-उधर के खर्च मे कटौती करके कुछ रुपया वचाने के फेर मे रहना। उ० कतरव्योत मे लगे रहने से कोई धनी नही होता।

कतरव्योत से—हिसाव से। उ० थोडी आमदनी मे कतरव्योत से चला कर वह वडा सुखी रहता है।

कतराकर निकलना—वच कर निकलना। उ० गत रात चोर पुलिस से कतरा कर निकल गया, नही तो जरूर पकडा जाता।

कताकलाम करना–बात काट कर बोलना। उ० कताकलाम करना शिष्टाचार के विरुद्ध है।

कतार बाँधना–१. एक सीध मे खडा होना। उ० स्टेशन पर टिकट लेते समय कतार बाँध कर खड़े होने मे सुविधा रहती है। २ बहुत बड़ी संख्या मे आना। उ० यहाँ कतार न बाँधो, नही तो किसी को न दूंगा।

कथक्कड़ होना–वाचाल होना। उ० कथक्कड होना भी एक प्रकार का रोग है।

कथा उठना या उठ जाना–कथा समाप्त होना। उ० नवरात्रि के समाप्त होते ही कथा उठ जाएगी।

कथा चुकाना–१ झगडा मिटाना। उ० छोटो से कथा चुकाने मे ही भला है। २ मार डालना। उ० वह यदि इसी तरह करता रहा तो किसी दिन कथा चुकानी ही पडेगी।

कथा बैठना–कथा का आरभ होना। उ० आज ही तो कथा बैठी है।

कथा बैठाना–कथा के लिए पडित नियुक्त करना। कथा शुरू करवाना। उ० कल से हम कथा बैठायेंगे।

कथा मुकाना–दे० 'कथा चुकाना'।

कदम आगे रखना–दे० 'कदम बढाना'।

कदम उठाना–१ उन्नति करना। उ० तुम्हारे कदम उठाने से सब लोग जल रहे हैं। २ तेज चलना। उ० कदम उठाओ, दूर जाना है। ३. आगे बढना। उ० तुम कदम उठाओ तो सभी चलेंगे, नही तो यो किसी की हिम्मत नहीं। ४. नया काम शुरू करना। उ० कदम उठाने के पहले सोच-समझ लो।

कदम कदम जाना–धीरे-धीरे चलना। उ०कदम-कदम जाने से समय के बाद पहुँचोगे। २ पैदल चलना। उ० कदम-कदम जाने से दो घंटा लगता है। ३ सुस्ती करना। उ० तुम हर काम में कदम-कदम जाते हो।

कदम-कदम पर–जगह-जगह। उ० इस दुनियाँ में कदम-कदम पर मुसीबतें हैं।

कदम को हाथ लगाना–१ अनुनय करना। उ० वह इतना निर्दयी है कि कदम को हाथ लगाने पर भी नहीं सुनता। २ सौगध लेना। उ० मैं तुम्हारे कदमो को हाथ लगा कर कहता हूँ कि मैं वहाँ नहीं गया था।

कदम गाड़ कर बैठना–धरना देना। उ० क्यो कदम गाड कर बठे हो, रुपया होता तो अवश्य देता।

कदम चूमना–१ खुशामद करना। उ० पता नही लोग क्यो कदम चूमना पसद करते हैं? २ अत्यन्त आदर करना। उ० अत मे लोगो ने गाधीजी का कदम चूम ही लिया।

कदम छूना–१ प्रणाम करना। २ कसम खाना। उ० आपके कदम छूकर कहता हूँ, मैंने कुछ भी नहीं कहा।

कदम न निकालना–१ परदे मे रहना। भारतीय स्त्रियाँ कदम नही निकालती। २ किसी की बात के भीतर ही रहना। उ० उसकी बात सोलह आने ठीक है, मैं अब उससे कदम नही निकाल सकता।

कदम पड़ना–क्षमा माँगना। उ० अब कदम पड़ रहे हो और तब छाती तान रहे थे।

कदम पर कदम रखना–१ अनुकरण करना। उ० हमको अब पुराने रीति-रिवाजो के कदम पर कदम रखना नही है। २ पीछे चलना। उ० उस आगे वाले आदमी के कदम पर कदम रख कर जाओ, पहुँच जाओगे।

कदम बढ़ाना–१ दे० 'कदम उठाना'। २ ज्यादती करना। उ० अब यदि कदम बढाए तो असह्य होगा।

कदम भरना–१. आगे बढना। उ० कहाँ तक कदम भरते जाओगे, रुको भी। २. घोडे का कदम चलना।

कदम मारना–१ दौड-धूप करना। उ० उसने बहुत ही कदम मारा, पर पास न हो सका। २ व्यस्त रहना। उ० भाई के शादी के कारण मुझे बडा कदम मारना पडता है। ३ तेज चलना। उ० कदम मारो तो पहुँच जाओगे।

कदम रखना–प्रवेश करना। उ० अगर यहाँ कदम रक्खे तो पिट जाओगे।

कदमों पर झुकना–दे० 'कदम चूमना'।

कदमों से लगे रहना–हमेशा साथ रहना। उ० तुम बदमाशो के कदमो से तो लगे रहते हो। यह ठीक नहीं है।

कदु करना–तकाजा करना। उ० उसने रुपया तो ले लिया, परन्तु बडा आदमी है, रोज कदु करना भी अनुचित है।

कन करना–अन्दाज लगाना। उ० गुरुजी दूर से ही आदमी को कन कर लेते हैं।

कनकौआ काटना—१ पतग की डोरी काटना, सबध-विच्छेद कराना। उ० मेरा कनकौआ काटोगे तो मैं भी वही करूँगा।

कनकौआ बढाना—डोरी बढाना। उ० कनकौआ बढाओ तब वह पतग मिलेगी।

कनकौआ लड़ाना—पतग की डोरी फँसाना। उ० कुछ लोग कनकौआ लडाने मे बडे चतुर होते हैं।

कनखियाँ लगना—सीधे न देख कर आँख के कोनो से इस प्रकार देखना कि कोई न जाने। उ० मैंने कनखियाँ लगा कर उनके सारे कारनामे देख लिये।

कनखियाना—इशारा करना। उ० कनखिया कर कह दो, कही दे न दे।

कनखी मारना—१ आँखो से इशारा करना। तुम तो यार इतने पटु हो कि कनखी मार कर ही काम चला लेते हो। २ आँखो के सकेत से मना करना। उ० घबडाओ मत, मैंने कनखी मार दी है।

कनखेंयन लगना—छिप कर देखना।

कनसुआ लेना—दे० 'कनसुइयाँ लेना'।

कनसुइयाँ लेना—१ भेद लेना। २ सगुन विचारना। ३ आहट लेना। उ० क्या कनसुइयाँ ले रहे हो ?

कनसुई लेना—दे० 'कनसुइयाँ लेना'।

कनाई काटना—चालबाज़ी करना। उ० मेरे साथ कनाई काटोगे तो ठीक न होगा।

कनी खाना—दे० 'कनी चाटना'।

कनी चाटना—हीरा चाट कर मर जाना। उ० मुगल साम्राज्ञी ने आवेश मे आकर कनी चाट ली।

कनेव छेदना—पाए के छेदो को टेढा छेदना, जिससे चारपाई कन्नी हो जाय। उ० बढई ने पायो को कनेव छेदा है। [यह बढइयो की विशिष्ट बोली है।]

कनौड़ा करना—नीचा दिखाना। उ० अमेरिका ने प्रण कर लिया है कि रूस को कनौडा करके ही छोड़ूँगा।

कनौती उठाना—होशियार होना। उ० खरगोश ने शिकारी को देखते ही कनौती उठा ली।

कनौती खड़ा करना—दे० 'कनौती उठाना'।

कनौती बदलना—चौकन्ना होना। उ० चोर का पता लगते ही पुलिस ने कनौती बदली।

कन्ना निकालना—अपमान करना। उ० समय आने दो, तुम्हारा कन्ना निकाल कर छोड़ूँगा।

कन्नी काट जाना या काटना—बचकर निकल जाना। उ० कन्नी काट गए नहीं तो बुरी तरह फँसते।

कन्नी खाना—पतग का झुकना। उ० अब पतंग नही बढेगी क्योकि कन्नी खा गई।

कन्नी दबना—१. पराधीन होना। उ० अब भारत की कन्नी नही दब सकती। २. शर्मिंदा होना। ३ पुरुषो के सामने बोलने पर औरतों की कन्नी दबती है।

कन्नी बाँधना—पतग बाँधना। उ० कन्नी बाँधना सबको नही आता।

कन्ने ढीले पड जाना—दे० 'कन्ने ढीले हो जाना'।

कन्ने ढीले होना—१ थक जाना। उ० दूर तक चलते-चलते मेरे तो कन्ने ढीले हो गए। २. अपमान होना। उ० उनके व्यवहारो से मेरे कन्ने ढीले हो गए। ३ जोश ठंडा हो जाना।

कन्यारासी होना—चौपट या निकम्मा होना। उ० तुम तो बडे कन्यारासी हो। हमारा-तुम्हारा रोजगार नही चल सकता।

कपड़ा से होना—दे० 'महीने से होना' [इसका प्रयोग केवल स्त्रियाँ करती हैं।]

कपडे उतरवाना—१ सब कुछ ले लेना। उ० कपडे उतरवा लो, पर उसे नहीं दे सकता। २ बेइज्ज़त करना। उ० तुम्हारे कपड़े न उतरवा लिये तो मेरा नाम नही।

कपडे उतारना—कुछ भी न छोड़ना, सब कुछ ले लेना। उ० कल तक रुपये न दिए तो कपड़े उतार लूंगा।

कपडे बिक जाना—दिवाला होना। उ० यदि यह नया टैक्स लग गया तो अपने कपड़े बिक जायँगे।

कपडे रँगना या रँग लेना—सन्यास लेना। उ० यदि झझटो से मुक्त होना चाहो तो कपड़े रँग लो।

कपडो मे न समाना—१ अति हर्षित होना। उ० अपना परीक्षाफल सुन कर मैं कपड़ों में न समाता था। २ जोश मे आना। उ० प्रताप की वीरता को सुन कर लोग कपड़ों में नहीं समाते। ३. बहुत मोटा होना। उ० थोड़े ही दिनो मे वह कपडो मे नही समाएगा।

कपडो मे होना–ऋतुवती होना। उ० वह कपडो मे होने के कारण खाना नही पका सकती।

कपडो से होना–दे० 'कपडो मे होना'।

कपार खाना–दे० 'सिर खाना'।

कपार पर सनीचर चढना–अभागा होना। उ० तुम्हारे कपार पर सनीचर चढा है, तुम क्या वह नौकरी करोगे ?

कपालक्रिया करना–चिता के कुछ जल जाने पर सिर फोड कर एक क्रिया करना। उ० चार बेटे है, परन्तु कोई कपालक्रिया करने वाला नही।

कपाल खुलना–१ सिर फट जाना। उ० आज के झगडो मे बहुतो के कपाल खुल गए। २ भाग्य खुलना। उ० क्यो घबराते हो, कपाल खुलते ही नौकरी मिल जायगी।

कपाल फूटना या फूट जाना–१ सिर फटना। उ० उसने ईंट से मारा और कपाल फूट गया। २ भाग्य फूटना, अभाग्य आना। उ० कपाल ही फूट गया तो दोष किसको दूँ ?

कपास ओटना–संसार मे फँसना। उ० कपास ओटने मे हरिभजन मे सार नही है।

कपूर खाना–जहर खाना।

कपोत व्रत लेना–चुपचाप अत्याचार सहना। उ० सच्चा अहिंसक कपोत व्रत लेकर लडाई लडता है।

कपोल कल्पना–गप्प, झूठ। उ० यह तो कपोल-कल्पना है।

कफन की ओर पैर बढाना–मौत नजदीक होना।

कफन को कौडी न होना–अति निर्धन होना। उ० भारतीय किसानो के पास तो कफन को कौडी तक नही है।

कफन फाड कर उठना–१ एकाएक चिल्ला उठना। उ० अभी तो मूर्तिवत् थे इस बात को सुन कर क्यो कफन फाड कर उठ गए ? २ सहसा उठ जाना। उ० पुरोहित के आते ही सब लोग कफन फाड कर उठ गए। ३ मरते-मरते बचना। उ० इस बीमारी से मोहन कफन फाड कर ही उठा है।

कफन फाड कर चिल्लाना–दे० 'कफन फाड कर उठना'।

कफन सिर से बांधना–मरने को तैयार होना। उ० स्वाधीनता-प्रेमियो को कफन सिर से बाँधे रहना पडता है।

कफन-खसोटी करना–[illegible] से या बुरे ढंग से पैसा कमाना। उ० मुर्दों से तो कफन-खसोटी छोड दो।

कब का–जाने कितनी देर से, [illegible]। उ० [illegible] हुआ है। [illegible]

कब के–दे० 'कब का'।

कबड्डी खेलते फिरना–[illegible] फिरना, आवारा-गर्दी करना।

कब से–दे० 'कब का'।

कबाब करना–१ [illegible]। २ [illegible]। ३ बोटी-बोटी काटना। उ० [illegible]

कबाब लगाना–[illegible]।

कबाब होना–१ [illegible] होना। उ० [illegible] २ [illegible]।

कबाबी शराबी–[illegible]। उ० कबाबी शराबी मे [illegible]।

कबाला लिखना–अधिकार दे देना।

कबाला लिखाना–अधिकार करना। [illegible] मालिक बनना। उ० मैने उस मकान पर कबाला लिखा लिया है।

कबाला लेना–दे० 'कबाला लिखाना'। उ० मैने कबाला लिया है।

कबाहट मे पडना–[illegible] पडना। उ० तुम्हारे लिए मुझे भी कबाहट मे पडना पडा।

कबूतर की तरह लोटना–[illegible]।

कब्जा उठना–अधिकार चला जाना। अधिकार न रहना। उ० वर्मा से अंग्रेजो का कब्जा कभी उठ गया।

कब्जा करना–जबर्दस्ती [illegible] करना। उ० उसने रातो रात दीवार उठा कर जमीन पर कब्जा कर लिया।

कब्जे पर हाथ रखना–१ तलवार पकडना। उ० वीर पुरुष कब्जे पर [illegible] के लिए हाथ नही रखते। २ दूसरे को तलवार न

निकालने देना। उ० भला हुआ कि तुमने कब्ज़े पर हाथ रख लिया नही तो पता नही आज क्या हो गया होता ?

कब्र का मुंह झांक आना—दे० 'कब्र का मुंह झांकना'।

कब्र का मुंह झांकना—मरते-मरते बचना। उ० मेरे जीवन में ऐसी कई घटनाएँ आईं कि मुझे कब्र का मुंह झांकना पडा।

कब्र के मुर्दे उखाड़ना—१ बीती बातो को सामने लाना। उ० हिंदुस्तान-पाकिस्तान मे अब हार्दिक मित्रता कब्र के मुर्दे उखाडने से नहीं हो सकती। उ० रिसर्च या खोज का कार्य करना। उ० एम० ए० कर चुका। कही जगह नही मिलेगी तो कब्र के मुर्दे उखाड़ूंगा।

कब्र खोद कर लाना या ला देना—१ कही से भी ला देना। उ० मैं कब्र खोद कर लाऊँगा, तुम से क्या मतलब ? तुम रुपया देना स्वीकार तो करो। २ किसी बहुत गुप्त जगह से पता लगा कर निकाल लाना। उ० सी० आई० डी० बडे दिमागी होते हैं। वे इस षड्यंत्र की पूरी स्कीम को कब्र खोद कर भी ला देंगे।

कब्र खोदना—किसी के मारने का उपक्रम करना। उ० जो किसी के लिये गड्ढा खोदेगा, उसके लिये खुदा कब्र खोदेगा।

कब्र मे पाँव होना या लटकाए बैठना—मरणासन्न होना। उ० बूढे दादा अब कब्र मे पाँव लटकाए बैठे हैं।

कभी—बहुत पहले। उ० तुम अब तक कहाँ रहे, वह तो कभी आ गया।

कभी का—बहुत देर से। उ० कभी का बैठा हूँ, तुम अब तक कहाँ रहे ?

कभी कुछ कभी कुछ—बदलते रहना। उ० ओछे आदमियो का क्या ठिकाना ? कभी कुछ कहते हैं और कभी कुछ।

कभी न कभी—किसी न किसी समय। उ० आखिर मैं तो कभी न कभी किसी योग्य हो जाऊँगा, क्यो चिढाते हो ?

कमर कस कर बाँधना—दृढ निश्चय करना। उ० मैंने तो कमर कस कर बाँध ली है कि इस साल परीक्षा मे अवश्य बैठूंगा।

कमर कसना—१ प्रस्तुत होना, तैयार होना। उ० सिपाही रण-प्रागण मे प्रस्थान के लिए कमर कस चुके हैं। २ दृढ निश्चय करना। उ० इस काम के लिए कमर कस लो तो पूरा क्यो न होगा ?

कमर का ढीला—कामचोर, सुस्त। उ० यदि इसी तरह कमर का ढीला रहना है, तो अपना हिसाब कर लो।

कमर खोलना—१. अपने दृढ निश्चय को बदलना। उ० फिर उसमे मेल करने के लिये तुमने कमर खोल दी। २ हिम्मत हारना। उ० बाबर के सिपाहियो ने इब्राहिम की भारी फौज देखते ही कमर खोल दी। ३ आराम करने लगना। उ० युद्ध के बाद सैनिको ने कमर खोल दी है।

कमर झुकना—१ वृद्ध हो जाना। उ० अरे यहाँ क्या आते हो, उनसे राय लो, जिनकी कमर झुक गई हैं। २ थक जाना। उ० आज तो काम करते-करते कमर झुक गई।

कमर टूटना—उत्साहहीन होना। उ० एक ही बार के घाटे से कमर टूट गई ? २ असहाय होना। उ० उनके मरने से मेरी कमर टूट गई। ३ भारी दुःख पडना। उ० जवान पुत्र की मृत्यु से कमर टूट गई।

कमर ठोकना—हिम्मत बाँधना। उ० विपत्ति पडने पर कमर ठोकना चाहिए।

कमर तोड़ना या तोड़ देना—१ सहारा छीन लेना। उ० जमींदार ने बैल लेकर हमारी कमर ही तोड दी। २ बहुत बडी विपत्ति डालना। उ० पुत्र की मृत्यु ने मेरी कमर तोड़ दी।

कमर थामना—दे० 'कमर पकडना'।

कमर पकड़ कर उठना—बहुत निर्बल होना। उ० झूठे ही नाराज़ होते हो, वह कैसे आवे ? बेचारा कमर पकडकर तो उठता है।

कमर पकड़ कर बैठना या बैठ जाना—विपत्तिग्रस्त होना, अति दुखी होना। उ० इसी माह के अन्दर उसके यहाँ चोरी हो गई और जवान बेटा मर गया। बेचारा क्या करे, कमर पकड बैठा है !

कमर पकडना—सहायता करना। उ० तुम कमर पकड लो तो मेरा बेडा पार हो जाय।

कमर बाँधना—१ काम के लिए तैयार होना। उ० अरे अब इस अन्तिम क्षण मे तो कमर बाँध लो। २ हिम्मत देना, बढावा देना। उ० अपने चाचा के विरुद्ध तुम कभी नहीं जा

सकते थे, केवल उसके ही कमर बाँधने से जीते गये। २ किसी काम के करने के लिए किसी को तैयार करना।

कमर लगना—चारपाई पर सोए-सोए पीठ दुखना। उ० इस बीमारी से तो सोए-सोए कमर लग गई। २ घोड़े की पीठ में घाव होना। उ० हमारे घोड़े की कमर लग गई है।

कमर सीधी करना—१ आराम करना। उ० आज कई दिनों के बाद तो कमर सीधी करने का अवसर मिला है। २ कमर टेढ़ी कर या कमर झुका कर देर तक काम करने के बाद खड़ा होकर या बैठ कर कमर को आराम देना। उ० देर से लिख रहे हो, जरा कमर को सीधी कर लो।

कमल उलटना—गर्भाशय का मुँह उलट जाना। उ० उसका तो पिछली बीमारी में कमल उलट गया। अब उसे बच्चा होना कठिन है।

कमल खिलना—प्रसन्न होना। उ० क्या आज कोई निधि मिल गई है कि तुम्हारा कमल खिल रहा है?

कमल से पैर बाहर निकालना या फैलाना—१ शक्ति से अधिक काम करना। सामर्थ्य से अधिक खर्च करना।

कमाई खाना—आश्रित रहना। उ० एक बेटे की कमाई पूरा परिवार खाता है।

कमान चढ़ना—१ क्रोधित होना। उ० आज की सभा में तो जाने क्यों उनकी कमान चढ़ गई थी। २ दौरदौरा होना।

कमान पर जाना—१ रण में जाना। उ० कमान पर जाना बड़ा ही खतरनाक है। अब कमान पर जा रहे हो क्या? २ नौकरी पर जाना। उ० थोड़े ही दिनों में मुझे कमान पर जाना पड़ेगा।

कमान बोलना—आज्ञा देना (कमान देना)। उ० सेनापति ने अपने सैनिकों को प्रस्थान का कमान बोल दिया है।

कमाना-खाना—कमाकर अपनी आवश्यकताएँ पूरी करना। उ० आजकल कमाना-खाना आसान नहीं है।

कमाना धमाना—काम-काज करके रुपया पैदा करना। उ० कमा-धमा कर कुछ लाओ तो घर का खर्च चले।

कमाल करना—१ विचित्र काम कर देना। बड़ी तारीफ का काम करना। उ० आज के मैच में तो [illegible] ने कमाल कर दिखाया। २ [illegible]

[illegible]

करधन टूट जाना या टूटना—हिम्मत न रहना। उ० अभी से ही करधन टूट गई, तो काम क्या करोगे?

करधन ढीली होना–१. दुबला होना । उ० लड़के की करधन ढीली हो गई, आखिर कुछ दवा क्यो नही करते ? २. दुर्दशा होना । उ० ऐसा मारूँगा कि करधन ढीली हो जायगी ।

करधन में बूता होना– शरीर मे शक्ति होना । उ० करधन मे बूता हो तो आओ लड लो ।

कर पर कर धरना–दान देना । उ० रहिमन कर पर कर धरो, करतल कर न धरो । जा दिन करतल कर धरो, ता दिन मरन करो ।

करम का बली-भाग्यवान । उ० यदि तुम करम के बली न होते तो तुम्हे इतनी अच्छी नौकरी न मिलती ।

करम टेढा होना–भाग्य बुरा होना । वदकिस्मत होना । उ० क्या करूँ, करम ही टेढा हो गया है, नही तो इतना प्रयत्न पर भला कौन असफल होगा ?

करम ठोंकना–भाग्य को दोषी ठहराना । उ० मोहन ने कुछ अध्ययन तो किया नही और फेल हो गया तो करम ठोक रहा है ।

करम तिरछा होना–दे० 'करम टेढा होना' ।

करम पकड़ कर रोना–तकदीर को दोष देना ।

करम फूटना–भाग्यहीन होना । बुरे दिन आना । उ० हमारा तो करम ही फूट गया, क्या करूँ, कुछ कहे नही बनता ?

करम रेख मूठियों में होना– अपना भाग्य अपने अधिकार मे होना । अपनी किस्मत का आप मालिक होना । कर्मठ होना । उ० है करम रेख मूठियो मे ही, वेहतरी बाँह के सहारे है ।

करवट न लेना–१ ध्यान न देना । उ० रुपया ले तो गए, पर देने के नाम पर करवट ही नही लेते । २ न लौटना । उ० भाई साहब को गए कई दिन हुए, पर अभी तक करवट ही नही ली ।

करवट बदलते रात बीतना–रात वहुत बेचैनी मे कटना ।

करवट बदलना–१. समय या ऐन मौके पर दूसरी ओर जा मिलना । उ० तुम्हारी तो करवट बदलने की आदत से विश्वास नही होता कि क्या करोगे ? २. पलटा खाना । बदलता रहना । उ० उसे भला कौन-सी सस्था लेगी ? वह तो रोज़ करवट बदलता है ।

करवट बैठना–पक्ष मे होना । उ० यदि जज मेरे करवट बैठे, तो जीत हो जाएगी ।

करवट लेना–दे० 'करवट बैठना' ।

करवटें बदलना–तडपना । स्मरण करके बेचैन होना । उ० उसकी याद मे करवटें बदलते ही बीतती है ।

करवटों मे काटना–दु ख मे जाग कर बिताना । उ० उनकी प्रतीक्षा में आज कई दिन से करवटो मे काट रहा हूँ ।

करवटो मे बिताना–दे० 'करवटो में काटना' ।

क़रार आना–चैन पडना । उ० जब तक तुम्हारा पत्र नही आयेगा, मुझे करार नही आयेगा ।

करारा दम–१ बहुत तेज़ । उ० आज की भाँग तो करारी दम रही ।

करोड़ की एक–अमूल्य, चुनी हुई । उ० समझते क्या हो, मेरी घडी करोड की एक है ।

करोड़ मे एक–दे० 'करोड की एक' ।

कर्ज़ उठाना–ऋण लेना । उ० मैंने महाजन से केवल सौ रुपये कर्ज़ उठाया है ।

कर्ज़ उतारना–ऋण चुकाना । उ० पहले कर्ज़ उतार डालो, तो गहने बनवाना ।

कर्ज़ खाए बैठना–ऋणी होना । उ० भला वह कोई आदमी है जो कर्ज़ खाए बैठा हो और उतारने का नाम न ले । २. एहसानमद होना । उ० तुम्हारा कर्ज़ खाए थोडे बैठा हूँ कि दिन-रात बुलाते रहते हो ।

कर्ज़ खाना–१ ऋण लेकर काम चलाना । २. एहसान लेना, आभारी होना । उ० अब असह्य हो गया, बस आगे कदम न रखना । कोई तुम्हारा कर्ज़ नही खाये हूँ ।

कर्णकुहर मे आना–दे० 'श्रुतिपथ मे आना ।

कर्ता-धर्ता–सर्वेसर्वा, सब कुछ करने वाला ।

कर्रा करना–बहुत शोर करना । उ० यहाँ कर्रा न करो, उसकी तबीयत खराब है ।

कलंक चढ़ना–दे० 'कलक लगना' ।

कलक लगना–बदनाम होना । उ० इस साल मैंने चौथ का चाँद देखा है, क्योकि कलक पर कलक लग रहे हैं ।

कलंक लगाना–बदनाम करना । उ० उस पर क्यो कलक लगाते हो ?

कलई खुलना–भेद मिलना । रहस्य खुलना । उ० अब तो तुम्हारे बडप्पन की कलई खुल गई । इसी पर इतना रोब था !

कलई न लगना—उपाय न लगना। धोखा न चलना। उ० मैं कोई वैसा आदमी नही हूँ। सीधे से चले जाओ, यहाँ तुम्हारी कोई कलई न लगेगी।

कल ऐंठना—१ किसी का चित्त दूसरी ओर खीचना। उ० उस कामिनी को देखते ही उसकी कल ऐंठ गई, अब तो वह अपनी पत्नी की भी परवाह नही करता। २ किसी को इच्छानुसार घुमाना। उ० ऐसा कल ऐंठो कि उन दोनो मे झगड़ा हो जाय।

कलक गुज़रना—दे० 'कलक होना।'

कल-कल करना—१ आज-कल करना। उ० देना हो तो रुपया दे दो, कल-कल क्या करते हो? २ मधुर ध्वनि करना, नदियो तथा झरनो आदि का कल-कल करते हुए बहना।

कल-कल तोड़ना—जोड-जोड तोड देना। उ० ज़ालिम ज़मीदार ने इस गरीब की कल-कल तोड दी।

कल-कल लगाना—आज-कल करना, टालमटोल करना। उ० कल-कल लगाना हो तो मैं एक पैसा नही दूँगा।

कलक होना—दु ख या क्लेश होना। उ० कलक तो उसे है, वही जानता है। इस बात से उसे बड़ा कलक हुआ।

कल का—थोडे दिनो का, अनुभवहीन। उ० जा जा, कल का बच्चा हमारे मुँह लगता है।

कल का अडा—कम उम्र का। उ० यह कल का अडा, मुझे शिक्षा दे रहा है!

कल का पुतला—१ अन्य की मनोवृत्ति के अनुसार चलने वाला। उ० कही-कही कल का पुतला होना भी काम कर जाता है। २ बहुत ही मेहनती और विश्राम न करने वाला। उ० कल के पुतले की तरह काम करना हानि-कारक है।

कल की बात होना—१ बीती बात होना। उ० कल की बात है, जाने भी दो। २ गत दिवस की बात होना। उ० अभी कल की ही बात है, वह यही गाली बक रहा था। ३ बहुत की बात या घटना होना।

कल को कहना—भविष्य मे कहना। उ० जैसा होगा, लोग कल को कहेगे।

कल न हो—भावी दिनो मे ऐसा न हो। मास्टर ने कहा, 'अच्छा बच्चो! कल ऐसा अनुशासन भंग न हो, नहीं तो विद्यालय का नाम बदनाम होगा'।

कल पकड़ना—भविष्य मे रहना। एक दिन रुकना। उ० मुझे जल्दी है, मैं कल नहीं पकड़ सकता, आज ही जाऊँगा।

कल पड़ना—१. चैन मिलना। उ० पैर के दर्द से कल नहीं पड रहा है। २ सतोष होना।

कल पाना—ढंग मालूम होना। उ० वह भी कल पा गया, अब तुम इस चीज़ के बनाने वाले अकेले न रहे।

क़लम करना—विशेष ढग से काटना, क़लम काटना। उ० बीजू आम क़लम करने से अच्छे फल देंगे।

क़लम कसाई—घूसखोर। इस विभाग मे सब कलम कसाई हैं।

क़लम की जीभ—क़लम का वह भाग, जिससे लिखते हैं। उ० कलम की जीभ ठीक नहीं है।

क़लम खींचना—लिखे हुए को ग़लती काटना। उ० बड़े लोगो के लिखे पर क़लम खींचना सबका काम नही है।

क़लम घिसना—बराबर लिखते रहना। उ० आज तो कार्यालय मे क़लम घिसते-घिसते नाक मे दम आ गया।

क़लम चलना—लिखना। उ० १. इस कोश के लिखने मे दिन भर बिना खाये-पिये क़लम चलाता रहा। २. अच्छा क़लम होना, जो ठीक लिखे। उ० जब तक क़लम न चले, लिखने मे मजा नही आता।

क़लम चलाना—लिखना। उ० विद्यार्थियो को कलम चलाने का अभ्यास करना चाहिये। २. तेज़ लिखना। उ० अरे क्या बात है, कलम चलाओ, एक घटे मे पूरा हो जाएगा।

क़लम चूमना—लिखने की प्रशसा करना। उ० तुम्हारी लिखावट देख कर तबियत यही होती है कि क़लम चूम लूँ।

क़लम जारी रहना—१ लिखते रहना। उ० क़लम जारी रक्खो। शायद पुरस्कार मिल जाय। २ आज्ञा का अधिकार रहना। उ० यदि हमारे एम० एल० ए० का क़लम जारी रहा, तो मैं कोई अच्छा पद पाऊँगा।

कलम तोड़ना—१. मार्मिक बात लिखना।

उ० इस कविता के लिखने मे तो कवि ने कलम ही तोड दिया है। २ ज्यादा लिखना। उ० आज तो इतिहास का नोट लिखते-लिखते कलम तोड दिया।

क़लम दान देना—लिखने की नौकरी देना।

क़लम न रुकना—लिखते ही रहना। उ० कितनी बार सज़ा हो चुकी, तिस पर भी कलम नही रुकता, वह सरकार की बुराई करता ही रहता है।

क़लम न उठ सकना—लिख न सकना। उ० एक सप्ताह से कलम नही उठ रही है, लिखूँ क्या।

क़लम फेरना—दे० 'कलम खीचना'।

क़लम-बंद—पूरे-पूरे। गिन कर। उ० कलम बद मुझे १००) दे दो।

क़लम बद करना—नोट कर लेना। लिख लेना। उ० उसकी बातें कलम बद कर लो।

क़लम बद लगाना—पूरे-पूरे, गिन कर लगाना। उ० कलम बद दस बेंत लगाऊँगा, तब समझोगे।

क़लम बंद सुनाना—बुरा-भला कहना। उ० अच्छा हुआ तुम्हारे जैसे आदमी को खूब कलम बद सुनाया।

क़लम मारना—दे० 'कलम खींचना'।

क़लम मे जादू होना—बहुत ही प्रभावशाली कवि या लेखक होना।

क़लम मे जोर होना—लिखने मे प्रभाव होना। उ० तुलसीदास की कलम मे ज़ोर था, तभी तो उनका सम्मान जनता हृदय से करती है।

क़लमा पढ़ना—१ दुआ मनाना। उ० तुम्हारा कलमा सभी पढते हैं, क्योकि तुम सब की खबर लेते रहते हो। २ मुसलमान होना।

कल हाथ मे होना—पूर्णत अधीन होना। उ० उसकी चिन्ता न करो, उसकी कल मेरे हाथ मे है।

क़लमा पढ़ाना—मुसलमान बनाना। उ० जाने कितने हिन्दुओ को मुसलमानो ने कलमा पढाया है।

कलाई पकडना—किसी स्त्री का सतीत्व नष्ट करने के लिए उसका हाथ पकडना। उ० कल बाज़ार मे किसी गुडे ने उस बेचारी की कलाई पकडी थी।

कला बजाना—बदरो का मजीरा बजाना। [इसका प्रयोग मदारियो की भाषा मे होता है।]

कलाबाज़ी खाना—सिर नीचे करके पलटा खाना। उ० कलाबाज़ी खाने मे नट निपुण होते हैं। वह कबूतर खूब कलाबाज़ी खाता है।

क़लाम होना—शुबहा होना। उ० कहते चलो, मुझे तुम्हारी बातो पर क़लाम नही होता।

कली खिलना—खुश होना। उ० उसे देख कर तुम्हारी कली खिल उठती है।

कलेजा उछलना—१ घबडाहट होना। उस रात के दृश्य को देखकर मेरा कलेजा उछलने लगा। २ मुग्ध होना। उ० उसने कल खेल मे ऐसा कमाल दिखाया कि कलेजा उछलने लगा।

कलेजा उड़ा जाना—होश उडा जाना। उ० देख रहे हो, उसका कलेजा उडा जा रहा है, पर जी कडा करके खडा है।

कलेजा उलटना—१. होश न रहना। बेहोश होना। उ० आज उसका कलेजा उलट गया था, और जीवन की कोई आशा नही थी। २ वमन से जी घबडाना। उ० कलेजा उलट रहा है, कोई कै की दवा दे दो।

कलेजा कटना—१ आँतो मे छेद होना। उ० यदि उसका कलेजा कट गया है, तो कै मे खून आना स्वाभाविक है। २ मार्मिक चोट होना। उ० नोआखाली का वर्णन सुनकर किसका कलेजा नहीं कटता। ३ बुरा लगना। उ० दूसरे की सम्पत्ति भी देने मे उसका कलेजा कटता है। ४. डाह करना। उ० यदि उसे मालिक मानता है, तो क्यो तुम्हारा कलेजा कटता है?

कलेजा काँपना—दहलना, डरना। उ० डाकू को देखते ही मेरा कलेजा काँप गया।

कलेजा काढ के देना—सबसे प्रिय या बहुत बडी वस्तु देना। उ० अजी कैसी छोटी बात करते हो? १,००० रु० दे दिये तो जानते हो कि कलेजा काढ कर दे दिया।

कलेजा काढ़ना—१ अमूल्य या प्रिय वस्तु ले लेना। उ० तुम्हें तो ऐसी आदत है कि तुम कलेजा ही काढ लेते हो। २ मोहित करना। उ० उसकी बातो ने तो कलेजा काढ लिया। ३ सर्वस्व ले लेना। ४ बहुत दु ख देना। उ० लडकों को मार कर तुमने कलेजा काढ लिया।

कलेजा काढ़ लेना—दे० 'कलेजा काढना'।

कलेजा खाना—१. बहुत तकाजा करना। उ० मैं जानता हूँ कि तुम्हे बुरा लगता होगा, परन्तु बडा हर्ज है, इसलिए कलेजा खा रहा

हूँ। २ परीशान करना। उ० जमीदार के कारिन्दे लगान के लिए कलेजा खा रहे हैं।

कलेजा खिलना—प्रसन्न होना। उ० तुमको यहाँ देख कर मेरा कलेजा खिल गया।

कलेजा खिलाना—प्यार से पालन-पोषण करना। उ० वाह रे दुनिया! जिसको कलेजा खिला कर रक्खा, आज वही जानी दुश्मन हो गया।

कलेजा चलनी होना—व्यथा के कारण हृदय का निर्बल होना। दिल टुकडे-टुकडे हो जाना। उ० उसका कलेजा लगातार तीन विपत्तियो को सहते-सहते चलनी हो गया है।

कलेजा चीर कर दिखाना—१ पूर्ण विश्वास देना। २ कोई कपट न रखना, स्पष्ट कहना। उ० कलेजा चीर कर दिखा सकता हूँ कि मेरे मन मे अब उनके प्रति कोई वैर नही है।

कलेजा चीर कर रखना—दे० 'कलेजा चीर कर दिखाना'।

कलेजा छिदना—कठोर बातो से जी दुखना। उ० उसकी बात से तो कलेजा छिद गया, अब उससे नही बोलूंगा।

कलेजा छेदना—१ कटु बात कहना। चुभती कहना। २. कुछ कह कर किसी का जी दुखाना। उ० वह तो ऐसा कलेजा छेदता है कि उससे फिर बोलने की हिम्मत नही होती।

कलेजा जलाना—१ कष्ट देना। उ० क्यो उस ग़रीब का कलेजा जला रहे हो। २. चुभती बात कह कर दु ख पहुँचाना।

कलेजा जली—दुखिया। उ० इस कलेजा जली को परीशान कर के तुम्हे क्या मिलेगा?

कलेजा टूक-टूक होना—हृदय पर गहरा आघात पहुँचना। उ० पिता जी की मृत्यु का समाचार सुनते ही कलेजा टूक-टूक हो गया।

कलेजा टूटना—उत्साहहीन होना। हिम्मत जाती रहना। उ० इस बार फिर फेल होने से उसका कलेजा टूट गया, अब परीक्षा मे नहीं बैठ सकता।

कलेजा ठडा करना—सतोष पहुँचाना। शाति देना। उ० तुम्हारी बातो ने कलेजा ठडा कर दिया।

कलेजा ठंडा होना—सतोष होना। शाति मिलना। उ० तुम्हारे कामो से उसके सारे परिवार का कलेजा ठडा हो गया।

कलेजा डोलना—मन अस्थिर होना।

कलेजा तर होना—१ तरावट आना। उ० लस्सी के पीते ही कलेजा तर हो गया। २ हृदय को शाति मिलना। उ० उसकी बात सुन कर कलेजा तर हो जाता है।

कलेजा तोड़-तोड कर कमाना—परिश्रम से रोजी कमाना। उ० बेचारे गृहस्थ कलेजा तोड-तोड कर कमाते हैं, फिर भी एक जून उपवास ही से बीतता है।

कलेजा थर-थर करना—१ हृदय धडकना। उ० कल मौखिक परीक्षा है, आज ही से कलेजा थर-थर कर रहा है। २. डरना। उ० इतनी सी बात पर तुम्हारा कलेजा थर-थर कर रहा है।

कलेजा थाम कर बैठ जाना—१ जी मसोस कर रह जाना। उ० तुम्हारे रहने से कलेजा थाम कर बैठ गया, नही तो उन्हे मजा चखा देता। २ सब्र कर लेना। उ० आखिर पुत्र तो मर ही गया, अब कलेजा थाम कर बैठो।

कलेजा थाम कर रह जाना—दे० 'कलेजा थाम कर बैठ जाना'।

कलेजा थाम कर रोना—हृदय कचोट कर रोना। रुक-रुक कर रोना।

कलेजा थामना—१ विपत्ति पडने पर दिल कडा करना। २ धैर्य धारण करना। उ० डांट लो, जिस तरह ६० साल बीते, उस तरह कलेजा थाम कर कुछ दिन और बिता लूंगा।

कलेजा दहलना—दिल मे डर होना, दिल का धक करना। उ० आज न्यायालय मे जिरह है, अभी से कलेजा दहल रहा है।

कलेजा दहलाना—डरा देना। क्यों परीक्षा-फल की याद दिला कर कलेजा दहलाते हो?

कलेजा धक-धक करना—भयभीत होना। उ० जिस दिन लडके काम पूरा नही करते, मास्टर को देखते ही उनका कलेजा धक-धक करने लगता है।

कलेजा धक से हो जाना—१ भय से स्तब्ध हो जाना। उ० शेर को देखते ही मेरा कलेजा धक से हो गया। २ आश्चर्य मे पड जाना। उ० कौन जानता था कि गाधीजी भी मारे जायंगे। मैंने तो जब यह सुना तो कलेजा धक से हो गया।

कलेजा धड़कना–दिल का डर से थर्राना। उ० तुम तो अजीब जानवर हो। छोटी-छोटी बात पर भी कलेजा धडकने लगता है।

कलेजा धड़काना–डरा देना। धक से कर देना। उ० तुमने तो यह बात कह कर क लेजा धडका दिया।

कलेजा धुकड़-पुकड होना–दे० 'क लेजा दहलना'।

कलेजा निकलना–१ बहुत दु ख होना। २ बहुत कष्ट कर परिश्रम पडना। उ० क्या करूँ यार, कर तो देता, परन्तु इसे करने मे कलेजा निकल जाएगा। ३ तत्त्व चला जाना। असली चीज़ निकल जाना। उ० हमारा तो कलेजा ही निकल गया। ४ बहुत प्यारी चीज़ का जाना।

कलेजा निकाल कर रख देना–१ हृदय की बात कहना। उ० भाषण क्या था, उन्होने कलेजा निकाल कर रख दिया। २ सर्वस्व समर्पण कर देना। उ० उसके पास है ही क्या, हाँ यो तुम्हारे लिए कलेजा निकाल कर रखने को तैयार है। ३ हृदय खोल कर दिखा देना। कुछ न छिपाना। ४ बहुत प्रयत्न करना।

कलेजा निकालना–१ बहुत प्यारी वस्तु ले लेना। उ० उसके बच्चो को लेकर उसका कलेजा न निकालो। २ मोहित करना। उ० उसके नृत्य ने कलेजा निकाल लिया। ३ बहुत कष्ट देना। उ० इन ग़रीबो का कलेजा न निकालो।

कलेजा पक जाना–दु ख से ऊब जाना। उ० रोज कमाओ रोज खाओ। आराम का तो नाम नही है। इस जिंदगी से तो कलेजा पक गया है।

कलेजा पकाना–दिल जलाना। तुम्हारी इन्ही बातो ने तो मेरा कलेजा पका दिया है।

कलेजा पकडना–कष्ट सहने के लिए जी कडा करना। उ० जैसे इतना सहा, वैसे और के लिए भी कलेजा पकड लूंगा, तुम अपना काम देखो।

कलेजा पकड़ लेना–१ कष्ट सहने के लिए दिल कठोर करना। उ० चाहे जो हो, मैंने भी अपना कलेजा पकड लिया है। २ कलेजे मे भारी मालूम होना। कलेजे से सट जाना। उ० जमने के कारण कफ ने कलेजा पकड लिया है।

कलेजा पकड़ कर रह जाना–दे० 'कलेजा मसोस कर रह जाना'।

कलेजा पत्थर करना–१ कठोर बनना। उ० पुलिस की नौकरी ही ऐसी है कि कलेजा पत्थर करना पडता है। २ हिम्मत करना, अपने को कडा करना। उ० घबडाने से काम नही चलेगा। कलेजा पत्थर करके घर चलो।

कलेजा पत्थर का होना–दु ख का सामना करने के लिए दिल कडा होना। उ० जगल का काम ही ऐसा है कि कलेजे को पत्थर का होना पडता है। २. कठोर हृदय का होना। उ० उसका कलेजा पत्थर का है। पुत्र मर गया पर उसकी आँखें तक न भीगी।

कलेजा पसीजना–दे० 'कलेजा पानी होना'।

कलेजा पानी होना–१. दया आना। करुणा से ओत-प्रोत हो जाना। उ० काशी मे जाने पर सडक पर बैठे हुए सहस्रो अपाहिज मँगनो को देख कर कलेजा पानी हो जाता है।

कलेजा पुदीने के पत्ते के बराबर होना–दिल का बहुत कमज़ोर होना।

कलेजा फटना–१ डाह होना। उ० यदि वह अपने परिश्रम से इतना तेज़ है तो तुम्हारा कलेजा क्यो फटता है? २ हृदय मे दुःख होना। उ० बस करो, अब इस करुण कहानी को बन्द करो, सुन कर कलेजा फटता है।

कलेजा बढ़ जाना–उत्साह होना। उ० आज पुरस्कार पाकर उसका कलेजा और बढ गया।

कलेजा बल्लियो या बाँसों उछलना–दे० 'कलेजा उछलना'।

कलेजा बींधना–दे० 'कलेजा छेदना'।

कलेजा बैठा जाना–१. हृदय मे हृदस होना। उ० तुम्हारे साथ मे पड कर इस कुकर्म को कर तो दिया, परन्तु मारे डर के मेरा कलेजा बैठा जा रहा है। २ जोश का कम होना। उ० इस बात को सुनकर तो मेरा कलेजा बैठा जा रहा है।

कलेजा मलना–किसी का दिल दुखाना। उ० अब अधिक कलेजा न मलो, कुछ रहम भी खाओ।

कलेजा मसोस कर रह जाना–१. सब्र कर लेना। उ० इतना घाटा तो हुआ, पर वह कलेजा मसोस कर रह गया। २ मन मसोस कर रह जाना। उ० तुम्हारे रहने से कलेजा मसोस कर रह जाना पडा, नही तो उन्हे बता दिए होता।

कलेजा मुँह को आना–१. कष्ट से पीड़ित

होना। उ० खाने-कमाने की झंझट से तो कलेजा मुंह को आ गया है। २ दिल घबड़ाना। उ० उसका पत्र नही आया, सोच कर कलेजा मुंह को आ रहा है।

कलेजा मुंह तक आना—१ बहुत कष्ट होना। उ० वह जीवन क्या मरण है जिसमे कलेजा मुंह तक आ जावे। इस बार की चढाई मे तो कलेजा मुंह तक आ गया। २ विकल या बेचैन होना। उ० पानी के मारे कलेजा मुंह तक आ गया है।

कलेजा सँभालना—दिल काबू मे रखना। उ० इस तरह रोने से काम नही चलेगा, कलेजा सँभालो ज़रा।

कलेजा सन्न होना—हृदय धक से हो जाना। उ० गाँधीजी की मृत्यु का समाचार सुनते ही सारे भारतवर्ष का कलेजा सन्न हो गया।

कलेजा सालना—दे० 'कलेजा छिदना'।

कलेजा सुलगना—हृदय जलना। उ० अधिक न कहो, मारे क्रोध के कलेजा सुलग रहा है।

कलेजा हाथ भर का होना—१ उत्साह होना। उ० इस बात को सुनकर तो उसका कलेजा हाथ भर का हो जायगा। २ हिम्मतवाला होना उ० हाथ भर का कलेजा है, जो कुछ सोचते हैं, उसे पूरा ही करते हैं। ३ सहन-शक्ति होना।

कलेजा हिलना—दे० 'दिल दहलना'।

कलेजा होना—हिम्मत होना।

कलेजे का टुकडा—अति प्यारा। उ० मेरा पुत्र मेरे कलेजे का टुकडा है।

कलेजे पर चोट आना—मार्मिक चोट पहुँचना। दु.ख होना। उ० तुम्हारे व्यवहारो से पिताजी के कलेजे पर चोट आई है। उनकी मृत्यु से मेरे कलेजे पर चोट आई है।

कलेजे पर चोट देना—शोकित करना। दिल पर आघात पहुँचाना। उ० उसकी मृत्यु ने माताजी के कलेजे पर ऐसी चोट दी कि वे वेहाल हो गईं।

कलेजे पर छुरी चलाना—कष्ट देना। दु.ख पहुँचाना। उ० सरकार गरीबो के ही कलेजे पर छुरी चलाती है।

कलेजे पर छुरी फेरना—दे० 'कलेजे पर छुरी चलाना'।

[illegible] रखना—दिल को कडा बनाना, धैर्य धारण करना। उ० वह मर गया तो कलेजे पर पत्थर रखकर सहना ही पडेगा।

कलेजे पर मक्खन मला जाना—शत्रु की हानि देखकर दिल प्रसन्न होना।

कलेजे पर साँप लोटना—किसी बात को सोचकर या देख कर ईर्ष्या, जलन, क्रोध या शोक होना। उ० जब गाधीजी भारत को अंग्रेजो के अधिकार मे देखते थे, तो उनके कलेजे पर साँप लोट जाता था। दूसरो का धन देख कर उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है।

कलेजे पर हाथ धरना—दे० 'कलेजे पर हाथ रखना'।

कलेजे पर हाथ रख कर देखना—ठंडे दिल से सोचना। उ० कलेजे पर हाथ रख कर देखना कि अपराध किसका था।

कलेजे पर हाथ रखना—कलेजा टटोलना, सच्चाई स्वीकार करना। उ० कलेजे पर हाथ रख कर मैं कह रहा हूँ कि मैंने उसे नही मारा।

कलेजे मे आग लगना—१ कष्ट होना। उ० मारे भूख के कलेजे मे आग लगी है। २ द्वेष होना। उ० इस बार उसे हजारो रुपये का लाभ देख कर बहुतो के कलेजे मे आग लग गई होगी।

कलेजे मे उतरना—प्रमाणित करना।

कलेजे मे घुसना—विश्वास जमा कर भेद ले लेना। उ० भरत बडा सीधा है, यदि चाहो तो उसके कलेजे मे घुस कर सारी बात पूछ लो।

कलेजे मे घूंसा लगना—अत्यधिक दु.ख होना। उ० इस समाचार से तो कलेजे पर घूंसा लगा है।

कलेजे मे डालना—समीप रखना। उ० उस बच्चे की मीठी बातो को सुन कर जी चाहता है कि हर समय कलेजे मे डाले रहूँ।

कलेजे मे पैठना—दे० 'कलेजे मे घुसना'।

कलेजे वाला—हिम्मती।

कलेजे से धुआँ उठना—आह निकलना। उ० उसके मरने से गाँव भर के कलेजे से धुआँ उठ रहा है।

कलेजे से लगा कर रखना—१ आँख से ओझल न होने देना। पास रखना। उ० माँ यही चाहती है कि अपने पुत्र को कलेजे से लगा कर रक्खे। २. सचेष्ट होकर रक्षा करना। उ० इन

कितावो को मैंने कलेजें से लगा कर रखा है, ग़ायब न कर देना ।

कलेजे से लगाना–मारे प्यार के छाती से लगा लेना । उ० पुत्र को पिता ने कलेजे से लगा लिया ।

कलेवर चढ़ाना–मूर्ति पर सिंदूर और घी का लेप करना । उ० बगाल मे काली की मूर्ति पर कलेवर चढ़ाया जाता है ।

कलेवर बदलना–१. स्वर्गवास होना । उ० इस किचकिच के जीवन से अच्छा है कि कलेवर बदल जाय । २ पुराना उतार कर नया कपडा पहनना । उ० तुम तो प्रत्येक क्षण नये कलेवर बदला करते हो। ३ अधिक दिन की बीमारी से अच्छा होना । ४ स्वाँग रचना।

कलेवा करना–सवेरे खाना, जलपान करना । उ० आज इतना काम था कि दो बज गए और अब तक कलेवा तक नही किया ।

कल्ला दवाना–अपने सामने दूसरे को न बोलने देना । उ० वह अजीव वकील है, जब कचहरी मे बहस करने लगता है तो अच्छे-अच्छे वैरिस्टरो तक का कल्ला दबा देता है । २. गला दवाना । उ० आज कुछ डाकुओं ने किसी आदमी का कल्ला दवा कर जान से मार डाला है ।

कल्ला मारना–डींग मारना । उ० तुम तो दूर से ही कल्ला मारते हो, जव मौका आता है तो फिर वोल देते हो ।

कसक निकालना–दे० 'कसक मिटाना' ।

कसक मिटाना–१. पूर्व वैर का प्रतिकार लेना । उ० चलो देखें, कब तक बचते हो, कही तो भेंट हो जायगी और सारी कसक मिटा लूंगा । २ हृदय की चिन्ता दूर करना । उ० पुत्र का विवाह हो गया। यही कसक शेष थी, वह भी मिट गई ।

कसकर–ज़ोर से, खीचकर । उ० कसकर एक चाँटा मारो ।

कसकर रखना–१. रोक लेना । प्रकट न करना । उ० सभ्य मंडली मे बुरे भावो को कस कर रक्खो । २ बाँध रखना, कहीं जाने न देना ।

कसव करना–वेश्यावृत्ति अपनाना । जो लडकियाँ घर से भागती हैं, वे लाचार होकर क़सव करती हैं ।

क़सम उतारना–थोडा कुछ कर देना, जिससे क़सम उतर जाय । उ० केवल कसम उतारता हूँ, नही तो खाने की इच्छा नही थी ।

क़सम खाने को–१ कोई भी, एक भी । उ० जो चाहो सो करो, अकेले तो मैं हूँ । यहाँ क़सम खाने को भी कोई नही है । २ ज़रा भी । उ० तुम्हें दूँ तो कहाँ से, कसम खाने को भी मेरे पास चीनी नही है ।

कसर करना–कमी करना । उ० मैंने ज़रा भी उसके लिए अपने परिश्रम मे कसर नही की, आगे उसका भाग्य जाने ।

कसर खाना–नुक़सान उठाना । उ० अधिक से अधिक दो रुपये की कसर खा सकता हूँ, इसके बाद गुञ्जाइश ही नही है ।

कसर निकालना–१. बदला लेना । उ० आज मोहन के घर चोरी हो गई है । वह तो एक बदमाश है, इसकी कसर निकाल ही लेगा । २ कमी पूरी करना । उ० इस बार के गुड की कसर अगले बार चावल मे निकाल लूंगा ।

कसर पड़ना–नुकसान होना । उ० इतना ही दवाओ, कि हमे भी कुछ कसर न पडे ।

कसर रखना–१ वैर रखना । डाह रखना । उ० सयुक्ता की शादी के बाद ही जयचद पृथ्वीराज से कसर रखने लगा । २ कमी रखना । उ० परिश्रम में ज़रा भी कसर न रखना, फल तो भगवान के हाथ है ।

कसर रहना–अधूरा रह जाना । उ० आप चिन्ता न कीजिये, कल तक कोई कसर नही रहेगी ।

कसाई के खूंटे से बांधना–निर्दयी के अधिकार मे देना । उ० पहले तो पता नही चला, पर मैं अब सोचता हूँ कि वास्तव मे अपनी बेटी को मैंने कसाई के खूंटे से बांध दी ।

कसा-कसाया–प्रस्थान के लिये प्रस्तुत, तैयार । उ० समर-भूमि के लिए सैनिक कसे-कसाये हैं ।

कसाला पडना–कष्ट होना । उ० प्रेम के मार्ग मे कसाले पडते हैं । यहाँ आने मे कसाला करना पडा ।

कसौटी पर कसना–अच्छी तरह जाँच करना । उ० सोने का खोटा और खरा होना, कसौटी पर कसने से ही पता चलता है। कसौटी पर कस कर उसे अपने गिरोह मे शामिल करना ।

क़हक़हा उड़ाना–हँसी उडाना । उ० अरे कुछ

सुनो भी तो, हर बात का हर वक्त कहकहा उड़ाना उचित नही है ।

क़हक़हा मारना—१ दे० 'क़हक़हा उड़ाना' । २ ठठा कर और ज़ोर से हँसना । उ० उसे फँसा तो लिया होता, पर तुमने कहक़हा मार कर सारा काम बिगाड़ दिया ।

क़हक़हा लगाना—दे० 'क़हकहा मारना' ।

कहते न आना—अवर्णनीय होना ।

कहना-बदना—१ तय करना । उ० देखो अब बात न छोड़ो, क्योंकि यह तो पहले से ही कहा-बदा था । २ ललकार कर कहना । उ० कोई स्त्री तो हूँ नहीं, जो कुछ करना है, कह-बद कर ही करूँगा । ३ प्रतिज्ञा करना । उ० तुमने उस दिन आने को कहा-बदा था, पर नही आए ।

कहना-सुनना—गाली-गलौज देना, डाँटना-फटकारना । उ० उसे कहना-सुनना व्यर्थ है । वह सुधर नही सकता ।

कहने की बातें—कोरी गप्प । उ० यह सब कहने की बातें हैं, वह तुम्हे काम नही दिला सकता ।

कहने पर जाना—किसी पर विश्वास कर लेना । उ० उनके कहने पर क्यो जाते हो, भला मैं तुम्हें गाली दे सकता हूँ ।

कहने मे आना—१ बहकावे मे आना । उ० इस बार के जाने से एक फायदा हुआ कि इतना तो जान गया कि किसी के कहने मे आकर नहीं जाना चाहिए । २ धोखे मे आना । उ० का एक साधु के कहने मे आकर मैंने ५० रु० खो दिए ।

कहने-सुनने के लिए । को—नाम मात्र को, दिखावे को । उ० कहने-सुनने को वह मेरा है, यो उससे कोई भी मतलब नही है ।

कहने-सुनने मे आना—दे० 'कहने मे आना' ।

क़हर करना—१. ज़ुल्म करना । उ० इतना कहर न करो, आखिर मैं भी तो आदमी हूँ । २. असभव बात करना । उ० किसी को विश्वास नही था कि तुम्हें रुपया मिलेगा, परतु तुमने तो क़हर कर दिया ।

क़हर का—१ बहुत अधिक । २ बहुत कठिन । उ० क़हर के काम को कौन करेगा ? ३. आफती ।

क़हर गिरना या टूटना या पड़ना या बरसना—विपत्ति का पहाड़ गिरना । उ० इतना बडा क़हर शायद किसी पर नही टूटा होगा ।

क़हर पड़ना—दे० 'कहर टूटना' ।

कह बैठना—१ मुँहतोड़ उत्तर देना । उ० छोटा हो या बडा, वह सभी को कह बैठता है । २ भेद खोल देना, एक-बे-एक कह देना । उ० औरतो के दिल मे कोई बात नही पचती । वे समय आने पर सब कुछ कह बैठती हैं । ३. ताना देना ।

कहाँ का—१ किसी ओर का नही । उ० कहाँ के सत्यवादी हो कि तुम्हारी बात मान लें । २ बडा भारी । उ० चल हट, कहाँ का चुग़लखोर है ।

कहाँ का कहाँ—१ बहुत दूर । उ० यही न है कि जहाँ का अन्न-जल रहता है, वहाँ जाना ही पड़ता है, हम कहाँ से कहाँ चले आए । २. व्यर्थ मे । उ० कहाँ का कहाँ मैंने उन्हे बुलाया भी, वे न आते तो यह बखेडा क्यो उठता ?

कहाँ की बात—१. अशुद्ध बात । झूठी बात । उ० कहाँ की बात करते हो, वे कल आए तो थे । २ गदी बात । उ० यह आप कहाँ की बात करते हैं, कम से कम पिताजी का तो ख्याल किया कीजिए ।

कहाँ सर फोड़ना—कुछ समझ मे न आना । उ० सुबह से सारा घर छान लिया है, पर पुस्तक का कही पता नही लगा । अब कहाँ सर फोड़ूँ ?

कहाँ से—१ व्यर्थ मे । उ० अब पश्चाताप होता है कि कहाँ से शादी कर ली, नही तो अकेले मौज करता था । २ नही । कही से नही । उ० जब महात्मा चले गए, तो उनका दर्शन कहाँ से हो सकता है ?

कहाँ से टपक पड़ना—अचानक आ जाना । उ० अरे भई सुबह ही सुबह कहाँ से टपक पडे ।

कहा-सुनी होना—झगडा-तक़रार होना, वाद-विवाद होना । उ० कल बात ही बात मे दोनो मे कहा-सुनी हो गई और मारपीट तक की नौबत आ गई ।

कहीं आकर—बहुत दिन बाद । उ० युग बीत गए, तब कही आकर आप के दर्शन हुए ।

कहीं और—अन्यत्र । उ० हम तो स्वयं भिक्षुक हैं, कही और माँगो ।

कहीं-कहीं—१ बहुत कम । उ० सज्जन ससार मे कही-कही मिलते हैं । २ किसी-किसी स्थान पर । उ० दक्षिणी वनो मे कही-कही चंदन मिलता है ।

कहीं का—दे० 'कहाँ का' ।

कहीं का न रहना–कहीं आदर या पूछ न होना। उ० अब वह कहीं का न रहा, इसीलिये तो मुंह काला करके भाग गया।

कहीं तो नहीं–ऐसा न हो कि। ऐसा तो न हुआ कि। उ० कही गाडी तो नही छूट गई।

कहीं न–यह न हो कि। उ० कही तुम भी पास न हुए तो और बनेगा।

कहे मे होना–किसी की बात मानने वाला होना।

कांकरी चुनना–वियोग या चिंता के कारण मन न लगना। उ० भैया के साथ दिन-रात रहता था और वे चले गए। अब क्या करूं, कांकरी चुनते दिन बिताता हूं।

कांख-कांख कर–कठिनता से। उ० यह पचास रुपये-कांख कूंख कर दिये हैं, इन्ही से काम चलाओ।

कांच खोलना–१. मैथुन करना। २. हिम्मत छोड़ना। बस एक कुत्ते ने भोंक दिया और कांच खोल दी।

कांच निकलना–किसी ,आघात या परिश्रम से बुरी दशा होना। उ० ऐसा मारेंगे कि कांच निकल आयेगी।

कांच निकालना–१ अथक परिश्रम कराना। उ० आज मालिक ने कांच निकाल ली। २ बेदम करना। उ० आज के काम ने कांच निकाल दी।

कांचा मन होना–हृदय दृढ न होना। उ० औरतो का मन कांचा होता है। वह तो कांचा मन है, उससे काम न होगा।

कांछी देना–टाल-मटोल करना। उ० आखिर जब रुपया देना ही है, तो कांछी क्यो देते हो?

कांटा खटकना–१ संदेह होना। उ० इतनी स्पष्ट बात होने पर भी क्या अभी कांटा खटकने की गुंजाइश है? २. बुरा लगना, अखरना।

कांटा चुभोना–परीशान करना। उ० क्यो कांटा चुभो रहे हो? क्या मेरी बारी कभी न आएगी?

कांटा निकल जाना–हृदय से द्वेष, बाधा या वेदना का मिटना। उ० आपकी बातो से हमारे दिल का कांटा निकल गया।

कांटा निकालना–१. संदेह दूर करना। उ० उनके दिल से किसी तरह कांटा निकाल दो। २. कष्ट दूर करना।

कांटा बिछाना–दे० 'कांटा बोना'।

कांटा बोना–१. अनिष्ट करना। उ० भरसक शत्रु के लिए भी कांटा न बोना चाहिए। २ बाधा पैदा करना। उ० यदि ईश्वर चाहेगा तो तुम्हारे कांटे बोने से कुछ न होगा।

कांटा-सा करना–दुबला करना। उ० अनशन करके तुमने शरीर कांटा-सा कर दिया है।

कांटा-सा खटकना–दे० 'कांटे-सा खटकना'।

कांटा-सा होना–गतिक्षीण होना। उ० केवल अपनी स्त्री की चिंता के कारण वह सूख कर कांटा-सा हो गया। २. कष्टकर होना।

कांटा होना–१ सूखकर दुबला हो जाना। २. दुःखदायी होना। ३ बाधा बनना।

कांटी खाना–कारागार भुगतना। उ० अरे डाकुओ को क्या है, उनका तो पेशा ही कांटी खाना है। [यह जुआरियो की बोली मे प्रयुक्त होता है।]

कांटे का–१ कड़ा। २ अत्यधिक। ३ हिम्मती।

कांटे की–१ नपी-तुली। उ० जो भी हो, वे हैं तो कटुवादी, पर कांटे की बात कहते हैं। २. कड़ई। उ० उसकी कांटे की बात सुनते-सुनते तबीयत आजिज आ गई।

कांटे की तौल–ठीक-ठीक, न कम न बेश। उ० कांटे की तौल देने वाले दूकानदार कहां मिलते हैं?

कांटे मे तुलना–बहुत महंगा होना।

कांटे-सा खटकना–बुरा लगना, अखरना। उ० हमी हैं अब की कांटे-सा खटकते हैं, हर एक दिल मे।

कांटों पर लोटना–१ कष्ट मे दिन बिताना। उ० अरे हम-तुम सुखी हैं, परतु सारा विश्व तो कांटो पर ही लोट कर जीवन-यापन करता है! २. द्वेष होना। उ० कोई स्त्री सपत्नी को देख कर कांटो पर लोट जाती है।

कांटों में उलझना–सकट मे पडना। उ० तुम्हारे जैसे धोखेबाज आदमी इसी तरह कांटो मे उलझा करते हैं।

कांटों मे खींचना–१ आवश्यकता से अधिक प्रशंसा करना। उ० कृपा करके अब अधिक मुझे कांटो मे न खीचिए। २ बहुत कष्ट देना। उ० अब मुझे कांटो मे न खीचिए। वह हाथ मे आ जाता तो ऐसा कांटो मे खीचता कि उसे होश हो जाता।

काँटों मे घसीटना–दे० 'काँटो मे खीचना'।

काँटो में फँसना–कठिनाई मे पडना। उ० रमा के चले जाने के कारण मैं तो काँटो मे फँस गया हूँ।

काँटो मे लथारना–दे० 'काँटो मे खीचना'।

काँध देना–१ सहारा देना। उ० जरा भी काँध दे दो तो मेरा वेडा पार लग जाय। २. मुर्दे की अरथी को काँध पर रखना।

काँध मारना–समय पर काम न आना। उ० तुम्हारे ऐसे मित्र से बाज आए। उस दिन मुझे केवल १०० रु०की आवश्यकता थी और तुम काँध मार गए।

काँधी देना–टाल-मटोल करना। उ० क्यो काँधी दे रहे हो, मेरी भी बारी आएगी।

काँस मे तैरना–असमजस मे पडना। उ० तो वह काँस मे तैर रहा है, और तुम भी साफ नही कहते, ऐसा मैं जानता तो कभी साझा न करता।

काँस मे फँसना–सकट मे फँसना। उ० वह तो ऐसा काँस मे फँसा है कि जो चाहो करा सकते हो।

काई छुडाना–१ दु ख-दरिद्रता दूर करना। उ० सेठजी ने सहायता करके हमारी काई छुडा दी। २ साफ करना। उ० पहले अपने मन की काई छुडा लो तो दूसरे को कहना।

काई-सा फट जाना–तितर-बितर हो जाना। उ० सिपाही के जाते ही भीड काई-सी फट गई।

काग़ज़ करना–१ दस्तावेज़ पर किसी सपत्ति का अधिकार लिखना। उ० पिछले रुपये मे मैंने उन्हे यह खेत काग़ज़ कर दिया। २ किसी की बात के सम्बन्ध मे लिखा-पढी करना। उ० कागज कर लो, ताकि वक्त के लिए सनद रहे।

कागज़ का घर होना–शीघ्र नष्ट हो जाने वाला होना। उ० यह कागज का घर नही है। एक बार खरीद लेंगे, तो २० वर्ष के लिए स्थिर हो जायेंगे।

कागज़ काला करना–व्यर्थ का लिखना। उ० क्या कागज़ काला कर रहे हो? तुम्हारा लिखा किस काम आएगा?

काग़ज़ की नाव–१ क्षणिक और अस्थायी वस्तु। उ० कागज़ की नाव कभी चलती नही, जुल्म की टहनी कभी फलती नही। यह तुम्हारा मकान क्या है, काग़ज़ की नाव है। २ धोखा।

काग़ज़ की नाव होना–दे० 'कागज़ का घर होना'।

काग़ज़ के घोड़े दौड़ाना–दे० 'कागज़ी घोड़े दौड़ाना'।

काग़ज़ खोलना–दोष दिखाना। उ० सरकार का काग़ज़ खोलने के लिए देश में कुछ दलो की आवश्यकता पड़ती ही है।

काग़ज़ पर चढ़ाना–१. लिख लेना। उ० आपका नाम काग़ज़ पर चढा लिया गया है। अब आप कल आएँ। २. पटवारी के खेत के अधिकार-सबधी कागज़ो मे लिखना। काग़ज़ पर चढाने के लिए पटवारी ५० रु० घूस माँगता है।

काग़ज़ी घोड़े दौड़ाना–खूब लिखा-पढी करना। किसी काम के लिए इधर-उधर पत्र आदि भेजना। उ० केवल कागज़ी घोडे दौडाने से काम नही चलेगा। जाकर मिला भी करो।

कागज़ी पहलवान–बहुत दुबला। उ० भई, तुम तो कागज़ी पहलवान बन रहे हो। कुछ खाया-पिया करो।

काग बोलना–शुभ सूचना या मेहमान का आना। उ० आज भय्या अवश्य आयेंगे। वो देखो, सुबह से ही काग बोल रहा है।

कागा उड़ाना–जीवन व्यर्थ नष्ट करना। उ० धिक मो कहँ मो वचन लगि, मो पति लह्यो विराग। भई वियोगिनि निज करनि, रहूँ उडावति काग।

कागा-रौल मचाना–शोर-गुल करना। उ० भाई, तुम लोग तो मछली बाजार से भी अधिक कागा-रौल मचा रहे हो।

काछ काछना–१ भेष बदलना। उ० बिना काछ काछे भिक्षा भी नही मिलती। २ धोती ऊपर करना। उ० काछ-काछ कर काम मे डट जाओ।

काजल की कोठरी–कलक का स्थान। उ०-काजल की कोठरी मे जाना मूर्खों का काम है।

काजल छालना–दे० 'काजल देना'।

काजल देना–आँखो मे काजल लगाना। उ० सोते समय काजल देना अच्छा है।

काजल लगना–कलक लगना, बदनामी होना। उ० जाय वह मुँह तुरत जल, जिसमे गा बुरी कजलिया लगे काजल।

काट खाना—१ हानि उठाना । उ० मैंने इस सौदे मे सैंकडो रुपये काट खाए । २. दे० 'काटने दौडना' । ३. अप्रिय लगना ।

काट खाने को दौड़ना—दे० 'काटने दौडना' ।

काट-छाँट करना—१ चुन कर कम करना । उ० अफसर ने काट-छाँट कर केवल बीस आदमियो को लिया । २ अडचन डालना । उ० उसके विवाह मे तुम काट-छाँट क्यो करते हो ?

काटने दौड़ना—१ क्रोध से आपे से बाहर होना । उ० उसकी ऐसी प्रकृति है कि यदि अपनी भी चीज़ माँगो तो काटने दौडता है । २ कष्टकर होना । उनके न रहने से वह मकान काटने दौडता है । ३ अप्रिय लगना ।

काट पर रहना—विरुद्ध रहना । उ० वह सदा ही मेरी काट पर रहता है ।

काट-फाँस करना—चुगली करना । झगडा लगाना । उ० नारद मुनि का नाम काट-फाँस करने वालो मे प्रथम आता है ।

काटी उँगली पर न मूतना—१ ऐसा काहिल और निर्दयी हो जाना कि अगर किसी की उँगली कटी हो तो उसे अच्छा होने को पेशाब करने के लिए कहे तो वह भी न करे । २. क्रूर होना ।

काटे खाना—हृदय को दुखित करना । क्या कहूँ, समय ऐसा आ गया कि ये कपड़े भी काटे खाते हैं ।

काटे न कटना—१ अत्यन्त सख्त होना । उ० यार यह लकडी तो काटे नही कटती है । २ विताए न बीतना । उ० क्लेश की राते काटे भी नही कटती है ।

काटो तो खून न होना—भय या अपमान जनक बात सुन कर सन्न रह जाना । उ० सिंह को देखते ही मैं तो ऐसा डर गया कि काटो तो खून न था ।

काठ-कबाड़—कूडा-कबाड । कूडा-करकट । उ० काठ-कबाड यही भेजना था ।

काठ का उल्लू—महामूर्ख । उ० अजीब काठ के उल्लू से पाला पडा है ।

काठ का कलेजा—निष्ठुर ।

काठ का घोडा—१. लँगडे की लकडी । उ० कल्लू का तो यही काठ का घोडा है । नही तो वह कही आ-जा भी नही सकता । २. मूर्ख । वह तो काठ का घोडा है ।

काठ की हाँडी—१ अस्थायी चीज । उ० रहिमन हाँडी काठ की चढे न दूजी बार । २ धोखा । आखिर फँस ही तो गया । काठ की हाँडी कब तक चल सकती है ।

काठ कोडा चलना—ज़ोर चलना, बाना चलना, हुक्म चलना ।

काठ चबाना—रूखा-सूखा खाना । उ० गरीब को क्या, वे तो बेचारा काठ चबा कर ज़िन्दगी बिता देते हैं ।

काठ मारना या मार जाना—काठ की तरह सूख जाना । सन्न हो जाना । उ० मेरी बात सुनते ही उन्हे काठ मार गया ।

काठ मे पाँव देना—स्वय बन्धन मे फँसना । विपत्ति मे पडना । उ० विवाह करके लोग काठ मे पाँव देते हैं ।

काठ मे पाँव पडना—मुश्किल मे पडना । उ० मेरे तो पाँव अच्छे काठ मे पडे । अब क्या करूँ और क्या न करूँ, कुछ समझ मे नही आता ।

काठ होना—१ सन्न हो जाना । उ० अपने भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर वह काठ हो गया । २ सूख कर दुर्बल होना । उ० अपनी प्रिया के वियोग मे वह काठ हो गया । ३. सूख कर कडा होना । उ० रोटी काठ हो गई है ।

कान आ लगना—कानो मे गुप्त सवाद कहना । उ० आज सुबह ही वह कान आ लगा । कोई बात ज़रूर है ।

कान उठाना—सुनने के लिए प्रस्तुत होना । उ० मैं तो कान उठाए हुए था, परन्तु उनकी आवाज़ ही धीमी थी । २ सतर्क होना । उ० शिकारियो को देखते ही खरगोश ने कान उठा लिए ।

कान उड जाना—१ कानो का सन्न हो जाना । बहुत शोरगुल सुनने से कानो का परीशान हो जाना । २ किसी की बात सुनते-सुनते परीशान हो जाना । उ० कहाँ तक सुनूँ, कान तो उड गए, तेरी सुनते-सुनते हेकायाते रोज़ ।

कान उमेठना—१ सावधान करना । उ० अध्यापक ने आज कान उमेठ कर कहा कि काम पूरा किया करो । २ न करने का प्रण करना । उ० आज हमने कान उमेठ लिये कि उससे नही बोलूँगा । ३ अपराध स्वीकार करना । उ० उसे मार कर मैंने भूल की, मैं कान उमेठता हूँ । ४ साधारण सज़ा देना । उ० इतने बड़े अपराधी के लिए केवल कान उमेठना काफ़ी था ।

कान ऐंठना—दे० 'कान उमेठना' ।

कान कतरना—१ सबसे एक कदम आगे रहना। उ० वह केवल १६ वर्ष का है, परन्तु बडे-बडे पहलवानो के कान कतरता है। २ धोखे मे डाल देना। उ० आज के जादूगर ने तो हम सबके कान कतर लिए।

कान करना—ध्यान से सुनना। उ० मूर्ख तो अच्छी बातो पर भी कान नही करते है।

कान का कच्चा होना—१ सुनी बात या शिकायत का जल्दी विश्वास करने वाला होना। उ० कान के कच्चे न बनो, नही तो इसी मे धोखा खा जाओगे। २ सुन कर कह देने वाला होना। उ० स्त्रियाँ कान की कच्ची होती हैं।

कान फटना—दे० 'कान कतरना'।

कान का पतला होना—'दे० कान का कच्चा होना'।

कान का परदा फटना—दे० 'कान फटना'।

कान का मैल निकलवाना—सुनने योग्य होना। (कटाक्ष)। उ० पहले कान का मैल निकलवा लो, तो आकर सुनना।

कान का हलका होना—दे० 'कान का कच्चा होना'।

कान के पीछे मारना—ध्यान न देना, बेकार समझना। दे० 'कान पर जूँ न रेंगना'।

कान खडे करना—होशियार होना। उ० सिपाही को देखते ही चोरो ने कान खडे किए और नौ दो ग्यारह हो गए।

कान खडे होना—ध्यान आना। होशियार होना। उ० इतनी हानि उठाने पर भी तुम्हारे कान न खडे हुए तो तुम जैसा मूर्ख ससार मे न मिलेगा।

कान खाना या खा जाना—१ कई बार कहना। उ० तुम तो यार कान खाते हो। कह तो दिया कि तुम्हारा काम हो जायगा। २. हल्ला करना। उ० चुप हो जाओ, क्यो कान खाते हो ? ३ बात के मारे परीशान करना। उ० वह तो आता है तो कान खा जाता है।

कान खा लेना—दे० 'कान खा जाना'।

कान खुजाने की फ़ुरसत न होना—बहुत व्यस्त रहना। उ० आजकल कार्यालय मे सीजन वर्क के कारण कान खुजाने की भी फ़ुरसत नही है।

कान खुलना या खुल जाना—भविष्य के लिए सावधान होना। उ० भला तुमने बतला तो दिया, अब ऐसा नहीं करूँगा। आज कान खुल गए।

कान खोलना या खोल देना—सावधान कर देना। उ० मैंने तो पहले ही तुम्हारा कान खोल दिया, पर तुमने नही माना तो मैं क्या करूँ ?

कान गरम करना—१ दबाव डालना। उ० मैंने जब उसका कान गरम किया तो वह मान गया २ सज़ा देना। उ० फिर गलती करोगे तो ज़रूर कान गरम करूँगा।

कान दबना—दबाव पडना। उ० कान दबेगा तो वह काम कर ही देगा।

कान चीरना—किसी तेज़ आवाज़ का कान को फाडे डालना।

कान ठनकना—किसी आने वाले सकट की आशका होना।

कान दबाना—१ हिचकिचाना, सहमना। उ० जब तुम्हारी समझ मे कोई गडबड नही है तो फिर मेरे पास आने मे क्यो कान दबाते हो ? २ दबाव डालना। ३. उसका कान किसी तरह दबाओ तो काम हो जाय।

कान देना—दे० 'कान करना'।

कान धरना—१. दे० 'कान देना'। २ दे० 'कान उमेठना'। ३ स्वीकार करना। उ० वह किसी की भी शिक्षा कान नही धरता।

कान न दिया जाना—१ शोर के कारण कुछ न सुना जाना। शोर आदि के कारण कान फटना। उ० मछली बाज़ार मे पहुँचने पर कान नही दिया जाता। २ कारुणिक बोली, दया के कारण न सुनना चाहना। उ० उस स्त्री के रुदन पर तो कान नही दिया जाता। ३ न सुना जाना। उ० अपना काम करो। उनकी बात तो ऐसी होती है कि कान नही दिया जाता।

कान न हिलना—चूं तक न करना। उ० वह तो इतना दब्बू है कि बारात मे उसका इतना अपमान हुआ, परन्तु उसका कान तक न हिला।

कान पकड़ कर निकाल देना—अपमान से निकालना। उ० आखिर तुम्हारा हक ही क्या है, यदि इस तरह नही माने तो कान पकड कर निकाल दूंगा।

कान पकडना—१ दे० 'कान उमेठना'। २. पश्चात्ताप के साथ कोई प्रण करना। उ० मैंने

तुम्हारी बात नही मानी और उससे अपना व्यवहार जारी रक्खा। आज फल देखकर अपना कान पकडता हूँ। ३. दूर भागना। उ० कुछ भी हो जाय, मैं तो झगडा करने से कान पकडता हूँ। ४. ज़बरदस्ती करना। उ० तुम्हारा मुझ पर अधिकार है, कान पकडकर करा सकते हो। ५ दवाव डालना।

कानपकड़ी छोरी—आज्ञाकारिणी। उ० तुम्हारी स्त्री तो कानपकडी छोरी है।

कान पकड़ना—किसी बात को बार-बार सुनते-सुनते ऊब जाना।

कान-पड़ी आवाज़ न सुनना—बडा शोर होना। उ० हावडा स्टेशन पर तो इजनो के मारे कान-पडी आवाज भी नही सुन सकते।

कान पर जूँ तक न रेंगना—ज़रा भी ध्यान न देना, न सुनना, ख्याल न करना। ३ हम भला कान क्या हिलाएँगे, कान पर रेंगती नही जूँ तक।

कान पर जूँ न रेंगना—१ ज़रा भी ध्यान न देना। उ० राम तो ऐसे सहनशील थे कि हज़ारो, कहो पर कान पर जूँ तक नही रेंगती थी। २ लापरवाह होना। उ० इतना सब कुछ हो गया, पर तुम्हारे कान पर जूँ तक नही रेंगी।

कान पर रखना—स्मरण रखना। उ० अध्यापक की बात को सर्वदा कान पर रक्खो।

कान पर से गोली जाना—किसी आपदा से बिल्कुल साफ बच जाना। उ० कदाचित् कोई भी घर यहाँ प्लेग से नही बच सका, परन्तु मेरे कान पर से गोली चली गई।

कान पर हाथ धरना—१ सहम जाना। उ० उस रात की भयकरता देखकर मैंने कान पर हाथ धर लिये। २ कहा न मानना। उ० जब मैंने कहा तो उसने कान पर हाथ धर लिए। ३ अजानकारी जानाना। उ० इस घटना को सुनते ही कान पर हाथ धर लिया।

कान पर हाथ रखना—दे० 'कान पर हाथ धरना'।

कान-पूँछ दबा कर चला जाना—चुपचाप चला जाना। उ० दुष्टो के समाज से कान-पूँछ दबा-कर चला जाना ही उचित है।

कान-पूँछ फटकारना—होशियार होना। उ० धीरे से जाओ कि उसे कान पूँछ फटकारने का मौक़ा तक न मिले।

कान फटना—तेज़ आवाज़ से परेशान होना। उ० प्रदर्शनी मे आतिशबाज़ी की आवाज़ से कान फटा जाता था।

कान फूंकना—१ शिष्य बनाना। मत्र देना। उ० मैंने आज उसका भी कान फूंक दिया। २ शिकायत करना। उ० अच्छा समय आया है, उनका कान फूंको और झगडा लग जायगा। ३ कान भरना।

कान फोड़ना—बहुत शोर करना।

कान बहरा करना—सुनी-अनसुनी करना।

कान भर जाना—१. सुनते-सुनते ऊब जाना। उ० तुम्हारी बकवादो से तो कान भर गया। उ० पिंदे वाइज़ सुनते-सुनते कान अपने भर गए; क्या एबादत को हमी है, सब फरिस्ते मर गए ?

कान भरना या भर देना—१ शिकायत करना। उ० उसके खिलाफ तुम मेरे कान न भरो।

कान मे उँगली डालना या देना—न सुनना, सुनने से इन्कार करना।

कान मे कान लगाना—चुप-चुप बात करना (किसी से)।

कान मे ठेंठी लगाना—१. न सुनाई देना। कान के छेद मे किसी चीज़ का कस जाना। उ० कान मे ठेठी लगी है कि नही सुनते हो ?

कान मे डाल देना—१ लापवाही से बता देना। २ कह देना। उ० इस चीज़ को ज़रा उनके कान मे भी डाल देना कि वे भी होशियार हो जायँ।

कान मे तेल डाल कर बैठना—१ सुनी-अनसुनी करना। उ० आज का ससार तो ऐसा है कि कान मे तेल डाल कर बैठ न जाय तो झगडा होते देर नही लगती। २ लापरवाही होना। उ० जब मेरे पास रुपये नही है तो मैं कैसे दे सकता हूँ, इसलिए कान मे तेल डाल कर बैठ गया।

कान मे पडना—सुनाई देना। उ० बात उसके कान मे पडेगी तो फैलते देर न लगेगी। २. ज्ञात हो जाना।

कान मे फूंकना—दे० 'कान भरना'।

मान मे भनक पडना—किसी के बारे मे उडती खबर मिलना।

कान मे रखना—दे० 'कान पर रखना'।

कान में रुई डाल कर बैठना—दे० कान मे तेल डाल कर बैठना'।

कान रखना–१ जानने के लिए उत्सुक रहना। २ सुनने के लिए उत्सुक रहना। उ० तुम तो हमारी प्रत्येक वात पर कान रखते हो।

कान रोपना–ध्यान मे सुनना। उ० क्या कान रोपते हो, यहाँ तुम्हारी वात नही हो रही है।

कान लबे होना–हर वात सुनने का इच्छुक होना, हर वात सुनने को उत्सुक होना।

कान लगाकर सुनना–प्रत्येक शब्द को ध्यान से सुनना। उ० कोई मजाक नही कर रहा हूँ, कान लगा कर सुनो नही तो पछताओगे।

कान लगाना–ध्यान देना। सुनने की कोशिश करना। उ० दूसरो की वातो पर क्यो कान लगाते हो?

कान से निकल जाना–सुनी वात भूल जाना। उ० हमारा मस्तिष्क ऐसा नही है कि सभी वाते कान से निकल जाया करें।

कान से लगना–१ धीरे से या गुप्त रूप से कहना। उ० कान से क्या लगते हो, जो कहना है, जोर से कहो। २ कान के पीछे घाव होना। ३ स्वीकार किया जाना। उ० हमारी वात उनके कान से नही लगती।

कान होना–लापरवाही के वाद होश होना, सचेत होना। उ० सैकडो रुपये खोकर तो कान हुए।

कानाफुस्की या कानाफूंसी करना–१ धीरे-धीरे वात करना। उ० पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक कानाफूंसी करती हैं। २ छिप-छिप कर आलोचना करना। उ० कानाफूंसी करने दो, सामने कहने की तो किसी की हिम्मत नही है।

कानावाती करना–चुपके-चुपके कान मे वात करना। उ० वे कानावाती कर रहे हैं, कोई वात अवश्य है।

कानी के व्याह को सौ जोखो होना–जहाँ कोई भी त्रुटि हो वहाँ वडा भय रहना। उ० अभी इस काम मे हाथ नही डालूंगा, क्योकि तुम जानते हो कि कानी के व्याह को सौ जोखो होते हैं।

कानी कौडी का न होना–अति मूल्यहीन होना। निरर्थक होना। उ० हमारे पास ये वस्तुएँ कानी कौडी की भी नहीं हैं, यदि तुम्हें आवश्यकता हो तो ले जाओ।

कानी कौड़ी न होना–वहुत गरीव होना। पास मे एक टका न होना। उ० उसके पास तो कानी कौडी भी नही है, तुम्हे उधार कहाँ से दे।

कानून छाँटना–तर्क-वितर्क करना। उ० यदि करना हो तो करो, कानून क्यो छाँटते हो?

कानून सिखाना या पढ़ाना–वेवकूफ वनाना, समझाना। उ० जाओ अपना रास्ता लो, मुझे कानून न पढाओ।

कानून वघारना–दे० 'कानून छाँटना'।

कानो-कान खवर न होना–विल्कुल पता न चलना। उ० देखना इस वात की लोगो को कानो-कान खवर न हो, नही तो वडा खतरा है।

कानो-कान फैलना–धीरे-धीरे खवर का एक के मुँह से दूसरे के कान और फिर दूसरे के मुँह से तीसरे के कान होते हुए फैलना। उ० भला यह वात छिपाने की है, अरे यह तो कानो-कान फैल जायगी।

कानो को हाथ लगाना–तौवा करना। उ० कानो को हाथ लगाता हूँ जो कभी भी तुम्हारे साथ जाऊँ।

कानो मे उँगली देना या दे लेना–जान-वूझकर न सुनना। उ० अपनी तो आप सुना लेते हैं और मेरी वारी आती है तो कानो मे उँगली दे लेते हैं।

कानो से काम लेना–इधर-उधर सुनकर हित-अनहित समझना। उ० उससे सवध करने मे कोई हर्ज नही है, लेकिन जरा कानों से काम ले लेना अच्छा होगा।

काफिया तग करना–वहुत परीशान करना। उ० क्यो मेरा काफिया तग कर रहे हो, तुम्हे कुछ मिल जायगा क्या?

काफिया तंग रहना–आजिज रहना, परीशान रहना। उ० तुम्हारी वकवादो से तो मेरा काफिया तग रहता है।

काफिया तंग होना या हो जाना–परीशान या आजिज होना। उ० तुम्हारा काफिया तग न हो गया तो मेरा नाम वदल देना।

काफिया मिलाना–१ मित्र वनाना। उ० यहाँ कुछ लोगो से काफिया मिला लो। २ तुकवदी करना। उ० मैं तो कुछ कर भी लेता हूँ, तुम तो काफिया मिलाना भी नहीं जानते।

काफ़ूर हो जाना–उड जाना, भग जाना। उ० मुझे देखते ही वह काफ़ूर हो गया।

काफ़ूर होना–चंपत होना। उ० वह ऐसा चालबाज़ है कि देखते ही देखते काफ़ूर हो गया।

क़ाबू पर चढ़ना–चालबाज़ी से अधिकार में आना। उ० यदि मेरे क़ाबू पर चढ गया तो कुछ ले ही लूँगा।

क़ाबू पर चढ़ाना–चालबाज़ी से अधिकार मे करना।

क़ाबू पाना–स्वत्व होना। अधिकार पाना। उ० किसी की सम्पत्ति पर काबू पाना आसान नहीं है।

क़ाबू में करना–अपने अधीन करना। उ० केवल थोडा-सा चिट्ठा देकर काबू मे कर लिया, अब जो चाहूँ, करा सकता हूँ।

क़ाबू से बाहर होना–वश का न होना, आपे मे न होना। उ० इस पुस्तक को दो दिन मे पढना अपने काबू से बाहर है।

काम अटकना–काम मे बाधा पडना, काम रुकना। उ० केवल कुछ ही रुपयो के लिए मेरा काम अटका हुआ है।

काम आख़िर करना–दे० 'काम तमाम करना'।

काम आखिर होना–दे० 'काम तमाम होना'।

काम आना–१ वीरगति प्राप्त करना। मरना। उ० पिछले युद्ध मे असंख्य वीर काम आए। २ उपयोग करना। उ० इस साल तुम्हारी बहुत सी किताबें मेरे काम आ रही हैं। ३ चल जाना। उ० यदि हमारी चाल काम आ गई, तो अवश्य कुछ मिल जाएगा।

काम उठाना–काम प्रारभ करना।

काम करना–१ प्रभाव डालना। उ० दवा ने कुछ भी काम नही किया। २ अपना कर्त्तव्य पूरा करना। उ० उसने केवल दो ही प्रश्न रटे थे, परन्तु वे काम कर गए। ३ अपना मतलब निकालना। उ० ससार अपने काम करने मे व्यस्त है।

काम का–लाभदायक। उ० इस अवसर पर तुम्हारा मतव्य वडे काम का है। यह आदमी है बडे काम का।

काम के सिर रहना–दे० 'काम के सिर होना'।

काम के सिर होना–कार्यरत होना। काम मे व्यस्त होना। उ० इस वक्त तो वह काम के सिर है, उसका कही जाना सभव नही।

काम खुलना–काम शुरू होना। उ० उनका काम खुले तो मुझे भी रोजी मिले।

काम खोलना–काम आरंभ करना। उ० अभी नया काम मत खोलो, लोगो को घाटा लग रहा है।

काम गिर जाना–व्यवसाय या काम-धाम मदा पडना।

काम चमकना–व्यापार सफल होना, काम मे उन्नति होना। उ० आजकल बिडला का काम खूब चमका हुआ है।

काम चलना–१ निर्वाह होना। उ० भारतीय कृषको का काम कर्ज़ से ही चलता है। २ मद गति से कार्य बढना। उ० कन्ट्रोल के कारण व्यापार क्या है, किसी तरह से काम चल रहा है। ३ काम बन जाना। उ० हमारा काम सौ रुपये से चल जाएगा। काम चल गया तो ४-६ महीने मे कर्ज चुका दूंगा।

काम चलाना–किसी तरह से काम निकालना। उ० केवल १०० रु० तो पाता हूँ और पांच आदमियो का व्यय, किसी तरह काम चलाता हूँ।

कामचोर होना–दिल से काम न करना।

काम तमाम करना या कर देना–१ खतम करना। उ० मकान का काम तमाम भी करो। २ मार डालना। उ० बदमाशो ने उस बुड्ढे का काम तमाम कर दिया।

काम तमाम होना–१ कार्य का समाप्त हो जाना। उ० आज का काम किसी तरह तमाम हुआ, अब आगे देखना है। २ मर जाना। उ० आज के झगडे मे एक निर्दोष का ही काम तमाम हो गया।

काम देखना–१ गतिमान या होते हुए कार्य पर निगाह रखना। उ० अरे नौकरो का क्या भरोसा, काम देखना आवश्यक है। २ काम से सरोकार रखना। उ० मुझे ससार से क्या तात्पर्य, अपना काम देखना है?

काम देना–उपयोग मे आ जाना। उ० प्रत्येक वस्तु का सग्रह अच्छा ही है, कभी काम ही देगा। इस चारपाई ने बड़ा काम दिया।

काम निकलना या निकल जाना–काम चलना, आवश्यकता की पूर्ति होना। उ० केवल पाँच रुपया है, यदि काम निकल जाये तो ले जाओ।

काम निकालना–दे० 'काम चलाना'। २ अपनी स्वार्थसिद्धि करना। उ० सकुचित दृष्टि वाले केवल काम निकालना जानते हैं।

काम पड़ना—१ ज़रूरत आना। उ० अभी चुप रहो, काम पड़ने पर देखा जाएगा। २. सम्बन्ध हो जाना। उ० उसका क्या दोष है ? उसका काम ही ऐसे आदमी से पड़ा है कि कुछ कर नही पाता।

काम पर तुल जाना—दे० 'बात पर तुल जाना'।

काम बँटाना—काम मे सहयोग देना। उ० थोड़ा-थोड़ा काम बँटा लो तो जल्दी हो जाय।

काम बढ़ाना—१ व्यापार बढाना। उ० अब तो धीरे-धीरे मैंने काम बढा लिया है। २ कार्य समाप्त करना। उ० तुम्हारे पास मैं काम बढा कर शाम को आऊँगा।

काम बनना—अपना मतलब पूरा होना। काम या बात का पूरा होना। उ० तुम तो यही समझते हो कि हमारा काम बन गया, बस सब हो गया।

काम बनाना—१ सहयोग प्रदान करना। उ० कल की पचायत मे केवल उसने काम बनाया नही तो मैं हार जाता। २ काम बिगाड़ना (व्यग्य)। उ० आपने तो खूब काम बनाया। यदि यही दशा रही तो रेढ़ मार देंगे।

काम बना रहना—काम उन्नति पर रहना, तरक्की करते रहना। उ० किसी का काम सदा नही बना रहता।

काम बिगाड़ना या बिगड़ जाना—१ कारबार मे गड़बड़ी पड़ना। रोज़गार खराब हो जाना। उ० केवल कर्ज़ देने मे ही उसका काम बिगड़ गया। २ बात या कार्य का बिगड़ जाना। उ० तुम्हारे न रहने से ही काम बिगड़ गया।

काम भुगतना—समाप्त होना। उ० मेरा काम भुगत गया।

काम भुगताना या भुगता देना—अत करना, काम खत्म करना। उ० मैंने उसका काम भुगता दिया।

काम मे आना—व्यवहृत होना। प्रयोग मे आना। उ० हमे तो कम आशा है कि कभी यह भी काम मे आयेगा।

काम मे नाधना या नाधे रहना—काम मे लगाना या लगाये रहना। उ० वह अपने नौकर को रात-दिन काम मे नाधे रहता है।

काम मे काम निकालना—एक पथ से दो काम करना।

काम में लाना—प्रयोग करना। उ० घी को काम में लाओ, तो असली-नकली का पता चले।

काम रखना—१ कठिन कार्य होना। उ० परीक्षा पास करना भी काम रखना है। २ वास्ता रखना। उ० केवल खाने से काम न रक्खो, कमाने पर भी ध्यान दो।

काम लगना—काम शुरू होना। उ० इस कोश पर काम लग गया है। २. नौकरी पाना। उ० जीवन-यापन के लिए काम लग गया।

काम लगा रहना—काम मे लीन रहना। उ० बड़े आदमियो का हर समय काम लगा ही रहता है। २ काम आता रहना। उ० वहाँ जाने की फुरसत नही लगती, कोई न कोई काम लगा रहता है।

काम लेना—१ काम कराना। उ० इन आदमियो से काम ले लो, नहीं तो फिर ये चले जाएँगे। २ प्रयोग मे लाना। उ० तुम्हारी साइकिल से काम ले रहा हूँ।

काम सँवारना—बिगड़ते काम को बनाना।

काम समेटना—काम या व्यापार समाप्त करना। इस काम को जल्द समेट लो तो कुछ और किया जाय।

काम से काम रखना—अपने काम से काम रखना। दूसरे से व्यर्थ से सम्बन्ध न करना। उ० संसार मे बहुत कम लोग ऐसे हैं जो केवल अपने काम से काम रखते हैं।

काम से जाता रहना—१ नौकरी से छूट जाना। उ० कुछ ही दिनो मे वह काम से जाता रहेगा। २ काम का न होना। बेकार होना। उ० हमारा बैल अब काम से जाता रहा।

काम होना—१ आवश्यकता की पूर्ति होना। उ० आज के मेहमानो के लिए तो घर के ही दूध से काम हो गया। २ बहुत कष्ट होना। उ० मेरा तो काम हो रहा है और आपको हँसने से फुरसत नही है। ३ मृत्यु होना। उ० रिक्शे से मोटर के लड़ते ही दो आदमियो का काम हो गया।

कायथ की खोपड़ी—चालबाज़ और धूर्त मनुष्य। उ० तुम तो कायथ की खोपड़ी हो।

क़ायम उठाना या उठा देना—शतरज के खेल मे कोई निर्णय न होना। उ० आज का खेल क़ायम ही उठा दिया गया। [शतरज खेलने वालो की बोली मे प्रयुक्त]

क़ायल करना या कर देना—१ तग करना। उ० तुमने तो मुझे क़ायल कर दिया। २. किसी तरह से बात मनवाना। उ० तुम्हारी दलीलो ने तो उसे क़ायल कर दिया।

क़ायल होना या हो जाना–१ लज्जित होना। २. आजिज होना, तग होना। उ० मैं तो तुम्हारी शरारत से क़ायल हो गया हूँ। ३. मान लेना। ठीक समझना। उ० तुम्हारे तर्क से मुझे कायल होना पडा।

कायाकल्प करना–पूरी तरह बदल देना।

कायाकल्प होना–पूरी तरह बदल जाना, कुछ-से-कुछ हो जाना।

काया पलट जाना–बिल्कुल परिवर्तित हो जाना। उ० जब से नौकरी मिली, तुम्हारी काया पलट गई।

काया पलट देना–स्वरूप मे परिवर्तन कर देना। बिल्कुल बदल देना। उ० इस औषधि ने तुम्हारी काया पलट दी।

कारखाना फैलाना–सामान अस्त-व्यस्त रखना। उ० क्या हर समय कारखाना फैलाये रहते हो। कभी तो ढग से रहा करो।

कारख़ाना लगा रहना–लोगो का जमा-कड़ा लगा रहना। उ० यहाँ दिन भर कारखाना लगा रहता है, पढ़ूँ क्या खाक ?

कारगर होना–लह जाना, मुफीद होना। उ० यह दवा कारगर हुई तो ठीक होते देर नही लगेगी। हाथ तो हलका पड़ा था यार की शमशीर का, जख्म पर किस्मत से मेरे कारगर अच्छा हुआ।

कारबंद होना–काम पर लगा रहना, फ़र्ज़ अदा करना।

कारस्तानी करना–शरारत करना। चालाकी करना।

कारूँ का ख़ज़ाना–कुबेर का खज़ाना, बहुत अधिक धन।

कारूरा मिलना–घनिष्ठ मित्रता होना। उ० मुझसे तो किसी का कारूरा ही नही मिलता।

कालकर जाना–मर जाना।

काल काटना–कठिनाई से समय बिताना। उ० जीना क्या है, काल काट रहा हूँ।

काल के गाल में जाना–यमलोक जाना। मर जाना। उ० देखते ही देखते वह काल के गाल में चला गला।

कालक्षेप करना–१ देर करना। उ० जब जाना ही है तो कालक्षेप क्यो करते हो ? २. समय बिताना। उ० जब भगवान ने जन्म दे दिया तो किसी तरह कालक्षेप करना ही है।

कालचक्र में पड़ना–विपत्ति मे पडना। उ० वह वेचारा दो साल से कालचक्र मे पडा है, उसकी सहायता करनी चाहिये।

काल पाकर–अवसर देख कर। उ० काल पाकर मैं तुम्हारे घर आऊँगा।

काल सामने नाचना–मरणासन्न होना।

काला करइत–दे० 'काला नाग'।

काला करना–कलक लगाना, दाग़ लगाना।

काला चोर–चोरो का सरदार, पक्का चोर। उ० यह काला चोर हमारे पडोस मे कहाँ से आ गया ?

काला नाग–१ साँप की तरह विषधर। उ० हमी मे से कुछ लोग काले नाग भी तो हैं, जो रह कर काटते हैं। २ बहुत काला। उ० वह तो काला नाग है।

काला पहाड़–१ भयानक और न कटने योग्य। उ० वियोग के क्षण काले पहाड हो जाते हैं। २ बहुत मोटा, बडा और काला आदमी। उ० उस काले पहाड से कौन शादी करेगा ?

काला बाजार–चोर बाज़ार।

काला बाल जानना–दे० 'काला बाल समझना'। उ० चोर कब उसका ज़ोर माने है। काला बाल उसको अपना जाने है।

काला बाल समझना–अति क्षुद्र या तुच्छ समझना। उ० यदि सम्मान चाहो तो किसी को भी काला बाल न समझो।

काला भुजंग–कौवे की तरह काला। उ० विषुवतीय प्रदेश के लोग काले भुजग होते हैं।

काला मुँह करना–१. अपकृत्य करना। उ० काला मुँह करने से मर जाना अच्छा है। २. कलकित होना। उ० तुम्हारे साथ रह कर मुझे भी काला मुँह करना पडा। ३ बुरे का दूर हटना। उ० चलो हटो यहाँ से, अपना मुँह काला करो। ४. झझट दूर करना। उ० अब तो हिसाब हो गया। मुँह काला भी करो। ५ दूर हटना (मजाक)। उ० अब तो काला मुँह करो। ६ अनुचित संभोग करना। उ० उस लडकी के साथ तुमने काला मुँह किया।

काला मुँह होना–दोष लगना, कलक लगना। उ० शायद हमने चौथ का चाँद देखा है कि व्यर्थ के लिये मुँह काला हुआ।

कालिख का टीका लगाना–दे० 'कालिख लगाना'।

कालिख के हाथ लगाना—किसी को बदनाम करना। उ० उस पर कालिख के हाथ न लगाओ।

कालिख लगना—अपकीर्ति पाना। बेइज्जती होना। उ० तुम्हारी इसी आदत के कारण कालिख लगी।

कालिख लगाना—१ कलंकित करना। उ० समझ-बूझकर तो कालिख लगाओ, ज़बान मुझे भी है। २ बेइज्जती का कारण होना। उ० इसी काम ने तुम्हारे मुंह मे कालिख लगाया।

काली करतूत—कुकर्म।

काली-पीली आँखें करना—गुस्सा करना।

काली माई खेलने लगना—भय से काँपना। उ० कोतवाल के देखते ही चोर काली माई खेलने लगा।

काली हाँडी सिर पर रखना—कलक लेना। उ० जान-बूझकर क्यो काली हाँडी सिर पर रखते हो ? उस बदज़ात से विवाह करके काली हाँडी सिर पर मत रक्खो।

काले कोसो—अधिक दूर, बहुत दूर। उ० अरे जाना कठिन है, कोई काले कोसो तो नही है ?

काले कौवे खाना—दीर्घायु होना। उ० वह तो काले कौवे खा चुका है, ज्ञात होता है कि मरेगा ही नहीं।

काले तिल चबाना—१ पराधीन होना। उ० मैंने काले तिल नही चबाये हैं कि तुम्हारे लिए एक पैर पर खड़ा रहूँ। २ कष्ट मे रहना। उ० मैं तो काले तिल ही चबाया करता हूँ।

काले पानी भेजना—जलावतन करना। आजीवन कारावास का दड देकर अडमान द्वीप भेजना।

कावा काटना—१. वक्रता से चलना। उ० आज के खेल मे मैंने खूब कावा काटा। २ आँख की ओट बचा कर भाग जाना। उ० बच्चे कावा काट कर खेलने निकल ही जाते हैं।

काशी करवट लेना—१ काशी मे गला कटवा कर मरना। २ कठिन दुःख सहना। उ० क्या इस छोटे से काम के लिये काशी करवट ले रहे हो ?

कास में तैरना—दे० 'काँस मे तैरना'।

कास मे फँसना—दे० 'काँस मे फँसना'।

किचकिची बाँधना—१ क्रोध से दाँत पीसना। उ० अपमान की बात सुनकर वह किचकिची बाँधने लगा। २ दाँत पर दाँत दबाना। उ० सुपारी को किचकिची बाँध कर मैं तोड सकता हूँ।

कितने पानी मे होना—स्थिति कैसी होना, क्या योग्यता होना।

किताब का कीडा—१ हर घड़ी किताब लेकर पढने वाला। उ० तुम तो किताब के कीडे हो। २ केवल लिखी हुई बात जानने वाला। उ० केवल किताब का कीडा होना ही अच्छा नही है।

किताब चाटना—१ प्रकाड विद्वान् होना। उ० ससार मे कम ही लोग किताबें चाट कर बैठे हैं। २ किताब को बिलकुल कठस्थ कर जाना। उ० बिना समझे किताब चाटना व्यर्थ है।

किताबी कीड़ा—दे० 'किताब का कीडा'।

किताबी चेहरा—अति सुन्दर (कविता मे वर्णित सुन्दरता के समान) चेहरा। उ० लता को तो वास्तव मे किताबी चेहरा मिला है।

किताबी ज्ञान—ऐसा ज्ञान जो प्रयोग, अनुभव या जीवन से न मिल कर किताबो से मिला हो। उ० उसके पास किताबी ज्ञान है, दुनियावी मामलो को वह क्या जाने ?

किधर का चाँद निकलना—असभव बात होना। उ० किधर का चाँद निकला कि आपने दर्शन दिया।

किधर जाना क्या करना—कठिन समस्याओ मे पडना। कुछ समझ मे न आना। उ० बहन की शादी ठीक नही होती, और कर्ज़ भी पड़ा है, किधर जाऊँ क्या करूँ।

किनारा करना या किनाराकशी करना या किनारा कसना—त्याग देना, विमुख होना, दूर हटना, अलग हो जाना। उ० यहाँ से किसी तरह किनारा कसो, नही तो ख़ैर नही ?

किनारा काटना—दगा देना। उ० तुम्हारे ही सहारे हूँ, इस समय कही किनारा न काट जाना।

किनारे करना—दूर करना। उ० मोहन को किनारे करो, मैं इसे नही देखना चाहता।

किनारे न जाना—करीब न जाना। उ० मैं तो बुरे काम के किनारे भी नही जाता।

किनारे न लगना—पास न आना। उ० काम पडेगा तो कोई भी किनारे न लगेगा और आज खाने के लिये सभी तैयार हैं।

किनारे बैठना—अलग हो जाना। उ० तुम किनारे बैठो, तुम्हारी कोई ज़रूरत नही है।

किनारे लगना या लग जाना–समाप्त होना। मर जाना। उ० वह बुड्ढा तो किनारे लगा, अब बुढिया भी मर जाती तो जायदाद मिल जाती। किसी तरह यह काम किनारे लग जाता तो अच्छा होता।

किनारे लगाना–समाप्त करना। उ० बिना इस काम को किनारे लगाये कही मत जाना।

किनारे होना–१ अवकाश पाना। उ० बहन की शादी करके हम किनारे हो गये। अब घर का सारा भार तुम्हारे ऊपर है। २ पार लगाना, उत्तीर्ण होना। उ० उसका किनारे होना सभव नही ज्ञात होता।

किरकिरा हो जाना–काम खराब हो जाना। मज़ा बिगड जाना। उ० तुम्हारे बिना यात्रा का आनन्द किरकिरा हो जायगा।

किराये का टट्टू–भाडे का आदमी। उ० यदि टट्टू किराये का ही लेना है, तो मित्र से क्यो लिया जाय। कही से भी ले लेंगे।

किराना उतारना–किराया दे देना। उ० आज मैंने सब किराया उतार दिया।

किलकारी मारना–१ बहुत प्रसन्न होना। उ० हमारे ऊपर आफत आई है तो आप किलकारी मार रहे हैं। २. बन्दरो या लडको का खेलना।

क़िला टूटना या टूट जाना–१. कठिन काम आसान होना। उ० अगर तुम थोडी भी मेहनत कर दोगे तो किला टूट जायगा। २. बहुत कठिन काम हो जाना। उ० तुम्हारे आते ही किला टूट गया।

किल्ली ऐंठना–उपाय करना। उ० मैं ऐसी किल्ली ऐंठूंगा कि तुम सब एक दिन मे ठीक हो जाओगे।

किल्ली घुमाना–दे० 'किल्ली ऐंठना'।

किवाड तोड-तोड कर खाना–कष्ट से दिन व्यतीत करना। उ० भाई मेरा हाल न पूछिये, आजकल मैं किवाड तोड-तोड कर खा रहा हूँ।

किवाड देना–दरवाज़ा बद करना।

किवाड लगाना–दरवाज़ा बद करना। उ० किवाड लगा दो, बाहर दिखाई दे रहा है।

किस का मुंह है–किसकी हिम्मत है।

किस खेत का बथुआ–किसी गिनती मे नही, तुच्छ, व्यर्थ। उ० वह किस खेत का बथुआ है? तुम किस खेत के बथुए हो कि दावत मे बुलाऊँ?

किस खेत की मूली–दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस गली के–दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस गली के भड़ुवे–दे० 'किस गली के'।

किस घाट लगना–न जाने क्या हाल होना, बुरी हालत होना।

किस बाग का बथुआ–दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस बाग की मूली–दे० 'किस खेत का बथुआ'।

किस मर्ज़ की दवा–किस काम के लिए। उ० नौकर किस मर्ज़ की दवा है, यदि तुम्ही को सारा काम करना है?

किस मुँह से–क्या खाकर, किस हैसियत से। उ० किस मुँह से मेरा मकान खरीदोगे?

किसी का चमकना–किसी का दबदबा या रोब होना। उ० आजकल उनकी खूब चमकी हुई है।

किसी की चलना–किसी की इज्ज़त होना। रोब होना। दबदबा होना। उ० आजकल उसकी गाँव मे खूब चली हुई है।

किसी की थाप देना–सौगध देना या खिलाना। उ० मैं ईश्वर की थाप देता हूँ, बताओ क्या बात थी?

किसी की धूल उड़ाना–किसी की बदनामी करना। उ० उसकी धूल मत उडाओ। बेचारा बडा सीधा आदमी है।

किसी के नीचे बैठना–किसी को बिना विवाह किए पति रूप मे स्वीकार करना।

किसी के बल पर कूदना–किसी के सहारे की आशा पर बढ-बढ कर बातें करना। उ० बेकार उनके बल पर कूद रहे हो। उनसे तुम्हारा कुछ भी भला नही हो सकता।

किसी के सिर होना–१. दे० 'पीछे पडना'। २ झगडा कर बैठना। उ० वह तो सीधा है, उसके सिर न हो। ३ परीशान करना। उ० हमारे सिर न हो, चले जाओ।

किसी के हक़ मे कांटे बोना–किसी की बुराई करना या बुराई का सामना करना। उ० किसी के हक मे कांटे बोने से तुम्हारा क्या लाभ होता है?

किसी तरफ होना–किसी की ओर होना। उ० मैं इस झगडे मे किसी तरफ होना पसन्द नही करता।

क़िसी पर जहर खाना—किसी के कारण आत्म-हत्या पर उतारू होना। उ० किसी पर जहर खाना सरासर मूर्खता है। प्राण अपना जायगा, उसका क्या होगा ?

किसी पर धव्वा रखना—किसी की वदनामी करना, किसी पर दोष लगाना। उ० किसी की इज्ज़त खराव करना। उ० वे तो चुप रह गए, पर मुझ पर धव्वा रक्खोगे तो तुम्हारी खैर नही।

क़िस्तान होना—विधर्मी होना। उ० उसका वेटा विलायत जाकर किस्तान हो गया। तुम तो किस्तान हो, मेरा खाना न छूना।

क़िस्मत उलटना—अभाग्य आना, कु-अवसर आना, काम मे सफलता न मिलना। उ० क्या करूँ, मेरी किस्मत ही उलट गई, नही तो सव को दिखा दिये होता।

क़िस्मत का धनी—भाग्य वाला।

क़िस्मत का लिखा पूरा होना—भाग्य का लिखा (भला या वुरा) मिलना। उ० आपकी किस्मत का लिखा पूरा हुआ, इसमे किसी का दोष न दीजिये।

क़िस्मत खुलना या चमकना—१ नाम फैलना। उ० आपकी किस्मत चमक गई, अव आपका क्या पूछना है ? २ दे० 'किस्मत जागना'।

किस्मत जागना—सुअवसर आना, भाग्य खुलना। उ० अव आपकी किस्मत जाग गई, मौज कीजिये।

क़िस्मत पलटना—भाग्य फिरना। भाग्य का अच्छे से वुरा या वुरे से अच्छा होना। उ० भाई किस्मत पलटने मे किसी का दोष नही है। वह तो पूर्णत. ईश्वराधीन है।

क़िस्मत फिरना—दे० 'क़िस्मत पलटना'।

क़िस्मत फूटना—वुरा समय आना। अभागा होना, उ० भाई मेरी किस्मत ही फूट गई, तो अव सव लोग क्यो न हँसेंगे।

क़िस्मत विगड़ना—दे० 'किस्मत उलटना'।

क़िस्मत लड़ना या अनुकूल होना—भाग्य खुलना। उ० जिसकी किस्मत लड़ेगी, वही उस पद पर होगा। किस्मत लड गई तो उस पूरी ज़ायदाद का मालिक मैं होऊँगा ?

क़िस्मत सो जाना—दुर्भाग्य होना।

क़िस्सा उठाना—१ झगडा खडा करना। उ० क्यो वेकार का किस्सा उठा रहे हो। तुम कमज़ोर हो, मार खा जाओगे। २. कोई लम्वी वात शुरू करना। उ० फिर तुमने किस्सा उठाया। अरे! चुप भी रहो।

क़िस्सा कोताह करना—सक्षेप मे कहना। उ० भई किस्सा कोताह करो, मुझे इतनी फुरसत नही है।

क़िस्सा खड़ा करना—दे० 'किस्सा उठाना'।

क़िस्सा खतम करना—१ झगडा समाप्त करना। उ० जाने भी दो, किस्सा खतम करो, जो हुआ सो हुआ। २. मार डालना। उ० पहले उस वदमाश का क़िस्सा खतम करो, फिर तो काम वना-वनाया है।

क़िस्सा खतम होना—१ झगडा मिटना। उ० भाई क़िस्सा खतम हो गया, अव आप लोग मेल से रहिये। २ मर जाना। आज उस वेचारे का भी किस्सा खतम हो गया। ३ किसी भी चीज़ या काम का समाप्त होना।

क़िस्सा चुकना—दे० 'किस्सा खतम होना'।

क़िस्सा चुकाना—दे० 'किस्सा कतम करना'।

क़िस्सा तमाम करना—दे० 'किस्सा खतम करना'।

किस्सा तमाम होना—दे० 'किस्सा खतम होना'।

क़िस्सा पाक करना—दे० 'किस्सा खतम करना'।

क़िस्सा पाक होना—दे० 'किस्सा खतम होना'।

क़िस्सा मोल लेना—झगडा सिर पर लेना। उ० भइया, काहे को किस्सा मोल ले रहे हो, इससे तुम्हारा क्या लाभ होगा ?

कीचड़ उछालना—वदनाम करना।

कीचड़ मे पड़ना—दुख मे पडना। उ० ससार मे वही मित्र है, जो कीचड़ मे पड़ने पर सहायता करे।

कीचड़ मे फँसना—दे० 'कीचड़ मे पडना'।

कीड़े काटना—१ जी उकताना। उ० यार पाँच ही मिनट में तुम्हें कीड़े काटने लगे, आखिर कहाँ जाना है ? २ शरारत करना, शरारत करने की इच्छा होना। उ० फिर तुम्हे कीड़े काटने लगे।

कीडे पड़ना—१ वुरा फल मिलना। उ० अगर नीच कर्म करोगे, तो मरते वक्त कीड़े पडेंगे। २ सड जाना।

कीड़ा कुलवुलाना—दे० 'कीड़े काटना'।

क़ीमत ठहराना—दाम ठीक करना। उ० पहले क़ीमत ठहरा लो, फिर रुपये देना।

कील-कांटे से दुरुस्त होना—खूब तैयार होना। उ० कील-कांटे से दुरुस्त होकर वहाँ जाना। शायद लडाई-झगडा भी करना पडे।

कील घुमाना—मोडना, प्रेरित करना।

कुंजरो नरो—दुविधा या सदेह। [द्रोण को मारने के लिये युधिष्ठिर द्वारा कहे गये वाक्य पर यह आधारित है।] उ० स्वारथ औ परमारथ हूँ को नहि कुजरो नरो। सुनियत सेतु पयोधि पषाननि करिकिषि कटक तरो।

कुजी हाथ में होना—वश मे होना। उ० साहब की कुजी तो मेरे हाथ मे ही है, तुम बेखटके रहो।

कुडा ले आना—१ सौगात ले आना। २. धन ले आना। उ० कुडा लेकर नही आए हो कि खाना दूं।

कुडे जैसा मुँह फुलाना—बहुत नाराज़ होना। उ० छोटी बात पर क्या कुडे जैसा मुँह फुला रहे हैं।

कुंदन-सा चमकना—सोने की तरह चमकना। उ० भाई सचमुच वह बडा भारी महात्मा है, उसका शरीर कुदन-सा दमकता है।

कुआँ खोदना—१ कठिन परिश्रम करके जीवन व्यतीत करना। उ० भाई मेरा आप क्या लिए हैं, मैं कुआँ खोद कर अपना जीवन बिताता हूँ। २ दूसरे को गिराने के लिए कुछ करना। उ० मैंने आपका क्या बिगाडा है कि मेरे लिए कुआँ खोद रहे हैं।

कुआँ चलाना—खेत को कुएँ के पानी से सीचना। उ० इस साल सबको कुआँ चलाना पड़ेगा। ताल-पोखरो का कोई आसरा नही।

कुआँ झंकाना—दुःख देना, परीशान करना। उ० मुझे क्यो कुआँ झंकाते हो? मुझ गरीब को कष्ट देकर क्या पाओगे?

कुआँ झाँकना—किसी काम के लिये इधर-उधर भाग-दौड करना। उ० मुझे इसके लिए बहुत कुएँ झाँकने पडे हैं?

कुआँ-पोखर ढूंढ़ना—बहुत खोजना। उ० तुम कहाँ थे? सुबह से कुआँ-पोखर ढूंढ रहा था।

कुएँ का मेढक या बेंग होना—बाहर भीतर न आना-जाना।

कुएँ की मिट्टी कुएँ मे डालना—जहाँ की कमाई हो, वही खतम होना। उ० मित्र न पूछिये, ऐसे फेर मे पडा हूँ कि कुएँ की मिट्टी कुएँ मे लग जाती है। इस खेती से एक पैसे का भी लाभ नही है।

कुएँ मे गिरना—कष्ट मे फँसना। उ० भाई तुम जान-बूझ कर कुएँ मे गिर रहे हो।

कुएँ मे फेंकना या ढकेलना—१ जाने देना। उ० भाई इस समय इस बात को कुएँ मे फेंको, फिर बाद मे देखा जायगा। २ बर्बाद करना। ३ क्यो इसे कुएँ मे फेंकते हो?

कुएँ मे डालना—जन्म बेकार करना। उ० उस वर से विवाह कर लडकी को कुएँ मे न डालो। उसका नाम उस स्कूल मे लिखा कर कुएँ मे न डालो।

कुएँ मे बाँस डालना—बहुत तलाश करना। उ० कुएँ मे बाँस डाला, फिर भी उसका पता न चला, न चला।

कुएँ मे भाँग पड़ना—सभी लोगो का नशे मे चूर होना, सबका पागल या मूर्ख होना। उ० तुम मूर्ख और तुम्हारे तीनो साथी मूर्ख। ऐसा लग रहा है कि तुम्हारे यहाँ कुएँ मे भाँग पडी है।

कुएँ मे से बोलना—बहुत धीरे-धीरे बोलना। साफ न बोलना। उ० क्या कुएँ मे से बोल रहे हो? जरा जोर से बोलो कि सब लोग सुन सकें।

कुएँ से प्यासे आना—जहाँ किसी चीज़ की आशा हो, वहाँ से भी निराश आना। उ० ऐसे बडे आदमी के यहाँ से निराश लौटना कुएँ से प्यासे आना है।

कुछ ऐसा-वैसा—१ मामूली, ओछा। उसे कुछ ऐसा-वैसा न समझिये। बिहार का सबसे बडा लेखक है। २ गडबड। उ० सावधान रहना वह कुछ ऐसा-वैसा जरूर करेगा।

कुछ कहना—भला-बुरा कहना। उ० तुम ऐसा काम करते हो, जिसमे कुछ कहना ही पडे।

कुछ का कुछ—उलटा। उ० आप तो कुछ का कुछ समझ जाते हैं।

कुछ न गाँठना या गिनना या समझना—तुच्छ समझना।

कुछ न चलना—१ वश न चलना। उ० बहुत कोशिश की, पर इस झगडे मे मेरा कुछ न चला। २ कोई उपाय न लगना। उ० कुछ भी न चलने की उम्मीद हो तो मैं लौट जाऊं।

कुछ लगाना—अपने को बड़ा समझना। उ० न मालूम किस बात पर वह अपने को कुछ लगाता है।

कुछ सुनना—भला-बुरा या गाली सुनना। उ० कुछ सुन के ही हटोगे क्या ?

कुछ से कुछ हो जाना—बहुत बड़ा परिवर्तन हो जाना। उ० उस मास्टर ने बच्चे को दो ही महीने पढाया, पर वह बच्चा कुछ से कुछ हो गया।

कुछ होके रहना—१ किसी लायक हो जाना। उ० परिश्रम कर रहा है तो कुछ होके रहेगा। २ विशेष बात। उ० इनका झगडा यो ही चलता रहा, तो कुछ होके रहेगा।

कुछ हो रहना—दे० 'कुछ होके रहना'।

कुट्टी करना—दोस्ती खतम करना। उ० कल मैंने उनसे कुट्टी कर ली।

कुठला होना—बहुत मोटा होना। उ० आजकल आप हराम का खाकर कुठला हो रहे हैं।

कुठाँव मारना—१ शरीर के नाजुक जगहो पर मारना। उ० तुम खेल मे लडको को कुठाँव मार दिया करते हो, यह ठीक नही है। २ निर्जन मे या बुरी जगह मारना। उ० तुम्हें तो ऐसे कुठाँव मारना चाहिए कि कोई सहायता भी न करे।

कुठाराघात करना—आघात करना।

कुत्ता काटना—१ बेवकूफी करना। उ० भाई आज हमे कुत्ते काट दिये था, जो यहाँ चला आया। २ पागल होना।

कुत्ता होना—१ वफादार होना। २ घर-घर का जूठन चाटने वाला होना। ३ गंदा रहने वाला होना।

कुत्ते का दिमाग होना—बहुत बक-बक करना। हर समय बोलना। उ० मालूम होता है, आपका कुत्ते का दिमाग हो गया है, जरा शात तो रहिये।

कुत्ते का भेजा होना—दे० 'कुत्ते का दिमाग होना'।

कुत्ते की तरह चढ़ बैठना—गुर्रा कर या बहुत नाराज होकर टूट पडना। उ० वह तो मुझे देखते ही कुत्ते की तरह चढ बैठा और मारने लगा। मैं उसे समझाता क्या ?

कुत्ते की दुम—अपना कटु स्वभाव न छोडने वाला। उ० तुम कुत्ते की दुम हो। लाख समझाने पर भी नही मान सकते।

कुत्ते या कुत्ते-बिल्ली की मौत मरना—बुरी मौत मरना। बहुत कष्ट सहकर मरना। उ० अगर इसी तरह पाप करोगे, तो कुत्ते की मौत मरोगे।

कुत्ते-बिल्ली भी न पूछना—बिलकुल बेकार होना। उ० भगवान करे, तुम्हे कुत्ते-बिल्ली भी न पूछें।

कुप्पा-सा मुंह करना—क्रोध करना। नाराज होना। उ० मैंने कौन ऐसी बात कह दी जो आप कुप्पा-सा मुंह करके बैठे हैं।

कुप्पा होना या हो जाना—१ बहुत खुश होना। उ० जिस समय मोहन अपना परीक्षाफल सुनेगा, वह फूल कर कुप्पा हो जायेगा। २ फूल जाना। उसका गाल फोड़े के कारण कुप्पा हो गया है। ३ नाराज होकर मुंह फुलाना। उ० बस आप तो मजाक मे भी कुप्पा हो जाते हैं। ४ बहुत मोटा हो जाना।

कुप्पे की तरह मुंह करना—दे० 'मुंह फुलाना'।

कुफेर—बुरे दिन। उ० अभी कुफेर है। समझ-बूझकर काम करो।

कुफ्र बकना—बेहूदी बातें करना। उ० बडो के सामने कुफ्र बकते हो, शर्म नही आती ?

कुम्हड़बतिया होना—निर्बल होना।

कुम्हडे की बतिया—कमजोर मनुष्य। उ० यहाँ कोई कुम्हडे की बतिया नहीं है, जो आपकी गर्जना सुन कर डर जाय।

कुरान उठाना—मुसलमानो का क़सम खाना। उ० हनीफ, तुम सब के सामने कुरान उठा लो, बस मैं मान लूगा।

कुर्सी तोड़ना—व्यर्थ बैठे रहना।

कुर्सी देना—आदर देना। उ० आपका क्या पूछना है, आपको तो हर जगह कुर्सी दी जाती है।

कुल का दीपक या लाल अथवा कुल की नाक—कुल की मान मर्यादा बढाने वाला।

कुल गुर गोबर होना—दे० 'कुल गुर माटी होना'।

कुल गुर माटी होना या हो जाना—सब काम खराब होना। उ० तुम्हारे आ जाने से

काम बन गया, नही तो कुल गुर माटी हो गया होता ।

कुल बखानना—१ वश के पूर्वजो के नाम लेकर गाली देना । उ० भाई इसी कुल के तुम भी हो,कम से कम तुम्हे कुल नही बखानना चाहिये । २ कुल के यश का वर्णन करना । उ० भाट लोग कविता मे कुल वखानते हैं ।

कुलांच भरना—दे० 'कुलाँच मारना' ।

कुलांच मारना—१ बडी पहुँच होना । उ० उसका आजकल क्या पूछना है, वह तो बडे-वडे आदमियो के यहाँ कुलाँच मार रहा है । २ चौकडी मारना । उ० खरगोश कुलाँच मारते हुए निकल गया ।

कुलांच लेना—दे० 'कुलाँच मारना' ।

कुलहड मे गुड पकाना—दे० 'कुल्हिया मे गुड पकाना' ।

कुल्हिया मे गुड़ फोड़ना—१ किसी कार्य को इस प्रकार करना, जिससे किसी को खबर तक न हो । उ० सचसुच तुमने उस विधवा से शादी कर ली ? वाह, किसी को पता तक न चला । इसी को कुल्हिया मे गुड पकाना कहते हैं । २ छोटे आधार पर बहुत बडा काम करना । ३ थोडे आदमियो से बडा काम करवाना ।

कुल्हिया में गुड़ फोड़ना—दे० 'कुल्हिया मे गुड पकाना' ।

कुल्हिया-सा—बहुत छोटा । मुँह तो कुल्हिया-सा और ज़बान गज भर की ।

कुश्ती खाना—'कुश्ती मे हार जाना' । पटका जाना । उ० तुमको इतना खिलाया, फिर भी तुम आज कुश्ती खा गये । मेरा तो माथा जैसे शर्म से गड गया ।

कुश्ती मारना—कुश्ती मे जीतना । उ० तुम ने तो आज बहुत बडे पहलवान से कुश्ती मारी है ।

कुहराम पडना—दे० 'कुहराम मचना' ।

कुहराम मचना—रोना-पीटना । रोना-पीटना [illegible]ना । उ० लडके के मरते ही सारे घर मे [illegible]राम मच गया ।

[illegible] करना या कर देना या बोलना—चल देना । [illegible] पुलिस को देखते ही चोरो ने यहाँ से कूच [illegible] दिया ।

कूँची फेरना—१. सफेदी करना । उ० अगर मकान की मरम्मत यही कर रहे हो, तो कम से कम कूँची तो फेर दो । २ ख़राब कर देना । उ० तुमने सारे किये-कराये पर कूँची फेर दी ।

कुएँ मे डालना—१ सत्यानाश करना । २ दूर हटाना । उ० ऐसे आदमी को कुएँ मे डालो ।

कुएँ मे बोलना—अस्पष्ट कहना । उ० क्या कुएं मे बोलते हो, ज़रा ज़ोर से बोलो ।

कूट-कूट कर भरना—ठसाठस भरना । अच्छी तरह भरना । उ० आप राम को सीधा समझते हैं, पर उसमे शरारत कूट-कूट कर भरी है ।

कूट-कूट कर भरा होना—बहुत अधिक होना । उ० अह तो उसमे कूट-कूट कर भरा है ।

कूट-पीस कर पेट चलाना—दे० 'कूट पीस कर पेट पालना' ।

कूट पीस कर पेट पालना—किसी तरह कडी मेहनत करके जीवन निर्वाह करना । उ० किसी तरह कूट-पीस कर पेट पाल रही हूँ, अब कौन अपना रक्खा है जो खाना दे ।

कूट-पीस कर पेट पोसना—दे० 'कूट पीस कर पेट पालना' ।

कूड़ा-करकट समझना—१ बेकार समझना । उ० मेरी इन पुस्तको को कूडा-करकट मत समझो । २ कुछ न गिनना, तुच्छ समझना । उ० आपको मैं कूडा-करकट समझता हूँ ।

कूम्हल देना—सेंध देना । उ० आज रात चोरो ने मेरे मकान मे कूम्हल देकर सब सामान निकाल लिया ।

कूला मटकाना—नाज़-नख़रा करना । उ० क्या रंडियो की तरह कूला मटका रहे हो ?

केंचुल बदलना—१ पोशाक बदलना । २ रूप बदलना । उ० तुम तो रोज़ ही केंचुल बदलते हो । ३ सिद्धात बदलना । उ० उसे कौन अपनी पार्टी मे लेगा, वह तो रोज़ ही केचुल बदलता है ।

केंचुली बदलना—दे० 'केचुल बदलना' ।

केले के लिए ठीकरे तेज होना—निर्बल के लिए सभी का बलवान होना ।

कैंची करना—काटना, कतरना । उ० गाडी मे मेरी जेब किसी ने कैंची कर ली । मेरा बाल ज़रा कैंची कर दो ।

कैंची काटना–१. वचन देकर इन्कार कर जाना। उ० समय पर कैंची काट जाना ठीक नही है, नही करना हो तो पहले ही कह दो। २. नज़र बचाना, सामने न आना। उ० आजकल रोज़ आप कैंची काट कर निकल जाते हैं, कुछ रुष्ट हैं क्या ?

कैंची की तरह ज़बान चलाना–बहुत तेज़ ज़बान। उ० क्या कैंची की तरह ज़बान चला रहे हो, चुप रहो।

कैंची चलाना–षड्यन्त्र करना। उ० दल मे तुम्हारे खिलाफ कैंची चलाई जा रही है। बच कर रहना।

कैंची लगाना–१ छाँटना। उ० कैंची लगाकर मेरे उपवन को ठीक कर दो। २ एक के ऊपर एक कैंची की तरह तिरछी रखना। उ० लकडियो की कैंची लगाओ, तो अपने आप जलेंगी।

कैद काटना–जेलखाना मे अपनी मियाद पूरी करना। उ० मैंने २ वर्ष की कैद काटी है।

कैद भरना–दे० 'कैद काटना'।

कैद लगाना–१ शर्त लगाना। उ० काम सीधे करवाना चाहो तो मैं कर दूं। यह कैद लगाना मुझे पसद नही। आप एक कैद लगा दें। उसके बाहर आना मैं पसद नही करूँगा।

कैफियत तलब करना–सबब पूछना। उ० बात-बात मे कैफियत तलब करना मुझेद पसद नही। या तो यह आदत छोडिये या अपनी नौकरी लीजिये।

कोई दकीक़ा बाक़ी न रखना–दे० 'दकीका बाक़ी न रखना'।

कोई दम का मेहमान होना–थोडे समय में मर जाने वाला। उ० उस बेचारे का क्या है, वह तो कोई दम का मेहमान है।

कोई न कोई–यह न सही वही। उ० कोई न कोई आज अवश्य आयेगा। आप जमा खातिर रहें।

कोख उजडना–लडका मर जाना। उ० बेचारी बुढिया की आज कोख उजड़ गई, अब वह कैसे रहेगी ?

कोख खुलना–१ बहुत दिन बाद सतान का पैदा होना। उ० बहुत दिनों के बाद उसकी कोख अब खुली है। २ प्रथम बार संतान होना। उ० भगवान करे, बहू की कोख जल्दी खुले।

कोख ठंडी होना–पुत्र से सुख मिलना। जिसकी कोख ठडी हो, उसे और क्या चाहिये ?

कोख मारी जाना–सन्तान न होना। उ० उसकी कोख मारी गई है। चालीस वर्ष की हुई, आज तक उसे एक भी बच्चा नही हुआ।

कोठा बिगड़ना–१ बदहज़मी होना। उ० दो दिन से मेरा कोठा बिगड गया है। २ गर्भाशय का खराब होना। उ० कोठा बिगड़ गया है, तो झाड-फूंक करने से थोड़े सतान होगी।

कोठा साफ होना–१ मन मे कुछ बुरा भाव न होना। उ० महात्माओ का कोठा साफ होता है। आपकी ओर से मेरा कोठा बिल्कुल साफ है, आप विश्वास रक्खें। २ पेट साफ़ होना। उ० कोई ऐसी दवा दे दो कि कोठा साफ हो जाय।

कोठी करना–रुपया लेने-देने का काम शुरू करना। उ० कोठी करने मे अब लाभ नही रहा।

कोठी खोलना–दे० 'कोठी करना'।

कोठी चलना–महाजनी कारबार से होना। उ० आपको क्या चिन्ता है, जब कि शहर मे दो-दो कोठियाँ चल रही हैं।

कोठी बैठना–दिवाला होना। उ० इस साल तो उनकी कोठी बैठ जायगी।

कोठे पर बैठना–रडी बनना। उ० आजकल की हिन्दू विधवाएँ घर-बार छोड कर कोठे पर बैठ जाने के लिये समाज द्वारा मजबूर की की जाती हैं।

कोढ़ की खाज–एक कष्ट के बीच मे आ जाने वाला दूसरा कष्ट। उ० एक तो आँखो मे यो ही धुंध की शिकायत थी, दूसरे रतौंधी भी होने लगी। भगवान को मेरे ही लिए यह कोढ की खाज भेजनी थी !

कोढ़ में खाज–दे० 'कोढ़ की खाज'।

कोढी होना–आलसी या सुस्त होना। उ० तुम तो बडे कोढी हो। ये कपडे साफ क्यो नही कर डालते ?

कोदो दरना या दलना—क्षुद्र और बहुत परिश्रम का काम करना। उ० तुम कोदो दरो, मुझसे यह न होगा।

कोदो देकर पढ़ना—बिना कुछ खर्च किए तालीम पाना। उ० यार तुम्हे तो कुछ आता ही नही है। मालूम होता है कि कोदो देकर पढे हो।

कोदो-सँवा समझना—तुच्छ समझना। उ० आप इन रोटियो को कोदो-सँवा समझ लें, पर मेरे लिए तो ये ही मोहनभोग हैं।

कोयले पर छाप और मुहरो पर लूट होना—बडे-बडे खर्चों को न रोकना और छोटे खर्च मे कजूसी करना। उ० नये राजा भी कितने मूर्ख हैं, उनके यहाँ तो कोयले पर छाप और मुहरो पर लूट हो रही है।

कोयले की दलाली मे हाथ काले करना—धर्म मे बदनामी ही मोल लेना।

कोयले पर छाप पड़ना—दे० 'कोयले पर छाप लगना'।

कोयले पर मोहर लगना—दे० 'कोयले पर छाप लगना'।

कोयले पर छाप लगना—मामूली खर्च मे कजूसी करना। उ० बडे आदमियो के बडे-बडे खर्च तो कम नही होते हैं और कोयले पर छाप लगती है।

कोर दबना—दबाव या वश मे होना। उ० भाई साहब, मेरी कोर न दबी होती तो आपको अभी ठीक कर देता।

कोरम कोर चवाल सौ—एकदम बेवकूफ। उ० इनको भी मैं कोरम कोर चवाल सौ ही समझता हूँ।

कोरा जवाब—स्पष्ट नाही। साफ इन्कार। उ० भाई अगर न देना हो तो कोरा जवाब दे दो, मुझे लल्लो-चप्पो अच्छी नहीं लगती।

कोरा होना—अनुभवहीन होना।

कोरे उस्तरे से मूँड़ना—१. बेवकूफ बना कर अपना काम निकालना। उ० मित्र तुम ऐसे चतुर हो गये हो कि सभी को कोरे उस्तरे से मूँड़ रहे हो। २. लूटना। ३ कष्ट देना।

कोल्हू काट कर मुँगरा बनाना—आवश्यक वस्तु को नष्ट करके अनावश्यक वस्तु का निर्माण करना।

कोल्हू का बैल—१ बहुत मेहनती। उ० मोहन कोल्हू का बैल है, जिस काम मे लग जाता है, उसे पूरा करके ही छोडता है। २. एक ही लकीर पर सर्वदा चलने वाला। उ० तुम तो कोल्हू के बैल हो। आफिस से घर और घर से आफिस। और किसी से तुम्हे क्या मतलब ?

कोल्हू ढकेलना—१ बहुत आवश्यक काम करना। उ० क्या कोल्हू ढकेल रहे थे कि सवेरे नही आये ? २. बहुत परिश्रम का काम करना। उ० कोल्हू नही ढकेलना है कि डर रहे हो।

कोल्हू मे डाल कर पेरना—१. बहुत कष्ट देकर मारना। उ० तुम्हारे ऐसे पापी को कोल्हू मे डाल कर पेरने मे तनिक भी दोष नही। २ बहुत कष्ट देना।

कोश देखना—कोश मे अर्थ आदि देखना। उ० ज़रा कोश तो देखो, मुझे इस शब्द का अर्थ कुछ और ही मालूम हो रहा है।

कोसो दूर रहना—करीब न जाना। दूर रहना। उ० बुरे आदमियो से मैं कोसो दूर रहना पसद करता हूँ।

कौआ बोलना—सबेरा होना।

कौड़ी का—१ बेकार। उ० वह तो कौडी का आदमी है। २. बेइज़्ज़त, गिरा हुआ।

कौड़ी का कर डालना—१. बरबाद कर देना। उ० केवल आवारापती मे तुमने अपनी तन्दुरुस्ती कौडी की कर डाली। २ इज़्ज़त बिगाड डालना। उ० तुम अपने को लाट का दादा समझते हो। अगले चुनाव मे तुम्हें कौडी का न कर डाला तो कहना।

कौडी का बल न पडना—हिसाब का एकदम ठीक-ठीक होना। उ० मेरा मुनीम बडा होशियार है। कौडी का भी बल नही पडने पाता है।

कौडी काम का नहीं—बेकार, कुछ भी काम का नही। उ० इतना रुपया भी लगाया और एक भी चीज़ कौडी काम की नही है। यही तो तुम्हारी अक्ल है।

कौड़ी के तीन-तीन होना—१ कुछ कदर न होना। उ० आजकल तो ग्रेजुएट कौडी के तीन-तीन हो रहे हैं ? २ बहुत सस्ता होना। उ० अब तो उसके चित्र कौडी के तीन-तीन हो रहे हैं।

कौडी को न पूछना—१. एकदम बेकार समझना। उ० ऐसी खराब मिठाई बनारस मे कोई कौडी को भी न पूछेगा। २. मुफ्त मे भी न लेगा। उ० इसे तो कोई कौडी को भी न पूछेगा।

कौडी कोस दौडना—थोडे से लाभ या पैसे के लिये कडी मेहनत करना । उ० मोहन की दो माह से ऐसी हालत हो गई है कि आप उसे कौडी कोस दौडा सकते हैं ।

कौडी-कौडी अदा करना—कर्ज़ का पैसा-पैसा चुका देना । उ० भाई अगर मैं दो वर्ष भी जी गया तो कौडी-कौडी अदा कर दूँगा, तुम ज़रा भी परीशान न हो ?

कौडी-कौडी को मुहताज होना—पास मे रुपया-पैसा बिलकुल न होना । उ० आजकल उसकी हालत वडी खराव है, वेचारा कौडी-कौडी को मुहताज़ है ।

कौडी-कौडी चुकाना—दे० 'कौडी-कौडी अदा करना' ।

कौडी-कौडी जोडना—थोडा-थोडा करके रुपये इकट्ठा करना । उ० वाप ने कौडी-कौडी जोडा था, तुमने सव फूंक दिया ।

कौडी-कौडी भरना—दे० 'कौडी-कौडी अदा करना' ।

कौडी कौडी भरपाई कर लेना—थोडा भी वाकी न रखना । पूरा लेना । उ० मैं आज तुमसे कौडी-कौडी भरपाई कर लूंगा । जहाँ से भी हो, तुमको देना ही पडेगा ।

कौडी-कौडी लेना—पूरा लेना । हिसाव मे कौडी-कौडी तक ले लेना । उ० भाई, आज मैं अपनी कौडी-कौडी ले लूंगी । मोटी मसल है 'खायँ-पिएँ एक मे हिसाव करें अलगाँ' ।

कौडी गलत पडना—वात या उपाय का उलटा असर होना ।

कौड़ी पास न होना—पास मे कुछ पैसा न होना । उ० भाई, आज तो कौडी भी पास मे नही है, कहाँ से दूँ ?

कौडी फिरना—जूए मे दाँव उलटना । उ० अव कौडी फिरने लगी है चलना चाहिये ।

कौडी भर का—वहुत छोटा । उ० यह कौडी भर का लडका, कितनी वाते करता है ।

कौन-सा मुंह लेकर—किस हिम्मत से, कैसे ?

कौन होना—अनधिकारी होना । उ० तुम कौन हो, जो मेरी चीज़ लेते हो ? २ कोई नाता-रिश्ता न होना । उ० वह मेरा कौन है, जो निमंत्रण दूं ।

कौल का धनी—दे० 'कौल का पूरा' ।

क़ौल का पक्का—दे० 'कौल का पूरा' ।

कौल का पूरा—जो कहे उसे पूरा करने वाला । उ० मेरे पिता जी कौल के पूरे थे । अंत मे इसी के पीछे उन्हें प्राण से भी हाथ धोना पडा ।

क़ौल पर जमना—कही वात पर जमा या अड़ा रहना । उ० मैं कौल पर जमा रहूँगा, चाहे जान भले ही चली जाय ।

कौले लगाना—किसी वात को सुनने के लिए चुपचाप आड़ मे खडा रहना । उ० चुपचाप जाकर कौले लगाओ । वे सव कुछ षड्यंत्र अवश्य रच रहे हैं ।

कौवा-गुहार में पड़ना—वेकार के झगड़ा-फसाद मे पडना । उ० इस कौवा-गुहार मे पडने से मुझे क्या लाभ होगा ?

कौवा-गुहार मे फँसना—दे० 'कौवा-गुहार मे पडना' ।

कौवा फँसाना—चालाक को चकमा देना । उ० वेटा, तुमने मुझे कितनी चोटें दी, पर अवकी मैंने भी कौवा फँसा ही लिया ।

कौवारोर—वहुत वक-वक । उ० कौवारोर मत करो ।

कौवा होना—१ मक्कार और चालाक होना । २ भला-वुरा सव कुछ खाने वाला होना ।

कौवे उड़ाना—वेकार काम करना । उ० तुम दिन भर कौवे उडाया करते हो, आखिर क्या चाहते हो ? अगले महीने से मैं खाना-कपडा वद कर दूंगा ।

कौवे की नज़र रखना—वहुत तेज़ नज़र रखना । उ० कौवे की नज़र रक्खो, नही तो नौकर चोरी कर लेंगे ।

कौवे खाना—दे० 'काले कौवे खाना' ।

क्या—नही, कुछ नही । उ० तुम क्या खाते हो ? [सभी तरह के वाक्यो मे 'क्या' रखकर नही का अर्थ प्रकट करते हैं ।]

क्या उखाडना—कुछ न कर सकना । उ० आप मेरे ऊपर नाराज़ होकर क्या उखाड लेंगे ?

क्या-क्या न करना—सव कुछ करना । उ० भाई, तुमने हमारे लिये क्या-क्या न किया ? इसका वदला तुम्हें मैं सात जन्म मे भी नही चुका सकता ।

क्या खाकर—किस हिम्मत से, किस वल पर । उ० मुझसे तुम क्या खाकर लडोगे । एक मिनट मे हड्डियाँ चूर-चूर कर दूंगा ।

क्या खूब–बहुत अच्छा। उ० उसकी कविता सुनकर लोग 'क्या खूब' कहने लगे।

क्या ग़म है–कोई परवाह नही है। उ० अरे तुम जाते हो तो जाओ, यहाँ क्या गम है ?

क्या जानना–कुछ नही समझना। उ० मूर्ख, तुम क्या जानो इन बातो को ? इसे तो विद्वान लोग ही समझ सकते हैं।

क्या जाना–तनिक भी नुक़सान न होना। कुछ न विगड़ना। उ० मेरा क्या जाता है जो मैं उनके झगडे मे पड़ूँ।

क्या पडना–तनिक भी आवश्यकता न होना। उ० मुझे क्या पडी है जो इनके बीच मे बोलूँ ?

क्या मुँह दिखाओगे–क्या उत्तर दोगे। उ० सब रुपया नष्ट कर दिया, आखिर घर वालो को क्या मुँह दिखाओगे ?

क्या समझना–कुछ न समझना। उ० वह अपने घर का कुछ भी हो, मैं उसे क्या समझता हूँ ?

क्या होना–कुछ न होना। उ० गाली ही दे दो तो क्या हुआ, कौन वे लाट साहब हैं ?

क्यो नहीं–१ कैसे नहीं। उ० आखिर यह तुमसे क्यो नही होगा ? २ निश्चितता का उत्तर देना। उ० यह करोगे ? क्यो नही। ३. वही हो। उ० क्यो नही, जो तुम कहते हो, वह ज़रूर सत्य होगा। ४. ज़रूर। उ० क्यो नही, तुम सभी कुछ कर सकते हो। (व्यग्य) क्यो नही, वह अच्छा गाता है ?

क्रम-क्रम करके–१ धीरे-धीरे। उ० क्रम-क्रम करके कठिन काम भी आसानी से हो सकता है। २. एक-एक करके, तरकीब से। उ० क्रम-क्रम करके पुस्तको को सजा दो।

क्रम-क्रम से–दे० 'क्रम-क्रम करके'।

क्रोध पी जाना–कोध दवा जाना।

क्वारछल उतारना–दे० 'क्वारपन उतारना'।

क्वारपन उतरना–१ विवाह होना। उ० उसका भी क्वारपन उतर गया, यह अच्छा ही हुआ। २. दे० 'नथुनी उतरना'।

क्वारपन उतारना–१. विवाह करना। २. किसी का सतीत्व नष्ट करना।

क्षण मात्र मे—थोडी देर मे। उ० क्षण मात्र और रुको।

ख

खक होना–१. कमजोर होना। उ० बीमारी के कारण वह बहुत खक हो गया है। २. लालची या भुक्खड होना।

खगर लगना–१. कमजोरी का रोग होना। उ० तुम्हें कौन खगर लग गया है जो दिन-प्रतिदिन सूखते जा रहे हो ? २. सूखा रोग लगना। उ० लडके को खंगर लगा है, दवा करो।

खंगाल डालना–गुप्त रूप से मार डालना। उ० पता चला है कि आगरा के एक बडे डाकू ने कुछ लोगो को खंगाल डाला है।

खंगाल ले जाना–सब कुछ ले जाना। उ० रात हरीश के घर चोर आये और खगाल ले गये।

खंजन देखना–शुभ शकुन होना। उ० इस वर्ष मैंने खजन देखा, देखें क्या होता है ?

खड-खड करना–चकनाचूर करना। टुकडे-टुकडे करना। उ० तुमने तो शीशे को खड-खड कर दिया।

खडी करना–किस्त बाँधना। उ० यो न दे सकते हो तो खंडी कर दो। इस प्रकार देने मे आसानी रहेगी।

खचाखच कसना–दे० 'खचाखच भरना'।

खचाखच भरना–खूब ठूँस कर भरना। उ० इस डिब्बे मे आदमी खचाखच भर गये हैं, अब बिलकुल जगह नही है। हाल खचाखच भरा है।

खचाखच माचना–खूब मारकाट होना।

खज़ाना मारना–बहुत धन लूटना। उ० आपका मैंने खज़ाना नही मारा है कि इतने रुष्ट हो रहे हैं।

खटकरमी होना–१ बाह्य आडम्बर करने वाला होना। २. बहुधन्धी होना। उ० वह तो खट-करमी है, उसे ये सब चीज़ें लिखने की फुरसत कहाँ ?

खटके पर होना–खटके के सहारे रहना। उ० कमरे के बीच मे खटके पर एक पत्थर था, जो ऊपर दवाते ही नीचे की ओर झूलने लगा।

खटपट होना–लडाई, विरोध होना। उ० दोनो मे खटपट है।

खटपाटी लगना–दे० 'खटपाटी लेना'।

खटपाटी लेना–हठ या क्रोध के कारण स्त्रियो का खाना तथा काम-धन्धा छोड देना। उ०

कुछ कहो भी तो, आखिर यो खटपाटी लेने से क्या लाभ ?

खटराग करना—झझट करना । उ० यहाँ खटराग न करो ।

खटराग फैलाना—१ आडम्बर बढाना । तूल-तवाला करना । उ० यह सब वेकार का खट-राग फैलाना मैं पसद नही करता । २ झझट बढाना । उ० यहाँ खटराग न फैलाओ, नही तो ठीक न होगा ।

खटराग मचाना—दे० 'खटराग फैलाना' ।

खटराग में पडना—बखेडे मे पडना । उ० खटराग मे पडने से सारा काम चौपट हो रहा है ।

खटराग लाना—झगडा-झझट खडा करना ।

खट से—तत्काल, तुरन्त । उ० माँगने की देर है, मुझे विश्वास है कि वह खट से दे देगा ।

खटाई करना—विगाडना । उ० सारा मजा खटाई मत करो ।

खटाई मे डालना—१. दुविधा मे छोड देना । कोई निश्चय न करना । उ० केवल आपकी वजह से मेरा मामला खटाई मे डाल दिया गया । २ बीच मे झझट पैदा करना । उ० पहले कहे होते तो मैं मान गया होता, पर अव काम को खटाई मे न डालो ।

खटाई मे पड़ना—१ कुछ ठीक न होना, उ० जब तक आप न आयेंगे, मेरी नौकरी का मामला खटाई मे पडा ही रहेगा । २ रुक जाना । बीच मे कोई व्याघात या झझट आ जाना । उ० मेरा मामला तो खटाई मे पड गया ।

खटापटी रहना—झगडा-तकरार रहना । उ० दोनो मे खटापटी रहती है ।

खटापटी होना—दे० 'खटापटी रहना' ।

खटिया तोडना—१ निश्चित होकर आराम करना । ३ वेकार रहना । उ० क्या दिन भर खटिया तोडते हो, कुछ न मिलता हो तो मेरे आफिस मे एक एवजी है, उसी को कर लो ।

खटिया निकालना—मर जाना । उ० उसके घर से २ माह के अन्दर ४ खटिया निकली ।

खटिया सेना—वीमारी से चारपाई पर पडा रहना । उ० आज वर्षों से वह खटिया से रहा है ।

खटिया हचकती जाना—मर कर टिकठी पर हचकते हुए जाना । उ० ईश्वर करेगा तो तुम्हारी खटिया जल्दी ही हचकती जाएगी । [यह स्त्रियो की एक गाली है ।]

खट्टा खाना—अप्रसन्न रहना । मुंह फुलाना । उ० तुम तो हमेशा खट्टा खाए रहते हो ।

खट्टा जी होना—दिल टूट जाना । उ० तुमसे हमारा खट्टा जी हो गया है, वात न करो ।

खट्टा-मीठा जी होना—मन मे लालच होना । उ० अच्छी-अच्छी मिठाइयाँ देखकर उसका खट्टा-मीठा जी होने लगा ।

खट्टा होना—अप्रसन्न होना । उ० मुझसे क्यो खट्टे होते हो ?, मैंने कुछ नही किया ।

खट्टी-मीठी वातें सुनना—१ भली-बुरी वातो को वर्दाश्त करना । २ बुरा-भला सुनना ।

खट्टे-मीठे दिन—सुख-दुख के दिन । उ० जीवन मे खट्टे-मीठे दोनो ही तरह के दिन विताने पडते हैं ।

खड़मंडल करना—१ उपद्रव करना । २ किसी व्यवस्थित या ठीक से चलने वाले काम को गडबड कर देना । उ० उसे न बुलाओ, नही तो जरूर खडमडल करेगा ।

खडा जवाब देना या दे देना—तुरन्त इन्कार कर देना । उ० मैंने १० रु० माँगे, पर उसने खडा जवाव दे दिया ।

खडा-पडा पीटना—हर समय शोक से रोते रहना । उ० आज दो माह से वह खडा-पडा पीट रहा है ।

खड़ा होना—चुनाव के लिये उठना । उ० हमारे इलाके से रामलाल सरपच के लिए खडे होगे ।

खड़िया मे कोयला—वेमेल चीज । उ० खडिया मे कोयला किसी को अच्छा नहीं लगता ।

खड़ी जवानी—भरा यौवन ।

खड़ी पछाड़ें खाना—दुख से जमीन पर गिर पडना । उ० वह लडके की मृत्यु सुनते ही खडी पछाडें खाने लगा ।

खडे-खडे—१ तुरन्त, झटपट । उ० मैं खडे-खड़े इस काम को कर लूंगा । २ पल भर के लिए । उ० खडे-खडे वहाँ से लौट आऊँ । ३ बिना रुके । उ० वह खड़े-खडे चला गया । ४ खडे होकर । उ० खडे-खडे पानी न पियो ।

खडे-खडे करना—१ तुरन्त या झटपट करना । उ० इस तरह खडे-खडे करना ठीक नही है । २ खडे होकर करना । खडे-खडे जलपान न करो ।

खड़े-खड़े फिरना—दे० 'खड़े-खड़े लौटना'।

खड़े-खड़े लौटना—तुरन्त लौटना। उ० वह आज आया था, पर खड़े-खड़े लौट गया।

खड़े-खड़े होना—तुरन्त हो जाना। उ० सब्र करो, काम खड़े-खड़े हो जायगा।

खड़े घाट कपड़े धुलवाना—जल्दी कपड़े धुलवाना।

खड़े पाँव—खड़ा होकर। उ० मैं तीन स्टेशनो से खड़े पाँव आ रहा हूँ। दे० 'खड़े-खड़े'।

खड़े पानी भी न पीना—तुरन्त चला जाना।

खड़े पीर का रोजा रखना—बराबर खड़ा रहना। बैठने का नाम तक न लेना। उ० क्या तुमने खड़े पीर का रोजा रखा है जो नही बैठते ?

खड़े सिर डुबाना—बहुत परेशान करना।

ख़त आना—मुँह पर बाल जमना। उ० अरे तुम्हे इतनी कम उम्र मे खत आने लगे।

ख़त काटना—कान के पास बाल सीधा काटना। उ० फिर से काटो, खत अच्छा नही कटा।

ख़त फाटना—कान के पास बाल को छूरे से सीधा काटना या बराबर करना। उ० यह नाई अच्छा खत नही काटता।

ख़त-क़िताबत करना—पत्र-व्यवहार करना। उ० उनसे खत-किताबत करो तो कुछ पता चले।

ख़त निकलना—दे० 'खत आना'।

ख़त बनाना—दे० 'खत काटना'।

ख़तम करना—मार डालना। उ० चोर को पकड़ कर वही खतम कर डाला।

ख़तम होना या हो जाना—मर जाना। उ० मेरे दुश्मन खुद ही खतम हो गये।

खतरा दूर होना—संकट दूर होना। उ० बंदूक खरीद लेने से मेरा सब खतरा दूर हो गया।

ख़तरे की घंटी—आफत की सूचना।

ख़त लगाना—दे० 'खत काटना'।

खत लिफाफा देख कर पहचानना—ऊपर से देखकर ही भीतर की हालत जान लेना। उ० वह ऊपर से चाहे जैसा हो, भीतर से बहुत शरारती है। मैं तो खत लिफाफा देखकर ही पहचान जाता हूँ।

ख़त से खत मिलाना—जाली दस्तखत बनाना। उ० वह खत से खत बहुत बढ़िया मिलाता है।

खता खाना—१ धोखे मे पड़ना। उ० अगर अनजान जगह पर जाओगे तो अवश्य खता खाओगे। २ अशुद्धि करना। उ० क्यो बार-बार खता खाते हो ?

खदशा मे डालना—सोच-विचार मे डालना। उ० पत्र ने मुझे खदशा मे डाल दिया।

खपच्ची भरना—गोद मे ले लेना।

खपरैल डालना—खपड़े से छत छाना।

खपा देना—१ मर मिटना, बर्बाद कर देना। उ० मैं इस काम मे अपने को खपा दूँगा। २ अर्पण कर देना। उ० उसने सारा धन धर्म मे खपा दिया। ३. फँसा कर मार डालना। उ० ऐसे आदमियो को कही खपा दो। ४ काम मे लगा देना। उ० इसे भी कही खपा दो। ५ खर्च कर देना।

खप्पर भरना—खप्पर मे मदिरा आदि भर कर देवी पर चढाना। उ० खप्पर भरो तो शायद तुम्हारा काम हो जाय।

ख़बर उड़ाना—खबर फैलना। अफवाह फैलना। उ० उसके मरने की खबर उड़ गई है, मैं नही कह सकता, यह कहाँ तक सत्य है ?

ख़बर फैलना—अफवाह होना। उ० दगे की खबर ज़ोरो से फैल रही है।

ख़बर लेना—१ लालन-पालन करना। उ० बिना भगवान के कौन हमारी खबर ले ? २ पता लगाना। उ० अब तक उसकी बीमारी की खबर ली या नही ? ३ देखभाल करना। उ० घर-द्वार की खबर लेते रहना। ४ दंड देना, मारना। उ० पुलिस ने चोर की अच्छी ख़बर ली। ५ बुरी दशा पर ख्याल करना। उ० गरीबो की खबर लिया करो। ६ डाँटना-फटकाना।

खब्त सवार हो जाना या होना—सनक चढना, पागलपन रहना। उ० आखिर तुम पर किस चीज़ का खब्त सवार है ?

खब्त हो जाना—पागल हो जाना। उ० तुम तो ऐसी बात कर रहे हो, जैसे तुम्हारा दिमाग़ खब्त हो गया है।

ख़म खाना या खा जाना—१ नीचा देखना। उ० आपकी धमकी से खम नही खा सकता, मैं यहाँ मर मिटने को तैयार हूँ। २ झुकना, मुड़ना। उ० तलवार ख़म खा गई।

खम ठोक कर—१ डके की चोट पर। घोषणा करके। उ० मैं खम ठोक कर यह बात सबके सामने कह दूँगा, चाहे कोई नाराज़ हो या खुश। २ ताल ठोक कर। उ० वह खम ठोक कर लड़ने को तैयार हो गया।

खम ठोकना–१ लडने से लिये तैयार होना। उ० मैं इस सभा मे खम ठोकता हूँ, जो लडना चाहे, लड ले। २ अपनी मजबूती प्रकट करना। उ० उसने तो सब के सामने खम ठोका।

खम बजाना–दे० 'खम ठोकना'।

खम मारना–दे० 'खम ठोकना'।

ख़मीर खट्टा होना–दे० 'ख़मीर बिगडना'।

खमीर बिगडना–१ गूँधे हुए आटे का अधिक देर तक रखे रहने के कारण बहुत खट्टा हो जाना। २ स्वभाव या व्यवहार आदि मे भेद पडना।

ख़याल–दे० 'ख्याल'।

खरड बांधना–घाव पर पपडी पडना।

खर करना–बहुत गरम करना। उ० घी को खर कर दो।

खरतल कहना–साफ-साफ कहना।

खरतल रहना–१ खरा और साफ होना। २ अलग और आज़ाद रहना।

खर-दिमाग–घमडी, अक्खड या ज़िद्दी। उ० भगवान बचाये उस खर-दिमाग से।

खरल करना–महीन कूटना। उ० दवा खरल कर दो।

खरा आदमी–चटपट दाम देने वाला आदमी। उ० खरे असामी से व्यवहार करना अच्छा होता है।

खरा आदमी–१ ईमानदार आदमी। उ० भाई, मैं खरे आदमी को पसन्द करता हूँ। २ साफ-साफ कहने वाला आदमी।

खरा खेल फर्रुखावादी–खरा और साफ व्यवहार। फर्रुखावादी रुपये की तरह खरा व्यवहार। उ० मुझे तो खरा खेल फर्रुखावादी पसन्द है।

खरा-खोटा परखना–भले-बुरे की पहचान करना। उ० बिना खरा-खोटा परखे आपने मित्रता कर ली, इसी का यह आज फल मिला है।

खरा-खोटा होना या हो जाना–नियति बिगडना। मन खराब होना। उ० लाख की चीज़ देखो भी तो खरे-खोटे न हो जाओ।

ख़राद उतरना–दे० 'ख़राद पर चढना'।

ख़राद चढ़ना–दे० 'ख़राद पर चढना'।

ख़राद पर चढ़ना–१ काबू मे आना। उ० कभी खराद पर चढोगे तो मज़ा चखा दूंगा। २ बिल्कुल ठीक होना। उ० मिस्त्री आ जाय तो मशीन ख़राद पर चढ जाएगी। ३ व्यावहारिक होना। उ० ८० साल का हुआ, क्या अभी ख़राद पर चढना बाक़ी है? ४ काम पडने पर। उ० रहने दो, ख़राद पर चढ कर स्वय सुधर जाएगा। ५ मशीन की मरम्मत होना। उ० हमारी कल, कल ख़राद पर चढेगी।

ख़राद पर चढ़ाना–१ सुधारना। उ० एक बार उसे ख़राद पर चढा दो, वह ठीक हो जायेगा। २ काट-छाँट कर ठीक करना।

खरापन बघारना–अपनी सच्चाई की बडाई करना। उ० तुम हमेशा खरापन बघारते रहते हो। क्या चाहते हो, तुम्हारा भी सब भडाफोड कर दूं?

ख़राब करना या कर देना–बरबाद करना बिगाड़ना। उ० अगर लडको के साथ तुम रहोगे तो अपनी ज़िन्दगी ख़राब कर दोगे।

खराबी मे डालना–१. दु ख पहुँचाना। २ हानि पहुँचाना। उ० ग़रीबो को ख़राबी मे डालने से क्या फायदा?

ख़राबी मे पड़ना–बुरी दशा मे होना।

खरी-खरी सुनाना–दे० 'खरी सुनाना'।

खरी-खोटी सुनाना–भला-बुरा कहना। उ० आज तो उसने ऐसी खरी-खोटी सुनाई कि उनकी हुलिया बिगड गई।

खरी सुनाना–१ साफ-साफ बात कहना, चाहे बुरी लगे या भली। उ० भाई अगर हमसे पूछोगे तो मैं खरी सुनाऊँगा, चाहे खुश हो या नाराज़। २ फटकारना। उ० आज तो उसे ऐसी खरी सुनाऊँगा कि वह भी याद करेगा।

ख़र्च उठाना–१ ख़र्च का भार सहना। उ० ख़र्च उठाना पडेगा तो पता चलेगा, अभी तो दूर हो। २ ख़र्च बन्द कर देना। उ० यह ख़र्च उठा दो। तुम्हारी हैसियत के लिए बिलकुल बेकार है।

ख़र्च चलाना–ख़र्च के लिए रुपया देना। उ० जब घर का ख़र्च चलाना पडेगा तो मालूम होगा। अभी तो खेल-खा लो।

ख़र्च तोड़ना–ख़र्च घटाना।

ख़र्च मे डालना–१ व्यय मे लिखना। उ० मेरे ही ख़र्च मे डाल दो, फिर देखा जायेगा। २ ख़र्च करने पर मजबूर करना। उ० मुझे ख़र्च मे मत डालो, मैं तो यो ही तबाह हूँ।

ख़र्च में पडना–व्यय करने को लाचार होना। उ० लडका होने की वजह से मुझे काफी खर्च मे पडना पडा।

ख़र्ची पर चलना–दे० 'खर्ची पर जाना'।

ख़र्ची पर जाना–किसी स्त्री का धन के लिए पर-पुरुष से प्रसग कराना।

खर्राटा भरना या लेना–बेख़बर सोना। उ० वह तो चारपाई पर पडते ही खर्राटा भरने लगता है।

खर्राटा मारना–दे० 'खर्राटा भरना'।

खर्राटा लेना–दे० 'खर्राटा भरना'।

खल करना–दे० 'खरल करना'।

खलबली पडना–दे० 'खलबली मचना'।

खलबली मचना–हल्ला मचना, भगदड मचना। उ० शेर के आने की अफवाह सुन कर सारे शहर मे खलबली मच गई।

ख़लल पडना–विघ्न पडना। उ० तुम्हारे आते ही काम मे खलल पड गया।

खलाल देना–मात करना। उ० तुम्हारी बैठक तो महाराजाओ के दरबार को भी खलाल देती है।

खलाल मानना या मान जाना–पूर्णत. हार मानना। उ० अब तो वह भी खलाल मान गया।

खलित होना–वीर्यपात होना। स्खलित होना।

खलियान करना–१ इकट्ठा करना। उ० चीजो को यहाँ मत खलियान करो। २ तितर-बितर करना। ३ कटी फसल को इकट्ठा करना। ४ मार डालना। उ० उसने युद्ध-क्षेत्र मे वीरो का खलियान कर दिया।

ख़वे से ख़वा छीलना–बहुत भीड होना। उ० आज मैं मेले मे गया था, वहाँ खवे से खवा छिल रहा था।

ख़सम करना–किसी को पति के रूप मे ग्रहण करना। उ० खसम किया, बुरा किया, छोड़ दिया और बुरा किया।

खाक उड़ना–१ उजाड़ होना। उ० हम लोगो के चले जाने पर यहाँ खाक उड़ेगी। २ नष्ट होना। उ० तुम्हारी तो खाक ऐसी उडेगी कि पता न चलेगा। ३ बदनाम होना। उ० चारों ओर उसकी खाक उड़ रही है।

ख़ाक उड़ाते फ़िरना–मारे-मारे फिरना। उ० क्या खाक उड़ाते फिरते हो? आखिर कैसे अपना गुज़र-बसर करोगे।

खाक उडाना–बेकार रहना। उ० शर्म नही आती, दिन भर तो खाक उडाता है और शाम को खाना माँगता है। २ स्वप्रतिष्ठा भग करना। उ० नीचो से बोल कर बनी-बनाई इज्ज़त की खाक उडाता है। ३ मजाक उडाना। उ० दूसरो की खाक उडाना उचित नही है।

ख़ाक करना या कर देना–१ नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० आवारापन्थी मे उसने अपना सारा काम खाक कर दिया। २ जला देना। आज की आग ने सारा घर खाक कर दिया।

ख़ाक चाट कर बात करना–विनम्र होकर बोलना। वह मेरे सामने खाक चाट कर बात करता है, तो मैं उसे क्या डाटूँ?

खाक चाटना–अनुनय-विनय करना। उ० खाक नही चाटूँगा, चाहे काम हो या न हो।

खाक छानना–बहुत खोजना। उ० सारे घर की खाक छान डाली, पर मेरी कमीज़ न मिली। २ मारा-मारा फिरना। उ० पैसे थे, तब तो सीधे बात नही करते थे और आज जब खाक छान रहे हैं तो मिलने पर सलाम करते हैं।

खाक डालना–१ बात भी न चलाना। उ० उस पर तो खाक डालो। २ ढकना, किसी को मालूम न होने देना। उ० उस बात पर खाक डालने मे ही भला है। ३ बेइज़्ज़त करना। उ० उस पर क्यो खाक डालते हो?

ख़ाक फांकना–१ मारा-मारा फिरना। उ० वह नौकरी के लिए चारो तरफ खाक फाँकना है। २ झूठ बोलना।

ख़ाक बरसना–अच्छी दशा न रहना।

ख़ाक में मिलना या मिल जाना–१ चौपट हो जाना। उ० राम अपने आप खाक मे मिल गया। २ नेस्तनाबूद हो जाना, अस्तित्व मिट जाना, हस्ती मिट जाना। उ० कितनें ही गाँव खाक मे मिल गये।

ख़ाक में मिलना–मिटा देना। बर्बाद कर देना। उ० उसने अपनी सारी ज़ायदाद खाक मे मिला दी।

खाकर डकार न लेना–बिलकुल हज़म कर लेना। उ० उसने मेरा धन खाकर डकार तक न ली।

खाक सिर में डालना—शोक से पागल होना। उ० खाक सिर मे डालने से क्या होगा, जो होना था, हो गया।

ख़ाका उडाना—१ वदनामी करना। उ० मेरा खाका उडा कर आप क्या पायेंगे ? २ हँसी उडाना।

खाका उतारना—१ एकदम नकल करना। उ० वह खाका उतारने मे बडा चालाक है। २ ढाँचा बनाना।

खाका खींचना—१ मज़ाक उडाना। २ वर्णन करना।

ख़ाकी अडा—१. हरामज़ादा। २ ऐसा अडा, जिसमे बच्चा न निकले। ३ बेकार चीज़। उ० इन खाकी अडो को कौन खरीदेगा ?

खा जाना—१ चट कर जाना, ले लेना। उ० वह जिसकी चीज़ खा जाता है, फिर देने का नाम नही लेता। २ बर्बाद कर देना। उ० मैं खूब जानता हूँ कि तुम मुझे खा कर ही चैन लोगे।

खाट फट जाना—किसी का इतना अधिक वीमार होना कि उसके पाखाने-पेशाव के लिए नीचे से चारपाई काट देना पडे।

खाट-खटोला—गृहस्थी का सामान। उ० अभी नये मकान मे खाट-खटोला ले जाने हैं।

खाट तोडना—निष्क्रिय पडे रहना।

खाट निकलना—अर्थी निकलना। उ० हैज़े से हर साल हज़ारो खाटें निकल जाती हैं।

खाट पड़ना—दे० 'खाट पर पडना'।

खाट पर पडना—वीमार होना। उ० वह तीन महीने से खाट पर पडा है।

खाट पर पडे खाना—वीमारी की हालत मे व्यय करना। उ० क्या करूँ, इस गरीवी हालत मे सैंकडो खाट पडे खा गया। भविष्य की चिन्ता खाए डालती है।

खाट लगना—दे० 'खाट से लगना'।

खाट से उतार लेना—मरने के करीब आदमी को चारपाई से उतार कर ज़मीन पर रखना।

खाट से उतारा जाना—मरणासन्न होना। उ० वह वृद्ध आज सुवह से ही खाट पर से उतार दिया गया है।

खाट सेना—वीमार होकर खाट पर पडा रहना। उ० तीन महीने से वे खाट से रहे हैं।

खाट से लगना—वीमारी के कारण चारपाई से उठने की भी ताकत न होना। उ० वह वेचारा वर्षों से खाट से लगा है।

खाता-कमाता—खर्च भर कमा लेने वाला। उ० वह कोई वडा आदमी नही है, हाँ खाता-कमाता है। भरपेट भोजन के लाले नही पडते।

खाता पड़ना—१ लेन-देन आरम्भ होना। २ हिस्से पड़ना। उ० तुम्हारे खाते वहुत नहीं पडा है।

खाता-पीता होना—साधारण आराम से दिन विताना, न वहुत धनी, न वहुत गरीव होना। उ० धनी तो नही है पर गरीव भी नही कहा जा सकता, 'खाता-पीता' है।

ख़ातिर जमा रखना—विश्वास रखना। उ० मैं तुम्हारे साथ हूँ, खातिर जमा रक्खो।

ख़ातिर में आना—कदर होना। उ० हर जगह वह खातिर मे आता है।

ख़ातिर में न लाना—इज्ज़त न करना। उ० छोटो की तो कोई वात नही, पर वडे आदमियो को खातिर मे न लाना ठीक नही है।

खाते-पीते लातें मारना—वडा और धनी होने पर भी अपनी हालत से खुश न रहना।

खाते वाक़ी—किसी के यहाँ कर्ज। उ० मेरे सैंकडो रुपये मोहन के खाते वाक़ी हैं।

खादर लगना—चरने योग्य घास उगना। उ० वहाँ मवेशियो को ले चलो, खूव खादर लगा है।

खान-पान करना—खाने-पीने का सवध रखना, खाना-पीना। उ० आप तो अव शूद्रो के साथ भी खान-पान कर रहे हैं।

खाना और गुर्राना—जिसके भरोसे अपना जीवन निर्वाह करना, उसी पर ऐंठ दिखाना। उपकार न मानना। उ० शर्म नही आती है कि खाते हो और गुर्राते हो ? क्या यहाँ तुम्हारे वाप का कोई नौकर है ?

खाना-कमाना—मेहनत-मज़दूरी करके जीवन निर्वाह करना। उ० भाई आजकल ज़माना नाजुक है, किसी तरह खाना-कमाना चल जाय, यही वहुत है।

खाना ख़राव करना—१ घर उजाड देना। उ० क्यो किसी शरीफ का खाना खराव करते हो। २. झझट डालना।

खाना न पचना–बेचैन रहना। उ० तुम्हारे विना उसे खाना नही पचता।

खाना-पीना लहू करना–दे० 'खाना-पीना लहू-मिट्टी करना'।

खाना-पीना लहू मिट्टा करना–लडाई-झगडे, क्रोध या शोक के कारण घर का सारा मजा जाता रहना। उ० केवल तुम्ही ने घर भर का खाना पीना लहू-मिट्टी कर दिया है।

खाना यहाँ तो पानी पीना वहाँ–बहुत जल्दी करना। उ० खाना यहाँ और पानी पीना वहाँ हो, तो मेरे यहाँ आप न आया करें।

खाने के दांत और दिखाने के दांत और होना–बाहर-भीतर मे फर्क होना। उ० भाई, आपको मैं अच्छी तरह जानता हूँ, आपके खाने के दांत और हैं और दिखाने के और हैं। जो इन बातो को न जाने उन्हे चकमा दीजिये।

खाने के लाले पडना–खाने को न मिलना।

खाने को दौडना–१ बुरी तरह पेश आना। २ क्रोध करना। ३ चढ बैठना।

खा-पका जाना–दे० 'खा-पका डालना।'

खा-पका डालना–खतम कर डालना। उ० भाई जो कुछ मेरे पास था, सब खा-पका डाला, अब केवल आप लोगो का आसरा है।

खाविंद करना–नया पति करना।

खाया-वरदारी करना–बहुत चापलूसी करना। उ० खाया-वरदारी करना मैं पसद नही करता।

खार खाना–१ बुरा मानना। उ० इसी बात पर तुम खार खा गए? २ रुष्ट या क्रुद्ध होना। उ० तुम खार खाए अपने घर बैठे रहो। मेरा क्या करोगे?

खार-खूर करना–छोटा-मोटा काम करना। उ० मुझे इस वक्त काम ही क्या है? कभी इच्छा होती है तो खार खूर-कर लेता हूँ।

खार गुजरना–बुरा लगना। उ० अगर आपको खार गुजरता है तो मैं कही और जाऊँ?

खार निकालना–बदला लेना। उ० आज तुम्हारी बन आई है, जो चाहो कर लो, मैं भी कभी खार निकालूंगा।

खारी कुएँ मे डाल देना–वर्बाद कर देना, ज़ाया कर देना। उ० दुश्मन से सारा हाल कहेगे विशाल का, डालेंगे अपनी बात को खारी कुएँ मे हम।

खाल उड़ाना–बहुत मारना। उ० अब उस मोहल्ले मे गए तो बिना खाल उडाए न छोडूंगा।

खाल उधेड़ना–दे० 'खाल खीचना'।

खाल उपाड़ना–१ किसी का चमडा खीच लेना। २ सख्त सज़ा देना।

ख़ाल खींचना–बहुत ज्यादा मारना। इतना मारना कि चमडा छिल जाय। उ० पुलिस जब चोरो को पकडती है तो इतना मारती है कि खाल खीच लेती है।

खाल बिगड़ना–शामत आना, पिटने को जी चाहना। उ० तेरी खाल तो नही बिगडी, जो उसे छेडता है।

खाल मे मस्त होना–अपने आप मे खुश रहना। उ० वह तो खाल मे मस्त है, जैसे ससार से उसका कोई वास्ता ही नही।

ख़ालसा करना–बरबाद करना। उ० बहुत से हिन्दू पाकिस्तान मे खालसा कर दिए गये।

ख़ाल से लगाना–दे० 'खालसा करना'।

खाला-ऊँचा–१ भला-बुरा। २ हानि-लाभ। उ० व्यापार मे खाला ऊँचा दोनो ही देखना पडता है।

ख़ाला जी का घर–१ आसान काम। उ० इसे खाला जी का घर मत समझो। ज़रा परिश्रम करो। २ ऐसा स्थान जहाँ अपने को हर तरह की सुविधा हो। उ० यह अस्पताल क्या है, खाला जी का घर है।

ख़ाली करना या कर देना–१ छोड देना। उ० इस मकान को दिन भर मे खाली कर दो। २ रिक्त करना। ३ केवल करना। उ० खाली यही काम करने आए हो या और?

ख़ाली जाना–१ बेकार होना, बेकार जाना। उ० उसका रहना खाली गया। यह भी वार खाली गया। २ असफल लौट जाना। बिना कुछ लिए जाना। उ० उसे भी खाली जाना पडा? ३ झूठा सिद्ध होना। उ० देखो बात ख़ाली न जाय।

खाली ढोल–बातो का धनी, भडभडिया।

खाली दिन–ज्योतिष के अनुसार अशुभ दिन जिस दिन कोई नया या शुभ काम न किया जा सके। उ० आज तो ख़ाली दिन है, काम शुरू करना ठीक नही।

खाली बैठना–बिना रोजगार के बैठना। उ० खाली बैठना हो तो घर जाओ।

ख़ाली हाथ—१ जिसके पास रुपये-पैसे न हो। उ० वह बेचारा भी खाली हाथ है। २ बिना हथियार के। उ० लडाई मे खाली हाथ मत जाओ। ३ बिना भेंट-उपहार के। उ० राजा के यहाँ खाली हाथ कैसे जाऊँ? ४ विचार या भावना से रिक्त। उ० खाली हाथ लिखेंगे तो इससे अच्छा क्या लिखेंगे। ५ बिना कुछ लिए दिए। उ० खाली हाथ से काम होना स भव नही ज्ञात होता।

खाली होना—१ बेकार होना। उ० आजकल मैं खाली हूँ, अगर आप कही चलें तो मैं भी चल सकता हूँ। २ रुपया-पैसा पास मे न होना। उ० उससे क्या माँगोगे, वह तो खुद खाली है। ३ रिक्त होना। यह वर्तन खाली है। ४ कमज़ोर होना।

खास ख़ास—१ अच्छे और प्रतिष्ठित। उ० खास खास लोगो को निमंत्रित कर दो। २ चुने हुए। उ० खास खास फूलो को भेजना, सब लेकर क्या करेंगे।

खिच जाना—१. मोहित होना। उ० उसको देखते ही मेरा मन खिच गया। २ विरुद्ध हो जाना। उ० उसी दिन की बात से मैं तो खिच गया। ३. खीच ली जाना, निकलना। उ० राजपूतो मे बात-बात पर तलवारे खिच जाती थी।

खिचे रहना—विरक्त, नाराज़ या दूर रहना।

खिचडी खाते पहुँचा उतरना—बहुत कोमल होना। उ० मनुष्य को इतना नाजुक नही बनना चाहिये कि खिचडी खाते पहुँचा उतर जाय।

खिचड़ी खिलाना—दे० 'खीर खिलाना'।

खिचड़ी छुआना—नववधू से पहले-पहल भोजन बनवाना।

खिचड़ी पकना—गुप्त भाव से कोई सलाह होना। उ० यहाँ भी कुछ खिचडी पक रही है, पर इसका परिणाम बुरा होगा।

खिचडी पकाना—१ आपस मे धीरे-धीरे सलाह करना। उ० यहाँ खिचडी पकाना ठीक नही है। २ षड्यंत्र रचना। उ० उनके विरुद्ध खिचडी पकाओ तो तुम्हें मानूँ।

खिचड़ी होना—१ कुछ बाल सफेद होना। उ० अरे तुम तो अभी लडके हो, तुम्हारे भी बाल खिचडी हो गये? २ मिल-जुल जाना। उ० सारी चीजें खिचड़ी हो गई।

खिदमत करना—१ सेवा करना। उ० सबको अपने बड़ों की खिदमत करनी चाहिये। २. मारना। आज उनकी ऐसी खिदमत करूँगा कि कुछ दिन याद रक्खेंगे।

खियानत करना—रुपया चट कर जाना। रुपया मार लेना। उ० तुम बेईमान का क्या ठिकाना? तुम्हे खियानत करते देर नहीं लग सकती।

खिल उठना—१. प्रसन्न हो जाना, २ सुन्दर लगने लगना।

खिलखिला कर हँसना—ज़ोर से हंसना। उ० मेरी बात सुनते ही वह खिलखिला कर हँस पडी।

खिल जाना—प्रसन्न होना। उ० परीक्षाफल देखते ही वह खिल गया।

खिल्लियो मे उडाना—दे० 'खिल्ली मे उडाना'। उ० ज़रा-सी बात मे रोये ये हाल हो जिसका, वो खिल्लियो मे फिर क्या उडाए किसी को!

खिल्ली उड़ाना—हँसी उडाना। उ० उसकी खिल्ली न उडाओ।

खिल्ली मे उड़ाना—मूर्ख बनाना।

खींच-खांच कर—किसी तरह, जैसे-तैसे, येन-केन-प्रकारेण। उ० खीच-खाँच कर काम खतम करो।

खींच-तान करना—१. किसी वस्तु को पाने के लिए छीना-झपटी करना। २ किसी बात का कोई विशेष अर्थ निकालने के लिए घुमा-फिरा कर अर्थ निकालना।

खीर खिलाना—लड़के वाले की ओर के चार कुँवारे लडके तथा वर को बेटी वाले का कुछ देकर खीर खिलाना। उ० खीर खिलाने के लिए एक सायकिल और एक अँगूठी तो चाहिये ही।

खीर चढाना—बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार करना।

खीरा-ककडी समझना—बहुत छोटा या तुच्छ समझना। उ० सच्ची बात यह है, कि वह आपको खीरा-ककडी समझता है चाहे आप खुश हो चाहे नाराज़।

खीरे के मोल बिकना—बहुत सस्ता होना। उ० आज से १०० वर्ष पहले घी तो खीरे के मोल बिकता था।

खीस काढना—१. गरीब बन कर कुछ आरज़ू करना। छोटी-छोटी चीज के लिए क्यो खीस

काढते फिरते हो? २ दाँत निकाल कर हँसना। उ० क्या बात-बात पर खीस काढते हो? ३ मर जाना। उ० (व्यग्य, घृणा या क्रोध के अर्थ मे) एक लाठी मे ही खीस काढ दोगे!

खुगीर की भर्ती—वेकार आदमियों का जमावडा। उ० घर मे केवल खुगीर की भर्ती है, कुछ करने वाला कोई भी नही है।

खुजलाना—१. कोई काम करने की इच्छा होना। उ० वहाँ भी कुछ बोलने के लिये तुम्हारा मुँह खुजला रहा था। २. कुछ पाने की इच्छा होना। उ० थप्पड पाने के लिए तुम्हारा मुँह खुजला रहा है। अन्य प्रयोग—तुम्हारी खुजला रही है जो यहाँ आई हो। मेरा हाथ किसी को पीटने के लिए खुजला रहा है। हाथ खुजला रहा है, कुछ प्राप्ति होगी। पैर खुजलाता हो तो चले जाओ, नही तो जाने की कोई आवश्यकता नही है।

खुजली उठना—१ कामातुर होना। स्त्री मे सहवास की इच्छा उत्पन्न होना। २. मार खाने की इच्छा होना। उ० खुजली वहुत उठती है, डडा उठाऊँ?

खुजली मिटना—१. सभोग से स्त्री का आसूदा या शात होना। २. अच्छी तरह पिटना। उ० दो-चार दिन मे तुम्हारी भी खुजली मिटती है न।

खुदा की मार—भगवान का प्रकोप। उ० जव तुम्हारे ऊपर खुदा की मार पडी है, तो कोई क्या सहायता करेगा?

खुदा-खुदा करके—किसी तरह से, राम-राम करके वड़ी कठिनाई से। खुदा-खुदा करके उसने इस काम को तो पार लगाया।

खुदा दिखाई देना—भगवान याद आना। विपत्ति मे खुदा ही दिखाई देता है।

खूब जाना—चुभ जाना, गड जाना। उ० खूब गई रंग सुनहरी यों दिले वेताव में। जिस तरह से डूब जाता है तिला मीमाव मे।

खुरखार करना—छोटा-मोटा काम करना। उ० खुरखार किया करो, यों किसी के यहाँ खाना ठीक नही।

खुरपी-जाली सँभालना—१. साईस का पेशा अपनाना। २. घास काटने का काम शुरू करना।

खुरी करना—बहुत जल्दी करना। उ० खुरी करोगे तो काम विगड़ जायगा।

खुर्रे चने वन जाना—वेमुरव्वत हो जाना। विना शील वाला होना। उ० न वहुत मिलनसारी अख्तियार करो, न खुर्रे चने ही वन जाओ।

खुल कर—मजे मे, अच्छी तरह, विना रुकावट के। उ० आज खुल कर देखो। आज खुलकर खाया। आज खुल कर पाखाना हुआ। आज खुल कर वात की।

खुल कर कहना—१ वेधड़क कहना। अगर सच्ची वात है, तो खुल कर कहो। २ साफ-साफ़ कहना। पूरी वताना। उ० खुल कर कह डालो। कोई कोना गोशा छोडना मत।

खुल कर खेलना या खुल खेलना—आज़ादी से काम करना। विना सकोच या वाधा के काम करना या खेलना। उ० जव खुल खेलने का मौका मिले तो अपनी योग्यता दिखाऊँ।

खुल जाना—१ साफ-साफ वतला देना, सारा रहस्य कह देना। उ० मार पडेगी, तो चोर स्वय खुल जायगा। २. कोई काम शुरू करना। ३ घुल-मिल जाना। उ० खुल जाएगा, तो अच्छी तरह वात करेगा।

खुलता रग—१. हलका रग। उ० साडी का खुलता रग होता, तो और भी अच्छी लगती २. अच्छा रग, जँचने वाला रग। उ० किसी भी खुलते रग मे रँग देना।

खुल पडना—दे० 'खुल जाना'।

खुला-खुला फिरना—आज़ादाना या वेरोक-टोक के फिरना। उ० वह तो खुला खुला फिरता है, भला उस पर वारट कहाँ है?

खुला खेल—१ सामने का खेल, स्पष्ट काम। उ० भाई मुझे खुला खेल पसद है। २. किसी की हानि के लिये किया गया चालवाज़ी का काम, जो छिपकर या भीतर ही भीतर न किया जाकर सामने या खुले रूप मे किया जाय। उ० मैं तो कहता हूँ कि वे चाहे जो भी कहना चाहे, मुझे ज़रा भी परवाह नही। लेकिन हाँ, मर्द हैं तो खुला खेल खेलें। छिप कर घात करना हिजडो का काम है।

खुला हाथ—खर्च करने वाला, शाहखर्च।

खुला होना—दे० 'खुल जाना'।

खुली मुट्ठी का होना—उदार होना, दिल वाला होना। उ० हमारे मालिक खुली मुट्ठी के हैं, कभी इन्कार नही करते।

खुली सोढ़ कहना—खुल्लम-खुल्ला कहना, अलानिया कहना, सबके सामने कहना ।

खुली सोढ़ गाना—दे० 'खुली सोढ कहना' ।

खुले मैदान—दे० 'खुले आम' ।

खुले आम—दे० 'खुले खज़ाने' ।

खुले ख़ज़ाने या खुले मैदान—सबके सामने। प्रकट मे। उ० खुले खज़ाने उसने ख़ून किया है।

खुले दिल से—उदारतापूर्वक । उ० है तो यह गरीब ही, पर दान खुले दिल से देते हैं।

खुले बाज़ार—दे० 'खुले खज़ाने' ।

खुल्लम-खुल्ला कहना—१ साफ-साफ कहना । उ० मैंने तो बात खुल्लम खुल्ला कह दी । २ सबके सामने कहना । उ० खुल्लम-खुल्ला गाली न दो।

ख़ुशामदी टट्टू होना—सामने बडाई करने वाला होना। उ० भाई ख़ुशामदी टट्टू होना मैं पसद नही करता । सच्ची बात कहो, वह मीठी हो या कड़वी ।

ख़ुशी से ज़मीन पर पांव न पड़ना—बहुत प्रसन्न होना ।

खुश्की देना—ताना मारना। उ० खुश्की मत दो, तुम भी मुझसे कम नही ।

खुसर-फुसर करना—१ जालसाज़ी-करना । उ० मैंने सुना है कि आप आज कल कुछ खुसर-फुसर कर रहे हैं। मुझे तुम्हारे खुसर-फुसर करने की परवाह नही। २ धीरे-धीरे बात करना। उ० क्या इतनी देर से खुसर-फुसर कर रहे हो ?

खुसुर-फुसुर करना—दे० 'खुसर-फुसर करना' ।

खूंटा गाडना—१ हद बाँधना । उ० यह मैंने खूंटा गाड दिया । इसके आगे मत जाना । २ शर्त बदना । ३ अधिकार करना, कब्ज़ा जमाना । उ० किस कागज़ में देख कर आपने यहाँ खूंटा गाडा है ?

खूंटी निकलना—उस्तरा आदि से बनाने के बाद दाढी का ज़रा-ज़रा जमना । उ० तुम्हे शीघ्र ही खूंटी निकल आती है ।

खूंटे निकालना—नाई का छुरे से दाढी इस प्रकार बनाना कि ज़रा भी न मालूम हो ।

खूंटी के बल कूदना—किसी दूसरे के बल पर अभिमान करना । उ० तुम जिस खूंटे के बल कूद रहे हो, उसको मैं मिनटो मे खतम कर दूंगा ।

खूंटे पर मारना—१ अपमान करना। उ० किसी को खूंटे पर मारना ठीक नही है। २ बाँध कर मारना । ३ बहुत निर्दयता करना ।

खूंटे से बांधना—शादी हो जाना । उ० खूंटे से बँधते ही सब शौक हवा हो जायेंगे ।

ख़ून उतरना—गुस्से से आँख और मुँह लाल होना । उ० तुम्हे बहुत ख़ून उतर आता है। ज़रा गभीर बनो ।

ख़ून उबलना—दे० 'ख़ून खौलना' ।

ख़ून करना—मार देना । उ० तुम वहाँ से किसका ख़ून करके भगे हो ?

ख़ून का जोश आना—अपने कुल का प्रेम उमडना । उ० भाई को देखते ही ख़ून का जोश आ गया और वह गले से लिपट गया ।

ख़ून पानी करना— बहुत मेहनत करना ।

ख़ून का प्यासा—प्राण लेने का इच्छुक । उ० मैं उसके ख़ून का प्यासा हूँ, जब भी मिलेगा मार डालूंगा ।

ख़ून की नदी बहाना या बहा देना—बहुत मार-काट करना । उ० नादिरशाह ने ख़ून की नदी बहा दी ।

ख़ून के आंसू बहाना—दिल से रोना ।

ख़ून खच्चर या ख़ून खराबा करना—मार-काट करना । उ० ख़ून खराबा करना हो, तो यहाँ से जाओ ।

ख़ून खुश्क होना—बहुत डर जाना । उ० उस पागल आदमी को देखते ही मेरा ख़ून खुश्क हो गया ।

ख़ून खौलना—बहुत क्रोधित हो जाना । उ० आपकी बातें सुनते ही मेरा ख़ून खौलने लगता है ।

ख़ून गर्दन पर चढ़ना—दे० 'ख़ून सिर पर सवार होना' ।

ख़ून गर्दन पर सवार होना—दे० 'ख़ून गर्दन पर चढना' ।

ख़ून चूसना—१ कष्ट देना । २ सार या तत्त्व चूस लेना । ३ निस्सार कर देना।

ख़ून ठंडा होना—डर जाना । उ० बहुत बढ-बढ कर बातें कर रहा था, पर मुझे देखते ही उसका ख़ून ठंडा हो गया ।

खून पानी हो जाना—बहुत अधिक कष्ट होना। उ० दो महीने की बीमारी मे बेचारे का खून पानी हो गया।

खून पीना—१. मार डालना। २ तग करना। ३ कष्ट सहना। ४ बहुत कडा दड देना। उ० अब ऐसी शरारत की तो खून पी जाऊँगा।

खून-पसीना एक करना—बहुत मेहनत करना।

खून बहाना—१ मार डालना। उ० आज मैं खून बहा कर ही छोडूंगा। २ अपना बलिदान करना। उ० देश के लिये मैं खून बहाने को तैयार हूँ।

खून मुंह लगना—आदत पडना, मुफ्त का मज़ा मिलना। उ० तुमने उसे पिला क्या दी। उसके मुंह मे खून लगा दिया। अब वह रोज़ाना आ जाता है।

खून सफेद होना या हो जाना—क्रूर बनना। उ० आजकल आपका खून सफेद हो गया है।

खून (सिर पर) सवार होना—१ किसी को मार डालने को तैयार होना। उ० आज खून सिर पर सवार है, मैं मान नही सकता। २ खून करने के बाद खूनी का इस ढग से होना कि देखते ही लोग पहचान जायँ। उ० उसके सिर पर खून सवार है, वह अवश्य पकडा जायगा। ३ मरने के समीप आना।

खून सुखाना—दुःख या चिंता से कमज़ोर होते जाना। उ० क्यो तुम व्यर्थ मे खून सुखा रहे हो?

खून सूखना—भयभीत होना। उ० मुझको देखकर तुम्हारा खून क्यो सूख जाता है?

खेत आना—लडाई मे मारा जाना। उ० इस लडाई मे सैंकडो खेत आये।

खेत कमाना—जोत और खाद आदि से खेत की पैदावार बनाना। उ० भाई खूब खेत कमाया हुआ था, अब भी काफी अनाज न होगा तो कब होगा?

खेत करना—युद्ध करना। उ० खेत करने के लिए डेढ बीते का कलेजा चाहिये।

खेत का लिखा-पढा—बेवकूफ, किसान। खेती करने वाला। उ० खेत का लिखा-पढा, पत्र लिखना क्या जाने?

खेत छोड़ना—रण छोड कर भाग जाना। उ० खेत छोड़ना कायरो का काम है।

खेत पडना—दे० 'खेत आना'।

खेत रखना—जीतना, विजय पाना। उ० केवल तुमने खेत रक्खा नही तो सब डर गये थे।

खेत रहना—युद्ध मे मारा जाना। उ० अबकी बार बहुत थोडे आदमी खेत रहे।

खेत हाथ रहना—जीतना, विजय होना। उ० बहुत कोशिश करने पर भी खेत उनके हाथ न रहा।

खेती मारी जाना—पैदावार बरबाद होना। उ० इस साल सूखे से सारी खेती मारी गई।

खेती लोट जाना—ज्यादा पानी पडने या ओले पडने या तेज़ हवा बहने से फसल का ज़मीन पर लोट जाना। उ० इस साल खेती लोट गई है, अब अकाल पडेगा।

खेल करना—ठीक से काम न करना। तमाशा करना। उ० खेल करने से काम न चलेगा, यदि करना हो तो मन लगा कर करो।

खेल खराब करना—काम बिगाडना। उ० तुमने सारा खेल खराब कर दिया, नही तो कम से कम १० हज़ार का लाभ था।

खेल खराब होना—काम बिगडना। उ० खेल खराब होने पर सभी हँसते हैं।

खेल खेलना—१. चाल चलना। उ० क्या आप मेरे साथ खेल खेल रहे हैं? २ मज़ाक करना। उ० खेल मत खेलिए। ३ आसानी से करना। उ० यह काम क्या है, खेल खेलना है।

खेल खेलाना—बहुत परेशान करना। उ० चार दिन के लडके, क्या मुझे खेल खेला रहे हो?

खेल जानना—दे० 'खेल समझना'।

खेलना खाना—आनन्द से दिन बिताना। उ० अभी खेलो खाओ, तुम्हे किस चीज़ की चिन्ता है?

खेल समझना—आसान जानना। उ० हम तो इस काम को खेल समझते हैं।

खेल होना—आसान होना।

खेला-खाया—अनुभवी, चालाक। उ० सँभल कर हाथ डालना, वह भी खेला-खाया है।

खेला-खेलाकर मारना—कष्ट दे-देकर मारना। उ० अरे भाई अगर मारना ही है तो अभी मार दो खेला-खेलाकर [illegible] र्थ। [illegible]

खेली-खाई—पुरुष-समागम की अनुभवी। उ० वह खेली-खाई लडकी है।

खेह खाना—१ बुरी दशा मे रहना। उ० आज-कल वह खेह खा रहा है। २ बेकार समय खराब करना। उ० क्यो महीनो से खेह खा रहे हो, कुछ काम करने मे जी नही लगता क्या ?

खैर मनाना—खतरे से बचने की दुआ करना। उ० बेटा लड़ाई मे जा, मैं यही से तेरी खैर मनाया करूँगी।

खोइछा भरना—विदाई के समय स्त्री के अचल मे चावल, गुड तथा रुपया आदि देना।

खोगीर की भर्त्ती—बेकार लोगो का जमाव। उ० खोगीर की भर्त्ती से यहाँ क्या लाभ होगा, दो-चार अच्छे आदमी काफी हैं।

खोज मारना—दे० 'खोज मिटाना'।

खोज मिटाना या मिटा देना—ऐसे चिह्नो को मिटाना जिनसे खोज हो सके। उ०चोर चोरी करने के बाद जब सामान लेकर चलते है तो खोज मिटा देते हैं।

खोटाई करना—खोटा या बुरा काम करना।

खोटा खाना—बेईमानी से कमा कर खाना। उ० भाई खोटा खाना मुझे अच्छा नही लगता।

खोटा पैसा—१ ऐसा धन जो बुरे कामो से कमाया गया हो। उ० भाई खोटा पैसा मैं हाथ से नही छू सकता। २ खराब या न चलने वाला पैसा। उ० खोटे पैसे मेरी दूकान पर न लाया करो। ३ बुरी चीज़। उ० तुम्हारा खोटा पैसा है तो मैं क्या करूँ ?

खोटी-खरी सुनाना—फटकारना। उ० मैं उसे खूब खोटी खरी सुनाता हूँ, पर उस पर कुछ भी असर नही होता।

खोद खोद कर पूछना—तर्क के साथ सभी बातें पूछना, अच्छी तरह छानबीन करना। उ० बिना खोद-खोद कर पूछे मैं कैसे सब बातें जान सकता हूँ।

खोद-विनोद करना—दे० 'खोद-खोद कर पूछना'।

खोपड़ी खा जाना—व्यर्थ बकवाद करना। व्यर्थ की बात से दिमाग खराब करना। उ० क्यो खोपडी खा जा रहे हो, हमारी तबीयत ठीक नहीं है।

खोपड़ी खुजलाना—पीटे जाने की इच्छा होना। पिटने के लिये उपाय करना, शामत आना। उ० आज तुम्हारी खोपडी खुजला रही है क्या ? जो इतनी गलतियाँ कर रहे हो ?

खोपडी गंजी करना—मार कर खोपडी के बाल उडा देना। उ० जब तक खोपडी गंजी न करूँगा, तुम न मानोगे।

खोपडी गंजी होना या हो जाना—ऐसी मार खाना कि सर के सब बाल खतम हो जायें। उ० पुलिस की मार के कारण चोर की खोपड़ी गजी हो गई।

खोपड़ी चलना—पागल होना। उ० बहुत पढने से भी खोपडी चल जाती है।

खोपड़ी चाट जाता—दे० 'खोपडी खा जाना'।

खोपडी पर खडा होना—बिल्कुल पास होना, सर पर होना।

खोया-खोया—गुम-सुम।

खोपड़ी लाल करना—मारकर सर फोडना।

खोया जाना—चकमका जाना।

ख्याल बाँधना—कल्पना करना। उ० केवल ख्याल बाँधने से काम न चलेगा, कुछ करो भी।

ख्याल मे रहना—१ याद मे रहना। उ० मैं हर समय आपके ही ख्याल मे रहता हूँ। २ ताक मे रहना।

ख्याल रखना—१ ध्यान रखना। उ० मैं अब जा रहा हूँ, ज़रा मेरे बच्चे का ख्याल रखना। २ दया-दृष्टि रखना। उ० जरा इस गरीब पर ख्याल रक्खा करें।

ख्याल रहना—१ याद रखना। उ० आपकी सब बातें मुझे ख्याल रहेगी। २ दया-दृष्टि रहना।

ख्याल से उतरना या उतर जाना—भूल जाना। उ० आज ही यह बात मेरे ख्याल से उतर गई।

ख्याली पोलाव पकाना—१ असभव बातें सोचना। उ० ख्याली पोलाव पकाने से क्या लाभ। २ सिर्फ सोचना। उ० आप केवल ख्याली पोलाव पकाना जानते हैं, कुछ काम करना नही। ३ बिना सर-पैर की बात करना। असभव बातें करना। उ० मेरे सामने ख्याली पोलाव मत पकाओ।

ख्वाब की बात—असंभव बातें। उ० ख्वाब की बातें करते रहोगे, तो उम्र ऐसे ही कट जायगी।

ख्वाब हो जाना—स्वप्न दोष हो जाना। उ० रोज़ रोज़ ख्वाब होना ठीक नहीं है, इसका इलाज कराओ।

ग

गंगई की तरह बोलना—बहुत बोलना । उ० यार गंगई की तरह बोलते हो, तुम्हारा मुंह भी नही दुखता ?

गंगा उठाना—गगा की कसम खाना । उ० उसने छोटी सी चीज के लिये गगा उठा ली, अब उसे क्या कहा सकता है ?

गंगाजल उठाना—गगा की कसम खाना । उ० गंगाजल उठा लो, तो मैं मान लूं ।

गंगाजली उठाना—गगाजल हाथ मे लेकर कसम खाना । उ० उसने गगा जली उठाकर कह दिया कि मैं तुम्हारे धन के वारे मे कुछ भी नही जानता ।

गंगा नहाना या नहा लेना—१ पाप खतम करना । उ० जीवन मे बहुत जगह पैर ऊँचे-नीचे पडे थे, कल चारो धाम की यात्रा खतम कर गगा नहाया । २ निश्चित होना । उ० लडकी का विवाह करके गगा नहा लिया । ३ कृतार्थ होना ।

गंगा पार कर देना—१ देश से निकाल देना । उ० वदनाम कर गगा पार कर देना चाहते हो क्या ? ३ झंझट से निकाल देना ।

गंगा लाभ होना—मरना । उ० वर्षों की बीमारी के बाद कल उनका गंगा लाभ हो गया ।

गंज डालना—बाज़ार लगाना । उ० मेरा विचार है कि अपने गाँव मे एक नया गज डालूं ।

गंजेड़ी यार—मतलब का साथी । उ० गँजेडी यार किसके । दम लगा के खिसके ।

गंडा तावीज करना—झाड-फूंक करना । उ० गडा-तावीज़ करने पर मेरा विश्वास नही है ।

गंदा करना या होना—भेद बता देना या खुलना । उ० (जुआरियो की भाषा) तुम्हारी वजह से सब गदे हो गये, नही तो मैं वहुत माल कमाता ।

गंदा पानी निकालना—सभोग करना ।

गँवं से—१ चुपके से । २ ढग से । उ० गँवं से रुपया निकाल लो ।

गचक्का खाना—धोखा खाना । उ० यही स्वभाव रहा तो एक दिन ऐसा गचक्का खाओगे कि याद करोगे ।

गच्चा खाना—दे० 'गचक्का खाना' ।

गच्चे मे डालना—धोखे मे या हँसनी मे डालना ।

गज़ट करना—१. बहुत मशहूर करना । उ० इस वात को गज़ट करने मे अपनी शिकायत है । २ सरकार का गज़ट द्वारा सर्वसाधारण को सूचित करना । ३ गज़ट मे निकालना ।

गज़ट होना—सरकारी गज़ट द्वारा सर्वसाधारण को सूचित होना । उ० उसका तबादला आज गज़ट हो गया ।

गजब-इलाही—ईश्वरीय कोप । उ० यह वर्षा नही गजब इलाही है, सारी फसल बह रही है ।

गज़ब करना—१ विचित्र बात या अनोखा कार्य करना । उ० भाई तुमने तो आज गज़ब कर दिया । सब लोग तुम्हारी तारीफ कर रहे हैं । २ जुलम करना, मुसीवत ढाना । उ० इतना गज़ब न करो, नही तो भोगोगे ।

गज़ब का—विचित्र, अपूर्व । उ० तुम्हारा लडका गजब का ख़ूबसूरत है ।

गज़ब टूटना—आफत मे पडना । आफत आना । उ० गज़ब टूटने पर कोई मित्र नही बनता ।

गजब ढाना—दे० 'गज़ब तोडना' ।

गजब तोडना—१ विचित्र काम करना । उ० आपने तो गजब तोड दिया । भला ऐसा कभी हुआ था । २ बहुत बडी मुसीबत ढाना । उ० ईश्वर ने यह गजब तोड दिया ।

गजबनाक होना—क्रोधित होना । उ० हर एक बात पर गजबनाक होना ठीक नही है ।

गज़ब पड़ना—दे० 'गज़ब टूटना' ।

गज भर की छाती करना—बहुत साहस करना । उ० इस काम को करने के लिए गज़ भर की छाती करनी होगी ।

गज भर की छाती होना—साहस होना । उ० अपने साथ मुझे देखकर उसकी गज भर की छाती हो गई ।

गज़ भर की जीभ होना—१ खाने का लालची होना । उ० बहुत ज्यादा घूमने से उसकी गज भर की जीभ हो गई है । २. बहुत बड-बड करना । उ० चुप रहो । आजकल तुम्हारी जीभ गज़ भर की हो गई है ।

गजरदम—बहुत तडके । उ० वह सर्वदा गजरदम उठ कर पढता है ।

गजरदम करना—खूब थुरना या पीटना । उ० ऐसा गजरदम करूंगा कि छठी का दूध याद आ जायगा ।

गजर-बजर खाना—गडबड खाना। इधर-उधर की चीज़ें खाना। उ० आजकल हैज़ा फैला है, गजर-बजर न खाया करो।

गज़रबजे—दे० 'गज़रदम'।

गटई काटना—दे० 'गला काटना'।

गटकना—दे० 'गट करना'।

गट करना—खा जाना। उ० देखते ही देखते वह सारा खाना गट कर गया।

गट-गट सुनना—चुपचाप सुनना।

गटपट करना—१ गडबडी करना। २ घालमेल करना। ३ प्रसग करना।

गटपट होना या हो जाना—१ प्रेम से लिपट जाना। २ गडबड होना। उ० पता नही कैसे सामान रक्खा कि सब गटपट हो गया।

गट्ट करना या कर जाना—१ हडप जाना। उ० मेरा सारा धन मोहन गट्ट कर गया। २ खा जाना। उ० इतनी जल्दी सब पूडियाँ गट्ट कर गए!

गट्टा उखाडना—हरा देना, परास्त कर देना। उ० पहली ही बार उसने गट्टा उखाड दिया, अब क्या लडोगे?

गठरी करना—बचा कर रखना। उ० उसका आज तक गठरी किया रुपया सब मिला कर पाँच हज़ार हुआ है।

गठरी बाँधना—१ सर्दी के मारे घुटना और छाती एक करना। २ जाने को तैयार होना। उ० अब गठरी बाँधो, नही तो देर हो जायेगी।

गठरी कर देना—हाथ-पैर तोड देना। उ० सीधी तरह से मेरी रकम दे दो, नही तो गठरी कर दूंगा।

गठरी मारना—चालाकी से किसी का माल चुरा लेना। उ० गठरी मारने से काम न चलेगा, कुछ काम करो।

गठाव गोठना—उपाय निकालना। उ० कोई गठाव गोठिये, नही तो काम न चलेगा।

गडग मारना—१ डीग हाँकना। उ० केवल गडग मारना तुम जानते हो, कुछ काम करना तो चाहते ही नहीं। २ गप्प मारना। उ० आजकल गडग ही मार रहे हो या कुछ कर भी रहे हो? ३ घमड करना।

गडग हाँकना—दे० 'गटग मारना'।

गड्ड का गड्ड—समूह का समूह, बहुत-सा। उ० गड्ड का गड्ड कपडा रोज़ाना कहाँ से लाते हो?

गडढा खोदना—१ हानि करना। नुकसान पहुँचाना। २ किसी को नीचा दिखाने या गिराने का उपाय करना। उ० क्यो उसके लिए गड्ढा खोद रहे हो?

गड जाना—लजा जाना। उ० औरतें अनजान पुरुष को देखकर शर्म से गड जाती हैं। मुझे देखकर क्यो गड रही हो?

गडप कर जाना—दे० 'गट्ट करना'।

गड़रिया पुरान—मूर्खों या गँवारो की बात। उ० मेरे आगे गडरिया पुरान न गाओ।

गड़हा पड़ना—गड्ढा हो जाना।

गडहा पाटना या पाट लेना—१ कमी को पूरा करना। उ० भाई हमारी कमाई से गडहा पाटना कठिन है। २ गडढो को भरना। ३ रूखा-सूखा खाकर पेट भरना। उ० भोजन क्या मिलता है, किसी तरह गडहा पाट लेता हूँ। ४ विरोध दूर करना।

गडहा भरना—दे० 'गडहा पाटना'।

गडहे पडना—गहरा हो जाना। उ० दरवाज़े पर जितने गडहे पड गये हैं, सब को पाट दो।

गडहे मे पडना—१ कष्ट मे पडना। उ० गडहे मे पडने पर कोई मदद नही करता। २ असमजस मे पडना। कठिनाई मे पडना। उ० क्या करूँ, ऐसे गडहे मे पडा हूँ कि कुछ कहा नही जाता।

गडे कोयले उखाड़ना—बीती बातो को फिर से सामने लाना, पुरानी बातो की याद दिलाना। उ० गडे कोयले उखाडने से क्या लाभ, जो सामने है उसे देखो।

गडे मुर्दे उखाडना—दे० 'गडे कोयले उखाडना'।

गढ-गढ कर बातें करना—नमक-मिर्च लगा कर बातें करना। झूठ-मूठ की बात बना कर कहना। उ० गढ-गढ कर बातें करने मे आप बडे पटु हैं।

गढ-गढ कर बातें बनाना—दे० 'गढ-गढ कर बातें करना'।

गढ जीतना या जीत लेना—१ बहुत कठिन काम करना। उ० उसे मारना तुम्हारे लिए गढ जीतना है। २ विजयी होना। उ० क्या

तुमने उनको अपनी ओर कर लिया ? यदि ऐसी बात है, तो तुमने गढ़ जीत लिया।

गणना होना–दे० 'गिनती होना'।

गत करना–दे० 'गत बनाना'।

गत का होना–अच्छा होना, ढग का होना। उ० यह शहर किस गत का है जो यहाँ घूमने आये हो।

गत नाचना–नाचने का कोई ठाठ दिखाना।

गत बनाना या बना डालना–१ खराब हालत करना। उ० तुमने तो बेकार मे उसकी गत बना डाली। २. डाँटना। ३ मारना-पीटना। ४ स्वरूप बिगाडना। होली मे रंग या कीचड आदि डालना। उ० होली मे एक साल आप आए थे। याद है, कैसी गत बनाई थी ! ५ हँसी उडाना।

गत होना–मरना। उ० दु ख के साथ लिखना पडता है कि कल आपके पिता गत हो गए।

गति होना–पैठ होना।

गत्ताल खाते मे जाना–बेकार होना। व्यर्थ जाना। उ० मेरा सब रुपया गत्ताल खाते मे चला गया।

गत्ताल खाते समझना–डूबा हुआ समझना। उ० मैं अपना वह रुपया गत्ताल खाते समझता हूँ।

गटर-गो करना–हडप लेना, ले लेना, खा जाना। उ० उसका भी धन आप गटर-गो कर गए।

गदर मचाना–विद्रोह मचाना। उ० भारत-वासियो ने आजादी के लिये कई बार गदर मचाया।

गदरा जाना–यौवन आना। उ० लडकी गदरा गयी है, इसका ब्याह शीघ्र होना चाहिये।

गदहाचद–बहुत मूर्ख। उ० अरे, उससे क्या पूछते हो, वह तो पूरा गदहाचद है।

गदहा होना–बिना अक्ल का या मूर्ख होना। उ० तुम तो गदहे हो !

गदहे का हल चलना–खँडहर हो जाना। उ० अब वहाँ गदहे का हल चलता है।

गदहे पर किताबें लादना–मूर्ख को पुस्तके देना, निरा गँवार को पढाना। उ० अरे यह कुछ पढ नही सकता, महामूर्ख है। क्यो गदहे पर किताबे लाद रहे हो ?

गदहे पर चढ़ाना–खूब बदनाम करना। उ० आप मुझे गदहे पर चढा कर क्या पा गये ?

१५

गदाका सुनाना–फटकारना। उ० इस बार आयें तो ऐसे गदाका सुनाना कि उनकी फिर आने की हिम्मत भी न पडे।

गद्द करना–पेट मे जाकर किसी चीज का न पचना। उ० दही तो मुझे गद्द करेगा, कुछ और दो।

गद्द धरना–गद्द करने या अपच का रोग होना। बदहज़मी की शिकायत होना।

गद्द मारना–अपने वश मे करना।

गद्द मारा जाना–बेवकूफ हो जाना।

गद्दी पर बैठना–राजा बनना। उ० मुगल-वंश मे बहुत से गद्दी पर बैठे, पर अकबर सबसे अच्छा माना जाता है।

गधे पर झूल डालना–कुरूप को कीमती तथा सुन्दर वस्त्र पहनाना। उ० उसको बनारसी साडी पहना रहे हो या गधे पर झूल डाल रहे हो।

गनीमत समझना–बहुत समझना। उ० यही गनीमत समझो कि मैं बचकर चला आया।

गनीमत होना–अच्छा और मिलनसार होना। उ० वह बडा गनीमत आदमी है।

गप-गप खाना–निगलना, जल्दी-जल्दी खाना।

गपडचौथ–दे० 'गप्पचौथ'।

गपसड़ाका करना–१ गप मारना। २. गप-शप करना। उ० गपसडाका ही करोगे या कुछ काम भी !

गपागप–जल्दी-जल्दी। उ० वह गपागप खा रहा था।

गप्प उडाना–१ अफवाह फैलाना। उ० उसने हर जगह यह गप्प उडा दी है कि वह मर गया। २ झूठ बोलना। उ० गप्प मत उडाओ।

गप्पचौथ–बेकार की बातें। उ० तुम्हारे यहाँ तो हमेशा गप्पचौथ जमी रहती है, आकर क्या करें ?

गप्प मारना–१ झूठ-मूठ की बात करना। उ० क्यो गप्प मारते हो ? मैं विश्वास नही कर सकता। २ व्यर्थ की बकवाद करना। उ० तुम दिन भर गप्प मारा करते हो, क्या कोई दूसरा काम नही है ?

गप्प लड़ाना–दे० 'गप्प मारना'।

गप्प-शप हाँकना–दे० 'गप्प मारना'।

गप्प हाँकना–दे० 'गप्प मारना'।

गफ्फा मारना—बड़े-बड़े कौर खाना।

गम खाना—१ क्षमा करना। उ० गम खाना सब से बड़ी चीज़ है। २ सब्र करना, सतोष करना। उ० गम खाओ। अब रोक कर आँख फोड़ने से क्या लाभ? ३ कुछ देर सब्र से प्रतीक्षा करना, ठहरना। उ० गम खाओ मैं भी चलूँगा।

गम गलत करना—दुख भुलाने की कोशिश करना। उ० गम गलत करने से नही भूल सकता है, वह अपने आप कुछ दिनो मे भूल जाता है।

गया करना—गया जाकर पिंडदान करना।

गया-गुज़रा—बुरी दशा को पहुँचा हुआ, अधम। उ० वह गया-गुज़रा आदमी है।

गया घर—दुर्दशा प्राप्त घर। उ० गए घर से उसका क्या मुकाबिला।

गया-बीता—दे० 'गया-गुज़रा'।

गया-बीता होना—किसी काम का न होना। उ० तुमसे कुछ नही हो सकता है, तुम सबसे गये बीते हो गये।

गया वक्त—बीता अवसर। उ० गया वक्त हाथ नही आता।

ग़रकी देना—दु ख देना। उ० ग़रीबो को ग़रकी देकर क्यो उनकी आह लेते हो?

ग़रक़ी से डालना—दे० 'गरकी देना'।

ग़रज़ का बावला—अपने काम करवाने के लिये सब कुछ करने वाला। उ० इस समय वह गरज़ का बावला है, जो चाहो उससे करवा लो।

गरज़ गाँठना—अपना मतलब सिद्ध करना। उ० अपनी गरज गाँठने को मनुष्य छोटो से भी मिलने को तैयार हो जाता है।

गरज़ रखना—१ मेल-मिलाप रखना। उ० ऐसे नीच आदमी से गरज़ रखने की क्या ज़रूरत है? २ मतलब रखना। उ० कुछ गरज़ न रखते तो यहाँ न आते।

गरदन उठाना—१ विरोध करना। उ० मेरे सामने गरदन उठाने की हिम्मत नही है। २ क्राति या बगावत करना।

गरदन उड़ाना—गरदन काट कर मार डालना। उ० अगर ज्यादा बोलोगे तो गरदन उड़ा दूँगा।

गरदन ऐंठी रखना—अभिमान से भरा रहना। उ० वह तो अपनी गरदन ऐंठी रखता है, जाने अपने को क्या समझता है?

गरदन ऐंठी रहना—१ अभिमान मे रहना। उ० उनकी हर समय गरदन ऐंठी ही रहती है, न मालूम अपने को क्या समझते हैं? २ रुष्ट रहना।

गरदन कटना या कट जाना—१ बुराई होना। २ हानि होना। ३ अपमानित होना। उ० तुम्हारे कारण आज मेरी गरदन कट गई। ४ गला कटने से मर जाना।

गरदन काटना—१ अपमानित करना। उ० तुमने तो मेरी गरदन काट ली। २ हानि पहुँचाना। उ० मेरी गरदन न काटो। ३ गला काट डालना। ४ बुराई करना।

गरदन का बोझ—उत्तरदायित्व, कर्त्तव्य। उ० यह तो तुम्हारी गरदन का बोझ है।

गरदन छूटना—किसी ज़िम्मेदारी से छुट्टी पाना।

गरदन झुकना—१ लज्जित होना। उ० उस दिन के बाद जब भी वह मेरे सामने आता है, मेरी गरदन झुक जाती है। २ नम्रता दिखलाई पड़ना।

गरदन झुकाना—१ शर्मा जाना। उ० तुम्हे देखते ही उसने गरदन झुका ली और तुम कह रहे थे, वह अच्छी तरह बात करती है। २ विनीत या आज्ञाकारी होना। नम्र होना। उ० वह गरदन झुका कर चलता है।

गरदन ढलकना—१. मरना। २. मरने के करीब होना।

गरदन ढलना—दे० 'गरदन ढलकना'।

गरदन दबोचना—दबाव डालना।

गरदन न उठाना—१ कमज़ोरी के कारण सर न उठाना। उ० आज महीनो से वह गरदन नहीं उठा रहा है। २ एतराज़ न करना, सह लेना, विरोध न करना। उ० गरदन न उठाना, नही तो समझ लूँगा। ३ लज्जित होना। उ० अब तो वह गरदन नही उठा रहा है।

गरदन नाचीज़ होना—जान का कुछ भी मूल्य न होना। उ० आपके लिए मेरी गरदन नाचीज़ है। उ० उसकी भी गरदन नाचीज़ समझने की चीज़ नही है।

गरदन नापना—१ अपमान करना। उ० भरी सभा मे उनकी गरदन नापना आपके लिये

उचित न था। २ झुकना। उ० वह तुम्हारे सामने गरदन नापने को तैयार है।

गरदन नीची होना–शर्मिन्दा होना।

गरदन पकड़ कर करा लेना–जबरन करा लेना। उ० गरदन पकड़ कर कराना चाहे तो वह कर देगा, पर राजी राजी-खुशी कभी न करेगा।

गरदन पकड़ कर निकालना–१ बेइज्जती करके या गलबाहीं देकर बाहर करना। उ० अगर ज्यादा बोलोगे तो गरदन पकड़ कर निकाल दूंगा। २ जबर्दस्ती निकालना।

गरदन पर–ऊपर, ज़िम्मे। उ० इन सब बुराइयों का पाप तुम्हारी गरदन पर है।

गरदन पर छुरी फेरना–१ हानि पहुँचना। अनहित करना। उ० आपने अपने लाभ के लिए उसकी गरदन पर छुरी फेर दी। २ तंग करना। ३. बुराई करना।

गरदन पर जुआ रखना–१, जिम्मेदारी लेना। जिसे कुछ फायदा है, वह गरदन पर जुआ रक्खे, हमसे क्या मतलब जो इस फेर मे पड़ें। २ जिम्मेदारी देना, सौंपना। मेरी गरदन पर जुआ न रक्खो।

गरदन पर बोझ होना–१. सिर पर भार होना। जिम्मेदारी होना। उ० तुम्हारे सब काम का बोझ हमारी गदरन पर ही है। २ बुरा लगना, भारस्वरूप लगाना। उ० मैं तुम्हारी गरदन पर बोझ हूँ, तो चला जाऊँ।

गरदन पर लेना–उत्तरदायित्व लेना। अस्वीकार करना, भार लेना। उ० मैं इसे अपनी गरदन पर क्यों लूं? क्या तुम्हारे कोई और नही है?

गरदन पर सवार होना–पीछा न छोड़ना। उ० क्यों गरदन पर सवार हो, मैं तुम्हारे साथ आज नही जा सकता।

गरदन फँसना–मुश्किल मे पडना। उ० मेरी तो गरदन फँसी है, किसी तरह भी मुझे सौ रुपये का प्रबध कर दो।

गरदन मरोड़ना–१ गरदन मरोड़ कर जान मार डालना। उ० रास्ते में किसी ने बेचारे की गरदन मरोड़ दी। २ दबाव डालना। उ० मेरी गर्दन मत मरोडो। यह काम मेरे वश का नही है। ३ कष्ट देना।

गरदन मारना–अहित करना।

गरदन में हाथ डालना–दे० 'गरदन मे हाथ देना'।

गरदन में हाथ देना–१ अपमान करना। उ० खबरदार, गरदन में हाथ दिया तो ठीक न होगा। २. स्नेह दिखलाना। ३ गरदनिया देना, अर्द्धचंद्र देना। उ० तुम्हारी मजाल कि तुम गरदन में हाथ दो।

गरदन सही करना–गरदन पर थप्पड मारना। उ० ऐसी गरदन सही करूँगा कि उम्र भर याद रखोगे।

गरदन हिलने लगना–बहुत वृद्ध होना। उ० अब तो उसकी गरदन हिलने लगी है।

गरदन हिलाना–नाही करना। उ० तुम हर काम मे गरदन हिला देते हो, क्या हाँ करना सीखा ही नही।

गरदनिया देना–गरदन पकड कर बाहर निकाल देना।

गरम करना–१ क्रोधित करना। उ० उन को गरम करना मामूली बात है, जब चाहूँ झगडा करा दूं। २. उत्तेजित करना, उकसाना।

गरम खबर होना–बहुत चर्चा होना।

गरम मामला–१ नयी घटना। उ० अभी गरम मामला है, अगर कुछ बोलोगे तो बात बढ़ जायगी। २ संगीन मामला। उ० बडा गरम मामला है।

गरममिजाज–तुनकमिजाज। उ० खुदा बचाये इस गरम मिजाज से, मैं तो इसके नजदीक भी नही जाता।

गरम हो उठना–गुस्सा हो जाना। उ० बात-बात पर गरम हो उठना तुम्हे शोभा नही देता।

गरमा-गरमी से–१ क्रोधित होकर। उ० मालूम हो रहा है, आप लोग गरमा-गरमी से बातें कर रहे हैं। २ जोश से। उ० बड़ी गरमा-गरमी से काम हो रहा है। ३ तेजी से, जल्दी से।

गरमी छाँटना–अभिमान दूर करना। उ० अगर ज्यादा बकोगे तो अभी गरमी छाँट दूंगा।

गरमी निकालना–दे० 'गरमी छाँटना'।

गरियार बैल–१. दे० 'अड़ियल टट्टू'। २ वह बैल जो चलते-चलते बैठ जाय। उ० गरियार बैल कौन खरीदेगा?

ग़रीबी आना—धनहीन होना। उ० ग़रीबी ने आकर मेरी सारी शान-शौकत मिटा दी।

ग़र्क़ होना—१ लीन होना। उ० इस समय उससे बात मत करो। वह पढ़ने मे गर्क़ हो रहा है। २ नष्ट होना। उ० तुम्हारा सारा गर्व गर्क़ हो जायगा।

ग़र्क़ी में आना या आ जाना—१. जल-मग्न होना। उ० इस वर्ष नदियो के किनारे के सभी गाँव ग़र्क़ी मे आ गये। २. नष्ट होना। उ० उनका विरोध न करो, नहीं तो तुम भी ग़र्क़ी में आ जाओगे।

गर्द उड़ना—नष्ट हो जाना।

गर्द उड़ा देना—नष्ट कर देना।

गर्द उड़ाना—बरबाद करना। उ० डाकुओ ने बहुत से गाँवो की गर्द उड़ा दी।

गर्द को न पहुँचना—मुक़ाबिला न कर सकना। उ० आपका घोड़ा मेरे घोड़े की गर्द को भी नहीं पहुँच सकता।

गर्द झड़ना—साधारण रूप मे पीटा जाना, ऐसा पीटा जाना जो कुछ ज्ञात न हो। उ० उस दिन तो गर्द झड़ी, आज पीटे जाओगे।

गर्दन झुकाना—१. नम्र होना। उ० मेरे सामने क्या अमीर क्या ग़रीब, सभी गर्दन झुका लेते हैं। २ हार मानना।

गर्दन टीपना—गला दबा कर जान मार डालना। उ० बहुत बनोगे तो गर्दन टीप दूँगा।

गर्दन पर छुरी फेरना—१ अत्याचार करना। उ० इन गरीबो की गर्दन पर छुरी फेर कर क्यो इनकी आह ले रहे हो? २ बहुत बड़ी हानि करना। उ० मित्र, तुमने मेरी भी गर्दन पर छुरी फेर दी।

गर्दन पर सवार होना—पीछे-पीछे लगा रहना। उ० हम लोगो का मास्टर हर समय गर्दन पर सवार रहता है तनिक भी खेलने का मौका नही देता।

गर्दन रेतना—अहित करना। उ० मेरी गर्दन रेतोगे तो ठीक न होगा।

गर्दनिया देना—दे० 'अर्द्धचन्द्र देना'।

गर्द फाँकना—इधर-उधर बेकार घूमना। उ० क्यो गर्द फाँकते हो, क्या इसी तरह जीवन बिताने का विचार है?

गर्द भी न पाना—तनिक भी समान न होना, तुलना मे न ठहर सकना।

गर्द से अटना—गर्द से भर जाना। उ० यह सड़क इतनी खराब है कि इस पर से एक बार भी जाना हो तो सारे कपड़े गर्द से अट जाते हैं।

गर्द होना—१ चौपट होना। उ० तुम्हारे साथ घूम कर वह भी गर्द हो गया। २. तुच्छ होना, बेकार होना। उ० यह सब तो गर्द है।

गर्दिश आना—विपत्ति आना, बुरे दिन आना। उ० राम-नाथ पर ऐसी गर्दिश आयी कि घर-द्वार सब बिक गया।

गर्म-सर्द उठाना—सुख-दुःख सहना। भले-बुरे दिन काटना। उ० इसी उमर मे गर्म-सर्द सब उठा चुका हूँ।

गर्म-सर्द देखना—दे० 'गर्म-सर्द उठाना'।

गर्म-सर्द सहना—दे० 'गर्म-सर्द उठाना'।

गर्म साँस छोड़ना—निराशा-भरी आह लेना।

गल गाजना—१ प्रसन्न होना। उ० बहुत गल गाज रहे हो। २ अठखेलियाँ करना।

गल जाना—बेकार मे व्यय होना। उ० आने-जाने मे सैकडो रुपये गल गये।

गलती मे पड़ना—भ्रम मे पड़ना। उ० मैंने गलती मे पड कर यह सब कर दिया है, वर्ना कभी न करता।

गलफटाकी करना—अपनी बड़ाई आप करना। उ० आप अपने को क्या समझते हैं जो सदा गलफटाकी किया करते हैं।

गलबहियाँ डालना—प्रेम से गले मे हाथ डाल कर मिलना। उ० आपका गलबहियाँ डालना मुझे खतरनाक मालूम होता है।

गला उतरना—गरदन कटना।

गला काटना—१. अत्याचार करना। उ० मित्र, मेरा गला क्यो काट रहे हो, मैंने तो कभी तुम्हारी बुराई भी नही की। २. सर को धड़ से अलग करना। बहुत कष्ट देना। ४. बहुत बड़ा नुकसान, अहित या बुराई करना। उ० मैं यदि जानता कि तुम मेरा गला काटोगे तो तुम्हारे पास स्वप्न मे भी न आता।

गला खुलना—१ गला साफ होना। २ गला मधुर होना। ३. बात मुँह से निकलना।

गला घुंटना—साँस रुक-रुक कर आना। उ० आज उसका गला घुंट रहा है, अब वह न बचेगा।

गला घोंटना—गला दबाकर हत्या कर डालना । उ० जी चाहता है कि इस नीच का गला घोंट दूँ । न रहेगा, न ऐसा काम करेगा ।

गला छुटाना—दे० 'गला छुड़ाना' ।

गला छुड़ाना—१ छुटकारा पाना । उ० मैं तो किसी तरह उससे गला छुड़ाना चाहता हूँ । २ मुक्ति या छुटकारा दिलाना । उ० मेरा गला किसी तरह छुड़ा दो तो ज़िंदगी भर गुलामी करूँ ।

गला छूटना—झंझट मिटना । झंझट से निकलना । उ० लो, अब तुम्हारा भी गला छूटा ।

गला टीपना—दे० 'गला घोंटना' ।

गला दबाना—दे० 'गला घोंटना' ।

गला फँसना—लाचार होना । उ० मेरा गला फँस गया है । नहीं तो मैं कभी भी यह काम नही करता ।

गला फँसाना—१. बंधन मे डालना । उ० हमारा गला फँसा कर आप छुटकारा पा गये । २ जान-बूझकर किसी आफत मे पड़ना । उ० तुमने तो नाहक ही अपना गला फँसाया ।

गला फाड़ना—चिल्लाना, बहुत जोर से बोलना । उ० क्यो बेकार मे गला फाड़ रहे हो ?

गला बँधना—१. शादी से बन्धन मे पड़ना । उ० अभी खेल लो जब गला बँध जायगा, तब सब खेल भूल जायेगा । २ बंधन मे पड़ना ।

गला बाँध कर धन जोड़ना—खाने-पीने की तकलीफ सहकर भी रुपये जमा करना । उ० यह धन कही सेंत का थोड़े मिला है, जो आप माँग रहे हैं । गला बाँध कर जोड़ा गया है ।

गला भर आना गला भर्रा आना—भावातिरेक के कारण आवाज़ भारी हो जाना या न बोल पाना ।

गला मरोड़ना या मरोड़ देना—दे० 'गला ऐंठना' । उ० उसने मेरी बिल्ली का गला मरोड़ दिया ।

गला रेतना—१. अधिक कष्ट देना । उ० क्या गला रेत रहे हो, इससे तो अच्छा जान से ही मारना होता । २ बहुत नुकसान पहुँचाना । उ० तुमने तो मेरा गला रेत दिया । ३ मार डालना, गला काट देना । उ० उसका तो किसी ने गला रेत दिया है ।

गली कमाना—गली साफ करना । उ० आज चार दिनो से गली कमाई नही गई ।

गली-गली छानना—दे० 'गली-गली फिरना' ।

गली-गली फिरना—बिना प्रतिष्ठा के इधर-उधर घूमना । मारे-मारे फिरना । उ० यही तो संसार है । कल तक वे यहाँ के सरताज थे और आज गली-गली फिरते हैं ।

गली-गली मारे-मारे फिरना या ठोकर खाना—बेकार और बेइज्ज़त इधर-उधर घूमना । उ० गली-गली मारे-मारे फिरना तुम्हारे ऐसे निकम्मों का काम है, हम इसे पसन्द नही करते ।

गली झँकाना—व्यर्थ मे इधर-उधर परेशान करना । उ० अगर गली ही झँकाना था तो घर ही पर क्यो नही जवाब दे दिया ।

गले उतरना—दे० 'गले के नीचे उतरना ।

गले का ढोल या ढोलना—१ गले का बोझ । २. बहुत प्यारा । उ० वह तुम्हारे ही गले का ढोलना है, मैं तो देखना भी नही चाहती ।

गले का हार—१ बहुत प्यारा । उ० मैं घर मे सबके गले का हार हूँ । २ जी न छोड़ने वाला । उ० आप मेरे गले का हार न बनें ।

गले के नीचे उतरना—समझ मे आना, समझ मे बैठना । उ० उसे यह बात मैंने बहुत समझाई, पर उसके गले के नीचे न उतर सकी ।

गले पड़ना—जी को लगना । उ० जब वह गले पड़ने लगा तो उसे भी साथ रखना ही पड़ा ।

गले पर छुरी चलाना या फेरना—१ बहुत नुक़सान पहुँचाना । उ० क्यो गरीबो के गले पर छुरी फेरते हो ? २. मारना । ३. गला काटना ।

गले बाँधना—इच्छा के खिलाफ देना । जबर्दस्ती देना । उ० क्यो आप इसे मेरे गले बाँध रहे हैं, मैं इसे हर्गिज़ नही ले जा सकता ।

गले मढ़ना—१ इच्छा के खिलाफ़ शादी कर देना । उ० भाई ऐसी अनपढ़ स्त्री क्यो मेरे मढ रहे हो ? २ किसी के जिम्मे देना । उ० इस चीज़ को मेरे गले मत मढो । ३ आदत देना । उ० तुमने ही तो यह नशा मेरे गले मढा तो फिर खरीदने को पैसे कौन देगा ?

गले मिलना—आपसी मनमुटाव दूर होना या दूर करना । उ० ये दोनो कल तो सिर-फुटौवल कर रहे थे और आज गले मिल रहे है ।

गले में जंजीर या तौक़ पड़ना—१. शादी हो जाना । उ० मित्र गले मे जंजीर पड़ गई, अब कुछ कमाना ही होगा । २. बंधन मे पड़ना ।

गले मे थूक अटकना—कह न पाना।

गले लगना—गले मिलाना। उ० हम-आप बहुत दिनो पर गले लगे हैं। गले लगना तो दूर रहा, उसने बात तक न की।

गले लगाना—प्रेम करने लगना। प्रेम करना। उ० असली साधू बनना चाहते हो तो दोनो को गले लगाओ।

गले से उतारना—रद्दी भोजन से पेट भरना, निगलना। उ० दो कौर गले से उतारने भी कठिन हैं, इस होटल मे।

गश्त जाना—चक्कर लगाने या घूमने की ड्यूटी पर जाना। उ० आज गश्त जाओगे या नहीं? सिपाही गश्त गया है।

गश्त मारना—चक्कर लगाना। उ० आजकल रात मे पुलिस वाले खूब गश्त मार रहे हैं।

गश्त लगाना—दे० 'गश्त मारना'।

गस्सा मारना—कौर खाना। उ० दो गस्सा तुम तुम भी मार लो। पता नही फिर कब मिले?

गहकी पटना—सौदा तय होना। उ० गहकी पट गया, कल मेरा माल बिक जायगा।

गहकी काटना—ग्राहक को बहका कर न खरीदने देना। उ० अगर मेरा गहकी काटा तो तुम्हारा गला काट दूँगा।

गहरा असामी—अधिक देने वाला। उ० यह गहरा असामी है, इससे खूब रुपये चूसा।

गहरा पेट—१ बात हज़म करने वाला आदमी। २ रुपये लेकर न देने वाला। ३. कोई भी चीज लेकर न लौटाने वाला। ४ बहुत खाने वाला।

गहरा रग पकड़ना—बात का और बढ़ता ही जाना। उ० मामला गहरा रग पकड़ता जा रहा है।

गहरा हाथ पड़ना—काफी धन मिलना। उ० इस बार गहरा हाथ पड़ा है, दो-चार पुश्त के लिये काफी होगा।

गहरा हाथ मारना—कही से काफ़ी धन या सामान उड़ा लेना। उ० पहले तो वह चोर था, पर अब डाकू हो गया और गहरे हाथ मारता है।

गहरा हाथ लगाना—दे० 'गहरा हाथ मारना'।

गहरी घुटना—दे० 'गहरी छनना'।

गहरी घोटना—दे० 'गहरी छानना'।

गहरी चाल चलना—गहरा धोखा देना, बहुत छल करना।

गहरी छनना—१ खूब मित्रता होना। उ० उन दोनो मे गहरी छनती है। २. छक कर भग का पिया जाना। उ० आज तो खूब गहरी छनी है।

गहरी छानना—खूब मज़े मे भाँग छानना, छक कर भाँग पीना। उ० आजकल खूब गहरी छानते हो।

गहरी निगाह—पैनी दृष्टि।

गहरी नींद सोना—पूर्णत. या प्रगाढ निद्रा मे सोना। उ० जब आप बुला रहे थे, मैं गहरी नींद सो रहा था।

गहरी बात—भेद की या ऊँची बात। उ० यह बहुत गहरी बात है, तुम्हारी समझ मे नही आयेगी।

गहरी रक़म—बहुत बडी रकम।

गहरी साँस लेना—दे० 'ऊँची साँस लेना'।

गहरे उतरना—१ किसी बात को गभीरता से सोचना। उ० जरा गहरे उतरो तो समझोगे। २ बहुत गभीर चीज कहना या लिखना। उ० आजकल बहुत गहरे उतर रहे हो।

गहरेबाज़—बहुत तेज ताँगा या घोडा चलाने वाला। उ० यह आदमी यहाँ का प्रसिद्ध गहरेबाज़ है।

गहरे लोग—बहुत चालाक़ लोग। मक्कार लोग। उ० वे गहरे लोग हैं, उनसे मैत्री न करने में ही कुशल है।

गाँगू होना—प्रत्येक काम मे देर करने वाला होना। उ० तुम तो गाँगू हो, यह जल्दी का काम है, कोई और जायगा।

गाँठ उखड़ना—शरीर के किसी अग का अपने जोड के स्थान से हट जाना। उ० कुश्ती मे मेरी गाँठ उखड गई है।

गाँठ कतरना—१ जेब काटना। उ० गाड़ी मे आज किसी ने मेरी गाँठ कतर कर ५०० रु० ले लिये। २ गठरी मारना। ३. धोती के फेंटे आदि कतर कर रुपया ले लेना।

गाँठ करना—१ दे० 'गाँठ पकड़ना'। २ मन-मुटाव करना। उ० व्यर्थ के लिए उससे गाँठ न करो। ३ बटोरना, इकट्ठा करना। उ० इधर-उधर से काफी गाँठ कर लिया है।

गाँठ कर रखना—याद रखना। उ० तुम उनकी बात गाँठ कर रखना, कभी बदला अवश्य लिया जायगा।

गाँठ का खोना—अपना रुपया बर्बाद करना। उ० रोजगार मे गाँठ का न खोना और चाहे जो हो।

गाँठ काटना—दे० 'गाँठ कतरना'।

गाँठ का पूरा—धनी, रुपये वाला। उ० है तो यह आदमी गाँठ का पूरा, अगर किसी तरह फँस जाता तो मजा आ जाता।

गाँठ का पूरा आँख का अंधा—धनी परतु मूर्ख। उ० तुम तो बैठे-बैठे किसी गाँठ के पूरे तथा आँख के अधे को चाहते हो कि तुम्हे पैसे मिलने लगें।

गाँठ का पक्का—कजूस, सावधान। उ० साथ तो ले जा रहे हो उसे, पर वह गाँठ का पक्का एक पैसा भी खर्च नही करेगा।

गाँठ का पैसा—अपने पास का धन। उ० गाँठ का पैसा खर्च करने मे सबको कष्ट होता है।

गाँठ खुलना—१ समस्या का सुलझना या हल होना। उ० गाँठ खुल गई, अब मैं इस काम को ठीक कर लूंगा। २ मनमुटाव दूर होना।

गाँठ खोलना—१ अड़चन दूर करना। उ० इस गाँठ को खोलना मामूली बात है, पर उन लोगो की समझ में ही नही आ रहा है और मुझे बोलने नही देते। २ मनमुटाव दूर करना।

गाँठ-गिरह में होना—पास होना, पल्ले मे होना। उ० रुपये गाँठ-गिरह मे हो तो अभी दे दूँ, मगर जब हैं नही तो क्या करूँ?

गाँठ पकड़ना या पकड़ जाना—१ जम जाना। उ० तुम्हारा कहना उसके मन मे गाँठ पकड़ गया है। २ बुरा लगना। उ० मेरी बातें तुम्हारे दिल मे क्यो नही गाँठ पकडती हैं?

गाँठ पड़ना—मनमुटाव हो जाना। अनबन होना। उ० उन दोनो मे गाँठ पड गई है।

गाँठ पर गाँठ पड़ना—बहुत मनमुटाव हो जाना। उ० उनसे हमसे गाँठ पर गाँठ पड रही है, देखें क्या होता है?

गाँठ बाँधना—१ न भूलना, याद रखना। २ न भूलने के लिए धोती, रूमाल या अँगोछे मे गाँठ बाँधना। उ० अभी गाँठ बाँधे लेता हूँ, नही शायद फिर भूल जाऊँ।

गाँठ मे जर बाँध कर रखना—रुपये को बहुत एहतियात से रखना। धन को बचाकर और बहुत छिपाकर रखना।

गाँठ मे जर या पैसा होना—नकद रुपये पास होना। धनी होना।

गाँठ मे बाँधना—सर्वदा याद रखना। उ० यदि इस काम मे सफल होना चाहो तो मेरी सीख गाँठ मे बाँध लो।

गाँठ में रखना—१ धनी होना। उ० गाँठ मे कुछ रखता हूँ, यो ही नही खरीदने आया।

गाँठ में होना—पास मे होना। उ० जब तक पैसा गाँठ मे है, खूब मौज कर लो, फिर तो भीख माँगना ही है।

गाँठ रखना—मन मे जलन रखना। उ० मैं जानता हूँ कि तुम मुझसे गाँठ रखते हो।

गाँठ से—अपने पास से। उ० गाँठ से इस काम मे मैं कुछ नही लगा सकता।

गाँठ से जाना—अपनी हानि होना। उ० रुपये आपकी गाँठ से तो गए नही कि अफसोस कर रहे हैं।

गाँड की ख़बर न होना—बेसुध होना।

गाँड खोल देना—दब कर बात मान लेना।

गाँड-गरदन एक होना—बुरी तरह थकना, खूब पिटना। उ० तुम्हे मजाक सूझता है, यहाँ गाँड-गरदन एक हो रही है।

गाँड़ जलना—बुरा लगना।

गाँड चाटना—चापलूसी करना।

गाँड दिखाना—पीठ दिखाना। उ० कुछ तो सोचो-पहले ही दिन गाँड़ दिखा रहे हो।

गाँधी बनना—सच्चा और अहिंसक बनना। उ० गाँधी बनने वाले तो काग्रेस मे बहुत हैं, पर सचमुच कोई नही है।

गाँस निकालना—शत्रुता साधना। उ० अब वक्त आया है, गाँस निकाल लो।

गाँस मे करना—वश मे करना। उ० मैंने सबको गाँस मे कर लिया है। अब किसी की चूं करने की मजाल नही।

गाँस में रखना—दे० 'गाँस मे करना'।

गाउँज-माउँज करना—एक मे मिला देना। उ० क्यो सारा सामान गाउँज-माउँज करते हो?

गाज गिरना—बिजली गिरना, बुरा होना। उ० क्यो न महल पर गाज गिरे झोपडी तड़पती?

गाज पड़ना–दे० 'गाज़ गिरना'।

गाजर-मूली समझना–तुच्छ समझना। उ० आप मुझे गाजर-मूली न समझें। जिस दिन खडा हूंगा, हुलिया बिगड जायगी।

गाड़ी काटना–१ चलती गाडी मे से कुछ चुरा लेना। २ पूरी गाडी मे से किसी एक या कुछ डिब्बो को अलग करना।

गाड़ी को देखकर पाँव फूलना–सहारा पाकर हिम्मत छोडना। सवारी देख कर थकने लगना।

गाड़ी छूटना या छूट जाना–गाडी न पकड पाना। [अग्रेजी मुहावरे के अनुवाद 'गाड़ी पकडना' के 'पकडना' का उलटा 'छूटना' यह स्पष्ट करता है कि इस पर भी अग्रेजी छाप है।] उ० जाते-जाते गाडी छूट गई। अब क्यो जाते हो, गाडी छट जायेगी।

गाड़ी पकड़ना–ठीक वक्त पर स्टेशन पर पहुँच कर गाड़ी पर चढना। [यह अग्रेजी मुहावरा To Catch the Train का अनुवाद है] उ० जल्दी करो, आज गाडी जरूर पकडनी है।

गाड़ी भर–बहुत ज्यादा, ढेर सा। उ०गाडी भर मैं कहाँ से दूँ ?

गाढ़ पड़ना–मुसीबत पडना। उ० मित्र वही है जो गाढ पडने पर काम आये।

गाढ़ा प्रेम–अत्यधिक स्नेह।

गाढ़ा रंग चढ़ना–बहुत प्रभाव होना।

गाढ़ा समय–बुरे दिन।

गाढ़ी छनना–१ खूब गहरी दोस्ती होना। उ० उन दोनो में अब तो गाढी छनती है। २ खूब गाढ़ी भाँग बनायी जाना। उ० आज तो गाढी छनी है, इसका मजा भी ले लो।

गाढ़े का संगी–दे० 'गाढे का साथी'।

गाढ़े का साथी–कष्ट मे दोस्ती निभाने वाला। मुसीबत मे सहायता करने वाला। उ० आप मेरे गाढे के साथी हैं।

गाढ़े दिन–कष्ट का समय। उ० भाई कुछ रुपया बचाते चलो, वही गाढे दिन मे काम आयेगा।

गाढ़े बैठना–घात मे बैठना, छिप कर किसी मौके की ताक मे चुपचाप बैठना।

गाढ़े की कमाई–बहुत परिश्रम से कमाया हुआ पैसा। उ० भाई, यह पिताजी की गाढे की कमाई है, इसे बहुत समझ-बूझ कर खर्च करना।

गाढ़े पड़ना–विपत्ति मे पडना।

गात से होना–गर्भ रहना। उ० वह बहुत दिनो पर गात से हुई है, ज़रा उसे हिफाजत से रखना।

गाती बाँधना–बच्चो आदि के गले मे सर्दी आदि से बचाने के लिए छोटा दुपट्टा बाँधना।

गाती मारना–दे० 'गाती बाँधना'।

गाती लगाना–दे० 'गाती बाँधना'।

गाद बैठना–तलछट का नीचे इकट्ठा होना।

गाभ डालना–गर्भ गिराना। उ० उस व्यभिचारिणी स्त्री ने किसी तरह गाभ डाल ही दिया।

गामा बनना–पहलवान बनना। हर वक्त कसरत आदि करते रहना। उ० केवल गामा ही बनने के फेर मे न रहो, कुछ पढो भी।

गाय की तरह काँपना–बहुत भयभीत हो जाना। उ० उसकी स्त्री उसे देख कर गाय की तरह काँपती है।

गाय को बछिया तले बछिया को गाय तले करना–१ इधर का उधर करना। उ० चतुर आदमी गाय को बछिया तले बछिया को गाय तले करके अपना काम निकाल लेते हैं। २ गडबड करना। उ० गाय को बछिया तले और बछिया को गाय तले मत करो।

गायब करना या कर देना–चुरा लेना। उ० मेरी कमीज यही पर किसी ने ग़ायब कर दी।

गाय होना–बहुत सीधा होना। उ० वह बेचारी तो गाय है। जो उसका बुरा ताकेगा, वह भगवान से बैर लेगा।

गारद करना–तहस-नहस करना। उ० सन् ४२ मे अग्रेजो ने कुछ गाँवो को ऐसा गारद किया कि अभी तक नही सुधरे।

गारद बैठना–पहरा बैठना, पहरे के लिए पुलिस आदि का बैठना।

गारद बैठाना–पहरा बैठाना। उ० चोर को पकडने के लिये पुलिस ने गाँव के चारो तरफ गारद बैठा दी है।

गारद मे डालना–जेलखाने मे रखना। उ० गारद मे डालने से वह खुश ही रहता है, क्योंकि कम से कम दोनो वक्त भोजन तो मिल जाता है।

गाल करना–१ डीग हाँकना । उ० यहाँ गाल न करो, मैं तुम से अपरिचित नही हूँ । २. गाली-गलौज बकना ।

गाल तोड़ना–ज़बर्दस्ती चुम्बन लेना ।

गाल पर गाल चढ़ना–खूब मोटा-ताज़ा होना । उ० अगर तुम ऐसे माल खाओगे तो एक माह मे तुम्हारे गाल पर गाल चढ़ जायेंगे ।

गाल पिचकना–कमज़ोर होना । उ० चार ही दिन की बीमारी मे तुम्हारे गाल पिचक गये ।

गाल फुलाना–रूठना । उ० क्यो गाल फुलाये हो, कुछ कहो भी तो ?

गाल बजाना–बढ-बढ कर बात करना । उ० क्या गाल बजा रहे हो ? तुम जितने मे हो, मैं खूब जानता हूँ ।

गाल मारना–दे० 'डीग हाँकना' ।

गाल मे जाना–मुँह मे जाना । उ० गाल मे जाने से उसका स्वाद मालम होगा, इस तरह देख कर मैं क्या बताऊँ ?

गाल सुजाना–दे० 'गाल फुलाना' ।

गाल सेंकना–गाल पर मारना । उ० यदि कहना नही मानोगे तो दोनो गाल सेक दूँगा ।

गालियो का झाड बांधना–बहुत गालियाँ देना । लगातार गालियाँ देना ।

गालियों की बौछार करना–दे० 'गालियो का झाड बाँधना' ।

गालियो पर उतरना–गालियाँ देना । उ० जब बातो से काम न चला तो गालियो पर उतर आये ।

गालियो पर ज़बान खोलना–देखिए नीचे ।

गालियो पर मुख खोलना–गाली देनी शुरू करना । उ० गालियो पर मुख न खोलो, शरीफ आदमी की तरह बात करो ।

गाली खाना–गाली सुनना । उ० मैंने तुमसे पहले ही कहा कि अगर वहाँ जाओगे तो गाली खानी पडेगी ।

गाली पड़ना–गाली का सच्चा होना, शाप पडना । उ० मैं ऐसा-वैसा आदमी नही हूँ, मेरी तो गाली पडती है ।

गालो मे चावल भरना–चबा-चबा कर बातें करना । मठार-मठार कर बातें करना । उ० वो एक दिन था कि मेरे आगे फ़रिश्तो की भी न दाल गलती, भरे हैं गालो मे अब तो चावल, करें वो बातें चबा-चबा कर ।

गावख़ुर्द होना–१. नष्ट-भ्रष्ट होना । उ० दो-चार वर्ष में वे सब गावखुर्द हो गये । २ गायब होना । उ० वह कहाँ गावखुर्द हो गया ?

गिटकिरी लेना–गाते-गाते आवाज़ लहरा देना । उ० मर गया मैं तो गिटकिरी एसा, तू न ए बुलबुल सहर ली है ।

गाह-गाहे–गाहे-बेगाहे, वक्त-बेवक्त, जरूरत पडने पर । उ० पास करना अगर पसद नही, गाह-गाहे निगाह तो रखिए ।

गिटपिट करना–१ ग़लत अंग्रेज़ी बोलना । उ० क्या गिटपिट कर रहे हो, अगर न आता है तो अंग्रेज़ी मत बोलो । २ अंग्रेज़ी बोलना । उ० साहब लोग गिटपिट कर रहे थे, मैं मूर्ख आदमी भला क्या समझता ?

गिन-गिन कर दिन काटना–बहुत दुःख से दिन गुज़ारना । उ० भाई क्या करूँ, गिन-गिन कर दिन काट रहा हूँ । इससे अच्छा तो मर ही जाना है ।

गिन-गिन कर देना–१. बहुत भला-बुरा कहना । उ० मैंने तो ऐसी गिन-गिन कर दी कि रोने लगे । २ एहतियात से देना । उ० यो मत फेंक देना, गिन-गिन कर देना ।

गिन-गिन कर पैर रखना–सावधानी से रहना या चलना । उ० इस नगर मे रहना हो तो पैर गिन-गिन कर रखो ।

गिन-गिन कर लगाना–बहुत मारना । जूते से खूब मारना । उ० अगर फिर ग़लती करोगे तो गिन-गिन कर लगाऊँगा ।

गिन-गिन कर सुनाना–दे० 'गिन-गिन कर देना' ।

गिनती कराने के लिए–कहने-सुनने भर को, नाम को । उ० गिनती कराने के लिए वह हमारा भाई है ।

गिनती का होना–योग्य समझा जाना । उ० इतनी बडी सभा मे गिनती का होना बडे भारी विद्वानो का काम है ।

गिनती के–१ थोडे । उ० गिनती के ही तो सामान हैं, इसी बार लेते जाओ । २. बडे, ऊँचे । उ० इस सभा मे गिनती के विद्वान् आने वाले हैं ।

गिनती गिनाने के लिए–दे० 'गिनती कराने के लिए' ।

गिनती पर जाना–हाज़िरी देने जाना । उ० तुम गिनती पर क्यो नही जाते हो ?

गिनती मे न होना–पूछ न होना, महत्त्वहीन होना ।

गिनती मे होना–किसी श्रेणी मे समझा जाना । उ० यही क्या कम बात है कि आप गिनती मे हो गये ? कल तक तो आपको कोई जानता भी नही था ।

गिनती होना–१ गणमान्य समझा जाना, बडे लोगो मे गिना जाना । उ० अब तो उसकी भी गिनती होने लगी, वह मेरे घर क्यो आए ? २ किसी विशेष वर्ग या सप्रदाय मे समझा जाना । उ० उसकी गिनती चोरो मे होती है ।

गिने-गिनाये–बहुत थोडे । उ० मेरे यहाँ शादी मे गिने-गिनाये लोग आये थे । गिनी-गिनायी तो पुस्तकें हैं, उनमे से कुछ तुम भी ले जाना चाहते हो ।

गिरगिट की तरह रग बदलना–बहुत जल्दी-जल्दी विचार बदलना । उ० वह गिरगिट की तरह रग बदलता है, उसकी बातो का क्या विश्वास ?

गिरते-पड़ते–ज्यो-त्यो, किसी तरह । उ० समय तो नही है, पर शादी मे गिरते-पडते पहुँच ही जाऊँगा ।

गिरफ्त करना–ऐब निकालना । उ० हर एक वस्तु मे गिरफ्त करना ठीक नही है ।

गिरफ्त मे लेना–वश मे करना । उ० अब उसे गिरफ्त मे ले आया हूँ, जो करना चाहो, करा लो ।

गिरह का बल होना–रुपये-पैसे का अभिमान होना । उ० तुम्हारा जो गिरह का बल है, दो दिन मे समाप्त हो जायगा ।

गिरह लगाना–गाँठ बाँधना, निश्चित रूप से प्रण कर लेना । उ० इस काम को न करने का गिरह लगा लो ।

गिरे दिन–दरिद्रता या दुर्दशा का समय । उ० मेरे गिरे दिन हैं ।

गीत गाना–१ प्रशसा करना । उ० आप सर्वदा उन्ही के गीत गाया करते हैं । २ खुशी मनाना । उ० वह तो गीत गा रहा है और आप रो रहे हैं ।

गीदड बोलना–१ अशुभ शकुन होना । उ० मेरे गाँव मे आज चार दिन से रोज गीदड बोलते हैं, अवश्य कोई अशुभ बात होगी । २ उजाड होना । उ० आजकल उस पुराने गाँव मे गीदड बोलते हैं ।

गीदड़-भभकी–सिर्फ डराने के लिए डाँट या कोई बात । उ० आपकी गीदड-भभकी से मैं नही डर सकता ।

गीदड़ होना–दे० 'सियार होना' ।

गीली कहानी–करुण कहानी ।

गीली आँख–रोते नेत्र ।

गुड खाना गुलगुलो से घिनाना–१ कोई बडी बुराई करना और छोटी बुराई से बचना । २ किसी कार्य का बडा अश करना और छोटे से दूर रहना । ३ किसी कम हानिकारक चीज़ को बचाना और ज्यादा हानिकारक को खाना ।

गुड खाना गुलगुलों से परहेज़ करना–दे० 'गुड खाना गुलगुलो से घिनाना' ।

गुड-गोबर कर देना–बना-बनाया काम बिगाड देना । उ० आपने यहाँ आकर सारा गुड गोबर कर दिया ।

गुड दिये मरने वाले को जहर देना–आसानी से काम निकलने वाला हो, फिर भी सख्ती करना । उ० उससे एक बार माँगो, पहले ही पीटने की आवश्यकता नही । गुड दिए मरने वाले को ज़हर क्यो दे ?

गुड होगा तो मक्खियाँ बहुत आ जायेंगी–माल होगा तो चखने वाले अपने आप आ जायेंगे । कोई चीज़ होगी तो उसकी ज़रूरत वाले अपने आप पहुँचेंगे ।

गुड़िया-सी–अतीव सुन्दरी । उ० गुडिया-सी बीबी घर मे है, फिर भी तुम आवारागर्दी करते हो ।

गुडियो का खेल जानना–बहुत आसान काम समझना । उ० मैं तो इसे गुडियो का खेल जानता हूँ, आप भले ही कठिन समझे ।

गुडियों का खेल समझना–दे० 'गुडियो का खेल जानना' ।

गुडियो का ब्याह–बहुत छोटी लडकियो का विवाह । उ० हमारे यहाँ छोटी जातियो मे गुडियो का ब्याह होता है ।

गुड्डा बाँधना–निंदा करना । उ० उनका गुड्डा मत बाँधो ।

गुण गाना–बडाई करना । उ० अपने मालिक का गुण गाना तुम्हारा कर्त्तव्य है ।

गुण मानना—कृतज्ञ होना । उ० मैं क्या आपका गुण मानूं, आपने मेरा कौन-सा काम किया है ?

गुदड़ी का लाल—१ देखने मे मूर्ख पर भीतर से योग्य । उ० अरे यह तो गुदडी का लाल है । रहता तो है मूर्ख की तरह, पर है बहुत बडा विद्वान् । २ साधारण या बुरी जगह मे असाधारण चीज । उ० यह चमार का बेटा गुदडी का लाल है ।

गुद्दी नापना—सिर के पीछे थप्पड मारना । उ० ऐसी गुद्दी नापी कि जीवन भर याद रहेगी ।

गुद्दी मे आँखें होना—१ देख कर काम न करना । उ० सामने चीज है और ठोकर मारते हो । क्या आँखें गुद्दी मे हैं कि नही देखते ? २ मूर्ख होना । उ० उसकी आँखें तो गुद्दी मे है, तभी तो उससे कोई भी काम ठीक नही होता ।

गुद्दी से जीभ निकालना—गुद्दी से जीभ निकाल लेने की धमकी देना । बहुत कडी सज़ा देना । उ० अगर फिर कभी ऐसी गलती करोगे तो गुद्दी से जीभ निकाल लूंगा ।

गुनाह बख्शना या बख्श देना—क्षमा करना । उ० हे खुदा ! मेरे गुनाहो को बख्श दो ।

गुनाह बेलज्जत होना—व्यर्थ मे कोई पाप या बुरा काम करना ।

गुफा मे बैठना—सन्यास या फकीरी लेना ।

गुम करना—लापता करना । उ० मेरी चीजो को कौन गुम करता है ?

गुम-सुम बैठना—कुछ न बोलना-चालना । चुपचाप बैठा रहना । उ० क्या गुम-सुम बैठे हो, जाकर कुछ काम करो जो हुआ सो हुआ ।

गुरूघटाल होना—१. बहुत होशियार तथा चालबाज़ होना । उ० आप ही तो इन सब मे गुरूघटाल है, भला आप न जानेंगे तो कौन जानेगा ? २ बदमाशो का सरदार होना ।

गुरू होना—१ चालबाज़, धूर्त या मक्कार होना । [यह बनारस मे विशेषत प्रयुक्त होता है ।] २ ज्ञानी होना ।

गुर्गे छूटना—खुफिया लगना । पता लगाने वालो का हर जगह घूमना । उ० इस चोरी का पता लगाने के लिये चारो तरफ गुर्गे छूटे हैं, देखें कब तक पता लगता है ?

गुर्गे छोडना—सी० आई० डी०, गुप्तचर या खुफिया छोडना । उ० तुम्हारे पीछे गुर्गे छोडे गए हैं ।

गुर्गे लगाना—दे० 'गुर्गे छोडना' ।

गुर्गे होना—दे० 'गुर्गे छूटना' ।

गुर्दा तोड़ना—घमड चूर-चूर करना ।

गुर्दा होना—हिम्मत होना ।

गुर्रा करना—१ टालमटोल करना । उ० क्या आप गुर्रा कर रहे हैं, अगर नही देना है तो साफ इन्कार कर दीजिये । २ अवकाश देना । उ० अब गुर्रा कर दो नही तो देर होगी । ३ नागा करना । उ० कल गुर्रा मत करना ।

गुर्रा देना—दे० 'गुर्रा करना' ।

गुल बताना—दे० 'गुर्रा करना' ।

गुल कतरना—१. दीपक की बत्ती का जला भाग काटना । उ० मालूम होता है, तुमने गुल नही कतरा, इसी से रोशनी ठीक नही हो रही है । २ कपडे या कागज़ का बेल-बूटा बनाना । उ० वह गुल कतरना बडा अच्छा जानता है । ३ कोई विचित्र काम करना । उ० उसने तो गुल ही कतर दिया ।

गुल करना—दीपक बुझाना । उ० जब सोने जाना तो चिराग गुल कर देना ।

गुल खिलना—१ विचित्र बात होना । अनहोनी बात सामने आना । उ० अभी तो ऐसे-ऐसे गुल खिलेंगे कि देखते ही बनेगा । २ हलचल होना, झझट होना । उ० जब वह आ जाय तो गुल खिलेगा ।

गुल खिलाना—१ अनोखा काम करना । २. हलचल पैदा करना ।

गुल-गपाड़ा करना—शोरगुल करना । उ० यहाँ गुल-गपाडा न करो ।

गुलछर्रे उडाना—१ बडी आरामतलबी से जीवन बिताना । उ० भाई जब तक नौकरी किया है, खूब गुलछर्रे उडाया है, पर अब नही कह सकता कि कैसे बीतेगी । २ व्यग्य करना ।

गुलझट निकालना—मनमुटाव दूर करना । उ० अगर गुलझट निकालना है तो यह काम कर दो ।

गुलझट पड़ना—मनमुटाव होना । उ० उनमेमुझमे पहले तो खूब पटती थी, हाँ, इधर कुछ दिनो से अवश्य गुलझट पड गई है ।

गुलझटी निकालना—दे० 'गुलझट निकालना' ।

गुलझटी पड़ना—दे० 'गुलझट पडना' ।

गुलाब का फूल—सुन्दर, कोमल । उ० यह बच्चा तो गुलाब का फूल है ।

गुलाब चटकना—१. गुलाब का खिलना। उ० गुलाब चटकने का यही समय है। २ लडकी का युवती होना। तरुणाई आना। उ० उसका तो अब गुलाब चटक रहा है।

गुलाब छिडकना—गुलाब-जल छिडकना। उ० जनवासे मे गुलाब छिडक दो।

गुलाबी [illegible] चेहरे पर [illegible] आना। उ० इस दवा मे बहुत गुण है, एक महीने भी सेवन नही किया और गुलाबी आने लगी।

गुलाम करना—एकदम अपने वश मे करना। उ० उसने तो सारे गांव वालो को गुलाम कर लिया है, जो भी आज्ञा देता है, एक मिनट मे पूरी हो जाती है।

गुलाम का तिलाम—बहुत छोटा नौकर। उ० अरे भाई, मैं आपके गुलाम का तिलाम बनने को तैयार हूँ, पर आप मेरे ऊपर दया तो रक्खें।

गुलाम बनाना—दे० गुलाम करना'।

गुलाम होना—अधिकार मे होना। उ० क्या मैं आपका गुलाम हूँ जो दिन-रात आपकी सेवा करूँ?

गुलामी अख्तियार करना—दासत्व स्वीकार करना। उ० बादशाह ने अपने दुश्मनो से कहा कि गुलामी अख्तियार करो, नही तो तुम लोगो का सिर धड से अलग कर दिया जायगा।

गुल्ली बँधना—जवानी आना। प्रौढ़ता आना। उ० लडके की गुल्ली बँध गई है, अब उसकी शादी कर देनी चाहिये।

गुस्सा उडना—गुस्सा दूर होना।

गुस्सा उतारना—क्रोध शांत करना। उ० मास्टर साहब ने मुझे पीट कर अपना गुस्सा उतारा।

गुस्सा उबलना—क्रोध का आवेग होना।

गुस्सा थूक देना—क्रोध दूर करना। उ० अरे भाई जो हुआ सो हुआ, जाने दो, अब गुस्सा थूक दो।

गुस्सा नाक पर रहना—जल्दी क्रोधित होना, चिडचिडा होना। उ० गुस्सा तो आपकी नाक पर रहता है, किसकी शामत आई है जो आपसे कुछ कहे।

गुस्सा नाम पर होना—दे० 'गुस्सा नाक पर रहना'।

गुस्सा पीना—क्रोध रोकना। उ० गुस्सा पीना सहज काम नही है।

गुस्से के मारे भूत होना—बहुत अधिक क्रोधित होना। उ० मेरी बातें सुनते ही वह गुस्से के मारे भूत हो गया।

गुस्से के मारे लाल होना—बहुत क्रोधित होना। उ० मेरी बात सुनते ही वह गुस्से के मारे लाल हो गया।

गुहा-छीछी होना—झिकझिक होना, तकरार होना। उ० न क्योंकर हो आपस मे फिर गुहा-छीछी, मैं नाजुक मिजाज और वो तुन्द-खू है।

गुहार लगना—१ पुकार पर ध्यान देना, २ पुकार पडना।

गूंगा होना—प्रतिवाद न करने वाला होना।

गूंगे का गुड—वह बात जिसका अनुभव हो, परन्तु वर्णन न हो सके। उ० सत्संगति का लाभ गूंगे का गुड है, कौन कहे?

गूदा निकालना—बडी मार मारना। उ० अगर सब सही-सही न बता दोगे तो गूदा निकाल लूंगा।

गूलर का कीडा—बिना अनुभव का। संसार की बातो से बहुत दूर। कूपमंडूक। उ० आप तो गूलर के कीडे है, आपको क्या पता कि दुनियाँ मे आज क्या हो रहा है?

गूलर का पेट फाडना—गुप्त बात को प्रकट करना, रहस्य खोलना। उ० अभी क्या आश्चर्य करते हो, गूलर का पेट फाडूंगा तो उनके कारनामे सुनना।

गूलर का फल फोडना—गुप्त रहस्य को प्रकट करना।

गूलर का फूल होना—दुर्लभ वस्तु होना। उ० आप तो गूलर के फूल हो गये, कई वर्षो पर आज भेंट हुई है।

गूलर का भुनगा—दे० 'गूलर का कीडा'।

गूलर फोड कर जीव उडाना—१. छिपी बात प्रकट करना। उ० आज हमने गूलर फोड कर सब जीव उडा दिये, अब मेरी तरफ से उनकी सारी शंकाये दूर हो गईं। २. खूब भंडा फोडना।

गूह उछालना—किसी पर कलंक या दोष लगाना। उ० क्यो उस गरीब पर गूह उछालते हो, बेचारे का जीवन बरबाद हो जायगा।

गूह उठाना–१. छोटे से छोटा काम करना। उ० मुझे कोई खाना दे, मैं उसका गूह उठाने को तैयार हूँ। २ सेवा करना। उ० गाधीजी ने मानवता का गूह उठाया, पर बदले मे मानवता ने उनका गला रेत दिया।

गूह कर देना–गदा कर देना, निहायत् मैला कर देना। उ० तुमने तो इसे गूह कर दिया।

गूह का चोत–१ वेकार आदमी। उ० वह तो गूह का चोत है। उससे क्या हो सकता है? २ सुस्त आदमी। उ० वह तो गूह का चोत है। किसी तेज़ आदमी को भेजो।

गूह का कीड़ा–अत्यन्त नीच। उ० वह तो गूह का कीड़ा है, उससे यही आशा थी।

गूह का टोकरा सिर पर रखना–१ बदनाम होना। उ० क्यो अत समय मे गूह का टोकरा सिर पर रख रहे हो? २ किसी दूसरे को बदनाम करना।

गूह का टोकरा सिर से फेंकना–बदनामी की बात से बचना। उ० गूह का टोकरा सिर से फेंकना चाहते हो तो उस जगह को छोड दो।

गूह की तरह छिपाना–बहुत छिपाना। ढाकते फिरना। उ० रखता हूँ गूह की तरह से इस वास्ते छिपा, देखें न गैर तो तेरी तस्वीर हाथ मे।

गूह खाना–१ वहुत क्षुद्र काम करना। उ० गूह खा कर अपने वश का नाम न डुबाओ। २ कलक या अपमान का काम करना। उ० मैं गूह नही खा सकता। तुम्हारा दवाव डालना बेकार है।

गूह गोडते फिरना–जो ही औरत मिल जाय, उससे प्रसग करते फिरना। उ० सर्वदा गूह गोडते फिरते हो, शर्म नही आती।

गूह मुँह में देना–१ किसी की छीछा-लेदर करना। उ० क्यो उसके मुँह मे गूह देते हो, गलती तो सबसे होती है। २ धिक्कारना। उ० मुँह मे गूह न दो, उसका कोई दोष नही है। ३. बात असत्य सिद्ध करना। उ० मैंने तो उसके मुँह मे गूह दे दिया।

गूह-मूत करना–पेशाब-पाखाना साफ करना। छोटी से छोटी सेवा करना। उ० माताएँ बच्चो के गूह-मूत करने मे तनिक भी सकोच नही करती।

गूह मे ढेला फेंकना–नीच आदमी से छेडखानी करना। उ० मैंने तुमसे कई बार कहा कि गूह मे ढेला फेंकोगे तो उसका नतीजा बुरा ही होगा, पर तुम ख्याल ही नही करते।

गूह मे नहलाना–खूब जलील करना। दुर्दशा करना या बदनाम करना।

गूह में नहाना–१ बहुत बदनाम होना। उ० बुरे काम करने से ही तुम्हे गूह मे नहाना पड है। २. दुर्दशा या दुर्गति होना।

गृद्धदृष्टि होना–लेने की लालसा होना, आँख लगी होना।

गृहस्थी का चरखा–गृहस्थी की झझट।

गृहस्थी सँभालना–घर का सब काम-काज देखना-भालना। उ० अब तो तुम्हें अपनी गृहस्थी सँभालनी चाहिये, आखिर कब तक लडके बने रहोगे?

गेहूँ के साथ घुन पिसना–बडो के साथ छोटो का नाश होना या उनकी दुर्गति होना।

गैल करना–किसी को साथ कर देना। उ० अकेले वह कहाँ जायगी, किसी को गैल कर दो तो ठीक रहेगा।

गैल जाना–१ नकल करना, कदम पर कदम रखना। उ० यदि ससार मार्क्सवाद की गैल जाय तो कल्याण निश्चित है। २. सग जाना। उ० आप अकेले थे या किसी की गैल गए थे?

गैल लगे फिरना–पीछे-पीछे रहना। उ० जब तक उनके गैल लगे नही फिरोगे, तुम्हारा काम वे नही कर सकते।

गोदनी-सा लादना–दे० नीचे।

गोदी-सा लदना–१ फलो से लद जाना। उ० मेरे दरवाजे का आम इस साल गोदी-सा लदा हुआ है। २ वदन मे चेचक या फुसी के वहुत अधिक दाने पड जाना। उ० वच्चे का शरीर गोदी-सा लदा हुआ है।

गोटी चित्त पड़ना–युक्ति सफल होना।

गोटी जमना–१ उपाय सफल होना। उ० मेरी गोटी जम गई है, अब कुछ आमदनी होगी। २ टिप्पस भिडना। उ० देखिये, गोटी जम गई तो काम होते देर न लगेगी।

गोटी बैठना–दे० 'गोटी जमना'।

गोटी मारना—१. हराना। गोली जीतना। उ० वडा चतुर है, हमारी गोटी मार कर जीत गया। २ चाल चलना। उ० उसने तो ऐसी गोटी मारी कि हम सब ताकते रह गए और वह ले लिया गया।

गोटी लाल होना—लाभ होना। उ० आजकल उनकी ही तो गोटी लाल है।

गोटी हाथ से जाना—उपाय का विगड़ जाना। उ० हमारी गोटी हाथ से निकल गई, वरना वडा लाभ हुआ होता।

गोटी हाथ से निकल जाना—दे० 'गोटी हाथ से जाना'।

गोड टूटना या टूट जाना—१ असहाय होना। उ० आपके न आने से हमारे गोड टूट गये। २ निराश या आशाहीन होना। उ० उसके गोड टूट गए हैं।

गोड पडना—पैरो पडना। प्रार्थना करना। उ० वावू जी इस वार मुझे माफ कर दीजिये, आपके गोड पड रहा हूँ।

गोड पसारना—१ मर जाना। उ० ससार मे सवको एक दिन गोड पसारना ही पडेगा। २ कुछ उन्नति के साधन वढाना। उ० जव चार पैसे हो जायें तो गोड पसारूँ। ३ पैर पसार कर सोना। ४ पहले से अधिक जगह घेरना। उ० वैठने की जगह मिल जाय तो धीरे-धीरे गोड पसारूँ।

गोडी करना—कमाना। आमदनी करना। उ० केवल मेरे गोडी करने पर घर भर का सव काम चलता है।

गोड़ी जमना—कार्य मे सफल होना।

गोता खाना—१ भ्रम मे पडना। उ० मैंने भी उसकी वातो मे एक वार गोता खाया था, पर वाल-वाल वच गया। २ विपत्ति मे पडना। उ० साल भर मैं गोता खाता ही रहा। ३ पानी मे डुवकी लेना। उ० वह गिरा और नदी मे गोते खाने लगा। ४ हानि उठाना। उ० इस रोजगार मे मैंने तो ऐसा गोता खाया कि कहे नही वनता।

गोद पसार कर विनती करना—वहुत अधीरता से प्रार्थना करना। उ० मैं गोद पसार कर विनती कर रही हूँ, आप किसी तरह मेरी इज्जत वचा दें।

गोद फलना—सतान की प्राप्ति होना।

गोद भरना या भर देना—१ सतान होना। उ० भगवान करे, उसकी गोद भरे। २ शुभ अवसर पर वहू की गोद मे नारियल, पुगीफल आदि शुभ पदार्थ देना। उ० उसकी गोद भर दो।

गोद भरी रहना—हमेशा वच्चे वाली वनी रहना। उ० मेरा तुझे यही आशीर्वाद है कि तुम्हारी गोदी सर्वदा भरी रहे।

गोद लेना—दत्तक लेना। उ० उसने पिछले दिनो मे ही अनाथ आश्रम से लड़का गोद लिया है।

गोद सूनी होना—१ सतान की मृत्यु होना। २ सतान न होना।

गोवर करना—१ गाय-वैल का मल त्यागना। उ० गोवर करते समय वैलों को खडा कर देना चाहिये। २ खराव कर देना। उ० उसने तो सारा काम गोवर कर दिया। ३ गोवर के उपले आदि वनाना। ४ गोवर को हटाना या दूर करना। उ० सवेरे पहले गोवर करके तो और काम करना।

गोवर-गणेश होना—भोदा, सुस्त या वेवकूफ होना। उ० आप पूरे गोवर-गणेश हैं, आपको यह भी ज्ञात नही।

गोवर पाथना—१ व्यर्थ का काम करना। २ मूर्खता का काम करना।

गोवरी निकालना—जहाज़ के पेंदे मे छेद करना।

गोमड़ा वढ़ना—चोट के कारण फूल जाना।

गोमुख नाहर—देखने में सीधा पर असल मे क्रूर। उ० तुम तो गोमुख नाहर हो। तुम्हारे साथ मेरा लडका नही जा सकता।

गोरखधंधा होना—उलझा हुआ या उलझा लेने वाला होना।

गोल-गाल—१ अनुमानत, मोटे हिसाव से। उ० वह गोल-गाल हिसाव देकर चला गया, कभी आये तो ठीक हिसाव लूं। २. अस्पष्टत.। उ० गोल-गाल क्यो कहते हो, जो कहना हो तो साफ कहो। ३ गोला। उ० उसका मुँह गोल-गाल है।

गोल डालना—दे० 'गोल पारना'।

गोल पारना—१ हलचल कर देना। उ० वहाँ से तो ऊधम करके आया ही है, यहाँ भी पहुँचते ही गोल पारना शुरू कि । २ गिरोह वनाना।

घंटे पर रखना या मारना–कुछ न समझना। उ० दस-बीस रुपये तो मैं घंटे पर मारता हूँ।

घट-घट में समाना–सर्वव्यापक होना।

घटती का पहरा–अवनति का समय। उ० भाई इस समय मेरा घटती का पहरा है, जो मन चाहे कह लो।

घटती के पहर चढ़ना–अवनति के दिन आना। उ० घटती के पहर चढने चुपचाप बैठ रहना ही अच्छा है।

घट में बसना–१ मन मे जमना। उ० आपकी बात मेरे घट मे बस गई है। अब मैं वैसा ही करूँगा। २ शरीर मे रहना। उ० ईश्वर तो घट-घट मे बसता है। ३ घट मे रहना। उ० गाली तो जैसे तुम्हारे घट मे बसी है।

घट मे बैठना–दे० 'घट मे बसना'।

घट मे रमना–दे० 'घट मे बसना'।

घट मे व्यापना–दे० 'घट मे बसना'।

घटाव पर होना–पानी की बाढ का कम होना। उ० आज सुबह से ही नदी घटाव पर है, आशा है, शाम तक पानी काफी घट जायगा।

घटिकाशतक होना–एक घंटे के भीतर सौ काम पूरा करने वाला होना। उ० आप जो घटिका-शतक हैं, मुझसे छिपा नही है, कही और जा-कर बनिए।

घटी आना–हानि होना। उ० इस साल तो आपको आलू मे घटी आई है।

घटी पड़ना–दे० 'घटी आना'।

घट्टा खुलना–छेद हो जाना। यदि मरम्मत न करो तो पक्के मकानो की छत मे भी जल्दी ही घट्टा खुल जाता है।

घट्टी आना–हानि होना। उ० इस वर्ष व्यापार मे मुझे काफ़ी घट्टी आई है।

घट्ठा पड़ना–१. अभ्यास हो जाना। उ० मुझे इस काम को करते-करते घट्ठा पड़ गया है। अब कोई कष्ट नही होता। २. हाथ या पर मे निशान होना।

घड़ी कूकना–घडी मे चाभी देना। उ० घडी कूक दो। [यह To cook the watch का रूपातर है।]

घड़ी गिनना–१ समय की प्रतीक्षा करना। उ० मैं बैठे-बैठे घडी गिन रहा था कि कब पर्चा मिले और अपना भाग्य आज़माऊँ। २ मौत की प्रतीक्षा करना। उ० अब तो उनकी घडी गिनी जा रही है।

घड़ी-तोला घडी-माशा करना–थोडी-थोडी देर मे विचार का बदल जाना। उ० अरे भाई आपकी बात का कोई विश्वास कैसे करे, आप तो घड़ी-तोला घडी-माशा किया करते हैं।

घडी मे घडियाल बजना–दे० 'घड़ी मे घडियाल होना'।

घडी मे घड़ियाल होना–हालत बदलते देर न होना। उ० घडी मे घडियाल हो जाता है, हम कल की बात का कैसे विश्वास दिलायें?

घड़ी सायत पर होना–मौत का दिन करीब होना। उ० आपकी घडी सायत पर है, अब ज़रा आप शुद्ध विचार से रहिये।

घड़े को ठोकना–परखना।

घड़ो नशा चढना–गहरा प्रभाव होना।

घड़ो पानी पड़ जाना–बहुत अधिक शर्मिन्दा हो जाना। उ० उस दिन उस पर घडो पानी पड गया, अब कभी हम लोगो के यहाँ नही आ सकता।

घन का होना–बहुत घना होना। उ० आप का जगल खूब घन का है।

घनचक्कर मे आना–१ कष्ट मे फँसना, फेर मे आना। उ० हम तो घनचक्कर मे आ गए हैं, जो मन चाहे कर लो। २ धोखे मे आना। झझट मे फँसना।

घनचक्कर मे पड़ना—दे० 'घनचक्कर मे आना'।

घनचक्कर होना–बेवकूफ होना। उ० तुम तो पूरे घनचक्कर हो, जाकर अपना काम क्यो नही करते?

घपची बाँध कर पानी मे कूदना–कमर कस कर काम मे लग जाना। उ० वह घपची बाँध कर पानी मे कूदा है, अवश्य ही काम पूरा कर लेगा।

घपले मे पड़ना–१ चक्कर मे पडना। उ० हम तो आज ऐसे घपले मे पड़ गये कि कुछ काम ही न कर सके। २ रुकावट या बाधा मे पडना। उ० मेरा काम तो ऐसे घपले मे पडा है, कुछ कहते नही बनता।

घमड टूटना–अभिमान खतम होना। उ० मेरे सामने आते ही उसका घमड टूट गया।

घमंड निकालना—अभिमान दूर करना। उ० आपका सारा घमंड निकाल दूँगा, आप क्या समझते हैं।

घमंड पर आना—घमंड करना। क्यों मेरे सामने घमंड पर आ रहे हो? तुम्हारे पुरखों तक को जानता हूँ।

घमंड पर होना—दे० 'घमंड पर आना'।

घमक्का खाना—१ हानि उठाना। २ मुक्के से पीटा जाना। उ० उस दिन तो तुमने ऐसा घमक्का खाया कि बेहोश हो गए।

घमसान करना या कर देना—लड़ाई-झगड़ा मचा देना। उ० यार तुम लोग तो बड़े विचित्र हो, छोटी-सी बात पर घमसान कर देते हो।

घमसान ठानना—दे० 'घमसान करना'।

घमसान मचाना—दे० 'घमसान करना'।

घर-आँगन होना—घर के समान परिचित होना।

घर आबाद करना—विवाह कर लेना। उ० आपने इस वर्ष घर आबाद कर लिया, यह बड़ा अच्छा हुआ।

घर उजड़ना—१ परिवार का नाश हो जाना। उ० अपना घर तो उजड़ ही गया, अब किसकी मोह-माया है? २ घर वालों का एकसाथ न रहना। उ० सब लोग नौकरी पेशे के हैं, कोई कहीं रहता है, कोई कहीं, घर उजड़ा ही जानो। ३ घरवालों का एकमत न रहना।

घर करना—दे० 'जड़ करना'। उ० यह बात उसके दिल में घर कर गई है।

घर का—१ आप का। उ० यह घर का झगड़ा है, इसमें दूसरों के बोलने की क्या ज़रूरत है? २ अपना। उ० ये सारी चीज़ें घर की हैं। ३ अपने भाई-बन्धु। उ० जितने भी आदमी घर के हैं, उनको पहले खिलाओ। ४ मालिक, पति। उ० उसके घर में नौकरी करते हैं।

घर का अच्छा—मालदार। उ० अरे उसका क्या पूछना है, वह तो घर का अच्छा है।

घर का आँगन हो जाना—१ घर खंडहर हो जाना। उ० कितने प्राचीन घर आज आँगन हो गए हैं। २ घर में लड़का पैदा होना। उ० भला, घर आँगन तो हुआ!

घर का आदमी—बहुत नज़दीकी। उ० अरे वह तो घर का आदमी है, उसे अवश्य बुलाऊँगा।

घर का उजाला—१ परिवार की इज़्ज़त बढ़ाने वाला। उ० वह तो वास्तव में अपने घर का उजाला है। २ घर भर में खूबसूरत। उ० तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे घर का उजाला है।

घर का काट खाने दौड़ना—किसी के बिना घर का सूना लगना। उ० वह चली गई, तभी से घर काट खाने दौड़ता है।

घर का काटे खाना—दे० 'घर का काट खाने दौड़ना'।

घर का न घाट का—१ बेकार। उ० वह वहाँ से हटा दिया गया, अब तो न घर का है, न घाट का। २ कहीं का भी नहीं। उ० धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। ३ निकम्मा।

घर का नाम उछालना—१ परिवार का यश फैलाना। उ० अगर अच्छी तरह से रहा तो घर का नाम अवश्य उछालेगा। २ दे० 'घर का नाम डुबोना'।

घर का नाम डुबोना—घर की बदनामी करना। उ० आपने यह काम करके घर का नाम डुबो दिया।

घर का दीपक बुझ जाना—निर्वंश हो जाना।

घर का बबर—दे० 'घर का शेर'।

घर का बहादुर—दे० 'घर का शेर'।

घर का वीर—दे० 'घर का शेर'।

घर का बोझ उठाना—१ घर का सब काम-काज करना। उ० मेरे लड़के ने दो वर्ष से घर का पूरा बोझा उठा लिया है। २ घर का खर्च चलाना।

घर का बोझ सँभालना—दे० 'घर का बोझ उठाना'।

घर का भेदिया—अपनी गुप्त बातों को जानने वाला। उ० घर के भेदिये से होशियार रहना चाहिए। घर का भेदिया लंका दाह।

घर का भोला—बहुत सीधा-साधा। उ० आप तो घर के भोले हैं, आप से इन लड़ाई-झगड़ों की बातों से क्या मतलब?

घर का मर्द—दे० 'घर का शेर'।

घर का रास्ता जानना—दे० 'घर का रास्ता समझना'।

घमंड निकालना–अभिमान दूर करना। उ० आपका सारा घमंड निकाल दूंगा, आप क्या समझते हैं।

घमंड पर आना–घमंड करना। क्यो मेरे सामने घमंड पर आ रहे हो ? तुम्हारे पुरखो तक को जानता हूँ।

घमंड पर होना–दे० 'घमंड पर आना'।

घमक्का खाना–१ हानि उठाना। २ मुक्के से पीटा जाना। उ० उस दिन तो तुमने ऐसा घमक्का खाया कि बेहोश हो गए।

घमसान करना या कर देना–लडाई-झगडा मचा देना। उ० यार तुम लोग तो बडे विचित्र हो, छोटी-सी बात पर घमसान कर देते हो।

घमसान ठानना–दे० 'घमसान करना'।

घमसान मचाना–दे० 'घमसान करना'।

घर-आँगन होना–घर के समान परिचित होना।

घर आबाद करना–विवाह कर लेना। उ० आपने इस वर्ष घर आबाद कर लिया, यह बडा अच्छा हुआ।

घर उजडना–१ परिवार का नाश हो जाना। उ० अपना घर तो उजड ही गया, अब किसकी मोह-माया है ? २ घर वालो का एकसाथ न रहना। उ० सब लोग नौकरी पेशे के हैं, कोई कही रहता है, कोई कही, घर उजडा ही जानो। ३ घरवालो का एकमत न रहना।

घर करना–दे० 'जड करना'। उ० यह बात उसके दिल मे घर कर गई है।

घर का–१ आप का। उ० यह घर का झगडा है, इसमे दूसरो के बोलने की क्या जरूरत है ? २ अपना। उ० ये सारी चीजे घर की हैं। ३ अपने भाई-बन्धु। उ० जितने भी आदमी घर के हैं, उनको पहले खिलाओ। ४ मालिक, पति। उ० उसके घर मे नौकरी करते हैं।

घर का अच्छा–मालदार। उ० अरे उसका क्या पूछना है, वह तो घर का अच्छा है।

घर का आँगन हो जाना–१ घर खडहर हो जाना। उ० कितने प्राचीन घर आज आँगन हो गए हैं। २ घर मे लडका पैदा होना। उ० भला, घर आँगन तो हुआ !

घर का आदमी–बहुत नजदीकी। उ० अरे वह तो घर का आदमी है, उसे अवश्य बुलाऊँगा।

घर का उजाला–१ परिवार की इज्जत बढाने वाला। उ० वह तो वास्तव मे अपने घर का उजाला है। २ घर भर मे खूबसूरत। उ० तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे घर का उजाला है।

घर का काट खाने दौडना–किसी के बिना घर का सूना लगना। उ० वह चली गई, तभी से घर काट खाने दौडता है।

घर का काटे खाना–दे० 'घर का काट खाने दौडना'।

घर का न घाट का–१ बेकार। उ० वह वहाँ मे हटा दिया गया, अब तो न घर का है, न घाट का। २ कही का भी नही। उ० धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का। ३ निकम्मा।

घर का नाम उछालना–१ परिवार का यश फैलाना। उ० अगर अच्छी तरह से रहा तो घर का नाम अवश्य उछालेगा। २ दे० 'घर का नाम डुबोना'।

घर का नाम डुबोना–घर की बदनामी करना। उ० आपने यह काम करके घर का नाम डुबो दिया।

घर का दीपक बुझ जाना–निर्वंश हो जाना।

घर का बबर–दे० 'घर का शेर'।

घर का बहादुर–दे० 'घर का शेर'।

घर का वीर–दे० 'घर का शेर'।

घर का बोझ उठाना–१ घर का सब काम-काज करना। उ० मेरे लडके ने दो वर्ष से घर का पूरा बोझा उठा लिया है। २ घर का खर्च चलाना।

घर का बोझ सँभालना–दे० 'घर का बोझ उठाना'।

घर का भेदिया–अपनी गुप्त बातो को जानने वाला। उ० घर के भेदिये से होशियार रहना चाहिए। घर का भेदिया लंका दाह।

घर का भोला–बहुत सीधा-साधा। उ० आप तो घर के भोले हैं, आप से इन लडाई-झगडो की बातो से क्या मतलब ?

घर का मर्द–दे० 'घर का शेर'।

घर का रास्ता जानना–दे० 'घर का रास्ता समझना'।

घर का रास्ता नापना—अपने काम से काम रखना। उ० आप घर का रास्ता नापिये, आपसे इन बातो मे क्या मतलब ?

घर का रास्ता पकडना—दे० 'घर का रास्ता नापना'।

घर का रास्ता लेना—दे० 'घर का रास्ता नापना'।

घर का- रास्ता समझना—बहुत आसान काम समझना। उ० मैं तो इसे घर का रास्ता समझता हूँ, आप चाहे जो समझे।

घर का शेर—अपने घर पर बहादुर बनने वाला पर असल मे कायर और डरपाक। उ० अरे मैं आपको खूब जानता हूँ, आप केवल घर के ही शेर है।

घर का होना न घाट का—कही का भी न रहना।

घर की—उ० भाई, मेरी स्त्री घर की बडी लायक है। वही बेचारी, घर का बोझ सँभाले है। —

घर की तरह बैठना—आराम से बैठना। उ० घर की तरह बैठिये, थोडी देर मे आते ही होगे।

घर की बात—१ आपस की बात। उ० यह हमारे घर की बात है, इसमे आपके बोलने की क्या आवश्यकता है ? २ गुप्त बात। उ० घर की बात सबसे न कहो। ३ परिवार की बात। उ० हमारे घर की बात कौन नही जानता ?

घर की पूँजी—पास का रुपया। उ० घर की पूँजी है, हानि भी होगी तो कोई बात नही।

घर की मुर्गी—अपनी वस्तु। उ० घर की मुर्गी दाल बराबर।

घर की लक्ष्मी होना—कुशल व भाग्यवान् गृहिणी होना।

घर के घर बद होना—परिवार के परिवार का सफाया हो जाना। बहुत आदमियो का मर जाना। उ० इस वर्ष मेरे गाँव मे ऐसा प्लेग आया कि घर के घर बद हो गये।

घर के घर रहना—न कुछ हानि न लाभ होना। घर का कुछ न जाना। उ० साल भर परीशानी तो हुई, परन्तु खैरियत यही रही कि घर के घर रह गए।

घर के घर साफ हो जाना—दे० 'घर के घर बद होना'।

घर के भरे-पूरे होना—धन-जन से सम्पन्न होना।

घर को सिर पर उठाना—१ परिवार के सब आदमियो को परीशान कर देना। उ० मेरा छोटा लडका ऐसा शरारती है कि सारे घर को सिर पर उठा रक्खे है। २ शोर-गुल मचाना। उ० जरा शान्त रहो, घर को सिर पर न उठाओ।

घर खाली छोड देना—१. गोटी के खेल मे आगे के लिये जगह छोडना। २ कोई उपाय बाकी न रखना। उ० उसके लिए तुमने कोई घर ख़ाली छोडा ही नही ? ३ हमला न करना। उ० सामने पाकर भी मैंने घर खाली छोड दिया।

घर खोना—घर की सारी सपत्ति नष्ट कर देना। उ० मुकदमे के फेर मे पड कर उसने अपना घर खो दिया। अब रोटी-रोटी का मोहताज है।

घर-घर के हो जाना—१ मारे-मारे फिरना। बिना घर के होना। उ० युद्ध के ज़माने मे बहुत से लोग घर-घर के हो गए। २ सब जगह आदर पाना। उ० वह तो अपने व्यवहारो से घर-घर का हो गया है।

घर-घर मिट्टी का चूल्हा होना—सबकी एक-सी दशा होना।

घर-घर होना—हर जगह पर होना। उ० बाप-बेटे और सास-पतोहू की लडाई तो घर-घर है।

घर-घाट एक करना—१ बहुत शोरगुल करना। उ० उसने आज घर-घाट एक कर दिया, पर उसमे कुछ लाभ नही हुआ। २ बहुत प्रयास या परिश्रम करना। उ० घर-घाट एक करके वह मिनिस्टर हो गया।

घर-घाट का—ढङ्ग का, तरह का। उ० तुम तो दूसरे ही घर-घाट के आदमी हो।

घर-घाट देखना—१ घर की पूरी हालत देखना। उ० पहले घर-घाट देख लो तो शादी की बातचीत करो। २ सब कुछ देखना। उ० घर-घाट देख कर तो कुछ करो।

घर-घाट मालूम होना—घर की पूरी हालात का बोध होना। सब कुछ ज्ञात होना। उ० घर-घाट मालूम ही है तो फिर पूछना क्या है ?

घरघुसना—१ घर मे ही रहने वाला। उ० आप ऐसे घरघुसने हम लोगो के सामने क्या

बात करें ? २ घर मे जाने वाला। उ० इन चोरों को घरघुसना बना कर पछताओगे।

घर चढ़ कर लड़ने आना—झगडा करने को किसी के घर जाना। उ० घर चढ कर लडने आए है और पास मे एक लाठी भी नही है।

घर चलना—१ जीवन-निर्वाह करना। उ० किसी तरह घर चल रहा है, यही बहुत है। २ घर का काम चलना। ३ घर के लोगो का एकमत रहना। उ० वहाँ के बाबुओं का घर खूब चला।

घर जाना—घर का विनाश होना। उ० इन नालायकों के कारण हमारा घर चला गया। २ घर के सभी सदस्यों का कही जाना। उ० मेरा तो घर ही तीर्थ पर जा रहा है।

घर डूबना—१ घर नष्ट होना। उ० आपकी लापरवाही से हमारा घर डूब गया। २ धन खतम होना। उ० रंडीबाजी मे ही घर डूब गया।

घर डुबोना—१ परिवार की बेइज्जती करना। उ० आपने ही अपना घर डुबो दिया। २ घर का धन बरबाद करना। उ० क्यों घर डुबोते हो ? पीछे से पछताओगे।

घर तक पहुँचना—१ घर के आदमियो तक से शिकायत करना। उ० अब कर ही क्या सकते हैं ? बहुत करेंगे घर तक पहुँचा देंगे। २ माँ-बहन की गाली देना। उ० घर तक न पहुँचो, नही तो मैं भी कुछ कह दूँगा।

घर तक पहुँचाना—१ खतम करना। उ० मनुष्य को चाहिये कि जिस काम को शुरू करे, उसे घर तक पहुँचाये। २ समझ ठिकाने लाना। कायल करना। उ० उसे मार कर घर तक पहुँचा दिया, अब शरारत नही करेगा।

घर-द्वार देखना—१ घर के कार्यों की देखभाल करना। २ घर की स्थिति का पता लगाना।

घर फूंक कर तमाशा देखना—अपना घर बरबाद करके खुशी मनाना। उ० हम तो यह समझते है कि आप ऐसे घर फूंक कर तमाशा देखने वाले ससार मे बहुत कम व्यक्ति मिलेंगे।

घर-फूंक होना—सब कुछ खर्च कर देने वाला होना।

घर फोडना—परिवार मे लडाई झगडा पैदा करना। उ० मेरा घर फोड कर आपको क्या मजा मिला ?

घर बंद होना—१ घर भर का मर जाना। उ० इस वर्ष चेचक की बीमारी से मेरे गाँव मे बहुत से घर बंद हो गये। २ किसी के घर से संबंध न रखना। उ० उन दोनों का घर बन्द हो गया है। ३ आगे बढने का रास्ता न होना। उ० जो पढा नही है, उसके लिये सब घर बन्द हैं। ४ गोटी के खेल मे चलने की जगह न होना। उ० आप तो चल नही सकते, क्योंकि घर बन्द है।

घर बनना—१ धनी होना। उ० थोडे ही दिन बाहर रहने मे उसका घर बन गया। २ इमारत तैयार होना। उ० मेरा घर बन गया। ३ घर का बिगडना (व्यंग्य)। उ० मेरा घर खूब बना है। ४ घर के लोगो का मेल से रहना।

घर बरबाद होना—१ परिवार नष्ट होना। उ० आपकी वजह से मेरा घर बरबाद हो गया। २ घर के लोगों मे फूट होना।

घर-बार की होना या हो जाना—१ घर की मालकिन होना। उ० आजकल तो वह घर-बार की हो गई है। २ विवाह होना। उ० अब तो तुम्हारी पुत्री घर-बार की है।

घर बिगाडना या बिगाड देना—१ घर मे फूट पैदा करना। उ० आपने ही मेरे लडके को बहका कर मेरा घर बिगाड दिया। २ घर बरबाद करना। उ० शराब पीकर अपना घर न बिगाडो। ३ दूसरे घर की औरत को बहकाना। उ० इसने तो बहुत से घर बिगाड दिये है।

घर बैठना—१ काम पर न जाना। उ० अगर अच्छी तरह से काम नही करना है तो घर बैठो। २ मकान का गिरना। उ० वर्षा मे उसका घर बैठ गया। ३ व्यर्थ बैठे रहना। उ० आजकल तो वह घर बैठा है। ४ घर मे एकांत मे रहना। ५ किसी के घर स्त्री बन कर रहना। उ० वह तो दूसरे के घर जा बैठी है।

घर-बैठे—१ बिना मेहनत के। उ० घर बैठे इतना मिल रहा है, यह कहाँ का काम है ? २ बिना आए-गए। उ० किताबों मे घर-बैठे ही ससार का हाल मालूम हो जाता है।

घर-बैठे की नौकरी होना—बिना मेहनत किये रुपये मिलना। उ० घर-बैठे की नौकरी है, उसे कभी न छोडना।

घर-बैठे की शीरनी होना—अत्यधिक सरल होना। **घर-बैठे रोटी मिलना**—बिना मेहनत के गुजर होना। उ० आपको घर-बैठे रोटी मिल रही है और क्या चाहिये ?

घर-बैठे शिकार खेलना—बिना परिश्रम किये रुपये कमाना। उ० आपका क्या पूछना है, आप तो घर बैठे शिकार खेल रहे हैं।

घर भरना—१ घर मे खूब माल लाना। उ० दूसरे का धन लेकर आपने अपना घर भर लिया। २ घर मे ज्यादा आदमी होना। ३ बिल बन्द करना। उ० साँपो का घर भर दो। ४. हानि पूरी होना। उ० सभी तो रोते हैं, किसका-किसका घर भरूँ ? ५ आगे जाने की जगह न होना।

घर मे आग लगाना—परिवार मे झगडा पैदा करना।

घर मे कहना—स्त्री से कह आना, घर के लोगो से कहना। उ० मैंने घर मे कह दिया है कि उसे रुपया दे देना।

घर मे गगा होना—घर ही मे सब कुछ प्राप्त होना। उ० तुम्हारे तो घर मे ही गगा है, तुम्हे कही जाने की क्या जरूरत ?

घर मे घाम आना—बडी कठिनता का सामना होना। उ० जब घर मे ही घाम आ रहा है तो कोई और रास्ता पकडो।

घर मे धूप आना—दे० 'घर मे घाम आना।'

घर मे बैठा लेना—रखैल रख लेना।

घर मे बैठे शिकार खेलना—बिना मेहनत किये लाभ करना या रुपये कमाना। उ० आपका इस समय भाग्य खुल गया है, आप घर मे बैठे शिकार खेल रहे हैं।

घर मे भूँजी भाँग न होना—बहुत अधिक निर्धन होना।

घर लुटाना—अपनी सम्पत्ति लुटाना।

घर समझना—नि सकोच रहना। उ० मैं तो इसे अपना घर समझता हूँ, शर्म करने की क्या बात है ?

घर से देना—१ अपने पास से देना। उ० मैं पहले ही बता देता हूँ कि इस काम मे घर से कुछ भी नही दूंगा। २ स्वय हानि उठाना। उ० उसका साथ न करो, नही तो घर से भी देना पडेगा। ३ मूलधन से व्यय करना। उ० इस काम मे तो घर से ही देना पडा।

घर से पाँव निकालना—१ बाहर जाना। उ० तुम तो घर से पाँव निकालना ही नही चाहते हो। २ स्वतन्त्र होकर घूमना। उ० इतना घर से पाँव न निकालो, नही तो बदनामी होगी। ३ स्त्रियो का बाहर-भीतर जाना। उ० अभी तो बहू घर से पाँव भी नही निकालती।

घर से बाहर पाँव निकालना—अपनी शक्ति से बाहर काम करना। उ० घर से बाहर पाँव निकालना किसी भी आदमी के लिए उचित नही है।

घर से बेघर करना—बिना शरण का कर देना। निकाल देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो घर से बेघर कर दूंगा।

घर सेना—१ कही बाहर न जाना। उ० आपका कैसा स्वभाव है कि हमेशा घर सेते रहते हैं। २ व्यर्थ मे घर पर बैठे रहना। उ० आज के जमाने मे घर सेना ठीक नही है, कुछ काम-धाम करो।

घर से मढ़ी अच्छी होना—गृहस्थी से सन्यास लेना ही अच्छा होना।

घर्राटा भरना—गहरी नीद मे सोना। उ० बेचारा आज चार दिन के बाद घर्राटा भर रहा है, उसे अभी न जगाओ।

घर्राटा मारना—दे० 'घर्राटा भरना।'

घर्राटा लेना—दे० 'घर्राटा भरना।'

घाँइयाँ बताना—धोखा देना। बहका देना। उ० मुझे घाँइयाँ न बताइए, मैं आप जैसो को तो रोज ही चराता हूँ।

घाँख होना—चालाक या मक्कार होना। उ० वह बडा घाँख है, उससे बहुत मेल न कीजिए।

घाइयाँ बताना—१ धोखा देना। २ टालना, टाल देना। ३ आक्रमण बचाना।

घाई-माई कर देना—इधर-उधर कर देना, गायब कर देना। उ० यह सब किसने घाई-माई कर दिया, मेरे जाने के वक्त तो यहाँ बहुत-सी चीजें थी।

घार का पत्थर समझना—सब के सामने उपयोग की वस्तु समझना।

घाट-घाट का पानी पीना—१ बहुत तजुर्बा हासिल करना। उ० आपने घाट-घाट का पानी पिया है, आपको कोई धोखा नही दे सकता। २ रमता जोगी बनना। उ० जो घाट-घाट का पानी पीता है, उसे एक जगह रहना अच्छा नही लगता। ३. काफी स्थानो

से भिज्ञ होना । उ० उसने घाट-घाट का पानी पिया है ।

घाट मे आना या आ जाना—चक्कर मे आना। फदे मे आना । उ० अगर एक बार भी घाट मे आ गए तो सब रुपया वसूल कर लूंगा ।

घाट लगना—१ ठिकाना पाना । उ० जी रहा हूँ, देखें कही घाट लगता हूँ या नही । २ नाव का किनारे पर आना । उ० नाव घाट लग गई है। ३ काम खतम होना ।

घाटा आना—दे० 'घटी आना ।'

घाटा उठाना—नुक़सान मे पडना । उ० इस काम मे आपको घाटा उठाना पडेगा ।

घाटा भरना—हानि को पूरा करना । उ० साल भर से तो घाटा भर रहा हूँ, कमाऊँगा क्या ?

घात चलाना—टोना करना । उ क्या घात चलाते हो, मेरे पर कुछ भी असर न होगा ?

घात ताकना—उचित समय की प्रतीक्षा करना, मौके की ताक मे रहना। उ० उससे होशियार रहो, वह घात ताक रहा है।

घात पर चढना—वश मे आना। मौके पर चढना। उ० अगर घात पर चढ गये तो सब काम करवा लूंगा ।

घात मे आना—दे० 'घात पर चढना' ।

घात मे फिरना—मौका खोजना । किसी को नुकसान पहुँचाने का अवसर ढूंढना। उ० वह घात मे फिर रहा है, जरा बच कर रहिये ।

घात मे बैठना—१ आक्रमण करने के लिए छिप कर प्रतीक्षा मे रहना । उ० वह घात मे बैठा ही रह गया और मैं दूसरे रास्ते से चला आया । २ दे० 'घात ताकना' ।

घात मे रहना—किसी के खिलाफ कुछ करने के लिये समय के इन्तजार मे रहना । उ० वह आप के घात मे रहता है, अवश्य बदला लेगा ।

घात मे होना—मौके की फिक्र मे होना, मौका ताकना ।

घात लगना—अवसर मिलना । उ० जब भी घात लगेगा, मैं इसे खतम कर दूंगा ।

घात लगाना—१ उपाय करना । उ० कोई घात लगा कर काम कर डालो। २ ताक मे रहना । उ० देखो बगुला मछली के लिए घात लगाए है। ३. अवसर खोजना । उ० घात लगा कर मैं आऊँगा ।

घातें बताना—१ चाले बताना, चालबाजियाँ सिखाना । उ० ऐसी घातें तो बता देते हैं हम औरो को, जाइए-जाइए बस दीजिए दम औरो को । २ धोखा देना ।

घातें याद होना—ढब याद होना । दाँव जानना। उ० जान लेने की तो हैं याद हजारो घातें, दिल-फरेबी का भी तुझको कोई ढग आता है ?

घाम खाना—धूप खाना । उ० जाडे के दिनो मे घाम खाना अच्छा लगता है ।

घाम-छाँह सहना—दे० 'गर्म सर्द उठाना' ।

घास न गिनना—तुच्छ समझना । उ० मैं तो तुम्हारे जैसे धनिको को घास नही गिनता ।

घालमेल करना—मिला-मिला देना, गडबड कर देना । उ० घालमेल न करो, सबके सामान अलग रहने दो ।

घालमेल रखना—मेल-मिलाप रखना ।

घाव पर नमक छिडकना—दु ख पर दुःख देना । उ० मरे को और मार कर क्यो घाव पर नमक छिडक रहे हो ?

घाव पर मरहम लगाना—दु ख बंटाना, हमदर्दी दिखाना । उ० आपकी बातो ने घाव पर मरहम लगा दिया ।

घाव पूजना—जख्म अच्छा होना । उ० अब मेरा घाव पूज रहा है, आशा है दस दिन मे ठीक हो जाऊँगा ।

घाव भरना—दे० 'घाव पूजना' ।

घाव में जहर देना—और अधिक अनिष्ट करना या कष्ट देना ।

घाव हरा हो आना—दुःख की याद से दुःखी होना । उ० मेरे लडके को मरे दस वर्ष हो गये, पर अब भी जब किसी लडके के मरने की खबर सुनता हूँ तो मेरे घाव हरे हो आते हैं ।

घाव हरा हो जाना—दे० 'घाव हरा हो आना' ।

घास काटना—१. छोटा काम करना, आसान काम करना । उ० काटता तो है घास, पर बनता है इतना । २ बिना सँभाले जल्दी-जल्दी काम करना । उ० काम करते हो या घास काट रहे हो ? ३ बेकार कोशिश करना । उ० दुष्टो को समझाना घास ही काटना है ।

घास खाना—१ कुछ चीज पर गुजर करना। उ० भाई इस मामले में न पूछिये, [illegible] घास खाकर जी रहा है। २. [illegible] जाना।

घास खोदना—दे० 'घास खाना'।

घास-फूस उठा लाना—१ [illegible] उ० [illegible] घास-फूस उठा लाता है।

घिग्घी बँधना—[illegible]

घिग्घियों में [illegible]—[illegible]

घिस घिस करना—१ [illegible] उ० घिस-घिस [illegible] २ [illegible] ३ [illegible]

घिस-घिस लगाना—उ० [illegible]

घिस देना—[illegible] मुर्गी का घिस [illegible]?

घिसा हुआ होना—[illegible] होना।

घिसटी चलना—१ [illegible] चलना। उ० [illegible] घिसटी चल रहा है। २ [illegible] जाने से घिसट-घिसट [illegible]। उ० भगवान चाहेंगे तो [illegible] घिसटी चलती रहेगी।

घी का कुप्पा लुढ़कना—बड़ा [illegible] हो जाना। उ० कौन घी का कुप्पा लुढ़क गया है कि [illegible] रहे हो?

घी का कुप्पा लुढ़ना या लुढ़ जाना—किसी अमीर या नामी आदि का मरना। उ० आज घी का कुप्पा [illegible] गया, अब [illegible] हो जायेगा।

घी के कुप्पे में जा लगना—जहाँ खूब माल मिले, वहाँ पहुँच जाना। उ० वह [illegible] भी पहुँचता है, घी के कुप्पे में जा लगता है।

घी के जलना—दे० 'घी के दिये जलना'।

घी के दीये जलना—१ खुशी या आनन्द होना। उ० स्वतन्त्रता-दिवस पर भारत में घी के दीये जले। २ सम्पन्न होना। उ० बिड़ला के घर तो घी के दीये जलते हैं। ३ कामना पूरी होना।

घी के दीये भरना—[illegible]

घी खिचड़ी होना—[illegible]

घी [illegible]

घी में [illegible]

घुटने [illegible]

घुटनों [illegible]

घुटनों के [illegible]

घुटनों [illegible] के लिए [illegible]

घुटना टेकना या टेक देना—१ [illegible] बैठना। [illegible]

घुटनों तोड़ना—[illegible]

घुटनों में लगाकर बिठाना—१ [illegible] न होने देना। २. बेटी को घर में [illegible] न रहने देना। ३ बहुत प्यार करना।

घुटनों के बल चलना—१ बच्चों का चलना। २ बहुत दीन होना या अनुभवहीन होना।

घुटनों में सिर देकर बैठना—अत्यन्त उदास होकर बैठना।

घुटनों में सिर देना—१ सिर नीचा किये उदास बैठना। उ० आज क्या बात है कि आप घुटनों में सिर दिये बैठे हैं? २. लज्जित होना।

उ० क्यो घुटनो मे सिर दिये हो, गलती तो सबसे होती है।

घुटनों मे सिर दे लेना–शरमा जाना।

घुटनो से लग कर बैठना–हर समय पास ही रहना। उ० आजकल आप उसके घुटनो से लग कर बैठते हैं, आखिर क्या बात है?

घुटा हुआ–बहुत चालाक। उ० भाई साहब उससे बच कर रहना, वह बहुत घुटा हुआ है।

घुट्टी मे पडना–स्वभाव के अन्तर्गत होना। उ० क्रोध तो तुम्हारी घुट्टी मे पडा है।

घुडकियां जमाना–डाँटना।

घुघुनियां मुंह मे भर कर बैठना–चुप होकर बैठना। खामोशी अख्तियार करना।

घुन लगना–चिंता के कारण शरीर का दुर्बल हो जाना।

घुन्ना होना–सूरत से सीधा, मगर भीतर से चालाक होना। उ० कैसा घुन्ना है, सुनता सब है, पर जवाब नही देता।

घुन्नी साधना–चुप होकर बैठ जाना।

घुमा-घुमा कर पूछना–हेर-फेर से पूछना। खोद-विनोद करके पूछना। उ० जब चोर से पुलिस ने घुमा-घुमा कर पूछा तो उसने सभी कुछ उगल दिया।

घुमा-घुमा कर बातें करना–१ दे० 'घुमा-घुमा कर पूछना'। २. स्पष्ट बात न करना।

घुमा-फिरा कर पूछना–दे० 'घुमा-घुमा कर पूछना'।

घुमाव-फिराव की बात–पेचीदी बात। अस्पष्ट बात। उ० जो कुछ कहना हो, साफ-साफ कहिये, घुमाव-फिराव की बात मैं पसन्द नही करता।

घुल-घुल कर कांटा होना–१ बीमारी आदि से बहुत दुर्बल हो जाना। उ० वह बीमारी मे घुल-घुल कर कांटा हो गया। २ चिंता के कारण सूख जाना। उ० क्यो घुल-घुल कर कांटा हुए जा रहे हो?

घुल-घुल कर बातें करना–खूब मिल-जुल कर बातें करना। उ० अब तो आप उनसे खूब घुल-घुल कर बातें कर रहे हैं।

घुल-घुल कर मरना–कष्ट सहकर मरना। उ० पापी लोग घुल-घुल कर मरते हैं।

घुल-मिल कर–१ खूब मेलजोल से। उ० हम सबको खूब घुल-मिल कर रहना चाहिये। २ मिल कर। उ० पानी दूध घुल-मिल कर एक हो जाते है।

घुला-घुला कर मारना–१ परेशान करना। उ० आपने उस बेचारी को घुला-घुला कर मार कर क्या फायदा पाया है? २ बहुत कष्ट देना। उ० इन गरीबो को घुला-घुला कर न मारो।

घुला हुआ होना–बहुत बूढा होना। उ० वह तो घुला हुआ है, उसकी भला क्या शादी होगी?

घुस कर बैठना–१ छिपा रहना। उ० क्या घुस कर बैठते हो, सामने आकर बात पूछो। २ एक मे एक सट कर बैठना। उ० गर्मी है, घुस कर न बैठो।

घुस-पैठ होना–पहुँच होना।

घूंघट उठाना–पर्दा हटाना। उ० घूंघट उठाओ, ये तो तुमसे छोटे है।

घूंघट करना–१ मुँह छिपाना। दुपट्टे या साडी के सर पर रहने वाले भाग से मुँह ढकना। उ० कौन ऐसी बात है कि आप घूंघट कर रही हैं। २ शर्माना, झेंपना।

घूंघट काढना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंघट खाना–१ युद्ध मे पीठ दिखाना। फौज का पीछे हटना। उ० घूंघट खाना कायरो का काम है। २ हारना।

घूंघट निकालना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंघट मारना–दे० 'घूंघट करना'।

घूंट-घूंट कर मारना–बुरी तरह या बहुत तकलीफ दे देकर मारना।

घूंट-घूंट पीना–धीरे-धीरे पीना।

घूंट पीना–आक्रोश आदि को जब्त करना।

घूंट भरना–दे० 'घूंट लेना'।

घूंट लेना–१ थोडा-थोडा करके पीना। उ० क्या आप अभी तक उतने ही दूध मे घूंट ले रहे हैं।

घूंसा पिलाना–दे० 'घूंसा लगाना'।

घूंसा लगाना–घूंसे से मारना। उ० मैने ज्योंही एक घूंसा लगाया, वह बेहोश हो गया।

घूंसो का क्या उधार–मार-पीट का बदला तुरन्त लेना चाहिये । उ० अरे घूंसो का क्या उधार ? जब तुमने वैसा किया तो उसके लिए भी वही चारा था ।

घूर-घूर कर देखना–टकटकी लगा कर देखना । उ० क्यो घूर-घूर कर देख रहे हो, आखिर क्या बात है ?

घूरे के दिन फिरना–तुच्छ वस्तु या व्यक्ति की हालत मे परिवर्तन आना ।

घूरे को पलट कर हीरा खोजना–गदगी मे से सार-वस्तु खोज लेना ।

घूंसे का जवाब घूंसे से देना–जैसे से तसा व्यवहार करना ।

घोघा होना–मूर्ख या जड होना ।

घोट-घोट कर मारना–तकलीफ दे-दे कर मारना । उ० जिसने ऐसा नीच काम किया है, उसे घोट-घोट कर मारना चाहिये ।

घोटना–१ पीसना । उ० भांग घोटो, मैं आ रहा हूँ ।

घोडा फेंकना–घोडा तेज़ भगाना । उ० सिपाही ने अपना घोडा फेंक कर चोर को पकड लिया ।

घोडा बेच कर सोना–१ गहरी नीद मे सोना । २ बिलकुल निश्चित होकर सोना । उ० तुम तो जैसे घोडा बेच कर सो रहे हो ।

घोडा भर जाना–अधिक दौडने से घोड़े का दम फूल जाना । उ० मेरा घोडा भर गया है, अब यही थोडी देर आराम करूँगा ।

घोडे का थान से खुल जाना–मर्यादाहीन हो जाना ।

घोडे का रोग बदर के सिर पडना–किसी का दोष किसी दूसरे पर आना ।

घोडे की शादी करना–घोडा बेचना ।

घोड़े के आगे गाडी रखना–उलटा काम करना । [यह अग्रेज़ी मुहावरा To put the cart before the horse का अनुवाद है ।] उ० तुम तो हमेशा घोड़े के आगे गाडी रखते हो, आखिर दिमाग मे गोबर भरा है क्या ?

घोडे चढ़ना–शादी होना । उ० हमारे गाँव के तो लगडे-लूले भी घोडे चढ चुके हैं ।

घोंघा-बसत–मूर्ख । उ० अजीब घोघा-बसत हो, कुछ समझते ही नही हो ।

घोल कर पिला देना–बिलकुल याद करा देना । उ० अभी मे याद करो, नही तो दो दिन मे कोई घोल कर पिला नही देगा ।

घोल कर पी जाना–१. देखते-देखते खतम कर जाना । उ० आप ऐसे घूर रहे हैं, जैसे घोल कर पी जायेंगे ।

घोल पीना–१ कुछ न समझना । उ० तुम्हारे-जैसे पहलवानो को तो वह घोल पियेगा । २. सहज मे मार डालना । उ० चलो चलो, उसे घोल पीना आसान नही है । ३. शरबत बना कर पीना । उ० वह आम का घोल पीता है ।

घोल-मट्ठा करना–हलचल मचाना । उ० हमारे गाँव मे अहीरो ने बडा घोल-मट्ठा कर रक्खा है ।

घोल मे डालना–१ दुविधा मे डालना । उ० आपने ही मेरे काम को घोल मे डाल रक्खा है । २ हीला-हवाला करना । उ० क्यो घोल मे डालते हो, जल्दी दे दो ।

घोल मे पड़ना–झंझट मे पडना । उ० आप यहाँ आकर बेकार घोल मे पड गये ।

घोलुआ घोलना–किसी काम मे ज्यादा समय लगाना । उ० आप हर एक काम मे घोलुआ घोलते है ।

घोलुआ पीना–तीखी चीज़ पीना । उ० बीमारी मे मुझे बडा घोलुआ पीना पडा था ।

घोले मे डालना–रोक रखना, फँसा रखना । उ० कार्य को घोले मे न डालो ।

घोले मे पडना–दिक्कत मे पडना ।

घोह देना–दे० 'घोह बांधना' ।

घोह बांधना–१ धोखा देने के लिये आडबर करना । उ० घोह न बांधो, मैं तुम्हारा चचा हूँ । २ व्यर्थ का रोब दिखाना ।

च

चक्रमन करना–बहुत घूमना । उ० चक्रमन करने से तुम्हारा दिल भी नही ऊबता ?

चग उमहना–दे० 'चग चढना' ।

चग चढना–१ काफी रोब-दाब होना । उ० आपका आजकल खूब चग चढा हुआ है । २ यश होना ।

चंग पर चढ़ाना या चढ़ा देना—१. प्रशसा करके कुप्पा वनाना। उ० आपने उसे चग पर चढा कर अपना काम निकाल लिया। २. बहुत ऊँचा कर देना, दिमाग वढा देना। उ० तुम्हे किसी ने चंग पर चढा दिया है,उसी पर फूले-फूले फिरते हो। ३. घात पर चढाना।

चंगुल में पड़ना—वश में आना। उ० वहुत दिनो के बाद आप मेरे चगुल मे पडे है, अब न छोड़ूँगा।

चंगुल में फँसना—दे० 'चगुल में पडना'।

चंगुल से बचना—फँसाव से वचना।

चंड-मंड लड़ाना—दो आदमियो मे लडाई-झगडा करा देना। उ० चड-मुंड लडाना दुष्टो का काम है, सज्जन लोग ऐसा कभी नही कर सकते।

चंडाल-चौकड़ी—दुष्टो का समूह। उ० चडाल-चौकडी मे रहना आप ऐसे व्यक्ति के लिए उचित नही है। यहाँ चडाल-चौकडी न इकट्ठी किया करो।

चंडूखाने की गप—झूठी कल्पना। झूठी बात। उ० चडूखाने की गप मैं नही सुनना चाहता।

चंडूखाने की गप हाँकना—झूठी वातें कहना। उ० यहाँ चडूखाने की गप हाँकने न आया करो।

चंडूल—१. वहुत झगडालू। उ० आप तो पुराने चडूल हैं। २. बे-डीलडौल का। ३ मूर्ख। उ० वह तो महा चडूल है।

चंदन उतारना—चदन को पानी के साथ घिसना। उ० चदन उतारो, पूजा का समय हो गया।

चंदन चढ़ाना—घिसा हुआ चदन लगाना।

चँदिया खाना—१ वात से सिर खाना। उ० मेरी चँदिया न खाइये, मुझे आराम करने दीजिये। २ सब कुछ छीन कर निर्धन कर देना। उ० जमीदारो ने किसानो की चँदिया खा ली।

चँदिया खुजलाना—मार खाने की इच्छा होना। उ० आज तुम सुवह से खेल रहे हो, मालूम होता है,तुम्हारी चँदिया खुजला रही है।

चँदिया पर बाल न छोड़ना—१ मारते-मारते सिर के बाल तक उडा देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो चँदिया पर वाल तक न छोड़ूँगा। २ सर्वस्व ले लेना। उ० डाकुओ ने उसकी चँदिया पर वाल तक न छोडा।

चँदिया मूड़ना—१ खूब लूटपाट कर ले भगना। उ० बदमाशो ने बेचारी की चँदिया मूड ली। अब उसके पास कुछ भी नही है। २ सर के वाल वनाना।

चँदिया से परे सरकना—पास से हट जाना। उ० भाई मेरी तवीयत ठीक नही है, चँदिया से परे सरक कर बातचीत करो।

चंद्रमा बलवान होना—अच्छा समय होना। उ० आजकल उसका चद्रमा बलवान है, जहाँ भी जाता है, उसकी जीत होती है।

चंपत बनना—ग़ायब हो जाना। उ० वह सिपाही के आते ही चपत वना।

चंपत होना—दे० 'चपत वनना'।

चँवर ढुरना—वैभव की स्थिति मे होना।

चंवल लगना—वाढ आना, खूब पानी वढना। उ० घाघरा मे हर साल चवल लगता है।

चक काटना—ज़मीन के भाग करना।

चकचुहिया बोलना—सवेरा होना। उ० उठो, चकचुहिया वोल रही है।

चक जमना—रग जमना। उ० उसका आजकल सब पर चक जमा हुआ है।

चकत्ता पड़ना—खाल पर उभरा हुआ धव्बा पडना। उ० टिड्डे के काटते ही चकत्ता पढ जाता है।

चकत्ता भरना—दाँतो से काटना। उ० लडके ने चकत्ता भर दिया, जिससे खून निकल आया।

चकत्ता मारना—दे० 'चकत्ता भरना'।

चकनाचूर करना—टुकडे-टुकडे करना। उ० बच्चे ने शीशे को चकनाचूर कर दिया।

चकफेरी देना—चारो तरफ घूमना। उ० तुम व्यर्थ क्यो चकफेरी दिया करते हो ?

चक बँधना—दिन पर दिन अधिक होता जाना।

चकमा उठाना—१ किसी के धोखे मे आ जाना। उ० मैंने वहाँ जाकर खूव चकमा उठाया। २. हानि सहना। उ० साल भर चकमा उठाते ही बीता। ३ शोकित होना।

चकमा खाना—धोखा खाना। उ० मैं तो ऐसा चकमा खा गया कि कहते नही वनता।

चकमा देना—धोखा देना। उ० आप चकमा देकर मेरा कुछ नही कर सकते।

चकमे मे आना—धोखा खाना। उ० चकमे मे आकर मैंने अपना सब कुछ नष्ट कर दिया।

चकाचक घुटना—अच्छी गाढी भग घुटना और पिया जाना।

चकाचौंधी आना–१ तेज़ रोशनी के सामने आँख का न ठहरना। उ० सूरज की ओर देखो तो चकाचौंधी आ जाती है । २ आँखो के आगे अँधेरा छा जाना। उ० उसने ऐसा थप्पड मारा कि चकाचौंधी आ गई।

चकाचौंधी लगना–दे० 'चकाचौंधी आना'।

चकाव्‌ का जाल होना–फँसाने तथा उलझाने वाली स्थिति मे होना।

चकाव्‌ मे पड़ना–१ फेर मे पडना, चक्कर मे पडना। उ० आपके चकाव्‌ मे जो पड जायगा, उसका सब कुछ नष्ट हो जायगा।

चकाव्‌ मे फँसना–दे० 'चकाव्‌ मे पडना'।

चकोर होना–प्रेमी होना। चद्रमुख का प्रेमी होना।

चक्कर आना–१ सर चकराना, घुमटा आना। उ० मुझे कल से ही चक्कर आ रहा है। २ विपत्ति आना, आफत आना।

चक्कर काटना–१ इधर-उधर घूमना। उ० क्या तुम दिन भर चक्कर काटा करते हो ? २ वृत्ताकार घूमना।

चक्कर खाना–१ हैरान होना। उ० घंटो चक्कर खाने के बाद मैं यहाँ पहुँचा हूँ। २ टेढ़े-मेढ़े जाना। उ० सडक काफी चक्कर खा कर गई है, इसी से दूर पडता है।

चक्कर देना–१ सिर मे दर्द होना। उ० मेरा सिर चक्कर दे रहा है। २ परेशान कर देना। उ० मुझे चक्कर न दो, तुम स्वय कर डालना। ३ प्रदक्षिणा करना। उ० मन्दिर को चक्कर देकर तो प्रवेश करो। ४ घुमाव-फिराव मे डालना। ५ धोखा देना।

चक्कर पडना–१ घुमाव या फेर पडना। उ० वहाँ से जाने मे चक्कर पडेगा। २ दे० 'चक्र पडना'।

चक्कर मारना–१ चारो तरफ घूमना। उ० आप क्या दिन-रात चक्कर मारा करते है ? २ चले आना। उ० यहाँ भी चक्कर मार लिया कीजिए।

चक्कर मे आना–१ अचम्भे मे आना। उ० औरत की वीरता देखकर सब लोग चक्कर मे आ गये। २ धोखे मे आना। उ० आप भी उसके चक्कर मे आ गए।

चक्कर मे डालना–१ परेशान कर देना। उ० आपने गाँव भर को चक्कर मे डाल रक्खा है। २ असमजस मे छोडना। उ० मेरी पार्टी को इस समस्या ने चक्कर मे डाल दिया है। ३ धोखे मे डालना।

चक्कर मे पड़ना–असमजस, दुविधा या हैरानी मे पडना।

चक्कर मे फँसना–दे० 'पेच मे आना'।

चक्कर लगाना–१ घूमना-फिरना। उ० हम रोज़ सुबह बडी दूर तक चक्कर लगाते हैं। २ प्रदक्षिणा करना। उ० हमने पशुपतिनाथ के मदिर का चक्कर लगाया। ३ फेरी देना। उ० क्या चक्कर लगाते हो ?

चक्की के दो पाटो मे पिसना–दोनो ओर से कठिनाई मे पडना।

चक्की छेडना–अपनी कथा छेडना।

चक्की पिसवाना–जेल मे बद करवाना।

चक्की पीसना–लगातार काम करना। उ० मुझसे चक्की पीसना नही हो सकता।

चक्की मे जुतना–काम मे लगना। उ० मैं तो दिन भर चक्की मे जुता रहता हूँ।

चक्की रहाना–चक्की को कुटवाना, खुरदरा कराना।

चक्र गिरना–वज्रपात होना, दुःख आना। उ० अगर ज्यादा पाप करोगे तो तुम्हारे ऊपर चक्र ही गिरेगा।

चक्र पडना–दे० 'चक्र गिरना'।

चखचख करना–कहा-सुनी करना, झकझक करना। उ० क्या छोटी-सी बात के लिए चखचख कर रहे हो ?

चख डालना–सब कुछ खतम कर डालना। उ० जो कुछ रुपया चार साल मे कमाया था, दो ही माह मे चख डाला।

चखाचखी होना–लाग डाट या प्रतिद्वद्विता होना। उ० दोनो मे खूब चखाचखी है।

च्‌-च्‌ करना–दुःख या करुणा प्रकट करना।

चचा होना–बहुत चालाक होना, बढ कर होना। उ० वह तुम्हारा चचा है।

चटक जाना–रुष्ट होना।

चटकन देना–तमाचा मारना। उ० ऐसी चटकन दूँगा कि होश उड जायेंगे।

चटक-मटक—१ मसाला मिर्चा आदि पडा हुआ या चटपटा भोजन। २ ठाट-बाट। उ० मुझे चटक-मटक पसद नही है।

चट कर जाना—१ सब समाप्त कर जाना। उ० वह अपने बाप के मरते ही सब रुपया चट कर गया। २ पचा लेना, न देना। उ० एक दो का नही, पचीसो का रुपया वह चट कर गया। ३ खा जाना।

चटकारे का—१ स्वादिष्ट। उ० आज की चटनी बडी चटकारे की बनी है। २ ज़ोर से, खुल कर। उ० चटकारे का एक गाना गाओ।

चटकारे भरना—१ खाने की इच्छा होना। उ० हमारी जीभ दही के लिये चटकारे भर रही है। २ ज़ोर से गाना। उ० कोई चटकारे भर रहा है।

चट-चट बलैया लेना—किसी प्रिय व्यक्ति की विपत्ति या बाधा दूर करने के लिए या मगल के लिए स्त्रियो का उँगलियाँ चटका कर प्रार्थना करना।

चटनी कर डालना—दे० चटनी बनाना'।

चटनी करना—दे० 'चटनी बनाना'।

चटनी बनाना—१ बहुत बारीक करना। उ० मैंने चटनी बनाने के लिये नही कहा है, आप केवल इसे थोडा छोटा कर दे। २ पीस डालना। उ० तुमने तो हमारी चीज़ो की चटनी बना डाली। ३ बहुत मारने की धमकी देना। उ अधिक बोले तो चटनी बना दूंगा।

चट से—दे० 'झट से'।

चट से करना—बहुत जल्दी करना। उ० उससे कुछ भी कहो, चट से कर देता है।

चट से होना—बहुत जल्दी होना।

चटाक-पटाक करना—१ बहुत जल्दी करना। उ० सभी कामो को वह चटाक-पटाक करता है। २ चट-पट का शब्द करना।

चटा देना—रिश्वत देना। उ० पचास रुपये चटा दो तो काम बने।

चटोरी ज़बान होना—चटपटा खाने का लालची होना।

चट्टी धरना—दड लगाना।

चट्टी भरना—हानि पूरी करना। उ० घबडाओ मत, मैं चट्टी भर दूंगा।

चड्डी गठना—काम बन जाना।

चढ़ आना—आक्रमण करने के लिए आना।

चढ़ कर—दे० 'चढ-बढ कर'।

चढती आयु—युवावस्था।

चढता यौवन, चढती जवानी—युवावस्था का प्रारम्भ।

चढ़ने के लिए उतरना—बहुत उन्नति करने के लिए थोडी अवनति करना, झुकना या नीचे आना। उ० बातचीत से यह कभी उतरे नही, हैं उतरते फूल चढने के लिए।

चढ बजना—खूब चलती होना। पौ-बारह होना। उ० आजकल उसकी चढ बज रही है।

चढ-बढ कर होना—अधिक अच्छा होना। उ० वह हमसे हर एक बात मे चढ-बढ कर है।

चढा-उतरी लगाना—बार-बार चढना-उतरना। उ० तुम तो दिन भर चढा-उतरी लगाए रहते हो, शान्त बैठना जानते ही नही!

चढा-ऊपरी लगाना—एक-दूसरे से आगे जाने की कोशिश करना। उ० हम से और महेश से हर एक काम मे चढा-ऊपरी लगी रहती है।

चढा जाना—खा-पी जाना।

चढा देना—उत्सर्ग करना।

चढा-बढा होना—१ मशहूर होना। उ० आजकल मेरा भाई खूब चढा-बढा है। २. प्रतिष्ठित या धनी होना। उ० देश मे बिडला ही तो चढा-बढा है। ३ बल, धन, ज्ञान या किसी और बात मे बढ कर होना। उ० वह तुमसे चढा-बढा है।

चढा लाना—१ आक्रमण के लिए किसी को ले आना। २ बहकावा देकर अपने घात पर ले आना।

चढावा चढाना या चढना—१ भेट-पूजा देना, २ विवाहोत्सव पर अनेक वस्तुओ का वधू को दिया जाना।

चढावा-बढावा देना—उत्तेजित करना। उत्साहवर्धन करना। उ० चढावा-बढावा देकर आपने ही उन दोनो को लडा दिया।

चतुराई छोलना—चालाकी करना, धोखा देना। उ० मेरे साथ चतुराई न छोलिए।

चतुराई तोलना—दे० 'चतुराई छोलना'। उ० मेरे साथ चतुराई न तोलो।

चतुराई छाँटना—१ चालाक बनना। २. अपनी चतुराई की बडाई करना। उ० यहाँ चतुराई न छाँटिए। मैं आपके रगरेशे से खूब वाकिफ हूँ।

चतुराई छोलना—दे० 'चतुराई छाँटना'।

चतुराई झारना—चालाकी को दूर कर देना।

चतुराई तौलना—दे० 'चतुराई छाँटना'।

चने का मारा मरना—इतना बलहीन होना कि चने के बराबर चीज़ से मारने पर भी मर जाना। उ० राज्यक्ष्मा ने तो उसे ऐसा बना दिया कि चने के मारे मर जाय।

चपत जमाना—तमाचा मारना। उ० उसने लडके को आज चार-पाँच चपत जमा दिये।

चपत झाड़ना—दे० 'चपत जमाना'।

चपत धरना—दे० चपत जमाना'।

चपत पड़ना—बेकार मे खर्च होना।

चपनी चाटना—बहुत थोडा अश पाकर रह जाना।

चपनी भर पानी मे डूब जाना—बहुत लज्जित होना। उ० उसी दिन से जब कभी भी वह मेरे सामने आता है तो चपनी भर पानी मे डूबने लगता है।

चपरगट्टू बनाना—मूर्ख बनाना।

चपाट होना—दे० 'मूर्खहोना'।

चपाती-सा पेट होना—ऐसा पेट होना जो हर समय पचका रहे। उ० तुम खाओ या न खाओ, तुम्हारा पेट ही चपाती सा है।

चबड-चबड करना—बकवास करना। उ० कितनी बार तुम्हे समझाया है, बडो के सामने अधिक चबड-चबड न किया करो।

चबा-चबा कर बातें करना—बहुत बन-बन कर धीरे-धीरे बातें करना। उ० ज़रा काग्रेसी हो गए तो अपने को देश के प्रधान मंत्री ही समझने लगे। देखो न चबा-चबा कर बातें कर रहे हैं।

चबे को चबाना—किये हुये काम को फिर करना। उ० इतना समय नही है कि चबे को चबाऊँ।

चमक देना—१. चमकना। उ० आपकी कोट का कपडा खूब चमक दे रहा है। २ चमकाना। उ० ज़रा इस पर भी चमक दे दो।

चमकना—१. यश फैलना। उ० आजकल आप की खूब चमकी हुई है। २. रोब होना। दबदबा होना।

चमक मारना या मार देना—१ दे० 'चमक देना'। २ चमक को समाप्त कर देना। उ० धोबी ने कपडे की सारी चमक मार दी।

चमगादड झूलना—सूनापन होना, सुनसान होना।

चमगादड़ होना—दोनो पक्ष मे रहने वाला होना। उ० वह तो चमगादड है, भला उसका क्या विश्वास ?

चमडा उधेड़ना—१ बहुत मारना। उ० अगर ज़्यादा शरारत करोगे तो चमडा उधेड दूंगा। २ चमडे को देह से बिलग करना। उ० मरने पर जानवरो का चमडा उधेडा जाता है।

चमडा खींचना—दे० 'चमडा उधेडना'।

चमड़ा सिझाना—चमडा को मसाला मे डाल कर पकाना। उ० अभी तो चमडा सिझाना है, बाद मे जूता बनेगा।

चमरचिट्ट होना—१ कजूस होना। २ बहुत गदा रहना। उ० वह तो चमरचिट्ट है, उसके हाथ का कौन खाएगा ?

चमार-चौदस मचाना—१ चमारो का एक त्योहार करना। २ ज़रा भी धन पा जाने पर खुशी और धूम-धाम से तुरन्त खर्च कर डालना। ३ अस्थायी खुशी मनाना। उ० यही तो हाल है, कुछ मिल जाएगा तो चमार-चौदस मचाओगे और नही तो उपवास करोगे।

चमार-सियार—१. नीच प्रवृत्ति का। २ तुच्छ या छोटा। उ० मुझे चमार-सियार समझेंगे तो मैं भी वही उन्हे समझूंगा।

चमार होना—१ कजूस होना। २ दिल का छोटा या नीच होना। ३ गदा रहने वाला होना।

चरका खाना—धोखा खा जाना।

चरका चराना—दे० 'झाँई बताना'।

चरका देना—दे० 'झाँई बताना'।

चरका पढ़ाना—दे० 'झाँई बताना'।

चरण चूमना—१ अत्यधिक आदर करना। २ सहज मे प्राप्त हो जाना।

चरण छूना—प्रणाम करना। उ० बडो का चरण छूना छोटो का कर्तव्य है।

चरण पडना—१ आगमन होना। आना। उ० यहाँ आपके चरण पडते ही सब लोग खुश हो गये। २ चरण पर माथा रखना। ३. विनती या सिफारिश करना।

चरण धो-धो कर पीना—बहुत आदर करना।

चरण लेना—पैर छूकर प्रणाम करना। उ० वह रोज सवेरे सास का चरण लेती है।

चरणामृत देना—१ कोई चीज वहुत कम मात्रा मे पीने के लिए देना। उ० यह मुझे चरणा-मृत दे रहे है या शरवत ? २ किसी पूज्य व्यक्ति का चरण धोकर देना। उ० गुरूजी, हमे भी चरणामृत दे दें। ३ शालिग्राम का नहलाया जल देना।

चरणामृत लेना—१ किसी बडे का चरण धोकर पीना या आचमन करना। २ शालिग्राम का धोया जल पीना या आचमन करना।

चरणो का दास होना—पूर्ण अनुगत होना।

चरणो के नीचे आँख बिछाना—अत्यधिक आदर करना।

चरणो मे लोटना—अधीन होना।

चरवा उतारना—१ चित्र खीचना। उ० किसका चरवा उतार रहे हो ? २ अनुकरण करना। उ० सभी गाधी जी का चरवा उतारने की कोशिश करते हैं, पर वास्तव मे कोई नही।

चरवी चढना—१ खूब मोटा होना। उ० इस वकरे पर चरवी चढी हुई है। २ शरा-रत सूझना। उ० चरवी वहुत चढी हो तो ठीक कर दूँ।

चरवी छाना—१ वहुत मोटा हो जाना। २ दे० 'आँखो मे चरवी छाना'।

चरबी बढना—गर्व होना।

चराना—वेवकूफ वनाना। उ० मुझे ही चरा रहे हो, कोई और नही मिला तुम्हें।

चरित्तर दिखाना—१ आडवर दिखाना। २ धूर्तता की चाल दिखाना।

चल-चलाव लगना—मृत्यु के समीप होना।

चलता करना—१ आगे वढाना। उ० किसी तरह मेरी दरख्वास्त चलती करो, फिर देखा जायगा। २ झगड़ा मिटाना। उ० केवल आप ही इसे चलता कर सकते हैं। ३. धीरे से हटा देना। उ० कुछ दे ले कर इसे चलता करो।

चलता खाता—दे० 'चलता लेखा'।

चलता गाना—वह गाना जो वहुत प्रचलित हो। उ० यह तो बडा चलता गाना है।

चलता-पुरजा होना—चालाक होना। व्यावहारिक होना। उ० वह तो बडा चलता-पुरजा है, उसे साथ ले लें तो आराम रहेगा।

चलता लेखा—वह हिसाब, जिसमे अभी लेन-देन हो रही हो। उ० अभी चलता लेखा है, जितना मन चाहे ले लो।

चलती गाड़ी मे रोड़ा अटकाना—होते काम मे अडचन डालना। उ० चलती गाड़ी मे रोडा न अटकाओ।

चलती हवा से लड़ना—वात-वात पर झगडा करना। विना किसी कारण के भी लड वैठना। उ० तुम्हारी कैसी आदत है कि चलती हवा से लड वैठते हो।

चलते वनना—१. भाग जाना। उ० वह मेरी किताव लेकर चलता वना। २. धूर्तता की वातें करना। उ० हमसे क्यो चलते वनते हो ?

चलन से चलना—मर्यादा के अनुसार काम करना। उ० हर एक व्यक्ति को चलन से चलना चाहिये।

चल निकलना—किसी कार्य मे उन्नति करना। उ० व्यापार मे अव वह चल निकला।

चलनी कर डालना—दे० 'छलनी कर डालना'।

चल पडना—रवाना होना। चलना, प्रस्थान कर देना। उ० हम लोग भी तुम्हारे पीछे ही चल पडे।

चल वसना—मर जाना। उ० वहुत दिनो की वीमारी के वाद वेचारा आज चल वसा।

चलित्तर उछलना—ग़लत व्यवहार होना।

चले चलना—आगे वढना। उ० अभी चले चलो, जव वह मिलेगा तो मैं सकेत मे वता दूँगा।

चलते-फिरते नजर आना—खिसक जाना।

चश्मपोशी करना—१ सामने न आना। नजर बचाना। २ चापलूसी करना। उ० मुझे चश्मपोशी करना नही आता जो होता है, साफ कह देता हूँ।

चस्का लगना या लग जाना—आदत पडना। उ० मुझे उपन्यास पढने का चस्का लग गया है।

चहका देना—१ चिढाना। चुभती हुई बात कहना। उ० अगर उसे चहका दोगे तो वह लड बैठेगा। २ आग लगाना। (गाली) ३ चिडियो का चहकना। उ० प्रात काल पक्षियो का चहका देना बडा सुहावना लगता है।

चहका लगाना—दे० 'चहका देना'।

चहर देना—धूमधाम होना। उ० यह दुनिया चार दिन की चहर है।

चहलकदमी करना—धीरे-धीरे टहलना।

चहल पहल होना—धूम-धाम होना। उ० बहन की शादी के कारण उसके यहाँ खूब चहल पहल है।

चाडाल-चौकडी—नीचो की टोली। उ० इस चाडाल-चौकडी को यहाँ से भगाना चाहिये।

चाडाल होना—राक्षस होना। क्रूर, वेधर्मी, गदा या नीच होना।

चाँद का कुडल बैठना—बहुत बदली पर प्रकाश पडने के कारण चन्द्रमा के चारो ओर एक वृत्त या घेरा-सा बन जाना। उ० चाँद का कुडल बैठना सूखे का चिह्न है।

चाँद का खेत करना—चन्द्रमा के चारो ओर फैला हुआ प्रकाश होना। उ० चाँद का खेत करना बडा सुहावना लगता है।

चाँद का टुकडा—अत्यन्त खूबसूरत। उ० उसका लडका चाँद का टुकडा है।

चाँद का मडल बैठना—दे० 'चाँद का कुडल बैठना'।

चाँद चढना—१ चन्द्रमा निकल आना। उ० चाँद चढ रहा है, अब उजेला हो जायगा। २ भाग्य चमकना। उ० अब उसका चाँद चढ रहा है।

चाँद ढलना—दे० 'सूरज ढलना'।

चाँदनी का खेत करना—दे० 'चाँद का खेत करना'।

चाँदनी खिलना—चन्द्रमा का स्वच्छ प्रकाश होना। उ० जब चाँदनी खिल जाती है तो बडा सुहावना लगता है।

चाँदनी छिटकना—दे० 'चाँदनी खिलना'।

चाँदनी मे घुर जाना—बहुत सुकुमार होना। उ० वह तो चाँदनी मे घुर जाने वाली है।

चाँद पर थूकना—१ निर्दोष पर कलक लगाना। २ मूर्खता करना। ३. दूसरे को इस प्रकार कलकित करना कि उसका कुछ न हो और अपने को स्वय कलकित होना पडे।

चाँद पर धूल डालना—किसी निर्दोष पर कलक लगाना। उ० चाँद पर धूल डाल कर करोगे क्या, उसका कुछ भी न बिगडेगा।

चाँद पर बाल न छोडना—बिल्कुल लूट लेना। सब कुछ ले लेना। उ० डाकुओ ने बेचारे की चाँद पर बाल तक न छोडा।

चाँद मे दाग लगना—सुन्दर वस्तु मे दोष होना। उ० दुर्घटना ने तुम्हारा चेहरा ऐसा कर दिया जैसे चाँद मे दाग लग गया हो।

चाँद-सा मुखडा—बहुत सुन्दर मुख। उ० उसका चाँद-सा मुखडा देखते ही बनता है।

चाँदी कटना—आराम मे दिन बीतना। उ० अब तो नौकरो मे खूब चाँदी कट रही है।

चाँदी कर डालना—१ सब बेच कर रुपया कर लेना। उ० जब तुम्हे यहाँ रहना ही नहीं है तो अपने घर का सब सामान बेच कर चाँदी कर डालो। २ जला कर भस्म कर डालना।

चाँदी का जूता मारना—रुपया देकर अपने वश मे करना। उ० भाई आजकल तो वह जमाना है कि चाँदी का जूता मार कर जिससे जो चाहो करवा लो।

चाँदी का जूता लगाना—दे० 'चाँदी का जूता मारना'।

चाँदी काटना—१ खूब धन कमाना। उ० आजकल तो व्यापार मे तुम चाँदी काट रहे हो। २ मजे लूटना।

चाँदी का पहरा—सुख के दिन। उ० मेरा भी चाँदी का पहरा कभी लौटेगा।

चाँदी खोलवाना—सिर के बाल बीच मे चाँदी के पास मुडवाना। उ० चाँदी खोलवा लो, दवा नही लगानी होगी।

चाँप चढाना–१ धनुष की डोरी खीचना। २ डांटना। उ० बच्चे पर क्या चाँप चढाते हो ? ३ जबर्दस्ती करना, दबाव डालना। उ० चाँप चढाने से वह नही देगा।

चास आना–दे० 'चास भिडना'।

चास पडना–दे० 'चास भिडना'।

चास बैठना–दे० 'चास भिडना'।

चास भिडना–१ ठीक मौका और परिस्थिति आना। उ० चास भिडा तो मै भी पास हो जाऊँगा। २ सयोग लगना।

चास लगना–दे० 'चास भिडना'।

चाक करना–चीरना, फाडना।

चाक चौबद–१ हृष्ट-पुष्ट, तगडा। २ फुर्तीला चुस्त।

चाक देना–दे० 'चाक करना'।

चाकर होना–अनुवर्ती या आज्ञाकारी होना।

चाट पड़ना–चस्का लगना, आदत होना। उ० आजकल मुझे अखबार पढने की चाट पड गई है।

चाट-पोछ कर खाना–सब खतम कर जाना। उ० बडी मेहनत से माँग लाया था, आप सब चाट-पोछ कर खा गए।

चादर उतारना–वेइज्जत करना। उ० अगर आप वहाँ गये तो अवश्य ही आपकी चादर उतारी जाएगी।

चादर की लाज रखना–इज्जत रखना। कुछ इज्जत रख लेना।

चादर की लाज रहना–दे० 'चादर रहना'।

चादर की शिकन गिनना–दे० 'छत की कडियाँ गिनना'।

चादर-चूडी रख लेना–वैधव्य से बचा लेना।

चादर तान के सोना–बेफिक्र हो जाना।

चादर देखकर पाँव फैलाना–अपनी शक्ति के अनुसार काम करना। उ० चादर देखकर पाँव फैलाना बुद्धिमानो का काम है।

चादर रह जाना–थोडी भी इज्जत रहना। उ० आपके आ जाने से मेरी चादर रह गई।

चादर से बाहर पैर फैलाना–१ शक्ति से ज्यादा खर्च करना। उ० चादर से बाहर पैर फैला-ओगे तो बाद मे कष्ट होगा। २ मर्यादा का उल्लङ्घन करना। उ० चादर से बाहर पैर न फैलाओ, नही ता जग मे हंसी होगी।

चाभी घुमाना–परिस्थिति को प्रभावित करना।

चाम के दाम चलाना–१ अन्याय करना। अपनी जबर्दस्ती के भरोसे कोई काम करना। उ० सिर पै सौति हमारे कुबजा चाम के दाम चलावै। २ बहुत नफा कमाना।

चार अच्छर घसीटना–कुछ जल्दी से लिख देना। उ० पत्र क्या लिखते है, चार अच्छर घसीट देते हैं।

चार अच्छर पढ लेना–थोडा पढ लेना।

चार आँखें करना–आँख से आँख मिलाना। उ० मेला देखने गए थे या अपने मित्रो से चार आँखें करने ?

चार आँखें होना–देखादेखी होना। उ० तुम दोनो मे चार आँखे हो रही थी।

चार उँगलियाँ तक सिर पर न रखना–थोडा भी खयाल न करना। बिल्कुल खबर न लेना। उ० वह यो तो इतना प्रेम दिखाता है, परन्तु मेरा पुत्र मर गया और उसने चार उँगलियाँ तक सिर पर न रक्खी।

चार कदम–थोडी-दूर। उ० पैदल ही चलो, चार कदम पर तो है।

चार कदम आगे होना–बढकर होना।

चार के कधे पर चढना–१ मर जाना। उ० कुछ ठीक नही है कि कब चार के कधे पर चढना पडे। २ डोली मे जाना। उ० चद्र-गुप्त प्राय चार के कधो पर चढता था।

चार के कधे पर चलना–दे० 'चार के कधे पर चढना'।

चार के कधे पर जाना–दे० 'चार के कधे पर चढना।

चार चांद लगना–बढना, शोभा का अधिक होना।

चार चाँद लगाना–१ चौगुनी इज्जत करना। उ० मोहन ने अपने कामो से बाप की इज्जत मे चार चाँद लगा दिये। २ सौंदर्य अत्यन्त बढा देना। उ० यह अहाता बनवा कर तुमने मकान मे चार चाँद लगा दिये।

चार दिन–कुछ समय। उ० इनका क्रोध चार दिन का है, अपने आप ठीक हो जायेगा।

चार दिन का मेहमान होना–कुछ ही दिन जीने वाला होना।

चार दिन की चाँदनी—थोडे समय का सुख। उ० अरे भाई, ससार मे चार दिन की ही चाँदनी है, फिर तो वही अँधेरी रात।

चार दिन की चाँदनी होना—थोडे समय का ही सुख होना। उ० धन का घमड नही करना चाहिये, यह चार दिन की चाँदनी है, फिर वही अँधेरी रात है।

चार-पाँच करना—१ हीला-हवाला करना। क्या चार-पाँच कर रहे हो जो कहना हो साफ-साफ कहो। २ बात बढाना। उ० बेकार चार-पाँच न करो, आपस मे समझ लो। ३ व्यर्थ बहस या हुज्जत करना। उ० तुम्हारी तो चार-पाँच करने की आदत है। ४ गडबड करना।

चार-पाँच लाना—दे० 'चार-पाँच करना'।

चारपाई धरना—दे० 'चारपाई पर पडना'।

चारपाई पकडना—दे० 'चारपाई पर पडना'।

चारपाई पर पडना—१ बहुत बीमार होना। उ० वह आज दस दिन से चारपाई पर पडा है। २ सोना। ३ लेटना। उ० कैसे तुम्हे हरदम चारपाई पर पडा रहना पसन्द आता है?

चारपाई लेना—दे० 'चारपाई पर पडना'।

चारपाई सेना—दे० 'चारपाई पर पडना'।

चार पैसे कमाना—कुछ कमाई करना।

चार पैसे होना—पास मे कुछ रुपये होना। उ० थोडे दिनो से चार पैसे हो गये हैं, नही तो पहले बहुत गरीब था।

चारा डालना—किसी को फँसाने के लिये कुछ धन खर्च करना। उ० कुछ माल दो, चारा डालना है, एक मोटा शिकार फँसा रहा हूँ।

चारा पास न होना—कोई वश न होना। लाचार होना। उ० वह वने आस छोड बेचारा, पास जिसके न रहा चारा है।

चारा बदलना—दे० 'दाना बदलना'।

चार सौ बीस—अत्यन्त धूर्त्त, ठग, धोखेबाज।

चारों खाने चित्त गिरना—दे० 'चारो खाने चित्त पडना'।

चारो खाने चित्त पडना—१ अचानक कोई शोक या हानि सुन कर चौंधिया जाना। २ हाथ-पैर पसार कर उतान गिरना। उ० वह तो पेड से चारो खाने चित्त पड गया। ३. बुरी तरह हारना।

चारो फल पाना—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारो की प्राप्ति करना।

चारो खाने चित्त पडना—दे० 'चारो खाने चित्त पडना'।

चारो हाथ-पाँव से दौडे आना—उत्साह एव तत्परता से आना।

चाल खेलना—धोखा देना। चालबाज़ी चलना। उ० मेरे साथ चाल मत खेलो, उलटे तुम्हारी ही हानि होगी।

चाल चलना—१ धोखे मे काम पूरा करना। उ० सबसे तुम चाल ही चलना चाहते हो। आदमी नही देखते, यही बुरा है। २ धोखे-बाज़ी करना। उ० अब कम से कम हमसे तो चाल न चलो।

चाल ठीक करना—१ आदत सुधारना। चाल-चलन ठीक करना। उ० अपनी चाल ठीक कर लो, नही तो मार खा जाओगे। २ गति ठीक करना। उ० घडी की चाल ठीक कर दो।

चाल पट पड़ना—१ उपाय न लगना। उ० ससार मे सब हो जाये, पर तुम्हारी चाल पट नही पड सकती। २ अच्छे दिनो का जाता रहना। उ० अब उनकी भी चाल पट पड गई।

चाल सुधारना—आचरण ठीक करना। उ० अपने लडके की चाल सुधारो, नही तो बाद मे पछताओगे।

चालाकी खेलना—होशियारी से काम निकालना। उ० चालाकी खेल गया, नही तो उसका काम कभी भी न हुआ होता। २ मक्कारी करना। उ० मेरे साथ तो कम से कम चालाकी न खेलो।

चाला देखना—यात्रा का मुहूर्त निकालना।

चाला निकालना—मुहूर्त निश्चित करना।

चाव निकालना—इच्छा पूरी करना। उ० इस समय तुम भी चाव निकाल लो, नही तो फिर पछताओगे।

चावल भर—बहुत थोडा। उ० मुझे चावल भर अफीम दे दो।

चिउटा-गुड़ होना१ गुत्थमगुत्था होना। भिड जाना। उ० दोनो भाई आपस मे चिउटा-गुड हो गये थे और छुडाने से भी न छूटते थे। २ आपस मे बहुत प्रेम होना।

चिउटियाँ लगना—अप्रिय बात से तिलमिलाहट होना।

चिउटी की चाल चलना—बहुत मन्द चाल से चलना। उ० तुम तो इस काम मे चिउटी की चाल चल रहे हो। इस तरह तो यह काम पूरा नही हो सकता।

चिउटे की गिरह पेट में होना—बहुत थोडा भोजन करना। उ० उसके लिए इतना काफी है, उसके पेट मे तो चिउटे की गिरह है।

चिउटे को पर निकलना—१ मौत का समय आना। उ० चिउटे को पर निकल रहे है। २. नष्ट होने के या समाप्त होने के पूर्व किसी का शरारत करना। ३ ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो। मरने पर होना।

चिउटे को पर लगना—दे० 'चिउटे के पर निकलना'।

चिंता लगना—किसी बात की हर समय फिक्र रहना। उ० इसके करने की चिंता लगी रहती है, देखें कब पूरा होता है?

चिंता सवार होना—दे— 'चिंता लगना'।

चिंता-सागर मे गोते खाना—अत्यधिक चिन्ता-मग्न होना।

चिंदी-चिंदी करना—छोटे-छोटे टुकडे कर डालना। उ० लडके ने कागज़ को चिंदी-चिंदी कर डाला।

चिकना घड़ा होना—१ किसी की बात का कुछ असर न होना। उ० वह चिकना घडा है, लाख समझाओ, मानता ही नही। २ ओछे स्वभाव का होना, मन मे बात न रखने वाला होना। उ० आप तो चिकने घडे हैं, आपसे मैं कुछ भी नही कह सकता।

चिकना-चुपड़ा होना—१ बनाव-सिंगार किये होना। २. साफ-सुथरा होना। उ० साधू की कुटिया बडी चिकनी-चुपडी थी।

चिकना देख फिसल पड़ना—१ खूबसूरत स्त्री देखकर मोहित हो जाना। उ० चिकना देख फिसल पडते हो और बनते हो अपने को ब्रह्मचारी? २ साधारण लाभ देख कर अपना नैतिक पतन करना। उ० चिकना देख फिसल पडे तो ससार की दृष्टि से गिरा ही समझो।

चिकना मुंह—१ सुन्दर मुंह। चिकने मुंह की औरत देखकर मोहित हो गया। २ मधुरभाषी। उ० चिकने मुंह का व्यक्ति सर्वत्र ही इज्जत पाता है।

चिकनी-चुपडी बातें करना—मीठी बातें करना। ऐसी बात करना जो वास्तव मे चालबाजी की हो। उ० वह चिकनी-चुपडी बातें करके अपना काम निकाल लेता है।

चिकने घडे पर पानी न ठहरना—दे० 'चिकने घडे पर पानी न पडना'।

चिकने घडे पर पानी न पड़ना—सीख का प्रभाव न पडना। बात का असर न होना। उ० इन नीचो को क्या सिखा रहे हैं, जानते नही कि चिकने घडे पर पानी नही पडता।

चिकने मुंह का ठग—ऊपर से मीठी कहने वाला और अन्दर से धोखेबाज़। उ० उसकी बात का तुम कभी भी विश्वास न करना। वह चिकने मुंह का ठग है।

चिट्ठा खोलना—गुप्त बात कहना।

चिट्ठा बँटना—भुगतान होना।

चिट्ठी करना—किसी को रुपया देने के लिये लिखित आज्ञा देना।

चिडिया उड़ जाना—फँसे हुए व्यक्ति का भाग जाना।

चिडिया का दूध—असभव वस्तु। नामुमकिन चीज़। उ० यह बात तो चिडिया का दूध है, इसका मैं कैसे विश्वास करूं? २ अप्राप्य या न मिलने वाली वस्तु।

चिड़िया का पूत नहीं—किसी का भी न होना, सुनसान।

चिड़िया के छिनाले मे पकड़ा जाना—व्यर्थ की आपत्ति मे फँसना।

चिड़ियानोचन होना—चारो तरफ से तकाज़ा होना। उ० कुछ ही रुपये के लिए इतना चिडियानोचन हो रहा है।

चिड़िया फँसाना—१ किसी मालदार को अपने दाँव पर चढाना। उ० मैंने खूब चिडिया फँसाई है, अब सब काम हो जायगा। २ पराई स्त्री को बहका कर सभोग के लिये सहमत करना।

चित करना—कुश्ती मे पछाड़ना।

चित-पट करना—परीशान करना, हैरान करना।

चितवन का वार करना—तिरछी नज़रो से घायल करना। उ० उस वेश्या ने तो अपनी चितवन का वार कर बहुतो को गिरा दिया।

चितवन चढ़ाना–क्रोधित होना। तेवर बदलना। उ० क्यों चितवन चढाये हो, आखिर बात क्या है ?

चिता में बैठना–१. सती होना। पति के शव के साथ जलना। उ० लोगो ने उसे चिता मे बैठने से मना किया, पर वह न मानी और सती हो गई। २. बहुत खतरनाक काम करना।

चित्त अटकना–मन का अन्यत्र लग जाना।

चित्त उचटना–जी न लगना। दिल हटना। उ० मेरा चित्त उचट गया है, अब यहाँ न रहूँगा।

चित्त करना–दे० 'चित करना'।

चित्त चिहूंटना–चित्त में चुभना।

चित्त चुराना–मन मोहित करना। उ० क्या उसने तुम्हारा चित्त चुरा लिया है, जो दिन-रात उसी के फेर मे रहते हो ?

चित्त पर चढ़ना–मन मे बैठना। पसद आना। उ० लड़की की शादी के लिए वही लड़का चित्त पर चढ़ा है। २. स्मरण होना। उ० जब उसकी बातें चित्त पर चढें तो बताऊँ।

चित्त फटना–दे० 'मन फटना'।

चित्त बँटना–ध्यान इधर-उधर जाना। उ० चित्त बँटेगा तो समझ मे नही आएगा।

चित्त में जमना–दे० 'चित्त मे बैठना'।

चित्त थिराना–मन स्थिर होना।

चित्त में धँसना–दे० 'चित्त मे जमना'।

चित्त में बैठना–किसी बात का दिल मे पक्का हो जाना। उ० मेरे चित्त मे विदेश भ्रमण करने की बात बैठ गयी है।

चित्त में होना–जी चाहना। उ० मेरे जी मे है कि अब घर जाऊँ।

चित्त मैला करना–मन मे दुर्भावना रखना; बुरा मानना।

चित्त लगना–१. प्रेम होना। उ० उससे मेरा चित्त लग गया है। काफी समय तक जी का अचंचल रहना। उ० अब उसका चित्त यहाँ बच्चों में लगने लगा है। ३. दे० 'मन लगना'।

चित्त लेना–१. हृदय की थाह लेना। उ० उसका चित्त लो, तब मालूम होगा कि वह क्या चाहती है ? २. चित्त खींचना या आकर्षित करना।

चित्त से उतरना–१ हृदय मे स्थान न रहना। उ० कुछ कारणवश अब वह चित्त से उतर गया है। २. स्मरण न रहना। उ० इस समय तो उसका नाम चित्त से उतर गया है, पीछे बतायेंगे।

चित्त से न टलना–दिल मे जमा रहना।

चित्त होना–१ दे० 'चित्त मे होना'। २ पटका जाना।

चित्ती पड़ना–१. दाग पडना। २ रोटी का थोडा-सा जल जाना। ३ जूए मे जीत जाना।

चित्र उरेहना–चित्र बनाना।

चित्र खींचना–स्थिति का हूब-हू चित्रण करना।

चित्र लिखे से–स्तब्ध, अवाक्।

चिथड़े लपेटना–१. दु ख से दिन बिताना। उ० आजकल भारत मे ज्यादातर आदमियो को चिथडे लपेटने पड़ते हैं। २ बहुत फटे कपडे पहनना। ३ गदा रहना।

चिनगारी छोड़ना–क्रोध पैदा करने वाली बाते कहना। उ० आपने चिनगारी छोड कर हमे उससे झगडा करा ही दिया।

चिनगारी झाड़ना–क्रोधपूर्ण बाते कहना।

चपिका देना–नौकरी लगाना। उ० इसको कही चपका दो।

चिर के रह जाना–घाटा हो जाना। उ० इस रोजगार मे तो मैं चिर के रह गया।

चिराग का हँसना–दे० 'दिये का हँसना'।

चिराग गुल पगडी गायब होना–अवसर पाते ही माल चुरा लिया जाना। उ० उन्हे तुम अपने समझते हो, अरे देखना, वे तो चिराग गुल पगडी गायब होने वाली बात चरितार्थ करेंगे।

चिराग गुल होना–१ रौनक मिटना। उ० आजकल चौक का भी चिराग गुल हो गया २ चिराग बुझना। उ० चिराग गुल हो गया। ३ कुल का समाप्त हो जाना। उ० उनका तो चिराग ही गुल हो गया। अब कोई रोने वाला भी नही रहा।

चिराग ठंडा करना–१ किसी का कुल समाप्त कर देना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे, तो तुम्हारा चिराग ही ठडा कर दूँगा। २ चिराग बुझा देना।

चिराग़-तले अँधेरा होना–१- किसी सम्मानित व्यक्ति द्वारा ही बुराई होना। उ० कांग्रेस के आदमी ही घूस लें, यह तो चिराग-तले अँधेरा है। २ विरुद्ध बात होना। उ० विदेशो को कपडा जाता है और हम लोग एक-एक सूत के लिए तरसते हैं, सरकार को पता नही कि चिराग-तले अँधेरा है।

चिराग़ बढ़ाना या बढ़ा देना–दीपक ठडा करना। उ० चिराग बढा दो।

चिराग़-बत्ती करना–दिया जलाना। उ० अँधेरा हो रहा है, चिराग़-बत्ती करो।

चिराग़ लेकर ढूँढ़ना–बहुत खोज करना। उ० चिराग लेकर ढूँढोगे तो भी ऐसा सच्चा नौकर न मिलेगा।

चिराग़ शेर करना–रोशनी तेज़ करना। उ० चिराग़ शेर कर दो, पढ़ने मे दिक्क़त होती है। चिराग़ इतना शेर न करो कि आँख न ठहरे।

चिरायँध फैलना–बदनामी फैलना। उ०तुम्हारी तो बडी चिरायँध फैल रही है।

चिलम चढ़ाना–१ गुलामी करना। उ० जीवन भर तो आपकी चिलमे चढाया, अब कहाँ जाऊँ? २ चिलम पर तम्बाकू रख कर आग रखना।

चिलम पीना–चिलम पर तम्बाकू पीना। उ० चिलम पी लूँ तो चलूँ।

चिलम भरना–दे० 'चिलम चढाना'।

चिल्ल-पो मचाना–१ शोर-गुल करना। उ० गाँव वालो ने बडा चिल्ल-पो मचाया, पर पुलिस ने अपनी मन वाली ही की। २ रोना-पीटना। उ० अब क्या चिल्ल-पो मचाए हो, जो गया, वह तो आ नही सकता।

चिल्ले का जाड़ा–बहुत काफी जाड़ा। उ० आजकल चिल्ले का जाडा पड रहा है।

चिल्हक उठना–दर्द होना, दर्द उठना। उ० चिल्हक उठ रही है।

चिहर जाना–फूटने का निशान पड जाना। पूर्णत फूट कर अलग होने के पहले किसी चीज़ मे बाल-जैसा निशान पड जाना। उ० यह घडा चिहर गया है, बचा कर खीचना, नही तो फूट जायगा।

चीं-चपड करना–विरोध या प्रतिवाद करना, ना-नू करना।

चींटी की चाल चलना–बहुत धीरे-धीरे चलना। उ० क्या चीटी की चाल चल रहे हो? ऐसे तो घर पहुँचने मे महीनो लग जायँगे।

चीं बोलाना–हार मनवाना। उ० बस बच्चू एक ही हाथ मे ची बोला दूंगा।

चीख मारना–१ शोर-गुल करना। उ० बच्चा क्यो चीख मार रहा है? २ ज़ोर से रोना। उ० वह मर गया क्या? लोग चीख मार रहे हैं।

चीरा उतारना–दे० 'नथुनी उतारना'।

चील के घोसले से मांस छीनना–दुष्कर कार्य करना।

चुकौता लिखना–भरपाई की रसीद लिखवाना। उ० उसको सब रुपया देकर चुकौता लिखवा लो।

चुगली करना–दे० 'चुगली खाना'।

चुगली खाना–किसी की शिकायत करना। आपकी चुगली खाने से वह मेरे ऊपर नाराज़ न होगा।

चुगली लगाना–दे० 'चुगली खाना'।

चुटकियाँ लेना–हँसी करना। उ० बडो की चुटकियाँ लेते तुम्हें शर्म नही आती? २ चुभने या लगने वाली बात कहना। उ० तुमने तो ऐसी चुटकियाँ ली कि वह पस्त पड गया।

चुटकियो पर मुहिम सर होना–आसानी से जीत होना। हँसते-हँसते मोर्चा जीतना। उ० जी ठिकाने है अगर रहता नही, चुटकियो पर तो मोहिम होगी न सर।

चुटकियों मे उड़ाना–१ कुछ परवाह न करना। उ० ऐसे आदमियो को मैं चुटकियो मे उडाता हूँ। २ हँसी में उडाना। उ० इस बात को चुटकियो मे मत उडाओ। ३ आसान समझना। ४ आसानी से निपटारा करना।

चुटकियो मे होना–१ जल्दी होना। उ० चुटकियो मे यह काम हो जायेगा। २ आसानी से होना। उ० तुम इससे डरते हो! यह तो चुटकियो मे हो जायगा।

चुटकी देना–चुटकी बजाना। उ० मोहन चुटकी दे-देकर खूब गा रहा है।

चुचका आम होना–दुर्बल, सूखा हुआ सा आदमी।

चुटकी बजाते—बहुत जल्दी। उ० इस काम को मैं चुटकी बजाते कर लूँगा। २ बहुत आसानी से। हँसी मे।

चुटकी भरना—चुटकी काटना।

चुटकी भरे लोहू टपकना—बहुत कोमल, गोरा और लाल होना। उ० उसे तो चुटकी भरे लोहू टपकता है, मैंने ऐसा शरीर नही देखा।

चुटकी माँगना—भिक्षा माँगना। उ० वह आजकल चुटकी माँगता फिरता है।

चुटकी लेना—हँसी उड़ाना, व्यग्य करना।

चुटकुला छोड़ना—१ मौके की या चुभती बात कहना। २. हँसी की बात कहना। उ० जब दो-चार आदमी एक जगह बैठते हैं, तो वह खूब चुटकुला छोड़ता है।

चुटिया हाथ मे होना—अधिकार मे होना। उ० उसकी चुटिया अब हाथ मे हो गई है, जब चाहूँ, अपना काम करवा लूँ।

चुनचुना लगना—बहुत बुरा लगना। उ० अपनी बार चुनचुना क्यो लगता है?

चुनौती देना—१ उत्साहित करना। उ० तुम उसे चुनौती न दो। जरा उसे भी तो देखो। २ ललकारना। उ० मैं इस मजमे के हर एक आदमी को चुनौती देता हूँ, जो चाहे मेरे लड़के से लड़ ले।

चुपके से—धीरे से, गुप्त तौर से। उ० चुपके से चले जाओ।

चुपड़ी और दो-दो होना—अत्यधिक लाभ होना, वैभव से भरा-पूरा होना।

चुप साधना—१ कुछ न बोलना। उ० आप क्यो चुप साधे हैं, क्या कोई खास बात हो गई है?

चुप होना—१ उत्तर न देना। उ० जब मैं उसे डाटने लगता हूँ तो वह चुप हो जाता है। २ स्वीकार करना।

चुभती हुई कहना—तीखी बात कहना।

चुभती हुई आँख से देखना—मर्मभेदी दृष्टि डालना।

चुराना-पचराना—चोरी करना। उ० चुरा-पचरा कर वह कुछ न कुछ रोज ले आता है, किसी तरह पुलिस जान जाती तो अच्छा गुल खिलता।

चुल्लुओ खून पीना—बहुत अधिक दुखी करना। उ० यह समाचार देकर तुमने चुल्लुओ खून पी लिया।

चुल्लुओ रोना—बहुत अधिक रोना। उ० आपके चले जाने पर वह बेचारा चुल्लुओ रोया।

चुल्लु-चुल्लू साधना—थोड़ा-थोड़ा बचा कर रखना। उ० चुल्लू-चुल्लू साध कर ही इस बनिये ने यह मकान खड़ा किया है।

चूल्लू भर पानी देना— जलाजलि देना।

चुल्लू भर पानी मे डूबना—लज्जा के मारे मर जाना। उ० आप ऐसे नीच आदमी को चुल्लू भर पानी मे डूब मरना चाहिये।

चूल्लू भर पानी मे डूब मरना—बहुत ज्यादा शरमा जाना। उ० ऐसा नीच काम करके कैसे तुम लोगो के सामने बात करते हो? तुम्हे तो चुल्लू भर पानी मे डूब मरना चाहिये।

चुल्लू में उल्लू होना—थोड़ी-सी नशा की वस्तु खाने से अधिक नशा होना। उ० क्या आप भँगेड़ी बनते हैं, जबकि चुल्लू मे उल्लू हो जाते हैं।

चुल्लू मे समुद्र न समाना—छोटे मे बड़ी चीज का न समाना। उ० क्या आप इस बक्स मे यह गट्ठर रखना चाहते हैं? भला चुल्लू मे समुद्र समा सकता है?

चूं-तक (भी) न करना—थोड़ा-सा भी विरोध न करना।

चूक-पड़ना—भूल हो जाना।

चूजा फँसाना—शिकार फँसाना। उ० नित नया चूजा फँसाना छोड़ दो, नही तो किसी दिन खोपड़ी साफ हो जायेगी।

चूड़ियाँ ठंडी करना—अपने शौहर के मरने पर औरत का अपनी चूड़ियाँ तोड़ना। उ० बेचारी को २० वर्ष की अवस्था मे ही चूड़ियाँ ठडी करनी पड़ी।

चूड़ियाँ तोड़ना—दे० 'चूड़ियाँ ठडी करना'।

चूड़ियाँ पहनना—१ स्त्री बनना। उ० जब तुममे साहस और हिम्मत है ही नही, तो चूड़ियाँ पहन कर घर बैठो। २ कायर बनना।

चूड़िया बँधाना—'चूड़ियाँ बढ़ाना'।

चूड़ियाँ बढ़ाना—चूड़ियाँ हाथो से अलग करना। उ० ये चूड़ियाँ हमें पसन्द नही हैं, इन चूड़ियो को बढ़ा दो ['चूड़ी उतारना' कहना स्त्रियो मे बुरा समझा जाता है, इसलिए वे 'चूड़ियाँ बढ़ाना' का प्रयोग करती हैं।]

चूड़ी उतारना—दे० 'चूड़ियाँ बढ़ाना'।

चूड़ी फोड़ना–दे० 'चूड़ियाँ तोड़ना'।

चूतड़ दिखाना–डर कर भाग जाना। उ० चूतड़ दिखाना कायरों का काम है।

चूतड़ पोंछना–खुशामद करना।

चूतड़ सिकोड़ना–धीरे-धीरे चलना। उ० क्या चूतड़ सिकोड़ते हो, जरा जल्दी करो, नही तो बहुत देर हो जायगी।

चूतिया चक्कर मे–१ बेकार मे। उ० आप क्यो चूतिया चक्कर में इसके साथ घूमते हैं। २ मूर्खता मे। उ० चूतिया चक्कर मे पड़कर मैंने यह कर डाला।

चूतिया बनाना–मूर्ख बनाना। उ० आपने खूब चूतिया बनाया उसे।

चून के बराबर नून खाना–अधिक जीवन देखना। अधिक अनुभवी होना। उ० मुझे न पढ़ाओ, तुम्हारे खाए चून के बराबर तो हमने नून खाया है?

चूना लगाना–१ हानि पहुँचाना। उ० तुमने बातो ही बातो मे चूना लगा दिया मुझ गरीब को। २ बेवकूफ बनाना।

चूम कर छोड़ देना–१ काम शुरू करके फिर छोड़ देना। उ० चूम कर छोड़ देने से काम नही पूरा होगा। अगर करना है तो ठीक से करो। २ बिना पूरा उपयोग किए या खाये छोड़ देना। उ० तुमने तो चीज़ ली, परन्तु चूम कर ही छोड़ दी।

चूर कर देना–नष्ट कर देना।

चूर-चूर हो जाना–अधिक थक जाना।

चूस लेना–सार खीच लेना।

चूल उठना–१ खुजलाहट होना। २ स्त्रियो मे प्रसग करने की इच्छा होना।

चूल न बैठना–बात ठीक न होना। उ० आदमी ज्यादा थे, इसलिए चूल न बैठ पाई।

चूल मिटना–काम-वासना का तृप्त होना।

चूल मिलाना–ठीक-ठीक हिसाब बैठाना।

चूलें ढीली होना–अधिक परिश्रम के कारण बहुत थकावट होना। उ० आज तो मालिक के घर चूलें ढीली हो गई।

चूल्हा-चक्की–गृहस्थी का काम।

चूल्हा न जलना–खाना न बनाया जाना। उ० वह ऐसा गरीब हो गया है कि कई दिनो से उसके यहाँ चूल्हा भी न जला।

चूल्हा न्योतना–घर के सब आदमियो को भोजन के लिए बुलावा देना। उ० आज मेरी बिरादरी मे चूल्हा न्योता गया है, इसी से मेरे घर भोजन नही बना।

चूल्हा फूंकना–रसोई बनाना। उ० बहू को दिन भर तो चूल्हा फूंकना पडता है, दूसरा काम वह कैसे करे?

चूल्हे का उपास करना–खाने को बिलकुल न मिलना। उ० मेरा चूल्हा कई दिनो से उपास कर रहा है।

चूल्हे-भाड़ में पड़ना–दे० 'चूल्हे मे पड़ना'।

चूल्हे मे चूहे दौड़ना-दे० 'चूल्हे का उपास करना'।

चूल्हे में जाना–जहन्नुम में जाना, नष्ट होना।

चूल्हे मे डालना–१ फेंक देना। उ० ऐसी चीज चूल्हे मे डालो, मैं इसे नही देखना चाहती। २ दूर करना। उ० अपनी बातो को चूल्हे मे डालो, मैं नही सुनना चाहता।

चूल्हे से निकल कर भट्ठी मे पड़ना–दे० 'चूल्हे से निकल कर भाड़ मे पड़ना'।

चूल्हे से निकल कर भाड़ मे पड़ना–एक छोटी आफ़त से बच कर दूसरी बड़ी आफत मे पड़ना।

चेक काटना–चेक लिख कर देना। उ० इन्हें चेक काट कर दे दो, रुपये भुना लेंगे।

चेला मूंड़ना–चेला बनाना। उ० मैंने इस वर्ष चार चेले मूंडे हैं।

चेहरा उतरना–१ मुख पर चिंता के लक्षण होना। उ० तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है, क्या बात है? सही-सही बताओ। २ उदास होना।

चेहरा खिलना–खुश दिखाई देना। उ० आज चेहरा खिला हुआ है, कोई मिल गया क्या?

चेहरा तमतमाना–मुख पर लाली होना। उ० क्रोध के मारे उसका चेहरा तमतमा उठा।

चेहरा बिगड़ना–मुंह उदास होना। उ० दो ही दिन की बीमारी में आपका चेहरा बिगड़ गया है।

चेहरे का रग उड़ जाना–(डर के कारण) कातिहीन होना, पीला पड़ जाना।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना–मुंह का रग फीका पड़ जाना। उ० आज क्या बात है कि आपके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं?

चैन उड़ाना—सुख से समय बिताना, आनंद करना । उ० आप तो यहाँ खूब चैन उड़ा रहे हैं ।

चैन की बंशी बजाना—आनन्द से समय या जीवन बिताना । उ० जब से आप यहाँ आये, चैन की बंशी बजा रहे हैं ।

चैन पड़ना—१. उद्विग्नता समाप्त होना । उ० जब वे आयेंगे, तभी मुझे चैन पड़ेगा । २. शांति मिलना । उ० भारत स्वतन्त्र हुआ तभी गांधी जी को चैन पड़ा ।

चैन से कटना—सुखपूर्वक समय बीतना । उ० आजकल तो खूब चैन से कट रही है न ?

चोचले बघारना—इतराना ।

चोट उभरना—चोट लगी हुई जगह पर फिर से दर्द होना । उ० लड़कपन की चोट उभर गई है, यह मरते दम तक परेशान करेगी ।

चोट खाना—१ अपने ऊपर आघात लेना, प्रहार सहना । उ० एक बार चोट खा जाएगा तो शांत हो जायेगा । २ नुकसान उठाना । उ० तुम्हारा मुँह देख कर ही मैंने चोट खाई ।

चोट खाली जाना—निशाना न बैठना । उ० अगर मेरी चोट खाली जायगी तो सबकी ही खाली जायगी ।

चोट बचाना—चोट न लगने देना । उ० झगड़ा मे जाओ, पर चोट बचाते रहना ।

चोटियाँ नोची जाना—दुर्गति होना ।

चोटी का पसीना एड़ी तक आना—दे० 'चोटी का पसीना एड़ी पर आना ।'

चोटी का पसीना एड़ी पर आना—कठिन मेहनत पड़ना । उ० इस काम मे मेरा चोटी का पसीना एड़ी पर आ गया ।

चोटी दबना—दे० चोटी हाथ मे होना' ।

चोटी हाथ में होना—वश में होना, अधिकार मे होना । उ० उसकी चोटी तो मेरे हाथ मे है, जो चाहूँ करवा लूँ ।

चोन्हा करना—१. नखरा करना । नखरा दिखाना । २ पशुओ का अपने मालिक के प्रति प्रेम प्रदर्शित करना । ३ लड़को का अपने बड़ो के प्रति प्रेम दिखाना ।

चोर की दाढ़ी में तिनका होना—अपराधी का स्वयं शंकित होना ।

चोर-चोर मौसेरे भाई होना—सब एक से होना ।

चोर पर मोर पड़ना—धूर्त से धूर्तता करना । उ० चोर पर मोर पड़ना ही ठीक है । २. जैसे को तैसा मिलना ।

चोरी उघरना—भेद या रहस्य प्रकट होना ।

चोरी-चमारी करना—लूटना-खसोटना, चुराना-पचराना । उ० इस लड़के मे चोरी-चमारी करने की आदत नही है ।

चोरी-चोरी—छिपे तौर पर । उ० चोरी-चोरी वह यहाँ आया था और चला भी गया ।

चोरी-छिपे—दे० 'चोरी-चोरी' ।

चोरी लगना—चोरी का अपराध लगना । उ० मैं वहाँ गया और मुझे भी चोरी लग गई । अगर न गया होता तो काहे को ?

चोला छोड़ना—मर जाना । उ० उसने कल चोला छोड़ दिया ।

चोला प्रसन्न होना—तबीयत खुश होना । उ० कभी-कभी आ जाया करो । तुमको देखकर चोला प्रसन्न हो जाता है ।

चोला बदलना—१. एक शरीर छोड़ कर दूसरा शरीर धारण करना । उ० उसने आज चोला बदल दिया । २ नया रूप धारण करना । उ० आज तो तुमने चोला ही बदल दिया है ।

चोली-दामन का साथ—गहरी दोस्ती । उ० हमारा उनका चोली-दामन का साथ है, हम उनके बिना बाहर नहीं जा सकते ।

चौंसठ घड़ी—दिन-रात । उ० चौंसठ घड़ी आपकी ही बात मैं सोचा करता हूँ ।

चौकड़ा भरना—छलांग मारना । उ० खरगोश कुत्ते को देखते ही चौकड़ी भरते हुए आगे निकल गया ।

चौकड़ी भुला देना—सारी हेकड़ी भुला देना ।

चौकड़ी भूल जाना—कोई उपाय न सूझना । उ० अभी बहुत बात कर रहे हो, जब काम पड़ेगा तो सब चौकड़ी भूल जाओगे ।

चौकन्ना होना—होशियार होना । उ० बंदूक की आवाज सुनते ही हिरन चौकन्ना हो गया ।

चौका करना—चार अँगुलियो पर तागा लपेटना । उ० चौका करो, जनेऊ बनाना है ।

चौका-बर्तन करना—लीपने-पोतने तथा बर्तन माँजने का काम करना । उ० वह चौका-बर्तन करता है ।

चौकी देना—१ आदर-सत्कार करना । उ० उसके यहाँ जो कोई भी आता है, वह चौकी देता है । २ पहरा देना, रखवाली करना । उ० यहाँ का चौकीदार गाँव की चौकी देता है ।

चौखट पर माथा रगडना—सेवक-सा होना ।

चौखट लाँघना—घर के अदर या बाहर जाना । उ० अब अगर मेरी चौखट लाँघी तो कुशल नही ।

चौचंद पारना—वदनामी करना। उ० मेरा चौंचद न पारो ।

चौथ का चांद—ऐसी वस्तु जिसके देखने से कलक लगे । उ० निरखि चौथ के चद यह, सोचत सुमुखि ससक ।

चौथ का चांद देखना—व्यर्थ के लिए कलकित होना । उ० झूठ-मूठ मे इतने कलक लग रहे हैं, मैंने चौथ का चाँद तो नही देखा है ? [हिंदुओ का विश्वास है कि जो भादो के शुक्लपक्ष की चौथ का चांद देखता है, उसे कोई न कोई कलक अवश्य लगता है ।]

चौदह पुश्तो मे—लम्बे अरसे से, कभी भी न ।

चौपट करना—वरवाद कर देना ।

चौपट-चरण—ऐसा चरण, जिसके पहुँचते ही सब कुछ नष्ट हो जाय । उ० तुम्हारे जैसे चौपट-चरण की यहाँ आवश्यकता नहीं है ।

चौपट होना—बिगड जाना ।

चौमुखा दिया जलना—१. दिवाला हो जाना । उ० उस महाजन बेचारे का तो चौमुखा दिया जल गया है । २. बहुत खर्च होना । उ० चौमुखा दिया जलेगा तो उसे बुझते कितनी देर लगेगी ।

चौरंग उड़ाना—१ बिलकुल निराश कर देना । २ किसी हथियार से कोई चीज़ बहुत सफ़ाई से काटना ।

चौरासी पर नाचना—दे० 'चौरासी में पड़ना' ।

चौरासी में पड़ना—आवागमन में फँसना । उ० चौरासी मे पड़कर छुटकारा पाना बड़ा कठिन है ।

चौरासी में भरमना—दे० 'चौरासी में पड़ना' ।

चौरासी लाख योनियों में भटकना—जन्म-मरण के वन्धन मे पड़े रहना ।

चौसर का बाजार—चौक बाज़ार । यहाँ का चौसर का बाज़ार बड़ा अच्छा है ।

चौसरी का बाज़ार—दे० 'चौसर का बाज़ार' ।

छ

छँटा—दे० 'छँटा हुआ' ।

छँटा हुआ—१ चतुर, चालाक़ । उ० राम बडा छंटा हुआ है, उससे कोई पार नही पा सकता । २ बडा भारी । उ० तुम तो छँटे हुए बदमाश हो । ३ बदमाश । उ० तुम भी छँटे हुए हो ।

छँटे-छँटे फिरना—साथ बचाना । दूर-दूर रहना । उ० वह तो मुझसे छँटे-छँटे फिरते हैं ।

छँटे-छँटे रहना—दे० 'छँटे-छंटे फिरना' ।

छकडा लादना—छकडे मे सामान लादना । उ० यहाँ छकडा लाद कर आये हो न, कि हमसे खाने को माँग रहे हो ।

छक्का-पंजा—१ दाँव-पेंच । चालवाज़ी । उ० आपका छक्का-पजा मुझ पर नही चल सकता । २ जुआ ।

छक्का-पजा करना—जुआ खेलना । उ० इनका तो काम ही छक्का-पजा करना है, इनकी रोटी इसी से चलती है ।

छक्का-पंजा भूलना—चाल का न चलना । चाल का कामयाब न होना । बुद्धि का काम न करना । उ० आपके सामने तो मेरा सब छक्का-पंजा भूल जाता है ।

छक्का हाथ मारना—बहुत बड़ा कार्य कर लेना ।

छक्के छुड़ाना—१ पैर उखाड़ देना । उ० सिक्खों ने क़ाबुलियो के छक्के छुड़ा दिये । २. चकित करना, हैरान करना । उ० कीट्स ने छोटी उम्र मे ही लिख कर बड़े-बड़े लेखकों के छक्के छुड़ा दिये । ३. दुर्दशा करना । उ० उसने तो छक्के छुड़ा दिए ।

छक्के छूटना—१. बुद्धि चकरा जाना । उ० उसके सवाल का उत्तर देने में मेरे छक्के छूट गये । २ हिम्मत हारना, साहस छूटना । उ० उसके बोलने के बाद तो बड़ो-बड़ों के छक्के छूट गए । ३. शारीरिक परिश्रम के कारण बहुत थक जाना ।

छछूंदर छोड़ना—१ हलचल मचा देना। उ० उसने यहाँ आकर ऐसी छछूंदर छोड दी कि सब लोग परीशान हो गये। २ अफवाह फैलाना। उ० तुम तो रोज ही कोई न कोई छछूंदर छोड़ते ही रहते हो।

छटांक भर—बहुत कम। उ० छटांक भर मिठाई लेकर सबको आप बाँटने चले हैं।

छठी का दूध निकलना—अधिक मेहनत पड़ना। उ० ऐसा काम था कि छठी का दूध निकल गया।

छठी का दूध निकालना—कठिन काम लेना, बहुत परीशान करना। उ० मालिक ने ऐसा काम करवाया कि छठी का दूध निकाल लिया।

छठी का दूध याद आना—१ कठिन परिश्रम पड़ना। २ सुख भूल जाना, बहुत कष्ट होना। उ० ऐसी मार मारूँगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा।

छठी का राजा—पुराना अमीर। उ० वह छठी का राजा है, उसे कोई क्या पायेगा?

छठी मे नहीं पड़ना—१ भाग्य मे न होना। उ० आराम तो तुम्हारी छठी मे पड़ा ही नही। २ स्वभाव के प्रतिकूल होना। उ० पत्रोत्तर देना तो उसकी छठी मे ही नहीं पड़ा है।

छठे कान मे पड़ना—तीसरे व्यक्ति का सुनना।

छठे-छमासे—कभी-कभी। उ० मित्र, छठे-छमासे यहाँ भी आ जाया करो।

छड़ी छटांक—१ अकेले, एकाकी। उ० वह छडी छटांक तो है, भला दो आदमियो का क्या कर सकता है? २ बिना सामान के। उ० तीसरे दर्जे मे तो छडी छटांक भी तकलीफ होती है।

छड़ी सवारी—दे० 'छडी छटांक'।

छत की कड़ियाँ गिनना—बेकार होना, समय बर्बाद करना। उ० जब तुम पढ-लिख कर भी छत की कड़ियाँ गिन रहे हो, तो हमारी बात ही क्या है?

छत बंधना—बादल छा जाना। उ० आज सुबह ही से छत बंधी है, वर्षा अवश्य होगी।

छत्तीसापना करना—चालबाज़ी करना। उ० यह छत्तीसापना करना इस बुढापे मे तो छोड़ दो।

छत्र-छाँह मे होना—शरण मे होना। उ० मैं आपकी छत्र-छाँह मे हूं, अब आप जो चाहें, करें।

छत्रछाया मे होना—दे० 'छत्र-छाँह मे होना'।

छनन-मनन होना—पकवान बनना। उ० आज किस खुशी मे आपके यहाँ छनन-मनन हो रहा है?

छप्पन-छुरी होना—छल-कपट से भरा होना।

छप्पर टूट पड़ना—१ आफत पड़ना। आफत आना। उ० बेचारे का पुत्र क्या मरा, छप्पर टूट पड़ा। २ किसी तरह का आघात आना।

छप्पर पर फूंस न होना—बहुत गरीब होना। उ० बेचारी के छप्पर पर फूंस तक नही है, वह क्या रुपया खर्च करेगी?

छप्पर पर रखना—अलग रखना। कोई बात न चलाना। जाने देना। उ० अपने आमदनी-खर्च को छप्पर पर रक्खो, हमको रुपये दो।

छप्पर फाड़ कर देना—बिना प्रयास देना। उ० भगवान जिस पर खुश होता है, छप्पर फाड़ कर देता है।

छप्पर रखना—१. एहसान रखना। २ कलंक लगाना।

छमछाम हो जाना—एकदम शान्त हो जाना। उ० उसको देखते ही सब लोग छमछाम हो गये।

छर्रा खींचना—चरस पीना। उ० वह सुबह से रात तक छर्रा खींचता है।

छलके दूध से लाभ उठाना—नष्ट होती हुई वस्तु से लाभ उठाना।

छल-छद—धोखेबाज़ी, चालबाज़ी। उ० आपका छल-छद यहाँ न चलेगा।

छल-छदों से दूर रहना—छल या चालाकी से दूर रहना। उ० छल छदों से दूर रह कर वह बेचारा अपने काम से काम रखता है।

छल छंद—दे० 'छल-छन्द'।

छुलनी कर डालना—बहुत ज्यादा छेद कर डालना। उ० यह आपने क्या किया।

इतने ही दिन मे इस चादर को छलनी कर डाला !

छलनी कर देना–दे० 'छलनी कर डालना'।

छलनी मे डाल छाज मे उड़ाना–थोडी बात को बहुत बढा-चढा कर कहना। उ० छलनी मे डाल कर छाज मे न उडाओ, ठीक-ठीक बतलाओ।

छलनी हो जाना–बहुत छेद हो जाना। उ० खोच लग-लग कर सारी धोती छलनी हो गई।

छल पिलाना–धोखेबाजी सिखाना। उ० अपने साथ रख कर आपको भी उसने छल पिला दिया।

छलांग मारना–१ कूदना। उ० छलांग मारते हुये खरगोश बहुत आगे निकल गया। २ बहुत तरक्की करना। उ० उसने तो खूब छलांग मारी। कल तक क्लर्क था, आज अफसर हो गया।

छलावा खेलना–इधर-उधर छिपना। उ० तुम छलावा खेलो, जिस दिन पकड़े जाओगे, पता चलेगा !

छावाला-सा–बहुत चचल। उ० वह तो छलावा-सा है।

छाँह की तरह साथ रहना–प्रत्येक क्षण साथ रहना।

छाँह न छूने देना–पास न फटकने देना। निकट न जाने देना। निकट न आने देना। उ० उस नीच आदमी के लडके को छाँह न छूने दूंगा, नही तो मेरा लडका भी खराब हो जायगा।

छाँह बचाना–दूर ही रहना। पास न जाना। उ० उसे चेचक निकल रही है, उसकी छाँह बचाना।

छाँह मे कमाना–आराम से रह कर धन कमाना। उ० भाग्य की बात है कि बिना पढा-लिखा होने पर भी वह छाँह मे कमा रहा है।

छाँह मे बैठ कर कमाना–दे० 'छाँह मे कमाना'।

छाँह मे होना–१ शरण मे होना। उ० जब मैं आपकी छाँह में हूँ तो कोई मेरा क्या कर सकता है ? २ छिपाना। उ० रात को सूर्य छाँह मे हो जाते हैं।

छाए रहना–बने रहना, प्रभाव होना, हृदय में ध्यान बने रहना।

छाकटेबाजी चलना–धोखा देना। चालबाजी करना। उ० सबसे छाकटेबाजी चलना ठीक नही है।

छाज-सी दाढ़ी–बडी और चौडी दाढी। उ० उसकी छाज-सी दाढी जाने कैसी लगती है।

छा जाना–ढक लेना, सबके ऊपर प्रभाव डालना। उ० यह नया विद्यार्थी कालेज पर इस तरह छा गया है कि सब इसी के बारे मे बात करते रहते हैं।

छाजों मेह बरसना–मूसलाधार पानी बरसना। उ० वहाँ तो छाजो मेह बरसा है।

छाती उड़ी जाना–१ जी घबराना। उ० न मालूम क्यो आज मेरी छाती उडी जा रही है। २ दुख या आशका से चित्त व्याकुल होना। उ० उसका पत्र आए बहुत दिन हो गया, अब मेरी छाती उडी जा रही है।

छाती उभरना–युवा अवस्था मे स्त्रियो के स्तनो का बढना।

छाती उमड आना–१ किसी की याद मे बेचैन हो जाना। उ० अपने पति के लिए उसकी छाती उमडी आती है। २ प्रेम या करुणा से गद्‌गद्‌ होना। उ० पुत्र को देख कर माँ की छाती उमड आई।

छाती ऊँची होना–गर्व होना।

छाती कडी करना–मन को कठोर बनाना।

छाती करना–साहस करना। उ० यहाँ आने की छाती कौन कर सकता है ?

छाती का जम–दुखदायक वस्तु या व्यक्ति। उ० तुम तो मेरी छाती के जम हो जाते हो।

छाती कुलिश होना–हृदय कठोर होना।

छाती कूटना–दे० 'छाती पीटना'।

छाती के किवाड़ खुलना–१ ज्ञान हो जाना। उ० कुछ दिन के सत्सग से ही उसकी छाती के किवाड खुल गए। २ कठ से चीत्कार निकलना। उ० मैं तो आता ही था, तेरी छाती के किवाड क्या खुल गए ? ३ बहुत आनन्द होना। उ० पास होने की खबर सुनते ही उसकी छाती के किवाड खुल गए। ४ छाती फटना। ५ दिल खोल कर बातें करना। उ० आज दोनो के छाती के किवाड खुल गए।

छाती के किवाड खोलना–१ मन की बात साफ-साफ कहना। उ० मेरा यह स्वभाव है

कि सबसे छाती के किवाड खोल देता हूँ। २ कलेजा टुकडे-टुकडे करना। उ० डाकुओ ने मेरी सारी सपत्ति मेरे सामने ही लेकर मेरी छाती के किवाड खोल दिए। ३ अज्ञान मिटाना। उ० महात्मा जी ने बहुतो की छाती के किवाड खोल दिए। ४ प्रसन्नता देना। उ० अकस्मात् पुत्र ने आकर माँ के छाती के किवाड खोल दिए।

छाती के पट खुलना–दे० 'छाती के किवाड खुलना'।

छाती के पट खोलना–दे० 'छाती के किवाड खोलना'।

छाती खोलना–१ हृदय मे कोई भेद, छल या कपट न रखना। उ० मैं हर एक व्यक्ति के सामने छाती खोल कर रख देता हूँ। २ दिलेर होना। उ० हर काम मे वह छाती खोल देता है। ३. उदार होना।

छाती गज भर की होना–खुशी और गौरव होना।

छाती चूर-चूर होना–अत्यधिक दु ख होना।

छाती छलनी करना या कर देना–दिल पर बहुत बडा आघात पहुँचाना, बहुत कष्ट देना। उ० इस खबर ने मेरी छाती छलनी कर दी।

छाती छलनी होना–हृदय पर बहुत दु ख पडना, कष्ट सहते-सहते दिल घबरा जाना। बहुत आघात सहना। हृदय विदीर्ण हो जाना। उ० दु खो को सहते-सहते उसकी छाती छलनी हो गई है।

छाती जलना–१ दु ख होना। उ० जब भी मैं उसे देखता हूँ तो मेरी छाती जलने लगती है। २ डाह होना, जलन होना। उ० वह पापिन दाहि कुल आई देखि जरत मोरि छाती। ३ दिल व्याकुल होना। उ० तुमसे मिलने के लिए छाती जल रही थी।

छाती जुड़ाना–१ इच्छा पूरी होना। उ० तुम्हारी गोद मे बच्चा देख कर मेरी छाती जुडा गई। २ हृदय शीतल होना। उ० गरीबो को सुखी देख कर उनकी छाती जुडाएगी।

छाती टूक-टूक होना–दु ख से अत्यधिक सतप्त होना।

छाती ठडी करना–सतोष पाना, सतुष्ट होना।

छाती ठडी होना–दे० 'छाती जुडाना'।

छाती ठुकना–हिम्मत होना। चित्त मे दृढता आना। उ० अगर आपकी छाती ठुकती हो तो आप इस काम को शुरू कर दें।

छाती ठोकना–प्रतिज्ञा करना। उ० मैं छाती ठोक कर कहता हूँ कि आज उसे अवश्य मारूँगा।

छाती तले रखना–१ बहुत प्यार से रखना। उ० मैं इस लडकी को छाती तले रखता हूँ। २ अपने समीप रखना। उ० इस कुत्ते को वह छाती तले रखता है।

छाती तले रहना–१ बहुत प्यारा होकर रहना। उ० वह अपने माँ-बाप के छाती तले रहता है। २ सदा सामने रहना।

छाती थाम कर रह जाना–ऐसा शोक होना जिसका अनुभव हो, परन्तु व्यक्त न किया जा सके। उ० गाधीजी की मृत्यु पर भारत छाती थाम कर रह गया।

छाती दरकना–दे० 'छाती फटना'।

छाती धक-धक करना–भयभीत होना, डरना, डर जाना।

छाती धड़कना–१ डर जाना। डर से दिल का काँपना। उ० दुश्मन को देख कर मेरी छाती धडकने लगी। २ कुछ-कुछ जान बाकी होना। उ० इतने जोर से वह गिरा कि मैंने समझा कि गया, पर देखने पर पता चला कि अभी छाती धडक रही है। ३ शुबहा या अपशकुन का शुबहा होना। उ० मेरी छाती धडक रही है, जाने क्या होगा ?

छाती निकाल कर चलना–अकड कर चलना। उ० आजकल के युवक छाती निकाल कर चलते हैं।

छाती निकाल कर रख देना–१ दिल की असली बात सामने रखना। उ० मैंने तो छाती निकाल कर रख दी, तुम विश्वास करो या नही। २ दिल का सच्चा अनुभव रखना, असली चीज कहना। ३ कही-कही तो शेरो मे गालिब ने छाती निकाल कर रख दी है।

छाती पत्थर की करना–दिल सख्त कर लेना। उ० आफत के समय छाती पत्थर की कर लेनी चाहिये।

छाती पर का पत्थर–दे० 'छाती पर का पहाड'।

छाती पर का पहाड़–ऐसी वस्तु, जिसके कारण हमेशा चिंता बनी रहे । उ० यह विधवा लडकी तो उसकी छाती पर का पहाड है ।

छाती पर कोदो दरना–दे० 'छाती पर कोदो दलना' ।

छाती पर कोदो दलना–१ किसी के सामने उसे चिढाने, जलाने या कष्ट पहुँचाने वाला काम करना । उ० अब तक पीठ पीछे गाली देते थे, अब आप सामने गाली देने लगे । इस छाती पर कोदो दलने का परिणाम वडा बुरा होगा । २ दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर चढ कर ढाई चुल्लू लहू पीना–मार डालना, बदला लेना । उ० उसकी छाती पर चढ कर ढाई चुल्लू लहू पी लूंगा, तव मुझे शाति मिलेगी ।

छाती पर चढ़ कर लहू पीना–दे० 'छाती पर चढ कर ढाई चुल्लू लहू पीना' ।

छाती पर चढना–कष्ट देने के लिये तैयार रहना । उ० इन गरीबो की छाती पर न चढो, ये तो स्वय ही दु खी हैं । २ कोई काम करवाने के लिए हर समय आते या कहते रहना या हर समय सामने रहना । उ० छाती पर चढे रहने से तो मैं काम न करूँगा ।

छाती पर छुरी चलना–मन को अत्यधिक दु:ख होना ।

छाती पर से बोझ उतरना–चितामुक्त होना ।

छाती पर झेलना–स्वय दु:ख सहना । उ० छाती पर झेल कर तो तुम्हे मैंने पढाया है और अब तुम पूछते तक नही ।

छाती पर दाल दलना–दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर धर कर ले जाना–मरते समय अपने साथ ले जाना । उ० अब धन से क्या ममता है, क्या छाती पर धर कर ले जाओगे ?

छाती पर पत्थर रखना–१ चुपचाप दु ख सह लेना । उ० मैं कष्ट मे छाती पर पत्थर रख लेता हूँ । २ दिल कड़ा करना । उ० इसे छाती पर पत्थर रख कर सहो ।

छाती पर फिरना–हर समय याद आना । बराबर स्मरण होना । उ० उस दिन की भेट तो छाती पर फिरा करती है । उसकी सूरत तो छाती पर फिरा करती है ।

छाती पर बने रहना–१. हर समय पास रहना । उ० आप हमारी छाती पर बने रहते हैं, आखिर और कोई काम नही है ? २ किसी काम के लिए हमेशा सामने रहना या आता रहना । उ० जब देखो यह छाती पर बना रहता है । मैं तो डाट दूंगा ।

छाती पर बाल होना–१. उदार होना । उ० उसकी छाती पर बाल हैं । २ विश्वासपात्र होना । उ० जाके छाती पर ना बाल । वाको ना कबहूं एतबार ।

छाती पर मूंग दरना–दे० 'छाती पर मूंग दलना' ।

छाती पर मूंग दलना–१ बहुत दु.ख देना । उ० आप बहुत दिनो से मेरी छाती पर मूंग दल रहे हैं । २ व्यग्य बोल कर दु खी करना । उ० छाती पर मूंग न दलिए, ज़रा आदमीयत भी सीखिए ।

छाती पर सवार रहना–दे० 'सर पर सवार रहना' ।

छाती पर सवार होना–दे० 'छाती पर चढना' ।

छाती पर सांप लोटना–कष्ट से कलेजा दहल जाना । उ० उसकी मृत्यु सुनते ही छाती पर सांप लोट गया । २ डाह होना, जलन होना । उ० उसका धन देखकर तुम्हारे छाती पर सांप क्यो लोटता है ?

छाती पीटना–१ बहुत विलाप करना । उ० पुत्र के मर जाने पर माता छाती पीटने लगी । २ हाय-हाय करना । उ० अब छाती पीटने से क्या लाभ, दूसरी खरीद लेना ।

छाती फटना–१ बहुत कष्ट होना । उ० आपकी तकलीफ देखकर मेरी छाती फट रही है । २ ईर्ष्या होना । उ० उसका धन देखकर तुम्हारी छाती क्यो फटती है ?

छाती फाड कर कमाना–बहुत परिश्रम से कमाना । उ० छाती फाड कर कमाया था, सब चोरो ने लूट लिया ।

छाती फाड कर रोना–करुण विलाप करना ।

छाती फुलाना–१ अकड दिखाना, अकडना । उ० आजकल जिसके पास कुछ भी नही है, वह भी छाती फुलाता है । २ घमड करना । उ० अब क्यो छाती फुलाते हो, सब पोल तो खुल गयी ?

छाती फूल उठना–खुशी होना ।

छाती भर आना—१. प्रेम या दया से गद्गद् हो जाना। उ० बेचारी की तकलीफ देखकर मेरी छाती भर आई। २ स्तनो मे दूध आना। उ० बच्चे को पिए देर हुई। उसकी छाती भर आई होगी।

छाती मज़बूत होना—हिम्मत तथा साहस होना।

छाती मसलना—स्तन दबाना। [यह सभोग का एक अग है।]

छाती मसोसना—मन ही मन दुखी होना। उ० उस दिन बेचारा छातो मसोस कर रह गया।

छाती मे छुरी भोंकना—अहित करना।

छाती मे छेद पड़ना—दे० 'छाती मे छेद होना'।

छाती में छेद होना—कष्ट या अपमान सहते-सहते हृदय का जर्जर हो जाना। दुख से जी ऊब जाना। उ० भेदिया सो भेद कहिवो छेद सो छाती परो।

छाती से छाती और आँख से आँख मिलाना—बराबरी करना, सामने मुकाबिले के लिए दृढता के साथ खडा होना। उ० जब तक तुम छाती से छाती और आँख से आँख मिलाने को तैयार न होगे, वह दब नही सकता।

छाती से पत्थर टलना—१ बहुत बडे खटके का काम कर डालना। उ० लो छाती से पत्थर टल गया, अब निश्चित रहो। २ बहुत बडा भार दूर होना। उ० आज वह अपनी धरोहर ले गया। अच्छा हुआ, छाती से पत्थर टला।

छाती से लगा कर रखना—बहुत प्यारा समझना। उ० वह लड़के को छाती से लगा कर रखती है।

छान डालना—बहुत खोज करना। उ० सारे शहर को छान डाला, पर लडके का पता न लगा।

छान-पगहा तोड़ाना—किसी चीज़ से निकलने की कोशिश करना। उ० छान-पगहा न तोडाओ, कल तक तो रहना ही होगा।

छान पर होरहा भूंजना—असभव काम करने की कोशिश करना। उ० क्यो छान पर होरहा भूंजते हो, यह बोझा तुम्हारे बस का नही है।

छानबीन करना—१. बहुत तहकीकात करना। पूछ-ताछ करना। उ० बहुत छानबीन करने के बाद इस चोर का पता लगा है। २ बहुत सोच-विचार करना। उ० बहुत छानबीन करता रहा, परन्तु उस शब्द की व्युत्पत्ति का पता न चला।

छान मारना—दे० 'छान डालना'।

छान्ह पर फेंकना या रखना—दे० 'छप्पर पर रखना'।

छाप डालना—प्रभाव डालना।

छापा मारना—१ डाका डालना। उ० डाकुओ ने कल उनके मकान पर छापा मार कर सब धन लूट लिया। २ एक-ब-एक चढ आना। उ० पुलिस आज कही छापा मारने वाली है।

छाया की तरह साथ रहना—हर क्षण साथ रहना।

छाया भी न छू पाना—ज़रा भी पास न पहुँच पाना।

छिगुनी छूकर पहुँचा गिलना या पकड़ना—पहले थोडा लेकर अधिक लेना। धीरे-धीरे अपना मतलब साधना। धोखा से धीरे-धीरे अपना काम निकालना। उ० छ्वै छिगुनी पहुँचो गिलत अति दीनता दिखाय। बलि-बामन को व्योत मुनि को बलि तुम्हे पत्याय।

छिपे रुस्तम—१ देखने मे कमज़ोर पर वास्तव मे बहादुर। २ भीतर ही भीतर काम करने वाला। उ० तुम तो यार छिपे रुस्तम निकले मैं नही जानता था कि ऐसे धोखा दोगे। ३ ऊपर से कुछ और भीतर से और।

छिपे-छिपे चोट करना—चोरी से नुकसान करना या पहुँचाना। उ० छिपे-छिपे चोट करना नीचो का काम है।

छिया-छरद करना—१ बहुत घृणा करना। उ० तुम तो दिखाने के लिए छिया-छरद करते हो, पाओ तो गप कर जाओ। २ खराब करना। उ० तुमने सारा कपडा छिया-छरद कर दिया, कोई दूसरा दर्जी रहता तो कितना अच्छा बनाता।

छिया-छिया होना—अत्यधिक निन्दा होना।

छींकते नाक कटना—मामूली बात पर सज़ा होना। उ० वहाँ न जाओ, नही तो छींकते नाक कट जाएगी। बड़े निर्दयी हैं सब।

छींक होना—अपशकुन होना। उ० छींक हो रही है, आज वहाँ न जाओ।

छींका टूटना—दे० 'बिलारी के भाग छीका टूटना'।

छींटे कसना—व्यग्य करना। उ० छींटे न कसो, मेरी भी बारी आएगी।

छींटे पड़ना–व्यग्य कहा जाना। उ० तुम्हारे पर तो अब छीटे पड रहे हैं।

छीछालेदर उडाना–१ पोल खोलना। इज्ज़त बिगाड़ना। उ० आखिर इतने आदमियो के बीच उसकी छीछालेदर उडाकर आपने क्या पाया ? २ चुटकी लेना, हँसी उडाना। उ० वह इतना मुँहफट है कि सभी की छीछालेदर उडाया करता है।

छीछालेदर करना–दे० 'छीछालेदर उडाना'।

छीछालेदर होना–१ दुर्दशा होना। २ हँसी उडाया जाना। ३ कटु आलोचना होना।

छुईमुई होना–ज़रा सी बात मे घबडा जाना, अत्यत नाजुक होना।

छुछहेंड दिखाना–इन्कार कर देना। 'नहीं' कहना। उ० क्यो छुछहेंड दिखाते हो, मैं खराब नही करूँगा।

छुटा-छरिंदा–१ स्वतत्र, अनियत्रित। उ० उसका लडका तो छुटा छरिंदा है, इसी से तो बिगडता जा रहा है। २ अकेला। बेफिक्र। उ० वह छुटा-छरिंदा है, उसे किस बात की फिक्र है ?

छुट्टी पर होना–छुट्टी लेकर कही जाना। उ० वे छुट्टी पर हैं, चार दिन आफ़िस नहीं आएँगे।

छुट्टी पाना–१. अवकाश पाना। २ झझट से बचना। उ० तुम तो छुट्टी पा गए, अब हमे मरना पडेगा।

छुट्टी मनाना–१ छुट्टी का दिन खुशी-खुशी बिताना। २ काम न करना। उ० रोज़ छुट्टी मनाना ठीक नही है।

छुरी फेरना–किसी का बुरा करना।

छुरियाँ कटखन मे पडना–१ ले जा कर प्रयोग करना। उ० हमारी सारी चीजें तो न जाने किसकी छुरियाँ कटखन मे पडती हैं। २ रक्त का पाखाना होना। उ० उसकी छुरियाँ तो कटखन मे पड गई है।

छुरी-कटारी दिखाना–मारने की धमकी देना। उ० छुरी-कटारी दिखाने से मैं नही डर सकता हूँ, जो करना हो आप कर लीजिये।

छुरी-कटारी बताना–दे० 'छुरी-कटारी दिखाना'।

छुरी-कटारी रहना–शत्रुता रहना। उ० मेरे सभी भाइयो मे सर्वदा छुरी-कटारी रहती है।

छुरी चलाना–१ हानि पहुँचाना। उ० उस गरीब पर छुरी चला कर क्या पाओगे ? २. गला काटना। ३ मार डालना।

छुरी तले दबाना–बहुत दु ख देना। उ० उन्हें क्यो छुरी तले दबाते हो, जमीदार सुनेगा तो क्या कहेगा ?

छुरी तेज़ करना–१ हानि करने की तैयारी करना। उ० क्यो छुरी तेज़ करते हो, वह तो पहले ही से कमज़ोर और गरीब है। २ किसी के मारने की तैयारी करना।

छूंछे हाथ–१ रुपये-पैसे से खाली हाथ। उ० छूंछे हाथ कही नही जाना चाहिए। २ बिना अस्त्र-शस्त्र के। उ० छूंछे हाथ रात मे न जाओ।

छू-छू बनाना–उल्लू बनाना, बेवकूफ बनाना।

छूटा साँड होना–बधनहीन होना।

छूते सोना होना–काम शुरू करते ही लाभ ही लाभ होना।

छूने को होना–दे० 'छूने से होना'।

छूने से होना–रजस्वला होना।

छूबनना–चुपचाप भाग जाना। उ० पुलिस को देखते ही चोर छू बना।

छूमतर–१ मतर की फूंक। उ० दवा का उस पर कुछ भी असर नही हुआ और छूमतर से अच्छा हो गया। २ गायब। उ० एक मिनट मे वह छूमतर हो गया।

छूमतर होना–१ उड जाना। चला जाना। उ० मुझे देखते ही वह छूमतर हो गया। २ बिल्कुल शात होना। उ० उसका गुस्सा छूमतर हो गया। ३ समाप्त हो जाना। उ० दवा देने से दर्द छूमतर हो गया।

छू होना–दे० 'छू बनना'।

छेडखानी करना–छेडना, छेडछाड करना। उ० मुझसे इस वक्त छेडखानी न करो।

छेद निकालना–१ बुराई खोजना। उ० तुम्हे तो किसी का छेद निकालने मे बडा आनन्द मिलता है।

छैल-चिकनियाँ–बन-ठन कर रहने वाला।

छोटा भाग्य होना–अभागा होना।

छोटे मुँह बडी बात करना–अपनी स्थिति से अधिक बात करना।

छोटी हँडिया–छोटे दिल का। उ० छोटी हँडिया मे जल्दी उबाल आता है।

छोप-छाप करना–दे० 'छोपना-छापना'।

छोपना छापना–घर आदि की मरम्मत करना। उ० वरसात नजदीक है, जल्दी छोप-छाप लो।

छोह करना–प्यार करना। उ० वह अपने लडके की वडी छोह करता है।

छोह दिखाना–ऊपरी प्रेम दिखाना।

छौना चढ़ाना–सुअर का वच्चा चढा कर देवी की पूजा करना। उ० छौना चढा दो तो तुम्हारा लडका वच जाएगा।

ज

जंग चढ़ना–लडाई करना। उ० जग चढे दसरथ के ढोटा।

जग मचाना–लडाई ठानना, लडाई करना। उ० जग मचाते हैं वुड्ढे और लडते मरते है नौजवान।

जगल जाना–पाखाने जाना। उ० अभी जगल जाना है, लौटकर खाऊँगा।

जगल मे मगल होना–किसी शून्य या निर्जन स्थान मे चहल-पहल होना। उ० आपकी कृपा से आज जगल मे मगल हो गया।

जगल मे रोना–व्यर्थ विलाप करना, ऐसा रोना रोना जिसे कोई न देखे तथा जिसका कोई अर्थ न हो।

जगल होना–उजड जाना। उ० वह शहर जगल हो गया।

जग लेना–लडाई लडना। उ० उनसे जग लेने के लिये तैयार रहो।

जंगी लाट–प्रधान सेनापति। उ० करिअप्पा भारत के जगी लाट हैं।

जँचा-तुला होना–ठीक होना। उ० उसकी वातें जँची-तुली होती हैं।

जजाल मे पडना–चक्कर मे पडना। उ० यहाँ आकर ऐसे जजाल मे पड गया कि कही जाने की फुरसत भी नही मिलती।

जजाल मे फँसना–दे० 'जजाल मे पडना'।

जजीर डालना–१ वाँधना। २ वदी वनाना।

जजीर लगाना–किवाड की कुडी वद करना। उ० जजीर लगा दो, नही तो कुत्ता चला जायगा।

जतरी मे खींचना–सीधा करना, टेढापन दूर करना।

जदरा ढीला होना–१ थकावट आना। उ० दिन भर काम करने से जदरा ढीला हो गया है। २ कल-पुर्जों का ढीला होना। उ० मशीन पुरानी हुई, अव तो जदरा ढीला हो जाना स्वाभाविक ही है।

जकड़वद करना–१ अच्छी तरह से अपने अधिकार मे कर लेना। उ० अपने यहाँ रख कर उसने हमे जकडवद कर लिया है, अव चूं करने की भी हिम्मत नही है। २ अच्छी तरह वाँधना। उ० पुलिस ने चोर को जकडवद कर लिया।

जक पकडना–हठ पकडना। उ० जक पकडोगे तो वाद मे पछताओगे।

जक वाँधना–रट लगना, धुन लगना।

जख्म खाना–घायल होना। उ० झगडे मे चार आदमी जख्म खाकर गिर पडे।

जख्म ताजा होना–१ भूली हुई विपत्ति या वात फिर से याद आ जाना। उ० अव भी उसका चित्र देख कर मेरा जख्म ताजा हो जाता है।

जख्म देना–चोट पहुँचाना। उ० मुझे सोते समय जख्म देकर वह नौ दो ग्यारह हो गया।

जख्म पर नमक छिडकना–कष्ट मे और कष्ट देना। उ० क्यो गरीवो के जख्म पर नमक छिडक रहे हो?

जख्म हरा होना–दे० 'जख्म ताजा होना'।

जग-जाल मिटना–सासारिकता से मुक्ति पाना।

जग-जाहिर–सव को पता। उ० तुम्हारी हुलिया जग-जाहिर है, क्या छिप रहे हो।

जगता–प्रभावशाली। उ० वह व्रह्म वडे जगता हैं।

जगहँसाई करना–ऐसा काम करना, जिससे ससार मे हँसी हो। उ० मेरी जगहँसाई करोगे तो ठीक न होगा।

जगहँसाई कराना–ससार मे हँसी कराना। उ० जगहँसाई कराने की इच्छा हो तो इसे भी कर डालो।

जगहँसाई होना–ससार मे हँसी होना, समाज मे हँसी होना। उ० इस काम मे उसकी वड़ी जगहँसाई हुई।

जगह-जगह—१ सब स्थानो पर, सब जगह। उ० गर्मी के दिनो मे जगह-जगह पानी का प्रबन्ध रहता है। २ थोडी दूर पर। उ० आज जगह जगह सिपाहियो की डियुटी लगी है, कोई आयेगा क्या ?

जगह देना—नौकरी देना। उ० आपने यह जगह देकर मेरे ऊपर बहुत कृपा की है।

जटल काफिया—ऊटपटाग बात। उ० तुम्हारे जटल काफियो से तो मैं आजिज़ आ गया।

जटल मारना—दे० 'जटल हाँकना'।

जटल हाँकना—झूठ-मूठ या व्यर्थ की बातें करना। उ० क्या जटल हाँकते हो, चुप भी रहो।

जठर मे धरना—गर्भ धारण करना।

जड़इया आना—जाडा देकर एक-दो या तीन दिन के अतर से आने वाला बुखार आना। उ० उन्हें जडइया आई है, ज़रा जडी तो माँग लाओ।

जड़ उखाडना—१ हानि या बुराई करके किसी की स्थिति बिगाडना। उ० उसने मेरी जड उखाड दी है, अब लोगो मे मेरे प्रति वे भाव नही रहे। २ समूल नष्ट कर देना। उ० चाणक्य ने नन्द-वश की जड ही उखाड दी।

जड करना—अच्छी तरह घर कर लेना। उ० इस बीमारी ने अब जड कर ली, उसका बचना मुश्किल है।

जड़ खनना—नाश करना। उ० दूसरो की जड जमाने के लिए क्यो बहक कर आप अपनी जड खन रहे हैं ?

जड खोदना—दे० 'जड उखाडना'।

जड जमना—जड या बुनियाद का मजबूत होना। उ० तुम्हारी जड जम गई, अब कोई कुछ नही कर सकता।

जड जमाना—जड को मजबूत करना। उ० अभी मैं जड जमा रहा हूँ।

जड़ ढीली करना—दे० 'जड उखाडना'।

जड पकडना—१ जमना या अच्छी तरह जम जाना। उ० उसकी बात किसी के हृदय मे जड नही पकड सकती, क्योकि उसका किसी को विश्वास ही नही है। २ अकुरित होना। झगडे ने जड पकड ली। ३. मजबूत होना।

जड़ पडना—१ बुनियाद पडना। उ० जड पड गई तो काम होकर ही रहेगा।

जड पर कुल्हाड़ी चलाना—आधार को नष्ट करने की चेष्टा करना।

जड हिला देना—स्थिति कमज़ोर कर देना।

जत्था बाँधना—गुट बनाना। उ० वे लोग जत्था बाँध कर आ रहे है।

जदा-कदा—दे० 'यदा-कदा'।

जनाज़ा निकलना—लाश की अर्थी निकलना।

जनाना करना—पर्दा करना।

जन्म गँवाना—१ समय नष्ट करना। उ० मनुष्य को यहाँ आकर कुछ काम करना चाहिये, जन्म गँवाना ठीक नही। २ जीवन का समय नष्ट करना। ज़िंदगी मे कुछ न कर सकना।

जन्म-घूंटी मे पडना—जन्म से ही आदत पडना। उ० झूठ बोलना तो इसकी जन्म घूँटी मे पडा है।

जन्म-जन्म—दे० 'जन्म-जन्मातर'।

जन्म-जन्मान्तर—सर्वदा, कई जन्म तक। उ० भगवान करे आप जन्म-जन्मातर इसी तरह फलते-फूलते रहें।

जन्म डुबोना—जीवन बरबाद करना। उ० इन कामो मे फँस कर क्यो अपना जन्म डुबो रहे हो ?

जन्म बिगडना—जन्म नष्ट होना। उ० इन नीचो के साथ रहने से मेरा जन्म बिगड गया।

जन्म मे थूकना—घृणा से थू-थू करना, धिक्कारना। उ० नीच काम करते हो तो सभी तुम्हारे जन्म मे थूकेंगे।

जन्म लेना—उत्पन्न होना। उ० भगवान जन्म लेते हैं।

जन्म सफल होना—जीवन सार्थक होना।

जन्म हारना—१ दूसरे के वश मे होकर रहना। उ० मैं तो अब अपना जन्म हार गया हूँ, वे जो चाहे करें। २ जीवन को व्यर्थ मे गँवाना। ३ जन्म हारने की बाज़ी रखना या प्रतिज्ञा करना। उ० यदि यह बात सच न हो तो मैं जन्म हार जाऊँ।

जबडातोड जवाब—मुँहतोड उत्तर। उ० उसने बडा जबडातोड जवाब दिया।

जब तक गगा की धारा है—अत काल तक।

जब तक जीना, तब तक सीना—ज़िन्दगी भर कार्य मे लगा रहना। उ० पेट के लिए जब तक जीना है, तब तक सीना है।

जब-तब—कभी-कभी । उ० जब-तब आ जाया करो ।

जब देखो तब—हर समय । उ० जब देखो तब वह बाज़ार मे घूमता रहता है ।

जब होता है तब—दे० 'जभी होता है तभी' ।

ज़बान उलटना या उलट देना—कहकर इन्कार कर जाना । बात दोद देना । उ० तुम्हारी यह आदत है कि तुम ज़बान उलट देते हो ।

ज़बान का गोता खाना—शीघ्र बोलने से उलटे शब्द निकल जाना । उ० माफ कीजिये, ज़बान ग़ोता खा गई ।

ज़बान का तेज़—कटु बोलने वाला ।

ज़बान काट कर देना—१ जीभ काट कर अलग कर देना । उ० कहने का एतबार हो तो ठीक, नही तो कोई ज़बान काटकर नही दे सकता । २ प्रतीक्षा करना । उ० मैंने ज़बान काट कर दे दिया है, अत अवश्य जाऊँगा ।

ज़बान की कतरनी या कैंची चलाना—बहुत बोलना ।

ज़बान के नीचे ज़बान रखना—१ कह कर इन्कार कर जाना । २ दो तरह की बातें कहना । उ० ज़बान के नीचे ज़बान रखने वालो का क्या विश्वास ? ३ दोनो पक्षो की तरफदारी करना ।

ज़बान के नीचे ज़बान होना—दे० 'ज़बान के नीचे ज़बान रखना' । उ० उसके तो ज़बान के नीचे ज़बान है ।

ज़बान खर्च करना—१ कहना । उ० उसके लिए ज़रा-सा ज़बान खर्च करने मे आपको क्या आपत्ति है ? २ मांगना । उ० ज़बान खर्च करो, शायद दे दे ।

ज़बान खींचना—ज़बान को बाहर खीच लेने या उखाड़ लेने की धमकी देना । उ० अगर ज्यादा बकवाद करोगे तो ज़बान खीच लूंगा ।

ज़बान खुलना—१ मुंह से शब्द निकालने या बोलने की हिम्मत पड़ना । उ० इतने आदमियो के बीच मे अगर ज़बान खुले तो कुछ बोलूं । २ कुछ कहा जाना ।

ज़बान खोलना—१ मांगना । उ० बेकार के लिए ज़बान न खोलो । वह कुछ न देगा । २ बोलना । उ० ज़बान तो खोलो, आखिर क्या चाहते हो ?

ज़बान घिस जाना—दे० 'ज़बान घिसना' ।

ज़बान घिसना—१ कहते-कहते थक जाना । उ० मेरी ज़बान घिस गई, पर आप नही गये । २ बहुत कहना ।

ज़बान चलना—१ अनुचित शब्द निकलना । २ मुंह से शब्द निकलना । उ० दिन भर आप की ज़बान चलती ही रहती है, क्या आप बोलते-बोलते थकते भी नही ? ३ दे० 'मुंह चलना' ।

ज़बान टूटना—१ साफ बोलना शुरू करना । उ० लडके की ज़बान अब टूट रही है । २ जीभ मे दर्द या तकलीफ होना । उ० जाने क्यो ज़बान टूट रही है । ३ मुंह सूखना । ४. मरने के करीब होना ।

ज़बान डालना—१ मांगना । उ० वह किसी के आगे ज़बान डालने मे तनिक भी नही हिचकता । २ सवाल करना, कुछ पूछना । उ० ज़बान डालने मे तो तेज़ है, मगर जानता कुछ भी नही ।

ज़बान थामना—बोलने के लिए मना करना । उ० मुझे भी कुछ बोलने दो, ज़बान क्यो थामते हो ?

ज़बान दबा कर कहना—१ डरते हुए कहना । उ० मैंने ज़बान दबाकर ही बात कही, फिर भी वे बिगड गए । २ धीरे से कहना । उ० ऐसी कौन-सी बात है, जो ज़बान दबा कर कहते हो ?

ज़बान देना—वादा करना । उ० ज़बान देकर हटना मर्दों का काम नही है ।

ज़बान निकालना—थोडा भी बोलना । उ० आपके आगे तो ज़बान निकालना भी मुश्किल है ।

ज़बान पकड़ना—दे० 'ज़बान थामना' ।

ज़बान पर आना—१ कहने के लिए उत्सुक होना । कहने की इच्छा होना । उ० मेरी ज़बान पर आ गया है, पहले मुझे कहने दो । २ याद आना । उ० ज़बान पर आ जाय तो कह दूं ।

ज़बान पर ताले पड़ना—कुछ कहने का साहस न होना । कुछ भी न बोलने पाना ।

ज़बान पर धरा होना—दे० 'ज़बान पर रहना' ।

ज़बान पर रखना—१ स्मरण रखना । उ० बिरले ही सारी पुस्तके ज़बान पर रखते है । २ स्वाद लेना । उ० बिना जाने प्रत्येक पदार्थ को ज़बान पर नही रखना चाहिए ।

ज़बान पर रहना—१. हर वक्त याद रहना। उ० सूत्र उसकी ज़बान पर रहते है। २. हर वक्त कहना। उ० गाली तो आपकी ज़बान पर रहती है।

ज़बान पर लाना—१ मुँह से कहना। उ० व्यर्थ की बातें मैं ज़बान पर नही लाता। २ चखना।

ज़बान पर होना—अच्छी तरह याद होना। उ० वह पुस्तक तो मेरी ज़बान पर है।

ज़बान बंद करना—१ शास्त्रार्थ मे पराजित करना। उ० शकराचार्य ने तत्कालीन बौद्ध विद्वानो की ज़बान बद कर दी थी। २ बोलने से रोकना। उ० अपना देखो, मेरी ज़बान न बद करो।

ज़बान बन्द होना—१ हार जाना। उ० आज तो विपक्षियो की ज़बान बन्द हो गई। २ बोलने का साहस न होना। उ० न्यायालय मे जाते ही मेरी ज़बान बद हो गई।

ज़बान बदल जाना—दे० 'ज़बान बदलना'।

ज़बान बदलना—प्रतिज्ञा भग करना। बात पर से टल जाना। उ० ज़बान बदलना मर्द का काम नही है।

ज़बान बिगड़ना—१ मुँह से गाली निकलना। उ० तुम्हारी ज़बान दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। २ मुँह का स्वाद बिगड़ना। उ० ज्वर मे ज़बान बिगड जाती है। ३ चटोर होना। उ० ज़बान बिगडने पर केवल अच्छी चीज़ें ही पसन्द आती हैं।

ज़बान मुँह मे रखना—चुप रहना। उ० अभी ज़बान मुँह मे रक्खो, तुम्ही सबसे बडे नही हो।

ज़बान मे काँटा होना या हो जाना—प्यार से गला सूखना। उ० शीघ्र पानी दो, ज़बान मे काँटे हो गए हैं।

ज़बान मे पड़ना या पड़ जाना—१ पूर्ण रूप से याद होना। उ० जो कुछ पढता है, वह उसकी ज़बान मे पड़ जाता है।

ज़बान मे लगाम देना—१ सोच-समझ कर बोलना। उ० आज के युग मे ज़बान मे लगाम देना ही उचित है। २ चुप रहना।

ज़बान मे लगाम न होना—१ अनुचित बातें कहने का अभ्यास होना। उ० तुम्हारी ज़बान मे तो ज़रा भी लगाम नही है। २ कहने मे अनुचित-उचित का ख़्याल न होना।

ज़बान रोकना—दे० 'ज़बान पकड़ना'।

ज़बान लड़ाना—१ वार्तालाप करना। उ० आज तो ज़बान लडाने मे ही दिन बीत गया। २ सवाल-जवाब करना। उ० ज़रा शऊर सीखो, बडो से ज़बान न लडाओ। ३ कुछ याचना करना, माँगना। उ० जाओ, ज़बान लडाना व्यर्थ है।

ज़बान सँभालना—दे० 'ज़बान मे लगाम देना'।

ज़बान सीना—बोलने से रुकना या रोकना। उ० क्यो ज़बान सीते हो ? आख़िर मुझे भी कुछ कहने दोगे या नही ?

ज़बान से निकलना—१. न चाहने पर भी कह देना। उ० उसका स्वभाव देखकर कुछ बातें ज़बान से निकल ही गई। २ कहना।

ज़बान से निकालना—१ कहना। उ० कुछ ज़बान से निकालो तो सही। २ उच्चारण करना, बोलना।

ज़बान हारना—दे० 'ज़बान देना'।

ज़बान हिलाना—१ कुछ भी बोल देना, थोड़ी-सी सिफारिश करना। उ० ज़बान हिला दो, हमारा काम हो जायगा। २ बोलने का प्रयत्न करना। उ० यह बालक अब तो ज़बान हिलाना चाहता है। ३ विरोध करना।

ज़बानी जमा-ख़र्च करना—१ केवल बात करना, कुछ काम न करना। उ० आजकल के सबधी केवल ज़बानी जमा-ख़र्च करना जानते हैं, कुछ काम करना नही। २ सिर्फ कहना। उ० ज़बानी जमा-ख़र्च करने से काम न होगा।

जभी होता है तभी—अवसर, बराबर, प्राय। उ० जभी होता है तभी वह बाहर घूमने चला जाता है, यह ठीक नही है।

जमघट लगना—बहुत से लोगो का जुटना।

ज़माना देखना—ख़ूब अनुभव होना। उ० उसे आप क्या धोखा दे सकते हैं, वह ज़माना देख चुका है।

ज़माना बीत जाना—वैभव और गौरव की स्थिति का न रहना।

ज़माना होना—रोब होना, प्रभाव होना, अच्छा समय होना। उ० आपका ज़माना है, जो मन-चाहे कर लें।

ज़माने का—बहुत पुराना। उ० वह तो ज़माने का बदमाश है।

ज़माने का जानना–सब लोगों का जानना। उ० उसे ज़माना जानता है कि वह चोर है।

ज़माने की हवा लगना–युगीन विचारधारा का प्रभाव पड़ना।

ज़माने भर का–बहुत बड़ा। उ० वह तो ज़माने भर का चोर है।

जमा मारना–बेईमानी से किसी का धन ले लेना। उ० तुम्हारा तो जमा मारना ही काम है। और दूसरों का भला क्या करोगे?

ज़मीन-आसमान एक करना–दे० 'आसमान-ज़मीन एक करना'।

ज़मीन-आसमान का फरक़ होना–दे० 'आसमान-ज़मीन का अंतर होना'।

ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाना–दे० 'आसमान-ज़मीन के कुलाबे मिलाना'।

ज़मीन उठना–खेत का लगान पर दिया जाना। उ० सब ज़मीन उठ गई, अब बाहर जाकर कोई नौकरी करो।

ज़मीन का पैबंद होना–मर जाना। उ० संसार मे जो पैदा हुआ है, वह अवश्य ही ज़मीन का पैबंद होगा।

ज़मीन का पैरो के तले से खिसकना या खिसक जाना–होश-हवास जाता रहना। उ० बन्दूक की आवाज़ सुनते ही मेरे तो पैरों के तले से ज़मीन खिसक गई।

ज़मीन चूमने लगना–१ नीचा देखना। उ० आप बहुत बढ-बढ बातें कर रहे हैं, पर जब काम पड़ेगा तो ज़मीन चूमने लगेंगे। २ ज़मीन पर गिरना। उ० एक थप्पड़ मे ज़मीन चूमने लगोगे।

ज़मीन नापना–यहाँ से वहाँ जाना।

ज़मीन दिखाना–१ पटक देना, हरा देना। उ० उसके सामने जो भी आयेगा, उसको वह ज़मीन अवश्य दिखायेगा। २ लजवाना।

ज़मीन देखना–हारना। नीचा देखना। उ० अगर इतने बड़े आदमी का सामना न करते तो क्यो ज़मीन देखने की नौबत आती। २ ज़मीन से दृष्टि गड़ा लेना। उ० मेरे सामने आते ही वह ज़मीन देखने लगता है।

ज़मीन पकड़ना–१ जम कर बैठना। उ० वह जब ज़मीन पकड़ लेता है तो उठाये नही उठता। २ पहलवानो का ज़मीन पर पट पडना। उ० ज़मीन पकड लेन पर उसको पछाडना असम्भव हो जायेगा।

ज़मीन पर आ रहना–१ किये हुए पर पश्चात्ताप करना। उ० अब ज़मीन पर आ रहना बेकार है। २ दे० 'मुंह की खाना'।

ज़मीन पर गिरा देना–पराजित करना।

ज़मीन पर चढ़ना–घोडा तेज़ दौड़ाने का अभ्यस्त होना।

ज़मीन पर पैर न पड़ना–१ बहुत गर्व होना। उ० जब से वह पद पा गया है, उसके पैर ज़मीन पर नही पड़ते। २. बहुत प्रसन्न होना।

ज़मीन पर पैर न रखना–१ बहुत अभिमान करना। उ० जब से उसे ससुराल की रकम मिल गई है, वह तो ज़मीन पर पैर नही रखता। २ अत्यधिक प्रसन्न होना।

ज़मीन पर सिर धरना–१ वंदना करना। २ विनम्रतापूर्वक कुछ कहना।

ज़मीन बाँधना–किसी कार्य के लिए पहले से प्रणाली या करने का तरीक़ा निश्चित करना। उ० ज़मीन बाँध लो तो करने में आसानी रहेगी।

ज़मीन मे समा जाना–बहुत लज्जित होना। उ० उसी दिन से वह जब भी मुझे देखता है, ज़मीन मे समा जाता है।

ज़मीन सूंघना–दे० 'ज़मीन चूमने लगना'।

ज़मीन से पीठ न लगना–१ कुश्ती मे पछाड न खाना। उ० कौन कहता है कि वह हार गया! उसकी पीठ ज़मीन से कभी नहीं लगी।

जयचंद होना–गद्दार होना, देशद्रोही होना। उ० वह भी जयचंद ही है।

जयचन्दी करना–देश के साथ गद्दारी करना। उ० जयचंदी करने वालो को डूब मरना चाहिये।

जय मनाना–विजय की कामना करना। उ० अपने राजा की जय मनाओ।

जय सीता राम होना–बहुत साधारण परिचय होना।

जय हो–एक आशीर्वाद जो ब्राह्मण लोग देते है। कभी-कभी भिखारी या माँगन भी इसका प्रयोग करते हैं।

ज़रफ़री-तुरफरी–बात का बतगड, छोटी बात का बहुत बढाना। उ० ज़रफ़री-तुरफ़री करके तुमने उन्हे और भी बहका दिया।

ज़रब आना–आघात पहुँचना । उ० अगर लडके पर ज़रब आया तो कुशल नही ।

ज़रब देना–१ मारना, पीटना । उ० उसे ज़रब दिए तो ठीक न होगा । २ गुणा करना ।

ज़रर पहुँचाना–आघात या हानि पहुँचाना । उ० उसे ज़रर न पहुँचाना, नही तो भला लोग क्या कहेगे ?

ज़र्द पड़ना–१ बीमारी से सूख जाना, पीला पड जाना । उ० दस दिन की बीमारी मे ही वह ज़र्द पड गया । २ डर या शर्म से चेहरे का रग उड जाना । उ० मुझे देखते ही वह ज़र्द पड गया ।

ज़र्दी छाना–१ चेहरा पीला पड जाना । उ० दुख के कारण उसके चेहरे पर जर्दी छाई हुई है । २ बहुत डर जाना । ३. बीमारी आदि से बहुत दुर्बल या रक्तहीन हो जाना । ४ उदास होना ।

जलंधर होना–अत्यन्त वृद्ध होना । उ० वह तो जलधर हुआ, अब क्या शादी करेगा ?

जल उठना–१. बहुत गुस्सा होना । उ० वह मेरी बात सुनते ही जल उठा । २ कुढना ।

जल कर कोयला हो जाना–दे० 'जल कर खाक हो जाना' ।

जल कर ख़ाक हो जाना–१ गुस्सा से पागल हो जाना । उ० वह मुझे देखते ही जल कर खाक हो जाता है । २ बिल्कुल नष्ट हो जाना । उ० उसकी सारी सपत्ति जल कर खाक हो गई ।

जल कर पतंगा हो जाना–दे० 'जलकर खाक हो जाना' ।

जलता घर छोड कर घूरा बुझाना–आवश्यक छोड कर अनावश्यक काम करना ।

जलती आग बुझाना–१ झगड़ा शात करना । उ० सामने आकर जलती आग बुझा दी, नही तो आज यहाँ बहुत कुछ हो जाता । २ झगडा हटाना ।

जलती आग मे कूदना–आफत मे पडना । उ० क्यो जलती आग मे कूद रहे हो, अपने से दुश्मनी है क्या ?

जलती आग मे घी डालना–क्रोध को और भडकाना । उ० इस समय गम से कुछ कहना जलती आग म घी डालना है [illegible] मे कम उसे [illegible] हो जाने दो ।

जलती आग मे पानी डालना–दे० 'जलती आग बुझाना' ।

जलती हुई आग मे हाथ सेंकना–किसी के अहित से अपना लाभ कर लेना ।

जलते हृदय पर पानी के छींटे देना–दुखी को सान्त्वना देना ।

जल-थल एक होना–१ खूब वर्षा होना । उ० आज ऐसी वर्षा हुई कि जल-थल एक हो गया । २ बडी उथल-पुथल मचाना । उ० डाके के कारण आज चार दिन से जल-थल एक हो गया । ३ खूब बाढ आना ।

जलन निकालना–१ द्वेष या ईर्ष्या से उत्पन्न इच्छा पूरी करना । २ जलन बुझाना ।

जल-बर कर अंगीठी होना–तीव्र पीडा से व्याकुल होना, बहुत रुष्ट होना ।

जल-भुन जाना–बहुत लाल या रुष्ट हो जाना । उ० तुम्हारे नाम पर तो वह जल-भुन जाता है ।

जल मरना–१ कुढना । २ बहुत क्रोधित होना । ३ आत्महत्या करना । उ० इस काम को करके तो तुम्हे जल-मरना चाहिए ।

जला कर भस्म कर देना–समूल नाश कर देना ।

जला-जला कर मारना–बहुत कष्ट देना । उ० गरीब को जला-जला कर मार रहे हो, इसने तुम्हारा क्या बिगाडा था ?

जलापा सहना–ईर्ष्या या डाह बर्दाश्त करना ।

जली-कटी कहना–दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जली-कटी पर आना–दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जली-कटी सुनाना–१ व्यग्यपूर्ण बात कहना । उ० यह हँसी-हँसी मे जली-कटी सुनाना ठीक नही । २ गाली-गलौज देना । ३ डाटना, खरी-खोटी सुनाना, भला-बुरा कहना । उ० मुझे क्यो जली-कटी सुनाते हो ? जिसकी गलती है, उसे सुनाना ।

जली-भुनी बात सुनाना–दे० 'जली-कटी सुनाना' ।

जले पर नमक छिड़कना–दे० 'ज़ख्म पर नमक छिडकना' ।

जले पर नमक लगाना–दे० 'ज़ख्म पर नमक छिडकना' ।

जले पर लोन छिडकना–दे० 'जले पर लोन लगाना' ।

जले पर लोन लगाना–जले को और जलाना । दु.खी को और दुखाना । उ० जले पर लोन

लगाना महापाप है। वह तो फेल है और तुम पूछ रहे हो कि आगे कौन-सा विषय लोगे, क्या यह जले पर लोन लगाना ठीक है ?

जले पाँव की बिल्ली—इधर-उधर घूमने वाली स्त्री। उ० इस जले पाँव की बिल्ली को अपने घर न आने दिया करो।

जले फफोले फोडना—दु खी को और दु ख देना। मरे को मारना। उ० क्यो जले फफोले फोडते हो, वह बेचारा तो खुद ही परीशान है।

जवानी उठना—जवानी आना। उ० जवानी उठ रही है, अब शादी कर दो।

जवानी उतरना—बुढापा आना। उ० अगर हम लोग जवानी मे कुछ नही कर सकते तो जवानी उतरने पर भला क्या करेंगे ?

जवानी उभरना—दे० 'जवानी उठना'।

जवानी चढना—१ यौवन आना। युवावस्था आना। २ जवानी की मस्ती आना।

जवानी ढलना—दे० 'जवानी उतरना'।

जवाब तलब करना—कारण पूछना। उ० आफिस मे पहुँचते ही सुपरवाइजर साहब ने जवाब तलब कर दिया कि क्यो देर हुई ?

जवाब देना—इन्कार करना। उ० न करना चाहो तो जवाब दे दो।

जवाब मिलना—नौकरी से बरख़्वास्त किया जाना।

जवाब-सवाल करना—उत्तर-प्रति-उत्तर करना, मुँह लगना। उ० शर्म नही आती है, बडो से जवाब-सवाल करते हो।

जवाल मे डालना—दे० 'जवाल मे फाँसना'।

जवाल मे पडना—आफत मे पडना। उ० उसे लाकर मैं जवाल मे पड गया, वह कुछ करने ही नही देती।

जवाल मे फँसना—दे० 'जवाल मे पडना'।

जवाल मे फाँसना—आफत मे डालना। उ० मुझे इस जवाल मे क्यो फाँसते हो, मैं तो झगडे के वक्त यहाँ था भी नही।

जवाल मे सानना—दे० 'जवाल मे फाँसना'।

जहन्नुम मे जाना—चूल्हे मे जाना, खतम हो जाना। बरबाद हो जाना। उ० तुम जहन्नुम मे जाओ, हमसे क्या मतलब ?

जहन्नुम होना—दे० 'जहन्नुम मे जाना'।

ज़हमत उठाना—कष्ट भोगना। दु ख उठाना। उ० उसकी बीमारी की वजह से घर भर को ज़हमत उठानी पडी।

ज़हमत मे पड़ना—झंझट मे पडना। उ० उसके लिए तुम क्यो ज़हमत मे पडते हो ?

जहर उगलना—जली-कटी बाते कहना। उ० ज़हर क्यो उगल रहे हो ? मैंने तो उससे कुछ कहा भी नही था।

जहर कर देना या करना—१ ऐन मौक़े पर बिगाड देना। २ खाने मे मिर्च या नमक तेज़ कर देना। ३ असहनीय बना देना। उ० तुमने तो ज़हर कर दिया, अब तो भाई हद हो गयी।

जहर का घूँट—१ बहुत कडवा। उ० यह दवा तो जहर का घूँट है।

जहर का घूँट पीना—क्रोध को भीतर ही भीतर हज़म कर जाना। उ० आपकी वजह से ज़हर का घूँट पीकर रह गया, नही तो उसे बता देता।

जहर का बुझाया होना—१ बहुत खतरनाक होना। उ० वह ज़हर का बुझाया हुआ है, उससे होशियार रहना। २ बहुत क्रोधी होना।

जहर का बुताया छुरा—अत्यन्त कष्टदायक, बहुत तेज़, बहुत खतरनाक।

जहर की गाँठ—दे० 'विष की गाँठ'।

जहर की पुडिया—बहुत तेज़-तर्रार। उ० लडकी क्या है, ज़हर की पुडिया है।

ज़हर खाना—१ अपनी बुराई आप करना। २ आत्म-हत्या करना।

जहर मालूम होना—१ रुचिकर न लगना। उ० क्या बात है कि आज का भोजन ज़हर मालूम हो रहा है ? २ बुरा लगना। उ० तुम्हारा हँसना उसे जहर मालूम हो रहा था।

जहर मिलाना—१ अपनी ओर से बुरी बात जोड कर बात को अप्रिय बनाना। उ० तुम तो मेरी बातो मे ज़हर मिलाते चलते हो जिससे दुश्मनी बढती ही जाती है। २ खराब, अप्रिय या अरुचिकर करना।

जहर मे बुझा हुआ होना—दे० 'ज़हर का बुझाया होना'।

ज़हर लगना—१ दुःखप्रद लगना । उ० आज का उत्सव मुझे ज़हर लग रहा है । २ स्वादिष्ट न लगना । उ० यह अचार तो ज़हर लग रहा है ।

जहाँ का तहाँ रह जाना—१. ज़रा भी टस से मस न होना । उ० वह तो जहाँ का तहाँ रह गया । २ उन्नति न करना । उ० उम्मीद थी कि बहुत तरक़्क़ी करेंगे, पर जहाँ के तहाँ रह गए । ४ न उभरना, कार्रवाई न होना । उ० वह गबन का मामला जहाँ का तहाँ रह गया ।

जहाँ की तहाँ साँस रह जाना—दे० 'साँस जहाँ की तहाँ रह जाना' ।

जहाँ-तहाँ होना—१ कही-कही होना, बहुत कम जगह पर होना । उ० भारतवर्ष मे भी जहाँ-तहाँ चुकदर होता है । २ हर जगह या चारो ओर होना ।

जहाज़ का का होना—दे० 'जहाज़ का पक्षी होना' ।

जहाज़ का कौआ होना—ऐसा होना जिसे एक ही आश्रय हो, अत घूम-फिर कर वही आना पड़े । उ० तुम तो जहाज़ के कौए हो । जाओगे भी तो किधर ?

जहाज़ का पक्षी होना—दे० 'जहाज़ का कौआ होना' ।

ज़हूर में आना—ज़ाहिर होना । उ० छिप-छिपकर कीचड़ उछालना कौन-सी बहादुरी है ? ज़हूर मे आओ तो ज़रा देखूँ ।

जाँगर चुराना—परिश्रम से काम न करना । उ० जाँगर चुराओगे तो तनख्वाह काट लूँगा ।

जाँगर-चोर होना—काम करने मे जी चुराने वाला । उ० वह जाँगर-चोर है ।

जाँघ का भरोसा—शक्ति का सहारा ।

जाँच-पड़ताल—छानबीन । उ० मामले की जाँच-पड़ताल कर लो ।

जागता—दे० 'जागता हुआ' ।

जागता हुआ—१ साक्षात् । उ० उसके गुण जागते हुए हैं । २ चमकता हुआ । उ० उसका भाग्य जागता हुआ है ।

जाति दिखाना—वास्तविक रूप प्रकट करना ।

जाति से ख़ारिज करना—कुजाति निकालना । जाति से निकालना । उ० उसने एक गधर्व-विवाह कर लिया, जिससे लोगो ने उसे जाति से ख़ारिज कर दिया ।

जादू उतरना—प्रभाव दूर होना ।

जादू चढ़ना—असर पड़ना ।

जादू मारना—१ जादू करना । उ० मदारी ने जादू मार कर लड़के को उड़ा दिया । २ मोहित करना । उ० तुम्हारी आँखें जादू मारती हैं ।

जादू सिर पर चढ़कर बोलना—गहरा या बहुत अधिक प्रभाव होना ।

जा धमकना—अचानक ही पहुँचना या जाना । उ० कल मेरे साहबज़ादे वहाँ जा धमके ।

जान आना—१ चेतना आना । उ० अब तक तो बेहोश था, परन्तु अब दवा से जान आई है । २ प्रभावशाली होना उ० केवल गाधी के वाक्यो को कह देने से ही तुम्हारे भाषण मे जान आ गई । ३ भय दूर होना । ४ शाति आना । तृप्ति होना ।

जान एक कर देना—मरने मारने पर उतर आना ।

जान क़फ़स मे फँसना—कठिनाइयो मे पड़ना । उ० आजकल तो ससार की ही जान-क़फ़स मे फँसी हुई है ।

जान का गाहक बनना—१ पीछे पड़ना । उ० तुम तो मेरी जान के गाहक बने हो, कुछ आराम भी तो करने दो । २ जानी दुश्मन होना । प्राण लेने को तत्पर होना । उ० वह तो तुम्हारी जान का ग्राहक बना है, अवसर पाते ही काम तमाम कर देगा ।

जान का जजाल होना—१ आफत आना । उ० रिश्तेदारो के मारे तो जान का जजाल हो गया है । २ आफत होना । उ० तुम तो मेरी जान के जजाल हो ।

जान का रोग—१ बहुत बड़ी विपत्ति । उ० शादी क्या है, महँगी मे जान का रोग है । २ भयानक रोग । प्राण लेने वाला रोग । उ० राजयक्ष्मा जान का रोग है ।

जान का लागू होना—दे० 'जान का गाहक बनना' ।

जान की नौबत आना—दे० 'जान पर आ बनना' ।

जान की बाज़ी लगाना—काम को पूरा करने के लिये प्राणो तक की परवाह न करना ।

जान के लाले पड़ना—प्राणो पर आना । जीना दूभर होना । उ० जानते नही हो, कैसा समय है, सब को अपनी जान के लाले पड़े है, दूसरे की रक्षा कौन करे ?

जाना को आना–बहुत कठोर दड देना ।

जान को आ पडना–बडी दुर्गति होनी ।

जान को जान न समझना–१ प्राण का मोह न करना । उ० स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वीरो ने जान को जान न समझी । २ बहुत मेहनत करना । उ० जान को जान न समझ कर मैंने आपका काम किया, समझ-बूझ कर मज़दूरी दे दें ।

जान को रोना–धोखा देने वाले, काम करने वाले या सताने वाले का स्मरण करके दुःखी होना । उ० तुमने उसका काम नही किया, अब तक वह तुम्हारी जान को रोता है ।

जान खाना–१ परीशान करना । उ० देखो, जान न खाओ, तुम्हारा काम कर दूंगा । २ बार-बार कहना । उ० जान न खाओ, कुछ सोचूंगा ।

जान खोना–जान कर मरना । उ० पिता जी ने हमारे पीछे ही अपनी जान खो दी ।

जान गाढे मे डालना–कठिनाई में होना ।

जान चुराना–दे० 'जी चराना' ।

जान छिडकना–दे० 'जान देना' ।

जान छुडाना–१ जी चुराना । उ० ऐन मौके पर तो जान छडा कर भाग जाना तुम्हारा काम ही है । २ प्राण बचाना । उ० दो रुपये देकर सिपाही से जान छुडायी थी ।

जान छूटना–झझट से मुक्ति पाना । उ० इन कामो से जान छूट जाय तो कुछ और करूँ ।

जान जाना–१ मरना । उ० सन् ४२ मे कितनी जानें गई, कोई ठिकाना नही । उसकी तो जान गई । २ बहुत परिश्रम पडना । उ० मेरी तो जान जा रही है, और आप कहते है कि काम ही नही होता । ३ बहुत कष्ट होना ।

जान-जोखो का काम करना–ऐसा काम करना जिसमे जान जाने का डर हो । उ० जान-जोखो का काम क्यो करते हो, बूढी माँ का ज़रा भी ख्याल नही है ?

जान दूभर होना–१ जीने की इच्छा न करना । उ० अब तो मेरा जान मुझको ही दूभर हो गया है । २ रक्षा का कोई उचित प्रबंध न होना, जान बचना असभव होना । उ० यहाँ तो अपनी ही जान दूभर है, तुम्हारी रक्षा कैसे करें?

जान देना–१ किसी के लिए न्यौछावर होना । उ० वह तो तुम पर जान देता है । २. बहुत चाहना, बहुत प्रेम करना । ३ मरना । उ० जान देना चाहते हो तो वहाँ जाओ ।

जान पर आ बनना–सकट या आफत का बहुत विकराल रूप धारण करना । परिस्थिति का ऐसा हो जाना कि मर जाने या प्राण खोने का खतरा हो, उ० कुछ बनाए नही बनी । अब तक जान पर आ बनी, बचा न सके ।

जान पर खेलना–जान की परवाह न करना । उ० प्रताप ने जान पर खेल कर अपने देश की रक्षा की ।

जान बचाना–१ पीछा छुडाना । उ० रोटी फेंक कर मैंने कुत्ते से जान बचाई । २ रक्षा करना । ३ लुकना-छिपना । उ० तुम अपनी जान बचाते फिरते हो ।

जान-बूझ कर आग मे कूदना–अपना नुकसान जान बूझ कर करना ।

जान-बूझ कर करना–समझ कर करना । अनजाने न करना । उ० मैंने तो जान-बूझ कर ही इसे किया ।

जान भारी होना–जीने की इच्छा न होना । जीवन भार होना । उ० इस बीमारी के मारे मेरी जान भारी हो गई है ।

जान मार कर काम करना–बहुत मेहनत करना । उ० मैं जान मार कर काम करता हूँ, फिर भी खाने को नही मिलता ।

जान मारना–बहुत ज्यादा परिश्रम करवाना । उ० काम कराकर अपने नौकरो का वह जान मार डालता है ।

जान मुसीबत मे डालना–परेशानी मे डालना ।

जान मे जान आना–कठिनाई दूर होना, शाति होना, धैर्य बँधना । उ० कचेहरी का खोया हुआ कागज आज जब मिल गया, तो जान मे जान आई है ।

जान लडाना–अधिक कोशिश करना । उ० इस काम मे यदि जान लडा दो तो यह पूरा हो जाय ।

जान लब पर आना–दे० 'जान कफस मे फँसना' ।

जान सूखना–१ होश-हवास उड जाना । उ० उस पागल को देखते ही मेरी तो जान सूख गई । २ बुरा लगना । उ० उसका किसी को प्यार करना देख कर तुम्हारी जान क्यो सूखती है ?

जान सूली की नोंक पर होना—संकटग्रस्त अवस्था मे होना।

जान सूली पर चढ़ी होना—अत्यधिक मुसीबत मे होना।

जान से जाना—मरना। उ० अगर तुम अकेले इस जगल मे जाओगे तो जान से जाओगे।

जान से हाथ धोना या धो देना—मारा जाना, प्राण गँवाना। उ० नदी मे कूद कर क्यो जान से हाथ धो रहे हो ?

जान से हाथ धो बैठना—दे० 'जान से हाथ धोना'।

जान हलाकान करना—बहुत परीशान करना। उ० क्यो उस पागल की जान हलाकान कर रहे हो ?

जान होठों पर आना—दे० 'जान होठो पर होना'।

जान होठो पर होना—१ जान निकलने पर होना। उ० खाने बिना मेरी जान होठो पर है, मुझे कुछ भोजन दे दो। २ बहुत कष्ट मे होना। ३. बडी तगी मे होना।

जानी दुश्मन—प्राणो के पीछे पडने वाला शत्रु। उ० वह मेरा जानी दुश्मन है।

जानी दोस्त—दिली दोस्त। उ० वह मेरा जानी दोस्त है।

ज़ाब्ता बरतना—कानून के अनुसार चलना। उ० झगडा तो हो ही गया, अब ज़ाब्ता बरतना बहुत ज़रूरी है, नही तो और कुछ हो जायगा।

जामे में फूला न समाना—बहुत प्रसन्न होना। उ० लडके की पैदाइश सुन कर वह जामे मे फूला न समायेगा।

जामे से बाहर होना—१ बहुत गुस्सा होना। उ० मेरी बातें सुनते ही वह जामे से बाहर हो गया। २ बहुत प्रसन्न होना।

ज़ाया करना—बरबाद करना। उ० क्यो वक्त ज़ाया कर रहे हो ?

ज़ार-ज़ार रोना—फूट-फूट कर रोना। उ० बेचारा ज़ार-ज़ार रो रहा है।

ज़ार-बेज़ार रोना—दे० 'ज़ार-ज़ार रोना'।

ज़ारी करना—१ आरम्भ करना। उ० अभी काम ज़ारी करूँगा। थोडी देर और ठहर जाओ। २. भेजना। उ० नोटिस ज़ारी करूँगा, तब पता पड़ेगा।

जाल फेंकना—किसी को फँसाने या चगुल मे लाने के लिए कोई युक्ति लगाना। किसी काम के लिए कोई उपाय करना। उ० देखिए, जाल फेंक रहा हूँ, शायद लह जाय।

जाल फैलाना—१ किसी को अपने वश मे करने के लिए आडबर करना या चाल चलना। उपाय लगाना। उ० आपका जाल फैलाना बेकार है, क्योकि वह सब समझ रहा है। २ भरमार होना। उ० शहर मे गुप्तचरो का जाल फैला हुआ है।

जाल बिछाना—दे० 'जाल फैलाना'।

जाल मारना—धोखा देना। उ० तुम सबके साथ जाल मारते हो, यह ठीक नही है।

जाल मे फँसना—चंगुल मे आना। उ० बातचीत पर ही मुग्ध होकर लोग धर्तों के जाल मे फँस जाते हैं।

जाल मे फँसाना—धोखे मे लाना। उ० उस स्त्री ने बहुत से मर्दों को अपने जाल मे फँसा लिया है।

जाल से मुक्त होना—प्रभाव या अधिकार से मुक्त होना।

जाहिल-लट्ठ होना—मूर्ख या उजड्ड होना।

ज़िंदगी के दिन पूरे करना—१ मरणासन्न होना। उ० अब क्या है, डाक्टर ने भी जवाब दे दिया, ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं। २. कष्ट से दिन बिताना। उ० निम्न श्रेणी के लोग केवल ज़िन्दगी के दिन पूरे करते हैं।

ज़िंदगी के दिन भरना—दे० "ज़िंदगी के दिन पूरे करना'।

ज़िगर का खून पीना—१ कष्ट देना। उ० दूसरो के ज़िगर का खून न पियो। २ कष्ट सहना। उ० जब कोई बस नही चलता है तो ज़िगर का खून पी लेना ही अच्छा है। ३ मार डालना।

जितनी चादर उतना पैर फैलाना—सामर्थ्यानुसार कार्य करना।

जितनी डफली उतने राग होना—सबको अलग-अलग राय होना। उ० जब घर मे जितनी डफली उतने राग हैं तो घर का चलना असभव ही समझो।

ज़िद्द चढ़ना—दे० 'ज़िद पकड़ना'।

जी का जंजाल–व्यर्थ की झझट । उ० आजकल मेहमान भी जी के जजाल होते हैं ।

जी का जोखिम–जान का खतरा । उ० वहाँ जाना जी का जोखिम है, तो कौन जायगा ।

जी का बुख़ार निकालना–१ कुछ कह-सुन कर हृदय की जलन निकालना । उ० अगर उसने तुमको गाली दी है, तो तुम भी जी का बुखार निकाल लो । २ दिल का गुबार निकालना । ३ इच्छा पूरी करना ।

जी का बोझ हल्का होना–कोई बहुत बडा भार हट जाना । उ० बेटी की शादी कर देने से उस बुड्ढे के जी का बोझ हलका हो गया ।

जी की भडास निकालना–हृदय के दबे रोष को निकालना ।

जी की जलन बुझाना–मन के दुख को दूर करना ।

जी की जी मे रहना–इच्छा पूरी न होना । उ० हमारी तो जी की जी मे रह गई, और वे चले भी गये ।

जी की निकालना–इच्छा पूरी करना । उ० तुम भी जी की निकाल लो, नही तो पछताओगे ।

जी की पडना–जान बचाना कठिन होना । उ० मुझे तो जी की पडी है और आप मजाक कर रहे हैं ।

जी को आ लगना–जान बचना कठिन होना । उ० इस मुकदमे मे जी को आ लगी है, अब मैं क्या करूँ ?

जी को जी समझना–१ दया करना । उ० सबके जी को जी समझना चाहिये । २ सहानुभूति करना । दूसरे के कष्ट का अनुभव करना ।

जी को भरोसा आना–ढाढस बँधना ।

जी को मारना–मन को उच्छृखल न होने देना । इच्छाओ को दबाना । उ० बडे-बडे महात्मा लोग ही जी को मार सकते हैं ।

जी खट्टा करना–१ घृणा करने लगना । उ० तुम्हारे ऐसे पापी को देखते ही वह जी खट्टा कर लेता है । २ उदास या हतोत्साह होना । उ० जी खट्टा न करो, फिर से कोशिश करो । ३ किसी के जी को खट्टा करने का कारण उपस्थित करना । उ० उसका जी खट्टा न करो ।

जी खट्टा-मीठा होना–जी ललचाना, मुंह मे पानी भर आना ।

जी खट्टा होना–१ अरुचि होना । उ० ससार के सुखो से मेरा जी खट्टा हो रहा है । २ उत्साह जाता रहना । ३ मन फिर जाना । उ० उससे जी खट्टा हो गया ।

जी खपाना–किसी काम मे जी-जान से लग जाना । उ० मैंने इस काम से जी खपा दिया, फिर भी यह पूरा नही हुआ ।

जी खरा-खोटा होना–बुरी नीयत होना । उ० इतनी छोटी चीज़ के लिए तुम्हारा जी खरा-खोटा हो गया तो क्या विश्वास किया जाय ।

जी खोल कर कहना–१ जो मन मे हो वह कहना । उ० जी खोल कर कहो, इसमे शर्माने की क्या बात है ? २ बिना हिचक के कहना ।

जी गँवाना–प्राण खोना । उ० अगर रात को जगल मे जाओगे तो जी गँवा बैठोगे । जी गँवाना चाहो तो उससे लडाई करो ।

जी गिरा जाना–१ तबीयत सुस्त होना । उ० आज सुबह ही मेरा जी गिरा जा रहा है । २ उत्साह जाता रहना । उ० लाभ न होने से जी गिरा जा रहा है ।

जी घबराना–१ मन न लगना । उ० मेरा जी घबरा रहा है, मैं अब यह काम नही करूँगा । २ अरुचि या घृणा होना । उ० इस भोजन से तो जी घबरा रहा है ।

जी चलना–१. इच्छा होना । उ० जी चले तो वह भी खा लो । २ आशिक होना । उ० तुम्हारा जी उस पर चलता है ।

जी चुराना–१ मन मोहित करना । उ० उसने मेरा जी चुरा लिया है । २ परिश्रम से काम न करना । उ० काम से जी चुराओगे तो तुम्हे कौन पूछेगा ?

जी छितराना–हृदय को दुख होना ।

जी छोटा करना–१ कजूसी करना । उ० तुम्हारे स्तर के आदमी को जी नही छोटा करना चाहिए । २ हतोत्साह होना । उ० जी छोटा न करो, पास हो जाओगे । ३ मन उदास करना ।

जी छोड़ कर भागना–१ हिम्मत हार कर भाग जाना। उ० बहुत से आदमी इस काम को करने आये, पर सभी जी छोड कर भाग गये। २ बहुत तेज़ भागना। उ० शेर को देखते ही वह जी छोड कर भागा।

जी जलना–१ क्रोध आना। उ० मैं तुम्हे देखता हूँ तो मेरा जी जलने लगता है। २ ईर्ष्या होना, डाह होना। उ० उसकी उन्नति देख कर तुम्हारा जी क्यो जलता है।

जी-जान लड़ाना–१ बहुत मेहनत से करना। उ० मैं हर एक काम जी-जान लडाकर करता हूँ। २ जान की परवाह न करना।

जी-जान होम करना–बहुत प्रयत्न करना।

जी जुडाना–हृदय शात होना।

जी टँगा रहना–खटका लगा रहना। उ० मेरा जी टँगा रहता है कि वह कहाँ गया?

जी टँगा होना–दे० 'जी टँगा रहना'।

जी टूट जाना–१ दिल टूट जाना। उ० अब तो मेरा जी आपसे टूट गया है। २ निराश हो जाना। उ० आपकी बातें सुन कर मेरा जी टूट गया है, अब मैं यहाँ से जा रहा हूँ।

जी ठडा होना–१ शान्त होना। उ० उनका जी ठडा हो गया है, अब तुम न डरो। २ इच्छा पूरी होना। उ० जब वह हार जाय तो तुम्हारा जी ठडा हो।

जी डालना–१ मरने मे बचाना। ज़िदगी बचाना। उ० डाक्टर ने उसमे जी डाल दिया है, नहीं तो वह मर गया होता। २, मुहब्बत कर। उ० एक ही मे जी डालो, सौ से नही।

जी डूबना–१ जी घबराना। उ० जब मैं उस नीच के काम को सोचता हूँ तो मेरा जी डूबने लगता है। २ मूर्छा आना। उ० कमज़ोरी से जी डूबा जाता है।

जी तरसना–१ पाने को व्याकुल होना। उ० आपके दर्शनो को जी तरस रहा है। २ ललचना, दिल न भरना। उ० बेचारो का जी दाने-दाने को तरसता है।

जीता खून–देह मे निकला हुआ ताजा खून। उ० कुछ लोग जीते खून पीने के शौकीन होते हैं।

जीता चुनवाना–१ दुसह दड देना। २ जीते जी दीवाल मे चुनवाना। उ० औरगजेब ने गोविंद सिंह के दो पुत्रो को जीता चुनवा दिया।

जीता-जागता–१ भला-चगा। २. प्रत्यक्ष, ज्वलत। उ० इसका यह जीता-जागता उदाहरण है। ३ हिम्मत वाला।

जीता-जागता चित्र खींचना–किसी का सजीव वर्णन करना। उ० तुलसी ने अपनी कविताओ मे मानव-मन स्थिति का जीता-जागता चित्र खीचा है।

जी दब जाना–निरुत्साहित होना।

जी धक्-धक् करना–आशका होना।

जीती मक्खी घोटना–१ जान-बूझ कर कोई ऐसा पाप करना, जिसके कारण पीछे से हानि हो। उ० मैं आपके कहने से जीती मक्खी नही घोट सकता। २. दोष की ओर ध्यान न देना। उ० वह मूर्खो की तरह जीती मक्खी नही घोटता।

जीती मक्खी निगलना–१ जान कर पाप करना। उ० सच्चा हाल जान कर भी मैं यदि झूठ बोलूँ तो इससे बढकर जीती मक्खी निगलना और क्या हो सकता है? २ जान कर धोखा खाना।

जीते जी–१ प्राण रहते। उ० जीते जी तो उसको नही लेने दूँगा। पीछे चाहे जो हो। २ आजन्म। उ० उसकी कृतज्ञता मैं जीते जी मानूँगा।

जीते जी मर जाना–१ जीवन मे ही किसी ऐसी घटना का घटना कि मृत्यु से भी बढकर दु ख हो। उ० पिता जी की मृत्यु से तो मैं जीते जी मर गया। २ जीवन से निराश होना। उ० मेरा क्या है, मैं तो जीते जी मर गया हूँ। ३. बहुत बेइज्जत होना। उ० इस काम को करके तुम जीते जी मर गए।

जी तोड कर काम करना–दिल लगा कर परिश्रम से काम करना। उ० नौकर हो तो ऐसा कि जहाँ लगा दो, जी तोड कर काम करे।

जी दहलना–डर से काँपना। डर के कारण दिल का धक-धक करना। उ० उसे देख कर मेरा जी दहलने लगता है।

जी दान देना–जान छोड देना, न मारना। उ० शत्रु के सामने उसने सिर नवा कर कहा कि मुझे जी दान दे दो।

जीदार होना–बहादुर होना। उ० शिवा जी बडे जीदार थे।

जी दुखाना–१. कष्ट देना। उ० क्यो गरीबो का जी दुखाते हो ? २ ऐसी बात कहना जिससे दिल को ठेस पहुँचे।

जी देना–१ प्राण देना। उ० अगर आप मेरा कहना न करेंगे तो मैं जी दे दूँगा। २ दे० 'जान देना'।

जी दौडाना–मन चलाना। उ० अधिक जी दौडाना ठीक नही है। सीमा के अदर रहो।

जी धँसा जाना–मूर्छा-सी आना। उ० कमजोरी के कारण जी धँसा जा रहा है। २. उदासी होना। उ० उसका जी धँसा जाता है, वह सन्यास लगा। ३ चित्त विह्वल होना। उ० उसके न आने से मेरा जी धँसा जाता है।

जी धकधक करना–दे० 'जी धडकना'।

जी धकधक होना–दे० 'जी धकधक करना'।

जी धक से होना–डर जाना। उ० उस पागल को देखते ही लडके का जी धक से हो गया।

जी धक हो जाना–१. चौंक जाना। २ भय-भीत हो जाना। उ० उसकी बात सुनते ही मेरा जी धक हो गया।

जी धक होना–दे० 'जी धक से होना'।

जी धडकना–१ डर से घबराहट होना। उ० मेरा जी धडक रहा है कि कहीं यहाँ भी डाकू न आ जायें। २. हिम्मत न पडना। उ० उसे तो कुछ देते जी धडकता है कि खराब कर देगा।

जी न होना–तबीयत ठीक न होना, बीमार होना।

जीना अपनी खुशी से–अपने सुख से आनन्दित होना। उ० मैं तो अपनी खुशी से जीता हूँ।

जीना भारी होना–जीवन मे दुख ही दुख होना। जीवन का आकर्षक या सुखमय न होकर भारस्वरूप होना। उ० आजकल तो गरीबो का जीना और भी भारी हो गया है।

जी पक जाना–१ दुख सहते-सहते एक आदत-सी पड जाना। उ० इनको क्या, इनका तो जी पक गया है, चाहे जितना सता लो। २ दिल ऊब जाना। उ० उसके झगडे मे तो जी पक गया है।

जी पकड लेना–कलेजा थामना, दुख सहने के लिए छाती पर हाथ रख कर हिम्मत बाँधना। उ० जैसे इतना सहा, वैसे और के लिए भी जी पकड लूंगा।

जी पकडा जाना–मन मे सदेह होना। उ० उसकी रजिस्टरी चिट्ठी आते ही मेरा जी पकडा गया कि कोई बात अवश्य है।

जी पड़ना–निराशा मे आशा मिलना। उ० जगल मे उस खूँखार आदमी को देखते ही मेरी हवाई उडने लगी, परन्तु कुछ बटोहियो को देखा तो जी पडा।

जी पत्थर करना–दे० 'दिल कडा करना'।

जी पर आ बनना–प्राण सकट मे पडना। उ० पिछले महायुद्ध मे सारे पूर्वी भारत के लोगो के जी पर आ बनी थी।

जी पर खेलना–जान को खतरे मे डालना। उ० वह तो डरने का नाम ही नही जानता है, जी पर खेलने के लिए हमेशा तैयार रहता है।

जी पाना–१ किसी के स्वभाव या चरित्र को समझ लेना। उ० जब मैं तुम्हारा जी पा लूंगा तो कुछ करूँगा। २ दिल का रहस्य जानना। उ० उसका जी पा लेने दो तो मैं कोई रास्ता निकालूं। ३ प्रेम पाना। उ० तुम उसका जी पा गए।

जी पानी करना–किसी के प्रति दया उत्पन्न करना। उ० उसकी करुणा-भरी पुकार ने मेरा जी पानी कर दिया।

जी पानी होना–१ करुणा से ओत-प्रोत होना। उ० कल के असहाय व्यक्तियो को देख कर जी पानी हो गया। २ शर्मिन्दा होना।

जी पिघलना–१ द्रवित होना। उ० तुम्हारा जी तो शायद कारुणिक दृश्यो पर भी नही पिघलता। २ बहुत जल्दी आकर्षित होना।

जी पीछे पडना–चित्त के बँट जाने से दुख भूल जाना। उ० आखिर कब तक अफसोस करोगे, कुछ काम-धाम करो जिसमे जी पीछे पडे।

जी फट जाना–१ प्रेम मे अन्तर पडना। उ० तुम्हारे व्यवहारो से जी फट गया। २ चित्त उदास होना। इस समाचार से जी फट गया।

जी फटना–दे० 'मन फटना'।

जी फड़क उठना–दिल एकाएक खुश हो जाना। उ० आज पाँच साल बाद तुमसे मिल कर जी फडक उठा।

जी फिर जाना–चाह न होना। चित्त हटना। उ० तुम्हारी ओर से मेरा जी फिर गया है।

जी फिरना—जी हट जाना। उ० उसके व्यवहार से मेरा जी फिर गया है, अब उससे बात भी न करूँगा।

जी फिसलना—मन मोहित होना। चित्त विचलित होना। उ० उसे देखते ही मेरा जी फिसल गया।

जी फीका होना—दे० 'जी खट्टा होना'।

जी बँटना—एकाग्रचित्त न होना। उ० पढते समय बोलने से जी बँट जाता है।

जी बद होना—घृणा होना, पसद न आना। उ० जब एक बार जी बन्द हो गया तो फिर कैसा प्रेम ?

जी बढना—साहस या उत्साह बढना। उ० यदि वह इस साल पास हो गया तो उसका जी बढ जाएगा।

जी बहलना या बहल जाना—१ आनन्द का सचार होना। मनोरजन होना। उ० नदी की ओर चले जाओ, जी बहल जाएगा। २ चित्त के बँटने से दु ख आदि भूल जाना। उ० आने-जाने से जी बहलता है।

जी बहलाना—१ मनोरजन करना। उ० जी बहलाने के लिए कभी क्रीडा-स्थल पर भी चले जाया करो। २ दे० 'जी बँटना।

जी बिखरना—दे० 'जी बँटना'।

जी बिगड़ना—१ अरुचि होना। उ० उसके फोडे देखकर जी बिगड गया। २ दे० 'जी ऊपर-तले होना'।

जी बुरा करना—१ दूसरो के विचार बदलना। उ० तुमने तो हरि का जी हमारी ओर से बुरा कर दिया है। २ वमन करना। उ० क्या खाए थे कि जी बुरा कर दिया। ३ घृणा उत्पन्न करना। उ० उसकी गदी बातो ने मेरा जी बुरा कर दिया।

जी बुरा होना या हो जाना—१ घृणा उत्पन्न होना। उ० उसे देखकर जी बुरा हो गया। २ किसी के प्रति बुरा भाव होना। ३ प्रसन्नता जाती रहना। ४ उदासी, रज या क्रोध आना।

जी बैठा जाना—१ उद्विग्नता होना। उ० आज तो उसके समाचार से जी बैठा जाता है। २ मूर्छा-सी आना। उ० शरीर मे इतना भी रक्त नही है कि चल सकूं, जैसे जी बैठा जाता हो। ३ उदास होना। उ० जाने क्यो जी बैठा जाता है, काम मे तबीयत ही नही लगती। ४. जोश या उत्साह का जाता रहना।

जीभ करना—धृष्टता से उत्तर देना। उ० इतना बडा हो गया और बडो से जीभ करता है। इसे कुछ भी तमीज़ नही।

जीभ काटना—दण्ड के कारण बोलती बन्द हो जाना।

जीभ के नीचे जीभ होना—कह कर बदल जाना, निश्चित न रहना। उ० स्टैम्प पर लिखो तो मानूंगा, नही तो तुम्हारे तो जीभ के नीचे जीभ है, कौन विश्वास करे ?

जीभ खोलना—मुंह से कुछ बोलना।

जीभ चलना—१ चटक-मटक खाने की इच्छा होना। २ बात करना। ३ शिकायत करना। उ० अच्छा, अब आपकी भी जीभ चलने लगी।

जीभ चलाना—१ शेखी मारना। उ० अपने बडो के सामने जीभ चलाना उचित नही है। २ बहुत बोलना।

जीभ थोडी करना—कम बोलना। उ० तुम हर समय बकते रहते हो, ज़रा जीभ थोडी करो।

जीभ दबा लेना—चुप्पी साधना।

जीभ पकडना—१ बोलने से रोकना। उ० उसके सामने कोई भी आये, सबकी जीभ पकड लेता है। २ हरा देना। उ० आज तो पडित जी ने उनकी जीभ खूब पकडी।

जीभ पर सरस्वती बसना—१ दैवी या आतरिक शक्ति के कारण विद्वान् होना। उ० उसका अध्ययन कुछ भी नही है, पर उसकी जीभ पर सरस्वती बसती हैं। २ कवि होना, आशुकवि होना।

जीभ बद करना—चुपचाप रहना। उ० जीभ बन्द करो, नही तो अब मार दूंगा।

जीभ बढाना—चटोरपन की आदत लगना।

जी भटकना—१ चित्त एकाग्र न होना। उ० कितना भी ध्यान लगाता हूँ, जी भटकने लगता है। २ अरुचि या घृणा होना। उ० गदे स्थलो को देख कर जी भटकने लगता है।

जीभ मे ताला पड़ना—कुछ भी न कह पाना।

जी भर आना—१ करुणा से द्रवित हो जाना। उ० उसकी दुख-भरी आवाज को सुन कर जी भर आता है। २ दुख के कारण आँसू निकल आना। उ० स्वय अपना पेशा देख कर मेरा जी भर आता है।

जी भर कर—दे० 'जी खोल कर'।

जी भरना—१ सतुष्ट होना। उ० अब मिठाई से जी भर गया है। २ मनोकामना पूर्ण होने पर प्रसन्नता या तृप्ति होना। उ० नौकरी मिल जाने पर ही जी भरेगा। ३ मन के मुताबिक होना। उ० गुडो से बातचीत करते हो, जाने कैसे तुम्हारा जी भरता है। ४. शका दूर होना। उ० अब तक कुछ सदेह था, परन्तु तुमसे बात करने पर जी भर गया।

जी भरभरा उठना—रोमाचित होना या विह्वल हो जाना। उ० नोआखली की घटनाओ को सुनकर जी आज भी भरभरा उठता है।

जीभ लपलपाना—१ चखने की इच्छा करना। उ० हर एक चीज़ के लिए उसकी जीभ लपलपाया करती है। २ चाहना, जी का आकर्षित होना। ३ काटने के लिए तैयार होना। उ० सांप जीभ लपलपा रहा है।

जीभ हिलाना—१ कुछ बोलना। उ० अगर ज़रा भी जीभ हिलाया तो बिना मारे न छोडूंगा। २ थोडी शिफ़ारिश करना। उ० तुम जीभ भी हिला दो तो मेरा काम बन जायगा।

जी भारी करना या कर देना—१ उदास होना। उ० यह तो ससार का ही काम है, क्यो जी भारी करते हो? २ बीमार करना, तबीयत खराब करना। उ० कल की तेल की पकौडियो ने मेरा जी भारी कर दिया।

जी भारी होना या हो जाना—१ तबीयत खराब होना। उ० रात की पूरी खाने से ही जी भारी हो गया है। २ गमगीन होना, चिंतित होना। उसकी बीमारी का समाचार सुनकर जी भारी हो गया है।

जी भुरभुराना—आकर्षित होना। उ० उसके नृत्य से जी भुरभुराने लगा।

जी मचलना—किसी वस्तु पर दिल आ जाना। उ० लगता है, इस साडी को देखकर आपका दिल मचल गया है।

जी मचलाना या मतलाना—१ मिचली आना, चित्त फरियाना, कै की इच्छा होना। उ० जाने क्यो जी मतला रहा है? २ घृणा होना। उ० उसका चेहरा देखकर मेरा तो जी मतलाता है।

जी मलमलाना—पश्चात्ताप करना। अफ़सोस होना। उ० जब कार्य सपन्न हो गया तो जी मलमला कर कोई क्या करेगा?

जी मारना—दे० "जी को मारना"।

जी मिचलाना—दे० "जी मचलाना"।

जी मिलना—१ अनुकूल प्रकृति का होना। उ० यदि तुम दोनो का जी मिल गया तो निभ जाएगी। २ हृदय की गुप्त बात का पता चलना। उ० किसी तरह उसका जी मिल जाय तो सारा काम बन जाय।

जी मे आना—१ ख्वाहिश होना। उ० जी मे आता है कि वहाँ चला जाऊँ। २ मन मे भाव होता। उ० जी मे आया और मैंने उसे कहानी का रूप दे दिया। ३ जँचना। उ० यह चीज़ मेरे जी मे नही आती। ४ हृदय मे स्थान पाना।

जी मे खुभना—दे० 'जी मे गडना'।

जी मे गडना—१ निश्चय हो जाना। उ० जी मे गड गया है, परीक्षा अवश्य दूंगा। २ हृदय मे चुभना। उ० उसके कटु शब्द जी मे गड गए हैं। ३ खूब प्रभाव करना। उ० नेहरू के भाषण के प्रत्येक शब्द जी मे गडे हैं। ४ हमेशा के लिए याद होना। उ० तुम्हारा पढाया जी मे गड गया, भूल नही सकता।

जी मे घर करना—१ सदैव याद बनी रहना। उ० तुमने तो मेरे जी मे घर कर लिया है। २ अच्छी तरह जम जाना। उ० उसकी बातो ने जी मे घर कर लिया है, अब भूल नही सकता। ३ हृदय मे बस जाना, हृदय मे जगह कर लेना। उ० उसके रूप ने तो जी मे घर कर लिया।

जी मे जलना—१ कुढन होना। उ० वह तो स्वजातियो की उन्नति देखकर जी मे जलता है। २ मन ही मन डाह करना। उ० मुझमे तो जी मे जलने की आदत है ही नही।

जी मे जी आना—मन की उद्विग्नता दूर होना। उ० जब हम लोगो ने उस जगल को पार किया, तब जी मे जी आया।

जी मे जी डालना—१ विश्वास जमाना। उ० जी मे जी डाल कर वह धोखा देता है। २

चिन्ता दूर करना । उ० तुम्हारी बातो ने जी मे जी डाला, नही तो मैं बहुत ही परेशान था ।

जी मे धरना–१. बुरा मानना । उ० उनकी बातो को जी मे न धरना, उनका तो स्वभाव ही ऐसा है । २ ध्यान मे रखना । उ० जरा इसकी पढाई को भी जी मे धरना, नही तो चौपट हो जाएगा । ३. याद रखना ।

जी मे धँसना–मन मे बैठना । उ० आप सब लोग समझा रहे है, पर यह बात मेरे जी मे नही धँस रही है ।

जी मे पैठना–दे० 'जी मे गडना' ।

जी मे बसना–दे० 'जी मे घर करना' ।

जी मे बैठना–१. निश्चय होना । उ० जी मे बैठ गया है, अब नही जाऊँगा । २ जँच जाना । उ० यह बात मेरे जी मे नही बैठती । ३. जी मे जगह करना, हृदय मे प्रवेश करना । उ० उसकी सूरत मेरे जी मे बैठी है ।

जी मे रखना–१. डाह रखना । उ० मैं तो कुछ भी जी मे नही रखता । २ छिपाए रखना । उ० कृपाकर ऐसी बातें जी मे रक्खा करो । ३ स्मरण रखना । उ० मेरी बातो को भी जी मे रखिएगा । ४ प्यार से हृदय के कोने मे रखना । उ० आप क्या जाने, उसे मैं जी मे रखता हूँ ।

जी रखना–१ मन रखना, इच्छा पूरी करना । उ० इतनी-सी तो वस्तु है, किस-किसका जी रक्खूँ । २ बात मानना । उ० वह मेरा जी रखता है, जो चाहे करवा ले ।

जी रुकना–हिचकिचाहट होना । उ० वहाँ जाने से जी रुकता है, क्या करूँ ।

जी लगना या लग जाना–१ आसक्ति होना । उ० जिससे जी लग जाता है, उसके दुर्गुण भी गुण ही लगते हैं । २ मन लगाना । उ० अब पढने मे जी नही लगता है । ३ दिल या जी का उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करना । उ० जी लगा है, वे आ जाते तो जाने के पहले देख लेता ।

जी लगाना–१ प्रेम करना । उ० जीवन है तो कभी न कभी किसी से जी लगाना ही पडेगा । २ मन लगाना, जुटना । उ० जी लगा कर पढो । ३ प्रतीक्षा करना । उ० जी न लगाओ, पता नही वे आएँगी या नही ।

जी लरजाना–डर जाना । काँपना । उ० साहब के सामने जाते ही उसका जी लरजाने लगता है ।

जी ललचाना–१ लालच होना, तरसना । उ० गरीबो के बच्चो का जी दूध के लिए ललचता है । २. जी का आकर्षित होना । उ० उसे देखकर कितनो का जी ललचता है ।

जी ललचाना–१. पाने के लिए लालायित होना । उ० क्या छोटी-छोटी चीज़ के लिए जी ललचाते हो ? २ आकर्षित होना । उ० उसके स्वरूप से जी ललचा गया ।

जी लुटना–चित्त मोहित होना । उ० उसके व्यवहारो से मेरा जी लुट गया । उसका अपूर्व रूप देखकर किसका जी नही लुटता ?

जी लुभाना–हृदय खिंचना । उ० इस चित्र को देखककर भला किसका जी नही लुभा जाएगा ? २ हृदय खीचना । उ० यह चीज़ तो जी लुभाती है ।

जी लूटना या लूट लेना–चित्त खीच लेना, मन मोहित कर लेना । उ० उसका सौन्दर्य किसका जी नही लूट लेता ?

जी लेना–१ रहस्य पा जाना । उ० उसने तो बात ही मे जी ले लिया । २ प्राण लेना । उ० किसी का जी लेना आसान काम नही है ।

जी लोटना–१. बडा दुख होना । जी मे खलबली होना। उ० उस घोडे के मर जाने से जी लोट रहा है । २ प्रसन्न होना । उ० उसे देखकर तुम्हारा जी लोटने लगता है ।

जीव गाढ़े पडना–प्राण सकट मे पडना । उ० इस वक्त तो अपना जीव गाढे पडा है, कभी फिर आना तो चलूँगा ।

जीवन का कार्य समाप्त हो जाना–मृत्यु को प्राप्त होना ।

जीवन की सध्या होना–जिन्दगी का अत निकट होना ।

जीवन भरना–जीवन के दिन पूरे करना । उ० किसी तरह जीवन भर रहा हूँ ।

जीवन भाररूप होना–जीवन कष्टमय होना, जीवन मे कोई आकर्षण न होना । उ० भार-रूप जीवन भयो, छिन-छिन जिय अकुलाय ।

जीवन भारी होना–जीवन मे आकर्षण न होना, जिंदगी बहुत दुखमय होना । उ० क्या करे, दो बच्चे हो गए और आमदनी कुछ भी नही है, बेचारे का जीवन भारी हो गया है ।

जीविका लगना–भरण-पोषण-का उपाय होना। नौकरी लगना। उ० किसी तरह जीविका लग गई।

जीविका लगाना–रोजी का उपाय करना। उ० कही जीविका लगा दें तो म यहाँ रह सकता हूँ, इस तरह बेकार क्या रहूँ?

जी सनसनाना–भयभीत या आशंकित होना। उ० आज की रात तो ऐसी है कि जी सनसना रहा है।

जी सन होना–होश-हवाश उड जाना। बहुत डर जाना। उ० शेर को देखते ही मेरा जी सन हो गया।

जी सायँ-सायँ करना–दे० जी सनसनाना'।

जी से उतर जाना–१ इच्छा न रहना। उ० चलो, जब जी से उतर गए, तब क्या कहना है? २ प्रतिष्ठा न रहना। उ० लोग अपने कार्यो से ही दूसरो के जी से उतर जाते हैं। ३ प्रेमपात्र न रहना, हृदय से निकल जाना। उ० विचित्र आदमी हो! अब वह भी तुम्हारे जी से उतर गई?

जी से करना–मन लगाकर करना। उ० कम ही काम करो, परन्तु जी से करो।

जी से जाना–मर जाना। उ० लडाई मे हजारो तो जी से जाते हैं, परन्तु नाम दो-चार का होता है।

जी से जी मिलना–आपस मे प्रेम होना। उ० जब जी से जी मिल जाय, तब सच्ची मित्रता जानो।

जी हट जाना–प्रेम न रहना, विरक्ति होना। इच्छा न रहना। उ० स्वय मेरे कामो से मेरा ही जी हट गया है।

जी हटाना–दे० 'दिल उठाना'।

जी हवा हो जाना–घबराहट होना। उ० उसकी मृत्यु सुन कर जी हवा हो गया। २ मर जाना।

जी हाथ मे रखना–१. किसी के विचारो को अपने प्रति अच्छा रखना। उ० मैं तो ऐसा काम करता हूँ कि अपने मालिक का जी सर्वदा अपने हाथो मे रखता हूँ।२ अपने वश या चगुल मे रखना। उ० उसका जी किसी भी तरह हाथो म रखो। ३ दिल दे देना। उ० मैंने तो अपना जी उनके हाथो मे रख दिया।

जी हारना–१ पस्तहिम्मत होना। उ० बार-बार की असफलता मे जी हार गया। २ दिल ऊब जाना। उ० तुम्हारी बक-बक से तो जी हार गया। ३ दिल देना, प्रेम करने लगना। उ० मैं तो जी हार चुका हूँ, अब यदि वह शादी करना चाहती है तो मैं भी इन्कार नही कर सकता।

जी हिलना–भय या दया से उद्विग्न होना। उ० उसके करुण शब्दो से जी हिल गया।

जी ही जी मे–अपने ही मन मे। उ० जी ही जी म मैंने समझ लिया, अब तुमसे क्या कहूँ?

जुंबिश खाना–हिलना-डोलना। उ० इतना हो गया, पर उसने जुंबिश तक न खाई।

जुआ हारना–दाँव खोना।

जुए को कधे से उतारना–दायित्व से मुक्त हो जाना।

जुग-जुग जीना–बहुत दिनो तक जीवित रहना। उ० जुग-जुग जियें जवाहरलाल।

जुग टूटना–१ मडली का तितर-बितर होना। २ जोडे का अलग-अलग होना।

जुगत लगाना–उपाय सोचना। युक्ति लगाना। उ० कोई जुगत लगाओ तो काम बने।

जुग फूटना–साथी का न रहना। दो साथियो मे एक का कही चला जाना या मर जाना। जोडी बिछुडना। उ० मेरा जुग फूट गया, अब मैं अकेले क्या करूँ?

जुटा देना–१ काम मे लगा देना। उ० नौकरो को काम मे जुटा दो, तो कही जाओ २ इकट्ठा कर देना।

जुम्मा-जुम्मा आठ दिन दुनियाँ मे आये होना–अनुभवरहित होना।

जुलाहे का गुस्सा दाढी पर उतारना–किसी का क्रोध किसी और पर उतारना।

जुल्म टूटना–बहुत बडी विपत्ति आना। उ० उस पर तो जुल्म टूट गया, अब वह क्या रह सकता है?

जुल्म ढाना–अत्याचार करना। उ० गरीबो पर तो जुल्म ढाना मनुष्यता के विरुद्ध है

जुल्ल देना–बहकाना, झाँसा देना। उ० जुल्ल न दो, मै बच्चा नही हूँ।

जुल्ल मे आना–धोखे मे आना। झाँसे मे आना। उ० वह तुम्हारे जुल्ल में आ गया।

जूँ न रेंगना–प्रभाव न होना।

जूठे हाथ से कुत्ता न मारना–बहुत कजूस होना। उ० जो जूठे हाथ से कुत्ता नही मारता, वह ग़रीवो को भोजन क्या देगा?

जूड़ी आना–डर जाना।

जूता उछालना–दे० 'जूता चलाना'।

जूता उठाना–१ मारने को हाथ मे जूता लेना। उ० उसने क्रोधित होकर जूता उठा लिया, पर फिर रुक गया। २ सेवा करना। उ० गरीबी के कारण वह सबका जूता उठाता फिरता है।

जूता चलना–जूते से मारपीट होना। उ० आज उन दोनो मे खूब जूता चला है।

जूता चलाना या चला देना–जूते से मारना। उ० थोडी-सी बात पर उसने जूता चला दिया।

जूता चाटना–१. अपनी इज्ज़त का कुछ भी ख्याल न करके दूसरों की सेवा करना। उ० वह तो अब जूता चाटता फिरता है। २ खुशामद करना। उ० तुमसे तो जूता चाटना भी बनता है, पर मैं तो वह भी नही जानता।

जूताचोर–छोटी-छोटी चोरी करने वाला। उ० कल कोई जूताचोर हमारा लोटा ही उठा ले गया।

जूता जड़ना–जूते से मारना। उ० उसने ऐसा जूता जडा कि चोर बेहोश हो गया।

जूता देना–दे० 'जूता जडना'।

जूता वरसना–जूते से मार खाना। उ० उस चोर पर इतने जूते वरसे कि वह वेहोश हो गया।

जूता वरसाना–जूते से खूब मारना। उ० उस वदमाश पर पुलिस ने खूब जूते वरसाये।

जूतियाँ उठाना–छोटी से छोटी सेवा करना। उ० कई साल तक मैंने ससार की जूतियाँ उठायी हैं, तव कही इस जगह पर पहुँचा हूँ।

जूतियाँ चटकाते फिरना–१ वेकार इधर-उधर घूमना। उ० क्यो दिन भर जूतियाँ चटकाते फिरते हो? क्यो नही कुछ काम करते? २ वुरी दशा मे कुछ प्राप्ति के लिए घूमना।

जूतियाँ चटकाना-वेकार इधर-उधर घूमना। उ० क्या दिन-रात जूतियाँ चटकाया करते हो?

जूतियाँ सिर पर रखना–१. वहुत सेवा करना। उ० अगर जूतियाँ सिर पर रखना पसन्द हो तो नौकरी करो। २ वेइज्ज़त करना। उ० मेरे सर पर जूतियाँ रक्खोगे तो मैं भी बाज़ नही आ सकता।

जूतियाँ सीधी करना–खुशामद करना। उ० नौकर को हर समय अपने स्वामी की जूतियाँ सीधी करनी पडती हैं।

जूती की नोक पर मारना–एकदम छोटा समझना। उ० तुम जैसो से वात कौन करेगा? तुम्हे तो मैं जूती की नोक पर मारता हूँ।

जूजो के तेल चुपडना–खुशामद करना।

जूती के वरावर न होना–एकदम तुच्छ होना। उ० मै तो उनकी जूती के वरावर भी नही हूँ।

जूती पर रख कर रोटी देना–१ निरादर से खाना देना। उ० उसके यहाँ कोई क्या जायगा? वह तो जूती पर रख कर रोटी देती है। २ निरादर के साथ कुछ देना।

जूती-पैज़ार होना–जूतो से लडाई-झगडा होना। उ० कल उन दोनो मे खूब जूती-पैज़ार हुई।

जूती वग़ल मे दवाकर भागना–जूते उतार कर विना किसी प्रकार का शब्द किए भागना। उ० जूती बगल मे दवाकर भागो, नही तो कोई भी जगा तो खैर नही।

जूते का आदमी–विना डर के काम न करने वाला। मार की डर से काम करने वाला। उ० मेरा नौकर जूते का आदमी है, विना मारे तो वह कुछ करता ही नही।

जूते के यार–दे० 'जूते का आदमी'।

जूते लगाना–जूतो से मारना। उ० उसे दस जूते लगाओ।

जूते से खवर लेना–जूते से मारना। उ० अगर फिर ऐसी शरारत करोगे तो जूते से खवर लूंगा।

जूतो मे दाल वँटना–लडाई-झगडा होना। उ० आज तो दोनो भाइयो मे जूतो मे दाल वँटी।

जूतो से आना–जूतो से मारना। उ० ज़रा सी गलती हो जाने पर वे जूतो से आते हैं। उनकी नौकरी भला कौन करेगा?

जूतों से खवर लेना–जूतो से मारना। उ० पुलिस ने चोर की जूतो से खूब खवर ली।

जूतो से बात करना–दे० 'जूतो से आना ।'

जेब कट जाना–पैसा खर्च होना ।

जेब खाली होना–धन का अभाव होना ।

जेब गरम होना–अत्यधिक लाभ होना, रिश्वत मिलना ।

जेब मे पडे रहना–वश मे होना ।

ज़ेर करना या करा देना–परास्त करना । उ० बात की बात मे ज़ेर कर दिया ।

जेल काटना–जेलखाने की सजा भोगना । उ० भगवान करे तुम्हारे ऐसे नीच को जीवन भर जेल काटना पडे ।

जेल की हवा खिलाना–१ जेल भेजना । उ० अगर जीता रह गया तो इसी महीने आपको जेल की हवा खिला दूँगा ।

ज़ेहन खुलना–मस्तिष्क का विकास होना । उ० १० वर्ष के बाद तो भी की ज़ेहन खुल जाती है ।

ज़ेहननशीन करना–दिल मे बैठाना । उ० लडको को चाहिये कि मास्टर जो कुछ भी कहे, उसे तुरन्त ज़ेहननशीन कर लें ।

ज़ेहन लडना–दिमाग लडना । उ० ज़रा भी ज़ेहन लडी तो प्रश्न हल हो जायगा ।

ज़ेहन लडाना–सोचना-विचारना । उ० ज़ेहन लडाओगे तो कुछ समझ मे आ ही जायगा ।

ज़ेहाद का झडा करना–विधर्मियो से लडना । उ० मुसलमान ज़ेहाद का झडा करने के लिए बहुत प्रसिद्ध हैं ।

जै-जैकार करना–सम्मान देना । उ० केवल देश मे नही, अपितु विदेशो की जनता भी नेहरू जी का जै-जैकार करती है ।

जैसे का तैसा होना–१ ज्यो का त्यो होना । उ० वैद्य की दवा से वह जैसे का तैसा हो गया । २ पहले ही जैसा होना । उ० बूढे होने पर भी वह जैसा का तैसा है । ३ न कम न बेश होना । उ० शर्बत तो जैसा का तैसा है । तुमने पीया भी या नही ?

जैसे को तैसा देना–जो जैसा हो, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना । उ० भगवान जैसे को तैसा देते हैं ।

जैसे चाहे नचाना–मनमानी करना । उ० मेरी है, जैसे चाहे नचाऊं, तुम कौन हो बीच मे बोलने वाले ।

जैसे बने–जिस तरह भी सभव हो । उ० जैसे बने तुम्हे यह काम करना ही पडेगा ।

जैसा बोना वैसा काटना–कर्म के अनुसार फल की प्राप्ति होना ।

जैसा सूखा सावन वैसा हरा भादो–हर स्थिति एक-सी होना ।

जैसे हो– दे० 'जैसे बने' ।

जो कहा जाए सो थोडा–वर्णनातीत होना ।

जोंक की तरह लिपटना–१ हर समय पीछे लगा रहना । उ० जोक की तरह लिपटने मे काम न होगा, होना होगा तो स्वय हो जायेगा । २ बुरी तरह लपटना ।

जोंक होकर लिपटना–दे० 'जोक की तरह लिपटना' ।

जोखिम उठाना–१ हानि उठाना । उ० मुझे व्यर्थ मे यह जोखिम उठाने से क्या प्रयोजन ? २ खतरे का काम करना । उ० तुम क्यो उसके लिए जोखिम उठाते हो ?

जोखिम मे जान होना–जान जाने का भय होना । उ० इस झगडे मे पडने से मेरी जोखिम मे जान है ।

जोखिम मे पडना–दे० 'जोखिम उठाना' ।

जोखिम सहना–दे० 'जोखिम उठाना' ।

जोग-छेम पूछना–दे० 'योग-क्षेम पूछना' ।

जोगी का बैल होना–व्यर्थ होना । उ० वह चीज़ तो तुम्हारे लिए जोगी का बैल है ।

जोगीडा गाना–गदी या अश्लील बात कहना ।

जोड़ उखड़ना–शरीर के किसी जोड का अपनी जगह से हटना ।

जोड का जोड मिलना–जैसे को तैसा मिलना । उ० उसे जोड का जोड मिल जाता तो उसकी सारी शरारत भूल जाती ।

जोड खाना–दे० 'जोडा खाना' ।

जोड़-जोड़ धरना–कंजूसी से रुपया इकट्ठा करना । उ० बेचारा जोड जोड धरे था, आज सब डाकू ले भागे ।

जोड-तोड करना–दे० 'जोड-तोड मिलाना, ।

जोड-तोड मिलाना–उपाय करना । उ० मैंने बहुत जोड-तोड मिलाया, पर काम न बन सका ।

जोड़ा खाना–पशुओ पक्षियो आदि का सभोग करना। उ० कौवे जोडा खा रहे हैं।

जोत से जोत मिलाना–आत्मा का ब्रह्म मे लीन हो जाना।

जोड़ा-पाडी का होना–एक उम्र तथा योग्यता का होना। उ० ये दोनों लडके जोडा-पाडी के है।

जोर करना–१ शक्ति लगाना। उ० थोडा और ज़ोर करो तो यह टूट जाय। २ कोशिश करना। उ० ज़ोर करो तो मैं भी प्रार्थना-पत्र भेज दूं।

जोर कराना–वडे पहलवानो का छोटे पहलवानो को लडाना।

जोर चलना–अधिकार होना। उ० यदि वहाँ मेरा ज़ोर चलेगा तो सब काम बन जायगा।

जोर देना–१ वोझ डालना। उ० अगर ज्यादा जोर दोगे तो यह चारपाई टूट जायगी। २ ताकत लगाना। उ० ज़ोर दो, शायद गाडी टसक जाय। ३ आवश्यक या महत्वपूर्ण वतलाना। ४ दवाव डालना। उ० ज़ोर देना तो वे अवश्य लिख देगे। ५ हठ करना।

ज़ोरदार होना–वहुत वढिया होना। उ० यह मेव तो वहुत जोरदार है।

जोर पकड़ना–प्रवल या वलवान होना। उ० अगर वीमारी ज़ोर पकड़ लेगी तो फिर कुछ न कर सकोगे।

ज़ोर वाँधना–दे० 'ज़ोर पकडना'।

जोर मारना–१ वल दिखाना। उ० यहाँ ज़ोर न मारो, नही तो ठीक कर दूंगा। २ ज़ोर लगाना। उ० ज़ोर मारो तो शायद उठ जाय। ३ कोशिश करना। उ० ज़ोर मारो तो काम हो जायगा।

ज़ोर लगाना–दे० 'ज़ोर मारना'।

ज़ोरो पर होना–पूरे वल पर होना। उ० मेरे गाँव मे आजकल प्लेग ज़ोरो पर है।

जोश खाना–१ उवलना, खौलना। २ क्रोधित होना। उ० वात भी तो सुनो। थोडा ही सुने और जोश खा गए। ३ जोश मे आना। उ० सुभाषचन्द्र के जीवन की कथाओ को सुनकर जोश खाना स्वाभाविक है।

जोश ठण्डा होना–उत्साह कम हो जाना।

जोश देना–१ उवालना। उ० दूध को जोश देकर पीया करो। २. भडकाना, उकसाना। उ० उसे तो तुमने ऐसा जोश दिया कि वह मेरे यहाँ आकर गाली देने लगा।

जोश मे आना–१ गुस्से मे हो जाना। उ० वह मुझे देखते ही जोश मे आ जाता है। २ [illegible]।

जोश मे लाना–१ भडकाना, क्रोधित करना। उ० उसे जोश मे न लाओ, नही तो लड पडेगा। २ उवालना। उ० दूध को जोश मे लाओ।

जौ-जौ हिसाव लेना–कौडी-कौडी का हिसाव देखना। उ० हिसाव ठीक से रखना, मैं जौ-जौ का हिसाव लूंगा।

जौहर खुलना–१ भेद प्रकट होना। उ० अव जौहर खुला है कि यह कैसा आदमी है। २ खूवी या गुण का स्पष्ट होना। उ० जौहर खुलने पर तुम भी उसकी इज्जत करोगे।

जौहर खोलना–खूवी दिखाना। उ० कुछ अपना जौहर भी खोलो या केवल वात ही करते हो।

जौहर दिखाना–दे० 'जौहर खोलना'।

जौहर होना–विशिष्ट रीति से राजपूत स्त्रियो का जल मरना। उ० मध्य युग मे राजपूतो की स्त्रियो मे जौहर होने का वडा प्रचलन था।

ज्ञान छाँटना–१. व्यर्थ मे विद्वान् वनना। उ० तुमको कुछ आता-जाता है ही नहीं, ज्ञान क्या छाँट रहे हो। २. उपदेश देना। उ० ज्ञान कही और जाकर छाँटिए।

ज्ञान झाड़ना–दे० 'ज्ञान छाँटना'।

ज्ञान दौड़ाना–खूव सोचना-विचारना। उ० ज्ञान दौडाओ तो शायद समझ जाओ।

ज्योति जगाना–ज्ञान कराना। उ० सन्यासी ने मेरे हृदय मे ज्योति जगा दी।

ज्यौनार वैठना–अतिथियो का भोजन करने वैठना।

ज्यौनार लगाना–भोजन की तश्तरियो को सजाना।

ज्वर उतरना–वुखार का जाता रहना।

ज्वर उतारना–१ मार या डाँट कर क्रोध शांत करना। उ० मै अभी तुम्हारा ज्वर उतारता हूँ। २. खूव मारना।

ज्वर चढ़ना–१ ज्वर हो आना। २ क्रोध

चढना, गुस्सा आना । उ० तुम्हें देखता हूँ तो मुझे ज्वर चढ आता है ।

ज्वाला फूंकना—शरीर मे वहुत गर्मी होना ।

ज्वालामुखी होना—क्रोध से लाल होना । उ० आप ज्वालामुखी क्यो हो रहे हैं, भला मैंने आपका क्या बिगाडा है ?

झ

झंख मारना—दे० 'झख मारना' ।

झंखाड होना—बुड्ढा होना । अधिक उम्र का होना । उ० झखाड हो गये और अब शादी करने चले हैं ।

झंझट उठाना—दिक्कतो का सामना करना, प्रपच में पडना । उ० बहुत झझटें उठा कर मैंने यहाँ तक पढा है ।

झंझट मोल लेना—जान कर झगडे मे पडना । उ० क्यो झझट मोल लोगे ? उन्होने तुम्हारे लिये किया क्या है ?

झंझट खड़ा करना या कर देना—१ पाखड करना । उ० क्या झडा खडा कर रहे हो, तुमको सब लोग जानते हैं । २ अधिकार मे करना । उ० गाधी की बुद्धिमत्ता से काग्रेस ने भारत मे अपना झडा खडा कर दिया । ३ सैनिकों को बुलाने के लिए झडा ऊँचा करना । ४ राज्य स्थापित करना ।

झंडा गाड़ना—अच्छी तरह अधिकार मे करना । उ० चीन मे साम्यवादियो ने झडा गाड दिया है ।

झडा फहराना—१ राज्य-चिह्न-स्वरूप झडा गाडना । उ० भारत पर लगभग २५० वर्षों तक अँग्रेजी झडा फहराता रहा । २ पूर्णत अधिकार मे रहना । उ० चीन पर कम्युनिस्ट झडा फहरा रहा है ।

झंडी दिखाना—१ अवसर पर नाहीं करना । उ० मैंने आज तक किसी को झडी नहीं दिखायी । वक्त पर झडी मत दिखला देना । २ झडी से इशारा करना । उ० स्काउट झडी दिखाना सीखते हैं । ३ स्टेशनो पर गाडी के रुकने या जाने के लिये झडी से सकेत करना ।

झंडे तले आना—१. युद्ध मे किसी का पक्ष लेना । उ० अँग्रेज़ अमेरिकनो के झंडे के तले आ गए हैं । २ सगठित होना । उ० अगर भारत झडे तले न आता तो उसे कभी स्व-राज्य न मिलता ।

झडे-तले की दोस्ती—सफरी जान-पहचान । उ० ट्रेनो मे झडे-तले की दोस्ती प्राय हो ही जाती है ।

झंडे पर चढना—बडा बदनाम होना । उ० ऐसे कामो मे बिना झडे पर चढे सफलता नही मिलती ।

झंड़े पर चढाना—बदनाम करना । उ० चलो हटो, तुमने मुझे वहाँ ले जाकर झडे पर चढा दिया ।

झंप देना—कूदना । उ० मैं झप देकर नीचे जा सकता हूँ ।

झक चढना—दे० 'झक सवार होना' ।

झक-झक करना—१ व्यर्थ की हुज्जत करना । उ० क्यो झक-झक करते हो अपने, घर जाओ । २ झगडा करना ।

झक सवार होना—ज़िद चढना । धुन होना । किसी काम को कर डालने का हठ होना या धुन होना । उ० हर चीज के लिए झक सवार होना ठीक नही है । तुम्हें झक सवार होती है तो किसी की सुनते ही नही ।

झक समाना—दे० 'झक सवार होना' ।

झकोले खाना—गोते खाना । कभी पानी मे डूबना, कभी ऊपर आना । उ० कोई मैं निकलता हूँ दरियाये गम से, झकोले अभी इसमे खाने बहुत हैं ।

झक्कड़ चलना—ज़ोर की आँधी चलना ।

झख मारना—१. विवश होना । उ० झख मार कर मुझे रुपया देना ही पडा । २ समय व्यर्थ गँवाना । उ० दिन भर तुम्हारी प्रतीक्षा मे झख मारता रहा ।

झखमरी करना—१ व्यर्थ का काय करना, २ व्यर्थ समय खराब करना ।

झगड़ा-झझट—लडाई-झगडा । उ० यहाँ झगडा-झझट न करो ।

झगडा-टंटा—झगडा-झझट । उ० झगडा,-टटा यहाँ न करो ।

झगडा पाक होना–१. झगडे का निर्णय होना। उ० विना झगडा पाक हुए मैं कही नही जाऊँगा। २. झगडा समाप्त होना।

झगडा समेटना–झगडे को खतम करना। उ० किसी तरह झगडे को समेटो, नही तो कुशल नही है।

झझक निकलना–सकोच या शर्म दूर होना। उ० शर्माते क्यों हो, आने-जाने से ही झझक निकलती है।

झझक निकालना–भय या हिचक मिटाना। उ० दो-चार बडे आदमियो से मिला कर इसकी झझक निकाल देना ही उचित है।

झटक कर १. झटका देकर। उ० इस तरह झटक कर न खीचा करो, कही पखा निकल जाय तो। २. जबर्दस्ती से। उ० सारे रुपये उसने मेरे हाथ से झटक कर ले लिये। ३. चुरा कर। उ० मालूम होता है कि यह साइकिल कही से झटक कर लाई गई है। ४ क्रोध और रुखाई से।

झटकना–धोखे से या चालबाजी से लेना। उ० वम्बई मे श्याम के सब पैसे किसी ने झटक लिये।

झटका उठाना–विपत्ति सहन करना। [illegible] मा[illegible] शनि के [illegible] से हमने बहुत झटके उठाये।

झटका खाना–१ दे० 'झटका उठाना'। २ डाँटा या डपटा जाना। उ० आज सवेरे ही एक झटका खाना पडा। ३ मास खाना। उ० तुम झटका खाते हो या नही?

झटका झेलना–१. थोडे दिन के लिए कष्ट उठाना। उ० जहाँ यह झटका झेला कि फिर साल भर निश्चिन्त हो जाओगे। २ आक्रांत होना तथा सहना। उ० इधर रोगो के मुझे अनेक झटके झेलने पडे।

झटके का माल–चोरी से मिला हुआ। उ० तुम्हारे पास झटके का माल खूब आता है।

झटपट–तुरन्त, जल्दी ही। उ० काम पर झटपट आ जाओ।

झट से–तुरन्त, फौरन। उ० जाकर झट से उनका मकान देख आओ।

झडप होना–कहा-सुनी हो जाना।

झड बांधना–१ बातो का पुल बाँधना। उ० झूठे झड बाँधना कुछ ही लोगो को आता है। वह ऐसा झड बाँधता है कि सुनने वाले स्तब्ध रह जाते हैं। २. घुमा-फिरा कर इस प्रकार बातें करना कि सुनने वाले प्रभावित होकर बोलने वाले के अनुकूल हो जायँ। उ० उस दिन तो तुमने ऐसा झड बाँधा कि उन्होंने दे ही दिया।

झडबेरी का काँटा–बडा झगडालू व्यक्ति। उ० उस झडबेरी के काँटे से मैं नही बोल सकता।

झडी बांधना–किसी चीज की अनेक पुनरावृत्ति करना। उ० रामचरितमानस मे तो कहीं-कही तुलसी ने रूपकों की झडी बांध दी है।

झडी लगना–लगातार वर्षा होना। उ० तीन दिन से झडी लगी हुई है, बन्द होने का नाम नही लेती।

झडी लगाना–दे० 'झडी बाधना'।

झपकी खाना–नीद मे ऊँघ-ऊँघ कर गिरना। उ० क्या झपकी खा रहे हो, जाओ सोओ।

झप खाना–पतग का पीठ के बल गिरना। उ० आज हमारी पतग झप खा गई।

झपट लेना–दे० 'झपट्टा मारना'।

झपट्टा मारना–झटके से ले लेना। उ० कौवे ने [illegible] झपट्टा मार [illegible] नो।

झपेट मे आना–१. धक्का लगना। उ० रिक्शे की झपेट मे आने से वह गिर पडा। २. किसी रोग आदि से प्रभावित होना। उ० विशूचिका की झपेट मे मेरे घर के लोग भी आ गए थे। ३ चपेट में आना।

झपेटे मे आना–दे० 'झपट मे आना'।

झमेले मे फँसना–१. झझट मे पडना। उ० औरतो के झमेले मे फँसना बडा बुरा होता है। २ काम मे फँसना। उ० आजकल झमेले मे फँसा हूँ, फिर कभी आ जाऊँगा।

झराझर रुपये बरसना–खूब आय या लाभ होना। उ० आजकल चीनी के व्यापार मे झराझर रुपये बरस रहे हैं।

झाँई आना–सिर मे चक्कर आना।

झाँई-झप्पा–धोखा-धडी। उ० झाँई-झप्पासे काम न चलेगा।

झाँई बताना–१. छुप कर जाना। उ० जब से उसने रुपया लिया, हमेशा झाँई बता कर निकल जाता है। २ चालबाजी चलना। धोखा देना। उ० सीधी बात करो, हमे झाँई न बताओ।

झाँई-माई होना–दृष्टि से लुप्त होना । उ० कहो इतने दिन तक कहाँ झाँई माँई-हुए थे ? आखिर इतनी जल्दी वह कहाँ झाँई-माई हो गया ?

झाँकने भी न आना–कोई खबर न लेना ।

झाँट उखाडना–१. व्यर्थ मे समय गँवाना । २ कुछ कर सकना । (यह ग्राम्य और अश्लील प्रयोग है ।)

झाँट गिनना–दे० 'झाँट उखाडना' ।

झाँट बराबर–तुच्छ ।

झाँव-झाँव होना–झगडा या कहा-सुनी होना ।

झाँवर होना–काला पड जाना । उ० बीमारी से बेचारे का मुँह झाँवर पड गया है ।

झाँवली देना–आँखो से सकेत करना । उ० सभा मे झाँवली दे देना । हम समझ जाएँगे ।

झाँवली में आना–धूर्तता की बातो मे फँसना । धोखे मे आना । उ० तुम्हारी झाँवली मे आने पर १०० क्या वह १००० देगा ।

झाँसा देना–१ बहकाना । मुझे झाँसा न दो, मेरे बाल धूप मे नही पके हैं । २ धोका देना । उ० उस दिन उसने ऐसा झाँसा दिया कि तुम जैसा पढा-लिखा भी फँस गया । ३ बात-चीत करके टरका देना । उ० जब भी माँगने जाता हूँ, वह झाँसा दे देता है ।

झाँसा-पट्टी पढाना–दे० 'झाँसा देना' ।

झाँसा पढाना–दे० 'झाँसा देना' ।

झाँसा बताना–दे० 'झाँसा देना' ।

झाँसा-बुत्ता देना–दे० 'झाँसा देना' ।

झाँसे मे आना–दे० 'झाँवली मे आना' ।

झाग फेंकना–बेहोशी आदि मे मुँह से गाज फेंकना ।

झाड़ का काँटा–लडने या उलझने वाला आदमी । उ० उससे न लगो, वह झाड का काँटा है ।

झाड़-झटक कर–किसी तरह, माँग कर या चोरी-चमारी कर । उ० झाड-झटक कर वह हर साल दो-चार सौ लाता ही है ।

झाड़ देना–१ घुडकी देना । उ० चलो तुम्हारे झाड देने से मैं नही डरता । २ कूँचे से साफ करना । उ० आज कमरे को झाड देना । ३. बातो द्वारा बहकाने या फँसाने की कोशिश करना । उ० आज तो मैंने ऐसा झाड दिया कि वे तुरन्त राजी हो गए ।

झाडना-झटकना–१ अपना बाकी किसी के पास से ले लेना । उ० झाड-झटक कर आज किसी तरह अपना ले पाया । २ डाँटना-फटकारना । उ० बहुत झाडना-झटकना नही, नही तो बिगड जायगा ।

झाड़-पोंछ कर देखना–अच्छी तरह परख करना । उ० झाड-पोंछ कर देख लो, नही तो पीछे से हम नही लौटाएँगे ।

झाड-फटकार कर चल देना–सर्वस्व छोड कर चले जाना ।

झाड-फानूस लगाना–बहुत सजावट करना । उ० क्या इस गिरे घर मे झाड-फानूस लगा रहे हो ?

झाड़-फूंक करना–मन्त्र से प्रेत आदि की बाधा दूर करना । उ० दवा करो, झाड-फूंक करने से वह अच्छा नही हो सकता ।

झाड बाँधना–१ बहुत बरसना । उ० पिछले वर्षों की तरह इस साल वर्षा ने झाड नही बाँधा । २ बात का पुल बाँधना, बातचीत कर बहकाना या धोखा देना । उ० झाड बाँध कर उसने अपना काम कर लिया । ३ व्यर्थ मे रोब दिखाना ।

झाड लेना–जो मिले उसे छीन लेना । उ० उसके पास तो केवल दो ही रुपये थे, मैंने वही झाड लिये ।

झाड होकर लिपटना–बुरी तरह फँसना या लपेटना । उ० वह तो झाड होकर लिपट जाता है, उससे कौन बोले ?

झाडा-झटका होना–पाखाना आदि होना । उ० जल्दी झाडा-झटका होकर तैयार हो जाओ-नही तो देर होगी ।

झाडा फिरना–पाखाना होना । उ० मैं झाडा फिरने जा रहा हूँ ।

झाडा लेना–नगाझोरी करना । उ० फैक्टरी से निकलते ही सबका झाडा लिया जाता है ।

झाड़ू फिरना–१ अच्छी तरह बरबाद से जाना । सफाई हो जाना । उ० इस मुकदमे मे हमारे पर तो अच्छी तरह झाड़ू फिर गया । २. बेइज्जत होना । उ० मेरे ऊपर तो झाड़ू फिर गया ।

झाड़ू फेरना–१ नष्ट-भ्रष्ट करना । उ० सन् ४२ मे पुलिस ने मेरे गाँव पर झाड़ू फेर दिया । २ बेइज्जत करना । उ० क्यो बेचारे पर झाड फेरते हो ?

झाड़ू मारना–१. तिरस्कार करना, घृणा करना। २ दूर हटाना। उ० झाड़ू मारो ऐसे आदमी पर।

झाड़ू लेकर पीछे पड़ना–अत्यधिक परीशान करना।

झाड़ू से बात करना–कर्कशा होना, लड़ना-झगड़ना। उ० वह तो हमेशा झाड़ू से ही बात करती है।

झापड़ कसना–थप्पड़ से मारना। हमने आज उसको अच्छा झापड़ कसा।

झापड़ देना–दे० 'झापड़ कसना'।

झापड़ लगाना–दे० 'झापड़ कसना'।

झार बरसना–अग्नि की लपट उठना। उ० हवा के झोको से आग मे झार बरसता है।

झार सहना–१. कड़ाई सहना। झझक सहना। उ० सहही न जाने ला हरदिया का झार हो। २ क्रोध सहना।

झिझक मिटना–दे० 'झझक निकलना'।

झिड़की देना–डाँटना-डपटना। उ० तुम ता लडको को हमेशा झिडकी देते हो, यह उचित नही है।

झिलंगा उठना–होली आदि के तमाशे का जलूस उठना।

झींसी पड़ना–बूंदाबांदी होना। थोड़ा-थोड़ा पानी बरसना। उ० झीसी पड रही है, कपड़े उठा लो।

झीर-झीर होना–दे० 'पारा-पारा होना'।

झुड का झुड–अधिकता से। उ० मेले मे झुड के झुड चले आये हैं।

झुड मे रहना–गिरोह या मडली मे रहना। उ० ठग झुड मे रहते हैं।

झुक जाना–मर जाना। उ० उनका लडका आज झुक गया।

झुक-झुक पडना–१ नशे मे चूर होकर झूमना। उ० वह शराब के नशे मे झुक-झुक पडता है। २ नीद के कारण झूमना।

झुरमुट मारना–पोशाक पहन कर अपने को छिपाना। उ० आज के नाटक मे तो तुमने अच्छा झुरमुट मारा था।

झूठ के पुल बांधना या बांध देना–बहुत झूठ बोलना। उ० उसने तो आज झूठ का पुल बांध दिया।

झूठ-सच कहना–१. शिकायत करना। उ० तुमने मेरे विषय मे तो कुछ झूठ-सच नही कहा है? २ बेकार की बातें करना।

झूठा ठहरना–असत्य सिद्ध होना। उ० उसकी बात झूठी ठहरी।

झूठा निकलना–दे० 'झूठा ठहरना'।

झूठा पडना–झूठा सिद्ध होना। उ० यदि उसने न स्वीकार किया तो तुम अवश्य ही झूठे पड़ोगे।

झूठी गंगा मे तैरना–झूठ मे पटना।

झूठों का बादशाह–बहुत झूठा। उ० तुम झूठो के बादशाह का विश्वास तो अनजान ही करेगा।

झूठो न पूछना–भूल कर भी न पूछना, बिल्कुल न पूछना।

झूठो मुंह न छुवाना–नाम को भी न पूछना। उ० रूठा जो रकीब उसे मनाने आए। और आए भी यूं कि कोई जाने आए। और हम जो रूके तो हमसे बिगड़े, झूठो भी कभी मुंह न छुवाने आए।

झूम-झूम कर–१ मस्त होकर। उ० हाथी झूम-झूम कर चल रहा है। २ हिल-हिल कर, कंपित होकर।

झूला मार जाना–लकवा मार जाना, फालिज गिर जाना। उ० हम के हम दामे मुहब्बत मे न छूटे नाज़नाज, जुल्फ के झूले ने मारा दिल शिकन मे रह गया।

झेंप जाना–लजा जाना। उ० यह तुम्हे देखते ही झेंप जाता है।

झोक टालना–दे० 'झोंक देना'।

झोंक देना–१ अधिक डालना। उ० इतना नमक क्यो झोक दिया है? २ बुरी जगह फेंकना। उ० लडकी का विवाह क्या किया, उसे झोंक दिया।

झोंक मारना–डडी मार कर कम तौलना। उ० झोंक मारने से थोडे कोई धनी होता है।

झोक मे–आवेश मे।

झोका खाना–१ झटका खाना या आवेग सहना। उ० क्यो नीद के झोके खाते हो, जाओ सोओ। २. बहुत बड़ी आफत या रोग का झटका सहना।

झोंके आना–१ नींद आना। उ० मुझे अब झोंके आ रहे हैं। २ नशा के कारण झपकी आना।

झोंके मारना–खुजलाहट होना। चूल होना।

झोटा खसोटना–सिर के बाल खींचना।

झोटा-झोंटी होना–लडाई-झगडा होना। उ० उन दोनो मे रोज ही झोटा-झोटी होती है। [इसका प्रयोग स्त्रियो की लडाई के लिये होता है।]

झोटा देना–झूला मे अधिक वेग से चलने के लिए झटका देना। उ० झोटा दो तो और आनन्द आये।

झोटा पकड कर घसीटना–बाल पकड कर निरादर से निकालना। उ० अधिक बोलोगी तो झोटा पकड कर घसीटूंगा। [इसका प्रयोग स्त्रियो के लिए किया जाता है।]

झोटा पकड कर निकालना–दे० 'झोटा पकड कर घसीटना'।

झोटा मारना–दे० 'झोटा देना'।

झोपडे मे आग लगना–भूख लगना। उ० झोपडे मे आग लगी है। [इसका प्रयोग फकीर लोगो की भाषा मे होता रहा है।]

झोल की बात–अस्पष्ट या गडबड बात।

झोल डालना–सिकुडन डालना। उ० कपडा बचाने के लिऐ दर्जी झोल डालते हैं।

झोल देना–भुलवाना, पट्टी पढाना। उ० मुझे झोल न दो, मैं बच्चा नही हूँ।

झोल निकालना–बच्चे पैदा करना। उ० आजकल के भारतवासी भी खूब झोल निकाल रहे हैं।

झोल बैठाना–मुर्गी को सेने के लिए अडा देना। उ० अभी कल ही तो झोल बैठाया।

झोल मारना–१ बहकाना। उ० मैं जानता हूँ, मुझे न झोल मारो। २ दे० 'झोक मारना'।

झोली उठाना–दे० 'झोली डालना'।

झोली छोडना–१ बुढापा आना। उ० अब तो आप झोली छोड रहे हैं। २ मास बढना। उ० आजकल तो झोली छोडने लगे हो ?

झोली डालना या डाल लेना–भीख माँगने के लिये झोली तक निकालना। उ० कुछ सहारा न देखकर बेचारे ने झोली डाल ली।

झोली पडना–अँधेरा होना, किरन डूबना। उ० झोली पडने के बाद उधर कभी न जाना।

झोली भरना या भर देना–१ भिक्षा देना। उ० साधु की झोली भर दो। २ भर पेट खाने को देना। उ० भूखा है, उसकी झोली भर दो।

झौंड़ होना–कहा-सुनी होना।

झौवा भर–बहुत ज्यादा। उ० झौवा भर साग क्या होगा ?

ट

टँगडी (टँगरी) पर उडाना–कुश्ती मे लग मार कर गिराना। उ० यह छोटा पहलवान टँगडी पर खूब मारता है।

टच होना–१ भर पेट खा लेना। उ० मैं तो अब टच हो गया, मुझे कुछ नही चाहिए। २ निश्चित होना। ३ भरा-पूरा होना। ४ तैयार होना।

टट-घट करना–पूजा-पाठ का आडबर करना। उ० क्या टट-घट करते हो। ईश्वर इससे नही रीझते।

टट-घंट फैलाना–दे० 'टट-घट करना'।

टंटा खडा करना–झगडा खडा करना। लडाई-झगडा करना। उ० वह जहाँ भी जाता है, टटा खडा कर देता है।

टंटा नचाना–दे० 'टटा खडा करना'।

टकटक देखना–दे० 'टकटकी बाध कर देखना'।

टकटकी बँधना–दृष्टि स्थिर होना। एकटक देखना। उ० उसकी तो इसे देखने के लिए टकटकी बँध गई।

टकटकी बाँध कर देखना–बिना पलक गिराये देखना।

टकटकी लगना–दे० 'टकटकी बँधना'।

टकटकी बाँधना–स्थिर दृष्टि से देखना।

टक बँधना–दे० 'टकटकी बँधना'।

टकराते फिरना–इधर-उधर बेकार या मारा-मारा घूमना। उ० क्यो टकराते फिरते हो, कुछ काम नही है क्या ?

टक लगाना–१ आशा देखते रहना। उ० तुम मेरी तरफ क्या टक लगाये हो, मुझसे कुछ भी नही मिलेगा। २. एकटक से देखना।

टकसाल का खोटा—१ बुरा नीच, जन्म से ही बुरा। उ० वह टकसाल का खोटा है, उसे कोई क्या सिखायेगा। २ न चलने वाला सिक्का।

टकसाल चढ़ना—१ पक्का शरारती होना। उ० मेरा छोटा लड़का टकसाल चढ़ चुका है, अब वह ठीक नहीं हो सकता। २ बेहया होना। उ० इतना टकसाल न चढ़ो, नहीं तो मुँह दिखाना भी कठिन होगा। ३ विद्वान् समझा जाना। उ० वह तो सभी की नजरों में टकसाल चढ़ा है।

टकसाल-बाहर—१ खराब सिक्का। उ० टकसाल-बाहर सिक्का अपने पास रखना जुर्म है। २ वह शब्द या वाक्य जिसे बोलना शिष्ट न माना जाय। उ० टकसाल बाहर शब्द बोलना अशिष्टता है।

टकसाली जबान—दे० टकसाली भाषा'।

टकसाली बात करना—संतुलित बात करना। उ० वह सचमुच भारी विद्वान् है, जो भी विषय सामने रक्खो टकसाली बात करता है।

टकसाली बोली—दे० 'टकसाली भाषा'।

टकसाली भाषा—सर्वसम्मत भाषा, विद्वानों द्वारा आदर्श मानी गई भाषा। उ० टकसाली भाषा में कम लोग लिख पाते हैं।

टका पास न होना—बहुत गरीब होना। पास में एक पैसा भी न होना। उ० मित्र! टका पास नहीं है, अगर कुछ दे देते तो काम चलता।

टका भर-थोड़ा-सा, जरा सा। उ० वह ऐसा कंजूस है कि कुछ टका भर भी देने में हिचकता है।

टका-सा जवाब देना—१ तुरन्त साफ इन्कार कर देना। उ० उससे कोई भी चीज माँगो, टका-सा जवाब दे देता है। २ स्पष्ट अनभिज्ञता प्रकट करना। उ० कोई भी बात पूछो, वह टका-सा जवाब देता है।

टका-सा मुँह लेकर रह जाना—छोटा-सा मुँह लेकर रह जाना। देखता रह जाना। उ० साँगा को बाबर से बड़ी आशा थी परन्तु जब वह राज्य करने लगा तो साँगा टका सा मुँह लेकर रह गए।

टका-सी जबान हिलाना—१ तुरन्त कह देना। उ० टका-सी जबान हिलाने में क्या लगता है, जब करना पड़ेगा तब मालूम होगा। २ जरा-सा कह देना। उ० टका-सी जबान हिलाने में तुम्हें क्यों आपत्ति है?

टका सी जान—अकेला दम।

टकिहाई होना—टके का या तुच्छ होना।

टके का होना—बहुत मामूली होना।

टके को न पूछना—प्रतिष्ठाहीन होना।

टके गज की चाल—कम व्यय में गुजर करना। उ० हम गरीब आदमी आप लोगों की बराबरी क्या करेंगे, हम तो टके गज की चाल चलते हैं।

टके गिनना—रोजी का हिसाब करना। उ० क्या टके गिनते हो, बहुत होगा चार आने।

टके-टके को मुँह ताकना—अत्यधिक गरीब होना।

टके पर लौटना—असलियत पर वापस आना। उ० चार दिन में ही टके पर लौट आये।

टके में तीन-तीन मिलना—अधिकता होना। उ० आजकल मैट्रिक पास टके में तीन-तीन मिलते हैं।

टके-सी जान—अकेला। उ० उनका क्या है, टके-सी जान है, जहाँ भी रहेंगे, खुश रहेंगे।

टके सेर बिकना—बहुत सस्ता बिकना। उ० आजकल गोभी टके सेर बिक रही है।

टक्कर का—समान, तरह। बराबरी का। उ० आजकल उसकी टक्कर का कोई भी पहलवान इधर नहीं है।

टक्कर खाना—१ मारा-मारा फिरना। उ० वह महीनों से नौकरी के लिये टक्कर खा रहा है, पर कहीं ठिकाना नहीं लगता है। २. कोशिश करना। उ० अनेकों टक्कर खाया, पर उसने सुनी-अनसुनी कर दी। ३ किसी चीज का धक्का लग गया। उ० दीवार से टक्कर खाकर मोटर टूट गई।

टक्कर झेलना—१ कष्ट सहना। उ० टक्कर झेलने के बाद ही सुख मिलता है। २. नुकसान उठाना। उ० इस साल वर्ष भर टक्कर झेलना पड़ा।

टक्कर मारना—१ परिश्रम करना। उपाय लगाना। उ० कितना भी टक्कर मारो, यह काम तुमसे नहीं होगा। २ सोचना-विचारना। उ० बहुत टक्कर मारा, पर समस्या हल न हुई। ३ चोट पहुँचाने के लिए कपाल लड़ाना। उ० वह बड़े जोर का टक्कर मारता है।

टक्कर लगाना–सामना करना । मुक़ाबिले मे आना । उ० विद्वत्ता मे उसका टक्कर कोई नही लगा सकता ।

टक्कर लड़ाना–दो आदमियो का आपस मे सिर से धक्का मारना ।

टक्कर लेना–१ दे० 'टक्कर लगाना' । २ बराबर होना । उ० यह किताब उस किताब से टक्कर लेती है । ३ आघात सहना । उ० टक्कर न लो, चले जाओ । ४ झगडा करना । ५ जैसे को तैसा उत्तर देना ।

टट्टर देना–झोपडी आदि का किवाड देना । उ० टट्टर दे दो, नही तो झोपडी मे कुत्ता चला जायगा ।

टट्टर लगाना–दे० 'टट्टर देना' ।

टट्टी कमाना–पाखाना साफ करना, टट्टी की सफाई करना । उ० उस शहर मे तो टट्टी कमाने वाले भी नही मिलते ।

टट्टी का शीशा–पतला शीशा । उ० यह तो टट्टी का शीशा है, यहाँ काम न करेगा ।

टट्टी की आड़ मे शिकार खेलना–१ आड से किसी के खिलाफ चालबाज़ी चलना । उ० मैं जानता हूँ कि टट्टी की आड मे शिकार खेलने वाले बहुतेरे हैं । कोई मेरे सामने आये तो बताऊँ । २ चुपके से कोई बुरा काम करना । उ० क्या टट्टी की आड मे शिकार खेलते हो, जानते हो इसका नतीजा क्या होगा ?

टट्टी की ओट मे शिकार खेलना–दे० 'टट्टी की आड मे शिकार खेलना' ।

टट्टी मे छेद करना–बेहया बनना । लोक-लाज छोड देना । उ० क्यो टट्टी मे छेद कर रहे हो, इससे तुम्हारी ही बदनामी होगी ।

टट्टी लगाना–१ परदा करना । आड करना । उ० पाखाने की टट्टी लगा दो । २ मजमा लगाना । उ० दूकान के सामने टट्टी न लगाओ ।

टट्टी समझना–तुच्छ समझना । उ० मैं आपके रुपयो को टट्टी समझता हूँ ।

टट्टी होना–दे० 'मैदान होना' ।

टट्टू पार होना–मतलब निकल जाना । उ० टट्टू पार हो जाने पर कोई बात भी नही करता है ।

टन हो जाना–तुरन्त मर जाना । उ० ज़मीन पर गिरते ही वह टन हो गया ।

२४

टपक पडना–१ अचानक आ जाना । उ० आप कहाँ से यहाँ टपक पडे, मुझे तो तनिक भी आशा नही थी कि आप भी यहाँ आयेंगे । २ गिर जाना । उ० वह पेड पर से टपक पडा ।

टपका-टपकी लगना–वर्षा होना । उ० कल सुबह ही से टपका-टपकी लगी है ।

टपका पडना–निकला पडना, स्पष्ट होना । उ० टपकी पडती है उससे गदराहट, है ये आलम तेरी जवानी का ।

टपटप–चट से, जल्दी । उ० टपटप उठा लो, नही तो भीग जाएगा ।

टप से–झट से, शीघ्र । उ० लडके ने टप से चिराग पकड लिया ।

टप्पर उलटना–दे० 'टाट उलटना' ।

टप्पा उलटना–दीवाला निकलना । उ० उस बेचारे का तो टप्पा उलट गया, अब भला कहाँ से लोगो का रुपया देगा ?

टप्पा खाना–किसी फेंकी हुई वस्तु का जमीन से लग कर आगे उछल जाना ।

टप्पा देना–१ लम्बे-लम्बे डग भरना । २ अतर डालना । ३ लम्बे लम्बे टाँको से सीना ।

टप्पे डालना–१ दूर-दूर और खराब सिलाई करना । उ० क्यो टप्पे डाल कर कमीज खराब कर रहे हो ? २ लगर डालना । उ० टप्पे डाल चुका हूँ, कल सिल दूँगा ।

टप्पे भरना–दे० 'टप्पे डालना' ।

टप्पे मारना–दे० 'टप्पे डालना' ।

टप्पे लगाना–दे० 'टप्पे डालना' ।

टरक जाना–दे० 'टल जाना' ।

टरक देना–दे० 'टरक जाना' ।

टर-टर करना–१ बेकार बकवाद करना । उ० क्या टर-टर कर रहे हो, मुझे सोने दो, नींद लग रही है । २ धृष्टता से बात करते जाना । उ० क्या टर-टर करते हो, शर्म नही आती ।

टर-टर फिस होना–१ कुछ दिन काम करके फिर बैठ जाना । २ खराब होना । उ० किया-कराया सब टर-टर फिस हो गया । ३ सब प्रयत्न निष्फल होना ।

टर-टर लगाना–व्यर्थ बकवाद करना । उ० दिन-रात टर-टर लगाए रहते हो, कोई दूसरा काम नही है क्या ?

टरपो-टरपो करना–दे० 'टर-टर लगाना' ।

टर-फिस करना–१. बदमाशी करना। उ० अगर ज्यादा टर-फिस करोगे तो जूते से बात करूँगा। २ दे० 'डींग हाँकना'।

टर्र निकल जाना–घमण्ड चूर-चूर हो जाना।

टल जाना–१. खिसक जाना। उ० सिपाही को देखते ही चोर कही टल गया। २ चले जाना। उ० टल जाओ नही तो खैरियत नही है।

टस से मस न होना–१ कहने का कुछ भी असर न पड़ना। उ० उसे पढ़ने के लिए लोगो ने बहुत समझाया, पर वह टस से मस न हुआ। २ ज़रा भी न हटना। उ० वह पत्थर चार आदमियो से भी टस से मस न हुआ। ३ गलाने का कुछ प्रभाव न होना। उ० सोना सुहागे मे भी टस से मस न हुआ।

टसुए बहाना–दिखाने के लिये रोना। उ० क्यो टसुए बहा रही हो, तुमको तो खुशी मनानी चाहिये ?

टहल जाना–१ हट जाना। उ० अब यहाँ से टहल जाने मे ही खैरियत है। २ चुपचाप चल देना। उ० टहल जाओ, नही तो तुम लोग भी पकड़ जाओगे।

टहल-टई–१. सेवा-सुश्रूषा। २ काम-धाम।

टहल-टकोर–दे० 'टहल-टई'।

टहल-टकोर करना–१ देने मे आनाकानी करना। उ० टहल-टकोर क्यो कर रहे हो, आखिर तो देना ही पड़ेगा। २ सेवा करना।

टहल बजाना–सेवा करना। आज्ञा मानना। उ० नया नौकर टहल बजाने मे बड़ा तेज़ है।

टहला देना–बहाने से टरका देना।

टही मे रहना–अपना मतलब सिद्ध करने की ताक मे रहना। उ० वह हर समय टही मे रहता है, दूसरो से उसे क्या प्रयोजन है ?

टही लगाना–जोड़-तोड़ लगाना।

टहोका खाना–झटका खाना।

टहोका देना–धक्का देना, झटकना। उ० टहोका देकर चोर भाग निकला।

टाँक रखना–१ याद रखने के लिए नोट कर लेना। उ० मैने उनके भाषण की बाते टाँक रखी है। २ मन-मुटाव रखना। उ० इधर कुछ दिनो से तो वह टाँक रखने लगा है। ३. बही मे लिख लेना। उ० सारा जमा खर्च टाँक रखना।

टाँक लेना–दे० 'टाँक रखना'।

टाँका चलाना–सीने के लिए कपड़े आदि मे आर-पार सुई डालना।

टाँका भरना–१ सीना। सिलाई करना। २ दूर-दूर सिलाई करना। उ० जल्दी टाँका भर दो, दूर जाना है।

टाँका मारना–दे० 'टाँका भरना'।

टाँकी खाना–जेलखाना मे रह आना। उ० वह कई बार टाँकी खा आया है।

टाँकी निकलना–गहने आदि की धातु का खराब निकलना। उ० इसमे तो बहुत टाँकी निकलेगी।

टाँकी बजना–१. पत्थर पर खुदाई का काम होना। २ इमारत का चुना जाना। ३. टाँकी बज रही है तो खर्च होगा ही।

टाँकी लगाना–१ छेद या सूराख करना। २ तराश कर देखना।

टाँके उधड़ना–दे० 'टाँके खुलना'।

टाँके उधेड़ना–सिलाई खोलना, टाँका खोलना। उ० मुझे इस दर्द मे लज्जत है ऐ जोशे जुनू अच्छा, मेरे ज़ख्मे जिगर के हर घड़ी टाँके उधेड़े जा।

टाँके खाना–ज़ख्म सिलवाना। उ० वह टाँके खाने को तैयार नही है।

टाँके खुलना–१ गुप्त बात ज़ाहिर होना। उ० उनके भी टाँके खुल गये, अब वे क्या मेरे सामने बात करेगे ? २ मिली हुई चीज के तागे टूटना। उ० उनके हाथ के टाँके खुल गए।

टाँके टूटना–कपड़े या ज़ख्म की सिलाई का टूट जाना।

टाँके ढीले करना–मार-मार कर बेदम करना। उ० राजी से मान जाओ तो अच्छा है, वरना एक-एक के टाँके ढीले कर दूँगा।

टाँके देना–दे० 'टाँके लगाना'।

टाँके मारना–ऊपरी या जल्दी-जल्दी सिलाई करना। उ० टाँके न मारो, ठीक से सिलो।

टाँके लगाना–ज़ख्म या कपड़ो मे सिलाई करना।

टाँग अड़ाना–१. बेकार दखल देना। अड़चन डालना। उ० तुम क्यो मेरे हर काम मे टाँग अड़ाते हो ? अगर यह आदत न छोड़ोगे तो झगड़ा हो जायगा। २. अज्ञात क्षेत्र मे कूद पड़ना।

टाँग उठाना–सभोग करना। किसी स्त्री के साथ भोग करना। उ० उसकी टाँग उठाते तुम्हे शर्म भी नही आई ?

टाँग खींचना–बदनाम करना, मूर्ख बनाना। उन्नति न करने देना।

टाँग-तले से निकलना–हार मानना। उ० अगर आप इस हिसाब को लगा दें तो मै आपकी टाँग-तले से निकल जाऊँ।

टाँग-तले से निकालना–हराना। लज्जित करना। उ० क्यो उसे टाँग-तले से निकालते हो, वह भी तो आखिर अपना है।

टाँग तोडना–१. पैर तोड देना। उ० उसने मार कर टाँग तोड दी। २ थकावट देना। उ० आज तो चलते-चलते तुमने टाँग तोड दी। ३ बेकार कर देना। उ० हमारी साइकिल ले जाकर तो तुमने मेरी टाँग ही तोड दी। ४ गलत बोल कर निरादर करना। उ० अब भी तो शुद्ध बोलो, क्यो हिन्दी की टाँग तोडते हो।

टाँग देना–१ लटका देना। उ० कपडे को खूँटी पर टाँग दो। २ फाँसी देना। उ० कल वह टाँग दिया गया।

टाँग पसार कर सोना–१ बिना फिक्र के रहना। उ० आजकल वह खूब टाँग पसार कर सोता है। २ निश्चित होकर सोना। उ० टाँग पसार कर सोए हो, कोई चोरी कर ले जाय तो!

टाँग बराबर–बहुत छोटा। उ० टाँग बराबर तो है, और गाली देता है।

टाँग लेना–१ उठा लेना। उ० उसे टाँग लो। २ कुत्ते का काटना।

टाँग से टाँग बाँधकर बिठाना–पास से हटने न देना। उ० वह तो अपनी बीवी को टाँग मे टाँग बाँधकर बिठाए रहता है।

टाँग से टाँग बाँधकर बैठना–सर्वदा साथ रहना। उ० तुम उसकी टाँग से टाँग बाँध कर बैठे रहते हो, आखिर बात क्या है ?

टाँग से टाँग बाँधकर बैठाना–पास से न हटने देना।

टाँगें झुलाना–समय खराब करना। उ० क्या बैठे-बैठे टाँगें झुलाया करते हो। कुछ काम-धन्धा करो।

टाँगें तोडना–१ लाचार कर देना। उ० अब तुमने उसकी टाँगे तोड दी। २ दुर्दशा करना। उ० तुमने तो उसकी टाँगे तोड दी।

टाँगें रह जाना–१ बहुत कमजोर और दुर्बल हो जाना। २ थक जाना। ३ गठिया से पैरो का बेकार हो जाना।

टाँट के बाल उडना–१ खूब मार पडना उ० आज झगडे मे बेचारे के टाँट के बाल उड गये। २ सिर के बाल गिरना। उ० बीमारी मे उसके टाँट के बाल उड गए। ३ कुछ भी न रह जाना। उ० दो ही मुकदमे मे दोनो के टाँट के बाल उड गए।

टाँट के बाल उडाना–खूब मारना। उ० इस छोटे से अपराध के लिए पिताजी ने उसके टाँट के बाल उडा दिये। टाँट का बाल उडा दूँगा, नही तो जरा आदमी की तरह रहो।

टाँट खाली रहना–कुछ न समझना। उ० मैं तो समझाते हुए थक गया, पर तुम्हारी टाँट लगता है खाली ही रहेगी।

टाँट खुजलाना–मार खाने की चाह होना। उ० आज तुमने कई अपराध किये, क्या टाँट खुजला रही है ?

टाँट गजी कर देना–दे० 'टाँट के बाल उडाना'।

टाँट गजी होना–दे० 'टाँट के बाल उडना'।

टाँडा लदना–१ बेचने के लिए माल लदना। उ० आज कानपुर से टाँडा लद रहा है। २ मरणासन्न होना। उ० उसका तो अब टाँडा लद रहा है।

टाँडा लादना–सारे सामान के साथ चलना। उ० परीक्षा होते ही मैं टाँडा लाद दूँगा।

टाँडे खाना–१ खोखला होना, कीडे लगने से खोखला होना। उ० टाँडे खाए बल्ले क्या होगे ? २ बीमारी से खोखला होना।

टायँ-टायँ फिस होना या हो जाना–आरभ मे तो बडी शान से होना, परन्तु परिणाम बुरा होना, अत मे कुछ न होना या फेल कर जाना। उ० इकलौता पुत्र था, बडे शौक से पढाते थे, परन्तु मर जाने से सब टायँ-टायँ फिस हो गया। आजकल रोज ही एक-न-एक पत्रिकायें निकलती हैं, पर चार-छ महीने मे टायँ-टायँ फिस हो जाती हैं।

टाँय-टाँय मचाना–शोर करना, फिजूल बोलना।

टाट उलटना या उलट जाना–बडा घाटा होना या दिवाला निकलना। उ० सोने के भाव मे मदी के कारण अनेक सर्राफो के टाट उलट गये।

टाट करना—मस्तूल खडा करना ।

टाट पर रेशम की सिलाई—असगत मेल ।

टाट मे पाट की वखिया करना—खराव चीज़ मे अच्छी सजावट करना । उ० उस रद्दी कपडे का कोट तुम कपनी मे सिलवा रहे हो । इस टाट मे पाट की वखिया करने से क्या फायदा ?

टाट मे मूंज की वखिया करना—दे० 'टाट मे पाट की वखिया करना' ।

टापते रह जाना—मुंह देखते रह जाना ।

टापा-टोई करना—तलाश करना । उ० घर मे तव से क्या टापा-टोई कर रहे हो ?

टापा देना—लवे-लवे कदम से चलना । उ० कौन-सी जल्दी है कि टापा देकर चल रहे हो ?

टाल करना या कर देना—राशि लगाना । उ० हमने दूकान के लिए लकडी का टाल कर दिया है ।

टाल जाना—अस्वीकार कर देना । उ० जव भी कुछ माँगता हूँ, वह टाल जाता है ।

टाल-टूल करना—दे० 'टाल-मटोल करना' ।

टाल देना—स्थगित करना । उ० हमने घर जाने की तिथि टाल दी है ।

टाल-वटाल करना—दे० 'टाल-मटोल करना' ।

टाल-मटोल करना—हीला-हवाला करना । न देना । उ० टाल-मटोल न करो, आज ज़रूर दे दो ।

टाल मारना—१. पहियो के किनारो को छील कर सुदर बनाना । उ० इन पहियो मे टाल मार देने से मूल्य अधिक मिलेगा । २. टकराना । उ० टाल न मारो ।

टाला-बाला देना—दे० 'टाला-वाला वताना' ।

टाला-वाला वताना—वहकाना । धोखा देना । उ० टाला-वाला वता कर अपना काम तो तुमने निकाल लिया, अव मेरा काम कैसे होगा ?

टिकट कटाना—१ टिकट ख़रीदना । २ प्रस्थान करना ३ मर जाना ।

टिकट लगाना—महसूल लगाना । कर नियत करना ।

टिकटिकी पर खडा करना—लडाई मे न हटने वाले मुर्गे को चोट खाकर मरने के वाद तीन लकडियो पर खडा करना ।

टिकटिकी से वांधना—वाँध कर कोडे लगाना ।

टिकडी जमाना—जुआ खेलने के लिए इकट्ठे होना । उ० तुम्हारे घर रोज़ टिकडी जमती है, किसी दिन छापा न पड़ जाये ।

टिकस लगाना—दे० 'टिकट लगाना' ।

टिक्की जमना—१. काम सिद्ध होना । उ० हमको विश्वास है कि वहाँ जाने पर हमारी टिक्की जम जाएगी । २. दे० 'टिप्पस अडना' ।

टिक्की वैठना—दे० 'टिक्की जमना' ।

टिक्की भिड़ना—दे० 'टिक्की जमना' ।

टिक्की लगाना—दे० 'टिक्की जमना ।'

टिगिर-विगिर करना—दे० 'टाल-मटोल करना' । उ० लाल-लाल पैसा तो टिगिर-विगिर कैसा ?

टिटकारी देना—उपहास करना ।

टिटकारी पर लगना—पशुओ का सकेत पाकर या वोली पहचान कर पास चले जाना । उ० गडरिए की सव भेडें टिटकारी पर लगती है ।

टिड्डी-दल—वडी भीड । उ० तैमूर की सेना के टिड्डी-दल मे दिल्ली थर्रा गई ।

टिड्डी के रोके आँधी न रुकना—दुर्वल का वलवान से टक्कर लेकर जीत न सकना ।

टिप-टिप करना—साधारण वर्षा होना । उ० यह टिप-टिप करना अच्छा नही लगता ।

टिप्पन मिलाना या मिला देना—विवाह के लिए गणना गिनना । उ० अव तो टिप्पन भी मिला लिया गया, शादी करने मे देर न करो ।

टिप्पस अड़ना—स्वार्थ निकालने का साधन होना । अपना काम निकलने का चाम वैठना । उ० पिछले मुकदमे के लिए तो हमारा टिप्पस अड चुका है ।

टिप्पस जमना—दे० 'टिप्पस अडना' ।

टिप्पस भिडना—दे० 'टिप्पस अड़ना' ।

टिप्पस लगना—दे० 'टिप्पस अडना' ।

टिमटिमाता दिया—नष्ट होने के निकट होना ।

टिर-फिर करना—वदमाशी करना । उ० टिर-फिर करोगे तो ठीक न होगा ।

टिर-फिस करना—दे० 'टिर-फिर करना' ।

टिल्ला नवेसी करना—१. वक्त वरवाद करना । वेकार घूमना । २. खुशामद का काम करना । ३. वहाना करना ।

टीकन देना—१. कोई पौधे को सीधा [illegible] लिए लकड़ी का सहारा देना। उ० अभी पौधा कमजोर है, टीकन देने से सीधा हो सकता है। २. गरीब, दीन या निर्बल की सहायता करना।

टीका चढ़ाना—उत्तराधिकार पाना।

टीका-टिप्पणी करना—आलोचना करना। उ० टीका टिप्पणी करना तो सरल है, परन्तु स्वयं लिखना बहुत कठिन है।

टीका देना—१. तिलक लगाना। उ० भारतीय परंपरा के अनुसार शुभ काम पर टीका देते हैं। २. दे० 'टीका लगाना'।

टीका भेजना—तिलक चढ़ाने के लिए भेजना। सगाई भेजना।

टीका लगाना—छापना, सुई देना। (चेचक, हैजा, प्लेग आदि से टीका लगता है।) उ० हैजा के फैलते ही सरकारी डाक्टर टीका लगाने लगता है।

टीका लेना—१. छपवाना, सुई लेना। उ० मैंने चेचक का टीका ले लिया है। २. विवाह में दक्षिणा लेना। उ० उनकी शादी में पुरोहित ने १०० रु० का टीका लिया।

टीके का—विशेषता रखने वाला। अनोखा। उ० क्या यही एक टीके का है, जो सब कुछ कर लेगा?

टीप का बन्द लगाना—किसी बात की पुष्टि करना।

टीप-टाप करना—ऊपर ऊपर सुधार कर देना। थोड़ा-बहुत सुधार करना। उ० टीप-टाप करने से [illegible] उठ गया। [illegible] है।

टीप देना—दबा देना। उ० उसका गला टीप दो।

टीम टाम करना—दे० टाम टाम करना।

टीम-टाम रखना—दिखावे [illegible] रखना। उ० [illegible] टीम-टाम रखना पसन्द करते हैं।

टीस उठना—पीड़ा होना। उ० [illegible] की टीस रह-रह कर उठती है।

टीस मारना—पीड़ा [illegible]। उ० [illegible] टीस मार रही है।

टुक मिलाना—१. [illegible]

[illegible]

टुक लगाना—दे० [illegible]

[illegible]

टुकिया [illegible]

[illegible]

टुकड़ा [illegible]

[illegible]

टुकड़ा [illegible]

[illegible]

टुकड़े [illegible]

टुकड़े [illegible]

टुकड़े के लिए तरसना—खान-पान का मुहताज होना।

टुकड़े-टुकड़े करना—नष्ट-भ्रष्ट करना। पुरज़े-पुरज़े करना।

टुकड़े तोड़ना—मुफ्त की रोटियाँ खाना। क्या यहाँ टुकड़े तोड़ रहे हो ?

टुकड़ों पर पड़ना—दूसरे की कमाई पर निर्वाह करना। उ० वह असहाय बालक अपने ननिहाल के टुकड़ों पर पड़ा हुआ है।

टुक-सा—थोड़ा-सा, ज़रा-सा। उ० आपकी टुक-सी दया मेरे लिए बहुत होगी।

टुकुर-टुकुर ताकना—१ अपलक देखना। उ० अपना काम करो, हमारी ओर क्या टुकुर-टुकुर ताक रहे हो ? २ दीनता से देखना। उ० बेचारा अनाथ-सा टुकुर-टुकुर ताक रहा था। मुझे दया आ गई और मैंने उसे १ रु० दे दिया।

टुटपुँजिया—गरीब, अल्प पूँजी वाला। उ० वह टुटपुँजिया क्या खाकर रोज़गार करेगा ?

टुटरूँ-टूँ— निर्जन, अकेला। उ० मुझे टुटरूँ टूँ रहना पसंद नहीं आता है।

टुट्टूट कर बरसना—दे० 'टूट-टूट कर वरसना'।

टुम-टाम—सज-धज, सजावट। उ० बारात मे लोग बडी टुम-टाम से जाते हैं।

टुसर-टुसर रोना—फूट-फूट कर रोना।

टूक-टूक करना—नष्ट कर देना, तोड़ डालना।

टूक-टूक होना—टुकड़े-टुकड़े होना। उ० तुम्हारी इन्ही बातो से मेरा दिल टूक-टूक हो जाता है।

टूट-टूट कर बरसना—बड़े जोरो से वर्षा होना। उ० इस वर्ष चेरापूंजी मे टूट-टूट कर वरसा हुई।

टूट पड़ना—वेग से धावा बोलना। उ० कल के कांड मे हिंदू जी खोल कर टूट पड़े।

टूट मे पड़ना—नुकसान मे पड़ना।

टूटा-फूटा—मामूली, साधारण। उ० भारतवर्ष मे टूटी-फूटी हिंदी तो सभी बोल सकते है।

टूटी बाँह गले पड़ना—किसी असमर्थ आदमी का व्यय अपने सिर पर पड़ना। उ० इस अनाथ बच्चे को उठा लाये, यह टूटी बाँह भी मेरे ही गले पड़ी।

टूटे-फूटे स्वर मे—अस्पष्ट या अटकते हुए शब्दो मे।

टूम छल्ला—साधारण गहना। उ० टूम छल्ला तो सभी औरतें रखती हैं। बड़ा बनवाओ तब न।

टूम देना या दे देना—कबूतर को छत्ता पर से उड़ा देना। उ० प्रात होते ही लोग कबूतरो को टूम देते हैं।

टेंट गर्म होना—१ पास मे पैसा होना। उ० टेंट गर्म है तो चैन की नीद आती है, नही तो मेरी तरह आप भी रहते। २ रुपया मिलना। उ० टेंट गर्म हो जाय तो मैं भी चलूं।

टेंट ढीली कराना—पैसा खर्च कराना। उ० आज फँसे हो तो टेंट ढीली करनी ही पड़ेगी और कोई चारा नही है।

टेंट मे कुछ होना—पास मे कुछ पैसा होना। उ० हम आप जैसे गये बीते नही हैं, सदा टेंट मे कुछ रहता है।

टेंटुवा दबाना—गला दबाना। उ० रात में किसी ने टेंटुवा दबा कर उन्हे मार डाला।

टें-टें करना—बेकार बोलना। उ० क्या सुबह से ही टें-टें कर रहे हो ? मैं ऐसी बातें नही सुन सकता।

टें-टें फिस्स होना—१ सब परिश्रम बेकार जाना। उ० सारा किया-कराया टें-टें फिस्स हो गया। २ असफल होना।

टें बोल जाना—तुरन्त मर जाना। उ० एक लात मे तो टें बोल दोगे और कहने से मानते नही।

टेक गहना—१ ज़िद्द पकड़ना। उ० अब तो समझदार हो गए हो, इतनी टेक क्यो गहते हो ? २ प्रतिज्ञा करना। उ० टेक गहते हो तो निभाना भी।

टेक निभाना—अपनी प्रतिज्ञा या ज़िद्द पूरी करना। उ० भीष्म ने कृष्ण को अस्त्र गहा कर अपनी टेक निभायी।

टेक पकड़ना—दे० 'टेक गहना'।

टेक रखना या रख लेना—ज़िद्द या बात रखना। उ० बेचारा बड़ा मुरौवती आदमी है, उसने अपना नुक़सान करके भी तुम्हारी टेक रख ली।

टेढ़की लेना—शरारत करना। उ० क्यो टेढ़की लेते हो ? दूसरे भी तुम्हारे साथ यही करें तो कैसा लगेगा ?

टेढा पडना—१ अकड़ना। उ० बात-बात मे टेढा पडना कोई चालाकी नही है। २ कठोर बनना। उ० टेढे के साथ टेढा पडना ही पडता है। ३ शरारत करना।

टेढ़ा-मेढा करना—१ किसी तरह काम निकाल लेना। उ० जब हम कुछ नही जानते हैं तो अपना काम टेढा-मेढा कर लेने मे कौन-सा पाप है ? खराब-खस्ता करना। उ० मारा कि टेढा-मेढा कर डाला।

टेढा होना—१ दुष्ट स्वभाव वाला होना। २ रुष्ट होना।

टेढी अँगुली से घी निकालना—१ जब जैसी जरूरत पडे, वैसा व्यवहार करना। उ० सीधी अगुली से घी नही निकलता है तो टेढी अँगुली से निकालो। २ चालबाजी से काम निकालना। उ० टेढी अँगुली से घी निकालना तुम्हे शोभा नही देता।

टेढी आँखें करना—दे० 'आँखे टेढी करना'।

टेढी आँखो से देखना—द्वेष रखना। ईर्ष्या से देखना। उ० रूस अमेरिका को टेढी आँखो से देखता है।

टेढी खीर—कठिन काम, लोहे का चना। उ० पर्चों के कठिन होने से इस साल परीक्षा पास करना टेढी खीर है।

टेढी चाल चलना—गलत काम करना, कोई ऐसा काम करना जिसका काट करना कठिन हो।

टेढी चितवन—तिरछी नज़र। उ० टेढी चितवन प्रेम या वैर की निशानी है।

टेढी भृगुटी करना—बेरुखा होना, नाराज़ होना।

टेसू बनना या होना—साज-शृ गार करना।

टेढी-सीधी सुनाना—भली-बुरी कहना, डाँटना-फटकारना। उ० गरीबो को तो सभी टेढी-सीधी सुनाते हैं, कोई अमीरो को सुनाये तो जानूँ।

टेढी सुनाना—दे० 'टेढी-सीधी सुनाना'।

टेढे-टेढे चलना—गर्व करना। उ० जिसके बल पर टेढे-टेढे चलते हो, वह धोखा दे देगा।

टेनी मारना—डडी मारना। तराजू से जोखने मे कम या वेश तोलना। उ० छोटे-मोटे दूकानदार बहुत टेनी मारते हैं।

टेर करना—व्यतीत करना। उ० किसी तरह यह जीवन टेर कर रहा हूँ, नही तो पूरे परिवार के मरने के बाद इसमे भला क्या आकर्षण है ?

टेर लगाना—१ प्रार्थना करना। २ रट लगाना।

टोक मे आना—नज़र लगाने वाले की दृष्टि मे आना। उ० कुछ लोगो का विश्वास है कि लडके टोक में आने से बीमार पड जाते हैं।

टोकरे पर हाथ रहना—भरम बना रहना, इज्ज़त बनी रहना, परदा न खुलना। उ० जब तक टोकरे पर हाथ रहेगा, कोई सामने नही आ सकता। उसके बाद देखा जायगा।

टोका-टाकी करना—बिना मतलब पूछताछ करना। उ० तुम्हारी टोका-टाकी करने की आदत बहुत बुरी है।

टोटका करने आना—आकर तुरन्त जाना। उ० क्या टोटका करने आई थी कि अभी जा रही है ?

टोटका होना—टोटके की तरह चट-पट हो जाना। जल्दी हो जाना। उ० अच्छा आज आप अभी आ गए, काम टोटका हो गया था क्या ?

टोटा उठाना—नुकसान उठाना।

टोटा पडना—नुकसान होना। उ० इस साल गुड वालो को टोटा पडने की आशा है।

टोटा भरना—हानि पूरी करना। उ० गुड का टोटा चावल नही भर सकता।

टोटा सहना—दे० 'टोटा उठाना'।

टोना करना—मन्त्र-तन्त्र से किसी के बुरे के लिए कुछ प्रयोग करना।

टोपा देना—१ तागा भरना, सीना। २ जल्दी-जल्दी दूर-दूर सीना।

टोपा भरना—दे० 'टोपा देना'।

टोपी उछलना—१ अपमानित होना। उ० अपकृत्य करने से सभी की टोपी उछलती है। २ प्रसन्नता प्रकट होना।

टोपी उछालना—१ अपमान करना। उ० मेरी टोपी को उछालने का कौन साहस कर सकता है। २ बहुत प्रसन्नता प्रकट करना। उ० खेलाडी जीतने के बाद टोपियाँ उछाल रहे है।

टोपी देना—१ टोपी पहनाना। उ० उसके सर पर एक टोपी तो दे दो। २ टोपी पहनना।

टोपी पैर पर रखना—असमर्थता या अधीनता स्वीकार करना। उ० इतने दिन के मुकदमे के बाद उन्होने हमारे पैर पर टोपी

रखी है। अगर पहले ही यह किये होते तो क्यो परीशान होते ?

टोपी वदलना—१ अधिकारी या शासक वदलना। उ० विना टोपी वदले सुख नही मिल सकता। २ मित्र वनाना। उ० मैने आज तुम्हारे दोस्त से टोपी वदली है।

टोह मिलना—पता चलना। उ० हमारी टोह सरकार को मिल गई। उस चोर की टोह पुलिस को मिल गई है।

टोह मे रहना—खोज मे रहना। उ० आजकल मैं किसी नौकरी की टोह मे हूँ।

टोह रखना—खवर लेना। रक्षा करना। उ० हमारी टोह भगवान ही रखता है।

टोह लगाना—पता लगाना। उ० तुम तो कही टोह लगाते नही हो तो वह कैसे मिले ?

टोह लेना—खवर लेना। पता लगाना। उ० तव तक उसकी टोह ले लो।

ट्रंप होना— रोव-दाव होना, अधिकार होना। उ० तुम्हारा तो आजकल ट्रंप है।

ट्रेन छूटना—१ गाडी का चल देना। उ० ट्रेन छूट गई। २ वडी जल्दी होना। उ० ट्रेन छूट रही है क्या, कि इतनी तेज़ी से खाना खा रहे हो।

ट्रेन पकड़ना—दे० 'गाडी पकड़ना'। (यह अग्रेज़ी मुहावरा To catch the train का अनुवाद है।)

ठ

ठ-ठ-गोपाल होना—दे० 'ठन-ठन-गोपाल होना'।

ठठ गिनना—तुच्छ समझना।

ठड—ठड के मुहावरो के लिए 'ठढ' देखिये।

ठडक—ठडक के मुहावरो मिए 'ठढक' देखिये।

ठढक पडना—सरदी पडना। उ० कई दिन से ठढक पड रही है।

ठंढक लगना—दे० 'ठढ लगना'।

ठढ पडना—जाडा या सरदी पडना। उ० अव ठढ पडने लगी, गरम कपडे निकाल लो।

ठढ लगना—१ सरदी या जाडा लगना। उ० ठढ लगती हो तो कोट पहन लो। २ जाडे का असर होना। उ० वचाना, ठढ न लगे, नही तो वुखार आ जायगा।

ठढा करना—१ आग वुझाना। उ० आज की आग वडी मुश्किल से ठढी की गई। २ प्रवाहित करना। उ० गाधी का फूल त्रिवेणी मे ठढा किया गया। ३ क्रोध मिटाना। उ० समझा-वुझा कर ठढा करो। ४ धैर्य देना। उ० उनकी स्त्री ही उन्हें ठढा करेगी। ५. पराजित करना। उ० सरकार ने विद्रोहियों को ठडा कर दिया। ६ उत्साह मिटाना। उ० एक ही वार की हार ने उसे ठढा कर दिया।

ठढा पड जाना—१ मर जाना। उ० साँप एक ही लाठी मे ठढा पड गया। २ पस्तहिम्मत होना। उ० घाटा हो जाने से वह ठढा पड गया। ३ क्रोध शान्त होना। ४ मदा होना। उ० कई दिनो से गुड की वाज़ार ठढी पड़ गई है।

ठढा रखना—१ खुश रखना, आराम से रखना। २ शान्त रखना। उ० अपने भाई को ठढा रखो, नही तो लडाई हो जायगी।

ठढा रहना—१ खुश रहना, सतुष्ट रहना। २ उदास या वेरौनक रहना। उ० कैसे यो फरहाद जो गुज़रे तो हुआ दौर मेरा, न रहा मारकए इश्क़ का पाला ठढा।

ठढा होना—दे० 'ठढा पड़ जाना'।

ठंढी आग मे जलना—विरहाग्नि से व्याकुल होना।

ठंढी आना—जाड़ा आना। उ० अव धीरे-धीरे ठढी आ रही है।

ठंढी करना—चेचक की आखिरी पूजा करना। उ० हमारे गाँव मे ठढी कर दी गई।

ठंढी गरमी—दिखावटी प्रेम। चलो हम ठढी गरमी खूव समझते हैं।

ठंढी ढलना—चेचक का मुर्झाना। उ० अभी ठढी नही ढल रही है।

ठढी निकलना—चेचक निकलना। उ० हमारे घर ठढी निकल रही है।

ठंढी मार—१. मीठी चोट। ऐसी चोट जो भीतर ही भीतर हो और दिखाई न दे। उ० पुलिस वाले ठढी मार मारते हैं। २. मीठी वातो का व्यग्य। उ० वह तो वड़ी ठढी मार मारता है।

ठढी मिट्टी—रति-कामना से विहीन आदमी। उ० नपुसक तो ठढी मिट्टी ही होते हैं।

ठढी सांस—आह-भरी साँस, ऊँची साँस। उ० उसकी ठढी साँस देखी नही जाती।

ठढी सांस खींचना—दु:ख की साँस लेना या आह भरना। उ० उसके वियोग मे कब तक ठढी साँस खीचते रहोगे ?

ठंढी सांस भरना—दे० 'ठढी साँस खीचना'।

ठंढी सांस लेना—दे० 'ठढी साँस खीचना'।

ठंढे-ठंढे—१ प्रसन्नता से। उ० तुम सब ठढे-ठढे चले जाओ। २ धूप से पहले। बहुत सवेरे। रात मे। उ० हम लोग ठढे-ठढे चले आए।

ठंढे किमारा से—शान्तिपूर्वक।

ठक रहना—सन्न हो जाना। उ० मैं तो उसके साहस को सुनते ही ठक रह गया।

ठक हो जाना—दे० 'ठक रहना'।

ठकुर-सुहाती कहना—चापलूसी की बातें करना। उ० ससार मे ठकुर-सुहाती कहने मे ही अपना भला है।

ठगमूरी खाना—ठगा-सा या पागल-सा रहना। होश-हवास मे न रहना। उ० काहू तोहि ठगोरी लाई। बूझति सखी सुनति नाहिं नेकहु तुही किधौं ठगमूरी खाई।

ठग लगना—ठगो का पीछे पडना। उ० तुम्हारे पीछे कई दिनो से ठग लगे हैं, जरा रुपये होशियारी से रखना।

ठगलाड़ू खाना—दे० 'ठगमूरी खाना'।

ठगविद्या खेलना—छल-कपट करना। उ० अब तो तुम भी ठगविद्या खेलने लगे हो।

ठगा-सा रह जाना—चकित रह जाना, भौंचक्का रह जाना। उ० ताजमहल की रौनक देखकर मैं ठगा-सा रह गया।

ठगा-सा रहना—दे० 'ठगा-सा रह जाना'।

ठगोरी डालना—मत्र-मुग्ध कर देना, जादू करना।

ठट कर बातें करना—जमकर बातें करना। उ० आज दिन भर खूब ठट कर बातें की गईं।

ठट के ठट—बहुत से, झुड के झुड। उ० ठट के ठट आदमी कहाँ जा रहे हैं ?

ठट लगना—भीड होना। ढेर होना। उ० मेले मे आदमियो के ठट लगे थे।

ठट्ट लगना—जमा होना।

ठट्ठा उड़ाना—हँसी-मज़ाक करना। हँसी उडाना। उ० हमेशा ठट्ठा न उडाओ, जरा गभीरता से सुना करो।

ठट्ठा करना—हँसी या चुहल करना। उ० ठट्ठा न करो, बात बडी गभीर है।

ठट्ठा मार कर हँसना—दे० 'ठठा कर हँसना'।

ठट्ठा मारना—दे० 'ठट्ठा उडाना'।

ठट्ठे मे उडाना—कुछ महत्व न देना। हँसी मे उडाना। उ० हमारी बातो को तो आप लोग ठट्ठे मे उडा देते हैं।

ठठरी होना—दुर्बल होना। उ० तुम तो सूखकर ठठरी हो गये।

ठठा कर हँसना—जोर से हँसना। उ० ऐसी कौन-सी बात थी कि ठठा कर हँस पडे ?

ठठेरे की बिल्ली—जरा भी आवाज पहचानने का अभ्यस्त। उ० कोई ठठेरे की बिल्ली नही हूँ कि तुम आए और जग जाऊँ।

ठठेरे-ठठेरे बदलाई होना—एक तरह के दो व्यक्तियो का एक-दूसरे को ठगना। दो समान धूर्त एक-दूसरे पर अपनी धूर्तता नही चला सकते। उ० आप भी चोर और मैं भी चोर, फिर मेरी चोरी करने के फेर मे न पडें, ठठेरे-ठठेरे बदलाई नही होती।

ठनका कर लेना—अच्छी तरह देख कर रुपया लेना। उ० ठनका कर लेना, कही खराब न दे दे।

ठन जाना—बदाबदी होना। उ० हमारी-तुम्हारी ठन गई है, देखें कौन भागता है ?

ठन-ठन-गोपाल—१ निर्धन। उ० तुम तो सचमुच ठन-ठन-गोपाल हो। २ मूर्ख। उ० ठन-ठन-गोपाल न बनो, कुछ विवेक से भी काम लो।

ठन-ठन-गोपाल होना—बिना रुपये-पैसे का होना, खाली हाथ होना। उ० आजकल तो मैं ठन-ठन-गोपाल ही हूँ।

ठर्रा आदमी—खरा और साफ आदमी। उ० वह बडा ठर्रा आदमी है।

ठर्रा लगाना—देशी शराब पीना। उ० बहुत बदबू आ रही है, लगता है आज ठर्रा लगा आये हो।

ठर्रा होना—खरा होना। उ० वह बडा ठर्रा है।

ठस आदमी—कृपण या कजूस आदमी। उ० ठस आदमियो से क्या माँगना।

ठस होना—कजूस होना। उ० वह ठस है, अपने तो खर्च ही नही करता तो भला तुम्हे कैसे दे देगा ?

ठसक दिखाना—अभिमानपूर्ण हाव-भाव दिखाना। उ० यहाँ ठसक न दिखाओ।

ठसका मारना—धक्का मारना।

ठसका होना—घमड होना, अभिमान होना।

ठसाठस भरना—१ बहुत भीड होना। उ० नेहरू जी को देखने के लिए पडाल ठसाठस भरा था। २ खूब भरना।

ठस्स आदमी—१ वोदे दिमाग वाला। उ० इस ठस्स आदमी को समझाना वेकार है। २ कजूस।

ठह कर—अच्छी तरह जमकर।

ठह-ठह कर बोलना—गभीरता या बनाव से बोलना। उ० वडे आदमियों की तरह ठह-ठह कर बोलना तुम कव से सीख गये ?

ठहरना—निश्चय होना या करना। उ० आज तुम्हारे यहाँ दावत की ठहरी।

ठाट खडा करना—ढाँचा तैयार करना। उ० वेकार के ठाट खडे करना तुम्हे खूब आता है। अभी तो ठाट खडा कर रहे हो, पूरे होने मे काफी दिन लगेगे।

ठाट खडा होना—१ स्वरूप तैयार होना। उ० अभी तो मकान का केवल एक ठाट खडा हुआ है। २ खूब रौनक होना।

ठाट पडा रह जाना—सासारिक शान-शौकत और सुख यही खतम हो जाना। उसका साथ मे दूसरे लोक न जाना। उ० सब ठाट पडा रह जाएगा, जब लाद चलेगा वनजारा।

ठाट बदलना—१ वेश बदलना। उ० तुमने तो ठाट बदल लिये हैं। २ और का और भाव दिखाना।

ठाट बाँधना—१ आक्रमण करने के लिए तैयार होना। उ० वह कई दिन से ठाट बाँध रहा है, समय आने पर गहरा धावा करेगा। २ वनना। ३ रोव दिखाना। उ० मेरे ऊपर ठाट न बाँधिए।

ठाट-बाट से रहना—शान-शौकत से रहना। उ० चन्द्रगुप्त मौर्य वडे ठाट-बाट से रहता था।

ठाट बिगड़ जाना—१ सब बना-बनाया खराब हो जाना। उ० पिताजी के न आने से शादी का सारा ठाट विगड जाएगा। २. अवनति करना।

ठाट माँजना—१ रग बाँधना, वडप्पन जताना। उ० ठाट माँजकर चले गए, मैं रहता तो वताता। २ और का और भाव दिखाना। ३ रूप तथा वेश मे नवीनता दिखाना। उ० आजकल खूब ठाट माँज रहे हो।

ठाट मारना—मौज करना। उ० वाप की कमाई पर ठाट मार रहे हो।

ठाट से कटना—सुख से जीवन वीतना। उ० शायद भारत मे ५ फीसदी लोगो की ही ठाट से कटती है।

ठाढा देना—ठहराना, स्थिर रखना।

ठार पडना—पाला या बहुत अधिक सर्दी पडना। उ० आजकल ठार पड रहा है, फसल को हानि पहुँचेगी

ठाला बताना—विना कुछ लिये-दिये दूर हटाना। उ० अरे, उसे ठाला वता दो। सवकी सुनोगे तो इतने ही भर को हो जाओगे।

ठाला होना—कमी होना। तगी होना। उ० आजकल खाने का वडा ठाला है।

ठाली होना—वेकार रहना। उ० आजकल मशीनो के प्रचार से वहुत से लोग ठाली है।

ठिकाना करना या कर देना—१ ठहराना। उ० आज तो किसी के यहाँ ठिकाना कर दिया, परन्तु कल के लिए फिर देखना है। २ शादी करना। उ० अभी दो लडकियो का ठिकाने करना है। ३ नौकरी लगाना। उ० यदि तुम चाहो तो मेरा भी ठिकाना कर दोगे।

ठिकाना ढूँढना—कोई जीविका का साधन खोजना। उ० मैं तीन माह से अपना ठिकाना ढूँढ रहा हूँ।

ठिकाना लगना—१ रहने के लिये स्थान मिलना। उ० अभी हमारा ठिकाना नही लगा है। २ नौकरी मिलना। उ० शिक्षा के युग मे ठिकाना लगना भी कठिन है। ३ खवर रहना। उ० तुम लोग तो ऐसे हो कि ठिकाना भी नही लगता।

ठिकाना लगाना—नौकरी देना। उ० यदि ज़िलाधीश चाहेगे तो दो-चार का ठिकाना लगा सकते हैं।

ठिकाने आना—१ वास्तविक वात पर आना। उ० समय कम है, ठिकाने आकर वात करो

२ यथार्थत समझना। उ० अब ठिकाने आये। ३. अपने चाहे स्थान पर पहुँचना। उ० आज मैं ठिकाने आ जाऊँगा।

ठिकाने की बात—समझदारी की बात। उ० ठिकाने की बात करो, बहको मत।

ठिकाने चुकाना—किसी बूढे आदि के मरने पर नौकर-चाकर को रुपये बाँटना।

ठिकाने न रहना—अस्थिर रहना। उ० आजकल मेरी बुद्धि ठिकाने नही है।

ठिकाने पहुँचाना—दे० 'ठिकाने लगाना'।

ठिकाने लगना—अपने वाछित स्थान पर पहुँचना। उ० कई दिन के बाद काफिला ठिकाने लगा।

ठिकाने लगाना या लगा देना—**१.** काम तमाम करना। उ० आज दंगे मे कितने ही ठिकाने लगा दिये गए। काम ठिकाने लगा दो। २ लुप्त करना। उ० उसने मेरी कलम ऐसे ठिकाने लगाई कि मिल न सकी। ३ जीविका का प्रवन्ध करना। उ० बिना ईश्वर के कौन ठिकाने लगा सकता है? ४ शादी कर देना। उ० लडकी सयानी हुई, कही ठिकाने लगा दो। ५ स्थान पर पहुँचा देना। उ० उसने रास्ता नही देखा है कि जाओ ठिकाने लगा दो।

ठीक आना—१ फिट उतरना। उ० यह कुरता ठीक आया है। २ दे० 'ठीक उतरना'।

ठीक उतरना—१ वज़न मे पूरा होना। उ० जो कुछ अनाज गोदाम से आया है, सब ठीक उतरा है। २ मनचाहा होना। उ० नकशा तो प्राय ठीक उतरा है। ३ सही होना। उ० तुम्हारे अनुमान तो बिल्कुल ठीक उतरे।

ठीक करना—१ कोई मशीन ठीक करना। २ सज़ा देकर ठीक करना। उ० अगर ज्यादा परीशान करोगे तो एक ही दिन मे ठीक कर दूंगा। ३ हैरान करके बुरी दशा को पहुँचा देना। उ० एक दिन मे ही उसे ठीक कर दिया।

ठीक-ठाक होना—१. निश्चित होना। उ० शादी ठीक-ठाक हो गई। २ दुरुस्त या सही होना।

ठीक बनाना—दे० 'ठीक करना'।

ठीकरा फोड़ना—कलक लगाना। दोष लगाना।

ठीकरा समझना—१ तृणवत् जानना। बेकार समझना। उ० वह इतना ईमानदार है कि दूसरे की हज़ारो की सम्पत्ति को भी ठीकरा समझता है। २ कम कीमत का या तुच्छ जानना।

ठीकरा होना—१ दे० 'रुपया ठीकरा होना'। २ कम कीमत का होना। ३ तुच्छ होना।

ठीकरे चुनना—मूल्यहीन काम करना। व्यर्थ मे समय गँवाना। उ० इस ठीकरे चुनने से तो कोई दुकान खोलना ही अच्छा रहेगा।

ठीकरे पकवाना—माल-असबाब तक बिकवा देना। कुछ न छोडना यहाँ तक कि खाने को न मिले। उ० आप लोगो ने ही मिल कर बेचारे के ठीकरे पकवा दिये। अब तो वह गली-गली फिर रहा है।

ठीका लेना—१ ज़िम्मा लेना। उ० मैंने आपके काम का ठीका नही लिया है। २ एकमुश्त रुपये पर किसी काम के करवाने का ज़िम्मा लेना। उ० ठीका लेकर मकान बनवा दो।

ठीकेदार होना—उत्तरदायी होना, हिमायती होना।

ठीहा होना—अड्डा होना। निवास-स्थान होना। उ० आपका कही ठीहा भी है या बिल्कुल खानाबदोश ही हैं।

ठुक जाना—हानि उठाना, खर्च हो जाना।

ठूंठ-खसूची—जिसमे विकास की भावना का अभाव हो।

ठेंगा दिखाना—१ अँगूठा दिखाना। २ चिढाना। ३ इन्कार कर देना। उ० मैं माँगने तो गया था, पर उसने ठेंगा दिखा दिया।

ठेंगा बजना—१ मार-पीट होना। उ० हमारे मुहल्ले के लोग ऐसे नीच हैं कि रोज़ाना ठेंगा बजता है। २ प्रयत्न निष्फल होना। उ० नौकरी के लिए सारे किये-कराये पर ठेंगा बज गया।

ठेंगे के नीचे होना—वश मे रहना।

ठेंगे पर नचाना—कुछ भी न समझना।

ठेंगे से—कुछ फिक्र नही। परवाह नही। उ० तो वे गये, मेरे ठेंगे से, मुझे क्या।

ठेंठी देना—१ किसी चीज़ का मुँह काग या ठेंठी से बद करना। २. न बोलने देना।

ठेकना—रोटी बनाना। उ० अकेले ठेकना बडा अच्छा लगता है और खूब खाया भी जाता है।

ठेका देना—तबला या ढोल पर ताल देना । उ० और कुछ तो नही पर ठेका देना अच्छा जानता है ।

ठेका बजाना—दे० 'ठेका देना' ।

ठेका भरना—१. घोडे का उछल-कूद मारना । उ० घोडा ठेका भर रहा है । २. बिरहा आदि मे ठेक गाना । ३ दे० 'ठेका देना' ।

ठेका-भेंट—ठेकेदार द्वारा दिया गया नज़राना । उ० मेरे नीचे बहुत से ठेकेदार काम करते है, पर मैं किसी से भी ठेका-भेंट नही लेता ।

ठेस देना—आघात या धक्का देना । उ० मेरे हृदय को तुमने बडी ठेस दी ।

ठेस लगना—मानसिक या शारीरिक धक्का लगना, सदमा पहुँचना । उ० उस बात से बडी ठेस लगी ।

ठेहुना लगना—बहुत कमज़ोर होना । उ० उस कुत्ते को ठेहुना लगता है ।

ठोंक-ठोंक कर लड़ना—जबरन लडना । ताल ठोक कर लडना । उ० दिन-दिन देत उरहनो आवै, ठुकि-ठुकि करत लरैया ।

ठोंकना-बजाना—देखना-सुनना, जांचना । उ० कोई भी चीज़ हो, ठोक-बजा कर लेनी चाहिये ।

ठोंक-पीट कर—ठठाकर, ज़बर्दस्ती, येन-केन-प्रकारेण ।

ठोक-पीट कर वैद्य बनाना—किसी तरह प्रयत्न करके किसी लायक़ बनाना ।

ठोकर उठाना—कष्ट सहना । हानि उठाना । उ० आपके लिये मुझे कितने ठोकर उठाने पडे हैं, मैं ही जानता हूँ ।

ठोकर खाता फिरना—इधर-उधर मारा-मारा फिरना । उ० क्या दिन भर ठोकरें खाते फिरते हो, क्यो नही कुछ काम करते ?

ठोकर खाना—१ नुक़सान सहना । उ० उसने कई बार ठोकर खायी, पर फिर भी ख्याल नही करता है । २. चलते मे ककड-पत्थर से चोट आना । उ० आज मैं रास्ते मे ठोकर खा गया । ३ जीविका के लिए मारे-मारे फिरना । उ० उसने बहुत ठोकर खायी, पर कही शरण न मिली । ३ धोखे मे आना । उ० मैं तो अनेक बार ठोकर खा चुका हूँ ।

ठोकर जडना—दे० 'ठोकर देना' ।

ठोकर देना—१ पैर से किसी को मारना । उ० सिपाही ने चोर को ऐसी ठोकर दी कि उसके मुँह से खून आने लगा । २ किसी को हानि मे डालना । ३ दुतकारना, डाँटना-फटकारना । ४. बेइज़्ज़त करना ।

ठोकर लगना—१ हानि होना । उ० मुझे इस काम मे ऐसी ठोकर लगी कि हमेशा के लिये होश हो गया है । २ पैर का किसी चीज़ से ज़ोर से लडना । उ० ठोकर लगने से गिर पडा । ३ ठेस लगना ।

ठोकरें खाना—दे० 'ठोकर खाना' ।

ठोकरो पर पड़ा रहना—बेइज्जत होकर भी दिन काटना । उ० मैं तो ठोकरो पर पडा रहता हूँ, क्या करूँ अगर काम छोड दूं तो जाऊँ कहाँ ?

ठोडी पकडना—१ प्यार करना । उ० माँ ने ठोडी पकड कर आशीर्वाद दिया २ खुशामद करके मनाना । उ० उसने ठोडी पकड कर कहा, परन्तु तुमने एक न सुनी । ३ मधुर शब्दो से गुस्सा दूर करना । उ० डाँटो नही, ठोडी पकड कर कहो ।

ठोडी पर हाथ धर कर बैठना—कुछ सोच-विचार मे बैठना । उ० क्यो ठोडी पर हाथ धर कर बैठे हो, क्या कोई खास बात है ?

ठोडी मे हाथ देना—दे० 'ठोडी पकडना' ।

ठोडी-तारा—सुन्दरी की ठुड्डी पर का तिल या गोदना । उ० उसका ठोडी-तारा बड़ा सुन्दर है ।

ठोसा दिखाना—१ आशा देकर समय पर निराश कर देना । उ० पहले तो कुछ कहा नही, समय पर ठोसा दिखा दिया । २ चिढाना । उ० उसे क्यो ठोसा दिखाते हो ?

ठोसे से—ढँगे या बल से । उ० ठोसे से आप नही आएँगे ।

ठौर-कुठौर—मौके-बेमौके, बुरे समय पर । उ० इसे भी घर मे रख दो, ठौर-कुठौर काम ही देगा ।

ठौर-ठौर तोड देना—बहुत ज्यादा मार मारना । मार कर हड्डी तोड देना । उ० चोरो ने उनकी ठौर-ठौर तोड दी ।

ठौर न आना—करीब न आना । दूर रहना । उ० जो भूत से नही डरेगा, उसके ठौर वह नही आयेगा ।

ठौर रखना—मार डालना । उ० डाकुओ ने बहुत

से आदमियो को ठौर रखा और कितनो को घायल कर दिया।

ठौर रहना–१ मारा जाना। काम आना। उ० लडाई मे बहुत से वीर ठौर रहे। २ जहाँ हो, वही रह जाना। उ० कुछ तो ठौर रहे, परन्तु ज्यादा भाग गए।

ड

डंक जलना–बुरा होना। उ० उसका डक जले, उसने मेरे लडके को अनायास ही मारा है।

डंक मारना–१ बिच्छू का काटना। २ कटु वचन कहना। उ० डक न मारो, वह क्या कहेगा?

डंका देना–दे० 'डका पीटना'।

डका पीटना या पीट देना–१ डुग्गी पीट कर कहना। उ० उस कुश्ती का डका पीट दिया गया है। २ दे० 'डका बजाना'।

डंका बजना–१ राज्य होना। शासन होना। उ० अब भारत मे भारतवासियो का डका बज रहा है। २ रोब या दब-दबा होना।

डंका बजाना या बजा देना–१ मशहूर करना। उ० उसने अपनी कारीगरी का डका सारे देश मे बजा दिया है २ मगल मनाना। उ० दशहरे मे हर जगह डका बजाया जाता है। ३ सल्तनत होना। उ० हुमायूँ के समय मे भिश्ती का भी एक दिन डंका बजा।

डके की चोट पर–डका बजा कर, सबको सुना कर। उ० मैं डके की चोट पर कह रहा हूँ कि तुम-जैसे चार को एक साथ पछाड सकता हूँ।

डँड़वारा खींचना–दे० 'डडा खीचना'।

डंड डालना–जुर्माना करना। उ० पचायत ने उस पर ४० रु० डड डाला है।

डंड पड़ना–१ व्यर्थ व्यय होना। उ० आज का खर्च तो डड ही पडा। २ जुर्माना होना। उ० तुम पर भी कुछ डड पडेगा।

डड पेलना–१ कसरत करना। उ० वह डड पेल रहा है। २ दड की कसरत करना।

डड भरना–हर्जाना देना। उ० अगर वहाँ जाओगे तो तुम्ही को सब डड भरना पडेगा।

डडा खींचना–दीवार बनाना। उ० पहले बाहर का एक डडा खीच लो, तब भीतर हाथ लगाओ।

डडा डालना–परीशान करना। उ० डडा न डालो, कभी मेरी भी बारी आयेगी।

डंडा दिखाना–मारने की धमकी देना।

डडा बजाते फिरना–इसी तरह बेकार घूमना। उ० उसका लडका दिन भर डडा बजाते फिरता है, उसे किसी काम मे लगा देते तो ठीक होता।

डडी मारना–कम तोलना। उ० बनिया लोग खूब डडी मारते हैं।

डंडे के जोर से–मार का डर दिखा कर, ज़बर्दस्ती।

डकार जाना–१ रकम ले लेना। उ० उस गरीब का रुपया जो डकार जायगा, उसे नरक मे भी जगह न मिलेगी। २ खा जाना। उ० गामा अपनी जवानी मे एक बकरी का मास डकार जाते थे।

डकार न लेना–१ धन लेकर न देना। उ० वह मेरा सैंकडो रुपया लेकर अब डकार तक नहीं लेता। २ कोई काम करके न बताना। उ० वह बडा घुइस है, सब करता रहता है, परतु डकार तक नही लेता।

डगडगा कर पानी पीना–एक बार मे बहुत-सा पानी पी लेना। उ० हाथी बहुत प्यासा था, डगडगा कर पानी पी गया।

डग देना–दे० 'डग भरना'।

डग भरना–कदम बढाना। उ० चौडे और लम्बे डग भरो, अभी बहुत दूर जाना है।

डग मारना–तेज़ चलना। उ० उसके साथ पैदल चलने मे हम पार नही पा सकते हैं। डग मारने मे वह एक ही है।

डगर बताना–१ युक्ति बताना। उ० क्या डगर बताते हो, मुझे सब मालूम है। २ राह बताना। उ० उसके डगर बताने पर न जाओ, नही तो भूल जाओगे। ३ शिक्षा देना। उ० चलो-चलो, मुझे डगर न बताओ।

डट कर खाना–खूब, भर पेट खाना। उ० अगर मैं डट कर खाऊँ तो पक्का सेर भर खा सकता हूँ।

डट जाना–१ जम जाना, जम कर किसी के मुक़ाविले मे खडा होना । उ० दिल डट गया है, इस सफे मिजगाँ के सामने ।

डटा रहना–ठहरे रहना । अडे रहना । उ० दुश्मन के सिपाही कई दिन तक डटे रहे ।

डपोरशख होना–दे० 'डरपोसख होना' ।

डपोरसख होना–डीग मारने वाला होना, केवल वात वनाने वाला होना । उ० तुम तो डपोर-सख हो, तुम्हारा क्या विश्वास ?

डव पकड कर कराना–ज़वर्दस्ती काम कराना । उ० मैं यह काम डव पकड कर सभी से करा सकता हूँ ।

डब मे आना–काबू मे आना । उ० जव डव मे आयेगा तो सब काम ठीक हो जायगा ।

डर खाना–भय मानना ।

डल का डल–वहुत-सा । उ० यहाँ डल का डल वेकार काग़ज़ रखा हुआ है, उसी को ले लो ।

डाँगर घसीटना–१ अपवित्र काम करना । उ० ब्राह्मणो का काम डाँगर घसीटना नही है । २ जानवरो का शव घसीट कर ले जाना । उ० कुत्ता एक डाँगर घसीट रहा था ।

डाँट-डपट करना–१ हिदायत करना । उ० डाँट-डपट करने से लडके ठीक रहते हैं । २. डाँटना ।

डाँट पिलाना–डाँटना ।

डाँट वताना–फटकारना, डाँटना । उ० लडको को हर वक्त डाँट वताना ठीक नही ।

डाँट मे रखना–अख़्तियार मे रखना । चगुल मे रखना । उ० माता-पिता को चाहिये कि अपने वच्चों को डाँट मे रखें ।

डाँड़ चलाना–नाव खेना । उ० मुझे डाँड चलाना नही आती, नही तो तुम्हे नदी के पार उतार देता ।

डाँड भरना–क्षतिपूर्ति करना ।

डाँड़ लेना–जुर्माना लेना । अर्थदड लेना । उ० पचायत ने उससे ५० रु० डाँड लिये ।

डाँडी मारना–दे० 'डडी मारना' ।

डाक आना–खत आना । डाकिया द्वारा आने वाली चीजो का आना ।

डाकगाडी वनना या होना–जल्दी-जल्दी चलना या कोई काम करना, या होना ।

डाक वैठाना–यात्रियो की सुरक्षा आदि के लिए स्थान-स्थान पर चौकी लगाना । उ० शेरशाह के समय मे डाक वैठाने की प्रथा प्रचलित हुई ।

डाक लगना–१ लगातार वहुत कै होना । २ वरावर खवर या हरकारो या चिट्‌ठी आदि का आना-जाना ।

डाक लगना–दे० 'डाक वैठाना' ।

डाक होना–वहुत तेज़ चलने वाला होना । उ० वडी जल्दी आये तुम तो डाक हो ।

डाका डालना–चोरी करना । लूटना । उ० मेरे घर मे चोरो ने डाका डाल कर सव सामान लूट लिया ।

डाका पडना–डाकुओ द्वारा लूटा जाना । उ० आजकल जगह-जगह डाका पड रहा है ।

डाढ़ गरम होना–१ घूस मिलना । उ० पुलिस वालो के डाढ आजकल खूब गरम हो रहे हैं । २ ताज़ा खाना मिलना । उ० कई दिनो से काम के पीछे डाढ गरम नही हुए ।

डाढ न लगना–१ विना चवाये निगल जाना । २ हाथ न लगाना । ३ न जुठारना ।

डाढ मार कर रोना–वहुत रोना, फूट-फूट कर रोना । उ० दामने कोह मे जो मैं, डाढ मार रोया । एक अब्रवाँ से उठ कर वे-अख़्तियार रोया ।

डाढा फूंकना–वहुत गर्मी होना । उमस होना । उ० आज तो ऐसा डाढा फूंक दिया है कि चैन ही नहीं मिलता ।

डाढा होना–दे० 'डाढा फूंकना' ।

डाढे मार-मार कर रोना–खूब जोर से छाती पीट कर रोना । उ० लडके की मृत्यु की खवर सुनते ही वह डाढे मार-मार कर रोने लगा ।

डाल का टूटा–एकदम ताज़ा । उ० यह डाल का टूटा आम है, जरा इसको तो चखिये ।

डाल झुकना–अनुकूल होना ।

डाल-डाल पात-पात–१ इधर उधर, २ प्रत्येक स्थान पर ।

डाल रखना–रख छोडना । उ० इसे अभी डाल रखो ।

डाली देना–किसी वडे अफसर को मेवे, फल और रुपये इत्यादि भेंट करना । उ० आज ठाकुर साहव कलक्टर साहव को डाली देंगे ।

डाली लगाना—'डाली देना'।

डावांडोल करना—१ परीशान करना। उ० मुझे डावांडोल न करो। २ अनिश्चित करना। हिला देना। उ० उसकी परिस्थिति डावांडोल मत करो।

डावांडोल फ़िरना—असमजस मे इधर-उधर घूमना। उ० मैं तो डावांडोल फिरता हूँ, कुछ समझ मे नही आता कि क्या करूँ?

डावांडोल होना—अव्यवस्थित होना, हिल जाना, अनिश्चित हो जाना। उ० उसकी परिस्थिति ऐसी डावांडोल हो गई है कि कुछ कहते नही वनता।

डिग्री जारी करना—फैसले को तामील कराना।

डिग्री होना—विजय होना। उ० उसकी डिग्री हो गई।

डिसमिस करना—वर्खास्त करना या खारिज करना। उ० साहव ने उसकी अपील डिसमिस कर दी।

डींग का तार न टूटना—अत्यधिक डीग मारना।

डींग मारना—वढ-वढ कर वातें करना। उ० क्या डीग मार रहे हैं, आपका पूरा हाल मैं जानता हूँ।

डींग हांकना—दे० 'डीग मारना'।

डीठ चुराना—दृष्टि छिपाना। सामने न देखना। उ० उससे डीठ क्यो चुराते हो?

डीठ छिपाना—दे० 'डीठ चुराना'।

डीठ वाँधना—ऐसा जादू कर देना कि सामने की चीज न सूझे। उ० जादूगर ने सब की डीठ वाँध दी।

डीठ मारना—१ नजर लगाना। उ० किसी ने डीठ मार दी है, इसी से लडके की तवीयत खराव है। २ एक झटके मे देख लेना। उ० डीठ मार लो, देर तक क्या देखोगे? ३ आँख मारना।

डीठ रखना—१ देख-भाल रखना। उ० जव तक मैं न आऊँ, मेरे वाल-वच्चो पर डीठ रखना। २ कडी दृष्टि रखना। ३ आँखों पर चढाये रखना। उ० होशियार रहना। वे तुम पर भी डीठ रखते हैं।

डीलडौल का होना—हृष्ट-पुष्ट शरीर का होना। उ० अव तो मेरा भाई खूब डीलडौल का हो गया है। पहले वडा कमजोर था।

डुगडुगी पीटना—१ मुनादी करना। उ० आज कांग्रेस की सभा होगी, कोई डुगडुगी पीट रहा था। २ अधिकार की घोषणा करना।

डुवकी खाना—१ लापता हो जाना। उ० तुम अक्सर डुवकी खाया करते हो, आखिर कहाँ जाते हो? २ पानी मे डुवकी खाना। उ० डुवकी खाने मे वडा मजा मिलता है। ३ हानि उठाना। ४ इस वार तो तुम भी डुवकी खा गये।

डुवकी मारना—१ लुप्त हो जाना।

डुवकी लगाना—१ पानी मे गोता लगाना।

डूंगर की ओट मे छिपना—छोटी चीज की आड मे वडी चीज छिपना।

डुवा या डुवो देना—कही का भी न रखना, वहुत अहित करना।

डूव जाना—१ मारा जाना। उ० इस लेन-देन के व्यापार मे मेरे भी हजारो रुपये डूव गये। २ गायव हो जाना। उ० रहता है रहता है, कही डूव जाता है। ३ प्रतिष्ठा डूवना। उ० वना-वनाया नाम डूव गया। ४ कुछ कर न सकना। उ० उसके सामने जाते ही वह भी डूव गया नही तो वडा वहकता था।

डूवता-उतराता रहना—१ सोच-विचार मे निमग्न रहना। उ० हम महीनो मे तुम्हारे ही विषय मे डूवते-उतराते रहते है। २० दे० 'जी डूवना'।

डूवती नैया पार लगाना—आफत या कष्ट से वचाना। उ० डूवती नैया पार लगाना सच्चे मित्रो का ही काम है। भगवान ही मेरी डूवती नैया पार लगा सकते हैं।

डूवते को तिनके का सहारा होना—कष्ट मे पडे हुए को थोडी भी मदद होना। असहाय को कुछ भी सहारा होना। उ० दुर्भिक्ष-पीडित वगाल को यदि कुछ भी अन्न मिल गया होता, तो डूवते को तिनके का सहारा हो जाता।

डूवते को थाह मिलना—विपत्ति मे सहारा होना। उ० हमारी इज्जत चली गई होती, पर आप आ गये और डूवते को थाह मिल गया।

डूव मरने की वात—अत्यधिक लज्जा की वात।

डूवा आसामी—दिवालिया। उ० वह तो डूवा आसामी है। उसे भला कुछ कैसे दिया जा सकता है?

डूबा नाम उछालना–गिरी इज्जत फिर से उठाना। उ० मेरे परिवार मे यही एक आदमी है जो डूबा नाम उछाल सकता है ।

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदा बनाना–आपस मे फूट रखना। उ० डेढ ईंट की मस्जिद जुदा बनाने से काम न होगा। आपस मे मेल रखो।

डेढ चावल की खिचड़ी अलग पकाना–अपनी राय अलग रखना। उ० अरे भाई पचायत मे डेढ चावल की खिचडी अलग पकाने से काम नही चलेगा। आखिर यही हालत रही तो फैसला कैसे होगा।

डेढ चावल की खिचडी पकाना–अपनी अकेली राय सबसे अलग रखना। उ० यदि उन्नति करना चाहते हो तो डेढ चावल की खिचडी पकाना छोड दो।

डेढ़ चुल्लू लोहू पीना–जान ले लेना। उ० जब तक मैं अपने दुश्मन का डेढ चुल्लू लहू न पी लूंगा, चैन न लूंगा।

डेढ पसली का पहलवान–(व्यग्य) दुबला-पतला होने पर भी खूब झगडने वाला।

डेढ बीता का कलेजा करना–बडी हिम्मत करना। उ० यह काम करना हो तो डेढ बीते का कलेजा करो।

डेरा उठाना–अस्थायी निवास को छोडकर चले जाना।

डेरा कूच करना–मृत्यु हो जाना।

डेरा-डंडा उखाडना–सामान-सहित कही दूसरी जगह जाना। उ० उसने मेरे सैकडो रुपये लेकर अपना डेरा-डडा उखाड लिया।

डेरा डालना–पडाव डालना। ठहरना। उ० अब बहुत तेज़ धूप हो गई है, यही डेरा डाल लिया जाय।

डेरा पडना–टिकाव पडना। टिक जाना। उ० मेरे गाँव मे नटो के बहुत से डेरे पडे हैं।

डेरे ठीक करना–मकान ठीक करना। उ० उन लोगों ने अपने-अपने डेरे ठीक कर लिय हैं।

डोंगा डुबाना–बर्बादी करना।

डोब देना–डुबो देना। उ० मेरी साडी किसी हल्के रग मे डोब दो।

डोर पर लगाना–रास्ते पर लाना।

डोर मजबूत होना–जीवन के दिन शेष रहना। उ० अभी तो उनकी डोर मजबूत है। जान पडता है, कम से कम २० वर्ष तो जिन्दा रहेंगे ही।

डोर लगना–मुहब्बत होना। उ० उसकी एक छोटी जाति की स्त्री से डोर लग गई है।

डोर होना–मोहित होगा, मुग्ध होना। उ० तुम तो उसी पर डोर हो।

डोरा डालना–अपने प्रेम मे फँसाना। उ० आपने बहुतो पर डोरा डाला, पर कही सफल न हुए।

डोरा फेंकना–प्रेम मे फँसाना।

डोरी ढीली करना–देखरेख कम करना। उ० इस अवस्था मे बच्चो पर डोरी ढीली करना ठीक नही है, नही तो सब खराब हो जायेंगे।

डोल-डाल होना–पाखाना होना। उ० जाओ डोल-डाल हो लो।

डोला आना–१ स्त्री या रानी की शिविका आना। २ एक विशिष्ट तरह के विवाह के लिए जो छोटी जातियो मे होता है। ३ पत्नी का पति के घर लाया जाना। उ० कल उनका डोला आएगा।

डोला देना–१ लडकी की शादी उसके ससुराल मे करना। उ० डोला देकर जल ग्रहण करूँगा। २ किसी सरदार या राजा को उपहार-स्वरूप अपनी बेटी ब्याहना। उ० अकबर-कालीन राजपूत राजे मुगलो को डोला देते थे।

डोला निकालना–लडकी को विदा करना। उ० डोला निकाल दो, बहुत देर हो रही है।

डोली मे पैर डालना–दे० 'दौरी मे पैर डालना'।

डोली से उतरते ही– विवाह के तुरन्त बाद।

डौंडी देना–दे० 'डका देना'।

डौंडी पीटना–१. सबसे कहते फिरना। उ० अपनी बात अपने तक रखो, डौडी पीटने से क्या लाभ ? २ घोषित करना। उ० बाजार मे वह किसी सरकारी नोटिस के लिये डौंडी पीट रहा ह।

डौंडी बजना– १ दोहाई फिरना। उ० लौडी के घर डौडी बाजी, ओछो निपट अजानो। २ घोषणा होना।

डौल डालना–ढाँचा बनाना। उ० केवल डौल डालने से ही काम न बनेगा। उसे शुरू भी करो।

डौल-डाल होना—१ आशा की झलक होना। उ० तुम्हारे परिश्रम से तो पास होने का डौल-डाल होता दीखता है। २ पाखाना होना। उ० डौल-डाल होने जा रहे हो क्या ?

डौल पर लाना—१ अपना काम निकालने लायक बनाना। उ० यदि उसे डौल पर लाने मे तुम सफल हुए तो तुम्हारा काम अवश्य बन जायगा। २ काट-छाँट कर डील-डौल का बनाना। उ० इस कुर्ते को डौल पर लाओ।

डौल बाँधना—दे० 'डौल लगाना'।

डौल लगाना—उपाय करना। टिप्पस भिडाना। उ० बहुत डौल लगाया, पर कही से रुपया न मिला।

डौल से लगाना—तरीके से लगाना। उ० दुकान पर हर एक चीज़ डौल से लगानी चाहिए, ताकि ग्राहक आकर्षित हो।

डौला होना—युक्ति बैठना।

ड्योढी का खुलना—दरबार मे आने-जाने की आज्ञा मिलना। उ० अब तो सबके लिए ड्योढी खुली रहती है। किसी को कुछ रोक-टोक नही है।

ड्योढी पार न करना—कुएँ का मेढक होना। उ० यो ही बडबडाते रहते हो, कभी ड्योढी तो पार की नही है, और बनते हो सैलानी।

ड्योढ़ी बन्द होना—राजा या रईस के यहाँ जाने की मनाही होना। उ० नयी महारानी के आने के कारण महाराज की ड्योढी बन्द है।

ड्योढी लगना—दरवाज़े पर चौकीदार का बैठना। उ० बडे-बडे राजाओ के यहाँ ड्योढी लगती है। बिना आज्ञा के कोई नही जा सकता।

ड्राइंग खींचना—चित्र बनाना। उ० ड्राइग खीचने मे उसका हाथ साफ है।

ड्रेसिग करना—मरहम-पट्टी करना। उ० नर्स ड्रेसिग कर रही है।

ढ।

ढंग करना—'दे० ढग निकालना'।

ढग का होना—१ किते का होना, ठीक होना। उ० मकान तो ढग का है, परन्तु किराया अधिक है। २ व्यावहारिक होना। उ० मैक आर्थर युद्ध के मामलो मे बडे ढग का आदमी था, परन्तु निकाल दिया गया। ३ सुन्दर होना। उ० घोडे की चाल तो अच्छी है, परन्तु यह ढग का नही है।

ढग निकालना—कोई रास्ता या युक्ति मालूम करना। काम करने की युक्ति सोचना। उ० ढग निकालो तो इसे भी कर डाला जाय।

ढग पर चढना—अपने स्वार्थ के अनुकूल होना। उ० इस वक्त वह ढग पर चढा है, जो कुछ करना हो करा लो।

ढंग पर लाना—अपने काम के योग्य बनाना। उ० बडे परिश्रम से यह बजर भूमि ढग पर लाई गई है, अब इसमे कुछ पैदा होगा।

ढंग बरतना—दिखावटी बर्ताव करना। उ० समय पडने पर ढग बरतना सभी को आता है।

ढंग से बरतना—१ मितव्ययिता से काम चलाना। उ० केवल १२५ रु० तो पाता है, यदि ढग से न बरते तो कैसे काम चले ? २ अच्छी तरह से व्यवहार करना। उ० वह सभी से बडे ढग से बरतता है।

ढँढोरा पीटना—दे० 'डका पीटना'।

ढँढोरा फेरना—दे० 'डका पीटना'।

ढई देना—भोजन के लिए किसी के यहाँ जा अडना। उ० बेकार ढई न दो। यह राशनिंग का जमाना है।

ढकर-ढकर पानी पीना—दे० 'डगडगा कर पानी पीना'।

ढकेल देना—दे० 'धकेल देना'।

ढकोसला होना—ऊपरी बनावट होना। उ० तुम भी किस चक्कर मे पडे हो, यह सब स्त्रियो के ढकोसले हैं।

ढक्का बजाकर—खुले आम, घोषणा करके।

ढचर फैलाना—१ आडबर करना। २ कोई काम शुरू करना। ३ धोखा फैलाना।

ढचर बाँधना—बहुत आडबर फैला रखना। उ० ज्यादा ढचर बाँधना भी ठीक नही।

ढढ्ढू का पाडा होना—उम्र मे काफी बडा होना। बडा होना। उ० ढढ्ढू का पाडा हो गया, पर अकल नही आई।

ढपोरशख होना—दे० 'डपोरसख होना'।

ढपोरसंख होना—दे० 'डपोरसख होना'।

ढब आना—किसी काम के करने का तरीका मालूम होना। उ० अब इस काम का ढब आ गया।

ढब का होना—दे० 'ढग का होना'।

ढब की बात—मौके की बात। उचित बात। संतुलित बात। उ० ढब की बात करो तो सभी मानेंगे, इधर-उधर की करने से क्या लाभ ?

ढब डालना—अच्छी या बुरी आदत डालना। उ० यह तुमने अपने लडके मे कैसा ढब डाला है कि किसी से कुछ बोलता ही नही।

ढबढब करना—१ ढोल बजाना। २ तबला आदि को गलत बजाना।

ढब पर चढ़ना—काबू मे आना। वश मे आना। उ० इश्क के ढब पर न कोई बुजुर्ग इन्सान चढा। इसके काबू पै चढा तो यही नादान चढा।

ढब पर चढाना—इस अनुकूल बनाना कि अपना काम निकल सके। उ० उसे किसी तरह ढब पर चढाओ, नही तो हानि होगी।

ढब पर लगाना—दे० 'डोर पर लगाना'।

ढब पर लाना—दे० 'डोर पर लगाना'।

ढय पडना—१ अचानक आकर ठहर जाना। उ० तुम यहाँ ढय पडे! मुझे तो यह पता भी नही था कि तुम आने वाले हो! २ गिर पडना। उ० सँभलो, नही तो ढय पडोगे।

ढर्रा डालना—आदत डालना। उ० उसने चलने का ढर्रा डाल रखा है।

ढर्रे पर आना—बिगडे काम का सुधरना।

ढर्रे पर झुकना—किसी पद्धति पर विशेष आग्रह करना या का ही अनुसरण करना।

ढलका लगना—आँख से बहुत पानी गिरना।

ढलती उम्र—प्रौढावस्था।

ढलती-फिरती छाया—ऐसी चीज जो छाया की तरह स्थायी हो। उ० जवानी ढलती-फिरती छाया है, इस पर गर्व न करो।

ढला होना—दे० 'साँचे मे ढला होना'।

ढह पडना—दे० 'ढय पडना'।

ढाँडा चलना—जोरो से दस्त होना।

ढाँसना—खाँसना, कुत्ते की तरह खाँसना। उ० क्या ढाँस रहे हो, किसी डाक्टर को दिखाओ।

ढाई ईंट की मस्जिद अलग बनाना—जो सब कहें, उसके विरुद्ध कहना। उ० ढाई ईंट की अपनी मस्जिद अलग न बनाओ, सबके साथ चलो।

ढाई घडी की आना—तुरन्त मृत्यु आना। उ० तुझे ढाई घडी की आवे। [यह एक गाली है।]

ढाई चावल की खिचडी अलग पकाना—अपनी राय अलग रखना। उ० जब तुम्हें अपने ढाई चावल की खिचडी अलग ही पकानी है तो मुझे क्यों बुलाया ?

ढाई चुल्लू लहू पीना—दुःसह सजा देना। बुरी तरह बदला लेना। मार डालना। उ० तेरा ढाई चुल्लू लहू पीऊँगा, तब मुझे कल पडेगा।

ढाई दिन की बादशाहत होना—थोडे समय का अधिकार मिलना। उ० ढाई दिन की बादशाह है, जो मन चाहे कर लो।

ढाई माशे का आदमी—दुबला-पतला आदमी।

ढाक के तीन पात होना—थोडा परिवार होना। उ० ढाक के तीन पात हैं, उनका खर्च ही क्या है ? २ हमेशा से गरीब रहना। उ० वह कब धनी हुआ, सदा के तो ढाक के तीन ही पात हैं। ३ हमेशा एक-सा रहना।

ढाटा बाँधना—दाढी मे कपडा बाँधना।

ढाटी चढाना—दे० 'ढाटी देना'।

ढाटी देना—मुँह बद करना, बोलने से रोकना, उ० चोरों ने ढाटी देकर उसे मार डाला।

ढाटी लगाना—दे० 'ढाटी देना'।

ढाड़ मारना—खूब जोर-जोर से रोना। उ० वह इस समाचार को सुनते ही ढाड मार कर रोने लगी।

ढाढस देना—हिम्मत देना, समझाना-बुझाना, तसल्ली देना। उ० किसी तरह उसे ढाढस देकर शांत करो।

ढाढस बँधना—हिम्मत बँधना।

ढाढस बँधाना—दे० 'ढाढस देना'।

ढा देना—१ गिरा देना। उ० उसने इस दीवाल को इतनी मेहनत से बनाई थी, पर इंजीनियर ने उसे ढा देने की आज्ञा दे दी। २. समाप्त कर देना। उ० आपने मेरी सारी आशाएँ ढा दी।

ढाल बाँधना—ढाल हाथ मे लेना।

ढाल होना—रक्षक होना।

ढिंढोरा पीटना–ढोल बजा कर सर्वसाधारण को किसी बात की सूचना देना। उ० जो मैं ऐसा जानती प्रीत किये दुख होय। नगर ढिंढोरा पीटती प्रीति करो जनि कोय।

ढिंढोरा बजाना–दे० 'ढिंढोरा पीटना'।

ढिंढोरा पिट जाना–चारों ओर प्रचार होना।

ढील करना–सुस्ती करना।

ढील डालना–नियन्त्रण में कमी करना।

ढील देना–आज़ाद छोड़ देना। नियन्त्रण न रखना। उ० अगर लड़के को ढील दोगे, तो वह खराब हो जायगा।

ढील पड़ना–बाल में जूँ पड़ना। उ० ढील पड़ गए हैं, सर खुजला रहा है।

ढीला काम करना–सुस्ती से कार्य करना।

ढीला पड़ जाना–१ सुस्त हो जाना। कमज़ोर हो जाना। उ० क्यों ढीले पड़ गये हो, क्या बीमार हो? २ नरम होना। उ० ज़रा भी ढीले पड़े कि वह सिर पर चढ़ जाएगा। ३ शिथिल पड़ना। उ० उसका उत्साह ढीला पड़ गया है।

ढीली आँख–मद-भरी चितवन, अधखुली आँख। उ० देह लग्यो ढिग गेहपति, तऊ नेह निरबाहि। ढीली अँखियन ही इतै गई कनखियन चाहि।

ढीली छोड़ना–दे० 'ढील देना'।

ढुक्का लगना–किसी बात को सुनने या देखने के लिए कहीं छिपना। उ० वह ढुक्का लगा होगा, ज़रा धीरे-धीरे बात करो।

ढुंका देना–छिपकर देखना। उ० वह ढुंका देकर देख रहा है।

ढूंढ़ना-ढांढ़ना–खोजना या तलाश करना। उ० ढूंढढांढ कर कहीं से १० रु० लाओ।

ढूंढे न पाना–बिल्कुल पता न लगाना। उ० जो पूछना हो पूछ लो, नहीं तो उन्हें काल में ढूंढे न पाओगे।

ढेंढा फूलना–गर्भ रहना। उ० [illegible] बच्चा[illegible] भी [illegible] हुआ और उसका ढेंढा फिर फूल गया।

ढेंढर फूटना–आँख का फूट जाना। उ० [illegible] तो ढेंढर फूट गया। २ [illegible] निकलना। ३ कली का फूल होना।

ढेर करना–मार कर गिरा देना। उ० लड़ाई में उसने मार कर ढेर कर दिये।

ढेर रहना–१ बहुत थक जाना। थक कर चूर हो जाना। उ० हिरण भागते-भागते ढेर रह गया। २ गिर कर मर जाना। उ० आदमी ढेर रह गया।

ढेर हो जाना–१ गिर कर मर जाना। उ० युद्ध में अनेक बहादुर ढेर हो गये। २ ध्वस्त होना, गिर पड़ना। उ० मकान ढेर हो गया।

ढोल के अन्दर या में पोल–झूठी स्थिति, खोखला व्यक्ति, खोखली बात।

ढोल-दमामा–बाजा-गाजा, धूम-धाम। उ० बहुत ढोल-दमामे से आ रहे हैं।

ढोलना हाथों पर होना–हर वक्त [illegible] की कसम खाना। उ० दीदे फूटेंगे ऐसी बातों पर। हर घड़ी ढोलना है हाथों पर।

ढोल पीटना–दे० 'डंका पीटना'।

ढोल बजाना–दे० 'डंका पीटना'। उ० [illegible] ब्याह [illegible] है, [illegible] तो नेह बनाय। पायन बेड़ी पड़त हैं ढोल बजाय-बजाय।

ढोल गाता रहना–इधर-उधर [illegible] फिरना। उ० वह ढोल गाता रहता है, उसे घर के काम से क्या मतलब?

ढोलावली करना–किसी [illegible] का [illegible] बनाना।

त

तक छाना–आतंक छा जाना। उ० [illegible] तो चोरों का तक छाया हुआ है।

तंग आना–घबरा जाना। आजिज़ आना। उ० हम तो तुमसे तंग आ गये हैं, तुम नहीं चले भी जाते तो ठीक होता।

तंग करना–१ कष्ट देना। [illegible]। उ० [illegible] को तंग करके क्यों उनसे

तंगदस्त होना–दे० 'तंग हाथ होना'।

तंग दिल होना–[illegible] या छोटे दिल का होना।

तंग रहना–१ [illegible]। उ० [illegible] पैसा हुआ, [illegible] २ [illegible] में रहना। उ० [illegible] है, कुछ [illegible]।

तंग-हाथ होना–हाथ मे पैसे न रहना या न होना। उ० इधर दो वर्ष मे मेरा हाथ तग हो गया है। मैं बहुत तए-हाथ हूँ, आपको कहाँ से दूँ।

तंगहाल होना–१ दे० 'तग-हाथ होना'। २ बीमार होना। उ० वह तो बडा तगहाल है। ३. आफत मे पडना। उ० कहो मत, इस समय तो मैं तगहाल हूँ।

तंग होना–१. दे० 'तग आना'। २ छोटा होना, न अटना। उ० यह कुर्ता तग होता है।

तंगी उठाना–धन के अभाव के कारण कष्ट उठाना।

तत निकालना–१ असलियत मालूम करना। उ० उनका तत निकालना चाहते हो तो रमेश से पूछ लो। २ आशय समझना। उ० मैंने तो उसी समय तत निकाल लिया कि वह एक पैसा भी न देगा।

तंत-मंत–दे० 'मत-तत'। उ० के जिव तत-मन सौं हेरा।

तंदूर झोंकना–नीच मे नीच या तुच्छ काम करना। उ० मैं तदूर झोकूंगा, पर आपकी नौकरी न करूँगा।

तम्बू बनाना–अधिकार करना। उ० अँग्रेजो ने धीरे-धीरे सारे भारत पर तम्बू तान दिया।

तअल्लुक़ रखना–१ मैथुन-सबधी सम्बन्ध रखना। उ० वह बहुत-सी लडकियो से तअल्लुक रखता है। २ सपर्क रखना।

तकदीर का खेल होना–१ भाग्य का लिखा सच होना, भाग्य मे जो हो, उसका घटित होना। उ० तकदीर का खेल है, मैं किसको दोष दूँ?

तक़दीर का पलटा खाना–भाग्य फिरना।

तकदीर का मुँह फेर लेना–बुरा समय आना। उ० तकदीर ने मुँह फेर लिया है, क्योकि तुम इतने अच्छे होकर भी फेल हो रहे हो। तकदीर ने मुँह फेर लिया है, नही तो उनकी हस्ती नही थी कि डाँट देते।

तकदीर खोटी होना–बुरे दिनो का आना, अभाग्य होना।

तकदीर चमकना–दे० 'तकदीर जागना'।

तकदीर जागना–भले दिन आना, भाग्य अच्छा होना। उ० मेरी भी तकदीर जागने वाली है।

तकदीर ठोंकना–क़िस्मत को कोसना। उ० अब अपनी तकदीर ठोको, जो होने वाला था हुआ।

तकदीर फूट जाना–दे० 'तकदीर बिगड़ना'।

तकदीर बिगड़ना–बदक़िस्मत होना।

तक़दीर लड़ना–काम ठीक होना। किस्मत से विजय पाना। उ० जाइये अगर तकदीर लड गई तो इस बार कुछ लाभ हो जायगा।

तक़दीर लौट जाना–भाग्य खराब हो जाना।

तकदीर सीधी होना–दे० 'किस्मत जागना'।

तकदीर सो जाना–दे० 'किस्मत बिगडना'।

तकलीफ उठाना–दुःख सहना। उ० अगर इस समय तकलीफ उठा कर पट लोगे तो बाद मे आराम करोगे।

तकले से बल निकालना–सारी शेखी निकाल देना, दुरुस्त कर देना। उ० तुम जरा ठीक से रहो, नही तो तुम्हारे तकले मे बल निकालते मुझे देर न लगेगी।

तकल्लुफ करना–व्यर्थ का बहुत अधिक शिष्टाचार दिखाना। उ० तकल्लुफ न कीजिए, मैं कोई मेहमान नही हूँ।

तकल्लुफ का–बहुत अच्छा, बढिया।

तकिया करना–भरोसा करना। उ० आप पर वह तकिया नही करता।

तकिया-कलाम होना–बात-बात मे किसी शब्द के कहने की आदत होना। शकुन तकिया होना। उ० 'राम जाने' तो उसका तकिया-कलाम है।

तख्त उलटना–दे० 'तख्ता उलटना'।

तख्त का तख्ता होना–१ राज्य का बर्बाद होना। २. बादशाहत का समाप्त होना।

तख्त की रात–सुहागरात। उ० कल तुम्हारी तख्त की रात है। [इसका प्रयोग मुसलमानो मे होता है।]

तख्त छोड़ना–बादशाहत छोडना। उ० वे तख्त छोड कर साधू बने हैं।

तख्त पर बैठना–राजा होना।

तख्ता उलटना–१ बना-बनाया काम खराब होना। उ० तुमने तो तख्ता ही उलट दिया। २. राज्य के शासन को बदलना। उ० समाजवादी कांग्रेस से अलग होकर तख्ता उलटने के फेर मे हैं।

तख़्ता हो जाना—अकड जाना, एकदम सीधा और कडा हो जाना। उ० रात भर पानी मे रहने के कारण साधू तख़्ता हो गया है।

तख़फ़ीफ़ मे लाना—किफायत करना। काट-छाँट करना। उ० सबको अपने व्यर्थ के व्यय तख़फ़ीफ़ मे लाने चाहिये।

तग़मा बिठाना—सिक्का बिठाना, रोब जमाना। उ० यहाँ आप अपना तगमा नही बिठा सकते।

तजवीज़ करना—फ़ैसला करना। उ० देखें कलक्टर साहब क्या तजवीज़ करते हैं?

तजुरबा करना—अनुभव प्राप्त करना। उ० दुनियाँ के हर एक काम का तजुरबा करना चाहिये।

तटस्थ होना—किसी भी तरफ न होना। उ० झगडा हुआ तो मैं भी तटस्थ नही हो सकता।

तड़क कर जवाब देना—दे० 'तडख कर बोलना'।

तडख कर बोलना—बेमुरौव्वती से जवाब देना, बिगड कर जवाब देना। उ० वह तो ऐसा तडख कर बोलता है कि दिल खट्टा हो जाता है।

तडाक-पडाक—चटपट, तुरत। उ० तडाक-पडाक यह काम कर डालो।

तडातडी करना—जल्दी करना। उ० तडातडी न करो नही तो काम खराब हो जायगा।

तड़ाभडी पड़ना—जल्दी पडना, घबराहट होना। उ० क्या तडाभडी है कि इस तरह घबराए हो?

तडी जडना—दे० 'तडी लगाना'।

तडी देना—पट्टी पढाना, धोखा देना। उ० तडी देकर उस दिन आप निकल आये।

तड़ी लगाना—दे० 'तडी देना'।

तडी बताना—चाँटे मारना।

तड़ी होना—रुआब होना, दबदबा। उ० इस शहर मे अपनी तडी है।

तत्ता तवा—झगडालू, लडाका। उ० तुम तो तत्ते तवे मालूम होते हो।

तत्तो-थमो करना—झगडा शान्त करना।

तदारुक करना—सज़ा देना। उ० उस बेहया पर तदारुक करने का भी क्या असर हो सकता है?

तन का तप मिटाना—दे० 'तन की तपन मिटाना'।

तन की तपन बुझाना—दे० 'तन की तपन मिटाना'।

तन की तपन मिटाना—१ अपनी इच्छा पूरी करना। उ० आज तन की तपन मिटा लो फिर शिकायत न रहे। २ दिल के गुबार निकालना। उ० भरपेट गाली देकर तन की तपन मिटा लो। ३ भूख मिटाना ४ बीमारी दूर करना।

तन की दशा भूल जाना—देह का ज्ञान न रहना, आत्म-विस्मृत होना।

तन को लगना—१ शरीर को ताकतवर करना। शरीर को लाभ पहुँचाना। उ० बाज़ार की चट-पटी चीज़े तन को नही लगती हैं। २ जी मे बैठना। उ० जब बात तन को लग जाय तो तब शुरू करो।

तन गलाना—कष्ट सहना।

तन छूटना—मृत्यु होना।

तन जाना—मिज़ाज़ दिखाना।

तन तोडना—लडाई लडना।

तन दिखाना—सभोग कराना। [अशिष्ट भाषा मे प्रयुक्त।]

तन देना—ध्यान देना। उ० इधर भी तन दो।

तन-मन मारना—कामनाओ को वश मे करना। उ० महात्मा लोग तन-मन मार कर जीवन बिताते हैं।

तन-मन से करना—बहुत मेहनत से करना। उ० अगर काम को तन-मन से करोगे तो अवश्य ही सफलता मिलेगी।

तन मे आग लग जाना—अत्यधिक रोष होना।

तन-मन सौंपना—आत्म-समर्पण करना।

तन मे फूले न समाना—बहुत प्रसन्न होना। उ० जब वह सुनेगी कि मेरा पुत्र प्रथम श्रेणी मे पास हुआ है तो तन मे फूले न समायेगी।

तपन बुझाना—१ दे० 'तन का ताप मिटाना'। २ गर्मी शात करना। उ० साये मे आकर तपन बुझा लो।

तपस्या करना—बहुत मेहनत करना। उ० इसका तो भाग्य ही खराब है, दो साल से तपस्या कर रहा है, पर पास ही नही होता।

तपाक बदलना—क्रोधित होना। उ० आप तपाक क्यो बदलते है? मैंने तो कुछ कहा भी नही।

तपौनी का गुड–तपौनी की पूजा का प्रसाद, जो ठग लोग अपनी मडली मे लाने के पहले किसी आदमी को खिलाते हैं।

तपौनी का गुड़ खाना–ठग होना। उ० तुमने भी तपौनी का गुड खाया है क्या ?

तफसीर करना–विस्तार के साथ वर्णन करना।

तफसील करना–साफ-साफ देना या लिखना। न० इस यात्रा मे जो भी व्यय आपने किया है, सबकी तफसील करके मुझे दीजिये। उसे फ़ाइल मे रखना है।

तबदील हय्यत करना–वेश बदलना, दूसरा रूप धारण करना। उ० जासूस तबदील हय्यत करके घूम रहे है।

तबर्रा करना–बुरा-भला कहना।

तबर्रा भेजना–लानत भेजना, नफरत करना। उ० तबर्रा भेजता हूँ मैं ऐसे रुपयो पर।

तबला उतरना–तबले की बद्धी का ढीला हो जाना।

तबला उतारना–तबले की बद्धी का ढीला करना। उ० तबला उतार दो, अब नही बजेगा।

तबला खनकाना–१ नाच-रग होना। उ० आजकल उनके यहाँ रोज़ाना तबला खनका करता है, कोई खुशी की बात हो गई। क्या ? २ तबला बजना। उ० सुनो कही तबला खनक रहा है।

तबला चढ़ाना–बजाने के लिए तबले की बद्धी को कसना। उ० तबला चढाओ, जरा कुछ हो।

तबला चढाना–दे० 'तबला खनकाना'।

तबाकी कुत्ता–खाने-पीने का साथी, मतलबी यार। उ० तुम तो तबाकी कुत्ते हो।

तबियत–दे० तबीयत।

तबीयत आना–१ प्रेम होना। उ० इस जीवन का क्या ठीक है, बहुतो पर तबीयत आई और बहुतो पर गई। २ लेने की इच्छा होना। उ० इस साइकिल पर तबीयत आ गई है।

तबीयत उलझना–१ जी घबराना। उ० अब तो यहाँ तबीयत उलझ रही है। २ दिल फँसना, मुहब्बत हो जाना। उ० दोनो की तबीयत उलझ गई है।

तबीयत का साफ़–दुर्भावना-विहीन व्यक्ति।

तबीयत जाना–दे० 'तबीयत फिरना'।

तबीयत खराब होना–१ बीमार होना। उ० बहुत दिनो से मेरी तबीयत खराब है। २. जी मिचलाना। उ० जाने क्यो आज तबियत खराब है। ३ दिल चल जाना। उ० उसे देख कर तबियत खराब हो गई।

तबीयत पर जोर डालना–१ ख़ूब ख्याल करना। उ० तबीयत पर ज़ोर डालो तो शायद समझ सको। २ जिधर तबीयत न जाती हो, उधर उसे जाने को मजबूर करना।

तबीयत पर बोझ डालना–दे० 'तबीयत पर जोर डालना'।

तबीयत फडक उठना–१ जोश आना। उ० हल्दीघाटी पुस्तक को पढने से तबीयत फडक उठती है। २ प्रसन्न होना।

तबीयत फड़क जाना–दे० 'तबीयत फड़क उठना'।

तबीयत फिरना–१ जी फिरना, जी हटना। उ० जिससे तबीयत फिर जाती है, फिर बोलने को जी नहीं चाहता। २ घृणा होना।

तबीयत बहाल होना–१ खुशदिल होना। उ० जब से वह यहाँ आया, उसकी तबीयत बहाल है। २ स्वस्थ होना।

तबीयत बिगडना–दे० 'तबीयत खराब होना'।

तबीयत भरना–१ संतोष होना। तसल्ली होना। उ० मैं तो समझता हूँ कि अब आपकी तबीयत नौकरी से भर गई होगी। २ सतोष करना, तसल्ली करना। उ० जाकर उसकी तबीयत भर दो। ३ मन भरना, जी ऊबना। उ० अब तो व्यापार से तबीयत भर गई है।

तबीयत लगना–१ प्रेम होना। उ० उनसे तबीयत लग गई है। २ ध्यान लगा रहना। उ० इधर कई दिनो से उनकी चिट्ठियाँ नही आई जिससे तबीयत लगी हुई है।

तबीयत लगाना–१ चित्त का किसी काम मे प्रवृत्त करना। दिल लगाना। उ० हर एक काम को तबीयत लगा कर करना चाहिये। २ प्रेम करना। उ० उस पर तबीयत न लगाओ।

तबीयत लडाना–दे० 'तबीयत पर ज़ोर डालना'।

तबीयत हरी होना–खुश होना।

तबीयत होना–इच्छा होना। जी चाहना। उ० अब किसी व्यापार मे लगने की तबीयत होती है।

तबेले की बला बन्दर के सिर जाना–किसी की बला किसी दूसरे के ऊपर जाना।

तमक उठना–क्रोधित हो जाना।

तमकनत करना–इतराना। उ० इतनी तमकनत न करो, नही तो खुदा को भी बुरा लगेगा।

तम हरने वाला–अज्ञान नष्ट करने वाला।

तमाचा जड़ना–दे० 'तमाचा लगाना'।

तमाचा लगाना–थप्पड मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो अभी दो तमाचे लगाऊँगा।

तमाचे से मुँह लाल करना–थप्पड से मार कर गाल लाल कर देना।

तमा देना–घूस देना। उ० तमा दिये बिना आजकल कोई काम नही होता।

तमाम करना–खतम करना। उ० झगडा किसी तरह तमाम करो।

तमाम होना–१ मर जाना। उ० एक दुश्मन तो तमाम हुआ, अब एक और बाकी है। २ समाप्त होना, पूरा होना। उ० किसी तरह काम तमाम हुआ।

तमाशे की बात होना–विचित्र बात होना। उ० कौन तमाशे की बात है, जो सब लोग देखने आते हैं।

तय पाना–ठहराना। निश्चित होना। उ० गुप्त सभा मे क्या तय पाया।

तरगीब देना–लालच देना। उ० तरगीब देकर मैंने काम करा लिया।

तरतीब देना या दे देना–सजाना, क्रमानुसार रखना। उ० दूकान मे हर चीज को तरतीब दो, नही तो जरूरत पर नही मिलेगी।

तरद्दुद उठाना–परीशानी उठाना। उ० बहुत तरद्दुद उठाने की आवश्यकता नही, मुझे भूख नही है।

तरद्दुद मे पडना–चिंता मे पडना। परीशानी मे पडना। उ० उसके बे-टाइम आ जाने से मैं तरद्दुद मे पड गया हूँ।

तरफदारी करना–किन्ही दो विरोधियो मे एक की ओर रहना। उ० जज को किसी की तरफदारी करना उचित नही है।

तर माल उडाना–स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन करना।

तरस खाना–रहम करना, दया करना। उ० इस गरीब पर तरस खाना सभी का कर्त्तव्य है।

तरसा-तरसा कर देना–ललचा-ललचा कर देना। उ० तरसा-तरसा कर देने से न देना ही अच्छा है।

तरसा-तरसा कर मारना–१ कष्ट दे-देकर मारना। उ० उसे तो तरसा-तरसा कर मारने मे तनिक भी पाप नही है। २. ललचा कर न देना। उ० तुमने तो बच्चो को थोडी-सी मिठाई के लिए तरसा-तरसा कर मार डाला।

तरह उडाना–ढंग की नकल करना।

तरह देना–१ ख्याल न करना। जाने देना। उ० इन तेरह ते तरह दिये बनि आवे साँई। २. टाल-मटोल करना। उ० क्यो तरह देते हो, बडी जरूरत है, दे दो। ३ पूर्ति के लिए समस्या देना। उ० तरह दे रहा हूँ, पूरा करके लाना।

तराका खाकर गिरना–गश खाकर या बेहोश होकर गिरना। उ० वह तराका खाकर गिर पडा।

तराका खाना–१ बेहोश होना। २ कमी होना। तोड होना।

तराजू हो जाना–१ दो सैनिक बलो का इस प्रकार बराबर होना कि कोई किसी को परास्त न कर सके। उ० कोरिया का युद्ध तो तराजू हो गया है। २. तार का बदन मे घुस कर आधा-आधा दोनो ओर निकला रहना।

तरारा भरना–१ तेज या सरपट दौडना। उ० हिरन तरारा भरता हुआ निकल गया। २ जल्दी-जल्दी कोई काम करना।

तरारा मारना–बढ-बढ कर बातें करना। डीग हाँकना। उ० क्या तरारा मार रहे हो, तुम्हारे घर का सब हाल मैं जानता हूँ।

तराविश करना–१. टपकना, जाहिर होना। उ० तुम्हारी बातें ही तराविश करती हैं कि तुम चोर हो। २ चूना टपकना। उ० छत तराविश कर रही है।

तरास लगना–प्यास लगना। उ० गर्मी के दिनो मे खूब तरास लगती है।

तरीक़ा बरतना–नियम पालन करना। उ० ऐसा तरीका बरतना चाहिये जो जीवन भर निवह सके।

तरी होना—१ प्रसन्नता होना २ धन का होना।

तरे बैठना—पति बनाना। उ० तुम भी किसी के तरे बैठ जाओ।

तरेर कर देखना—क्रुद्ध दृष्टि स देखना।

तलछू-मलछू करना—चुलबुलापन दिखाना।

तलधार-मौसलधार बरसना—खूब ज़ोर की बारिश होना। उ० आज तो तलधार-मौसल-धार बरसने की आशका है।

तलपट करना—उजाडना, बरबाद करना।

तलब करना—१ पेश करना। बुला भेजना। उ० उस तारीख़ पर सब चोरो को तलब करना। २ माँगना या मँगाना। उ० उसने तो मुकदमे का पूरा विवरण तलब किया है।

तलमलाता फिरना—बेचैन घूमना। व्याकुल होकर फिरना। उ० सारा धन चोरो ने ले लिया, बेचारा तलमलाता फिरता है।

तलवा खुजलाना—१ सफर की आदत पडना। २ यात्रा का शकुन बनना। उ० तलवा खुजला रहा है, कुछ अच्छा ही होगा।

तलवा चाटना—खुशामद करना।

तलवा छलनी होना—चलते-चलते पैर मे घाव हो जाना।

तलवा धो-धो कर पीना—आदर-सत्कार करना।

तलवा न टिकना—कही एक जगह जम कर न रहना। उ० उसका तलवा तो टिकता ही नही है, वह क्या नौकरी करेगा?

तलवा न भरना—दे० 'तलवा न टिकना'।

तलवा नहीं मारना—दे० 'तलवा न टिकना'।

तलवार करना—तलवार चलाना। उ० तलवार करो, फिर देखा जाएगा।

तलवार का खेत—युद्ध का मैदान। उ० तलवार के खेत मे जो मरेगा, स्वर्ग जायगा।

तलवार का घाट—वह स्थान, जहाँ से तलवार मे टेढापन आरभ होता है।

तलवार का छाला—तलवार के फल मे उभरा हुआ दाग।

तलवार का धनी—तलवार चलाने मे निपुण।

तलवार का पानी पीना—युद्ध करना।

तलवार का बल—१ अस्त्र-शस्त्र का जोर। उ० तलवार का बल ही युद्ध मे सहायता करता है। २ कटार की वक्रता। उ० इस तलवार का बल दूर करो।

तलवार का हाथ—१ तलवार चलाने का तरीका। उ० उसे तलवार के हाथ खूब मालूम हैं। २ तलवार का आघात। उ० उसने तो तलवा का हाथ खूब किया।

तलवार की आँच—दे० 'तलवार की आग'।

तलवार की आग—तलवार के वार का सामना। उ० तलवार की आग विरले ही सहते हैं।

तलवार की छाँह मे—१ तलवार से सुसज्जित योधाओं की सरक्षता मे। उ० बडे-बडे राजा तलवारो की छाँह मे ही निकलते हैं। २ समर-भूमि मे। उ० दोनो दल तलवार की छाँह मे निपट लेंगे।

तलवार की धार पर चलना—बहुत कठिन काम करना। उ० बहादुर सदा तलवार की धार पर ही चलते हैं।

तलवार के घाट उतारना—तलवार से मारना। उ० डाकुओ ने उसे तलवार के घाट उतार दिया।

तलवार तोलना—पूरा वार करने के लिए तलवार को अच्छी तरह सँभालना। उ० तलवार तोल कर ऐसा मारो कि दो टुकडे हो जायँ। है किसके आज ज़ालिम फिर कत्ल का इरादा। हरदम जो तोलता है तलवार ताबा गरदन।

तलवार पर हाथ रखना—१ तलवार की कसम खाना। उ० सैनिको! तलवार पर हाथ रक्खो कि पीछे न हटोगे। २ मारने के लिए तलवार निकालना। उ० तलवार पर हाथ न रखो, नही तो ठडा कर दूँगा।

तलवार पर पानी चढ़ाना—युद्ध के लिए तैयार होना।

तलवार पर मखमल का गिलाफ चढा होना—बाहर से भला तथा भीतर से बुरा होना।

तलवार बरसना—तलवार से मार काट होना। उ० चित्तौड की भूमि पर अनेक बार तलवारें बरस चुकी हैं।

तलवार बाँधना—तलवार को कमर मे लटकाना।

तलवार मे बल पडना—१ तलवार की धार मे ख़राबी होना। २ हारने की निशानी दिखाई पडना।

तलवार म्यान से करना—जान न लेने की इच्छा करना। न मारना। उ० राजपूत स्त्रियो को देख कर तलवार म्यान मे कर लेते हैं।

तलवार म्यान से बाहर रहना या होना—लडने को तैयार रहना या होना।

तलवार सिर पर लटकना—आसन्नविपत्ति होना या विपत्ति मे होना। उ० तुम्ही बताओ, मैं चैन से कैसे सोऊँ, जबकि सिर पर तलवार लटक रही है।

तलवार सूंतना—तलवार म्यान से बाहर करना। उ० राजपूतो ने तलवार सूंत कर कसम खायी कि जीवन पर्यन्त देश की रक्षा करेंगे।

तलवार सौंतना—दे० 'तलवार सूंतना'।

तलवे की धूल होना—दे० 'पैर की धूल होना'।

तलवे चाटना—चापलूसी करना। उ० कब तलक बलवे रहेगे देश मे। कब तलक हम चाटते तलवे रहे।

तलवे छलनी होना—बहुत दौड-धूप करना। उ० इस मुकदमे मे उसके तलवे छलनी हो गये, पर दुश्मनो का बाल तक बाँका न हुआ।

तलवे-तले आँखो मलना—१ दे० 'तलवे-तले मेटना'। २. दे० 'तलवे चाटना'। ३ अत्यत प्रेमभाव दिखाना। उ० वह दिखावटी ही तलवे-तले आँख मलता है। ४. दीनता प्रकट करना। उ० बेचारा तलवे-तले आँखे मलता है, कुछ दे दो।

तलवे-तले हाथ धरना—दे० 'तलवे चाटना।

तलवे धो-धो कर पीना—१ श्रद्धा-भक्ति दिखाना, बडी सेवा करना। २ खुशामद करना। उ० मैं किसी के तलवे धो-धो कर पीने वाला आदमी नही हूँ।

तलवे सहलाना—१ दे० 'तलवे-तले हाथ धरना'। २ बडी सेवा-सुश्रूषा करना। उ० वह आजीवन अपने पिता के तलवे सहलाता रहा।

तलवो की आग माथे तक पहुँचाना—अत्यधिक क्रोध तथा ईर्ष्या होना।

तलवो-तले चाँदनी-सा बिछा रहना—पूरी तरह वश मे रहना।

तलवो-तले मेटना—रौंद डालना, कुचल कर नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० सब दुश्मनो को तलवो-तले मेट कर साँस लूँगा।

तलवो मे से तेल निकलना—१. बहुत कजूस होना। उ० धनी तो है, परन्तु तलवो मे से तेल ही निकलता है। २ पैरो को कष्ट होना। उ० वह इतना कजूस है कि तलवो से तेल निकल जाता है, परन्तु सवारी के लिए पैसा नही खर्च करता।

तलवो मे से तेल निकालना—१ कजूसी करना। उ० जहाँ इज्जत का प्रश्न है, तुम्हे तलवो मे से तेल नही निकालना चाहिये। २. दूर तक पैदल ही चलाना। उ० तुमने तो आज तलवो मे से तेल निकाल दिया।

तलवो से आँखें मलना—१ बहुत प्रेम-भाव दिखाना। उ० तुमने रोज तलवो से आँख मल ही कर क्या किया, जब समय पर काम न आए। २. अत्यन्त दीनता दिखाना। उ० वह तो रोज ही तलवो से आँखें मलता है, क्या करूँ। ३ दे० 'तलवो तले मेटना'।

तलवो से आग लगना—अत्यन्त क्रोध चढना। उ० उसकी ऊटपटाँग बाते सुनकर तो मेरे तलवो से आग लग गई।

तलवो से मलना—दे० 'तलवे-तले मेटना'।

तलवो से लगना—१ बुरी या जलाने वाली लगना। उ० तुम्हारी बातें तो तलवो से लगती है। २ कुढाना, बुरा लगना। उ० हमारी कमाई तुम्हारे तलवो से क्यो लगती है?

तलवो से लगना सिर मे जाकर बुझाना—क्रोध से सारा शरीर काँपना, बहुत क्रोध आना। सिर से पैर तक क्रोध चढना। उ० अपमान-जनक बातें सुन कर तो सभी को तलवो से लगती है और सिर मे जाकर बुझाती है।

तलाशी देना—घर-बार खोजने देना। तलाशी लेने की आज्ञा देना। उ० वह बडा स्पष्ट आदमी है, तुरन्त तलाशी देने को तैयार हो गया।

तलाशी देना—हर एक चीज को अच्छी तरह देखना। उ० आप उस वस्तु के लिए उसकी तलाशी तो ले सकते हैं, मगर चीज नही मिली तो?

तले-ऊपर के—तरुपरिया, एक के बाद दूसरा। उ० ज्यादातर यह देखा जाता है कि तले-ऊपर के लडको मे नही पटती।

तले-ऊपर जी होना—१ जी मतलाना। उ० बाजार की पूडी खा लेने से जी तले-ऊपर हो रहा है। २ दिल घबडा जाना। उ० गर्मी मे तम्बू के नीचे बैठे-बैठे जी तले-ऊपर होने लगा।

तले-ऊपर होना—१ सभोग मे प्रवृत्त होना। २ उथल-पुथल होना। उ० उस चोरी को मामूली न समझो। उसी के कारण आज चार दिन से सारा शहर तले-ऊपर हो गया है।

तले की दुनियाँ ऊपर होना—१. वहुत अन्तर हो जाना। उ० विज्ञान के कारण आज तले की दुनिया ऊपर हो गई है। २ चाहे जो हो जाना। उ० तले की दुनिया ऊपर हो जाय, पर मैं अब अवश्य वदला लूंगा।

तले की साँस तले और ऊपर की ऊपर रह जाना—१ भौंचक्का रह जाना। उ० उसका विचित्र रूप देखकर मेरी तले की साँस तले और ऊपर की साँस ऊपर रह गई। २ भय से जडवत् हो जाना। उ० अँधेरे मे भूत का ख्याल करके मेरी साँस तले की तले और ऊपर की ऊपर रह गई।

तवा-सा मुँह होना—काला मुँह होना।

तवा सिर से वांधना—आघात या आक्रमण सहने के लिए पहले ही से सुरक्षित रहना। उ० आप ही अच्छे है कि अभी तवा सिर से वाँध लिया।

तवे का हँसना—तवे के कालिख का ज्यादा जल कर लाल हो जाना। [यह घर मे कलह का कुलक्षण माना जाता है।] उ० आज तो तवा हँस रहा है। हे भगवान! क्या होगा?

तवे की वूँद होना—१ कुछ प्रभाव न पडना। उ० आपकी वाते तो उसके लिए तवे की वूंद है, फिर आप क्यो कहते है? २ इतना कम होना, जिससे सतोष न हो। उ० खिलाना हो तो ख्व खिलाओ, इतना-सा तो तवे की वूंद है। ३. क्षणिक होना। उ० आज के नौजवानो का जोश तवे की वंद होता हे।

तशरीफ रखना—१ विराजमान होना। वैठना। उ० आइए तशरीफ रखिये। २ रहना। उ० आप तो वही तशरीफ रखते हैं।

तशरीफ लाना—विराजना, आना। उ० कभी-कभी मेरे यहाँ भी तशरीफ लाया करें।

तशरीफ ले जाना—चले जाना। उ० अच्छा महाराज, अव यहाँ से आप तशरीफ ले जाइये, मेरे पास ज़्यादा समय नही है।

तश्त अज़वाम होना—भेद खुल जाना, भडाफोड होना। उ० तश्त अज़वाम हो गया, अव तुम नही वच सकते।

तसफिया करना—निर्णय करना। उ० गाँव के चार आदमी मिलकर जो तसफिया कर देंगे, उसे मैं मान ही लूंगा।

तसवीह फेरना—माला फेरना। माला जपना। उ० अतकरण को साफ करो, केवल तसवीह फेरने से स्वर्ग न मिलेगा।

तसमा खींचना—किसी विशेष विधि से गला घोटना। उ० कारण के वारे मे कोई कुछ भी नही जानता, क्योकि रात को उसका तसमा खीचा गया है।

तसमा वांधना (किसी का)—खुशामद या आदर करना।

तसमा लगा न रखना—निधडक गरदन काट कर साफ कर देना। उ० यदि आपकी यही हरकत रही तो वह तसमा लगा न रखेगा।

तसलीम करना—मानना, अगीकार करना। उ० मुहम्मद तुगलक इतना ज़िद्दी था कि वह गलती करके भी अपनी गलती तसलीम नही करता था।

तसल्ली दिलाना—धीरज वँधाना, सतोष देना। उ० वेचारे पर विपत्ति पडी है, ज़रा तसल्ली तो दिला आओ। एक तुम ही तो पडोसी हो।

तसवीर बन जाना—मूर्ति-सा रह जाना, अचल रह जाना। उ० ताजमहल के सौंदर्य को देखकर प्राय लोग तसवीर वन जाते हैं।

तसवीर हो जाना—दे० 'तसवीर वन जाना'।

तस्दीक़ करना—१. सावित करना, गवाही देना। २ प्रामाणिक कहना।

तस्दीया उठाना—कष्ट सहना। सर-दर्द लेना। उ० तुम्हारे लिए उसने इतना तस्दीया उठाया और तुम उससे मिलने तक नही गए।

तस्दीया देना—कष्ट देना।

तह करके रखना—१ अनावश्यक होना, आवश्यकता न होने पर रखना। उ० तुम तो तह करके रखो और मैं पहनने को तरसूं। २ कपडा आदि अच्छी तरह हिफाजत से रख देना। उ० इसे तह करके रख दो।

तह करना—ठीक से मोडना। तह लगाना। उ० कोट को तह करके रख दो।

तह का सच्चा—हृदय का सच्चा। उ० कलिकाल मे तह के सच्चे हैं कहाँ?

तहकीक करना—जाँच करना। उ० तहकीक करने के लिए कोई साहव आ रहे है।

तहकीकात आना—किसी मामले की जाँच के लिए सरकारी कर्मचारियो का आना। उ० कल के डाके की तहकीकात आती ही होगी।

तह की बात—१. वास्तविक बात । उ० तुम्ही तो एक ऐसे अपने हो, जिससे कि तह की बात भी बता देता हूँ । २ दिल की बात । ३ रहस्यपूर्ण बात ।

तह को पहुँचना—१ वास्तविक बात का पता लगाना । तथ्य तक पहुँचना । उ० इस मामले मे तह को पहुँचना बडा मुश्किल है । २ हृदय का पता पाना । उ० वह इतना कपटी है कि उसकी तह को पहुँचना सबके मान का नही ।

तह जमाना—१. कस कर भोजन करना । उ० ऐसा तह जमा रहे हो कि जैसे चार दिन के उपासे हो । २ तह करना । किस चीज़ की तह इतनी सावधानी से जमा रहे हो ?

तह तक पहुँचना—दे० 'तह को पहुँचना' ।

तह तोड़ना—१. झगडे का निर्णय करना । उ० सरपच ने दोनो के झगडो की तह तोड दी । २ कुएँ का सब पानी निकाल लेना, जिससे मिट्टी दिखाई देने लगे । उ० आज कुएँ मे तह तोडी गई है । ३ कुएँ का तावा तोडना ।

तह देना—१. एक हल्की परत चढाना । उ० इस पर मिट्टी की तह दे दो । २ तेल आदि डालना । उ० गुलाब की तह दे दो तो महँगा विकेगा । ३ हलका रग चढ़ाना । ४ कपडे को इस्तरी से ठीक करना ।

तहवद सरकाना—१. वेइज़्ज़त करना । २ नस-नस ढीली करना । उ० इस काम से आप-का तहवद न सरकाया तो कहिएगा ।

तह वैठाना—दे० 'तह जमाना' ।

तह मिलाना—किसी चीज़ के जोडो (नर-मादा) को मिलाना । उ० मुर्गी की तह मिला दो ।

तह लगाना—सरिया कर रखना । ठीक से मोडना । उ० इन कपडो की तह लगा दो, क्योकि अब आवश्यकता नही है ।

तहलील करना—पचाना । उ० इसे तुम तहलील नही कर सकते ।

तहलील होना—पचना, हज़म होना ।

तहस-नहस करना—वर्वाद करना । उ० सारी मिठाई तहस-नहस कर दी ।

तहसील करना—हासिल करना । वसूल करना ।

तहोबाला होना—बर्वाद होना ।

तांतड़ी-सा होना—शरीर से दुर्बल होना । उ० ज्वर के कारण वह तांतडी-सा हो गया है ।

तांत-सा होना—दे० 'तांतडी-सा होना' ।

तांता बँधना—निरतर आते रहना, एक के बाद दूसरे का आना । उ० युद्धकाल में वायु-यानो का तांता बँधा रहता था ।

तांता बांधना—१ कतार बाँध कर खडा होना । २ बहुत भीड लगाना । एक के बाद दूसरे का आता रहना । उ० भाई यहाँ तांता न बांधो, नही तो मैं किसी का भी काम न करूँगा ।

तांता लगना—दे० 'तांता बँधना' ।

तांतिया जवान—दुर्बल शरीर वाला । उ० हो तो तांतिया जवान और बातें दारासिंह की तरह करते हो ।

तांवरि आना—बुखार आना, बीमार पड जाना । उ० हेगा देखि के तांवरि आवे, मूसा देख आनन्द ।

ताक-झांक करना—सुअवसर की खोज करना, इधर-उधर देखना । उ० आजकल आप किस काम के लिए बडी ताक-झांक कर रहे हैं ?

ताक़त करना—१. बल लगाना । उ० ताकत करने से शायद उठा सको । २ वली होना, वलवान बनना ।

ताक़ पर रखना—१ प्रयोग मे न लाना । उ० तुम्हारी आदत बडी बुरी है कि दूसरे की चीज़ ले जा कर भी ताक पर रख देते हो । अगर तुमने ताक पर रख दी किताब तो कल इम्तहान में क्या दोगे जवाब ? २ टालना, हटाना । उ० इस बात को तो ताक पर रखो, जो सामने है उसे देखो ।

ताक पर रहना—कोई उपयोग न होना । उ० बहुत से लडको की पुस्तकें साल भर ताक पर ही रह जाती हैं और वे फेल हो जाते हैं ।

ताक बांधना—टकटकी बाँधना । उ० ताक बांध कर देखते रहो, वह कुछ लेने न पाये ।

ताक मे रहना—अवसर की तलाश मे रहना । उ० वह तुम्हे मारने की ताक मे सदैव रहता है । ज़रा बच के रहना ।

ताक रखना—ध्यान रखना, उचित समय की ताक मे रहना । उ० अँग्रेजो मे सबसे वडी बात यह थी कि वे प्रत्येक मौके पर ताक रखते थे । ताक रखो, वह इसी समय इस रास्ते से गुज़रता है ।

ताक लगाना—अवसर देखना। उचित मौके की प्रतीक्षा करना। उ० बगला ताक लगाए बैठा है, मछली को देखते ही कूद पडेगा।

ताक़ीद कर देना—किसी काम के सम्बन्ध मे चेतावनी देना। उ० उन्हे ताकीद कर दो, कल ज़रूर आना है।

तागा डालना—१ सिलाई करना। उ० दर्जी गद्दे मे तागा डाल रहा है। २ सुई मे डोरा डालना। उ० ज़रा तागा डाल दो, मुझे दिखाई नही दे रहा है।

ताजबख़्शी करना—बादशाहत देना।

ताज़ा करना—१ फिर से याद करना। उ० इन चीज़ो को ताज़ा कर लो, शायद वे पूछ बैठें। २ पानी बदलना।

ताज़ा होना—१. पुन जड से प्रारभ होना। उ० पचायत के कारण मुकदमा फिर ताज़ा हो गया। २ फिर स्मरण हो जाना। उ० उसकी स्मृति ताज़ा हो गई।

ताज़िया ठडा होना—१ ताज़िये का दफन होना। उ० इस साल का ताज़िया न जाने कब ठडा होगा ? २ सारी आशाओ का समाप्त होना। उ० अशोक के मरते ही मौर्य-वश का ताज़िया ठडा हो गया।

ताजियाना होना—कोडे लगाना।

ताज़ीम करना—दे० 'ताज़ीम देना'।

ताज़ीम देना—१ इज़्ज़त देना। २ किसी के आने पर खडा हो जाना।

ताड का तिल करना—बडी बात को छोटी मानना या समझना।

ताड़ जाना—अनुमान से ही जान लेना। उ० मैं तो तुम्हारा चेहरा देख कर ही ताड गया कि तुमने अवश्य कोई गलती की है।

तातील मनाना—दे० 'छुट्टी मनाना'।

तान उडाना—१ मौज से दिन काटना। उ० पिता की कमाई रखी है, खूब तान उडाओ। २. राग अलापना। उ० पेट भर जाने पर सभी को तान उडाना आता है।

तान कर—ज़ोर से। बलपूर्वक। उ० ज़रा तान कर खीचो।

तान कर तमाचा देना—ज़ोर से थप्पड देना या मारना। उ० तुमने तो उसको ऐसा तान कर तमाचा दिया है कि अब तक उसका मुंह फूला हुआ है।

तान कर सोना—निश्चिंत रहना। उ० बहिन की शादी की एक चिंता थी, अब तो तान कर सोना है।

तान की जान होना—लुब्बे-लुबाब या साराश होना। उ० व्यर्थ बकवाद से क्या फल, तान की जान यह है कि वह बिल्कुल ही मूर्ख है।

तान तोड़ना—गाना समाप्त करना। गाने को विघ्न के कारण बीच मे तोड देना। उ० आपके बोल देने से तान टूट गई।

तान भरना—गाने मे लय या सुर खीचना। उ० थोडी-थोडी तान भी भरने लगा है।

तान मारना—दे० 'ताना मारना'।

तान कसना या लेना—दे० 'तान भरना'।

ताना देना—व्यग्य करना, ताना मारना, कटूक्ति कहना। उ० वह ऐसा नीच है कि चीज़ भी ले गया और ताना भी देता है। मुझे क्या ताना देते हो, अपनी हालत देखो।

ताना-बाना करना—व्यर्थ की परिक्रमा करना। बहुत दौडना-धूपना। उ० तुम्हारा ताना-बाना करना व्यर्थ है, क्योकि बिना हमारे गए कुछ भी नही हो सकता।

ताना मारना—व्यग्य करना। कटूक्ति कहना। उ० तुम तो आजकल ताना मार रहे हो।

ताप आना—क्रोध आना।

ताप बढाना—क्रोध या विरह-भाव को बढाना।

ताबड-तोड—एक पर एक लगातार। उ० तुम्हारा तो ताबड-तोड आना-जाना लगा ही रहता है, कभी भी उसे ले जा सकते हो।

ताब न रहना—बर्दाश्त न होना। घबरा जाना। हिम्मत न रहना। उ० इसे सहने की ताब अब मुझमे न रही।

ताबे करना—वश मे करना, काबू मे लाना। उ० उसे ताबे करने के कई रास्ते हैं, पर तुम मानते तो हो नही।

तार-फ़ुतार होना—१. काम बिगडना। २ मृत्यु के समीप होना।

तार जमना—दे० 'तार बैठना'।

तार टूटना—१ विघ्न पडना, कोई गडबड होना। उ० तार टूटने से फिर उस काम को आरभ करने की हिम्मत नही हो रही है। २ धारा-प्रवाह टूटना। उ० तार टूट गया है सँभल कर घी डालना, नही तो फैल जायगा।

तार-तार करना या कर देना—एक-एक तागा अलग करना। तोड-फोड देना। उ० बदरो ने मेरी धोती तार-तार कर दी।

तार-तार रोना—अत्यधिक रोना।

तार-तार होना—टुकडे-टुकडे या अत्यधिक पूरा होना।

तार दबकाना—गोटे के लिए तार को चिपटा करना।

तार देखना—चीनी, गुड आदि की चाशनी देखना। उ० गुड का तार देखो, शायद तैयार हो।

तार देना—तार द्वारा जल्दी खबर देना। उ० पिता जी ने आने का तार दिया है।

तार निकालना—सुराग या पता निकालना। पता लगाना। उ० कुछ दिन तो वह छिपा रह सका, पर अत मे पुलिस ने तार निकाल ही लिया।

तार बधना—[illegible] दिनो से अतिथियो का तार बँधा है।

तार बांधना—जारी रखना।

तार बैठना या बैठ जाना—काम बनने के योग्य अवसर या समय आना। उ० आप लोगो के आ जाने से हमारी पढाई का तार खूब बैठ गया है।

तार लगना—दे० 'ताँता बँधना'।

तार लगाना—दे० 'तार बांधना'।

ताराज करना—बरबाद करना। उ० उनका घर ताराज न करो।

ताराज होना—बरबाद होना। उ० उसका घर ताराज हो गया।

तारा टूटना—१ अपशकुन होना। २ तारो का टूट जाना। उ० बान छूटा है कही या कि है तारा टूटा।

तारा डूबना—तारा का अस्त होना। शुक्रास्त होना। उ० कोई शुभ कार्य न करो, क्योकि तारा डूब गया है।

तारा-सी आँखें हो जाना—आँखें साफ हो जाना।

तारा हो जाना—दूरी के कारण बहुत धुंधला और छोटा दीखना। उ० गुब्बारे तो ऊँचाई के कारण तारे हो गए हैं।

तारीख टलना—निश्चित दिन का हट कर आगे नियत होना। उ० हमारे इम्तहान की तारीख टल गई है।

तारीख डालना या डाल देना—१ तिथि आदि अकित करना। दिन निश्चित करना। उ० आपने अभी अपने आने की तारीख नही डाली है। २. मुकदमा किसी दूसरी तारीख के लिए स्थगित करना। उ० मैं जानता हूँ, आज फिर वे तो तारीख डाल देंगे।

तारीख पडना या पड जाना—तिथि निश्चय होना। उ० अभी तक उत्सव की कोई तारीख नही पडी है। मुकदमे की तारीख पड गई है।

तारीफ करते मुख सूखना—बेहद प्रशसा करना। उ० उनकी तारीफ करते-करते तुम्हारा मुख सूख गया, पर कुछ भी असर न हुआ।

तारीफ के पुल बांधना—दे० 'तारीफ करते मुख सूखना'।

तारे खिलना—नक्षत्रो का टिमटिमाना। उ० चद्रमा के साथ तारे कैसे खिल रहे हैं?

तारे गिनते रात बिताना—बेचैनी से रात काटना।

तारे गिनना—१ व्यग्रता या उदासी से रा[illegible] [illegible] नायिका ने [illegible] के वियोग में तारे गिनकर [illegible] बितायी। २ बेकार का काम या असम्भव काम करना। उ० क्या तारे गिन रहे हो?

तारे छिटकना—दे० 'तारे खिलना'।

तारे तोड लाना—१ बडी मुश्किल से कोई कार्य करना। २ बहुत बडा काम करना। उ० बस कीजिए, तारे नही तोड लाए हैं कि इतनी डीग हाँक रहे हैं। ३ असम्भव काम करना।

तारे दिखाई दे जाना—कमजोरी से धुंधला दिखाई देना, अँधेरा दिखाई देना। उ० अब तो कभी-कभी उसे तारे दिखाई दे जाते हैं। कल एक ही मील चलने मे तारे दिखाई देने लगे।

तारे दिखाना—१ मुसलमानो मे छ दिन के बच्चे को बाहर लाकर तारा दिखाया जाता है। उसके लिए भी यह मुहावरा प्रयुक्त होता है। २ अधकार छा जाना या हो जाना। उ० एक ही थप्पड मे आँखो के आगे तारे दिखाई देने लगेंगे।

तारे-सी आँखें हो जाना—निर्मल और चमकती आँखें होना। उ० आँख खराब हो गई थी, परन्तु उनकी दवा से तारे-सी हो गई है।

तारो की छाँह—बहुत तडके। उ० गर्मियो मे तारो की छाँह मे चलना ही अच्छा है।

ताल उठाना—गाना प्रारभ करना। उ० हार कर तुमने अन्त मे ताल उठाया ही। यही पहले कर दिए होते तो क्या विगड जाता ?

ताल कटना—प्रतिकूल स्थिति होना।

ताल ठोंकना—लडने के लिए ललकार देना। ललकारना। उ० गामा ने ताल ठोक कर विश्व को चुनौती दे दी थी।

ताल पर नाचना—इशारो पर चलना।

ताल-बेताल—१. अनियमित ताल से। उ० क्या ताल-बेताल गा रहे हो ? २ अनवसर से। उ० तुम्हारा काम तो ताल-बेताल होता है। ३ जैसा भी हो। उ० ताल-बेताल उस काम को कर डालना है।

ताल-बेताल होना—गाने-वजाने मे नियम-भगता से गडवडी होना। उ० नीद के कारण ताल-बेताल हो रहा है, बन्द करो।

ताल मिलाकर चलना—एकसाथ आगे बढ़ना।

ताल-मेल खाना—१ एक स्वभाव का होना। उ० जब तक ताल-मेल न खाए, तब तक मित्रता कैसी ! २ पटना। उ० उन दोनो मे ताल-मेल खाना सम्भव नही है।

ताल-मेल बैठना—दे० 'ताल-मेल खाना'।

ताला जकडना—ताला बन्द करना। उ० किरायेदार ने एक माह से मकान मे ताला जकड रखा है।

ताला जोड़ना—दे० 'ताला जकड़ना'।

ताला तोडना—ताला तोड कर चोरी करना। उ० शहरो मे रोज़ ही ताले तोडे जाते है।

ताला भिड़ना—१ ताला वद होना। उ० तुम्हारे कमरे मे तो ताला भिड गया है। २ नष्ट-भ्रष्ट होना। उ० गरीबो की आह से अमीरो का ताला भिड जाना कोई असम्भव नही है।

ताला भेड़ना—ताला वद करना। उ० तुम ताला भेड कर बाज़ार चल देते हो और मैं बैठा रास्ता देखा करता हूँ, यह कहाँ की शराफत है ?

ताली एक हाथ से न बजना—एक व्यक्ति के कारण ही झगडा न होना।

ताली न बजना—निरादर होना। भाषण या कविता आदि का न पसद किया जाना। उ० करपात्री जी के भाषण के अत मे भी ताली नहीं बजी।

ताली पीटना—दे० 'थपडी पीटना'।

ताली बजाना—दे० 'थपड़ी पीटना'।

ताली पिट जाना—१ उपहास होना। २. प्रशसा होना।

तालू उठाना—तुरन्त जन्मे हुए बच्चे के तालू को दवा कर ठीक करना।

तालू उठाने के दिन—शैशवावस्था।

तालू मे दाँत जमना—बुरे दिन आना। उ० अब तुम्हारे तालू मे दाँत जम रहे हैं।

तालू से जीभ न लगना—बोलते ही रहना। उ० वह इतना बडा वाचाल है कि उसके तालू से जीभ तो लगती ही नही।

तालू से जीभ लगना—चुप रहना।

ताव आना—१ जोश आना। उ० इस समय तो मेरा ताव आया है और तुम कहते हो कि कल चलेंगे। २ क्रोध आना। उ० तुमको तो छोटी बात पर भी ताव आ जाता है। ३. मैथुन की इच्छा होना।

ताव खाना—दे० 'ताव खा जाना'।

ताव खा जाना—१. अधिक आँच से जल जाना। उ० सारा दूध ताव खा गया है। २. क्रोधित होना। उ० कुछ सोच-विचार नही करता है, तुरन्त ताव खा जाता है। ३ गरम करना। उ० अनेक ताव खा जाने पर तो चीज़ बनी है। ४. गरम वस्तु का ठडा होना। उ० लोहा ताव खा गया है।

ताव चढ़ना—१ सुअवसर के कारण कार्य करने की आकाक्षा होना। करने का जोश होना। उ० रोज़ तो सोते रहते हैं और आज ताव चढा है तो रात भर पढते रहेंगे। २ कामदेव का प्रकोप होना, ३. मैथुन करने की इच्छा होना।

ताव दिखाना—१ अहकार-मिश्रित क्रोध करना। उ० छोटो पर सभी ताव दिखाते हैं। २ रोव दिखाना।

ताव देना—१ क्रोध-मिश्रित अभिमान दिखाना। उ० किसके बल पर आप ताव दे रहे हैं, यहाँ से जाइए, नही तो दाँत तोड दूँगा। २ आग पर गरम करना। उ० चासनी को थोडा और ताव दे दो।

ताव पर—इच्छा के समय। ज़रूरत के वक्त। उ० कोई तुम्हारे ताव पर कैसे कुछ देगा, जब तुम दूसरे के ताव पर नही देते ?

ताव-पेंच खाना—गुस्सा करना।

ताव मे आना—१ गर्वपूर्ण क्रोध मे चूर होना। उ० ताव मे आकर तो तुम सब काम विगाड देते हो। २ जोशयुक्त रोब मे आना। उ० ताव मे आकर आपने उसे लौटा दिया, अब कौन मोटर चलायेगा।

ताव लगाना—१ लू लगना। उ० उसे ताव लगा है, डाक्टर को दिखाओ। २ आँच लगना, खूब गर्म होना।

तावा खिलाना—दे० 'तावा देना'।

तावा देना—कबूतरो का चक्कर देना।

तासीर करना—असर करन

तिकडम भिड़ाना—चालाकी से युक्ति करना।

तिक्का-बोटी करना—टुकडे-टुकडे करना, धज्जी-धज्जी करना। उ० नेवले ने साँप की तिक्का-बोटी कर डाली।

तिक्का-बोटी हो जाना—१ बिल्कुल तकसीम हो जाना। २ हाथो हाथ उड जाना।

तिगनी का नाच नाचना—हैरान करना।

तिजोरी मे होना—वश मे होना।

तिडी भूल जाना—होश-हवाश भूल जाना।

तितली-सा बनना—वहुत सजना-सँवरना। उ० तुम्हारी वीवी तो तितली-सी बनी सदा घूमती रहती है।

तिनक जाना—झुंझला जाना। उ० क्या बात-बात पर तिनक जाते हो? ऐसा करना है तो अपना रास्ता नापो।

तिनका उतारे का एहसान मानना—थोडे एहसान का वहुत वड़ा एहसान मानना।

तिनका खडकना—थोडी-सी भी आवाज होना।

तिनका चुनना १ नशे मे चूर होना। उ० ताडी के कारण तो वह तिनका चु... रहा ...
बहुत छोटा काम करना ...
का उपक्रम करना।

तिनका तोडना—१ अपशकुन ...
क्यो तिनका तोड रहे हो, यह शुभ ...
२ सवध-विच्छेद करना। उ० तुमने ...
तिनका तोड लिया है। ३ वच्चे को ...
से बचाने के लिये तिनका तोड कर उपक्रम करना। उ० छोटा बच्चा है, तिनका तोड लो, ताकि नजर न लगे।

तिनका दाँतो मे पकडना—वहुत नम्रता से विनय करना, गिड़गिड़ाना। उ० इतना सीधा है कि सदा दाँतो मे तिनका पकड कर ही बोलता है।

तिनका दाँतो मे लेना—दे० 'तिनका दाँतो मे पकडना'।

तिनका न रहना—१ कुछ भी न बचना। उ० जमीदार ने सब कुछ ले लिया, एक तिनका भी न रहा। २ बहुत सफाई होना। उ० मकान मे वडा कूडा था, पर आज एक तिनका नही है।

तिनका भी न तोडना—हरामखोरी करना। उ० सारा दिन तुम तिनका भी नही तोडते, कब तक बैठ कर खाओगे।

तिनका भी न तोड सकना—अति निर्वल हो जाना। उ० अधिक दिन बीमार रहने के कारण वह तिनका भी नही तोड सकता।

तिनका सर से उतरना—किसी पर थोडा-सा एहसान करना।

तिनके का सहारा—कुछ भी या जरा भी सहारा। उ० डूबते को तिनके का सहारा भी वहुत है।

तिनके की ओठ पहाड छिपाना—थोडी वात मे वडी बात का छिपाना। उ० साफ-साफ कहो, तिनके की ओट पहाड नही छिप सकता।

तिनके का मार भी न सहना—तनिक-सी मार भी न सहना, कोमल होना।

तिनके को पहाड कर दिखाना—वहुत वढा-चढा कर कहना। उ० क्या तुम भी तिनके को पहाड कर दिखाते हो? वहाँ सौ आदमी भी नही थे और तुम हजारो कह रहे हो?

तिनके को पहाड़ करना—छोटी वात वडी वनना। उ० आम जनता मे तो तिनके का पहाड करना कोई असभव नहीं है। हमारी पौराणिक कथाएँ इसी प्रकार तो बनी हैं।

तिनके चुनना—१ बेकार काम करना। उ० तिनके चुनने से थोडे काम चलेगा, कहीं कुछ ठीक से काम करो। २ पागल होना। उ० वह तो तिनके चुनता है।

तिनके चुनवाना—१ पागल बना देना। २ मोह लेना, मोहित करना।

तिरछी आँखो से देखना—१ क्रोध से देखना। २ अनिष्ट करना। ३ कटाक्ष करना।

तिरछी चितवन—१ वगल की नजर। उ० तिरछी चितवन से क्यो देखते हो, क्या सीधे देखने मे कुछ डर है? २ प्रेम या कटाक्ष भरी आकर्षक दृष्टि। उ० उसकी तिरछी चितवन किसको नही मोहती?

तिरछी नजर—दे० 'तिरछी चितवन'।

तिरछी बात १ अप्रिय बात। उ० उसकी यह आदत है कि सबसे तिरछी बात कहता है। २ ऐसी बात जो जल्दी समझ मे न आये। तिरछी बात करोगे तो मैं उत्तर कैसे दूंगा।

उ० **तिरछे वचन**—दे० 'तिरछी बात'।

तिरभिर होना—खफा या नाराज होना। उ० क्यो तिरभिर हो रहे हो?

तिरिया-चरित्तर—१ स्त्रियो का रहस्य। उ० तिरिया-चरित्तर भगवान भी नही जान सकते। २ स्त्रियो का ढोंग या विचित्र चरित्र। नखरापूर्ण ढोंग। उ० यहाँ तिरिया-चरित्र न फैलाओ।

...ढना या चढाना—१. विवाह की एक रस्म होना या करना।

तिल का ताड करना—दे० 'तिनके का पहाड दिखाना'।

तिल का ताल बढा लेना—छोटे को बहुत बडा कर लेना। उ० तुम भली चाह को समझ लो तिल, ताल होगा उसे बढा लेना। ताल-तिल को न जो बढा पाया, काम आया न तो तिलक देना।

तिल की ओझल पहाड होना—दे० 'तिनके की ओट पहाड छिपना'।

तिल की ओट पहाड होना—दे० 'तिनके की ओट पहाड छिपना'।

तिल-चावले बाल—आधे काले, आधे सफेद बाल। उ० उसके ... तिल-चावले बाल हो गए हैं, वह शादी क्या करेगा?

तिल-तडुलवत् होना—ठीक से न मिलना। मिलने पर भी तिल और चावल की तरह काला और सफेद अलग-अलग रहना। उ० यह मेल तो तिल-तडुलवत् है।

तिल-तिल—१ क्षण-क्षण। उ० आज उसे बडा तेज बुखार है और तिल-तिल पर पानी माँग रहा है। २ थोडा-थोडा। उ० तिल-तिल से पहाड और बूंद-बूंद से समुद्र बनता है।

तिल-तिल का हिसाब—पाई-पाई का हिसाब। उ० आप तिल-तिल का हिसाब ठीक रखें, मैं दो-चार दिन मे ही सब देखूंगा।

तिल धरने की भी जगह न होना—थोडी भी जगह न होना। उ० उसे इतनी ज्यादा चेचक निकली हुई है कि उसके शरीर पर तिल धरने की भी जगह नही है।

तिल बँधना—शीशे से होकर आए हुए सूर्य के प्रकाश का एक बिंदु पर लगना। उ० तिल बँधे तो आग लग जाए।

तिल भर—१. थोडा-सा। उ० बिना युद्ध के तिल भर भी भूमि मैं आपको नही दे सकता। २ थोडी देर। उ० तिल भर रुको।

तिलमिला उठना—छटपटा उठना।

तिलस्म तोडना—गुप्त रहस्य का पता लगाना। उ० तिलस्म तोडने के लिए असाधारण दिमाग चाहिए।

तिलांजलि देना—बिल्कुल छोड देना। उ० इस आदत को तिलांजलि दे दो।

तिलो मे तेल न होना—ऐसा होना कि कुछ प्राप्त न किया जा सके। उ० क्या आप उनसे दान माँगने जा रहे हैं? अरे भाई! उन तिलो मे तेल नही है।

तिलो मे तेल निकालना—बहुत किफायतशारी करना।

तिस पर भी—ऐसी हालत मे भी। इतने पर भी। उ० उसकी तबियत इतनी खराब थी, तिस पर भी खेलने चला गया।

तिहत्तर के बीजो को पहुँचना—सत्यानाश को पहुँचना, नष्ट होना।

तिहाई मारी जाना—फसल न होना। उ० इस वर्ष वर्षा न होने से देश भर की तिहाई मारी गई।

तीखा होना—१ क्रोधित होना। उ० आप उस पर क्यो तीखे हो रहे हैं? २ तीत या तेज होना। उ० मिर्चा बडा तीखा है।

तीखे देखना—कटाक्ष करना।

तीतर कर देना—भगा देना। उ० उनके पास जाना बेकार है, वह बिना बात सुने ही तीतर कर देंगे।

तीतर-बटेर-सा लड़ना—बुरी तरह से लडना। उ० यह बच्चे तो सदा तीतर-बटेर-से लडते ही रहते हैं।

तीन कौडी का—अत्यन्त तुच्छ।

तीन खाना तेरह की भूख बनी रहना—पाने पर भी असन्तुष्ट बना रहना।

तीन-तेरह करना—अलग-अलग करना। नष्ट-भ्रष्ट या बारह-बाट करना। उ० ईश्वर के लिए इस राज्य को तीन-तेरह न करो।

तीन-तेरह मे न रहना—१ किसी झगडा-फसाद मे न रहना। उ० वह तीन-तेरह मे रहने वाला आदमी नही है। २ इधर-उधर के कामो मे न रहना। उ० वह तीन-तेरह मे नही रहता।

तीन-तेरह मे न होना—१ किसी श्रेणी मे न होना। उ० वह तीन-तेरह मे नही है तो उसे यहाँ बुलाने की कौन आवश्यकता थी? २. दे० 'तीन-तेरह मे न रहना'।

तीन-तेरह होना—तितर-बितर होना। नष्ट-भ्रष्ट होना। उ० उसके मरते ही उसका राज्य तीन-तेरह हो गया।

तीन पाँच करना—१. इधर-उधर की करना। उ० तीन-पाँच क्या कर रहे हो? २ टाल-मटोल करना। उ० तीन-पाँच करना चाहते हो या देना चाहते हो, साफ-साफ बतलाओ।

तीन बुलाये तेरह आना—कम लोगो को निमन्त्रित करने पर ज्यादा लोगो का आना।

तीन लोको से न्यारी मथुरा बसाना—सबसे अलग होना।

तीनो लोक दिखाई देना—१ कुछ न दिखाई देना। उ० ऐसा मारूँगा कि तीनो लोक दिखाई देने लगेगा। उ० उससे बात करने मे तीनो लोक दिखाई देने लगता है।

तीया-पाँचा करना—निपटारा करना। उ० इस झगडे का आप ही तीया-पाँचा कर सकते हैं, दूसरे से नही हो सकता।

तीर चलाना—१ उपाय निकालना। उ० इस काम मे खूब तीर चलाया था, पर आपकी गलती से सब बेकार हो गया। २. निशाना लगाना। ३ फेंकना। उ० अर्ज़ी की एक तीर तुम भी चला दो।

तीर निशाने पर बैठना—बात का सही और वांछित असर होना।

तीर-सा लगना—१ अच्छा न लगना। चुभना। उ० वह सबसे तीर-सी लगने वाली बात कहता है। २ कष्ट देना। उ० तुम्हारा व्यवहार उसे तीर-सा लगा होगा।

तीर हाथ से निकल जाना—स्थिति का वश से बाहर हो जाना।

तीर्थ करना—तीर्थ की धर्म के लिए यात्रा करना। उ० मेरे पिता जी तीर्थ करने गये हैं।

तीसमारखाँ बनना—बहुत बहादुर बनना, अपनी बहादुरी की डींग हाँकना। उ० आप अगर तीसमारखाँ बनते हैं तो उसे पकडिये।

तीसमारखाँ होना—दे० 'तीसमारखाँ बनना'।

तुक जोडना—१ टूटी-फूटी कविता बनाना। उ० वह केवल तुक जोडना जानता है। २. उपाय लगाना। उ० तुक जुड जाय तो मजा आ जाय। ३. कविता की पंक्तियो के अंतिम शब्दो को एक-दूसरे के वज़न पर रखना। उ० आज की कविता मे तुक जोडना आवश्यक नही है।

तुक मिलाना—दे० 'तुक जोडना'।

तुनतुना बँधना—रोब होना। उ० आजकल उसका गाँव मे खूब तुनतुना बँधा हुआ है।

तुन-फुन करना—जली-भुनी बातें करना। उ० तुन-फुन करना हो तो अपना रास्ता नापो।

तुम-ताम करना—१ गाली देना। उ० तुम हर समय तुम-ताम किया करते हो, ज़रा अपनी ज़बान सँभाल कर रहो, नही तो मार खा जाओगे। २ अशिष्टता से बात करना।

तुम डाल-डाल हम पात-पात—होशियार, अत्यधिक चतुर तथा सावधान।

तुरई का फूल होना—चटपट खतम हो जाने वाली चीज़ होना। उ० यह तो तुरई का फूल है, इसे खतम होते कितनी देर लगेगी?

तुरकी तमाम होना या हो जाना—घमड जाता रहना, शेखी निकलना। उ० एक ही थप्पड मे तुरकी तमाम हो जाएगी।

तुरत-फुरत—जल्दी, चटपट। उ० काम को तुरत-फुरत कर डालो।

तुर्क होना—विधर्मी होना। उ० तुम तो तुर्क हो, तुम्हारा छुआ मैं नही खा सकता।

तुर्की-बतुर्की जवाब देना—एक-एक बात का जवाब देना, मुँहतोड उत्तर देना। उ० वह तो तुर्की-बतुर्की जवाब देता है, उसके आगे ये क्या बोलेंगे?

तुर्रा कूटना—१ कोडे मारना। २ मार कर घोडे को आगे बढाना।

तुर्रा चढाना—भाँग पीना।

तुर्रा जमाना—दे० 'तुर्रा चढाना'।

तुर्रा-तरार—सुन्दर बालो की लट। उ० उसका तुर्रा-तरार देखने ही लायक है।

तुर्रा यह कि—इस पर भी, इतना और। उ० तुर्रा यह कि खाने के बाद उनको दक्षिणा भी चाहिए।

तुर्रा लेना—दे० 'तुर्रा चढाना'।

तुर्श कहना—कड़ुई बात कहना। उ० तुर्श कहना तो जैसे तुम्हारी छठी में लिखा गया था।

तुर्शरू होना—तीखे मिजाज वाला। उ० तुम तो बड़े तुर्शरु हो।

तुर्शा जाना—खट्टा हो जाना। उ० यह दूध तो तुर्शा गया है।

तुली होना—दृढ होना, उद्यत होना।

तुलुल्ली बांधना—धार छूटना, टोटी जारी होना।

तुले हुए—१ संतुलित, उचित। उ० तुले हुए शब्दो का प्रयोग करना। २ तत्पर, तैयार। उ० वे तुम्हे मारने पर तुले हुए है।

तूं-तां करना—गाली-गलौज करना। उ० तूं-तां न करो, नही तो ठीक न होगा।

तूंबी हाथ मे लेना—फकीर होना। उ० वना भेस जोगन का ले हाथ तूंबी चली डालसी ली व वदी खुदा की।

तू-तड़ाक करना—१ झगडा-फसाद करना। उ० एक छोटी-सी वात पर वे दोनो तू-तडाक करने लगे और अन्त मे लाठी भी चल गई। २ बुरी तरह बहस करना, वाद-विवाद करना।

तू-तडाक से बोलना—बहुत असभ्यता से वात करना। उ० आप ऐसे पढे-लिखे व्यक्ति को तू-तडाक से नही बोलना चाहिए। वह वेचारा क्या कहता होगा?

तूती बोलना—१ प्रभाव जमाना। रोव होना। उ० मेरे ज़िले मे उसकी तूती बोल रही है। २ बहुत धीमी आवाज़ होना। उ० नक्कारख़ाने मे तूती बोलना कौन सुन सकता है?

तू-तुकार करना—दे० 'तू-तडाक करना'।

तू-तू मैं-मै करना—दे० 'तू-तडाक करना'।

तू-तू मैं-मैं होना—लडाई-झगडा होना। वाद-विवाद होना। उ० उसका ऐसा स्वभाव है कि रोज़ाना ही दो-चार आदमियो से तू-तू मैं-मैं हो जाया करती है।

तूफान आना—१ ज़ोरो की आँधी आना। उ० उस दिन जब तूफ़ान आया तो मेरा मकान हिलने लगा था। २ आफ़त आना। उ० एक गया, फिर दूसरा तूफान आया।

तूफान उठाना—झगडा-झञ्झट करना, शोर-शराबा करना, विरोध करना।

तूफान जोडना—झूठा कलक लगाना। झूठ-मूठ दोपारोपण करना। उ० तूफान न जोडो, मुझे सभी लोग यहाँ जानते हैं।

तूफान वनाना—दे० 'तूफान जोडना'।

तूफान बांधना—दे० 'तूफान जोड़ना'।

तूफान मचाना—१ शोरगुल मचाना। उ० रात मे इस समय तूफान मचाना ठीक नही है, सब लोग अपने-अपने घर जायँ। २ झगडा खडा करना।

तूफान लगाना— दे० 'तूफान जोडना'।

तूफान वरपा करना—झगडा खडा करना। उ० वह कोई तूफान वरपा करने के लिए ही यहाँ आया होगा।

तूफानी होना—तेज़ होना।

तूल-तवाल करना—व्यर्थ मे किसी चीज़ को वहुत तूल देना। उ० तूल-तवाल क्यो करते हो, किसी तरह काम को खतम करो।

तूल देना—वढाना। उ० मामले को तूल न दो, नही तो बुरा होगा।

तृण को वज्र और वज्र को तृण बनाना—असमर्थ को समर्थ तथा समर्थ को असमर्थ वनाना।

तृण गहना—दे० 'दाँतो मे तिनका लेना'।

तृण गहाना—१ वश मे करना। उ० आप ऐसो को मैं तृण गहा कर छोडता हूँ। २ विनीत या नम्र वनाना। ३ नीचा दिखाना। हराना।

तृण तोड़ना—१ नजर वचाने के लिए तिनका तोड कर टोटका करना। उ० निरखत छवि जननि तृण तोरी। २ नाता तोडना। उ० मैं आपसे तृण तोड रहा हूँ अब आप मेरे यहाँ न आइयेगा।

तृण पकडना—दे० 'तृण गहना'।

तृण पकडाना—दे० 'तृण गहाना'।

तृण-वरावर—दे० 'तृणवत्'।

तृणवत्—तुच्छ, तृण की तरह। उ० मैं तुम्हारा धन तृणवत् समझता हूँ।

तृण-समान गिनना—तुच्छ समझना।

तृषा बुझना—तृप्ति होना।

तृष्णा मरना—इच्छाओ का अत होना।

तेज़ निगाह से देखना—क्रोधित दृष्टि से देखना।

तेरा-मेरा करना—१ मोह-माया मे फँसना। उ० तेरा-मेरा करने वाले भला क्या सन्यास लेंगे? २ किसी वस्तु के लिए झगडा करना। उ० छोटी-छोटी चीज़ के लिए तेरा-मेरा करना तुम्हे शोभा नहीं देता।

तेल जल चुकना–खत्म होना। समाप्ति नजदीक आना। उ० आपका भी तेल अब जल चुका।

तेल निकालना–१ बहुत मेहनत कराना। दुर्दशा कर डालना। उ० दिन भर घाम मे काम करवाते-करवाते तेल निकाल लेता है, अब मैं इसके यहाँ न रहूँगा। २ सार निकाल लेना। उ० तेल निकाल कर सिट्ठी छोड दी।

तेल लगाना–दे० 'मक्खन लगाना'।

तेली का बैल होना–हर समय काम मे लगे रहना। उ० आजकल तेली के बैल होने पर भी भरपेट भोजन नही मिलता।

तेली होना–गदा रहने वाला होना।

तेवर चढ़ना–१ क्रोधित होना। उ० उनके तेवर चढे हैं, आज कुछ न माँगो। २ दे० 'तोता-चश्म होना'।

तेवर चढाना–क्रोधित होना।

तेवर पर बल चढ़ना–दे० 'तेवर चढना'।

तेवर बदलना–दे० 'तेवर चढना'।

तेवर बिगड़ना–१ दे० 'तेवर चढना'। २ चेहरे का बदरग हो जाना। ३ मृत्यु के चिह्न चेहरे पर दिखाई देना।

तेवर बुरे दीखना–१ प्रेम मे अन्तर पडना। उ० उनके तेवर बुरे दीख रहे हैं। अब मैं यहाँ नहीं रहूँगा। २ क्रोधित दिखाई पडना।

तेवर बुरे नजर आना–दे० 'तेवर बुरे दीखना'।

तेवर मैले होना–१ आँख से उदासी प्रकट होना। उ० आज क्या बात हो गई है कि आपके तेवर मैले हैं? २ क्रोधित होना।

तैश दिलाना–क्रोध चढाना। उ० तैश न दिलाओ, नही तो कुछ कर बैठूँगा।

तैश मे आना–गुस्सा करना। क्रोध मे आना। उ० मैंने तैश मे आकर आपको कुछ कह दिया, माफ करेंगे।

तोद निकल आना–पेट फूल आना, बहुत मोटा हो जाना। उ० ग़रीबो की कमाई खाकर अमीरो की तोद निकल आती है।

तोद पचना–१ शेखी निकलना। २ मोटाई कम होना। उ० एक ही मुकदमे मे तोद पच जाएगी।

तोड-जोड़ करना–मोल-भाव करना।

तोडे उलटना–बहुत धन या रुपया देना। उ० आपने यहाँ तोडे नही उलटे है कि आपको मुफ्त दिलाऊँ।

तोताचश्म होना–बेमुरव्वत होना। उ० वह तो तोताचश्म है।

तोताचश्मी करना–बेमुरव्वती करना। उ० आज आप तोताचश्मी कर रहे हैं, और अपनी बार रोने लगते हैं।

तोता पालना–१ रोग जान कर बढने देना। २ किसी दुश्मन की परवरिश करना। ३ किसी बुरी आदत को न रोकना।

तोते उड़ जाना–सिटपिटा जाना, घबरा जाना।

तोते की तरह आँखें फेरना–१ बहुत निर्दयी होना। उ० उनकी यह आदत है कि काम पडने पर तोते की तरह आँखें फेर लेते हैं और इस तरह बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं। २ बिना शील का होना।

तोते की तरह आँखें बदलना–दे० 'तोते की तरह आँखें फेरना'।

तोते की तरह पढ़ना–बिना समझे-बूझे याद करना। उ० तोते की तरह पढना बेकार है, समझ-बूझ कर याद करो।

तोते की तरह पढ़ाना–बहुत परिश्रम से पढाना या सिखाना। उ० दो महीने से तोते की तरह पढा रहा हूँ, पर तुम्हारी समझ मे खाक नही आता।

तोप कीलना–तोप का मुंह बद करना।

तोप के मुंह पर रख कर उड़ाना–बुरी तरह मारना। मरने की सजा देना। उ० तोप के मुँह पर रख कर मुझे उडा देना, मैं तुम्हारी नही सुनता।

तोप के मुंह मे मेख ठोकना–तोप का मुँह बद करके उसे बेकार कर देना। उ० बहुत-सी पुरानी तोपो के मुँह मे मेख ठोक दी गई है।

तोबडा चढ़ाना–बोलने से रोकना, मुँह बंद करना।

तोबा करना–१ न करने की कसम खाना। उ० आज से बुरे कामो के लिए तोबा करता हूँ। २ घृणा करना। ३ दूर करना। उ० तोबा करो ऐसे खाने को।

तोबा-तिल्ला करना–रोते-चिल्लाते या दीनता दिखाते हुए तोबा करना। उ० क्या तोबा-तिल्ला करते हो, तुम्हे मैं नही जानता क्या?

तोबा-तिल्ला मचाना–दे० 'तोबा-तिल्ला करना'।

तोबा तोडना–प्रतिज्ञा भग करके फिर वही काम करना। उ० सुरक्षा परिषद् ने काश्मीर के मामले मे तोबा तोड दी।

तोबा बोलवाना–परीशान करके 'नाही' करवाना। उ० आज उनसे तोबा न बुलवाया तो मुझे पठान का जना न मानना।

तोबा से कहना–घमड छोड कर कहना। उ० मैं तोबा से कहता हूँ कि मैंने उनको हर तरह से हराया है।

तोर-मोर करना–अपना-पराया करना।

तोरई छौंकना—बात को और रग देना ।

तोहमत का घर—वह कार्य या स्थान, जिसमे वृथा कलक लगने की सभावना हो । उ० तोहमत के घर मे घुसकर साफ रहने की आशा रखना मूर्खता से भी बढकर है ।

तौर-बेतौर होना—१ हालत चिन्ताजनक होना । उ० मरने मे कुछ ही देर जान पडती है, क्योकि प्रात काल से ही वह तौर-बेतौर हो गया है । २ रग-ढग अच्छा न रहना । उ० सगत के प्रभाव से उसका तौर-बेतौर हो गया है ।

तौल-तौल के पडना—जूतो की खूब मार पडना । उ० आज तो ऐसे तौल-तौल के पडेगे कि छठी का दूध याद आ जायगा ।

तौल में ओछा ठहरना—जाँच करने पर निम्न कोटि का ठहरना ।

त्यौरी चढना—दे० 'तेवर चढना' ।

त्यौरी चढाना—दे० 'तेवर चढाना' ।

त्यौरी बदलना—दे० 'त्यौरी चढाना' ।

त्यौरी मे बल डालना—दे० 'त्यौरी चढाना' ।

त्यौरी मे बल पड़ना—क्रोध का आभास होना । उ० मजाक मे ही उसकी त्यौरी मे बल पड गया ।

त्यौहार मनाना—खुशी मनाना । उ० आज तो सभी लोग त्यौहार मना रहे है ।

त्रपा-रडा—१ छिनाल स्त्री । २ वेश्या ।

त्राण करना—रक्षा करना । उ० गरीबो का त्राण कोई नही करता है ।

त्राहि-त्राहि करना—दया या रक्षा के लिए प्रार्थना करना । उ० आज सारा ससार त्राहि-त्राहि कर रहा है ।

त्राहि-त्राहि मचाना—हाहाकार होना । उ० अकाल के कारण सम्पूर्ण देश मे त्राहि-त्राहि मची है ।

त्राहि-त्राहि होना—दे० 'त्राहि-त्राहि मचना' ।

त्रिशकु रहना—कही का न होना, बीच मे लटका होना । उ० माता जी के साथ इसलिए नही गया कि बहन के साथ जाऊँगा । आज यहाँ आया तो पता चला कि बहन जा चुकी है । मैं अच्छा त्रिशकु रहा । अब क्या करूँ, कुछ समझ मे नही आता ।

त्रिशूल होना—दुख होना । उ० जो तोको काँटा बोए, ताको बोइ तू फूल । तोको फूल को फूल है, वाको है तिरशूल ।

त्रेता के बीजो मे मिलना—नाश होना । उ० ईश्वर करे कि विश्व के शोपक त्रेता के बीज मे मिल जायँ । (यह शाप है ।)

त्रैलोक्य छानना—बहुत खोजना । उ० त्रैलोक्य छानो, पर उसे पा नही सकते ।

थ

थइली भर लेना—१ मोटा-झोटा कुछ भी खाकर पेट भर लेना । उ० खाता क्या हूँ, थैली भर लेता हूँ । २ अपने पास अच्छी तरह रख लेना । उ० आप थैली भर लीजिए, और किसी को मिले या नही ।

थक कर चूर होना—बहुत थक जाना । उ० आज के काम से तो मैं थक कर चूर हो गया हूँ ।

थक्का मारना—पदा मारना, दिक कर देना । परीशान कर देना । उ० तुमने तो उन्हे थक्का मारा ।

थड़म-थड़म होना—जलील या बेइज्जत होना । उ० मैं वहाँ थडम-थडम होने नही जा सकता ।

थड़म-थड़म करना—लानत-मलामत करना, थू-थू करना, बुरा-भला कहना ।

थपड़ी पीटना—१ मजाक उडाना । उ० उनके खडा होते ही इतनी थपडी पीटी गई कि बिना बोले ही बैठ गए । २ निरादर करना । ३. न चाहने का प्रदर्शन करना । उ० आधी ही कविता मैंने सुनाई थी कि लोग थपडी बजाने लगे और मैं चला आया । ४ अच्छे होने या चाहने का प्रदर्शन करना । उ० उस दिन उसके भाषण मे खूब थपडी पीटी जा रही थी ।

थपडी बजाना—दे० 'थपडी पीटना' ।

थपेडे खाना—विपत्ति मे पडना ।

थप्पड़ कसना या कस देना—तमाचा मारना । उ० छोटी-सी बात के लिए तुमने क्यो थप्पड कस दिया ?

थप्पड जड़ना या जड देना—दे० 'थप्पड कसना' ।

थप्पड़ लगाना–दे० 'थप्पड कसना'।

थय्यक-थय्या करना–दे० 'थेई-थेई करना'।

थय्यक-थय्या होना–दे० 'थेई-थेई होना'।

थर-थर करना–१ काँपना। उ० वह जाडे के मारे थर-थर कर रहा था। २ डरना या डर कर काँपना।

थरथरी छूटना या छूट जाना–डर से काँपना। उ० मालिक के आगे नौकर की थरथरी छूटने लगी।

थल-थल करना–मोटा होने के कारण मासपेशियो का फूलना। उ० इतना मोटा हो गया है कि थल-थल करता है।

थल-थल पिल-पिल होना–मुटापे के कारण ढीला-ढाला शरीर होना।

थल-बेड़ा लगना–ठिकाना लगना। उ० ए० जी० आफिस मे बहुतो का थल-बेडा लगता है।

थल-बेडा लगाना–आश्रय देना। उ० तुमने अभी तक किसी का थल-बेडा नही लगाया।

थल बैठना–१ आराम या शाति से बैठना। उ० इस समय मै थल बैठा हूँ, क्योकि कोई काम नही है। २ बेकार बैठना।

थल से बैठना–दे० 'थल बैठना'।

थाँग लगाना–पता लगाना। उ० थाँग लगाने के बाद यही मालूम हुआ कि वह नही आयेगा।

थान का टर्रा होना–१ अपने घर पर बल दिखाना। उ० थान का टर्रा तो एक कुत्ता भी होता है।

थान का सच्चा–सीधा जानवर, जो घूम-घाम कर अपने घर आ जाय। उ० तुम्हारी गाय तो थान की सच्ची है।

थान मे आना या आ जाना–धूल मे लोट कर घोडे की थकावट मिटाना। उ० घोडा थान मे आ गया हो तो नाँद पर लगा दो।

थाना चढ आना–पुलिस का अधिक सख्या मे कही आ जाना। उ० उस डाके के कारण वहाँ थाना चढ आया है।

थाना बिठाना या बैठाना–सिपाहियो की चौकी बैठाना या पुलिस का पहरा बैठाना या रखना। उ० जब से उपद्रव होने लगा है, तब से हमारे गाँव मे भी थाना बिठा दिया गया है।

थाने चढ़ना–थाने मे दर्ख्वास्त या रपट देना। उ० कल वाला मुकदमा अभी थाने नही चढा है।

थाने-पवाने लगना–अपने उपयुक्त स्थान पर जाना। उ० अब आप अपने थाने-पवाने लगें, यहाँ आपकी आवश्यकता नही है।

थाप-थोप देना–दे० 'थोप-थाप देना'।

थाप मारना–छापा मारना, अनजाने मे हमला करना। उ० सिकन्दर की सेना ने पोरस पर थाप मार कर जीत लिया।

थाली का बैंगन–१ अविश्वासी या असतुलित मस्तिष्क का आदमी। उ० तुम्हारे जैसे ही लोग थाली के बैंगन होते है। मैं ऐसे मित्रो से दूर ही रहना चाहता हूँ। २ ऐसा आदमी जिसका कोई सिद्धान्त न हो।

थाली फिरना–बहुत भीड होना। उ० यहाँ के मेलो मे हर साल थाली फिरती है।

थाली बजना–थाली पीट कर मन्त्र से विष का खीचा जाना। उ० वहाँ थाली बज रही है, चलो देख आयें।

थाली बजाना–१ साँप का विष मन्त्र पढ कर थाली के सहारे खीचना। उ० थाली बजाने वाले कामरूप मे विशेष मिलते है। २ बच्चे की पैदाइश के छठे दिन थाली बजाया जाना। उ० अभी थाली नही बजाई गई है।

थाली-लोटा तक बिकना–कगाल हो जाना, दीवाला हो जाना। उ० कल जो लखपति था, आज उसका थाली-लोटा तक बिक रहा है।

थाह न होना–अन्दाज न होना।

थाह पाना–१ स्थिति का सही-सही अदाज लगाना। २ सहारा पाना।

थाह मिलना–१ किसी के धन का पता चलना। उ० आज उनकी भी थाह मिल गयी। २ किसी चीज की गहराई मालूम होना। उ० उस व्यक्ति की थाह मिलना आसान नही है। नदी की थाह मिली। ३ ज्ञान का पता चलना।

थाह लगना–दे० 'थाह मिलना'।

थाह लेना–१ किसी का भेद लेना। उ० तुम क्या थाह ले रहे हो, अभी तुमसे अधिक धन है। २ गहराई जानना। उ० इस नदी का थाह लेना कौन कठिन है?

थिगली लगाना–दुर्गम मे भी पहुँचने का उपाय करना। उ० फ्रास वाले चद्रमा मे पहुँचने की थिगली लगा रहे है।

थुडी-थुडी करना–छि-छि करना, न पसन्द करना, निन्दा करना। उ० पूरा गाँव उसके काम की थुडी-थुडी कर रहा है।

थुड़ी-थुड़ी होना—बेइज्ज़त होना।

थुथुना फुलाना—१ नाराज़ होना। उ० मैंने तुम्हें क्या कह दिया, जो थुथुना फुलाये हो।

थुप जाना— लग जाना, किसी बात का अपने ज़िम्मे पड जाना। उ० देवे गाली गर कोई, बाज़ार मे मुड कर न देख, तुझ ही पर थुप जायगी, देखा अगर मुँह मोडकर।

थूक उछालना—१ व्यर्थ की बकवाद करना। उ० अब तो हार ही गए, व्यर्थ थूक उछालने से क्या लाभ ? २ बदनामी करना।

थूक कर चाटना—१ प्रतिज्ञा करके पूरी न करना। उ० थूक कर चाटते हो, शर्म नही लगती ? २ एक बार देकर फिर ले लेना। उ० तुम्हारी चीज कौन लेगा ? तुम तो थूक कर चाटते हो। ३ बात का पक्का न होना।

थूक देना—१ न पसद करना। उ० उसने रोटी मुँह मे लेकर थूक दी। २ घृणा करना।

थूकना—नफरत करना। उ० उस पर क्यो थूकते हो ?

थूकना भी नहीं—पसद न करना। उ० ऐसी सडी मिठाइयो पर हम थूकते भी नही।

थूकने भी न आना—१. बिलकुल तिरस्कृत करके छोड देना। २ मामूली काम भी सलीके से करने का शऊर न होना।

थूक बिलोना—दे० 'थूक उछालना'।

थूक लगा कर छोड़ना—बहुत परीशान करना। ज़लील करके छोडना। उ० थूक लगा कर न छोडा तो कहना।

थूक लगा कर रखना—मक्खीचूसी से बटोरना। उ० वह तो थूक लगा कर चीज़ रखता है, जितनी पुरानी चाहो, माँग लो। थूक लगा कर रखने वाले ही धनी हो सकते है।

थूक लगाना—नीचा दिखाना। उ० वह हर समय अपने दुश्मनो को थूक लगाने के फेर मे रहता है।

थूक से सत्तू सानना—बहुत किफायत से काम निकालना। कजूसी करना। उ० थूक से सत्तू सानना तुम्हे शोभा नही देता।

थूक से चुहिया जिलाना—अपर्याप्त या अनुपयुक्त साधन से कुछ करना।

थूका करना—थू-थू करते रहना, घृणा करते रहना। उ० साहबीयत मे रहेंगे मस्त हम, थूकते हैं लोग तो थूका करें।

थूथुन फुलाना—दे० 'थुथुना फुलाना'।

थू-थू करना—पसद न करना। छि-छि करना। उ० आपके इस नीच काम पर सब लोग थू-थू करेंगे।

थू-थू होना—१ शिकायत होना। २ बेइज्ज़ती होना। उ० इस नीच काम की वजह से चारो ओर थू-थू हो रही है।

थेई-थेई करना—नाचना। उ० देखो छोटा बच्चा थेई-थेई कर रहा है।

थेई-थेई होना—नाच होना। उ० वहाँ जब भी थेई-थेई होती है, वह पहुँच जाता है।

थैली कटना—जेब कटकर रुपये चोरी जाना। उ० मेले मे मेरी ४०० रुपये की थैली कट गई।

थैली करना—बहुत मार मारना। उ० अगर ज़्यादा शरारत करोगे तो थैली कर दूंगा।

थैली काटना–१ जेब कतर कर या चोरी से किसी का रुपया मार लेना। उ० मेरी तो किसी ने थैली काट ली। २ बहुत अधिक हानि पहुँचाना। उ० मेरी तो तुमने थैली काट ली।

थैली खोलना—१ रुपया बाँटना। २ अधिक खर्च करना। उ० इस तरह से थैली न खोलो, नही तो बुढापे मे पछताओगे।

थैली मारना—दे० 'थैली काटना'।

थोक करना—जमा करना। उ० बरसात के लिए सूखी लकडी थोक कर लो।

थोड़ा-थोड़ा होना—लज्जित होना, सकुचित होना। उ० क्यो थोडा-थोडा होती हो, वह तुम्हारी गलती नही है। साफ (ललाट) सीमी वो तेरी देख के गोरी-गोरी, शम्मा खिजलत से हुई जाती है थोडी-थोडी।

थोड़ा-बहुत—कुछ। उ० थोडा-बहुत काम तुम भी कर दो।

थोड़े ही—नही। उ० हम थोडे ही जाएँगे।

थोथे तीरो से उड़ाना—कुद छुरी से काटना, सख्त तकलीफ देना। उ० इसे तो थोथे तीरो से उडाने मे भी गुनाह नही है।

थोथी बात होना—१ बेकार की बात होना। उ० आज फिर थोथी बात होगी तो कल मैं न आऊँगा। २. झूठ बात होना। ३ निस्सार बात होना।

थोप-थाप देना—मोटी-मोटी रोटी बना देना।

उ० थोप-थाप दो, वहुत महीन की क्या ज़रूरत है ?

थोबड़ा सुजाना—मुँह फुलाना नाराज़ होना ।

उ० क्या थोबडा सुजाए बैठे हो ?

थोब रखना—जहाज़ को धार पर चढाना ।

द

दंग रह जाना या रहना—हैरत मे पडना । हैरान हो जाना, आश्चर्य-चकित रह जाना । उ० मैं उसकी बात सुन कर दग रह गया ।

दंगल मे उतरना—१ घर के जजाल मे आना । उ० जव दगल मे उतरोगे तो मालूम होगा कि ससार किसे कहते है । २ कुश्ती लडने के लिए अखाडे में आना । उ० दो नामी पहलवान दगल मे उतरे है । ३ किसी लडाई या प्रतियोगिता मे किसी की वरावरी मे खडा होना ।

दंग होना—दे० 'दग रहना' ।

दंगा-फसाद करना—झगडा-तकरार करना । उ० क्यो दगा-फसाद करते हो ?

दंड ग्रहण करना या कर लेना—१ सन्यास लेना । वैराग्य लेना । उ० जब उन्होने दड ग्रहण कर लिया तो घर से क्या मतलब । २ सजा देने के लिए तैयार होना ।

दंड डालना—१ जुर्माना लगाना । उ० यदि जेल न होगा तो दड तो जरूर डाला जाएगा । २ कर लगाना । उ० आजकल पहले मे अधिक दड डाल दिया गया है ।

दंड पडना—हानि होना । उ० इस काम मे हमे काफी दड पडा है ।

दंड पेलना—१ दड की कसरत करना । उ० वह बहुत दड पेलता है । २ पहलवानी करना । उ० तुम तो दड पेलते हो, भला मैं क्या खाकर तुमसे लडूँगा ।

दंड प्रणाम करना—साष्टाग प्रणाम करना ।

दंड भरना—१ हानि पूरी करना । उ० आज तक तो दड भरना पडा है और अब लाभ करने का समय आ गया तो तुमने काम ही बन्द कर दिया । २ अर्थदड पूरा करना । उ० इस महीने तक दड भरना है ।

दंड भुगतना—१ सज़ा सहना । उ० खूब चोरी कर लो, जब दड भुगतना पडेगा तो मालूम होगा । २ जुर्माना देना ।

दंड भोगना—दे० 'दड भुगतना' ।

दंड मारना—दे० 'दड पेलना' ।

दंड लगाना—१ दे० 'दड पेलना' । २ जुर्माना लगाना ।

दंड सहना—१ घाटा उठाना । उ० लाभ उन्होंने उठाया और दड हमे सहना पडा । २ दड भुगतना ।

दंत-कटाकट—झगडा ।

दंश रखना—वैर या द्वेष रखना । उ० वह तुमसे दश रखता है ।

दई का खोया—अभागा ।

दई का घाला होना—अभागा होना । उ० वेचारा दई का घाला है, उसे न सताओ ।

दई का मारा होना—दे० 'दई का घाला होना' ।

दई-मारा होना—दे० 'दई का घाला होना' ।

दकीका वाक़ी न रखना—सब तरकीब कर डालना । उ० मुझे नीचा दिखाने के लिए उन्होने कोई दकीका वाकी तो न रखा, पर मेरा कुछ न कर सके ।

दक्खिन जाना—मर जाना । दक्षिण दिशा के स्वामी यम है । इसी आधार पर यह मुहावरा वना है । उ० वह तो वरावर दक्खिन जाने की ही गाली दिया करती है । [यह गाली स्त्रियो द्वारा ही प्रयुक्त होती है ।]

दक्षिण होना—अनुकूल होना ।

दखल करना—शासन जमाना । अधिकार करना । उ० उस खेत पर दखल करना हो तो ज़रा दल-वल के साथ आना ।

दखल देना—हस्तक्षेप करना, कूद पडना । उ० मेरी वात में तुम दखल न दो, नही तो ठीक न होगा ।

दखल पाना—अख्तियार पाना । उ० उस मकान पर तो मैं दखल पा गया ।

दखल होना—अख्तियार होना । उ० मेरा तो उस खेत पर कभी दखल हो गया ।

दगा करना या देना—धोखा देना, छल करना । उ० वह दगा करेगा, तुम उससे ज़रा होशियार रहना ।

दत्तक लेना—गोद लेना । उ० वश चलाने के

लिये दत्तक ले लिया तो कौन वेजा बात की ?

दधिसुत-सुत—विद्वान्, पडित । उ० जिनके हरि वाहन नही दधिसुत-सुत जेहि नाहिं ।

दफा करना—१ वेइज्ज़ती के साथ दूर हटाना । उ० अगर ज़्यादा बकबक करोगे तो दफा कर दूँगा । २ समाप्त या ख़तम करना ।

दफा-दफान करना—दे० 'दफा करना' ।

दफा-दफान होना—रफा-दफा होना, शात होना । उ० झगडा किसी तरह दफा-दफान हो गया ।

दफा-रफा करना—ख़तम करना । उ० झगडे को दफा-रफा करो ।

दफा लगाना—कानून या नियम लगाना । उ० उस पर डकैती की दफा लग गई है, अव उसका जीवन चौपट हुआ ।

दफ्तर खोलना—१ विस्तृत हाल सुनाना । उ० आप यहाँ दफ्तर न खोलें, मेरे पास इतना समय नही है । २ बहुत कागज़-पत्तर इकट्ठा करना, या सामने रखना । उ० तुमने तो पूरा दफ्तर खोल रखा है ।

दफ्तर वेखना—हिसाव देखना ।

दबंग होना—रोब-दाव वाला या दबाने वाला होना ।

दबकी मारना—१ गुप्त हो जाना । गायव होना । उ० जव से उस पर चोरी का अपराध लगा है, वह दवकी मार गया है । २ चुप हो जाना, डर कर शात हो जाना । उ० यो तो वहुत वमक रहे थे, पर उसे देखते ही दवकी मार गए ।

दब जाना—बहुत एहसान मानना ।

दब-दबा के रहना—१ चुपचाप रहना । शात रहना । उ० दब-दवा के रहो, कोई कुछ सुना देगा तो क्या लाभ ? २ डर कर शात रहना ।

दबा क्रोध—भीतर दवा हुआ क्रोध ।

दबा बैठना—दे० 'दवा लेना' ।

दबा लेना—१ हडप लेना । उ० उस नीच ने वहुत से गरीबो का धन दवा लिया । २ कब्जे मे कर देना । ३ हराना । उ० तुम उसे दवा लोगे ?

दबाव डालना—किसी काम आदि के लिए किसी पर ज़ोर डालना । उ० दबाव डालो तो शायद काम कर दे ।

दबी आँख से देखना—चोरी-चोरी कनखी से देखना ।

दबी आवाज कहना—१ धीमी आवाज़ होना । अस्पष्ट कहना । उ० जो कुछ कहना हो, ज़ोर से कहो, क्यो दवी आवाज़ कहते हो ? २ भय से कहना । उ० तुम्हारे ऊपर कोई जुल्म नही करेगा, तुम दवी आवाज़ से न कहो ।

दबी जबान से कहना—१ स्पष्ट न कहना । उ० अपराधी सदा अपने अपराधो को दवी ज़बान से कहता है । २ भयभीत होकर कहना । उ० दवी जवान से न कहो, मैं कोई कटाऊँ नही हूँ ।

दबी जबान से बोलना—दे० 'ज़बान दवा कर कहना ।'

दबी बिल्ली का चूहे से कान कटाना—प्रतिकूल परिस्थिति मे दुर्बल व्यक्ति का भी हावी हो जाना ।

दबे पाँव—चुपचाप, धीरे से । उ० दवे पाँव जाना ताकि कोई जान भी न सके ।

दबे पाँव निकल जाना—धीरे से चले जाना । उ० दवे पाँव निकल गये, नही तो आज वतला देता ।

दबे पैर—दे० 'दवे पाँव' ।

दम अटकना—१ साँस रुकना । मृत्यु के समय साँस रुकना । उ० आज उसकी हालत वडी ख़राव है, दम भी अटक रहा है, शायद अव न वचेगा । २ दमा के कारण साँस का रुकना । ३ आघात या परिश्रम के कारण साँस ठीक से न आना ।

दम आना—साँस फूलने लगना । उ० थोडा भी चलता हूँ तो दम आ जाता है, कोई दवा दे दो ।

दम उखड़ना—दे० 'दम टूटना' ।

दम उलझना–चित्त मे व्याकुलता होना। जी घबराना। उ० परिवार की झंझटो से दम उलझा हुआ है।

दम उलटना–१ जी घबराना। उ० भाई का पत्र नही आया, दम उलट रहा है। २ किसी कारण से साँस रुकना। उ० कमरे मे हवा और रोशनी नही है तो दम उलटना स्वाभाविक है।

दम के दम–थोडी भी देर। उ० वह यहाँ आई थी, पर दम के दम भी न रुक सकी।

दम के दम मे–बहुत जल्दी। उ० दम के दम मे उसने भोजन बना लिया।

दम खिंचना–१ दे० 'दम उखडना'। २. दे० 'दम अटकना'।

दम खींचना—१ कुछ न बोलना। उ० वक्त पर तो तुम दम खीच जाते हो। २ गाँजे या चरस का दम लगाना। उ० साधु बावा अभी तो दम खीच रहे हैं। ३ हिम्मत बाँधना। ४ साँस ऊपर चढाना। उ० दम खीच कर उठाओ।

दम खुश्क होना–१ एकदम चुप रह जाना। उ० बाप को देखते ही उसके दम खुश्क हो गये। २ डर जाना। ३ घबरा जाना।

दम घुटना–१ साँस रुकना। उ० भाई तुमने तो ऐसे कमरे मे बन्द कर दिया कि मेरा दम घुटने लगा। २ तबीयत घबराना। उ० वह दृश्य देख कर मेरा दम घुटने लगा।

दम घोट कर मारना–गला दबा कर मारना। उ० बेचारे को चोरो ने दम घोट कर मार डाला।

दम घोटना–१ बहुत दुख देना। उ० ग़रीबो का दम घोट कर आपको क्या लाभ होगा? २ साँस न लेने देना। उ० उसका दम न घोटो।

दम चढ़ना–१. साँस जल्दी-जल्दी चलना। उ० काम करते-करते मेरा दम चढ गया, अब मैं आराम करना चाहता हूँ। २ किसी के बहकावे मे आना। उ० दम न चढो, नही तो धोखा खाओगे।

दम चुराना–जी चुराना। उ० तुम काम से बहुत दम चुराते हो।

दम छोड़ना या छोड़ देना—मर जाना। उ० उसके इकलौते बेटे ने आज दम छोड़ दिया।

दम जाना–मर जाना। उ० आज उसका दम जाता रहा।

दम झाँसा देना–धोखा देना। बहकाना।

दम टूटना—मरना, मरने के करीब होना। उ० काम छेडा छूटता छोडे नही टूटता है दम रहे तो टूटता। २ साँस फूलना। जल्दी-जल्दी साँस आना। उ० आज उसका दम टूट रहा है।

दमडी का तीन होना–१ बहुत सस्ता होना। उ० आजकल आप दमडी के तीन हो गये हैं। २ व्यर्थ होना, बिना काम का या बेकार होना मारा-मारा फिरना। उ० वह तो अब दमडी का तीन हो गया है।

दमडी की हँडिया खोकर कुत्ते की जात पहचानना–थोडा खोकर ही व्यक्ति की नीयत तथा स्तर जान लेना।

दमड़े करना–बेच कर दाम निकालना। उ० अब तो घाटा लग ही गया, कम से कम दमड़े तो कर लो।

दम तोडना–१ आखिरी साँस लेना। उ० वह तो अब दम तोड रहा है। २ मर जाना। उ० उस कुत्ते ने आज दम तोड दिया।

दमदार होना–मजबूत और दृढ होना। उ० वह दमदार है।

दम-दिलासा देना–१ झूठी आशा देना। उ० दम-दिलासा देकर उसे मैं यहाँ ले आया, पर तुम्हारे न रहने से आना बेकार हो गया। २. पट्टी पढाना, बहकाना।

दम-दिलासे मे आना–दे० 'धौंस-पट्टी मे आना।'

दम देना–बहकाना, शह देना। उ० उसने दम देकर बेचारे को फँसा दिया।

दम न मारना–थोडा भी आराम न करना। उ० तुम तो दम भी नहीं मारते। इतना परिश्रम शरीर को सुखा डालता है।

दम निकलना–१ मर जाना। उ० कल शाम को उसका दम निकल गया। २ घबराहट या परेशानी होना। उ० मारे गर्मी के दम निकल रहा है।

दम-पट्टी पढाना–दे० 'दम-पट्टी पिलाना'।

दम-पट्टी पिलाना–दे० 'दम-झाँसा देना'।

दम पर आना या आ जाना–१ प्राण पर आ बनना, मर जाने का ख़तरा होना। उ० दम पर आ बनी तो मुझे भी पिस्तौल उठानी पड़ी। २ बहुत परीशानी होना।

दम-पर-दम–बराबर। रोज़-ब-रोज़। उ० दम-पर-दम वह बदमाश होता जा रहा है।

दम फड़क उठना–१ मन खुश हो जाना। उ० जब मैं उसे देखता हूँ तो मेरा दम फडक उठता है। २ उत्तेजना होना।

दम फड़क जाना–दे० 'दम फडक उठना'।

दम फना होना–होश उड जाना। उ० पागल हाथी को देखते ही उस दिन मेरा दम फना हो गया।

दम फूँकना–मुँह मे हवा भरना। उ० गुब्बारे मे दम फूँक दो।

दम फूलना–साँस फूलना। उ० आज उसका दम फूल रहा है, वह कही आ-जा नही सकता।

दम बंद करना–बोलने न देना। उ० दम बद न करो, उसे भी कहने दो।

दम बंद होना–डर या शर्म से एकदम चुप रह जाना। उ० मुझे देखते ही उनका दम बद हो जाता है।

दम-ब-दम–थोडी-थोडी देर पर। उ० उसे दम-ब-दम बेहोशी आ रही है।

दम बाँधना या बाँध लेना–१ चुप हो जाना। उ० आप हमारी बातो पर तो दम बाँध लेते हैं। २ साँस रोकना। उ० वह खूब दम बाँधता है, इसी कारण डूब कर बहुत दूर निकल जाता है। ३ हिम्मत करना। उ० दम बाँधो तो काम शुरू करें।

दम भरना–१ थका देना। उ० तुमने तो लडा कर दम भर दिया। २ थकना। उ० आज तो चलते-चलते दम भर गया। ३ दोस्ती या प्रेम का अटल विश्वास रखना। उ० उसकी दोस्ती का क्या दम भरते हो, वह तुम्हारे किसी काम नही आ सकता।

दम मारना–१ सुस्ताना, थोडी देर आराम करना। उ० क्यो मरते हो, ज़रा दम मार लो। २ गाँजा पीना। उ० यह दम मारने की आदत कब से सीखी ?

दम मारने की फ़ुर्सत न होना–थोडा भी समय न होना। उ० यहाँ तो दम मारने की फ़ुर्सत नही है, और आपको घूमने की पड़ी है।

दम मे आना–बढावे या शह मे आना। उ० अगर इस बार फिर दम मे आये तो सारा खेल चौपट हो जायगा।

दम मे दम आना–मन स्थिर होना। जान मे जान आना। शाति होना। उ० उस दिन जगल मे शेर देखकर मैं तो बहुत डरा, पर जब बहेलिये ने बतलाया कि वह मर चुका है तो दम मे दम आया।

दम मे दम रहना–जीवित रहना, ज़िदा रहना। उ० अगर दम मे दम रहा तो एक-एक से बदला लूँगा।

दम मे लाना–दे० 'दम देना'।

दम रोकना–साँस न लेना। उ० आप दम रोक कर पानी मे कितनी देर तक रह सकते हैं ?

दम लगना–धूम्रपान होना, गाँजा आदि का पिया जाना। उ० अगर आप मेरे साथ चलें तो आज दम लगे।

दम लगाना–चरस या गाँजा आदि पीना। उ० आजकल के साधू लोग दम लगाना भी धर्म समझते हैं।

दम लेकर बैठना–१. सन्तोष करके चुप हो

जाना । उ० आदमी अधिक हो तो कुछ न बोलना । ऐसे में दम लेकर बैठना ही उचित होता है ।

दम ले रहना—१. चुप हो जाना । टाल जाना । २ दे० 'दम लेकर बैठना' ।

दम साधना या साध लेना—१ सांस रोकने का अभ्यास करना । उ० दम साधने से मनुष्य दीर्घायु होता है । २ कुछ न बोलना, चुपचाप रहना । उ० तुम्हारी बातो को सुन कर तो वे दम साध लेते हैं ।

दम सूखना—दे० 'दम खुश्क होना' ।

दमन-चक्र चलना— अत्याचार होना ।

दम ही दम मे रखना—व्यर्थ की आशा मे रखना । उ० दम ही दम मे न रखो, ये किसी के भी नही ।

दमामा पीटना—प्रचार करना ।

दरकच लगना—दबाव या धक्के के कारण कुचल जाना । उ० उँगली में दरकच लग गई, खून वह रहा है ।

दर-किनार रहना—दूर रहना, कोई प्रश्न न रहना । उ० उसके यहाँ जाना तो दर-किनार रहा, मैं उससे बोल भी नहीं सकता ।

दर-किनार होना—दूर होना । उ० यहाँ से दर-किनार हो ।

दरखास्त गुज़रना—प्रार्थना-पत्र पेश किया जाना । उ० हमारे मुक़दमे की दरख़ास्त गुज़र चुकी है ।

दरख़ास्त देना—१ किसी के विरोध मे प्रार्थना-पत्र देना । उ० कल वाले काड मे उसने तुम्हारे ऊपर दरखास्त दे दी है । २ अर्जी देना । उ० दरखास्त दे दो ।

दरख़ास्त पड़ना—दे० 'दरखास्त गुज़रना' ।

दर-गुज़र करना—टाल देना, क्षमा करना, परवाह न करना । उ० तुम्हारी बातो को तो सभी दरगुज़र करते हैं ।

दरजबंदी करना—दीवाल के दरार आदि को चूने से बद करना ।

दर-दर की धूल फांकना—दुर्दशाग्रस्त होना, हर तरफ से धिक्कारा जाना ।

दर-दर तिनके चुनना—दीन-हीन दशा को प्राप्त होना ।

दर-दर फिरना—१.गली-गली मारे-मारे फिरना । बेकद्री होना, पूछ न होना । उ० आजकल तो सैकड़ो ग्रेजुएट नौकरी की खोज मे दर-दर फिर रहे हैं । २ बहुत मिलना । उ० क्लर्क तो आजकल दर-दर फिरते हैं ।

दर-दर मारे-मारे फिरना—दे० 'दर-दर फिरना' ।

दरपेश होना—हाज़िर होना, पेश होना । उ० अभी तो मामला दरपेश होने मे देर है ।

दरबार खुलना या खुला होना—राजसभा मे छोटे-बड़े सबको जाने की आज्ञा मिलना । उ० अशोक का दरबार सबके लिए खुला था ।

दरबार बंद होना—राजसभा मे जाने पर प्रतिबध होना । उ० बलबन का दरबार आम जनता के लिए बद था ।

दरबार बँधना—घूस की रकम का निश्चित हो जाना । उ० इस बेईमानी की कोई सीमा है कि बहुत से आफिसो मे दरबार बँधा है ।

दरबार बर्खास्त होना—राजसभा का उठना या किसी दिन का कार्य समाप्त होना । उ० तीन बजे के पहले आना, नहीं तो दरबार बर्खास्त होने के बाद कुछ नहीं हो सकता ।

दरबार बाँधना—घूस तय करना । उ० वहाँ तो दरबार बाँध दिया गया है । महीने मे उतनी रकम पहुँचानी ही पड़ती है ।

दरबार मे खड़े होना—सेवा मे हाज़िर होना ।

दरबार लगना—१ राजसभा मे मत्रियो और दरबारियो का बैठना । उ० चद्रगुप्त का दरबार दिन मे एक बार अवश्य लगता था । २ बड़े-बड़े लोगो का इकट्ठा होना । उ० आज तो वहाँ दरबार लगा है ।

दरबार होना—राजा की सभा बैठना । उ० १९११ मे दिल्ली मे दरबार हुआ था ।

दरवाज़ा खटखटाना—कुछ माँगने के लिए किसी के यहाँ जाना ।

दरवाज़ा दिखाना—घर से निकालना । उ० बहुत ठीक किया आपने, ऐसे मेहमानो को तो दरवाज़ा ही दिखाना चाहिये ।

दरवाज़े की मिट्टी खोद डालना—हरदम घर पर तकाज़े के लिए आना । उ० तुमने तो उसके दरवाज़े की मिट्टी खोद डाली, अगर वह इतने पर भी न दे तो उससे बड़ा बेहया कौन होगा ?

दरवाजा बन्द होना–(आने-जाने का) सम्बन्ध ...

दरवाजे पर नाक रगड़ना–खुशामद करना।

दरवाजे पर खड़ा रहना–हर समय मौजूद रहना।

दरवाजे पर पड़ा रहना–आश्रित होना।

दरवाजे पर आँख गड़ाये होना–किसी की प्रतीक्षा करना।

दरवाजे पर हाथी झूमना–दे० 'बहुत धनी होना'। उ० उसके दरवाजे पर तो हाथी झूमते हैं।

दरहम-बरहम करना–१ तितर-बितर करना। उ० भीड़ दरहम-बरहम कर दो। २ नाराज़ करना।

दराँती पड़ना–फ़सल का कटना। उ० यदि इसी तरह मौसम रहा तो दो-चार दिन मे दराँती पड़ जायगी।

दरिया को कूजे में बन्द करना–१ गागर मे सागर भरना, थोड़े मे बहुत रखना। २ असभव को सभव करना।

दरेग करना–१ देने मे नाही करना। उ० कुछ तो ऐसे बेईमान होते हैं कि रुपया लेकर भी दरेग़ करते हैं, दूसरे की जरूरत को समझते ही नही। २ देर करना। उ० जाओ मगर दरेग न करना।

दरेरा देना–जबर्दस्ती करना, दरकचना, रगड़ना। उ० वह दरेरा देता हुआ निकल गया।

दरेसी करना–जमीन को हम्वार या बराबर करना।

दर्ज करना–रजिस्टर या पंजी मे लिखना या चढाना। उ० आपका नाम दर्ज कर लिया गया है।

दर्जा उतारना–१ एक कक्षा नीचे करना। उ० वह इतना कमजोर था कि एक दर्जा उतार दिया गया है। २.नीचे के पद पर कर देना। उ० काम खराब करने के कारण उसका दर्जा उतार दिया गया है।

दर्जा चढ़ना या चढ़ जाना–कक्षोन्नति करना या श्रेणी का ऊँचा होना। उ० काम अच्छा करने के कारण कल उसका दर्जा चढ गया।

दर्जा चढ़ाना–पद ऊँचा करना। उ० उस डाकू को पकड़ने के कारण थानेदार का दर्जा एस० पी० ने चढा दिया है।

दर्जी की सुई होना–१ हरफनमौला होना। २ प्रतिक्षण कार्यरत रहना। उ० तुम तो दर्जी की सुई हो, कभी भी तुम्हें खाली नही देखता।

दर्द आना–१ अफसोस होना। उ० रुपया खर्च करते दर्द आता है। २ तरस आना।

दर्द उठना–शूल या तकलीफ का आरभ होना। उ० उनकी कमर मे दर्द उठ रहा है।

दर्द करना–पीड़ा देना, दुखाना। उ० तुम्हारा फोड़ा तो दर्द करता होगा।

दर्द की दवा होना–किसी काम के लायक होना। उ० आखिर तुम किस दर्द की दवा हो, जो मैं किसी दूसरे को इस काम के लिए बुलाऊँ?

दर्द खाना–१ कष्ट सहन करना। उ० आखिर दर्द खाकर तो कमाया है तो खर्च करने मे क्यों न तकलीफ हो? २ तरस खाना, रहम करना। उ० सभी तो गरीब बनते हैं, किस-किस पर दर्द खाऊँ?

दर्द लगना–पीड़ा आरभ होना। दुखना, दर्द मालूम होना। उ० दर्द लगे तो दवा ले आना।

दर्द-सर मोल लेना–जान-बूझ कर कोई आफ़त सर पर लेना।

दर्प-मर्दन करना–घमड दूर करना।

दर्शन देना–दिखाई देना। उ० आप तो कभी दर्शन ही नही देते हैं।

दर्शन पाना–देखना। उ० भीड़ के कारण रथ-यात्रा के समय बहुत कम लोग जगन्नाथ जी का दर्शन पाते हैं।

दर्शन मिलना–देखने मे आना। उ० बड़े भाग्य से आपका दर्शन मिला।

दर्शन होना–दे० 'दर्शन मिलना'। उ० आजकल शुद्ध दूध या घी का तो दर्शन भी होना दुश-वार है।

दलदल मे गर्दन तक डूबा होना–मुश्किल मे पड़ा होना।

दलदल में फँसना–१. कठिन विपत्ति मे फँसना। आफत मे पड़ना। उ० मैं तो आजकल ऐसे दलदल में फँसा हूँ कि निकलना ही कठिन है। २. किसी निश्चित निर्णय पर नही पहुँ-चना। उ० तुम्हारे झगड़े का मामला तो अभी दलदल में ही फँसा है।

दल-बादल खड़ा होना–विशाल तंबू या रावटी पड़ना। उ० कलक्टर साहब के आने से यहाँ दल-बादल खडा हो गया है। कल उनकी बारात आयगी। इसी से यहाँ दल-बादल खडा है।

दल-बादल से चढ़ आना–विशाल सेना लेकर चढाई करना। बहुत आदमियो के साथ चढ आना। उ० तैमूर भारत पर दल-बादल से चढ आया।

दलाली खाना–दलाली के पैसे लेना।

दलील करना–बहस करना, तर्क करना। उ० मुझसे दलील न करो। तुम-जैसो को तो दिन-रात चराता हूँ।

दलील चलना–तर्क लगना, दलील का सफल होना। उ० यहाँ तुम्हारी दलील नही चलेगी।

दलेल बोलना–दंडस्वरूप परेड करने की आज्ञा देना। उ० अफसर ने सिपाही को सलाम न करने के लिए दलेल बोल दी।

दवा को न मिलना–थोडा भी न मिलना। उ० यहाँ सच्चा मधु तो दवा को भी नही मिलता है।

दवा को न होना–थोडा भी न रहना। उ० इस समय हमारे पास चीनी दवा को भी नही है।

दवा-दारू करना–दवा आदि करना। उ० दवा-दारू करो, शायद अच्छा हो जाय।

दवा देना–औषधि खिलाना। उ० मरीज़ को दवा दे दो।

दवा होना–उपाय होना।

दस-नंबरी–चोर।

दस-पाँच लोग–कुछ थोडे से लोग।

दसों दिशाओं मे–चारो ओर।

दस्तंदाज़ी करना–दखल देना, हस्तक्षेप करना। उ० क्यो दस्तदाज़ी करते हो, आखिर तुमसे क्या मतलब?

दस्तक देना–१ दरवाज़ा खटखटाना। उ० देखो कौन दस्तक दे रहा है? २ हस्ताक्षर करना। उ० एक पाठशाला के लिए यहाँ सभी ने दस्तक दे दी है। (यह प्रयाग का ग्राम्य प्रयोग है।)

दस्तक बाँधना–बेकार का व्यय गले लगाना। उ० तुम्ही सह जाओ, उस गरीब के क्यो दस्तक बाँध रहे हो?

दस्तक लगाना–दे० 'दस्तक बाँधना'।

दस्तख़त लेना, या ले लेना–हस्ताक्षर करवाना। उ० सम्मन वाले सिपाही ने मेरी दस्तखत ले ली।

दस्त-बदस्त आना–हाथों-हाथ आना।

दस्त-बरदार होना–अलग होना, अधिकार छोड कर बाज़ आना। उ० आजकल तो अपनी चीज़ से दस्त-बरदार होना अलग रहा, लोग दूसरे की भी ले लेना चाहते हैं।

दस्त लगना–पाखना होने की इच्छा होना। उ० दस्त लगी हो तो थोडी देर रुक जाऊँ।

दहकता गोला उठाना–बेगुनाही का इम्तहान देना। [यह कभी प्रथा थी।]

दहना कमर पेंच–डोली या पालकी के कहारो का दाहिनी ओर घूमना। [यह उनकी अपनी विशिष्ट बोली का मुहावरा है।]

दहलीज़ का कुत्ता–पिछलग्गू। उ० जब वह बार-बार झिडकी देता है तो क्यो दहलीज़ के कुत्ते बने हो? आखिर अपना व्यक्तित्व भी है या नहीं?

दहलीज़ की मिट्टी ले डालना–दे० 'दरवाजे की मिट्टी खोद डालना'।

दहलीज़ झाँकना–दरवाज़े पर आना। उ० जब से दोनो मे झगडा हो गया, वह उसकी दहलीज भी नहीं झाँकता।

दहशत देना–डरा देना। उ० छोटे बच्चे को अभी दहशत न दो, नही तो दब्बू हो जायेगा।

दहाड़ मार कर रोना–बडे जोर-जोर से चिल्ला कर रोना। उ० आज रात को कोई दहाड मार कर रो रहा था।

दहाड़ मारना–दे० 'दहाड़ मार कर रोना'।

दहिने होना–शुभ या अनुकूल होना। उ० इस वर्ष शुक्र हमारे दहिने हैं। भगवान दहिने है तो कोई कुछ नही कर सकता।

दही का तोड–दही का पानी, जो दही को कपडे मे रखकर निचोडने से निकलता है। उ० दही का तोड पी लो, गर्मी मे ठडा करेगा।

दही के धोखे कपास खाना–बेवकूफी करना जानकर अधा बनना या अनजाने बहुत बडी मूर्खता करना। उ० कस मुख पावँ अस मति जासु, दही के धोखे खाय कपासु।

दही-दही करना—अपनी वस्तु बेचने के लिए गली-गली कहते फिरना । उ० क्या दही-दही करते हो, जिसे लेना होगा, वह स्वय लेगा ।

दही-दही हांकना—अपना माल बेचने के लिए आतुर होना ।

दही में का मूसर होना—१ बीच मे कूद पडना । २ मज़ा किरकिरा करने वाला होना । उ० यहाँ दही मे का मूसर न बनो, अपना रास्ता पकडो ।

दांत उखाडना—दु सह दड देना । उ० बहुत हुआ अब आगे बढोगे तो दाँत उखाड लूंगा ।

दांत का चौका—सामने के चार दांत । उ० वह तो आज बुरी तरह गिर पडा । बेचारे का दाँत का चौका टूट गया है ।

दांत का चौका निकल आना—आगे का चार दांत टूट जाना । उ० मारूँगा कि दांत का चौका निकल आएगा ।

दांत-काटी रोटी खाना—बहुत मैत्री होना । उ० वे दोनो तो दाँत-काटी रोटी खाते हैं ।

दांत-काटी रोटी होना—सच्ची मित्रता होना । उ० इन दोनो मे तो दांत-काटी रोटी होती है ।

दांत काढना—दे० 'दांत निकालना' ।

दांत किटकिटाना—क्रोध से दांत पीसना । उ० व्यर्थ का दांत किटकिटाते हो, तुम तो हमारा कुछ भी नही कर सकते ।

दांत किचकिचाना—१ दे० 'दांत किटकिटाना' । २ क्रोधपूर्वक जोर लगाना । उ० उसने दांत किचकिचा कर उठाने की कोशिश की, पर नाल नही उठ सकी ।

दांत किरकिराना—१ बालू या कंकटी आदि पड जाने से दांत मे किर-किर होना । उ० आज खाते समय मेरा दांत किरकिरा गया । २. ऊपर-नीचे के दांतो को घिसना । उ० क्यो हर समय दांत किरकिराते हो, पेट में कीडे तो नही हैं ?

दांत किरकिरे होना—आजिज़ आ जाना । हैरान हो जाना । उ० तुम्हारे तर्कों से तो उसके दाँत किरकिरे हो गए ।

दांत कुरेदने को तिनका न रहना—सर्वस्व गवाँ देना । पास में कुछ न रहना । उ० इतना बडा जुआडी है कि अब तो उसके पास दांत कुरेदने को तिनका भी नही है ।

दांत खट्टे करना—हरा देना । उ० अंग्रेजो ने जापानियो के दांत खट्टे कर दिये ।

दांत खट्टे होना—परास्त होना । उ० पानीपत की तीसरी लडाई मे मराठो के दांत खट्टे हो गये ।

दांत गडना—दे० 'दांत लगना' ।

दांत चबाना—गुस्से मे दांत पीसना । उ०गरीब पर क्यो दांत चबाते हो, जब होगा, बेचारा खुद दे देगा ।

दांत जमना—दांत निकलना । उ० बच्चे को दांत जम रहा है, इसी से पेट गडबड है ।

दांत झाड़ देना—दे० 'दांत उखाडना' ।

दांत टूटना—वृद्ध होना । उ० दांत टूटे, अब क्या शोक करूँगा । उ० दांत टूटे खुर घिसे पीठ बोझ ना लेइ । ऐसे बूढे बैल को कौन बांध भुस देइ ।

दांत-तले उँगली दबाना—१ आश्चर्य मे पड जाना । उ० फ्रास वालो का चद्रमा मे चढने का साहस देख कर ससार दांत-तले उँगली दबा रहा है । २. दुख प्रकट करना । उ० हमारी दशा देख कर सभी को दांत-तले उँगली दबाना पडा ।

दांत तालू मे जमना—दुर्दिन आना । उ० ऐसा ज्ञात होता है कि भारतीयो के दांत तालू मे जमने लगे हैं ।

दांत तोड़ना—दे० 'दांत उखाडना' ।

दांत दिखाना—१ भयभीत करना । उ० भेडिये ने मेमने को दांत दिखा कर अपना काम बना लिया । २ मजबूरी ज़ाहिर करना । उ० उसी की आशा थी, परंतु वह भी दांत दिखा गया । ३. गिडगिडा कर प्रार्थना करना । उ० उसका दांत दिखाना देख कर दया आ गई ।

दांत देखना—पशुओ का दांत देख कर आयु का पता लगाना । उ० बैल का दांत देख लो, तब खरीदो ।

दांत न लगाना—बिना दांत से छुआए यो ही निगल जाना । उ० दवा को दांत न लगाओ, नही तो काम न करेगी ।

दांत निकलना—दे० 'दांत जमना' ।

दांत निकालना—१ बेहूदे ढग से दांत निकाल कर हँसना । उ० क्या बेहूदे की तरह दांत निकालते हो । २ प्रार्थना करना, गिडगिडाना ।

दाँतो चढ़ाना—१ पीछे पड़ा रहना। उ० समय पाकर सब कर देगा, क्यो उसको दाँतो चढाए हो ? २ नज़र लगाना। उ० वह तो बच्चो को दाँतो चढा देता है। ३ किसी पर आक्षेप करते रहना।

दाँतो ज़मीन पकड़ना—बहुत ही कष्ट से जीवन बीतना।

दाँतो पर रखना—स्वाद लेना। उ० अनजानी चीज़ को कभी दाँतो पर न रखो।

दाँतो पर होना—बच्चे के दाँत निकलने का वक्त आना।

दाँतो पसीना आना—१ किसी मुश्किल काम के करने से परीशान हो जाना। २ थक जाना।

दाँतो मे उँगली दबाना—दे० 'दाँतो-तले उँगली दबाना'।

दाँतो मे जीभ होना—चारो ओर विरोधियो या दुश्मनो से घिरा रहना। उ० तुम क्यो वहाँ मकान ले रहे हो ? मैं ही दाँतो मे जीभ हूँ, आज दूसरा मकान मिले तो अभी बदल लूँ।

दाँतो मे तिनका लेना—दीनता से दण्ड आदि के क्षमा के लिए गिडगिडाना। हा-हा खाना। उ० बेचारा दाँतो मे तिनका लेकर कहता है, उस गरीब को क्षमा कर दो।

दाँतो मे पसीना आना—अथक् परिश्रम करना, बहुत थक जाना। उ० आज तो मेहनत से दाँतो मे पसीना आ गया।

दाँतों से उठाना—१ अति कृपणता से इकट्ठा करना। उ० तुम्हारे जैसे ससार मे दो ही चार होंगे, जो कौडी को भी दाँतो से उठाते होगे। २ बहुत इज्ज़त से चुनना।

दाँतों से कौडियाँ पकडना—अत्यधिक कजूस होना।

दाँतों से हाथ काटना—पश्चात्ताप करना। उ० जो होना था, वह हो गया। अब दाँतो से हाथ काटना व्यर्थ है।

दाँयीं आँख फरकना—मर्दों के लिए शुभ तथा औरतो के लिए अशुभ होना। उ० आज दायी आँख फरक रही है, कुछ मिलेगा क्या ?

दाई से पेट छिपाना—उसी आदमी से भेद छिपाना जो कि उसे अवश्य जाने। उ० अरे कल की सारी बातें बता दो, आखिर दाई से पेट छिपा कर क्या पाओगे ?

दाएँ-बाएँ देकर निकल जाना—भुलावा देकर निकल भागना। उ० रोज़ दाएँ-बाएँ देकर निकल जाते हो, अब कल पता चलेगा।

दाख़िल करना—१ जमा करना, पेश करना। उ० अभी तक मैंने मालगुज़ारी दाखिल नही की है। २ ले लेना, भरती कर लेना। उ० इस लडके को भी अपने स्कूल मे दाखिल कर लो।

दाखिल होना—१ जमा होना। उ० कल रुपया दाखिल हो गया। २ भरती होना। उ० वह स्कूल मे दाखिल हो गया।

दाग़ उठाना—सदमा सहना, दु:ख उठाना। उ० मज़ा तो तुम लो और दाग मैं उठाऊँ।

दाग़ करना—१ खूब गरम करना, कडकडाना, बघारना। २ जलाना।

दाग़ दिखाना—रज या सदमा देना, दुःख पहुँचाना।

दाग़ देना—१ कलकित करना। उ० जयचद का जन्म शायद भारतीय इतिहास को दाग देने के लिए ही हुआ था। २ मरने के बाद अतिम सम्कार करना। उ० उसके पिता मर गये हैं, वह दाग देने के लिए घर जाना चाहता है।

दाग़ धोना—कलक मिटाना।

दाग़बेल गेरना—आरभ करना। उ० कल मकान मे दागबेल गेरने का अच्छा दिन है।

दाग़ लगना—१ जलना। २ खाना जल जाना। उ० भात मे दाग लग गया। ३ कलक लगना। उ० इतना बचाने पर भी दाग लग ही गया।

दाग़ लगाना—१ कलकित करना। ऐब लगाना। बदनाम करना। उ० तुमने अपने कुल मे दाग लगाकर छोडा। २ जलाना।

दाग़ होकर निकलना—जल कर या फूट कर निकलना। उ० हमारा खाया-पीया दाग होकर निकलेगा।

दाग़ा जाना—१ जलाया जाना। २ जानवरो या आदमियों के किसी अग-विशेष का गर्म लोहे या पत्थर आदि से सेंका या दागा जाना। उ० ऊँट दागे जाते थे तो मकोडे ने भी टाँग फैलाई कि मुझे भी दागो।

दाढ़ गरम करना—घूस देना। उ० पहले दाढ गरम करो, तब काम होगा।

दाढ़ न लगाना—दाँत से न कुचलना। उ० दाढ़ न लगाओ, इसी तरह खा जाओ।

दाढ़ मार कर रोना—दे० 'दहाड मार कर रोना'।

दाढ़ा फूँकना—बहुत गर्मी पडना, गर्मी का अधिक होना। उ० आज तो दाढा फुँके है।

दाढ़ी का एक-एक बाल करना—बहुत बुरी हालत करना। बहुत कष्ट देना। उ० तुमने उस गरीब बेचारे के दाढी का एक-एक बाल करके छोडा।

दाढ़ी को कलक लगाना—किसी प्रतिष्ठित वृद्ध को कलकित करना।

दाढ़ी छोड़ना—१ डाढी का बाल न बनवाना। उ० हमारा विचार है, अब मैं भी दाढी छोड दूँ। २ किसी काम सिद्धि के लिए या किसी के विरुद्ध होकर उसके कुछ बुरे के लिए दाढी न बनवाना।

दाढ़ी पकना—वृद्ध होना।

दाढ़ी पेट मे होना—१ कम उम्र मे अधिक समझदार होना। उ० इस लडके के पेट मे दाढी है। २ अपना भेद किसी को न देने वाला होना। उ० उसके पेट मे दाढी है, वह नही बता सकता।

दाढी पेशाब से मुंडवाना—बेइज्जत करना। उ० भरी सभा मे आपने उसकी दाढी पेशाब से मुंडवा कर क्या पाया ?

दाढी बनाना—१ छका देना। २ धोखा देना। ३ धोखा देकर धन या रुपया ले लेना। उ० उसने तो तुम्हारी दाढी अच्छी बनाई।

दाढ़ी रखना—दे० 'दाढी छोडना'। उ० किस पर दाढी रखे हो ?

दाद को पहुँचना—इसाफ होना। उ० वह बैठा रहा कि आखिर कभी तो मामला दाद को पहुँचेगा।

दाद चाहना—१ जुल्मो के बदले के लिए प्रार्थना करना। न्याय चाहना। उ० हम दाद चाहते है, पर किसके दरवाज़े जायें ? सरकार तो बहरी है। २ प्रशसा चाहना। वाहवाही चाहना। उ० झूठे दाद चाहते हो या कुछ काम भी किया है ?

दाद देना—१ इसाफ करना। उ० राजा ने उचित दाद दी। २ प्रशसा करना, वाह-वाह करना। उ० वास्त व मे उसने दाद देने योग्य शेर लिखे हैं।

दाद-फरियाद करना—१ गुल मचाना, शोर करना, वावेला करना। २ किसी के जुल्म पर चिल्लाना या शोरगुल करना।

दाना-दुनका—अन्न के दो-चार दाने। थोडा अन्न। उ० दाने-दुनके खाकर जी रहा हूँ।

दाना-पानी उठना या उठ जाना—१ कोई ठिकाना न रहना। उ० अग्रेज़ो का दाना-पानी उठ गया तभी तो चले गए। २. किसी स्थल-विशेष पर खाने-पीने का सयोग या भाग्य न रह जाना। उ० मालूम होता है कि यहाँ से हमारा दाना-पानी उठ गया है, अत अब कही दूसरी जगह जाना होगा।

दाना-पानी के हाथ—तकदीर के अधीन। उ० जीना-मरना दाना-पानी के हाथ है।

दाना-पानी छोडना—खाना-पीना छोड कर उपवास करना। उ० गाँधी जी ने कई बार दाना-पानी छोड दिया था।

दाना बदलना—१ पक्षियो का आपस मे दाना का लेन-देन करना। उ० देखो, कौआ दाना बदल रहा है। २ किसी अतिथि के आने का आगम मिलना। (लोगो का विश्वास है कि कौआ दाना बदलता है तो कोई अतिथि आता है)। उ० कौए दाना बदल रहे हैं, कोई आएगा क्या ?

दाना भरना—चिडियो का अपने बच्चो को चारा देना। उ० गोरैया दाना भर रही है।

दाने-दाने को तरसना—गरीबी से खाने के लिए दाना भी न मिलना। उ० बेचारा दाने-दाने को तरस रहा है, कुछ दे दो।

दाने-दाने को मुहताज—बिल्कुल गरीब, जिसके पास खाने को एक दाना भी न हो। उ० यहाँ तो सभी दाने-दाने को मुहताज़ हैं, खैरात कौन करे ?

दाने-दूनी को तरसना—दे० 'दाने-दाने को तरसना'।

दाने बिखेरना—फ़ुसलाने के लिए युक्तियाँ करना।

दाब-तले होना—अधिकार मे होना। उ० मैं तुम्हारे दाब-तले नही हूं कि तुम डाँटो और मैं कुछ न बोलूं।

दाब दिखाना–डराना या अधिकार जताना। रोब दिखाना। उ० अब क्या दाब दिखाते हो, तुम्हारी ज़मीदारी मे नही बसा हूँ।

दाब बैठना–१ मार बैठना, न देना। उ० वह तुम्हारी सारी चीज़े दाब बैठेगा। २ जबर्दस्ती करना। उ० अब ज़माना बदल गया, दाब बैठना आसान नही है।

दाब मानना–१ भय मानना, वश मे रहना। उ० बडो का दाब माना करो। २ रोब मानना। उ० उसका दाब तो सभी मानते है।

दाब मे रखना–अधिकार या वश मे रखना। उ० औरतो को दाब मे रखा करो, नही तो बिगड जाती हैं। तुलसी बाबा का कहा भूल गया है क्या?

दाब मे रहना–अधिकार मे रहना। उ० अब तो अपना पुत्र भी दाब मे नही रहता है।

दाब मे लाना–कब्ज़े मे करना। अधिकार या वश मे लाना। उ० दाब मे लाने के लिए कचहरी या डडे की भी शरण लेनी पडे तो मै तैयार हूँ।

दाब मे होना–दूसरे के वश मे होना। उ० यहाँ के किसान तो जमीदारो के दाब मे है।

दाम उठना–मूल्य मिलना। बिक्री होना। उ० हमारे माल का दाम उठ गया है।

दाम करना–१. बेचने या खरीदने के लिए मूल्य निर्धारित करना। उ० अभी तो दाम कर रहा हूँ, शायद तय हो जाय। २ सौदा तय करना। उ० जल्दी दाम कर लो, वरना बिक जाएगी।

दाम खडा करना–१ किसी मूल्य पर बेच देना। उ० तुमने अच्छा किया कि दाम खडा कर दिया, नही तो चीज खराब हो जाती। २ अच्छे दाम पर बेचने के योग्य करना। उ० खिला-पिला कर बैल का दाम खडा कर लो, मेला नज़दीक आ रहा है।

दाम चढना–मूल्य मे बढोत्तरी होना।

दाम चुकाना–मूल्य देना। उ० दाम चुका दो नही तो विश्वास उठ जाएगा।

दाम-दाम भर देना–ऋण आदि का पैसा-पैसा जोड कर दे देना। उ० वह बडा ईमानदार है, जीता रहा तो दाम-दाम भर देगा।

दामनगीर होना–१ पीछे पडना। सर आ जाना। उ० दुःख तो हम भारतवासियो का दामनगीर हो गया है। २ दे० 'दामन पकडना'।

दामन छुटाना–पीछा छुडाना। उ० किसी तरह उससे मेरा दामन छुटाओ।

दामन झटक लेना–१ दामन छुडा लेना, शरण न देना। २ इन्कार करना।

दामन झाड कर उठाना–१ नाराज़ होकर उठ जाना। उ० आपकी बाते सुनते ही वे दामन झाड कर उठ गये। २ सच्चा और स्वतन्त्र बन कर खडा होना। ३ मुक्त होकर खडा होना या निकलना।

दामन झाड कर निकलना–दे० 'दामन झाड कर उठाना'। उ० फिर बहार आई निकलिए घर से दामन झाड कर, गए सहरा जुनूँ चलिए गरेबाँ झाड कर।

दामन-तले छिपाना–१ अपनी शरण मे लेना। २ ऐब छिपाना। ३ बेटी का ब्याह कर देना। ४ परवरिश करना, पालन करना।

दामन-तले ढकना–दे० 'दामन तले छिपाना'।

दामन-तले ढाकना–दे० 'दामन तले छिपाना'।

दामन न छोडना–साथ न छोडना।

दामन पकडना–१ किसी की शरण लेना। उ० जाकर उसका दामन पकडो, वह तुम्हारी मदद करेगा। २ रोकना। ३ मांगना।

दामन फैलाना–१ विनती करना। धन का पल्ला बिछाना। उ० दामन फैलाने से काम न चलेगा। २ मांगना। उ० यहाँ न दामन फैलाओ, मै ना कुछ देने मे रहा।

दामन मे दाग लगना–कलंकित होना।

दामन से लगना–भरोसे पर होना, आसरे पर होना। उ० उनके दामन से न लगो, नही तो धोखा खाओगे।

दाम भरना–कोई चीज नुकसान हो जाने पर उसका दाम देना। उ० तसवीर तो आपने तोड दी है, अब उसका दाम भरना पडेगा।

दाम भर पाना–मूल्य मिलना, लागत मिलना। उ० लाभ क्या हुआ, अब किसी तरह दाम भर पा गया।

दाम मे लाना–फंदे मे फँसाना। उ० उसे किसी प्रकार दाम मे लाओ ना काम बने।

दायर करना–मुकदमा चलाना। उ० उसने मेरे भाई पर फौजदारी दायर की है।

दायर होना–पेश होना। चालू होना। उ० जब मुकदमा दायर हो तो हमे सूचित करना।

दायाँ बोलना–तीतर का दाहिनी ओर बोलना, जो कि अशकुन माना गया है। उ० इसका बोलना खाली नही जाता।

दायाँ हाथ–बहुत बडा और सच्चा सहायक। उ० वह तो मेरा दायाँ हाथ है।

दायें-बायें कर देना–छिपा देना, ग़ायब कर देना। उ० जब वे आयें तो इसे दायें-बायें कर देना।

दायें-बायें होकर निकल जाना–धोखा देकर या बच कर निकल जाना। उ० वे मिले तो थे, पर दायें-बायें होकर निकल गये।

दायें होना–१ खुश होना। मुआफिक होना। उ० इस समय मेरा सब काम बन रहा है। मालूम होता है, भगवान मेरे दायें हैं। २ प्रतिकूल होना। उ० उसके तो शनि ही दाएँ हैं बेचारी क्या करे ?

दार पर चढाना–सूली पर चढ़ाना। उ० मसूर अनलहक कहने के कारण दार पर चढाया गया।

दाल गलना–१ मतलब निकलना। उ० जब दाल गल जाय तो कोशिश का असर समझूँ। २ लहना। उ० तुम्हारी दाल यहाँ नही गल सकती।

दाल चप्पू होना-एक मे लिपट जाना। उ० दाल-चप्पू होकर दोनो देर तक लडते रहे।

दाल जूतियो मे बँटना–झगडा-तकरार होना, लडाई होना। उ० उनका घर क्या चलेगा, वहाँ तो दाल जूतियो मे बँटती है।

दाल छूटना–झुर्री अलग होना। भूसी उडना। उ० फोडो की दाल छूट गई है, अब ठीक हो गए।

दाल-दलिया–१ आखिरी निर्णय। उ० मुकदमे का कुछ दाल-दलिया कर डालो, नही तो फिर बात बढ जायगी। २ मोटा-झोटा खाना। उ० बेचारे दाल-दरिया खाकर अपना गुजर करते हैं।

दाल न गलना–उपाय न लगना। उ० जब वहाँ उसकी एक भी दाल न गली तो वह निराश होकर लौट आया।

दाल बँधना–१ आतशी शीशे का एक बिंदु पर अक्स पडना। २ घाव पर नई झिल्ली का चढना। ३ खुरड बँधना। उ० दाल बँधने दो, अभी चलो-फिरो नही।

दाल-भात का कौर समझना–बहुत सरल जानना। उ० मैं तो इसे दाल-भात का कौर ही समझता हूँ, आज ही कर डालूँगा।

दाल-भात की तरह कबूलना–बहुत सहजता मे कबूलना।

दाल-भात मे मूसलचद बनना–किसी मौज या आराम मे खलल डालना। उ० इस वक्त हम मियाँ-बीबी पिक्चर जा रहे हैं, तुम साथ लग कर दाल-भात मे मूसलचद न बनो।

दाल मे काला होना–दे० 'दाल मे कुछ काला होना'।

दाल मे कुछ काला-काला होना–दे० 'दाल मे कुछ काला होना'। उ० बिखरे हैं मुँह पर बाल ये सब और टूटा कान का बाला है, हमने तो मालूम किया कुछ दाल में काला-काला है।

दाल मे कुछ काला होना–१ शुबहा होना। कोई बात होना। शक होना। उ० दाल मे कुछ काला है, इसी मे वे यहाँ नही आये हैं। २ किसी प्रकार का खटका होना।

दाल मे मक्खी पडना–हृदय मे आशका होना, असगुन होना।

दाल-रोटी चलना–साधारण जीवन निर्वाह होना। उ० इस महँगी मे किसी तरह दाल-रोटी चल रही है।

दाल-रोटी से खुश होना–साधारण खाने-पीने मे खुशहाल होना। उ० बेचारा दाल-रोटी मे खुश रहता है, ऐसे व्यक्ति ही आज के जनक हैं।

दाँव करना–मौका देखना। उ० कोई दाँव करके मैं उसके यहाँ जाऊँगा।

दाँव खेलना–चाल चलना। धोखेबाजी करना। उ० वह तो सदा ही दाँव खेलता रहता है, मैं कहाँ तक बचाऊँ ?

दाँव चलना–दे० 'दाँव खेलना'। २ ताश मे पत्ते चलना। ३ किसी भी खेल मे अपनी बारी पर खेलना। उ० अपना दाँव चलाओ न, क्यो बैठे हो ?

दाँव चूकना–मौका निकलना। उ० जब दाँव चूक गया तो पछताना बेकार है।

दाँव ताकना–अवसर की तलाश मे रहना। उ० दाँव ताकते रहो, कभी तो मिलेगा। यो रुपया खराब करना ठीक नही है।

दांव देना—१ मुकर जाना, धोखा देना। उ० तुमने कई बार ऐन मौके पर दांव दिया है। २ लडको को खेलो मे हार जाने पर नियत सजा देना।

दांव पर चढ जाना या चढ़ना—वश मे होना। उ० अगर वह दांव पर चढ गया तो सब काम बन जायगा।

दांव पर चढ़ाना—दे० 'दांव पर लाना'।

दांव पर रखना—बाज़ी पर रखना। उ० वह पचासो रुपये एक बार दांव पर रखता है।

दांव पर लाना—अपने अनुकूल बनाना, घात मे लाना। उ० दांव पर लाकर उसने सारे रुपये ले लिए।

दांव-पेंच का आदमी—चालाक।

दांव बन आना—लाभ की स्थिति होना।

दांव मे आना—घात मे आना, अपने अनुकूल होना। उ० वह मेरे दांव मे आ गया है, अब चाहे जो करवा लूं।

दांव लगना—अवसर मिलना। उ० आप निश्चित रहें, जब दांव लगेगा, मैं स्वय ही भाग चलूंगा।

दांव लगाना—१ बाज़ी पर लगाना। दांव पर रखना। २ घात देखना। उ० दांव लगा कर खबर लो।

दांव लेना—१ प्रतिकार करना। उ० वह दिन-रात तुमसे दांव लेने के फेर मे रहता है। २ बच्चो का खेल मे हारने वाले से उचित दड लेना।

दांव सारना—युक्ति का कारगर होना।

दावा खारिज होना—मुकदमा खारिज होना। उ० उसका दावा खारिज हो गया।

दावा जमाना—दे० 'दावा ठोकना।

दावा ठोकना या ठोक देना—मुकदमा दायर करना। उ० दावा ठोकना चाहते हो तो ठोक दो, मगर हाथ-पैर बचाए रहना।

दास के दास होना—अनुयायी या पिछलग्गू या दासवत् होना।

दासता की बेड़ी पहनना—अधीनता स्वीकार करना।

दाहिना-बायां जानना—अच्छा-बुरा समझना।

दाहिना हाथ—दे० 'दायां हाथ'।

दाहिना हाथ होना—बहुत सहायक होना। उ० वह मेरा दाहिना हाथ है। बेचारा हर एक काम मे हाथ बँटाता है।

दाहिनी आंख फरकना—एक विशेष स्पदन आंख मे होना, जो पुरुष के लिए शुभ व स्त्री के लिए अशुभ होता है।

दाहिने-बायें छींक होना—शकुन या अपशकुन होना। उ० हौसले वाले हिचकते ही नहीं, राह चाहे ठीक या बेठीक हो। सगुन या काम असगुन से पडे, दाहिने हो या बायें छींक हो।

दाहिने-बायें दोनो ओर चलना—स्थिर-बुद्धि न होना, किसी के पक्ष मे भी करना, विपक्ष मे भी।

दाहिने होना—दे० 'दायें होना'।

दिक़ करना—परीशान करना। उ० ये लडके उस बुढिया को बहुत दिक करते हैं।

दिगर-गूं होना—रग बदलना, उलट-पलट होना।

दिन आना—१ आखिरी समय आना। मृत्यु समीप आना। उ० उसके दिन आ गये हैं, अब वह ज्यादा दिन न चलेगा। २ अवधि पूरी होना। उ० चुनाव के दिन भी लगभग आ ही गए हैं।

दिन उँगलियो पर गिनना—बडी व्यग्रता से प्रतीक्षा करना। उ० दिन फिरेंगे या फिरेंगे ही नही, अब दिन हैं उँगलियो पर गिन रहे।

दिन काटना—किसी तरह जीवन के दिन बिताना। उ० वह बडे कष्ट मे है, किसी तरह दिन काट रहा है।

दिन को तारे दिखाई देना—१ कष्ट से अक्ल मारी जाना। उ० इन गरीब बेचारो को दिन को भी तारे दिखाई देते हैं। २ ग्रहण आदि के कारण बहुत अँधेरा होना।

दिन को दिन, रात को रात न समझना—ज़रा भी आराम न करना, दिन-रात मेहनत करना। उ० उसने दिन को दिन, रात को रात न समझ न कर इतना धन कमाया और आज कफन को भी पैसे नही हैं।

दिन गिरे हुए होना—बुरे दिन होना। उ० आप मुझसे कुछ आशा मत कीजिये, मेरे तो खुद दिन बहुत गिरे हुए हैं।

दिन गँवाना—समय बेकार खोना। उ० आज चार साल से दिन गँवा रहे हो, अगर कुछ काम करते तो कितने रुपये होते।

दिन चढना—१. सूर्य निकलने के काफी बाद का समय होना। दिन अधिक आना। उ० इतना दिन चढ गया, और अभी तक आप सोये हैं। २ गर्भ के दिन बीतना। उ० बहू के तो काफी

दिन चढ गए हैं। ३ मासिकधर्म के होने मे देर होना।

दिन छिपना—दे० 'दिन डूबना'।

दिन जाना—समय बीतना। उ० वह दिन गये, जब इस गाँव मे उसकी तूती बोल रही थी।

दिन डूबना—रात होना। सूर्यास्त होना। उ० दिन डूब गया और अभी तक लडका पढ कर नहीं आया।

दिन ढरकना—सूर्य डूबने के करीब होना। उ० दिन ढरक रहा है, चलो जल्दी चलें, अभी बहुत दूर जाना है।

दिन ढलना—शाम होना। उ० अब दिन ढल रहा है, चलो घर चलें।

दिन ढले—सध्या को। उ० दिन ढले आऊँगा।

दिन-दहाड़े—१ दिन के समय। उ० दिन-दहाडे मेरे घर में चोरी हो गई। २ सबके सामने।

दिन-दिन—रोज-बरोज, प्रतिदिन। उ० दिन-दिन वह योग्य होता जा रहा है।

दिन-दिहाड़े—दे० 'दिन-दहाडे'।

दिन-दूना रात-चौगुना बढना—दे० 'दिन-दूना रात-चौगुन होना।'

दिन-दूना रात-चौगुना होना—बहुत तेजी से तरक्की करना। उ० वह तो दिन-दूना रात-चौगुना बढ रहा है, अगर इस तरह बढेगा तो दो-चार साल भर में ही लखपति हो जायगा।

दिन धरना—दिन ठीक करना। दिन निश्चित करना। उ० इस बार दिन धर लो, फिर उसे ले जाना।

दिन धराना—दिन निश्चित करवाना। उ० पडित से दिन धरा लो तो ले जाना।

दिन-धौले—दे० 'दिन-दहाडे'।

दिन निकलना—१. समय बीतना। उ० वे दिन निकल गये, जब मेरी हर जगह इज्जत होती थी। अब तो मेरे जैसे हजारो हो गये हैं। २ सूर्य का निकलना। उ० दिन निकल गया, काम पर जाओ।

दिन पड़ना—१ दुख आना। उ० दिन पडने पर मदद करे, वही सच्चा मित्र है। २ दिन निश्चित होना। उ० शादी के लिए कौन दिन पडा है ?

दिन पतला पड़ना—१ अभाग्य होना। २ निर्धन होना। उ० अब बेचारे के दिन पतले पड गए, नही तो कभी दरवाजे पर हाथी बँधा था।

दिन-पर-दिन—दे० 'दिन-दिन'। उ० वह दिन-पर-दिन दुर्बल होता जा रहा है।

दिन पूरा होना—गर्भ का समय समाप्त होना। उ० उसका दिन पूरा हो गया है, अब दो-चार दिन मे ही बच्चा होगा।

दिन पूरे करना—किसी तरह जीना। दुख सहकर जीना। मौत की प्रतीक्षा मे बैठना। उ० बेटा, अब जीवन मे क्या रहा! किसी तरह दिन पूरे कर रहा हूँ।

दिन फिरना—अच्छा समय आना। उ० जब दिन फिरेंगे तो मेरा सब काम ठीक हो जायगा। अभी हँस लो।

दिन बहुरना—दे० 'दिन फिरना'।

दिन बिगड़ना—बुरा समय आना। उ० भाई, मेरा दिन बिगड गया है, अगर इस समय कुछ मदद कर देते तो बडा उपकार होता।

दिन भरना—किसी तरह जीवन बिताना। उ० दिन भर रहा हूँ, नही तो अब जीवन मे क्या है।

दिन भारी रहना—दे० 'दिन भारी होना'।

दिन भारी होना—१ बुरे दिन आना। उ० हमारे तो दिन भारी हो गए हैं। २ दिन बडा होना। उ० दुख के दिन भारी होते हैं।

दिन भुगताना—समय व्यतीत करना। उ० किसी तरह दिन भुगता रहा हूँ।

दिन मुदना—सध्या होना। उ० अब तो दिन मुँद गया, देर हो जायगी। कल सुबह जाना।

दिन मे दिया जलाना—दीवाला होना। उ० बड़ी कोठी के सेठ ने कल दिन मे दिया जलाया। दुनिया को यह बतलाने के लिए कि मेरा दीवाला निकल गया है, ऐसा किया जाता रहा है।

दिन-रात—सर्वदा। हमेशा। उ० दिन-रात का झगडा ठीक नही है।

दिन-रात बीतना न जानना—आनन्द मे जीवन कटना।

दिन रो-रो कर काटना—कष्ट से दिन बिताना। उ० रो-रो कर दिन काटने से तो अच्छा मर जाना है।

दिनहुँ-दिन—दिन-पर-दिन। उ० देह दिनहुँ-दिन दूबरि होई।

दिन होना–सूर्योदय होना । उ० दिन हो गया है और अभी तक सोये हो ।

दिनो का फेर होना–दशा वदलना । भाग्य का फेर होना । उ० दिनो का फेर है, जो आज आप रोटी के लिए तरस रहे हैं ।

दिनों को धक्के देना–१ वहुत दुख से समय विताना । उ० क्या करूँ भाई, गरीवी के कारण दिनो को धक्के दे रहा हूँ । २ बुरे या भले दिन की परवाह न करना । उ० 'निराला' जैसा दिनों को धक्के देने वाला कवि ही सचमुच कवि है ।

दिनों से उतरना–जवानी ढलना । उ० जव दिन था तो कुछ किया ही । अव दिनो से उतरने पर क्या करूँ ।

दिमाग़ आसमान पर चढना–वहुत घमड होना । उ० थोडा धन हो जाने से उनका दिमाग आसमान पर चढ गया है ।

दिमाग़ आसमान पर होना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना' ।

दिमाग़ ऊँचा होना–१ दे० 'दिमाग चढना' । २ मस्तिष्क का अच्छा होना । उ० उसका दिमाग ऊँचा है ।

दिमाग का अर्क निचोडना–१ वुद्धि से वहुत अधिक काम लेना । उ० दिमाग का अर्क न निचोडो, नही तो पागल हो जाओगे । २ वुद्धि चकरा देना । उ० तुमने तो मेरा दिमाग का अर्क निचोड लिया ।

दिमाग का गूदा चट हो जाना–खोपडी ख़ाली हो जाना, तग आ जाना ।

दिमाग़ की आंधी–मानसिक उथल-पुथल, दुविधा ।

दिमाग़ को कौडियो के मोल खरीदना–परिश्रम से किए गये किसी दिमागी काम की कम मजदूरी देना । उ० चलो-चलो चाहते हो दिमाग को कौडियो के मोल ख़रीद लूँ तो यह हम जैसे लेखक से नही हो सकता ।

दिमाग़ खपाना–वहुत ज्यादा सोच-विचार करना ।

दिमाग़ खाना–१ वहुत ज्यादा वोल कर किसी को परीशान करना । उ० भाई अगर ज्यादा दिमाग खाओगे तो मैं यहाँ से चला जाऊँगा । २ मस्तिष्क ख़ाली करना ।

दिमाग खाली करना–१ अधिक माथा-पच्ची करना । उ० तुम्हे तो छोटी-सी वात समझाने के लिए भी दिमाग ख़ाली करना पडता है । २ वहुत वोलना । ३ सर खाना ।

दिमाग चक्कर खाना–दिमाग का घवरा जाना ।

दिमाग चढना–वहुत अभिमान होना । उ० आजकल तो दिमाग चढा हुआ है ।

दिमाग चाटना–दे० दिमाग खाना' । उ० दिमाग न चाटो, मुझे भी इम्तहान देने जाना है ।

दिमाग झडना–अभिमान दूर होना । उ० किसी दिन तुम्हारा भी दिमाग झडेगा ।

दिमाग ठडा होना–गुस्सा शात हो जाना ।

दिमाग न पाया जाना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना ।'

दिमाग न मिलना–दे० 'दिमाग आसमान पर चढना ।'

दिमाग परीशान करना–१ दे० 'दिमाग खाना ।' २. माथा-पच्ची करना । उ० तुम्हारे लिए दिमाग भी परीशान किया और तुम समझ भी न पाए ।

दिमाग फिर जाना–प्रमाद होना ।

दिमाग मे कूडा होना–दे० 'दिमाग मे भूसा होना' ।

दिमाग मे ख़लल होना–पागल होना ।

दिमाग मे भूसा होना–मूर्ख होना । उ० उसके दिमाग मे सचमुच भूसा न भरा होता तो वह चार साल लगातार फेल न होता ।

दिमाग मे रहना–घमड मे रहना । उ० आप तो सर्वदा दिमाग मे रहते हैं ।

दिमाग लड़ाना–सोचना, विचार करना । उ० कोई भी समस्या हो, दिमाग लडाने से सुलझ ही सकती है ।

दिया-वाती करना–शाम को दीपक जलाना । उ० शाम हो गई है, दिया-वाती कर लूं तो घूमने चलूं ।

दिया लेकर ढूंढना–ख़ूव खोजना । उ० उसके ऐसा योग्य वर आपको दिया लेकर ढूंढने से भी नही मिलेगा ।

दियासलाई लगाना–१ जलाना । उ० दुश्मनो ने मेरे खलिहान मे कल दियासलाई लगा दी । २ दूर करना । उ० ऐसी वातो मे दियासलाई लगाओ ।

दिल अटकना–प्रेम होना, दिल लगना। उ० तुम्हारा दिल उस पर अटका हुआ है।

दिल अटकाना–प्रेम करना, दिल लगाना। उ० वहाँ दिल न अटकाओ, नही तो छठी के दूध याद आ जाएँगे।

दिल आना–१ अनुराग होना, आसक्ति होना। उ० जब उस पर तुम्हारा दिल आ ही गया है तो विवाह कर लो। २ पाने की इच्छा करना। उ० मेरा दिल इस घडी पर आ गया है।

दिल उकता जाना या उकताना–१ मन न लगना। उ० तुम्हारी बातो से तो दिल उकता गया है। २ जी घबराना। उ० बेकार बैठने मे दिल उकता गया है।

दिल उडा-उडा फिरना–हृदय का अस्थिर होना।

दिल उचटना–मन फिर जाना। उ० अब तो शहर के जीवन मे दिल उचट गया है।

दिल उचाट होना–दे० 'जी उचटना'।

दिल उछल पडना–अत्यधिक प्रसन्नता होना।

दिल उठाना–१ चित्त को विरक्त करना, दिल न लगाना। उ० नीच कामो से दिल उठा लो, इसी मे भला है। २ चाह न रखना। उ० मैने तो ऐसी चीजो से दिल उठा लिया है।

दिल उमडना–१ दया या दुख से आँसू आ जाना। उ० जब उसकी माँ भीख माँगती दिखाई देती है तो मेरा दिल उमड आता है। २ प्रेम का जोर मारना। दिल मे प्रेम की लहर उठना।

दिल उलटना–१ जी घबराना, चित्त व्याकुल होना। उ० साल भर का काम बाकी है, सोच-कर ही दिल उलटता है। २ घृणा होना। उ० उसकी गदगी देख कर तो दिल उलट जाता है। ३ मन न लगना। उ० अब काम मे दिल उलट रहा है।

दिल ओठो तक आना–अत्यधिक घबराहट होना या बहुत परीशान होना।

दिल कचोटना–किसी बात के लिए टीस उठना।

दिल कडवा करना–१ दिल खट्टा करना। उ० उसकी ओर से बेकार मे जी कडवा न करो। २ जी दुखाना। उ० उसका दिल कडवा न करो।

दिल कडा करना–१ दिल को मजबूत करना, पत्थर करना। किसी के दुख आदि पर दुखी न होना। उ० उसने तो अपना दिल ऐसा कडा कर लिया है कि कभी करुणा आती ही नही। २ हिम्मत बाँधना, सतोष करना। उ० दिल कडा करो, जब दुःख पड़ा है तो सहना ही होगा।

दिल कच्चा करना–मन मे कमजोरी लाना।

दिल कबाब होना–१ ईर्ष्या होना। उ० पराये की विभूति देखकर तुम्हारा दिल क्यो कबाब होता है ? २ कुढना।

दिल का घाव–मार्मिक पीडा।

दिल का कँवल खिलना–मन खुश होना। उ० जब मैं उसे देखता हूँ तो मेरे दिल का कँवल खिल जाता है।

दिल का खरा–ईमानदार, सही बात करने वाला। उ० तुम चाहे कुछ भी कहो, पर वह है दिल का खरा।

दिल का गवाही देना–१ शुद्ध-अशुद्ध का ध्यान होना, उचित-अनुचित का विचार होना। २ दिल का स्वीकार करना। उ० दिल गवाही नही देता कि मैं उसे रुपया दूँ।

दिल का बादशाह–१ मनमौजी, खर्चीला। उ० वह दिल का बादशाह है। खुशी के काम मे पानी की तरह रुपये बहाता है। २ दयावान्। उ० अरे वह तो दिल का बादशाह है, भला तुम गरीब को कुछ न देगा।

दिल का बुखार निकालना–जी के गुबार निकालना। उ० जब वह कुछ कहे तो तुम भी कह कर अपने दिल का बुखार निकाल लिया करो, बाद मे दुखी क्यो होते हो ?

दिल का साफ होना–मन मे छल-कपट न होना।

दिल की आग खुलना–मन का रज निकलना। उ० यदि दिल की आग खुल जाय तो तबीयत हलकी हो जाय।

दिल की कली खिलना–दे० 'दिल का कँवल खिलना'।

दिल की गाँठ खोलना–मनमुटाव दूर करना। उ० उन्होने आकर हम लोगो के दिल की गाँठ खोल दी, नही तो कभी न कभी अवश्य झगडा हो जाता।

दिल की दिल मे रहना–इच्छा पूरी न होना। सोची हुई बात पूरी न होना। उ० आपने आने का कष्ट भी किया, परन्तु आपका उचित स्वागत न हो सका, दिल की दिल मे ही रह गई।

दिल की फांस—१ मन का दुःख । २ रास्ते का कटक । उ० वह मर जाय तो दिल की फांस दूर हो जाय ।

दिल की लगी बुझाना—१ मन के दुःख को दूर करना । अतःकरण का शोक मिटाना । २ दिल की इच्छा पूरी करना । उ० वह आ गई है, मिल कर अपने दिल की लगी बुझा लो ।

दिल की हवस निकलना—इच्छा पूरी होना, मन का रोष दूर होना ।

दिल कुढ़ना—१ मन दुःखी होना । उ० जब मैं अपने गत जीवन को सोचता हूँ तो दिल कुढने लगता है । २ जलन होना । उ० किसी की वृद्धि देख कर उसका दिल कुढने लगता है ।

दिल कुढ़ाना—मन दु.खी करना । उ० उस पर विपत्ति पडी है, उसे चिढा कर उसका दिल न कुढाओ ।

दिल कुम्हिलाना—मन उदास हो जाना । उ० आज तो तुम्हारा दिल कुम्हिलाया जान पडता है, क्या बात है ?

दिल के दरवाजे खुलना—हृदय की वात प्रकट होना । उ० वातो के चक्कर में ऐसा डाला कि उसके दिल के दरवाजे खुलते देर न लगी ।

दिल के फफोले फूटना—मन के उद्गार निकलना । उ० वह मर जाय तो तुम्हारे दिल के फफोले फूट जायँ ।

दिल का मजबूत होना—दृढ होना ।

दिल को मसोसना—हृदय का दुःख या उद्गार न प्रकट कर हृदय मे ही रख लेना । उ० इतनी कटु बात सुनकर भी वह दिल को मसोस कर रह गया । पिता जी के होने से मैं दिल को मसोस कर रह गया, नही तो उनकी वात का ऐसा उत्तर देता कि वे आजीवन याद रखते ।

दिल को लगाना—१. हृदय मे जम जाना, असर पडना । उ० एक उसी ने दिल को लगने वाली वात कही । २ बुरा लगना । उ० तुम्हारी बातें तो दिल को लगती हैं ।

दिल खटक जाना या खटकना—१ सदेह मे पडना । २ निश्चय से टल जाना । उ० तुम्हारी बातो को सुनकर तो मेरा दिल खटक गया । ३ वैर होना । उ० दोनों के दिल खटक गए हैं ।

दिल खट्टा करना—बुरा भाव या घृणा पैदा करना । दिल तोड देना । उ० मैकआर्थर की नीति ने अमेरिका काग्रेस का दिल खट्टा कर दिया ।

दिल खट्टा होना—१. घृणा होना । उ० उसकी चापलूसी की बातो से मेरा जी खट्टा हो गया है । २ दिल का विमुख हो जाना । ३ असतोष होना ।

दिल खिलना—हृदय प्रफुल्लित होना । उ० परीक्षा मे उत्तीर्ण हुआ सुन कर उसका दिल खिल गया । तुम्हें देखकर मेरा दिल खिल जाता है ।

दिल खुलना—१. नि सकोच होना । हिलमिल जाना । उ० अब तो उन लोगो से उसका दिल खुल गया है । २ सब वातें स्पष्ट कहना । उ० आज उसका दिल खुला है ।

दिल खोल कर कहना—१ नि.सकोच होकर कहना । उ० सारा वृत्तात दिल खोल कर कहो, मैं सुनूंगा । २. साफ कहना ।

दिल गवाही देना—ठीक जांचना ।

दिल चलना—१. इच्छा होना । उ० इस कपडे को लेने के लिये मेरा दिल चल रहा है । २. मोहित होना । ३ रसिक होना ।

दिल चीर कर देखना—भीतर की देखना । उ० यदि तुम्हे विश्वास न हो तो मेरा दिल चीर कर देखो कि मैं तुम्हे कितना चाहता हूँ ।

दिल चुटकियाँ लेना—दे० 'दिल चुटकी लेना' ।

दिल चुटकी लेना—१ हँसी उडाना । उ० क्यो हर वात की दिल चुटकी लेते हो ? २ व्यग्य वोलना । उ० आज तो दिल चुटकी ले लो, मगर मेरा भी कभी समय आएगा ।

दिल चुराना—१. मोहित करना । उ० लडकी ने मेरा दिल चुरा लिया है । २ काम करने से भागना । उ० अरे अभी तो नौजवान हो, इतना दिल न चुराओ ।

दिल चूर-चूर होना—मन को वहुत आघात पहुँचना ।

दिल छिलना—मन को कष्ट होना ।

दिल छीन लेना—मोहित कर लेना । उ० उसकी तिरछी चितवन ने मेरा दिल छीन लिया ।

दिल छोटा करना—दे० 'जी छोटा करना' ।

दिल-जमई करना—सब्र देना, सतोष कराना । उ० बेचारे पर विपत्ति पडी है, जाकर दिल-जमई करना तुम्हारा कर्त्तव्य है ।

दिल जमना–१. ध्यान लगना। उ० यदि अव भी तुम्हारा दिल पढने पर नही जमता है तो अवश्य फेल हो जाओगे। २ सतोष होना, मन भरना। उ० उसका दिल उससे जम गया हो तो शादी कर लेना ही ठीक है। ३ इच्छानुसार होना। उ० यदि तुम्हारा दिल जम गया है तो ले जाओ, मैं दूसरो ले लूँगा।

दिल जमाना–मन से करना। चित्त व्यवस्थित करके किसी काम मे लगना। उ० अव तो गिने दिन रह गए है, ज़रा दिल जमा कर पढो, वर्ना पछताओगे।

दिल जलना–१. कुढना। उ० तुम्हे देख कर उसका दिल जलता हैं। २ डाह होना। उ० उसके अपकार्यो से सभी का दिल जलता है।

दिल जलाना–१. डाह या ईर्ष्या करना। उ० उन्हे देखकर क्यो दिल जलाते हो ? २ दु खी करना। उ० अव गरीवो का दिल अधिक न जलाओ। ३ चिढाना, कुढाना। उ० आखिर यह सव करके अपने घर वालो का दिल ही न जलाते हो।

दिल-जान से लगना–जी-जान से लगना, अच्छी तरह लगना। उ० मैं इस काम मे दिल-जान से लगना चाहता हूँ।

दिल जुडना–प्रेम होना।

दिलजोई करना–तसल्ली देना।

दिल टटोलना–मन की वात जानने की कोशिश करना।

दिल टूट जाना–दे० 'दिल टूटना'।

दिल टूटना–१. उत्साहहीन होना। उ० वडे ऊँचे अरमान थे, पर यह सुन कर मेरा दिल टूट गया। २ जी फीका हो जाना। दिल खट्टा हो जाना। उ० हटो तुमसे तो मेरा दिल टूट गया है।

दिल ठडा होना–उत्साहहीन होना।

दिल ठिकाने लगाना–हृदय को सान्त्वना देकर शात करना। उ० उसका दिल ठिकाने लगा दो, वेचारा परीशान है।

दिल ठिकाने होना–१ चित्त स्थिर होना। उ० कुछ घवडाहट थी, परन्तु आपके आ जाने से दिल ठिकाने हो गया। २ होश हो जाना। उ० ऐसी मार लगाऊँगा कि दिल ठिकाने हो जायगा।

दिल ठुकना–१. हिम्मत होना। उ० दिल ठुकता हो तो काम कर डालो। २ विश्वास होना। उ० तुम्हारी वातो पर दिल ही नही ठुकता है।

दिल ठोकना–हृदय मे दृढता लाना। उ० दिल ठोक कर चले चलो।

दिल डूवना या डूव जाना–१ वेहोश होना। उ० मारे गरम के उसका दिल डूवने लगा। २ उद्विग्न होना, घवडाना। उ० जाने क्यो आज दिल डूब रहा है। ३ पस्तहिम्मत होना। उ० यह सुन कर तो मेरा दिल डूव गया।

दिल ढूंढना–दिल के अन्तर्द्वन्द्वो का पता लगाना। उ० तुम्हारा दिल तो भगवान भी नही ढूँढ सकते, हम किस खेत की मूली है ?

दिल तडपना–दिल मे महान् कष्ट होना। वहुत व्याकुल होना। उ० उसका दिल प्रथम प्रेम के वियोग मे तडप रहा है।

दिल तोड़ना–१ साहस या उत्साह कम करना। उ० दिल तोडना अच्छा नही है, सदा उत्साह दिया करो। २ दिल के हौसलो को समाप्त करना, ज़िन्दगी से निराश होना। उ० जिसे जाना था चला गया, अव दिल तोड कर क्यो अपनी ज़िन्दगी वेकार करते हो।

दिल थामना–१. शाति धारण करना, सब्र कर लेना। उ० अपने इकलौते पुत्र की मृत्यु पर भी वह दिल थाम कर रह गया। २ दिल को रोकना। उ० दिल थामते क्यो नही ?

दिल दलकना–१. कष्ट होना। २ डर जाना।

दिल दहलना–मारे डर के जी कांपना। उ० थानेदार के आने पर चोर का दिल दहल गया।

दिल-दिमाग का आदमी–वहुत साहसी और समझदार आदमी। उ० वह दिल-दिमाग का आदमी है।

दिल दुखना–१ जी दुखना, दु ख या कष्ट होना। २ वुरा लगना।

दिल दुखाना–दिल को कष्ट पहुँचाना, कष्ट देना। उ० गरीवो का दिल न दुखाओ।

दिल दूना होना–साहस वढना।

दिल देखना–दे० 'दिल ढूंढना'।

दिल देना–हृदय से प्रेम करना। उ० दिल देना हो तो प्रेम की गली मे पदार्पण करो। तुमने उसे दिल तो दिया नही था, यह तो सव वात ही वात थी।

दिल दौड़ाना—इच्छा करना, मन चलाना। उ० सामर्थ्य के बाहर दिल न दौड़ाओ, वरना कष्ट होगा।

दिल धक-धक करना—दे० 'जी धक-धक करना'।

दिल धड़कना—दे० 'जी धड़कना'।

दिल धुकड़-पुकड़ करना—डरना, घबराहट होना। उ० अंग्रेजी राज्य में गाँव के लोगों का दिल लाल टोपी देखते ही धुकड़-पुकड़ करने लगता था।

दिल धुकुर-पुकुर करना—दे० 'दिल धुकड़-पुकड़ करना'।

दिल निकाल कर रख देना—हार्दिकता से युक्त बातें करना।

दिल पक जाना—दे० 'जी पक जाना'।

दिल पकड़ कर बैठ जाना—दे० 'दिल पकड़ लेना'।

दिल पकड़ लेना—दे० 'जी पकड़ लेना'।

दिल पकड़ा जाना—दे० संदेह होना। उ० पत्र देखते ही मेरा दिल पकड़ा गया।

दिल पकड़े फिरना—माया तथा प्रेम में बेचैन घूमना। उ० क्या बुढ़ौती में दिल पकड़े फिरते हो? तुम्हें तो अब राम-भजन करना चाहिए।

दिल पत्थर करना या होना—मन कठोर करना या होना।

दिल पर चोट करना—दुःखी करना।

दिल पर पत्थर रखना—दुःख सहने के लिए मन को दृढ़ करना।

दिल पर बन आना—विपत्ति या कोई कठिन समस्या आना। उ० यह पुस्तक तो दिल पर ऐसी बन आई है कि समाप्त ही नहीं होती।

दिल पर नक्श होना—हृदय में अंकित होना। उ० उस पुस्तक के अक्षर-अक्षर हमारे दिल पर नक्श हो गए हैं।

दिल पर घूँसा लगना—बुरा लगना, बहुत बुरा समाचार मिलना। उ० इस समाचार को सुन कर किसके दिल पर घूँसा नहीं लगेगा।

दिल पर मैल आना—द्वेष होना, प्रेम न रहना। उ० तुम्हारे व्यवहारों से ही तो उसके दिल पर मैल आ गई।

दिल पर साँप लोटना—१ शंकित या दुःखित होना। उ० मेरे लड़कों को फलते-फूलते देख कर उनके दिल पर साँप लोट जाता है। २ जलना, कुढ़न होना। उ० मुझे देख कर तुम्हारे कलेजे पर क्यों साँप लोट जाता है?

दिल पर हाथ रखना—१ सान्त्वना देना। उ० ऐसे समय में दिल पर हाथ रखना ही उचित था। २ ठंडे दिल से सच-सच बताना। उ० दिल पर हाथ रख कर कहो, तुम इसे जानते थे या नहीं?

दिल पर हाथ रखे फिरना—दे० 'दिल पकड़े फिरना'।

दिल पसीजना या पसीज जाना—करुणा से पूर्ण हो जाना, दयार्द्र हो जाना। उ० मैं इतना रोया, गिलगिलाया, तब भी उसका दिल न पसीजा।

दिल पाना—१ हृदय की बात जानना। उ० वह तो ऐसा कुटिल है कि कोई भी उसका दिल नहीं पा सकता। २ प्रेम पाना। उ० उसका दिल पाना आसान नहीं है।

दिल पिघलना—दे० 'दिल पसीजना'।

दिल पीछे पड़ना—चित्त बँटना। किसी ओर लग जाने से दुःख भूल जाना।

दिल फिर जाना—दे० 'दिल फिरना'।

दिल फिरना—मन हट जाना, घृणा होना। उ० जब उससे दिल फिर गया तो बोलते क्यों हो?

दिल फीका होना—दे० 'दिल खट्टा होना'।

दिल-फेंक—सहज ही अनुरक्त हो जाने वाला।

दिल फेरना—१ विरुद्ध कर देना। उ० तुम्हारी शिकायत करके उसने मेरा दिल फेर दिया था। २ दिल हटा लेना। उ० जब वह नहीं चाहती तो तुम भी अपना दिल फेर लो।

दिल बढ़ना—उत्साहित होना। दूना साहस होना। उ० पुरस्कृत होने से बच्चों का दिल बढ़ता है।

दिल बढ़ाना—१ उत्तेजित करना। उ० इनाम देकर लड़कों का दिल बढ़ाना चाहिए। २ हौसला बढ़ाना। उ० और कुछ नहीं तो बात ही से दिल बढ़ाया करो।

दिल बहलना—दे० 'जी बहलना'।

दिल बहलाना—१. मनोरंजन करना। उ० चलो आज खेल कर दिल बहलाया जाय। २ दे० 'जी बँटना'।

दिल बाँसों उछलना—घबराहट होना।

दिल दौडाना–इच्छा करना, मन चलाना। उ० सामर्थ्य के बाहर दिल न दौडाओ, वरना कष्ट होगा।

दिल धक-धक करना–दे० 'जी धक-धक करना'।

दिल धडकना–दे० 'जी धडकना'।

दिल धुकड-पुकड करना–डरना, घबराहट होना। उ० अंग्रेजी राज्य मे गाँव के लोगो का दिल लाल टोपी देखते ही धुकड-पुकड करने लगता था।

दिल धुकुर-पुकुर करना–दे० 'दिल धुकड-पुकड करना'।

दिल निकाल कर रख देना–हार्दिकता से युक्त बातें करना।

दिल पक जाना–दे० 'जी पक जाना'।

दिल पकड कर बैठ जाना–दे० 'दिल पकड लेना'।

दिल पकड लेना–दे० 'जी पकड लेना'।

दिल पकडा जाना–दे० सदेह होना। उ० पत्र देखते ही मेरा दिल पकडा गया।

दिल पकडे फिरना–माया तथा प्रेम मे बेचैन घूमना। उ० क्या बुढौती मे दिल पकडे फिरते हो? तुम्हे तो अब राम-भजन करना चाहिए।

दिल पत्थर करना या होना–मन कठोर करना या होना।

दिल पर चोट करना–दु खी करना।

दिल पर पत्थर रखना–दु ख सहने के लिए मन को दृढ करना।

दिल पर बन आना–विपत्ति या कोई कठिन समस्या आना। उ० यह पुस्तक तो दिल पर ऐसी बन आई है कि समाप्त ही नही होती।

दिल पर नक्श होना–हृदय मे अकित होना। उ० उस पुस्तक के अक्षर-अक्षर हमारे दिल पर नक्श हो गए है।

दिल पर घूंसा लगना–बुरा लगना, बहुत बुरा समाचार मिलना। उ० इस समाचार को सुन कर किसके दिल पर घूंसा नही लगेगा।

दिल पर मैल आना–द्वेष होना, प्रेम न रहना। उ० तुम्हारे व्यवहारो से ही तो उसके दिल पर मैल आ गई।

दिल पर साँप लोटना–१ शोकित या दुखित होना। उ० मेरे लडको को फलते-फूलते देख कर उसके दिल पर साँप लोट जाता है। २ जलना, कुढन होना। उ० मुझे देख कर तुम्हारे कलेजे पर क्यो साँप लोट जाता है?

दिल पर हाथ रखना–१ सान्त्वना देना। उ० ऐसे समय मे दिल पर हाथ रखना ही उचित था। २ ठडे दिल से सच-सच बताना। उ० दिल पर हाथ रख कर कहो, तुम इसे जानते थे या नही?

दिल पर हाथ रखे फिरना–दे० 'दिल पकडे फिरना'।

दिल पसीजना या पसीज जाना–करुणा से पूर्ण हो जाना, दयार्द्र हो जाना। उ० मैं इतना रोया, गिलगिलाया, तब भी उसका दिल न पसीजा।

दिल पाना–१ हृदय की बात जानना। उ० वह तो ऐसा कुटिल है कि कोई भी उसका दिल नही पा सकता। २ प्रेम पाना। उ० उसका दिल पाना आसान नही है।

दिल पिघलना–दे० 'दिल पसीजना'।

दिल पीछे पडना–चित्त बँटना। किसी ओर लग जाने से दु ख भूल जाना।

दिल फिर जाना–दे० 'दिल फिरना'।

दिल फिरना–मन हट जाना, घृणा होना। उ० जब उससे दिल फिर गया तो बोलते क्यो हो?

दिल फीका होना–दे० 'दिल खट्टा होना'।

दिल-फेंक–सहज ही अनुरक्त हो जाने वाला।

दिल फेरना–१ विरुद्ध कर देना। उ० तुम्हारी शिकायत करके उसने मेरा दिल फेर दिया था। २ दिल हटा लेना। उ० जब वह नही चाहती तो तुम भी अपना दिल फेर लो।

दिल बढना–उत्साहित होना। दूना साहस होना। उ० पुरस्कृत होने से बच्चो का दिल बढता है।

दिल बढाना–१ उत्तेजित करना। उ० इनाम देकर लडको का दिल बढाना चाहिए। २ हौसला बढाना। उ० और कुछ नही तो बात ही से दिल बढाया करो।

दिल बहलना–दे० 'जी बहलना'।

दिल बहलाना–१ मनोरजन करना। उ० चलो आज खेल कर दिल बहलाया जाय। २ दे० 'जी बँटना'।

दिल बाँसो उछलना–घबराहट होना।

दिल बाग़-बाग़ होना—बहुत प्रसन्न होना। उ० आपके बाग़ को देख कर दिल बाग़-बाग़ हो हो गया।

दिल विकल होना—दिल मे विकलता छाना। उ० जाने क्यो आज दिल विकल हो रहा है, कुछ बुरा होने वाला है।

दिल बुझना—पस्तहिम्मत होना। उ० बार-बार फेल होते-होते उसका दिल बुझ गया है, अब वह परीक्षा नही दे सकता।

दिल बुझाना—हतोत्साह करना। उ० कहाँ तो तुम्हे उत्साहित करना चाहिए, तुम उलटे उसका दिल और बुझा रहे हो।

दिल बुरा होना—ख्याल खराब होना। उ० हमारा दिल तुम्हारी ओर से बुरा हो गया है।

दिल बैठा जाना—१ चित्त ठिकाने न रहना। उ० आज सुबह से ही मेरा दिल बैठा जाता है। २ उदास होना। उ० उसकी मृत्यु का समाचार सुन कर मेरा दिल बैठा जा रहा है। ३ उत्साह का समाप्त होना।

दिल बोझ से दबना—हृदय शकित या दु खी होना।

दिल बोलना—हृदय का विश्वासपूर्वक कहना।

दिल भटकना—चित्त मे स्थिरता न होना। उ० जबसे उसकी नौकरी छूटी, उसका दिल भटकता रहता है।

दिल भर आना—करुणापूरित होना। करुणा या दु ख से आँसू आ जाना। उ० उसकी दशा देख कर दिल भर आया।

दिल भर जाना—१ सतोष होना। उ० दिल भर गया, अब न खाएँगे। २ दे० 'दिल जमई करना'। ३ दे० 'मन मानना'।

दिल भर जाना या भरना—१ सतुष्ट होना। उ० अब तो दिल भर गया होगा ? २ इच्छा न रहना। उ० ऐसी किताबो के पढने से दिल भर गया। ३ इच्छा पूरी होने पर प्रसन्न होना। उ० शायद वह फेल हो गया तो तुम्हारा दिल भर जाय। ४ मन मान जाना। उ० उसका छुआ खाते हो, कैसे दिल भरता है। ५ दे० 'दिल-जमई करना'।

दिल भारी करना—चित्त दु खी या उदास करना। उ० पत्र मे कौन-सी ऐसी बात थी कि दिल भारी कर रहे हो ?

दिल मसोस कर रह जाना—दे० 'दिल मसोसना'।

दिल मसोसना—शोक, क्रोध को दबा रखना। उ० वहाँ सभी लोग अपने पूज्य थे, इसीलिए तो दिल मसोस कर रह गया।

दिल मारना—दे० 'जी को मारना'।

दिल मिलना—दे० 'मन मिलना'।

दिल में आग लगना—बेचैनी होना। उ० जब से वह गया, मेरे दिल मे आग लगी हुई है।

दिल मे आग लगाना—हृदय को जलाना या उद्विग्न करना। उ० नायक ने नायिका के दिल मे आग लगा दी। उसके व्यग्य ने मेरे दिल मे आग लगा दी।

दिल मे आना—दे० 'मन मे आना'।

दिल मे कट कर रह जाना—मन मे कुढने या लज्जित होने के लिए बाध्य होना।

दिल मे करार होना—दिल मे शाति होना। उ० इस समाचार को सुन कर तो मेरे दिल मे बिल्कुल करार नही है।

दिल मे काँटा-सा खटकना—अच्छा न लगना, देख कर जलना। उ० तुम दोनो की मित्रता उसके दिल मे काँटे-सी खटकती है।

दिल मे खटका होना—१ सदेह होना। २ बैर होना।

दिल मे खुभना—दे० 'दिल मे चुभना'।

दिल मे गड़ना—दे० 'दिल मे चुभना'।

दिल मे गाँठ पडना—दिल मे फरक या मनमुटाव होना। उ० जाने क्यो दोनो के दिल मे गाँठ पड गई है।

दिल मे गिरह पड़ना—मनमुटाव होना। उ० आपने दो-चार बाते उस दिन ऐसी कह दी कि उसके दिल मे गिरह पड गई।

दिल मे घर करना—१ सदा स्मरण रहना। दिल मे जम जाना। उ० हमारे दिल मे तो उसकी बात ने घर कर लिया है। २ जी मे विश्वास जम जाना। उ० उसके दिल मे तुमने घर कर लिया है।

दिल मे चुभना—चित्त मे जमना, हृदय मे घर करना। मन पर स्थायी रूप से बस जाना। उ० माधव मूरति दिल मे चुभी।

दिल मे चोर बैठना—दे० 'मन मे चोर बैठना'।

दिल मे जगह करना—हृदय मे स्थान पाना। उ० तुम्हारे उत्तम स्वभाव ने मेरे दिल मे जगह कर लिया है।

दिल में दर्द होना–मानसिक वेदना होनी ।

दिल में दिल डालना–अपने की तरह दूसरो को बनाना ।

दिल में दिल पडना–दूसरे पर अपना प्रभाव होना । उ० ऐसा काम करो कि बिना कुछ कहे दिल मे दिल पड जाय ।

दिल मे फफोले पडना–बहुत दु ख होना, दिल का बुरी तरह जल जाना । उ० कल की घटना से जन-साधारण के दिल मे फफोले पड गए हैं ।

दिल मे फरक आना–व्यवहार या प्रेम मे अन्तर पडना । मैत्री टूटना । उ० कम से कम मुझे तो बतलाओ कि तुम दोनो के दिलो मे क्यो फरक आया है ?

दिल मे बल पडना–दे० 'दिल मे फरक आना' ।

दिल मे रखना–१ द्वेष रखना, बुरा मानना । उ० दिल मे रखते हो तो रख लो, मगर मैंने इस आशय से नही कहा था । २ छिपाना । उ० जो दिल मे रखने लायक हो, उसे मत कहो । ३ ख्याल बनाए रखना । उ० मुझे भी दिल मे रखिएगा । ४ प्यार करना ।

दिल मैला करना–मन मे कुटिलता लाना, अप्रसन्न होना । उ० इतनी बात के लिए क्यो दिल मैला करते हो ?

दिल रखना या रख देना या रख लेना–बात रखना । मन रखना । इच्छा पूरी करना । उ० उसने पाँच रुपये देकर मेरा दिल रख दिया ।

दिल रुकना–१ हिचकना । उ० मेरा तो वहाँ जाने से दिल रुकता है । २ घबडाना । उ० जाने क्यो आज सुबह से ही दिल रुक रहा है ।

दिल लगना–प्रेम होना । उ० दिल लगा छडी से तो परी किस काम की ?

दिल लगाना–प्रेम करना । उ० बदशक्ल होने पर भी लैला ने मजनू से दिल लगाया ।

दिल ललचाना–१. जी तरसाना, लालच देना । उ० दिल न ललचाओ, देना हो तो दे दो, नही तो मैं अपना रास्ता नापूँ । २ चाहना, लालच करना । उ० इस चीज पर दिल न ललचाओ ।

दिल लेना–१ प्रीति मे पड जाना । उ० दिल लेकर छोडना कठिन है । २ हृदय का भेद पा जाना । उ० किसी तरह से उसका दिल ले लो तो काम बन जाय । ३ दिल जीत लेना । उ० उसका दिल ले लो तो तुम्हे मर्द समझूँ ।

दिल लोटना–जी छटपटाना, न रहा जाना । बुरी तरह चाहना । उ० उस चीज़ के लिए दिल लोट रहा है ।

दिल सम्हालना–दिल काबू मे करना, आवेश या जोश रोकना । उ० मैंने बहुत दिल सम्हाला, नही तो हाथ छूट गया होता ।

दिल साफ करना–मन का दुर्भाव दूर करना ।

दिल से उठना–१ अपने आप भाव उठना । मन मे इच्छा होना । उ० आज दिल से उठता है कि चला जाऊँ । २ हृदय मे स्थान न होना । उ० मुझे विश्वास है कि अब वह तुम्हारे दिल से उठ गई होगी ।

दिल से उतरना–प्रेम या चाह न रहना । उ० कुछ दिनो तक लोगो के दिल से भारतीय चीजें उतर गई थी । प्रेमिका के दिल से प्रेमी का उतरना उसकी मौत से भी बढकर है ।

दिल से उतारना–प्रेम न रखना । भूल जाना । उ० अब तो दिल से उतारने में ही कुशल है ।

दिल से गिरना–१ प्रतिष्ठा न रहना । उ० कांग्रेस लोगो के दिल से गिर गई है । २ दिल से उतरना, प्रेम न रहना । उ० तुम उस लडकी के दिल से उतर गए हो ।

दिल से दूर करना–ख्याल न करना । भुला देना । उ० जो आँख से दूर है, वह दिल से दूर हो ही जाता है ।

दिल से धुआँ उठना–आह निकलना । उ० उस बेचारे के दिल से जो धुआँ उठ रहा है, बेकार नही जायगा ।

दिल हट जाना–मन हट जाना, घृणा होना । उ० दिल हट जाने पर फिर वह बात नही रह जाती ।

दिल हाथ मे रखना–१ वश मे रखना । उ० उसका दिल तो उसकी स्त्री अपने हाथ मे रखती है, वह इस विषय मे कुछ नही कर सकता । २ अपने काबू मे रखना । उ० अपना मन अपने हाथ मे रखो ।

दिल हाथ मे लिए घूमना–आशिक-मिजाज होना । उ० इन जैसा, दिल हाथ मे लिए घूमने वाला भी दुनिया मे कोई और होगा ?

दिल हाथ मे लेना–दे० 'दिल हाथ मे रखना' ।

दिल हिलना–१ डर से जी काँपना । उ० जगल के दृश्य देखकर दिल हिल गया । २.

करुणा से हृदय बेचैन होना। उ० तुम्हारे रोने से मेरा दिल हिल गया। ३ निश्चय से दिल का हट जाना। उ० अब मैं यह काम नही करूँगा, मेरा दिल हिल गया।

दिल ही दिल मे–अपने आप, धीरे से। उ० तुमने तो दिल ही दिल मे समझ लिया, मुझे कुछ भी न बताया।

दिलेरी करना–बहादुरी करना। उ० काश्मीर मे हमारे सिपाहियो ने खूब दिलेरी की।

दिलोजान से–१ दे० 'जी-जान से'। २ दिल से, दत्तचित्त होकर। उ० अब समय आ गया है, दिलोजान से लग जाओ। ३ चित्त एकाग्र करके। उ० वह दिलोजान से पढने मे लगा है।

दिल्लगी उडाना–हँसी-मजाक करना। उ० हर बात की दिल्लगी उडाना ठीक नही है, ज़रा गभीरता से सुनो।

दिल्ली दूर होना–१. कार्य-समाप्ति मे देर होना। उ० अभी तो दिल्ली दूर है, घबडाने से क्या लाभ ? २ किसी वस्तु का शक्ति से बाहर होना। उ० तुम इस वर्ष पास होने की सोच रहे हो, पर जहाँ तक मैं समझता हूँ, दिल्ली दूर है।

दिवाला निकलना–घाटा होना, दिवाला होना। उ० अभी हाल मे कलकत्ता बैंक का दिवाला निकल गया।

दिवाला निकालना या निकाल देना–घाटा करा देना। उ० यहाँ के कुछ लोगो ने मिल कर सेठजी का दिवाला निकाल दिया।

दिवाला मारना–दे० 'दिवाला निकालना'।

दिशाएं दहल जाना–चारो ओर आतक छा जाना।

दिशा जाना–पाखाना होने के लिए घर के बाहर किसी दिशा मे जाना। उ० दिशा जा रहे हो तो छाता ले लो, बड़े ज़ोर का पानी आ रहा है।

दिशा होना–दे० 'मैदान होना'।

दिसावर उतरना–विदेशो मे चीज़ो का सस्ता होना। उ० गुड का दिसावर उतर गया है, इसलिए इस वक्त बेचना ठीक नही।

दिसावर चढना–विदेशी बाज़ारो मे चीज़ का भाव चढ जाना। उ० दिसावर चढे तो मैं भी कुछ भेजूँ।

दीठ उठाना–१. ऊपर देखना। उ० ज़रा दीठ उठाइए, तब यहाँ का नज़ारा देख सकते है। २. दयालु होना। उ० ज़रा हमारी ओर भी दीठ उठाया कीजिए।

दीठ उतारना–बच्चे की नज़र झाडना। उ० हमारे यहाँ दीठ उतारने की प्रथा प्रचलित है, पर मुझे उसमे विश्वास नही।

दीठ करना–देखना। उ० इस प्रकार दीठ करना तुमने कहाँ सीखा ?

दीठ खा जाना–नज़र लग जाना। उ० सुन्दर बच्चे बडी जल्दी दीठ खा जाते है।

दीठ गडाना–१ टकटकी लगा कर देखना। उ० इस तरह दीठ न गडाओ। २ नज़र पर चढा लेना। उ० उस पर तुमने अपनी दीठ गडा ली है।

दीठ चुराना–सामने न पडना, लजाना। उ० हमसे क्यो दीठ चुराते हो, सामने आओ।

दीठ चूकना–न देख सकना। उ० आपकी दीठ तो चूक गई। अब उसका यह रूप देख पाना असभव है।

दीठ जमाना–दे० 'दीठ गडाना'।

दीठ जलना–दे० 'राई-नोन उतारना'।

दीठ जाना–अधा होना। उ० बेचारी की दीठ गई, अब तो पतोहे और भी नही पूछेंगी।

दीठ जुडना–आँख मिलना। उ० दीठ जुडते ही सब क्रोध शात हो गया।

दीठ जोड़ना–सामने आना। उ० दीठ जोडने पर प्रेम का भाव मालूम होता है।

दीठ पर चढ़ना–१ पसद आना, अच्छा लगना। उ० आपका मकान उसकी दीठ पर चढा है। २. जलन होना। उ० क्यो वह आपकी दीठ पर चढा है ?

दीठ फिरना–मुहब्बत न रहना। उ० आपकी क्यो उसकी ओर से दीठ फिर गई ?

दीठ फिसलना–आँख का चौंधिया जाना। आँख का न ठहरना। उ० ताजमहल को देख कर सभी की दीठ फिसल जाती है।

दीठ फेंकना–आँख उठा कर दूर देखना। उ० दीठ फेंकने से नदी का कछार दिखाई दे सकता है।

दीठ फेरना–१ कृपा-दृष्टि हटा लेना। उ० इतनी-सी गलती पर दीठ फेर ली। २ दूसरी

ओर देखना। उ० अब उन्होंने दीठ फेर ली, तुम जा सकते हो।

दीठ बचाना–१. छिपना, सामने न आना। उ० तुम तो हमेशा दीठ बचाए फिरते हो। २ दे० 'दीठ चुराना'।

दीठ बाँधना–मंत्र या जादू से नज़र बाँधना। उ० कल तो मदारी ने सभी की दीठ बाँध दी थी।

दीठ बिछाना–१. उत्सुकता से राह देखना। उ० आपके लिए हम लोग दिन भर दीठ बिछाए बैठे रहे। २ स्नेहपूर्ण स्वागत करना। उ० वह बेचारा दीठ बिछाता है, वहाँ न जाऊँगा तो जाऊँगा कहाँ ?

दीठ भर देखना–संतोष भर देखना, अच्छी तरह देखना। उ० आज तो हम लोगो ने प्रदर्शनी दीठ भर देखी।

दीठ मारना–दे० 'आँख मारना'।

दीठ मारी जाना–देखने मे असमर्थ होना। उ० अब तो उसकी दीठ मारी जा चुकी है।

दीठ मिलना–सामना होना। उ० युगो के बाद तो तुम दोनो की दीठ मिली है।

दीठ मिलाना–आँख मिलाना। आँखें चार करना। उ० यहाँ कौन तुम्हारा प्रेमी है, जिससे तुम दीठ मिला रहे हो ?

दीठ मे आना या आ जाना–१ दिखाई पडना। उ० बहुत खोजा, पर उस भीड मे वह कही दीठ मे नही आया। २ नज़र पर चढना। उ० सँभले रहना, उसकी दीठ मे तुम भी आ गए हो।

दीठ मे पड़ना–दे० 'दीठ मे आना'।

दीठ मे समाना–दृष्टि मे गड जाना। नज़र पर चढ जाना। उ० वह चित्र मेरी दीठ मे समा गया है।

दीठ लगना–नज़र लग जाना। देखने का टोना लग जाना। उ० तुम्हारे लडके को किसी की दीठ लग गई है। इसी से कहती हूँ कि ललाट पर काला टीका लगा दिया करो।

दीठ लगाना–१ देखना। उ० उधर कहाँ दीठ लगा रहे हो ? २ नज़र या दृष्टि लगाना, किसी अच्छी चीज़ को टोने की दृष्टि से देखना। उ० कुछ स्त्रियाँ दीठ लगाने मे बडी तेज़ होती हैं। मुझे दीठ लगाने का विश्वास नही है।

दीठ लडना–देखा-देखी होना। उ० जभी तुम दोनो बैठते हो, दीठ लडने लगती है।

दीठ लड़ाना–देखा-देखी करना। प्रेम से एक दूसरे को देखना। उ० कल वे दोनो खूब दीठ लडा रहे थे।

दीठ से उतर जाना–नज़र से गिर जाना। आदर का पात्र न रहना। उ० आप तो घर वालों की दीठ से उतर गए हैं।

दीठ से गिरना–दे० 'दीठ से उतर जाना'।

दीठ होना–१ पाने की इच्छा होना। उ० उस पर तुम्हारी दीठ है। २. देखने की शक्ति होना, दिखाई देना। उ० उसके अभी दीठ है।

दीदा-दलेल होना–निर्लज्ज होना। उ० वह दीदा-दलेल है।

दीदा धो कर पीना–बिलकुल बेहया होना। उ० आजकल की लडकियाँ तो दीदा धो कर पी गई हैं।

दीदा धोना–निर्लज्ज होना। उ० क्या बिल्कुल दीदा धो कर ही आए हो कि ऐसी बातें करने मे भी नही हिचकते ?

दीदा-पटम होना–अंधा हो जाना। उ० उस बेचारे का तो दीदा-पटम हो गया, अब भला कमाएगा कैसे ?

दीदा फाड़ कर देखना–एकटक देखना, ध्यान से देखना। उ० तुम तो उसकी ओर दीदा फाड कर देख रहे थे।

दीदा फोडना–आँख फोडना, अंधा करना। उ० चोरो ने चोरी तो की ही, बेचारे का दीदा भी फोड दिया।

दीदा लगना–दिल लगना। उ० घर छोड कर कही भी उसका दीदा नही लगता।

दीदे कहीं और होना–दिल किसी दूसरी जगह होना। उ० क्या दीदे तुम्हारे कही और होते हैं जो सब सवाल गलत कर देते हो।

दीदे का पानी ढल जाना–निर्लज्ज हो जाना, दुष्कर्म करने मे लाज न रखना। आँख मे ज़रा भी लाज न रहना। उ० अब तो जैसे तुम्हारे दीदे का पानी ढल गया है, जो ही होता है, वही करते हो।

दीदे निकालना–१ आँखें लाल करना। उ० तुम्हारे दीदे निकालने से मैं नही डर सकता। २ बिना आँख का करना। उ० प्राचीन भारत मे दीदे निकाल लेना तो साधारण दंड था।

दीदे फेंकना–इश्क-लड़ाना।

दीदे मटकाना–हाव-भाव से आँखें मारना। उ० इस तरह दीदे मटकाते तुम्हे शर्म नही आती?

दीन की हाय मोटी होना–गरीब को सताने का बुरा फल मिलना।

दीन-दुनिया की खबर न होना–ससार का कुछ भी पता न होना। बिलकुल मतिहीन या अज्ञानी होना। उ० तुम्हे तो दीन-दुनिया की भी खबर नही है, तुम विदेश कैसे जाओगे?

दीन-दुनिया बिगड़ना–लोक और परलोक दोनो ही बिगड जाना। उ० जिसकी दीन-दुनिया दोनो बिगड गई, उसकी जिंदगी बेकार है।

दीन-दुनिया भूल जाना–सुध-बुध भूल जाना, ज़रा भी ध्यान न रहना। लोक-परलोक दोनो भूल जाना। उ० प्रेम ऐसी चीज़ है कि लोग इसके पीछे दीन-दुनिया भूल जाते हैं।

दीपक बुझना–निर्वंश होना।

दीमक-खाया–अन्दर से खोखला। उ० उसमें ज़रा भी ताकत नही है; उसका तो दीमक-खाया शरीर है।

दीमक चाट जाना या चाटना–दीमक के कीडो द्वारा खाया जाना। उ० आलमारी की सब किताबें दीमक चाट गये।

दीया जलाना–दिवाला निकालना। उ० इन धूर्तों ने खा-खा कर उस बेचारे का तो दीया जला दिया।

दीया जलाने के समय–सध्या समय। उ० दीया जलाने के समय धर्मशास्त्र मे कुछ भी करने का विधान नही है।

दीया ठडा करना–दीपक बुझाना। उ० दीया ठडा कर दो, अब कोई ज़रूरत नही है।

दीया ठडा होना–१ घर मे रौनक न रहना। उ० बूढे के मरते ही इस घर का दीया ठडा हो गया। २ चिराग गुल हो जाना। उ० अभी दीया ठडा हो गया क्या?

दीया दिखाना–दीया या चिराग ले जाकर उजेला करना। उ० ज़रा इस कमरे मे दीया दिखा दो।

दीया बढाना–दे० 'दीया ठडा करना'।

दीया-बत्ती करना–चिराग़ जलाना। उ० उस मदिर पर २५ रु० महीना ख़र्च होता है, पर दिया-बत्ती करने वाला कोई कभी दिखाई भी नही पडता।

दीया-बत्ती का समय–सन्ध्या का समय। उ० दिया-बत्ती का समय है, उठो, पढो मत। धर्म के अनुसार इस समय कुछ भी न करना चाहिए।

दीया लेकर ढूंढना–दे० 'चिराग़ लेकर ढूंढना'।

दीये का हंसना–१ चिराग से गुल झडना। उ० दीया हँसा, अब प्रकाश अच्छा होगा। २ दीये का हँसना शकुन माना जाता है। लोगो का विश्वास है कि यह विवाह या सतान होने का सूचक है। उ० दीया हंस रहा है, मालूम होता है कि बहू को बच्चा होगा।

दीये की बत्ती टालने को न कहना–छोटा भी काम न करने को कहना।

दीये से फूल झाडना–गुल झाडना। उ० दीये से फूल झाड दो, तो कुछ अधिक रोशनी हो जाय।

दीवाना होना–किसी के लिए व्यग्र होना। किसी के पीछे पागल होना। उ० मजनू लैला के पीछे दीवाना था।

दीवार उठाना–दीवार बनाना। उ० कुछ मज़दूर मेरी दीवार उठा रहे हैं।

दीवार को कान होना–गुप्त बात भी सुन लिये जाने की सभावना होना।

दीवार टूट जाना–विरोध समाप्त हो जाना।

दीवार मे चुनना–जीते-जी आदमी को दीवाल मे चुन देना। उ० औरगजेब ने दो सिक्ख लडको को दीवार मे चुनवा दिया।

दीवार लाँघना–किसी स्त्री से अनुचित सबध करना।

दीवारें चाटना–दिन काटना। उ० वह बुढिया किसी तरह दीवारें चाट रही है।

दीवाला निकलना–दे० 'दिवाला निकलना'।

दीवाला निकालना–दे० 'दिवाला निकालना'।

दुन्दुभी बजाना–हर्ष प्रकट करना।

दुआ माँगना–प्रार्थना करना। उ० भगवान से दुआ माँगो, शायद वह कुछ सुन ले।

दुआ लगना–प्रार्थना का फल मिलना। उ० भाई, इस बुढिया की दुआ खूब लगी। उसका लडका भला-चगा हो गया।

दुइचारी—दो-चार, कुछ थोडे से । उ० सुनहु जे अब अवगुन दुइचारी ।

दुकान उठाना—दुकान बन्द करना । उ० दस बज गया, अब दुकान उठा दो ।

दुकान करना—दुकान का काम करना । उ० गल्ले की दुकान करो, इसमे लाभ होगा ।

दुकान खोलना—दे० 'दुकान करना' ।

दुकान चलना—खूब सौदा बिकना । उ० उसकी दुकान खूब चल रही है ।

दुकान बढ़ाना—दे० 'दुकान उठाना' ।

दुकान लगाना—ठीक से दुकान खोलना । उ० दुकान खोल कर सामान तरीके से सजाओ । सुबह सात बजे जाकर दुकान लगा देना ।

दुःख उठाना—कष्ट सहना । उ० अगर वहाँ जाओगे तो बडा दु ख उठाना पडेगा ।

दुःख का घूंट पीना—दु ख को चुपचाप सह लेना ।

दुःख का पहाड टूटना—घोर दु ख आ पडना ।

दुखडा पडना—विधवा होना । उ० दुखडा पडने से उसके दिल के सारे अरमान जाते रहे ।

दुखड़ा पीटना—बडे कष्ट से जीवन व्यतीत करना । उ० क्या कहूँ, मुझे ज़िन्दगी भर दुखडा ही पीटना पडा है ।

दुखड़ा रोना—अपने दु ख की कहानी कहना । उ० हर वक्त दुखडा रोना मूर्खों का काम है ।

दुखती कहना—चुभती या पुरअसर बात कहना । उ० तुम तो हर बात मे ही दिल को दुखाते मेरे, क्या हुआ मैंने भी गर दुखती कही थोडी-सी ।

दुःख-दर्द मे शरीक होना—दु ख मे साथ देना । बुरे समय काम आना । उ० वही मित्र है, जो दुःख-दर्द मे शरीक हो ।

दुःख देना—तकलीफ पहुँचाना । उ० ग़रीबो को दु ख देना पाप है ।

दुःख पडना—विपत्ति आना । उ० दु ख पडने पर सच्चा मित्र ही सहायता करता है ।

दु.ख पहुँचना—कष्ट होना । उ० जब ये बातें सुन कर उसको दु ख पहुँचता है तो आप उससे कहते ही क्यो हैं ?

दु.ख पहुँचाना—दे० 'दु ख देना' ।

दु.ख पाना—कष्ट सहना । उ० वह जबसे पैदा हुआ है, दु ख पा रहा है ।

दुःख बटाना—कष्ट के समय साथ देना । उ० सच्चा मित्र ही दु ख बटा सकता है ।

दु.ख भरना—दु ख के दिन बिताना । उ० जब तक मेरे भाग्य मे दु:ख भरना है तो सुख आ ही कैसे सकता है ?

दु ख भुगतना—दे० 'दु ख भोगना' ।

दु.ख भोगना—दे० 'दु ख उठाना' ।

दुःख लगना—रज होना । उ० मैंने कौन-सी ऐसी बात कह दी, जो आपको इतना दु ख लगा है ?

दुगदुगी मे दम होना—जान गले मे आना । उ० काम करते दुगदुगी मे दम हो गया, फिर भी बात सुननी पडती है ।

दुडगे लगाना—कूदना । उ० एक बेटी भी है तो चारो ओर दुडगे लगाती है ।

दुतकार बताना—डाँटना-फटकारना । उ० रोज़ दुतकार बताना ठीक नही है ।

दुनियाँ उजडना—सर्वस्व नष्ट हो जाना ।

दुःख के बादल सर पर मड़राना—दु ख की सभावना होना ।

दु.ख की खान होना—दु ख का मूल होना ।

दुनियाँ की हवा लगना—१ सासारिक बातो का ज्ञान होना । २. सासारिकता मे पडना । उ० जिस लडके को दुनियाँ की हवा लग गई, वह क्या पढ़ेगा ? [इस मुहावरे का प्रयोग प्राय बुरे अर्थ मे होता है, पर कभी-कभी अच्छे अर्थ मे भी । जैसे जब दुनियाँ की हवा लगेगी तो वह स्वयं होशियार हो जायगा ।]

दुनियाँ के ऊपर होना—असाधारण होना ।

दुनियाँ के परदे पर—ससार भर मे । उ० दुनियाँ के परदे पर ऐसा ईमानदार आदमी मिलना कठिन है ।

दुनियाँ के परदे से उठ जाना—दे० 'दुनियाँ से उठ जाना' ।

दुनियाँदारी की बात—१ बनावटी बात, छल भरी बात । २ व्यावहारिक बात । उ० दुनियाँदारी की बात मे वह बहुत होशियार है ।

दुनियाँ देखना—अनुभव प्राप्त करना । उ० जाओ बेटा, पहले दुनियाँ देखो, फिर मुझे चराना ।

दुनियाँ भर का—बहुत अधिक । उ० वह दुनियाँ भर का होशियार बनता है, पर जानता कुछ भी नही ।

दुनियाँ से उठ जाना—मर जाना । उ० वह बुढिया आज दुनियाँ से उठ गई ।

दुनियाँ से चल बसना—दे० 'दुनियाँ के परदे से उठ जाना' ।

दुपट्टा तान कर सोना—१ अच्छी तरह दिन बिताना । उ० आजकल उसका क्या पूछना है, दुपट्टा तान कर सोता है । २ निश्चित होकर सोना । उ० बिटिया की परसो शादी है और तुम दुपट्टा तान कर सो रहे हो !

दुपट्टा बदलना—सखी बनना । उ० भाई, वह लडकी तो गजब की मिलनसार है ! तीन ही दिन तो मेरे मुहल्ले मे रही, पर जाने कैसे बीसो से दुपट्टा बदल लिया ।

दुम के पीछे फिरना—हर समय साथ रहना । उ० क्यो आप उसकी दुम के पीछे फिरते हैं, वह सात जन्म मे भी आपका काम नही कर सकता ।

दुम दबा कर चल देना—चुपके से भाग जाना । उ० यही तो तुम मित्र हो कि जहाँ आफत आई, दुम दबा कर चल दिए ।

दुम दबा कर भागना—डर कर भाग जाना । उ० वह मुझे देखते ही दुम दबा कर भाग गया ।

दुम दबा जाना—१ डर कर किसी काम को छोड देना । उ० दुम दबा जाना हो तो मेरे साथ इस काम मे हाथ न लगाओ । २ डर कर भाग जाना । उ० दुम दबा गए न ! इसी हिम्मत पर उसे मारने गए थे !

दुम मे घुसना—समाप्त होना, लुप्त होना । उ० ज्यो ही पुलिस आएगी, तुम्हारी सारी ऐंठ दुम मे घुस जाएगी ।

दुम मे घुसा रहना—हर समय खुशामद मे लगा रहना । खुशामदी होना । उ० पता नही नौकर देगा कि नही, परन्तु तुम उसके दुम मे घुसे रहते हो ।

दुम मे रस्सी बाँधना—परीशान करना । उ० तुम सीधे से जा रहे हो या दुम मे रस्सी बाँधू ।

दुम हिला कर बैठना—साफ करके बैठना । उ० सुअर भी दुम हिला कर बैठता है, लेकिन तुम नही ।

दुम हिलाना—प्रसन्न होना, प्रसन्नता प्रकट करना । उ० देखो रोटी देख कर कुत्ता दुम हिला रहा है ।

दुर-दुर—अपमान, तिरस्कार । उ० इस दुर-दुर से तो मैं तग आ गया ।

दुर-दुर करना—अपमानसहित दूर भगाना । उ० क्यो दुर-दुर करते हो ? वह तुम्हारे घर रोज थोडे ही आएगा ।

दुर-दुर फिट-फिट करना—दुतकारना, निकालना, झाडना, घृणा करना ।

दुरदुराना या दुरदुरा देना—दे० 'दुर-दुर करना' । उ० कुत्ते को दुरदुरा दो ।

दुरागौन देना—गौने (द्विरागमन) मे लडकी को उसके घर भेजना । उ० क्या आपने श्यामा का दुरागौन दे दिया ?

दुरुस्त करना—१ ठीक करना । उ० तुम्हारी बदमाशी तो एक दिन मे दुरुस्त कर दूँगा । २ सम्हाल देना, शुद्ध कर देना । उ० तुम तसवीर बनाओ, मैं दुरुस्त कर दूँगा ।

दुर्भाग्य के कोडे खाना—बहुत बुरी अवस्था मे दिन बिताना ।

दुर्योधन होना—बहुत अत्याचारी होना ।

दुलकी दौडना—धीरे-धीरे मध्यम गति से दौडना ।

दुलत्ती छाँटना—दोनो पैरो से मारना । उ० यह घोडा दुलत्ती छाँटता है ।

दुलत्ती झाडना—दोनो पैर चलाना । उ० कुछ घोडे दुलत्ती झाडते हैं ।

दुलत्ती फेंकना—दे० 'दुलत्ती छाँटना' ।

दुवार करना—किसी के मरने पर उसके दरवाज़े पर मातमपुरसी करने जाना । उ० उनका एकलौता बेटा मर गया है, मुझे दुवार करने जाना है ।

दुविधा मे डालना—असमजस मे डालना । उ० दुविधा मे मत डालो । देना हो तो दे दो, नही तो साफ इन्कार करो ।

दुविधा मे पडना—सदेह मे होना । शुबहे मे पडना । उ० मैं उस दिन दुविधा मे पड गया, नही तो वह पकड जाता ।

दुशाले मे लपेट कर मारना—मधुर वाक्यो मे व्यग्य या कटाक्ष करना । शब्दो की मीठी मार मारना । उ० उसे तुम सीधा समझते

हो, पर असल मे है वह परले नम्बर का घाघ। दुशाले में लपेट कर मारना उसे खूब आता है।

दुश्मनी मोल लेना—जान-बूझ कर वैर ठानना।

दुह लेना—सब कुछ ले लेना, कुछ न छोडना। उ० लुटेरो ने तो तुम्हें बिल्कुल ही दुह लिया। ग़रीबो को दुह लेना ही आज के धनिको का काम है।

दुहाई-तिहाई करना—कई बार उपालभ देना या कहना। उ० एक बार हो गया, बार बार दुहाई-तिहाई करने से क्या लाभ ?

दुहाई देना—१. अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करना। उ० आपके दरवाज़े पर वह गरीब दुहाई दे रहा है। २ दुहने की मजदूरी देना। उ० हमने उसकी दुहाई दे दी।

दुहाई फिरना—१ घोषणा होना। उ० विश्व मे भारत की स्वतत्रता की दुहाई फिर गई। २ तेज या प्रताप ग़ालिब होना। उ० कभी भारत मे नेहरू की दुहाई फिर रही थी।

दूज का चाँद होना—दर्शन दुर्लभ होना। बहुत कम दिखाई देना। उ० आप तो दूज के चाँद हो गये, आज तीन महीने बाद तो दिखलाई पडे हैं !

दूध उगलना—बच्चे का दूध न पचना। उ० हमारा छोटा बच्चा कई दिनो से दूध उगल रहा है।

दूध उतरना—थन या स्तनो मे दूध आना। उ० अभी तक मेरी गाय को दूध नही उतरा, यद्यपि बच्चा दिए तीन दिन हो गए।

दूध-कांजी की तरह—वह मेल जिसका परिणाम अहितकर हो।

दूध का दूध पानी का पानी करना—उचित इसाफ़ करना। उ० अब तो सबकी नस-नस मे धूर्तता भरी है, कौन दूध का दूध पानी का पानी कर सकता है ? दूध का दूध और पानी का पानी करने वाले काज़ी आज कहाँ हैं ?

दूध का धोया—१ बिना कलक का। उ० आप दूध के धोए नही हैं, मुझसे न बनिए। २ साफ़, खरा, अच्छा। उ० दूध के धोए ५० रु० दिए, फिर भी उस बेईमान ने ठग लिये।

दूध का बच्चा—बहुत छोटा लडका, तीन साल से कम का बच्चा। उ० दूध के बच्चे हो क्या कि रास्ता बतलाऊं ?

दूध का-सा उबाल—तुरन्त शान्त हो जाने वाला गुस्सा। उ० घबराते क्यो हो, वह तो दूध का उबाल था। वह बूढा किसी पर सर्वदा के लिए तो गुस्सा ही नही होता।

दूध की कुल्लियाँ करना—अत्यधिक सुख-वैभव मे रहना।

दूध की बू मुंह से आना—लडकपन की बू होना, भोलाभाला होना, अनुभवहीन होना। उ० दूध की बू जिसके मुंह से आती है, वह इतना बडा काम कैसे करेगा ?

दूध की मक्खी—फेंकने लायक, बेकार चीज़। उ० वह तो आजकल दूध की मक्खी हो गया है।

दूध देने वाली गाय की लात खाना—जिससे लाभ हो, उसकी झिडकियाँ सहना।

दूध नहाना पूतो फलना—धन और परिवार से पूर्ण रहना। उ० दूधो नहाओ पूतो फलो। [एक यह आशीर्वाद है]।

दूर की सूझना—बहुत बारीक़ बात सोचना। बहुत गहरी बात सोचना। उ० उसे बहुत दूर की सूझती है।

दूध के जले का मट्ठा फूंक-फूंक कर पीना—बडे नुकसान के बाद मामूली काम मे भी सावधानी बरतना।

दूध के दांत—बचपन के दांत। उ० अभी उसके दूध के दाँत नही टूटे हैं।

दूध के दांत न टूटना—लडका ही होना। अनुभवहीन होना। उ० अभी तो उसके दूध के दाँत भी न टूटे, वह क्या व्यापार करेगा।

दूध चुराना—गाय-भैंस का कम दूध देना। उ० तनिक भी देर हो जाती है, तो उसकी भैंस दूध चुरा लेती है।

दूध छुडाना—बच्चे को माँ का दूध न पीने देना। उ० जब माँ का स्वास्थ्य ठीक नही है तो दूध छुडा दो, नही तो बच्चे का भी स्वास्थ्य चौपट हो जायगा।

दूध डालना—दूध पीकर कै करना। उ० यह बच्चा बहुत दूध डालता है।

दूध तोड़ना—गाय-भैंस का दूध देना बन्द करना। उ० अब वह गाय दूध तोड़ देगी, क्योकि उसे बच्चा दिये बहुत दिन हो गये।

दूध पड़ना—अनाज मे रस पडना । जौ-गेहूँ आदि की बालियो का कुछ मोटा होना । उ० दूध पड गया है, अब अन्न तैयार होते देर नही लगेगी ।

दूध पिलाना—१ माता का बच्चो को स्तन से दूध पिलाना । उ० बहुत-सी औरतें बच्चो को हर समय दूध पिलाया करती हैं, यह आदत ठीक नही । २ पालन-पोषण करना, रक्षा करना । उ० सांप के बच्चे को दूध पिलाने की बेवकूफी कौन कर सकता है ?

दूध-पीता बच्चा—गोद का बच्चा, छोटा बच्चा । बहुत नादान । उ० आप दूध-पीते बच्चे तो हैं नही, जो आपके साथ-साथ हर जगह चलूं ।

दूध-मूत करना—बच्चो का पालन-पोषण करना । उ० कितने ही बच्चो का दूध-मूत किया, पर इस लडके जैसा किसी ने परीशान नही किया ।

दूध-सा—बहुत सफेद । उ० यह दूध-सा कपडा भी आपको पसन्द नही आया ।

दून की लेना—दे० 'दून की हाँकना' ।

दून की सूझना—सामर्थ्य से बाहर की सोचना । उ० आपको तो हर समय दून की सूझती है, इससे क्या लाभ ?

दून की हाँकना—बढ-बढ कर बातें करना । उ० मेरे सामने दून की न हाँको, तुम्हारी औकात मैं खूब समझता हूँ ।

दू-बदू कहना—किसी के सामने कहना । उ० अगर वह सचमुच बुरा काम करता हैं तो उससे दू-बदू कहने मे मुझे कोई हिचक नही ।

दू बदू होना—सामने होना । उ० जो कुछ बात करना हो दू-बदू होकर कहिये । छिपे-छिपे कहना मर्दों का काम नही है ।

दूर करना—पृथक् करना । उ० ऐसे नीच आदमी को जल्द से जल्द अपने घर से दूर करो ।

दूर की कहना—१ आगे की बात बताना । उ० वह पडित दूर की कहता है और सभी बातें सही होती हैं । २ दे० 'दूर की हाँकना' ।

दूर की कौड़ी लाना—बहुत दूर की सोचना ।

दूर की बात—१ बहुत कठिन । उ० आप ऐसे आदमी के लिए यह दूर की बात है । २ भविष्य की बात । उ० यह तो दूर की बात है, आज ही से कौन चिंतित हो ?

दूर की सुनाना—१ बडो को अपशब्द कहना । उ० मोहन ने तुम्हें गाली दी है, अत जो चाहो करो । दूर की क्यो सुना रहे हो ? २ बहुत दूर की बात करना । उ० इस दूर की सुनाने से क्या फ़ायदा, कुछ ऐसी बात करो जिससे इस समस्या का हल हो ।

दूर की हाँकना—बडी ऊँची-ऊँची बातें करना । उ० वह तो बस दूर की हाँकना जानता है और करने की कहो तो चुप्पी साध लेता है ।

दूर के ढोल सुहावने होना—दूर की वस्तु निर्दोष या बहुत अच्छी लगना ।

दूर तक पहुँचना—किसी बात में दूर तक सोचना । उ० भाई, उस आदमी की मैं तारीफ करूँगा, चाहे जैसी भी समस्या हो, वह बहुत दूर तक पहुँचता है ।

दूर ही से सलाम करना—घृणा करना । पास न आने देना । उ० तुम्हारे जैसे लपटो को तो मैं दूर ही से सलाम करता हूँ ।

दूसरा द्वार देखना—दूसरे का सहारा खोजना ।

दूसरे की जान को जान न समझना—निर्दयता का व्यवहार करना । उ० तुममे तो मानवता छू कर भी नही है । दूसरे की जान को जान ही नही समझते ।

दूसरे की पत्तल से कौर छीनना—दूसरे का हिस्सा हडप जाना ।

दूसरो के घर में आग लगा कर हाथ सेंकना—दूसरो का नुकसान कर अपना लाभ करना ।

दूसरो के सिर ठीकरा फोड़ना—दूसरो को दोषी ठहराना ।

दूह लेना—दे० 'दुह लेना' ।

दृष्टि का उडकर खाना—नज़र लगना । उ० सुन्दर बच्चो को अक्सर लोगो की दृष्टि उडकर खाती है ।

दृष्टिकोण—विचार, विचार-सरणि, मत । [यह अंग्रेज़ी मुहावरे Angle of Vision का अनुवाद है] । उ० इस विषय मे आपका दृष्टिकोण क्या है ?

दृष्टिबिंदु—विचार । [यह अंग्रेज़ी के Point of view का अनुवाद है] । उ० इस विषय मे आपका दृष्टिबिंदु मुझे पसंद नही ।

देख कर मक्खी निगलना—जानकारी मे या जान-बूझ कर बुरा काम करना ।

देखते रह जाना—आश्चर्यान्वित हो जाना, देख कर हैरान हो जाना । उ० उसकी तसवीर देखकर हम लोग तो देखते रह गए ।

देखते ही देखते—तुरन्त, उसी वक्त। उ० जादूगर देखते ही देखते आँखो से ओझल हो गया।

देखते हुए—जानते मे, आँखो के सामने। उ० तुम्हारे देखते हुए ऐसा अत्याचार हो! तुम्हें शर्म आनी चाहिए।

देखना-सुनना—अच्छी तरह जाँच-पडताल करना। उ० किसी भी मामले मे पुलिस विना देखे-सुने कुछ नही कर सकती।

देखने मे—साधारणत, वाहरी रूप या ढग मे, ऊपर से। उ० देखने मे तो वह सन्यासी है, पर भीतर से कुछ और है।

देख लेना—१ वाद मे अवलोकन कर लेना या विचार लेना। उ० फाइल यही छोड दो, वे रात मे देख लेंगे। इसको देखा जायगा, पहले यह काम खतम करो। २ वदला लेना। उ० आज तो आप वच निकले, पर वाद मे मैं देख लूंगा।

देखा जाना—वाद मे सोच-विचार किया जाना। उ० वहाँ जाने के लिए देखा जाएगा, पहले यह काम तो करो।

देगची का एक चावल टटोल कर सव जान लेना—एक नमूने से पूरे का अन्दाज़ लगा लेना।

दे मारना—पछाड देना। उ० हिकमत ऐसी चीज है कि उतने वडे पट्ठे को उसने देखते ही देखते दे मारा।

देर पर देर होना—वहुत देर होना। उ० देर पर देर हुई जा रही है, और एक तुम हो कि हिलने का नाम ही नहीं लेती।

देर लगाना—देर करना। उ० कॉलिज का समय हो गया है, अव अधिक देर न लगाओ।

देवता कूंच कर जाना—वहुत डर जाना। उ० जगल मे मतवाले हाथी को देख कर उनके देवता कूंच कर गये।

देवलोक को सिधारना—गोलोक जाना, मर जाना। उ० एक दिन सभी को देवलोक को सिधारना है।

देश-निकाला देना—अपने राज्य से निर्वासित करना।

देशावर आना—विदेशी आयात का वढना। उ० रूई का देशावर नही आया है, इसी से कपड़ा महँगा है।

देह की खवर न होना—वेसुध होना।

देह चुराना—सिमटी-सी रहना।

देह छूट जाना—मर जाना। उ० भूमि-शय्या देने के वाद ही उसका देह छूट गया।

देह छूटना—दे० 'देह छूट जाना'।

देह धरना—जन्म ग्रहण करना, पैदा होना। उ० कौन ध्यान देता है कि कितने रोज़ देह धरते है और कितने मरते हैं।

दैयन कै—किसी तरह, वडी कठिनाई से। उ० दैयन कै यह काम हो गया, मैं तो निराश हो चुका था।

दैव लगना—दुर्दिन आना। दैवी प्रकोप होना। उ० हमारे तो वर्षों से दैव लगा है, कोई भी काम ठीक से होता ही नही।

दो अंगुल ऊँचा होना—कुछ वढ कर होना।

दो आँसू गिराना—दे० 'दो आँसू वहाना'।

दो आँसू डालना—दे० 'दो आँसू वहाना'।

दो आँसू वहाना—दु ख प्रकट करना। थोडा रो लेना। उ० अरे अपना पडोसी था, दो आँसू वहाना तो सभी का फर्ज़ है।

दो उँगली का धधा—जेव काटने का काम। उ० आजकल पढे-लिखे भी दो उँगली का धधा करने लगे हैं।

दो-एक—कुछ, थोडी-सी। उ० आप दो-एक पुस्तकें अवश्य भेज दीजिएगा।

दो कौड़ी का—१ तुच्छ, नीच। जिसकी कीमत नही के वरावर हो। २ वेकार, खराव। उ० अरे वह तो दो कौडी की मशीन है।

दो कौडी का आदमी—नालायक, नीच, बुरा, निर्धन। उ० उसका क्या विश्वास, वह तो दो कौडी का आदमी है।

दो कौडी का भी नहीं—दे० 'दो कौडी का'।

दो कौडी की इज्ज़त होना—कोई प्रतिष्ठा न होना, वेइज्ज़त होना। उ० यही तो ज़माना है। वात झूठी थी, पर वेचारे की इज्ज़त दो कौडी की हो गई।

दो कौड़ी की वात हो जाना—वात विगड जाना। उ० तुम्हारे न वोलने से वात दो कौडी की हो गई होती; पर तुमने अच्छा वचाया।

दो-चार—कुछ, थोडे से। उ० इस समय यदि मुझे दो-चार रुपये भी मिल जाते तो काम चल जाता।

दो-चार होना–भेंट होना, मिलना ।

दो-टप्पी बात–दो-तरफी बात ।

दोटूक–स्पष्ट, साफ। उ० भाई दोटूक बात कहो। इस बुझौवल से काम न चलेगा।

दोटूक कहना–निष्कपट कहना, सच कहना, स्पष्ट कहना। उ० चाहे जिसके भी खिलाफ कहना हो, वह दोटूक कहता है।

दोटूक जवाब देना–बुरा-भला का ध्यान न देकर स्पष्ट उत्तर देना। उ० उसका दोटूक जवाब सुनकर मैं तो दग रह गया।

दोटूक बात–साफ-साफ और सक्षेप मे कही हुई बात। उ० मुझे इधर-उधर की कहना नही आता, मैं तो दोटूक बात कहता हूँ।

दो दाँत वाला–भोला, बहुत नादान।

दो दिन का–१ थोडे समय का। उ० दुनिया का आनन्द दो दिन का है। २ बच्चा, अनुभव-हीन। उ० अभी तो वह दो दिन का है, उसका विवाह कौन करेगा ?

दो दिन का मेहमान–१ जल्दी मर जाने वाला। २ जल्दी ही कही जाने वाला। उ० उसे आराम से रखना, बेचारी दो दिन की मेहमान है।

दो दिन का सपना–थोडे दिनो का वैभव या सुख।

दो-दो चोचें होना–आपस मे कहा-सुनी होना। उ० उससे तो रोज ही दो-दो चोचे होती है।

दो-दो दाने को फिरना–भीख माँगता फिरना। उ० घर रहता तो आराम से रहता, यहाँ दो-दो दाने को फिर रहा है।

दो-दो हाथ करना–लडना। उ० लगता है इससे किसी दिन दो-दो हाथ करने ही पडेंगे।

दोना चढाना–प्रसाद चढाना। उ० दोना चढा कर लाओ तो खाया जाय। पास हो गया तो दोना चढाऊँगा।

दोना चाटना–दे० 'पत्ता चाटना'।

दो नावो पर चढना–१ दो विरोधी काम एक साथ करना। २ दोनो ओर होना। ३ बुरी तरह फँसना। उ० मैं तो आजकल ऐसी दो नावो पर चढा हूँ कि कुछ कहते नही बनता।

दो नावो पर पैर रखना–दे० 'दो नावो पर चढ़ना'।

दोनो प्राणी–दम्पति, स्त्री और पुरुष। उ० हम दोनो प्राणी काफी सुखी हैं।

दो-धारी तलवार–हर स्थिति मे बुरा करने वाली।

दोमुँहा साँप–दोनो ओर से अहित करने वाला।

दोनो हाथ लड्डू–हर तरफ से लाभ होना।

दो सिर होना–१ दो तरह के दिमाग से बाते करना। उ० तुम्हारे तो दो सिर है। तुमसे कौन बात करे ? २ मरने-कटने या कटाने के लिए फालतू सिर होना। उ० तुम्हारे दो सिर हो तो तुम भी जाओ।

दौड़-धूप करना–दे० 'दौड-धूप मचाना'।

दौड-धूप मचाना–बहुत उद्योग या परिश्रम करना। किसी काम के लिए बहुत दौड-धूप करना। उ० दौड-धूप मचाने से काम हो सकता है।

दौड-धूप लगाना–दे० 'दौड-धूप मचाना'।

दौड़ मारना–दे० 'दौड लगाना'।

दौड लगाना–१ बहुत दौड-धूप या कोशिश करना। उ० दौड लगाओ, शायद काम बन जाय। २. बहुत दूर तक जाना।

दौड़ा करना–दे० 'दौरा करना'।

दौड़ा मारना–चलाकर बहुत परीशान करना। उ० यहाँ काम करना बेकार है, यह साहब तो दिन भर दौडा मारता है।

दौर चलना–शराब का खूब पिया जाना। उ० वहाँ दौर चलता है, तुम भी जाया करो।

दौरा आना–किसी बीमारी का फिर आना। उ० उसे मिरगी का दौरा आता है।

दौरा करना–निरीक्षण के लिए घूमना। उ० मिनिस्टर साहब दौरा कर रहे है।

दौरा लगाना–दे० 'दौरा करना'।

दौरी मे पैर डालना–धीरे-धीरे चलना। उ० क्या दौरी मे पैर डाल रहे हो, जरा तेज चलो।

द्राविड-प्राणायाम करना–१ सीधी बात को घुमा-फिरा कर कहना। २. व्यर्थ मे बहुत परिश्रम करना।

द्राविड़-प्राणायाम खीचना–दे० 'द्राविड-प्राणायाम करना'।

द्रौपदी का चीर–कभी न समाप्त होने वाली वस्तु।

द्वार खुलना–उपाय निकालना । उ० कोई द्वार खुले तो तुम्हारा ठिकाना लगा दूँ ।

द्वारचार होना–बरात का बेटी वाले के दरवाज़े पर विवाह के पहले जाना । द्वारपूजा होना ।

द्वार लगना–१. दरवाज़ा वद होना । २. दरवाजे के पीछे छिप कर सुनना या देखना । उ० कोई द्वार लगा है, ज़रा धीरे वोलो । ३ रास्ता वद होना ।

द्वार लगाना–दरवाज़ा वद करना ।

द्विशिर होना–दे० 'दो सिर होना' ।

ध

धँधले आना–छल-छद का अभ्यास होना । उ० आपको धँधले खूव आते हैं ।

धँधले मे आना–किसी की धोखाधडी मे आना या फँसना । उ० मैं आपके धँधले मे नही आ सकता ।

धक-धक करना–१. दिल का धडकना । २ वेचैन होना । ३. डरना ।

धक-धक जी करना–डर से हृदय की गति वढ जाना, डर के मारे वेचैन होना । उ० मेरा जी धक-धक कर रहा है, पता नही मास्टर साहव परीक्षा मे क्या पूछेगे ?

धक-से हो जाना–आश्चर्यचकित और सन्न हो जाना । उ० यह वात सुन कर मैं धक-से रह गया ।

धकापेल करना–१ वहुत तेज़ी से करना । उ० जो भी काम दे दो, वह धकापेल करता है । २ विना सोचे-समझे करना ।

धकेल देना–१ धक्का देना, गिरा देना । २ ढकेलना ।

धक्कम-धक्का करना–१ भीड मे वहुत धक्का देना । २ वहुत भीड का इकट्ठा करना या होना । ३ मार-पीट करना । उ० यहाँ धक्कम-धक्का न करो ।

धक्का खाते फिरना–इधर-उधर मारा-मारा घूमना । उ० तुम्हारे घर दूसरे मौज उडाते है और तुम धक्का खाते फिर रहे हो ।

धक्का खाना–१ हानि उठाना । उ० इस व्यापार मे जितना धक्का खाना होगा, वह तो अव खाना ही पडेगा, उससे जान नही वच सकती । २ ठोकर खाना । उ० मेरी जिन्दगी धक्के खाते वीती ।

धक्का देकर निकालना–वेइज्ज़ती से वाहर करना । उ० अगर सभा मे अधिक अड-वड वकोगे तो धक्के देकर निकाले जाओगे ।

धक्का देना–दे० 'धकेल देना' ।

धक्का पहुँचना–१ नुकसान पहुँचना । उ० इससे तुम्हारे रोज़गार को धक्का पहुँचेगा । २ सदमा पहुँचना । उ० इस समाचार से दिल को धक्का पहुँचेगा ।

धक्का पहुँचाना–१ हानि पहुँचाना । २ सदमा पहुँचाना ।

धक्का लगना–१ नुकसान होना । उ० इस वार उसे सोने मे ऐसा धक्का लगा कि सारी कमायी खतम हो गयी । २ आघात, चोट या ठेस लगना । उ० गाडी का इतने ज़ोर से धक्का लगा कि मैं गिर गया ।

धज्जा उड़ जाना–दे० 'धज्जा हो जाना' ।

धज्जा हो जाना–१ दुवला-पतला हो जाना । उ० आपको कौन-सी वीमारी है कि आप धज्जे हो गये । २ टुकडे-टुकडे हो जाना । उ० वह कपडा तो धज्जा हो गया । ३ वर्वाद या नष्ट-भ्रष्ट हो जाना ।

धज्जियाँ उड़ना–१ दुर्दशा होना । उ० वह वेचारा जव से यहाँ आया, उसकी धज्जियाँ उड रही है । २ वेइज्ज़ती होना ।

धज्जियाँ उडाना–१ निंदा करना । वेइज्ज़त करना । उ० सवके सामने किसी की धज्जियाँ उडाना ठीक नही । २ टुकडे करना । उ० इस कोट की तो तुमने धज्जियाँ उडा दी । उ० नष्ट-भ्रष्ट करना, वर्वाद करना । उ० धज्जियाँ न उडा तो कहना ।

धज्जियाँ लगना या लग जाना–फटे-पुराने कपडे पहनने की नौवत आना । उ० इस ज़माने मे वडो की धज्जियाँ लग गईं ।

धज्जियाँ लेना–१ दुर्दशा करना । उ० उसकी धज्जियाँ मत लो । २ ऐव निकालना ।

धज्जी हो जाना–१ टुकडे-टुकडे हो जाना । २ कमज़ोर हो जाना ।

धड़क खुलना–हिचक दूर होना ।

धन्नासेठी बघारना—अपने आप को बहुत बड़ा समझना।

धप्पा मारना—धोखे से धन उड़ाना। उ० धप्पा मार कर लाया हुआ धन इसी तरह बरबाद हो जाता है।

धप्पा लगना—१. हानि होना। उ० इस काम मे तुम्हें काफी धप्पा लगा है। २ बेइज्जत होना। बदनामी होना। उ० इस काम से तुम्हारे ऊपर भी धप्पा लगेगा।

धब्बा लगना—बेइज्जती होना, बदनामी आना। उ० इतनी सफाई पर भी धब्बा लग ही गया।

धमकी देना—डर दिखाना। यो ही डराना। उ० पुलिस और बदरो का धमकी देना प्रसिद्ध है।

धमकी मे आना—किसी की धमकियो से डर जाना। उ० अगर तुम उसकी धमकी मे आए तो बहुत परीशान करेगा।

धमा-चौकड़ी मचाना—शोर-गुल मचाना, ऊधम मचाना। उ० क्या धमा-चौकड़ी मचाए हो, चुप रहो, नही तो मार खा जाओगे।

धमार गा ऊधम मचाना—गा, खेल या हँस-बोल कर बहुत ऊधम मचाना। उ० कर धमा चौकड़ी भली रुचि से, क्यो मचा दें धमार गा ऊधम।

धरती आकाश एक करना—अत्यधिक मेहनत करना।

धरती का फूल—१ ससार का रत्न, अवतारी या बहुत योग्य पुरुष। उ० गाधी जी धरती के फूल थे। २. नया अमीर। उ० धरती के फूल हैं, नही तो इतना नही इतराते। ३ कुकुरमुत्ता। ४. मेढक।

धरती छोड़ना—मर जाना।

धरती पर पाँव न पड़ना—१ खुशी से फूला न समाना। उ० अब तो उसके पिता के धरती पर पाँव ही नही पड़ेंगे। २ गर्व से भर जाना।

धरती पर पाँव न रखना—१ अभिमान से भरा रहना। गर्व से चूर रहना। उ० वह तो जब से एम० ए० हो गया, धरती पर पाँव ही नही रखता। २ बहुत प्रसन्न होना।

धरती पर रहने वाले का आकाश चाटने का प्रयत्न करना—असभव काम की चेष्टा करना।

धरती बाहना—बहुत मेहनत करना। उ० जब कुछ मिलेगा ही नही, तो क्या धरती बाह रहे हो ?

धरती मे पाँव न रखना—दे० 'धरती पर न रखना'।

धरती हिला देना—कठिन कार्य कर दिखाना। उ० अतरिक्ष मे मानव भेज कर रूस ने धरती को हिला दिया।

धर दबाना—जबरन चढ बैठना, पकड लेना या चगुल मे कर लेना। उ० उस शेर ने गाय को धर दबाया।

धर दबोचना—दे० 'धर दबाना'।

धर धमकना—जल्द आ जाना, खट से आ जाना। उ० वह भी धर धमका।

धरन खिसकना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन टलना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन डिगना—दे० 'धरन सरकना'।

धरन सरकना—गर्भाशय की नस को हट जाना। उ० धरन सरकी कि गडबड हुआ, जरा होशियार रहना। उसकी धरन सरक गई है अब बच्चा होने की आशा नही।

धरना देना—जम कर बैठना। कुछ माँगने के लिए जमना। उ० क्या धरना दिये हो, यहाँ कुछ न मिलेगा, दूसरा दरवाजा देखो।

धर-पकड़ कर—जैसे-तैसे। उ० धर-पकड कर वह स्कूल जाता तो है, पर उसका पढना न पढना बराबर है।

धरहरिया करना—बीच-बचाव करना। मनाना। उ० धरहरिया करने मे ही मुझे चोट लग गई।

धरा-ढका—समय पर काम आने के लिए बचा कर रखी हुई वस्तु।

धरा रह जाना—बेकार रह जाना। समय पर काम न आना। उ० चलते वक्त सारी चीजें धरीं रह जायेंगी।

धर्म उठाना—धर्म से कहना। उ० अगर तुम धर्म उठा लो कि यह कलम तुम्हारा है तो मैं दे दूंगा।

धर्म कमाना—धर्म का काम करना। उ० तुम्हारे पिताजी आजकल खूब धर्म कमा रहे हैं।

धर्म करना—१ दे० 'धर्म कमाना'। २ धर्म के काम करना।

धर्म का टीका होना—सब धर्मों मे श्रेष्ठ होना।

धर्म खाना–धर्म की कसम खाना। उ० धर्म खाकर कहता हूँ, मैं इस विषय मे कुछ भी नही जानता।

धर्म बिगड़ना या बिगड जाना-धर्म के खिलाफ काम होना। उ० वेचारे का धन भी गया और धर्म भी विगड गया।

धर्म मे आना–आत्मा को जँचना। उ० जो धर्म मे आये, उसी को करना चाहिये।

धर्म रखना-धर्म निभाना। उ० अभी तक तो धर्म रख रहा हूँ, आगे भगवान जाने।

धर्मराज करना–न्याय से राज्य करना। उ० वही राजा अधिक दिन तक राज्य कर सकता है जो धर्मराज करता हो।

धर्म-लगती कहना–धर्म का ख्याल करके सत्य कहना। उ० हम तो धर्म-लगती वात कहेगे, चाहे कोई खुश हो या नाराज़।

धर्म से कहना–धर्म की कसम खाकर कहना। उ० धर्म से कहो, तुमने चोरी की थी या नही ?

धाक जमना–असर होना। उ० पिताजी की आजकल गाँव मे खू़ब धाक जमी हुई है।

धाक जमाना–दे० 'धाक बाँधना'।

धाक बँधना या बँध जाना–रोब जमना। उ० आजकल उसकी वहाँ खू़ब धाक बँधी है।

धाक बाँधना–दवदवा जमाना। उ० वह जहाँ जाता है, तुरन्त अपनी धाक बाँध लेता है।

धाका-बैठना–सदमा गुज़रना।

धागा देना–धोखा देना, फरेब देना।

धागा भरना–कपडे को ता॰ ा से रफू करना। उ० मेरी धोती फट गई ? ल्लेद मे धागा भर दो।

धागे-धागे करना–१ चिथडे-चिथडे करना। उ० बन्दर ने मेरी धोती धागे-धागे कर दी। २ बर्बाद कर देना। उ० मैं आपकी इज्ज़त धागे-धागे कर दूंगा।

धाड पडना–१ शीघ्रता होना। उ० क्या धाड पडी है, जो खाना पानी से घोट रहे हो ? २ डाका पडना।

धाड मार कर रोना–वहुत ज़ोर से चिल्ला कर रोना।

धानपान होना–बहुत कोमल होना। उ० वह ऐसा धानपान है कि धूप मे एक कदम भी नही चल सकता।

धाय पूजना–दूर रहने का इरादा करना, सर्वदा के लिए प्रणाम करना। उ० धाय पूजता हूँ ऐसे खेल से। बाप रे बाप ! बच गया, नही तो आँख ही चली गई होती।

धार गिरना–किसी हथियार की धार तेज़ न रहना। उ० मेरी तलवार की धार गिर गई है।

धार चढाना– १ शान धराना। उ० चाकू पर धार चढा दो। २. उकसाना, किसी काम करने को वढावा देना। उ० धार न चढाइए, मैं मूर्ख नही जो आग मे कूद पडूं।

धार टूटना–किसी द्रव का धारा-प्रवाह गिरना वद होना। उ० धार टूट गई, वचा कर गिराना, नही तो घी फैल जायगा।

धार देना–१ लाभ पहुँचाना। उ० आप क्या धार देते है, जो मैं आपको अपना समझूँ। २. देवी की पूजा के समय या किसी स्त्री के कही से आने पर लौग, कपूर आदि पानी मे पीस कर ज़मीन पर गिराना। उ० दुलहन की डोली आ गई, धार दे दो।

धार पर मारना–तुच्छ समझना। उ० पाप के धन को मैं धार पर मारता हूँ।

धार बाँधना–किसी द्रव पदार्थ को धार बना कर गिराना। उ० धार बाँध लो, नही तो सारा घी फैल जायगा।

धार मारना–पेशाब करना, ज़ोर से पेशाब करना।

धार रखना–छुरी को पत्थर चटाना, तेज करना। उ० धार रखे बिना यह छुरी क्या काम करेगी ?

धावा बोलना–१. आक्रमण की आज्ञा देना। २ आक्रमण कर देना। उ० डाकुओ ने कल रात मेरे मकान पर धावा बोल दिया।

धावा मारना–जल्दी-जल्दी दूरी तय करना। उ० वडी दूर का धावा मार कर आ रहा हूँ, मुझे आराम करने दो।

धाह मारना–चिल्लाना। उ० पति के मरने पर वह धाह मार कर रो रही थी।

धींगा-धींगी करना–१ जबर्दस्ती करना। उ० क्यो धींगा-धींगी कर रहे हो ? वह नही देना चाहता/तो जाने दो। २. उपद्रव करना।

धींगा-मुश्ती करना—झगडा करना। उ० छोटी-सी चीज के लिए धीगा-मुश्ती करना ठीक नही है।

धीमा पडना—१. सुस्त होना। २ मद होना, बढती पर न होना। उ० उसका भी रोजगार धीमा पड गया है।

धीरज बँधाना—धैर्य देना। उ० इस दुख के समय उस वेचारे को कोई धीरज बंधाने वाला भी नही है।

धीरज बाँधना—सब्र करना। उ० अव दिन-रात रोने से क्या लाभ होगा, हृदय मे धीरज बाँधो।

धुधकारी होना—वहुत अत्याचारी और दुष्ट होना। उ० कस वडा धुधकारी था।

धुंधले का वक्त—शाम के समय। उ० धुंधले का वक्त है ज़रा जगल मे वच कर जाना।

धुआँ काढना—दे० 'धुआँ निकालना'।

धुआँ देना—धुआँ निकालना। उ० मिट्टी का तेल खूव धुआँ देता है।

धुआँ-धक्कड करना—धूम्रपान करना। उ० धुआँ-धक्कड करके चलूंगा।

धुआँ निकालना—वढ-वढ कर वाते करना। उ० क्या मेरे सामने धुआँ निकाल रहे हो, मैं तुम्हे खूब जानता हूँ।

धुआँ होना—काला पडना। गमगीन होना। उ० मुकदमे के फैसले के डर से उसका मुँह धुआँ हो गया है।

धुएँ उडाना—१ शिकायत करना। २ व्यर्थ की वदनामी या अफवाह फैलाना। उ० धुएं उडाकर तुम क्या करोगे? चद्रमा को ढक नही सकते।

धुआँ का धौरहर—शीघ्र नष्ट होने वाली चीज़, क्षणभगुर। उ० ससार धुएँ का धौरहर है, इसका क्या विश्वास?

धुएँ का धरोहर—जल्द नाश होने वाला। उ० ससार की सभी चीज़े धुएँ की धरोहर है।

धुएँ का हाथी होना—दिखावटी होना।

धुएँ के बादल उडाना—१. गप्प हाँकना। उ० यार, धुएँ के इतने बादल न उडाया करो, नही तो आसमान गिर जायगा। २. धूम्रपान करना। उ० ज़रा धुएँ के वादल कम उडाया करो, नही तो स्वास्थ्य बिगड जायगा।

धुएँ वखेरना—दे० 'धुएँ उडाना'।

धुएँ-सा मुंह होना—मुँह की रगत बिगडना। उ० आज क्या वात है कि आपका मुँह धुएँ-सा हो गया है?

धुकधुकी धडकना या धरकना—दिल धकधक करना। उ० मरे शेर को देख कर आपकी धुकधुकी धडक रही है।

धुन का पक्का—जिस काम मे लग जाय, उसे पूरा करने वाला। उ० धुन का पक्का आदमी कठिन काम भी कर सकता है।

धुन बाँधना—मन मे बैठाना। उ० वह जिस काम की धुन बाँध लेता है, उसे पूरा ही कर डालता है।

धुन सवार होना—करने की लगन होना। उ० उसे जिस काम की धुन सवार होती है, उसे कर ही डालता है।

धुमगज्जर मचाना—शोरगुल मचाना। उ० यहाँ धुमगज्जर न मचाओ।

धुरकी टूटना—१ मर जाना। २ भाग्य का वुरा हो जाना।

धुर बनाना—मूर्ख वनाना। उ० मान गये उस्ताद आज, हमी को धुर वना दिया।

धुर सिर से—एकदम शुरू से। उ० मैं इस काम को धुर सिर से करना चाहता हूँ, आप लोगो ने जो कुछ किया है, मुझे विल्कुल पसन्द नही है।

धुर्रे उडा देना—दे० 'धुर्रे वखेरना'।

धुर्रे उड़ाना—दे० 'धुर्रे बखेरना'।

धुर्रे वखेरना—छिन्न-भिन्न करना। टुकडे-टुकड़े करना, नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० एक दिन मे तो उसके धुर्रे वखेर दूंगा, वह है किस फेर मे?

धुलिया-मिटिया करना—१ किसी झगडे को ऊपर से दवा देना। २ बात दबाना।

धूनी जगना—साधुओ का आग जलाना। उ० जब धनी जगे तो वहाँ चलकर बैठा जाय।

धूनी जगाना—१. साधु होना। उ० जव धूनी जगा ली तो कौन अपना और कौन पराया? २ पचाग्नि लेना। आग के पास बैठ कर शरीर को कष्ट देना। उ० वह साधू तो घटो धूनी जगाता है। ३ साधु-सन्यासियो के पास आग प्रज्वलित करना। साधुओ की धूनी या अग्निकुड की आग जलाना।

धूनी देना–धुआँ देना । उ० खूब धूनी दो, खुद ही मच्छड चले जायेंगे ।

धूनी रमाना–दे० 'धूनी जगाना' ।

धूनी लगाना–दे० 'धूनी जगाना' ।

धूप खाना–धूप मे बैठना । उ० थोडा धप खा लो तो सर्दी ठीक हो जाय ।

धूप खिलाना–धूप मे रखना । उ० इसे जरा खूब धूप खिलाओ, नही तो खराब हो जायगी ।

धूप चढ़ना–दिन चढना । उ० इतनी धूप चढ गयी और अभी तक आप सोये हैं !

धूप दिखाना–धूप मे रखना । उ० किताबो को धूप दिखा दो, नही तो कीड़े लग जायेंगे ।

धूप देना–१ दे० 'धूप दिखाना' । २ देवता आदि की पूजा मे धूप-दीप करना । उ० धूप देने के लिए सामग्री लेते आना ।

धूप निकलना–दिन निकलना । उ० धूप निकलने के बाद मैं यहाँ आऊँगा ।

धूप मे चंडा सफेद करना–दे० 'धूप मे बाल सफेद करना' ।

धूप मे बाल पकाना–दे० 'धूप मे बाल सफेद करना' ।

धूप मे बाल सफेद करना–वृद्ध होने पर भी कुछ अनुभव न होना । उ० मालूम होता है कि तुमने बाल धूप मे सफेद किए हैं, तुम्हें तो दुनिया का रत्ती भर भी ज्ञान नहीं है ।

धूप मे बाल सफेद न करना–अनुभवी होना । उ० बाल धूप मे सफेद नही किए हैं, दुनिया देखी है ।

धूमकेतु दिखाई देना–ससार के लिए अपशकुन होना । उ० इस वर्ष धूमकेतु दिखाई दिये हैं, ससार का कोई बहुत बडा अहित होगा ।

धूम डालना–शोरगुल करना, ऊधम करना । उ० धूम न डालो, उसकी हालत बड़ी खराब है ।

धूम-धड़क्का–खूब भीड-भाड, धूमधाम । उ० धूम-धडक्के की आवश्यकता नहीं, चुपचाप काम कर डालो ।

धूम-धडक्का मचाना–शोरगुल मचाना । उ० मैं पढ रहा हूँ, यहाँ धूम-धड़क्का न मचाओ ।

धूम मच जाना–बहुत ख्याति प्राप्त करना ।

धूर लगाना–डड-बैठक करना तथा कुश्ती लडना । उ० दो दिन से धूर लगाने लगा तो अपने को गामा ही समझता है ।

धूरा करना–हाथ-पैर ठडा हो जाने पर राख से मलना । उ० जल्दी धूरा करो, उसकी हालत चित्य है ।

धूरा देना–१. बहकाना । उ० ठग ने लडके को धूरा देकर सब धन ले लिया । २ दे० 'धूरा करना' ।

धूल उड़ना–बदनामी होना । उ० सारे गाँव मे उनकी खूब धूल उड़ रही है । २ उजाड होना । उ० अब उस गाँव मे धूल उड रही है ।

धूल उडाते फिरना–मारे-मारे फिरना । उ० भाग्य इसी को कहते हैं । उस बुड्ढे के चार बेटे हैं और वह धूल उडाता फिरता है ।

धूल करना–नष्ट कर देना ।

धूल की ढेरी–असुदर वस्तुएं । उ० धूल की ढेरी मे अनजान । छिपे हैं मेरे मधुमय गान ।

धूल की रस्सी बटना–१ असभव काम करने की कोशिश करना । उ० धूल की रस्सी बटना मूर्खता है । २ बिना बात की बात गढ लेना । उ० उसने कहा है तो धूल की रस्सी ही बटी होगी, उसकी बातों का क्या विश्वास ?

धूल चटाना–१ पटक देना । उ० इसको तो मैं एक मिनट मे धूल चटा दूंगा । २ मारना ।

धूल चाटना–बडी नम्रता दिखाना गिडगिडाना । उ० उसके यहाँ धूल चाट कर क्यो अपनी इज्जत खोते हो ? वह कुछ करने का नही ।

धूल छानना–मारा-मारा फिरना, खाक छानना । उ० क्यो इधर-उधर धूल छान रहे हो ?

धूल झड़ना–१ मार पड़ना । पिटना । साधारण पिटना । उ० आज तो तुम्हारी धूल झड गई ।

धूल झाड़ना–१. दे० 'पैर की धूल झाडना' । २. विनोद मे धूल झाडने के बहाने मारना । उ० यह आप धूल झाड रहे हैं, या उस दिन का बदला ले रहे हैं ?

धूल डालना–१. भूल जाना । उ० पहले की बातो पर धूल डाल कर अब मेल कर लो ।

धूल-धक्कड उडना—बहुत गर्द-गुबार उडना। उ० धूल-धक्कड उड रही है, मैं बाहर नही निकलूंगा।

धूल फांकना—१ खाने को न पाना। उ० आज चार दिन से मैं यहाँ धूल फाँक रहा हूँ। २ कष्ट भोगना। उ० मेरे भाग्य मे धूल फाँकना ही लिखा है। ३ मारा-मारा फिरना। ४. झूठ बोलना।

धूल बरसना—रौनक न रहना। उ० इसी का नाम ससार है। कल तक जिस जगह नूर टपकता था, आज धूल बरसती है।

धूल मे मिलना—बरबाद होना। उ० भरी सभा मे अपमानित होने से उसकी सारी इज्जत धूल मे मिल गई।

धूल मे मिलाना—नष्ट करना, बरबाद करना। उ० तुमने तो उसका सारा रोज़गार धूल मे मिला दिया।

धूल मे लट्ठ मारना—व्यर्थ का काम करना।

धूल मे सानना—बुरे काम मे (किसी को) घसीटना।

धूल ले डालना—कही पर बार-बार जाना, बराबर पहुँचा रहना। उ० तुमने वहाँ की धूल ले डाली, पर उसके दर्शन नही हुए।

धूल शान्त करना—बदनामी को दबाना। उ० अब किसी प्रकार धूल को शात करो।

धूल समझना—बहुत तुच्छ समझना। उ० दूसरो की सोने की चीज़ को भी मैं धूल समझता हूँ।

धूल सिर पर डालना—१ पछताना। उ० काम खराब हो जाने पर सिर पर धूल डालना बेकार है। २ सर पर बदनामी लेना या दूसरे को बदनाम करना। उ० व्यर्थ मे धूल उसके सिर पर न डालो। अपने ही सिर पर धूल डालते हो!

धोई कराना—छोटे बच्चो का दूसरो से पाखाने के बाद सौचाना! उ० ओ नन्हे! धोई करके चौके मे घुसना, नही तो मार पड़ेगी।

धोकर पी जाना—समाप्त कर देना।

धोखा उठाना—ठगा जाना, असावधानी से नुकसान होना। उ० जिसे कुछ रुपया-पैसा देना हो, उसे अच्छी तरह समझ लिया करो, नही तो धोखा उठाना पडेगा।

धोखा खडा करना—जाल फैलाना। उ० वह तो ऐसा धोखा खडा करना है कि बडे-बड़े फँस जाते हैं।

धोखा खाना—छला जाना। उ० यही स्वभाव रहा तो धोखा खाओगे।

धो डालना—समाप्त कर देना।

धोखा देना—१ छलना। उ० सज्जनो को धोखा देना ठीक नही। भ्रम मे डालना। २ एक-ब-एक कही चला जाना या मर जाना या नष्ट हो जाना। उ० इस बुढौती मे इकलौते बेटे ने भी धोखा दिया।

धोखा पड़ना—कुछ का कुछ होना, और का और होना। उ० पडितन कहा परा नहिं धोखा, कौन अगस्त समुद्रहिं सोखा।

धोखा रचना—दे० 'धोखा खडा करना'।

धोखा लगना—शुबहा होना। उ० मुझे इसकी पहचान मे कुछ धोखा लग रहा है।

धोखा लगाना—कसर करना, कमी करना। उ० उसने कोशिश करने मे कोई धोखा नही लगाया, फिर भी काम न हुआ।

धोखे का पुतला—बहुत बड़ा धोखेबाज़।

धोखे की टट्टी—१. देखने मे तो अच्छा, पर वास्तव मे बुरा। उ० उसकी बातें धोखे की टट्टी हैं, उनमे न आओ। २. बाहर से सुन्दर, पर भीतर से खराब हो जाने वाली चीज़। उ० उसने मकान क्या बनवाया है, सब धोखे की टट्टी है। ३ शिकारियों के शिकार खेलने की टट्टी। उ० हिरन बेचारे धोखे की टट्टी मे फँस ही जाते हैं। ४. बाहर से आकर्षक पर भीतर से खतरनाक।

धोती ढीली करना—१ भय दिखाना, डरा देना। उ० ऐसी धोती ढीली करूँगा कि कुछ दिन याद रखोगे। २ बुरी दशा करना। उ० मारते-मारते धोती ढीली कर दूँगा।

धोती ढीली होना—भय लगना। उ० उस पागल को देखते ही मेरी धोती ढीली हो गई।

धोती बांधना—तैयार होना। उ० धोती बाँध लो, अब लड़ाई पर चलना ही है।

धोब पड़ना—धोया जाना। उ० मेरे कोट पर कई धोब पडे, पर वह अच्छी तरह साफ़ न हुआ।

धो-बहा देना—सब खतम कर देना। उ० तीर्थों मे जाकर उसने सब पाप धो-बहा दिये।

धोबी का कुत्ता होना—कही का न होना, घुमक्कड होना। उ० तुम तो धोबी के कुत्ते

हो गए हो। यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ, बस यही तुम्हारा काम है।

धोबी का छैला होना या बनना—दूसरो की वस्तु पर घमड करने वाला या दूसरो से चीजें माँग कर अपना रूप सँवारने वाला बनना। उ० धोबी का छैला बनने की मेरी आदत नहीं, यह तो आपको ही शोभा देगा।

धोया-धाया—१. साफ़, पवित्र। उ० यह वर्तन धोया-धाया है, तुम पानी पी सकते हो। २. अच्छा भलेमानुस। उ० आदमी है तो वह धोया-धाया, पर ज़रा लालची है। ३ शुद्ध आचरण। ४ ईमानदारी से कमाया हुआ। उ० यह रुपया धोया-धाया है।

धौंकनी लगना—साँस फूलना। उ० सीढी पर चढ़ने से उसकी धौंकनी लग जाती है।

धौंक लगना—दे० 'धौंका लगना'।

धौंका लगना—लू लगना। उ० आजकल बहुत आदमियो को धौंका लग रहा है।

धौं-धौं करना—खाँसना। उ० आप रात भर यहाँ धौं-धौं किया करते हैं, मुझे सोने मे भी वाधा पड़ती है।

धौंस की चलना—रोब से काम निकालना। उ० धौंस की यहाँ नही चलेगी, हाँ कुछ पैसे निकालो तो काम कर दूँ।

धौंस ग़ालिब करना—रोब कायम करना। उ० पढे-लिखे लोगो पर धौंस गालिब करना ज़रा कठिन है।

धौंस जमाना—रोब जमाना। उ० मैं तुम्हारा नौकर नही हूँ, जो धौंस जमाते हो।

धौंस देना—१ चढाई का डका वजाना। उ० दुश्मन धौंस देकर किले पर चढ आये। २ रोव गालिब करना। उ० मुझे धौंस न दो।

धौंस-पट्टी मे आना—बहकावे मे आना। धोखे मे आना। उ० मैं आपकी धौंस-पट्टी मे नही आ सकता।

धौंस बजाना—दे० 'धौंस देना'।

धौंस बाँधना—१ रोब गालिब करना। उ० मुझ पर तुम्हारा धौंस बाँधना वेकार है, तुम अभी कल के बच्चे हो और मैंने पूरी ज़िंदगी देखी है। २ खर्च मढना। उ० फायदा तो तुम्हारा हुआ और धौंस मुझ पर बाँधते हो।

धौंसा वजना—१ चारो ओर चर्चा होना। २ ख्याति होना।

धौल कसना—दे० 'धौल जमाना'।

धौल खाना—१. थप्पड सहना। उ० मैं क्यो धौल खाऊँ, आपकी ग़लती है, आप जानें। २ हानि उठाना। उ० विना समझे-बूझे काम शुरू किया तो धौल खाने को तैयार रहना।

धौल जमाना—थप्पड मारना। उ० एक ही धौल जमाने मे वह ज़मीन पर गिर पडा।

धौल-धक्कड़ मचाना—मार-पीट होना। उ० वहाँ धौल-धक्कड मचा है, और यहाँ तुम बैठे हो।

धौल-धप्पा होना—हँसी-हँसी मे मारपीट होना।

धौल-धूर्त होना—पक्का चालबाज़ होना। उ० आप तो धौल-धूर्त हैं। आपसे कोई पार नही पा सकता।

धौला पडना—ज़र्द पड जाना। उ० चार ही दिन की वीमारी मे वह धौला पड गया है।

ध्यान आना—याद आना। उ० जब आपका ध्यान आता है तो वडा कष्ट होता है।

ध्यान छूटना—पूजा या ध्यान से अलग होना। उ० महात्मा का ध्यान छूटे तो उनसे कुछ वातें करूँ।

ध्यान जमना—चित्त एकाग्र होना। उ० बहुत दिनो से पूजा-पाठ कर रहा हूँ, पर मेरा अभी तक ध्यान नही जमता।

ध्यान जाना या ध्यान का चला जाना—१. नज़र पड़ना। उ० न चाहने पर भी मेरा ध्यान उधर चला ही गया। २. ख्याल जाना। उ० मेरा भी ध्यान गया तो था, पर फिर भूल गया।

ध्यान दिलाना—याद दिलाना। उ० मुझे कल सुवह ध्यान दिलाना तो मैं वहाँ चला जाऊँगा।

ध्यान देना—मन लगाना। उ० ध्यान देने से कठिन से कठिन काम भी हो सकता है।

ध्यान धरना—१ ईश्वर की ओर मन लगाना। ईश्वर का ध्यान धरना। २ विचार करना, सोचना। ३. ज़रा इस बात का ध्यान धरना।

ध्यान पर चढना—याद आना। उ० आप जब से गये, कभी ध्यान पर भी न चढे।

ध्यान वँटना—चित्त इधर-उधर हो जाना। उ० पूजा करते समय मेरे पास बैठ कर वात न किया करो, नही तो मेरा ध्यान वँट जाता है।

ध्यान वँधना या वँध जाना—१ हर समय याद रहना। उ० तुम्हारा ध्यान हमेशा बँधा रहता

धूल-धक्कड उडना—बहुत गर्द-गुबार उड़ना। उ० धूल-धक्कड उड रही है, मैं बाहर नही निकलूंगा।

धूल फांकना—१ खाने को न पाना। उ० आज चार दिन से मैं यहाँ धूल फांक रहा हूँ। २ कष्ट भोगना। उ० मेरे भाग्य मे धूल फांकना ही लिखा है। ३ मारा-मारा फिरना। ४. झूठ बोलना।

धूल बरसना—रौनक न रहना। उ० इसी का नाम ससार है। कल तक जिस जगह नूर टपकता था, आज धूल बरसती है।

धूल मे मिलना—बरबाद होना। उ० भरी सभा मे अपमानित होने से उसकी सारी इज्जत धूल मे मिल गई।

धूल मे मिलाना—नष्ट करना, बरबाद करना। उ० तुमने तो उसका सारा रोजगार धूल मे मिला दिया।

धूल मे लट्ठ मारना—व्यर्थ का काम करना।

धूल मे सानना—बुरे काम मे (किसी को) घसीटना।

धूल ले डालना—कही पर बार-बार जाना, बराबर पहुँचा रहना। उ० तुमने वहाँ की धूल ले डाली, पर उसके दर्शन नही हुए।

धूल शान्त करना—बदनामी को दबाना। उ० अब किसी प्रकार धूल को शांत करो।

धूल समझना—बहुत तुच्छ समझना। उ० दूसरो की सोने की चीज़ को भी मैं धूल समझता हूँ।

धूल सिर पर डालना—१ पछताना। उ० काम खराब हो जाने पर सिर पर धूल डालना बेकार है। २ सर पर बदनामी लेना या दूसरे को बदनाम करना। उ० व्यर्थ मे धूल उसके सिर पर न डालो। अपने ही सिर पर धूल डालते हो।

धोई कराना—छोटे बच्चो का दूसरो से पाखाने के बाद सोचाना। उ० ओ नन्हे! धोई करके चौके मे घुसना, नही तो मार पड़ेगी।

धोकर पी जाना—समाप्त कर देना।

धोखा उठाना—ठगा जाना, असावधानी से नुकसान होना। उ० जिसे कुछ रुपया-पैसा देना हो, उसे अच्छी तरह समझ लिया करो, नही तो धोखा उठाना पडेगा।

धोखा खड़ा करना—जाल फैलाना। उ० वह तो ऐसा धोखा खडा करना है कि बडे-बडे फँस जाते हैं।

धोखा खाना—छला जाना। उ० यही स्वभाव रहा तो धोखा खाओगे।

धो डालना—समाप्त कर देना।

धोखा देना—१ छलना। उ० सज्जनो को धोखा देना ठीक नही। भ्रम मे डालना। २ एक-ब-एक कही चला जाना या मर जाना या नष्ट हो जाना। उ० इस बुढौती मे इकलौते बेटे ने भी धोखा दिया।

धोखा पड़ना—कुछ का कुछ होना, और का और होना। उ० पडितन कहा परा नहि धोखा, कौन अगस्त समुद्रहि सोखा।

धोखा रचना—दे० 'धोखा खडा करना'।

धोखा लगना—शुबहा होना। उ० मुझे इसकी पहचान मे कुछ धोखा लग रहा है।

धोखा लगाना—क़सर करना, कमी करना। उ० उसने कोशिश करने मे कोई धोखा नही लगाया, फिर भी काम न हुआ।

धोखे का पुतला—बहुत बडा धोखेबाज़।

धोखे की टट्टी—१ देखने मे तो अच्छा, पर वास्तव मे बुरा। उ० उसकी बातें धोखे की टट्टी हैं, उनमे न आओ। २. बाहर से सुन्दर, पर भीतर से खराब हो जाने वाली चीज़। उ० उसने मकान क्या बनवाया है, सब धोखे की टट्टी है। ३ शिकारियो के शिकार खेलने की टट्टी। उ० हिरन बेचारे धोखे की टट्टी मे फँस ही जाते हैं। ४ बाहर से आकर्षक पर भीतर से खतरनाक।

धोती ढीली करना—१ भय दिखाना, डरा देना। उ० ऐसी धोती ढीली करूँगा कि कुछ दिन याद रखोगे। २ बुरी दशा करना। उ० मारते-मारते धोती ढीली कर दूंगा।

धोती ढीली होना—भय लगना। उ० उस पागल को देखते ही मेरी धोती ढीली हो गई।

धोती बांधना—तैयार होना। उ० धोती बाँध लो, अब लडाई पर चलना ही है।

धोव पड़ना—धोया जाना। उ० मेरे कोट पर कई धोव पडे, पर वह अच्छी तरह साफ न हुआ।

धो-बहा देना—खत्म कर देना। उ० तीर्थों मे जाकर उसने सब पाप धो-बहा दिये।

धोबी का कुत्ता होना—कही का न होना, घुमक्कड होना। उ० तुम तो धोबी के कुत्ते

हो गए हो। यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ, बस यही तुम्हारा काम है।

धोबी का छैला होना या बनना—दूसरो की वस्तु पर घमड करने वाला या दूसरो से चीजें माँग कर अपना रूप सँवारने वाला बनना। उ० धोबी का छैला बनने की मेरी आदत नहीं, यह तो आपको ही शोभा देगा।

धोया-धाया—१. साफ़, पवित्र। उ० यह बर्तन धोया-धाया है, तुम पानी पी सकते हो। २ अच्छा भलेमानुस। उ० आदमी है तो वह धोया-धाया, पर ज़रा लालची है। ३ शुद्ध आचरण। ४. ईमानदारी से कमाया हुआ। उ० यह रुपया धोया-धाया है।

धौंकनी लगना—साँस फूलना। उ० सीढी पर चढने से उसकी धौंकनी लग जाती है।

धौंक लगना—दे० 'धौंका लगना'।

धौंका लगना—लू लगना। उ० आजकल बहुत आदमियो को धौंका लग रहा है।

धौं-धौं करना—खाँसना। उ० आप रात भर यहाँ धौं-धौं किया करते हैं, मुझे सोने मे भी बाधा पडती है।

धौंस की चलना—रोब से काम निकालना। उ० धौंस की यहाँ नही चलेगी, हाँ कुछ पैसे निकालो तो काम कर दूं।

धौंस ग़ालिब करना—रोब कायम करना। उ० पढे-लिखे लोगो पर धौंस ग़ालिब करना ज़रा कठिन है।

धौंस जमाना—रोब जमाना। उ० मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूँ, जो धौंस जमाते हो।

धौंस देना—१ चढाई का डका बजाना। उ० दुश्मन धौंस देकर किले पर चढ आये। २ रोब ग़ालिब करना। उ० मुझे धौंस न दो।

धौंस-पट्टी मे आना—बहकावे मे आना। धोखे मे आना। उ० मैं आपकी धौंस-पट्टी मे नही आ सकता।

धौंस बजाना—दे० 'धौंस देना'।

धौंस बांधना—१ रोब गालिब करना। उ० मुझ पर तुम्हारा धौंस बाँधना बेकार है, तुम अभी कल के बच्चे हो और मैंने पूरी ज़िंदगी देखी है। २ खर्च मढना। उ० फायदा तो तुम्हारा हुआ और धौंस मुझ पर बाँधते हो।

धौंसा बजना—१ चारो ओर चर्चा होना। २ ख्याति होना।

धौल कसना—दे० 'धौल जमाना'।

धौल खाना—१. थप्पड़ सहना। उ० मैं क्यो धौल खाऊँ, आपकी ग़लती है, आप जानें। २ हानि उठाना। उ० बिना समझे-बूझे काम शुरू किया तो धौल खाने को तैयार रहना।

धौल जमाना—थप्पड मारना। उ० एक ही धौल जमाने मे वह ज़मीन पर गिर पडा।

धौल-धक्कड़ मचाना—मार-पीट होना। उ० वहाँ धौल-धक्कड मचा है, और यहाँ तुम बैठे हो।

धौल-धप्पा होना—हँसी-हँसी मे मारपीट होना।

धौल-धूर्त होना—पक्का चालबाज़ होना। उ० आप तो धौल-धूर्त हैं। आपसे कोई पार नही पा सकता।

धौला पड़ना—ज़र्द पड जाना। उ० चार ही दिन की बीमारी मे वह धौला पड गया है।

ध्यान आना—याद आना। उ० जब आपका ध्यान आता है तो बडा कष्ट होता है।

ध्यान छूटना—पूजा या ध्यान से अलग होना। उ० महात्मा का ध्यान छूटे तो उनसे कुछ बातें करूँ।

ध्यान जमना—चित्त एकाग्र होना। उ० बहुत दिनो से पूजा-पाठ कर रहा हूँ, पर मेरा अभी तक ध्यान नही जमता।

ध्यान जाना या ध्यान का चला जाना—१. नज़र पडना। उ० न चाहने पर भी मेरा ध्यान उधर चला ही गया। २. ख्याल जाना। उ० मेरा भी ध्यान गया तो था, पर फिर भूल गया।

ध्यान दिलाना—याद दिलाना। उ० मुझे कल सुबह ध्यान दिलाना तो मैं वहाँ चला जाऊँगा।

ध्यान देना—मन लगाना। उ० ध्यान देने से कठिन से कठिन काम भी हो सकता है।

ध्यान धरना—१ ईश्वर की ओर मन लगाना। ईश्वर का ध्यान धरना। २ विचार करना, सोचना। ३. ज़रा इस बात का ध्यान धरना।

ध्यान पर चढना—याद आना। उ० आप जब से गये, कभी ध्यान पर भी न चढे।

ध्यान बँटना—चित्त इधर-उधर हो जाना। उ० पूजा करते समय मेरे पास बैठ कर बात न किया करो, नही तो मेरा ध्यान बँट जाता है।

ध्यान बँधना या बँध जाना—१ हर समय याद रहना। उ० तुम्हारा ध्यान हमेशा बँधा रहता

है । २ चित्त का एकाग्र होना । उ० अभ्यास करते-करते उनका ध्यान बंध गया है ।

ध्यान मे आना–दे० 'ध्यान पर चढना' ।

ध्यान मे डूबना–सब कुछ भूल कर मन एक ओर लगाना । उ० जब पूजा करने बैठता है तो ध्यान मे डूब जाता है ।

ध्यान मे मग्न होना–दे० 'ध्यान मे डूबना' ।

ध्यान मे लगना–किसी का ध्यान कर उसी मे लीन होना । उ० आजकल किसी दूसरे ध्यान मे लगे हो, नही तो क्या इस रास्ते आते भी नही ?

ध्यान रखना–याद रखना । उ० मैं अब जा रहा हूँ, पर मेरी बातो का ध्यान रखना ।

ध्यान रहना–याद रहना । उ० अगर ध्यान रहा तो तुम्हारी चीज़ अवश्य लाऊँगा ।

ध्यान लगाना–मन से याद रखना । उ० रात-दिन आप उधर ही ध्यान लगाये रहते हैं ।

ध्यान से उतरना–ख्याल न रहना । उ० अगर ध्यान से उतर गया तब तो कोई बात ही नही, नही तो अवश्य लेता आऊँगा ।

ध्रुव कहना–निश्चय रूप से कहना । उ० मैं ध्रुव कहता हूँ कि उन दोनो मे लड़ाई होकर रहेगी ।

ध्रुव सत्य–शाश्वत सत्य, निश्चित सत्य ।

ध्रुव होना–अटल होना । निश्चित होना । उ० वह तो अपनी जगह पर ध्रुव है, तुम कुछ भी नही कर सकते ।

ध्वजा फहराना–बोलबाला या ख्याति होना ।

ध्वनि उठाना–शब्द आना, शब्द फैलाना । उ० वहाँ वेदध्वनि उठ रही है ।

न

नग-धडंग–बिल्कुल नगा । उ० नग-धडग होकर पागल की तरह कहाँ जाते हो ?

नग-मुनगा–दे० नग-धडग' ।

नंगा कर देना–बेइज्जत कर देना । उ० उन लोगो ने भरी सभा मे उस बेचारे को नगा कर दिया ।

नंगा करना–दे० नगा कर देना' ।

नगा-झोली देना–अपने कपडे आदि की तलाशी करवाना । उ० नगा-झोली दो, तुम पर मेरा शुबहा है ।

नगा-झोली लेना–किसी के कपडे आदि उतरवा कर या अच्छी तरह से टटोल कर यह देखना कि उसके पास क्या-क्या है । उ० नगा-झोली ले लो, मेरे पास कुछ भी नही है ।

नग-मादरजाद–दे० 'नग-धडग' ।

नगा-लुच्चा–बदमाश, पाजी । उ० नगो-लुच्चो का साथ न करो ।

नगी तलवार का बीच मे होना–अत्यधिक वैर होना ।

नगे आना नगे जाना–खाली हाथ पैदा होना और खाली हाथ मरना ।

नगो के देश मे धोबी का काम न होना–अनुपयोगी होना ।

नंगो-चगो करना–बहुत तग करना । उ० भाई नंगो-चगो न करो, नही तो मैं फिर कभी न आऊँगा ।

नंबर एक का–सबसे अधिक ।

नवर दागना–स्त्री-प्रसग करना ।

नवर लगाना–दे० 'नवर दागना' ।

नकनकी बजवा देना–हैरान कर डालना ।

नकल करना–१. अनुकरण करना । २. तमाशा करना । ३. बहाना करना । ४ हूबहू उतार लेना । ५. नाटक करना ।

नकवानी आना–नाक मे दम आना, परीशान हो जाना । उ० तिन रकन को नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ।

नकसीर फूटना–बिनास फूटना, नाक से खून बहना ।

नकसीर भी न फूटना–कुछ भी नुकसान न होना । उ० गाँव मे इतनी लूट-पाट हुई, पर तुम्हारी तो नकसीर भी न फूटी ।

नक़ाब उलटना–१ घूंघट हटाना । उ० मर्दो के सामने कुछ औरतें नकाब उलटने मे शर्माती हैं । २. परदा हटाना या हटना । उ० नकाब उलटने के बाद असलियत का पता चलेगा ।

नकेल हाथ मे होना–वश मे होना । उ० जब उनकी नकेल हाथ मे है तो वे जा कहाँ सकते हैं ?

नक्क़ारखाने मे तूती की आवाज़ होना—१ कोई महत्त्व न होना । २ अधिक शोर मे न सुना जाना । उ० मेरी आवाज़ तो वहाँ नक्कारख़ाने मे तूती की आवाज़ थी ।

नक्कारा बजा कर—डके की चोट पर, डका बजा कर । उ० वे लोग चोर नही हैं, वे तो नक्कारा बजा कर डाँका डालते हैं ।

नक्कारा बजाते फिरना—सबसे कहते फिरना । उ० वह मूर्ख उस गदी बात का नक्कारा बजाता फिर रहा है ।

नक्कारा होना या हो जाना—बहुत फूलना । उ० वह ख़ुशी के मारे नक्कारा हो गया ।

नक्कू बनना—अपने को बडा समझना । उ० नक्कू बनना मूर्खों का काम है, होशियार लोग कभी ऐसा नही करते ।

नक्श बिगडना—१ रग उखडना । उ० यहाँ आते ही उनका नक्श बिगड गया । २ रूप-रग ख़राब होना । उ० अभी तो गर्व कर लो, पर बुढौती मे नक्श बिगडने पर कोई पूछेगा भी नही ।

नक्श बैठना—रग जमना । उ० जब मेरा यहाँ कुछ नक्श बैठे तो काम सिद्ध हो ।

नक्श बैठाना—रग जमाना । उ० पहले तुम अपना नक्श बैठा लो तो मैं काम शुरू करूँ ।

नक्श होना—मन मे जम जाना । उ० उसकी नसीहत हमेशा के लिए मेरे दिल मे नक्श हो गई ।

नक्शा खिच जाना—ठीक-ठीक रग-रूप ध्यान मे आना । उ० जब मुझे उनकी याद आती है तो उनका नक्शा खिच जाता है ।

नक्शा जमना या जमा होना—प्रभाव होना । उ० देहात के सभी बडे-बडे लोगो के यहाँ उसका नक्शा जमा हुआ है ।

नक्शा जमाना—रग डालना , प्रभाव जमाना । उ० आजकल उसने अपना नक्शा ख़ूब जमाया है ।

है ।

नखरा-तिल्ला करना—नाज नखरा करना, चोचले करना । उ० तुम्हारा नखरा-तिल्ला करना मुझे अच्छा नही लगता ।

नख़रा बघारना—नाज-नखरा करना । उ० यहाँ नख़रा न बघारो, इद्र की परी नही हो ।

नख-शिख—पूरा,भरपूर । उ० मैंने तो आज नख-शिख खाया है ।

नख-शिख से—सिर से पैर तक । उ० वह स्त्री नख-शिख से गहनो से लदी हुई है ।

नख से सिख तक—पूर्णरूपेण । उ० बिहारी ने नायिका का वर्णन नख से सिख तक किया है ।

नखास की घोडी—रडी, वेश्या । (घृणार्थक अर्थ

धन और धर्म दोनो गँवा दिये ।

नख़ास पर चढाना—दे० 'नख़ास पर भेजना' ।

नख़ास पर भेजना—बाज़ार मे बेचने को भेजना । उ० वह रोज़ाना अपने बाग से कुछ फल नख़ास पर भेजता है ।

नखासवाली—दे० 'नख़ास की घोडी' ।

नखा-सिख—दे० 'नख-सिख' ।

न गँठना—न पटना, मैत्री न होना । उ० उन दोनो मे नही गँठती ।

नग बैठाना—नग जडना । उ० उसके गहनो मे तो केवल नग बैठाए गए है ।

नग मे बाल पडना या पड़ जाना—नग का फूट जाना । उ० इस अँगूठी के नग मे तो बाल पड गया है, देख कर नही लाए क्या ?

न गाँठना—परवा न करनाह । उ० वह तो अपने सामने किसी को गाँठता ही नही है ।

नगाडा बजना—खुले आम घोषणा होना ।

न गिनना—कुछ न समझना ।

नगीना-सा—छोटा और सुन्दर । उ० उसका नगीना-सा लडका चल बसा ।

नगीना होना—१ बहुत सुन्दर होना । २ भूषण होना, सरताज होना । उ० वह मेरे कुल का नगीना है ।

नचा मारना—परेशान करना । उ० आपने तो ख़ूब परेशान किया, अब मैं भी नचा मारूँगा ।

नज़र आना—दिखाई देना । उ० विपत्ति मे कोई नज़र आए तब तो समझूँ ।

नज़र उतारना–बच्चो का नज़र हटाना। बुरी नज़र के कारण बीमार बच्चे को ठीक करना। उ० इस मुहल्ले मे कोई नज़र उतारने वाला भी मिलता है।

नज़र करना–१ भेंट या उपहार देना। उ० हमारे असामी तो रोज़ नज़र करते रहते हैं। २. देखभाल करना। उ० मैं जा रहा हूँ, जरा इस ओर भी नज़र करना।

नज़र खा जाना–दे० 'नज़र खाना'।

नज़र खाना–बुरी नजर लग जाना। उ० हमारा बच्चा तो नज़र खा गया है।

नज़र चुराना–आँखो से दूर रहना। उ० उस दिन वह ऐसा लज्जित हुआ कि आज तक नज़र चुराता रहता है।

नज़र जलाना–बुरी नज़र का असर मिटाना। उ० अपना लडका उस बुढिया को दिखलाओ। वह नज़र जलाने मे बडी होशियार है।

नज़र झाड़ना–दे० 'नज़र जलाना'।

नज़र दौडाना–१ चारो ओर तलाश करना। उ० बहुत नज़र दौडाया, पर उसके योग्य वर न मिला। २ इधर-उधर देखना। उ० नजर दौड़ाइए, इसी भीड मे वह भी है।

नज़र टकराना–परस्पर आँखें मिलना।

नज़र-निगाह रखना–दे० 'नजर रखना'।

नज़र पडना–दृष्टि मे आना। उ० रास्ते मे मेरी नज़र एक साँप पर पड गई।

नज़र पर चढ़ना–१ पसद आना। उ० उसका मकान नज़र पर चढा है, रुपया होते ही ख़रीद लूँगा। २ आँखो मे खटकना। उ० मेरा ही बेटा सबकी नज़र पर चढना हैं जाने मैंने किसका क्या बिगाडा है?

नज़र फिसलना–दृष्टि चौंधियाना। उ० इन सोने की मूर्तियो को देख कर नज़र फिसल जाती है।

नज़र फेंकना–१ साधारणत एक बार देख लेना। उ० वकील ने पूरे कागज़ पर नज़र फेंकी, लेकिन कुछ कहा नही। २ दूर तक दखना। उ० ज़रा नज़र फेको, शायद आते हो।

नज़रबद करना–हवालात या जेल मे रखना। उ० जवाहरलाल कई बार नज़रबद किये जा चुके है।

नज़रबंद रखना–हिरासत मे रखना। कही जाने न देना। उ० कम्युनिस्टो के बहुत से नेता नज़रबद रखे गए है।

नज़र बाँधना–चमत्कार या जादू से नज़र बाँध दना। उ० जादूगर नज़र बाँध कर क्या-क्या नही दिखाते?

नज़र भर कर देखना–अच्छी तरह देखना।

नज़र मारना–१ तिरछी चितवन से देखना। उ० भरे मडप मे वह तुम्हीं को नज़र मार रही थी। २ इशारा करना। उ० नज़र मार दो, वह समझ जायगा।

नज़र मिलाना–सामने आना। उ० उसके बाप तो नजर मिला ही नही सकते, उसे कौन कहे?

नज़र मे आना–दिखाई पडना। उ० यदि कोई हथियार नज़र मे आ गया होता तो वही काम तमाम कर देता।

नज़र मे तौलना–गुण-दोष देखना। उ० नज़र मे तौल कर तो खरीदो।

नज़र मैली होना–कुदृष्टि देखना।

नज़र रखना–१ दया-दृष्टि रखना। उ० यदि धनी वर्ग गरीबो पर नज़र रखा करें तो इतनी गरीबी न रहे। २ रखवाली करना। देखते रहना। उ० मेरे भी लडके पर नज़र रखना।

नज़र लगना–बुरी दृष्टि से प्रभावित होना। उ० बच्चो को तो नजर लगते देर नही होती।

नज़र लगाना या लगा देना–बुरी दृष्टि से देखना। उ० बच्चे पर किसी ने नज़र लगा दी है।

नज़र से गिरना–दे० 'नज़रो से गिरना'।

नज़र से गिराना–बेइज्जती करना। उ० सम्पूर्ण ग्रामवासियो ने अकारण ही उसे नज़र से गिरा दिया है।

नज़र से नज़र दो-चार होना–आँख से आँख मिलाना, देखादेखी होना। उ० नज़र से नज़र दो-चार होने पर तो मुहब्बत हो ही जाती है।

नज़र होना–१ बुरी दृष्टि लगना। उ० उसे तो कल ही से नज़र हो गई है। २ नज़राना या भेट दिया जाना। ३ कृपा-दृष्टि होना। उ० मेरे ऊपर भी नज़र हो जाय।

नज़र हो जाना–दे० 'नज़र होना'।

नज़र से निकलना—सामने आकर निकल जाना। दिखाई देकर निकल जाना। उ० वह तो कभी-कभी नज़र से निकल गया।

नज़रों मे खटकना—अप्रिय लगना।

नज़रो से गिरना—प्रतिष्ठा या आदर का भाव न रहना। उ० आजकल कांग्रेस लोगो की नज़रो से गिर गई है। क्यो बेकार मे नज़रो से गिर रहे हो ?

नटखटी करना—शेखी करना, शरारत करना।

न तीन मे न तेरह मे होना—कही का या किसी श्रेणी का न होना। उ० वह तो न तीन मे है, न तेरह मे, उसे कौन पूछता है ?

नत्थी करना—कई कागज़ो को एक मे नाथना।

नथना फूलना—क्रोधयुक्त होना। उ० बनते तो हैं गाधी और फूलते देर नही लगती।

नथना फुलाना—क्रोधित होना, नाराज़ होना। क्रोध के चिह्न दिखलाना। उ० बात-बात मे नथना फुलाना हो तो अपने घर जाओ।

नथनो मे तीर देना—बहुत परीशान करना। [पुराने ज़माने मे यह एक सजा थी। उसी आधार पर यह मुहावरा चला है।]

नथने चढाना—नाराज़ होना।

नथनो मे दम करना—आजिज कर देना। उ० इस छोकडे ने तो नथनो मे दम कर दिया है।

नथनो मे दम होना—परीशान होना।

नथुनी उतारना—किसी वेश्या का कौमार्य नष्ट करना। [केवल बाजारू भाषा मे प्रयुक्त होता है।]

न दिन चैन न रात नींद होना—हर समय चिन्ता बनी रहना।

नदिया-नाव-सयोग—सयोग से। उ० नदिया-नाव सयोग हम लोग मिल गए हैं, फिर पता नही कब मिलेंगे।

नदी बहना—काफी अधिक मात्रा मे होना।

नन्हा-सा—छोटा-सा। उ० नन्हा-सा तो है, परन्तु पुरानो की तरह बात करता है।

नन्हा-सा मुंह निकल आना—खिसिया जाना।

नपी तुली बात कहना—आवश्यकता के अनुरूप कहना। एक शब्द कम न एक शब्द अधिक कहना।

नफा उडाना—लाभ प्राप्त करना।

नब्ज़ चलना—ज़िन्दगी रहना। उ० जब तक नब्ज़ चले तभी तक तो ससार से मतलब है।

नब्ज़ छूटना—मर जाना। उ० देखते-देखते ही उसकी नब्ज़ छूट गई।

नब्ज़ टटोलना—थाह लेना, मन की बात जानना।

नब्ज़ न रहना—दे० 'नब्ज़ छूटना'।

नमक अदा करना—नमक की शरियत पूरी करना। नमकहलाल होना। उ० आजकल कौन किसका नमक अदा करता है ?

नमक कटे पर छिड़कना—दे० 'जले पर नमक छिडकना'।

नमक का सहारा—कुछ भी सहारा। उ० नमक का सहारा भी आपकी ओर से हो जाता तो मैं यही बस जाता।

नमक का हराम होना—१ न खाना। उ० जब से बीमार हुआ, मेरे लिए नमक हराम हो गया। २ अकृतज्ञ होना। उ० वह तो नमक का हराम है, उसके साथ कोई भी व्यवहार रखना ठीक नही।

नमक का हलाल होना—कृतज्ञ होना। उ० वह नमक का हलाल है। जो भी सहायता मांगे, अवश्य दी जा सकती है।

नमक खाना—किसी का दिया खाना। उ० नमक खाकर उसकी शरियत पूरी करो, नही तो कोढी हो जाओगे।

नमक-तेल का ठिकाना न होना—बहुत गरीबी होना।

नमक फूट-फूट कर निकलना—नमकहरामी का फल मिलना। उ० जितना पैसा लेते हो, उतना काम करो, नही तो फूट-फूट कर निकलेगा।

नमक-मिर्च मिलाना—बात बढा-चढा कर कहना। उ० नमक-मिर्च मिला कर क्यो कहते हो, मुझे सब कुछ ज्ञात है।

नमक-मिर्च लगाना—दे० 'नमक-मिर्च मिलाना'।

नमकहराम—नमकहलाल का उलटा। दे० 'नमकहलाल'। उ० बडा नमकहराम आदमी है, उसे तो एक सूखी रोटी भी देने की इच्छा नही होती।

नमकहलाल—वह जो नमक की शरियत दे या जिसका खाय उसका एहसान माने और वदला चुकाये। उ० है वेचारा वडा नमकहलाल, इसी से तो मैं इसे हटाना नही चाहता ।

नमकीन होना—१ वहुत सुन्दर होना। उ० वह लडका वडा नमकीन है। [यह वाज़ारू प्रयोग है।] २. अच्छा होना।

नमदा बाँधना या बाँध देना—कारागार की सज़ा दिलवाना । उ० तुम्हारे जैसे वदमाशो को नमदा न वांध दिया तो कहना ।

नमस्कार करना— छोड देना ।

नमाज़ कज़ा होना— नमाज़ के लिए वेवक्त होना। उ० नमाज़ कज़ा हो रही है, जल्दी करो।

नमाज़ पढना—खुदा की एवादत करना। उ० कुरान मे पाँच वक्त नमाज़ पढने को कहा गया है।

नयन अघाना—देखकर तृप्त होना।

नयन की कोर जोहना—कृपाकाक्षी होना।

नयन से पनारी वहना—आँसुओ का प्रवाह न रुकना ।

नया गुल खिलना—दे० 'अनोखा गुल खिलना'।

नया-नवेला—नवयुवक, नवजवान । उ० वह नया-नवेला है, उसे गुस्सा जल्दी आ जाना स्वाभाविक है।

नया-पुराना करना—पुराने को वेचकर या हटा कर नया लाते रहना। अदला-वदली करना। उ० पशु ज्यादा हैं तो नया-पुरान करते रहने से ठीक रहता है।

नया रग लाना—दे० 'नया राग लाना'।

नया राग लाना—१ नया सवाल खडा करना। उ० उसके जैसा झगडालू मैंने नही देखा। जव देखो, एक न एक नया राग लाता रहता है। २ नयी धूम मचाना। ३ नयी रौनक लाना।

नया शिकार फँसना—नया आसामी फदे मे आना।

नये सिरे से जन्म लेना—दे० 'नये सिरे से जन्म पाना'।

नये सिरे से जन्म पाना—मरते-मरते वचना। उ० मेरा लडका पेड से गिरा था, और मरणासन्न था, पर डाक्टर की कुशलता से उसने नये सिरे से जन्म पाया है।

नरक का पैसा—१ वहुत वुरे काम की कमाई। उ० नरक का पैसा फल नही सकता। २ ऐसा पैसा जो वडे परिश्रम से किये गये गदे काम के लिए दिया जाता हो। उ० मेहतर का पैसा नरक का पैसा है, उसे देने मे भला कौन वेईमानी करेगा ?

नरक भोगना—दुर्दशा भोगना। उ० वह नरक भोग रहा है।

नरक मे भी जगह न मिलना—नीच से नीच स्थान मे भी जगह न मिलना। उ० इन गरीवो को सताओगे तो नरक मे भी जगह न मिलेगी।

नरक होना—नरक भोगने की सज़ा मिलना। उ० आप ऐसे नीचो को अवश्य ही नरक होगा ।

नरद कच्ची करना—हरा देना।

नरम-गरम उठाना—दुख-सुख सव कुछ सहना। उ० इस थोडे से ही जीवन मे नरम-गरम सव कुछ उठाना पडा है।

नल चलना—जादू से चोरो का पता लगना। उ० अगर नल चल गया तो आज ही सव चोर पकडे जायेंगे।

नवाव का नाती होना—घमडी होना।

नशा उतरना—घमड दूर होना। उ० तुम वहुत वढ-वढ कर वातें कर रहे हो, पर दो ही तमाचे मे सव नशा उतर जायगा।

नशा उतारना—घमड दूर करना। उ० अगर ज्यादा वनोगे तो आज ही सव नशा उतार दूंगा।

नशा किरकिरा हो जाना—नशे का मज़ा विगडना। उ० वे सव शराव छान रहे थे, मगर थानेदार के आ जाने से सवका नशा किरकिरा हो गया।

नशा चढना—नशा होना। उ० भाँग का नशा मुझे खूव चढता है।

नशा छाना—मस्त होना। उ० उसे देखता हूँ तो नशा छा जाता है।

नशा जमना—नशा होना। उ० एक घूंट शराव से क्या नशा जमे ?

नशा झाडना—दे० 'नशा उतारना'।

नशा टूटना—नशा उतरना। उ० भग थी या जहर। आज अभी तक उसका नशा नही टूटा।

नशा-पानी करना—मादक द्रव्यो का प्रयोग करना। उ० नशा-पानी कर लूँ तो चलूँ।

नशा मिट्टी होना—बड़प्पन आदि का अहकार दूर या समाप्त होना।

नशा हिरन हो जाना—एकाएक नशा खत्म हो जाना। उ० वह नशे मे मस्त था और खूब गाली बक रहा था, पर मार पडते ही सारा नशा हिरन हो गया।

नशीली आँखें—मस्ती से भरी आँखें। उ० तुम्हारी नशीली आँखें किसे नही खीच लेती हैं ?

नशे मे चूर होना—१ खूब नशा होना। उ० नशे मे चूर आदमी अपने आपको भूल जाता है। २ धुन सवार होना, किसी काम मे बहुत लीन होना। उ० किस नशे मे चूर हैं कि पुकारने पर भी नही सुनते ?

नश्तर देना—दे० 'नश्तर लगाना'।

नश्तर लगना—फोडे आदि का चीरा जाना। आपरेशन होना। उ० नश्तर लगने से मैं बहुत डरता हूँ।

नश्तर लगाना—फोड़ा आदि चीरना। उ० नश्तर लगाने से यह फोडा जल्दी ठीक हो जायगा।

नस चढना—नस के इधर-उधर हो जाने से सूजन होना। उ० उसके हाथ की नस चढी हुई है, डाक्टर को दिखा दो।

नस ठीक कर देना—अच्छा सबक सिखाना।

नस ढीली पडना—१ थक जाना। २ नपुसक होना।

नस-नस का पता होना—खूब अच्छी तरह जानना।

नस-नस ढीली करना—मार-मार कर बेदम करना। उ० अधिक गुडागर्दी करोगे तो सबकी नस-नस ढीली कर दूँगा।

नस-नस फड़क उठना—१ स्फूर्ति आ जाना, जोश आना। उ० वीर रस की कविता से किसकी नस-नस नही फडक उठती है ? २ प्रसन्न होना।

नस-नस मे—सब बदन मे। उ० आज नस-नस में दर्द है।

नस-नस मे बिजली दौड जाना—शरीर का उत्तेजित हो जाना।

नस पर नस चड़ना—दे० 'नस चढना'।

नस भडकना—पागल होना। उ० नस भड़क गई है, नही तो रास्ते की गुदडी क्यो बटोरता ?

नसीब आजमाना—कोई काम करके यह देखना कि सफलता मिलती है या नही। उ० केवल नसीब आजमाने के लिए यह काम मैं कर रहा हूँ, वर्ना इससे मेरा क्या होगा ?

नसीब खुलना—दे० 'नसीब जागना'।

नसीब चमकना—१ यश फैलना। २ भाग्य का उज्ज्वल होना। उ० नसीब चमक गया, नहीं तो कल तक भर पेट अन्न भी नही मिलता था।

नसीब जागना—भाग्य खुलना। उ० अगर नसीब जाग गया तो फिर रुपया कमाते देर न लगेगी।

नसीब फूटना—दुर्भाग्य आना। उ० मुन्ने के बाप क्या मरे, मेरे तो नसीब ही फूट गये।

नसीब लड़ जाना—सयोग या सुअवसर आ जाना। उ० पर्चे अच्छे तो नही हुए हैं, पर नसीब लड गई तो पास ही हो जाऊँगा।

नसीब का खेल—भाग्य मे बदा।

नसीब होना—प्राप्त होना। उ० हम गरीबो को ऐसा कपडा कहाँ नसीब हो ?

नसीहत करना—१ शिक्षा देना। उ० लडको को पग-पग पर नसीहत करना चाहिये। २ डाँटना। उ० इस छोटी-सी गलती के लिए उसने अपने लडके की बडी नसीहत की।

नसीहत मिलना—शिक्षा मिलना। उ० वहाँ तो रोज ही नसीहत मिलती है, इतने पर भी भला भूल जाऊँगा ?

नसें ढीली पडना—थकावट आना। उ० आज दिन भर काम-करते-करते मेरी नसें ढीली पड गई हैं।

नसें ढीली होना—दे० 'नसें ढीली पडना'।

नहँ-उँगली का दुखना न सहा जाना—तनिक भी तकलीफ न सही जाना।

नहँ गिर जाना—काम करने योग्य न होना, अपाहिज या कोढी होना। उ० हार हिम्मत न छोड देंगे हम, नहँ नही गिर गया हमारा है।

नहँ मे कील ठोकना—बहुत कष्ट देना।

नहर बहा देना—बहुतायत कर देना।

नहाते समय बाल भी न खसना—तनिक भी अनिष्ट न होना।

नहार तोडना—जल-पान कर लेना । उ० नहार तोड कर तो कही जाया करो, नही तो खरावी हो जायगी ।

नहार-मुंह—बिना कुछ खाये-पिये । उ० कल सुवह नहार मुँह आकर दवा ले जाना । यही इसका नियम है ।

नहार रहना—न खाना । उ० जब घर मे कुछ नही है तो नहार रहना ही पडेगा ।

नहारू के लिए गाय मारना—छोटी आवश्यता के लिए बडा नुक़सान करना ।

नहीं तो—वर्ना । उ० बोलो, नही तो रोना पडेगा ।

नहीं सही—परवा नही । उ० ज़्यादा न पढो तो नही सही, पर कुछ तो पढ ही लो ।

नाक ऊँची होना—मान रहना, प्रतिष्ठा बढना । उ० अगर मेरी बात सब लोग मान जायँ तो नाक ऊँची हो जाय ।

नाक कटना—मर्यादा न रहना । उ० अगर इसमे कोई त्रुटि रही, तो मेरी नाक कट जायगी ।

नाककटाई—बेइज़्ज़ती । उ० उसकी नाककटाई करा कर बात करते हो ।

नाक कटाना—इज्ज़त न रहने देना । उ० एक नालायक सारे परिवार की नाक कटा सकता है ।

नाक काट कर चूतडो तले रख लेना—बेइज्ज़ती की परवाह न करना । उ० अब मैंने नाक काट कर चूतडो तले रख ही ली है, गाली दो या मार लो । मगर अपने लिए भी याद रखना ।

नाक काटना—मर्यादा न रहने देना । बेइज्ज़त करना । उ० तुमने तो उसकी नाक काट ली, भला बेचारी समाज को क्या मुँह दिखाएगी ?

नाक-कान काटना—कठिन दण्ड देना । उ० ऐसे नीच काम करने वालो का तो नाक-कान काट लेना चाहिये ।

नाक का बाल—१ घनिष्ठ मित्र या मत्री, जिसकी सलाह से सभी काम हो । उ० आपका सोचना वेकार है । आप उसकी नाक के बाल कभी भी नही हो सकते । २ बहुत प्यारा ।

नाक का बाल होना—बहुत प्यारा होना । उ० मोहन तो उसकी नाक का बाल हो गया है, भला उसे वह कैसे मार सकता है ?

नाक की सीध मे—एकदम सामने । उ० नाक की सीध मे चले जाओ, सबसे पहला घर उन्ही का है ।

नाक के नीचे—प्रत्यक्ष, उपस्थिति मे ।

नाक के बल नचाना—खूब हैरान करना ।

नाक घिसना—बहुत आरजू करना । उ० यदि काम करवाना ही चाहते हो तो सुबह-शाम नाक घिसो ।

नाक-घिसनी—गिडगिडाना और विनती । उ० नाक-घिसनी से काम न चलेगा, कुछ पैसे भी लाओ ।

नाक चढ़ना—१ क्रोध आना । उ० उसका ऐसा स्वभाव है कि मामूली बातो पर भी नाक चढ जाती है । २ घृणा होना ।

नाक चढाना—घृणा करना । उ० अच्छी से अच्छी चीज़ देख कर भी वह नाक चढा लेता है, पता नही अपने को क्या समझता है ?

नाक-चोटी काट कर हाथ देना—कठिन सज़ा देना ।

नाक-चोटी काटना—कडी सज़ा देना । उ० इस छोटे से अपराध के लिए नाक-चोटी काटना उचित नही ।

नाक-चोटी मे गिरफ़्तार—अपनी मर्यादा का हर समय ध्यान होना । उ० बडे आदमी बेचारे तो सदा नाक-चोटी मे ही गिरफ्तार रहते हैं ।

नाक छिनकना—दे० 'नाक सिनकना' ।

नाक ढाई हाथ की होना—महानिर्लज्ज होना । उ० अजी इनकी नाक तो ढाई हाथ की है, कोई कितनी काटेगा ?

नाक तक खाना—बहुत अधिक भोजन करना । उ० वह नाक तक खा कर उठा और कै होने लगी ।

नाक तक भरना—खूब ठूंस-ठूंस कर भोजन करना । उ० भोजन नाक तक भरना बडा हानिकारक होता है ।

नाक तोड देना—ज़ोर की लगाना, बहुत मारना । उ० इसके मुँह न लगना, नही तो किसी दिन मज़ाक मे ही नाक तोड देगा ।

नाक न दी जाना—बडी बदबू आना । उ० कोई जानवर मरा है, इसी से यहाँ नाक नही दी जा रही है ।

नाक पकड़ कर घुमाना—इच्छानुसार काम करवाना ।

नाक पर उँगली रख कर बात करना—नखरे से बात करना, औरतो की तरह बातचीत करना ।

उ० नाक पर उँगली रख कर बात करना जनखो को शोभा दे सकता है, तुम्हे नही ।

नाक पर गुस्सा होना—दे० 'गुस्सा नाक पर होना' ।

नाक पर दीया जलाना—तुरत काम होने की इच्छा करना । उ० नाक पर दीया जलाने से काम नही होगा, इसमे कुछ समय लगेगा ।

नाक पर दीया बालना—दे० 'नाक पर दीया जलाना' ।

नाक पर दीया बाल कर आना—सफलता प्राप्त करने आना । उ० नाक पर दीया बाल के आये हो क्या कि स्वागत करूँ ।

नाक पर पहिया फिरना- नाक का चपटी होना । उ० उसकी नाक पर पहिया फिरी है, उसे सुन्दर कौन कहेगा ?

नाक पर मक्खी न बैठने देना—१. बहुत खरा होना । उ० उसके आगे कुछ कहते मैं बहुत डरता हूँ । वह ऐसा आदमी है कि नाक पर मक्खी भी नही बैठने देता । २. बहुत सफाई रखना । ३. तनिक भी एहसान न लेना ।

नाक पर रख देना—गुस्से के साथ सामने रख देना । उ० उसे विश्वास न होता हो तो उसकी नाक पर रख दो ।

नाक पर पासुड़ी तोड़ना—बहुत परीशान करना । उ० कहो तो उजड कर कही और चला जाऊँ, पर नाक पर रोज़-रोज़ सुपाडी न तोडा करो ।

नाक फटने लगना—१ बहुत बदबू आना । उ० उस गली मे तो नाक फटने लगती है । २ असह्य बदबू से नाक को कष्ट पहुँचना । उ० यहाँ तो बदबू के मारे नाक फटने लगती है ।

नाक बहना—१. नाक से मल निकलना । २ जुकाम होना ।

नाक बैठना—नाक चपटी होना । उ० नाक बैठी है, और तोते से उपमा देते हैं ।

नाक बैठाना—दे० 'नाक तोड देना' ।

नाक बोलना—सोते मे नाक से आवाज़ होना । उ० जब मैं सो जाता हूँ तो मेरी नाक बोलने लगती है ।

नाक-भौं चढ़ाना—घृणा करना । नफरत ज़ाहिर करना । उ० मुझे देखकर वह नाक-भौं चढाता है ।

नाक-भौं सिकोड़ना—दे० 'नाक-भौं चढाना' ।

नाक मिट्टी मे घिस-घिस कर मर जाना—बहुत प्रयत्न करने पर भी असफल रहना ।

नाक मे जान आना—परीशान होना । उ० खोजते-खोजते नाक मे जान आ गई, पर कही भी पता न चला ।

नाक मे जान करना—हैरान करना । उ० आपने तो मेरी नाक मे जान कर दी है, अब मैं यहाँ न रहूँगा ।

नाक मे तीर करना—बहुत परीशान करना । उ० तुमने तो मेरी नाक मे तीर कर रखी है । अब मुझे भी कोई रास्ता पकडना होगा ।

नाक मे तीर डालना—दे० 'नाक में तीर करना' ।

नाक मे तीर होना—बहुत परीशान हो जाना । उ० तुम्हारे मारे तो मेरी नाक मे तीर है ।

नाक मे नकेल डालना—पूरी तरह वश मे करना ।

नाक मे दम आना—परीशान होना । उ० नाक मे दम आ गया है, न तो वह बुढिया मरती है और न तो अच्छी ही होती है ।

नाक मे दम करना—बहुत परीशान करना । उ० इन नीचो ने मेरी नाक मे दम कर रखा है । मैं तो इस जगह को छोड देना चाहता हूँ ।

नाक मे दम होना—बहुत परीशान होना । उ० उसके मारे तो मेरी नाक मे दम है, न जीते बनता है न मरते ।

नाक मे नकेल न होना—कोई बधन न होना ।

नाक मे पानी डालना—बहुत तग करना ।

नाक मे बू आना—१. कुछ ज्ञात होना । २ अपने ऐब को पहचानना । उ० आप अपने ऐब से वाकिफ नही होता कोई, जैसे बू अपने जेहन की आती है कम नाक मे ।

नाक मे बोलना—१. बहुत धीरे-धीरे बोलना । उ० क्या नाक मे बोलते हो, साफ-साफ बोलो । २ नुनुवा कर बोलना । सभी अक्षरो मे अनुस्वार लगा कर बोलना । उ० वह तो नाक मे बोलता है ।

नाक मे सुतली पिरोना—१ बहुत कष्ट देना । उ० यार, नाक मे सुतली न पिराओ, नही तो मैं अपना रास्ता नापूँ । २ क़ाबू मे रखना, अधिकार मे रखना । उ० उसकी नाक मे सुतली न पिरोओगे तो वह तुम्हे चैन से बैठने न देगा ।

नाक रखना—दे० 'नाक रख लेना' ।

नाक रख लेना—इज़्ज़त बचा लेना। उ० आपने मेरी नाक रख ली, नही तो मैं मुंह दिखाने लायक भी नही रहता।

नाक रगड़ कर रह जाना—चेष्टा करने पर भी असफल रह जाना।

नाक रगड़ना—दे० 'बहुत खुशामद या विनती करना'। उ० आप कितनी भी नाक रगडें, वह आपको नही रख सकता।

नाक लगा कर बैठना—बडा इज़्ज़तवाला बनना। उ० अच्छा, आप अब नाक लगा कर बैठने लगे हैं।

नाक सिकोड़ना—घृणा दिखाना। उ० सुनि अघ नरकहुँ नाक सकोरी।

नाक सिकोड़ना—दे० 'नाक-भौं सिकोडना'।

नाक सिनकना—ज़ोर से हवा निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना।

नाक से आगे न देख पाना—बहुत ही सकुचित दृष्टि होना।

नाक से बोलना—दे० 'नाक मे बोलना'।

नाका छेकना—बद करना, आने-जाने का रास्ता रोक देना।

नाक़िस करना—ख़राब करना। उ० तुमने तो उसे पहले से भी ज़्यादा नाकिस कर दिया।

नाकों आना—तग हो जाना, हैरान हो जाना। उ० सहि देख्यो तुम्ह सो कह्यो, अब नाकहिं आई, कौन दिनहुँ दिन छीजै ?

नाको चने चबवाना—बहुत परीशान करना। उ० मेरे लडके ने मुझे नाको चने चबवा दिए।

नाकों चने चबाना—परीशान होना, तग होना। उ० उस काम के करने मे आपको नाको चने चबाने पडेंगे।

नाकों चने बिनवाना—बहुत परीशान करना। उ० दस मुख बिवस तिलोक लोकपति विकल बिनाए नाक चना है।

नाख़ून दुखना—तनिक भी कष्ट होना।

नाख़ून नीले होना—मरने के समीप होना। मृत्यु के लक्षण दिखलाई पडना। उ० उसके नाख़ून नीले हो गये हैं। अब तो घडी-दो-घडी का और मेहमान है।

नाख़ून पर लिखना—बतौर याददास्त किसी बात को नाख़ून पर टाँक लेना।

नाख़ून लेना—१ घोडे का ठोकर खाना। उ० रास्ते मे घोडे ने नाख़ून लिया, मैं तो गिरते-गिरते बचा। २ नाख़ून काटना। उ० नाख़ून लेते वक़्त मेरी उँगली कट गई।

नाख़ून से गोश्त जुदा करना—अपने को अलग करना। नज़दीक को अलग करना। उ० उनको लडवाते हैं मुझसे अगयार, गोश्त नाख़ून से जुदा करते हैं।

नाग को जगाना—ख़तरनाक स्थिति या व्यक्ति को छेडना।

नाग खेलना—ख़तरे का काम करना। उ० इस भयावनी रात मे उस जगल से होकर जाना नाग खेलना है।

नागवार गुज़रना—बुरा लगना। उ० यदि आपको नागवार गुज़रा हो तो माफ कीजिएगा।

नागा करना—गैरहाज़िर होना। उ० कल क्यो नागा हुए ? रोज़ाना आया करो, नही तो काम से हटा दूंगा।

नागा देना—दे० 'नागा करना'।

नाच उठना—प्रसन्न हो उठना।

नाच काछना—नाचने के लिए तैयार होना।

नाच दिखाना—१ तमाशा दिखाना। २ पाखड मचाना। उ० यहाँ नाच न दिखाओ, अपना रास्ता पकडो।

नाच नचाना—परीशान करना। उ० उस लडके ने मुझे ऐसी नाच नचाई कि मैं तग आ गया।

नाच-रग—खेल-तमाशा। उ० वहाँ आजकल खूब नाच-रग हो रहा है।

नाज़ उठाना—नख़रे सहना। उ० तुम उनके नाज़ उठाओ, वे तुम्हारे हैं, पर मुझे क्या पडी है ?

नाज़ करना—घमड करना, इतराना। उ० शायद उस शोख के कूचे से हवा आती है, नाज़ करते हुए जो बादेसबा आती है।

नाज़ मे रहना—१ घमड मे चूर रहना। २. नख़रे से भरा रहना।

नाज़ व न्यामत मे पालना—बहुत प्यार, दुलार से और आराम से पालना।

नाज़ से चलना—मटक-मटक कर या ख़रामा-ख़रामा चलना। उ० दामन अपना तू उठा चलता था इस नाज के साल, घेरा दामन का मुझे घेरे के ले आता था।

नाज़ाँ होना–इतराना, फख्र करना । उ० इस क़दर नाज़ाँ न हो ऐ शेख़ अपने जोहद पर, वदगी करने से तू शायद खुदा हो जाये ।

नाज़िल होना–उतरना ।

नाड़ी खोलना–सभोग करना । रति करना ।

नाड़ी गिरी होना–हालात ढीले होना ।

नाड़ी चलना–नाडी मे चाल होना, जीवित रहना । उ० अभी उसकी नाडी चल रही है, घवडाने की बात नही ।

नाडी छूटना–१ मर जाना । २ मरने के करीव होना ।

नाडी छूट जाना–नाडी न चलना, मर जाना । उ० महीनो बीमार रहने के वाद आज उसकी नाडी छूट गई ।

नाडी देखना–चिकित्सको का हाथ की नस पकड कर रोग का ज्ञान करना । नव्ज़ देखना । उ० नाडी देखते ही वैद्यजी ने वतला दिया कि अव वह न वचेगा ।

नाडी धरना–दे० 'नाडी देखना' ।

नाडी न वोलना–जान न रहना, या जान निकलने के करीव होना । उ० उसकी अव नाडी नही वोल रही है, चारपाई से उतार दो ।

नाड़ी पकड़ना–दे० 'नाडी देखना' ।

नाडी पहचानना–परिस्थिति या मन स्थिति को अच्छी तरह समझना ।

नाडी फड़कना–जोश आना ।

नातक़ह वद करना–दम वद करना, वोलने की मजाल न रहने देना । उ० नातकह वद किया तूने हर एक नातिक का, मुशरिके पक्का हुए सूरते उज्ज़ा खामोश ।

नाता टूटना–सवध न रहना । उ० उन लोगो से मेरा नाता सर्वदा के लिए टूट गया ।

नाता न रहना–दे० 'नाता टूटना' ।

नाद पर लगाना–घोडा, वैल, गाय तथा भैस आदि पशुओ को नाद के समीप खूंटे पर खाने के समय वांधना ताकि वे खा सके । उ० सवेरा हो गया, वैलो को नाद पर लगा दो ।

नादरी चढाना–वुरी तरह हराना ।

नादिरशाह वनना–१ वहुत कठोर और क्रूर वनना । २ वडा शानी वनना ।

नादिरशाही हुक्म होना–जो मन मे आने, वह करना । उ० अत्याचारी वादशाहो का नादिर-शाही हुक्म होता है ।

नानी का घर होना–आराम की जगह होना ।

नानी के नाम रोना–वहुत दुःखी होना । उ० क्या नानी के नाम रो रहे हो, दूसरा खरीद लेना ।

नानी मर जाना–दे० 'नानी याद आना' ।

नानी याद आना या आ जाना–होश ठिकाने हो जाना, प्राण सूख जाना । उ० पुलिस वालो को देखते ही उसकी नानी याद आ जाती है ।

नाप-तौल करना–ठीक-ठीक जाँच-परख करना ।

नाम उजागर करना–खूब प्रसिद्धि होना ।

नाम उछालना–१ वदनामी करना (व्यग्य) । उ० आपने नीच काम करके अपने परिवार का नाम खूब उछाला है । २ इज्ज़त वढाना । उ० आपने ही अपने खानदान का नाम उछाला है ।

नाम उठ जाना–दे० 'नाम उठना' ।

नाम उठना–१ नाम न रहना । उ० जो बिना कुछ किये मर जाते हैं, उनका नाम दुनिया से उठ जाता है । २. मर जाना ।

नाम कमाना–इज्ज़त पाना । उ० उसने यह पुस्तक लिख कर खूब नाम कमाया ।

नाम कर जाना–यादगार छोड जाना । उ० वे यह मन्दिर वना कर नाम कर गये ।

नाम करना–१ काम को अच्छी तरह न करना । उ० वे नाम करने के लिए पढते है, सच पूछिए तो उन्हे कुछ भी नही आता है । २ प्रतिष्ठा पाना । उ० नाम करना चाहते हो तो विद्वान् वनो ।

नाम का–नाम वाला । उ० मेरे गाँव मे इस नाम के दो आदमी मरे है ।

नाम का डका पिट जाना–यश फैलना ।

नाम के लिए–थोडा-सा । उ० नाम के लिए ही खा लो, उपवास न करो ।

नाम को–ज़रा-सा । उ० नाम को भोजन लाना, मुझे एकदम भूख नही है ।

नाम को नहीं–एक भी नही । उ० इस वगीचे मे तो नाम को भी आम नही है ।

नाम को थूकना–घृणा करना, धिक्कारना।

नाम को न रहना–तनिक भी न रहना।

नाम को बट्टा लगना या लगाना–वदनामी होना या करना।

नाम चढ़ना–नाम लिखा जाना। उ० तुम्हारे पिता के बाद इस ज़मीन पर तुम्हारा ही नाम चढेगा।

नाम चढाना–नाम लिखना। उ० मेरा भी नाम चढा लो।

नाम चमकना–यश फैलना, प्रतिष्ठा बढना। उ० आजकल उसका नाम खूब चमका हुआ है।

नाम चलना–यादगार वनी रहना। उ० अगर पुत्र न होगा तो नाम चलना भी कठिन हो जायगा।

नामचार को–केवल नाम को। उ० वह नामचार को पढता है, कुछ जानता नही।

नामजद करना–चुनना। उ० उम्मीदवार तो कई योग्य हैं, देखें लोग किसे नामजद करते हैं।

नाम जपना–नाम बार-वार रटना। उ० वह रात-दिन भगवान का नाम जपता है।

नाम डालना–वही आदि मे नाम से लिखना। उ० जो भी रुपया मैं ले जाऊँ, मेरे नाम डाल देना।

नाम डुवोना–अपने पर कलक लगाना। इज्ज़त गँवाना। उ० नाम डुवोना सरल है, पर नाम कमाना कठिन है। क्यो अपना नाम डुवो रहे हो ?

नाम डूवना–१ नाम मिट जाना। उ० उसके मरते ही उसके परिवार का नाम डूव गया। २ वेइज्ज़त होना। उ० तुमने ऐसा किया कि हमेशा के लिए तुम्हारा नाम डूव गया।

नाम तक न रहने देना–विलकुल समाप्त कर देना।

नाम धरना–वदनाम करना। उ० अगर नीच काम करोगे तो सव लोग नाम धरेंगे।

नाम-धराई होना–वदनामी होना।

नाम न लेना–जिक्र तक न करना। उ० उससे मुझे इतनी घृणा हो गई है कि अव उसका नाम भी नही ले सकता।

नाम निकलना–१ किसी वात के लिए मशहूर होना। उ० टूटे अग वैठाने मे उसका नाम निकला हुआ है। २ अपराधी का नाम प्रकट होना। उ० चोर का नाम निकल गया है, देखें कुछ माल मिलता है या नही।

नाम निकालना–दोपी का नाम प्रकट करना। ज्योतिप से या चिट्ठी डाल कर दोपी का नाम ज्ञात करना। उ० उस पडित ने किताव चुराने वाले का नाम निकाला है।

नाम पडना–१ नीलाम या लाटरी आदि मे नाम पडना। उ० कल लाटरी का निर्णय है, देखें किसका नाम पडता है। २. नाम रखा जाना। उ० उसका नाम केशव पडा है। ३ नाम होना। उ० तुम्हारे कलकत्ते वाले मित्र का क्या नाम पडता है ? ४ वही आदि मे नाम दर्ज किया जाना। ५. खर्च के खाते मे पडना।

नाम पर जान देना–इज्ज़त के लिए मर मिटना। उ० वडे लोग नाम पर जान दे देते हैं, और छोटे लोग दाम पर।

नाम पर धव्वा लगना–वदनामी होना। उ० अगर वडे आदमियो के नाम पर धव्वा लग गया तो उनका लोगो के सामने मुंह दिखाना भी दुशवार हो जाता है।

नाम पर मरना–दे० 'नाम पर जान देना'।

नाम पर मिटना–दे० 'नाम पर जान देना'।

नाम वाकी रहना या होना–१ यादगार वनी रहना। यश शेप रहना। उ० अच्छे आदमी चले जाते हैं, पर उनका नाम वाकी रहता है। २ यथार्थता से शून्य होना। उ० आज के व्राह्मण व्राह्मण नही रहे, केवल नाम वाकी है।

नाम विकना–नाम की मशहूरी से चीजो की कदर होना। उ० उनकी पुस्तक मे क्या है, केवल नाम विक रहा है।

नाम विगाड़ना–१ नाम को विगाड कर वोलना। उ० क्यो उसका नाम विगाडते हो ? २ वद-नाम करना। उ० उनका नाम विगाड कर आपको क्या लाभ होगा ? ३ वदनामी कराना। उ० अपना नाम न विगाडो, नही तो कोई पूछेगा भी नही।

नाम वेच डालना–मान के विरुद्ध काम करना। उ० वह ऐसा नीच हो गया है कि थोडे से लाभ के लिए अपना नाम वेच डालता है।

नाम मात्र–नाम को, ज़रा-सा। उ० नाम मात्र की चीनी भी मिला देना तो चटनी अच्छी होगी।

नाम मिटना–१ यादगार न रहना । उ० वह इतना बडा आदमी था, पर आज उसका नाम मिट गया। २ नाम न रहना। उ० देख ससार से ईश्वर का नाम कब मिटता है ?

नाम मे धब्बा लगना–नाम मे कलक लगना । उ० बुरे काम की वजह से उसके नाम मे धब्बा लग गया ।

नाम मे धब्बा लगाना–बदनामी करना । उ० अपने नाम मे धब्बा न लगाओ ।

नाम रखना–१ अवगुण बताना । २. यश बनाये रखना । उ० आपकी पहली पुस्तक ने आपका नाम अभी तक रखा है। ३ नामकरण करना। उ० अभी तक लडके का नाम नही रखा गया ।

नाम रोशन करना–खूब प्रसिद्धि होना ।

नाम लगना–अपराध मढा जाना । उ० यह दोष तुम्हारे नाम लगने वाला है, तुम चुपचाप चल दो, नही तो फँसोगे ।

नाम लगाना–अपराध किसी के सिर पर मढना। उ० इसको मेरे नाम न लगाओ । भगवान की कसम, उस दिन मैं नगर के बाहर था ।

नाम लेकर–१ याद करके। उ० बजरगबली का नाम लेकर कार्य शुरू करो, अवश्य ही सफलता मिलेगी। २ नाम के प्रभाव से। उ० अपने बाप-दादो का नाम लेकर वह आज भी इज्जत पाता है ।

नाम लेना–१ नाम जपना । उ० भगवान का नाम लेते रहो, वह अवश्य तुम्हारी मदद करेगा। २ गुणगान करना। उ० अगर आपने मेरी इस बार मदद कर दी, तो मैं मरते दम तक आपका नाम लेता रहूँगा। ३ बात चलाना। उ० अभी वहाँ तुम्हे इतना कष्ट मिला है और तुम फिर वहाँ जाने का नाम लेते हो ।

नाम-लेवा पानी-देवा न रहना–वश मे कोई न रहना ।

नाम से–१. ज़िक्र से। उ० जनसे मैंने सुना है कि वह इतना नीच है, मुझे उसके नाम से घृणा हो गई है। २ नाम के प्रभाव से। उ० अपने बाप-दादो के नाम से ही वह आज भी इज्ज़त पा रहा है। ३ नाम लेते हो। उ० लडके उसके नाम से ही डर जाते हैं। ४ मालिक समझ कर, मालिक बना कर। उ० मैं अपनी स्त्री के नाम से एकाउन्ट खोल रहा हूँ।

नाम से काँपना–नाम से डर जाना। उ० बहुत से लोग तो उसके नाम से ही काँपते हैं।

नाम से पुजना या पूजा जाना–नाम या प्रसिद्धि के कारण इज्ज़त पाना। उ० ब्राह्मण नाम से पूजे जा रहे हैं, नही तो आजकल उनमे है क्या ।

नाम से बिकना–नाम की मशहूरी से आदर पाना या नाम के कारण बिकना। उ० काग्रेस नाम से बिक रही है, नही तो उसमे अब कुछ भी नही है।

नाम ही नाम रह जाना–सिर्फ मशहूरी ही रह जाना। उ० मेरे गाँव के सेठ लोगो मे अब कुछ दम नही है, केवल नाम ही नाम रह गया है।

नाम होना–१. नाम मशहूर होना । उ० इस काम की वजह से उनका ख़ूब नाम हो गया है। २ दोष लगना। उ० इस डकैती मे उसका भी नाम है।

नामी होना–मशहूर होना । उ० वे पहलवानी मे बहुत नामी हो गये हैं।

नामो-निशाँ न होना–कुछ भी न होना ।

नामों-निशाँ मिटा देना–समूल नष्ट कर देना ।

नारदी विद्या–इधर-उधर लगाने की आदत ।

नारद–इधर की बात उधर लगाने वाला व्यक्ति ।

नार नवाना–लज्जा से नज़र नीची करना । उ० जबसे वे चोरी मे पकडे गये, मुझे देखते ही नार नवा लेते है ।

नारसिंही टोना–बडा गहरा टोना, ऐसा टोना जो अवश्य प्रभाव करे। उ० उसका टोना तो नारसिंही टोना होता है।

नारियल तोड़ना–यह देखना कि गर्भ मे लडका है या लडकी (मुसलमानो मे) शकुन निकालना। उ० नारियल तोडो, देखें क्या निकलता है ?

नाल एक ही जगह दबी होना–बहुत घनिष्ठता होना ।

नालिश करना–दावा करना। उ० आज मुझे बहुत से असामियो पर नालिश करनी है।

नालिश दाग़ना–दे० 'नालिश करना' ।

नाली का कीड़ा–नीच, कमीना। उ० नाली के कीडे को नाली की गदगी ही अच्छी लगती है, उसे मोहनभोग नही सुहाता। '

नाली मे बहाना–धन का दुरुपयोग करना। उ० इस तरह धन नाली मे बहाओगे तो चार दिन मे कगाल हो जाओगे।

नाव डूबना–नष्ट होना, अहित होना।

नाव पार लगा देना या लगाना–बेडा पार लगा देना, काम बना देना। किसी बीच मे अटके काम को पूरा कर देना। उ० भगवान ही मेरी नाव पार लगा सकते हैं।

नाव मँझधार मे पडना–विपत्ति की स्थिति होना।

नाव मे खाक उडाना–१ बेकार मे कलक लगाना। उ० नाव मे ख़ाक न उडाओ, आखिर मैं भी तो तुम्हारा मित्र हूँ। २. बे-सिर-पैर की बात करना। उ० तुम्हारा यह नाव मे खाक उडाना मेरी समझ मे नही आता।

नाव मे धूल उडाना–दे० 'नाव मे खाक उडाना'।

नाव सूखे मे चलाना–असभव काम करने की कोशिश करना। उ० इस मूर्ख को पढाना नाव सूखे मे चलाना है।

नासूर पडना–१ ऐसा ज़ख्म होना जो कभी भरे नही। उ० छिडका है पदगो ने अजब जख्म पर नमक, नासूर पड गए है जिगर मे बजाय दाग। २ 'आतिश' न पूछ हाल तू मुझ दर्द-मद का, सीने मे दाग दाग नासूर पड गया।

नासूर भरना–हमेशा जारी रहने वाले ज़ख्म का भर जाना। उ० ख़ुदाया भर गए क्यूँ जो कुछ नासूर सीने मे, घुटा जाता है तगी से दिले रजूर सीने मे।

नाहनूह करना–इन्कार करना। उ० अगर नाहनूह ही करना था तो क्यो नही पहले ही कह दिया ?

निगाझोरी देना–दे० 'नगाझोली लेना'।

निगाझोरी लेना–दे० 'नगाझोली लेना।

निकट आना–घनिष्ठता होना।

निकल चलना–तरक्की होना। उ० इस काम को शुरू करो, अगर निकल चलेगा तो ठीक ही है, नही तो छोड देना।

निकल जाना–१ न रह जाना। बिक जाना। उ० दूकान मे जितने ख़राब माल थे, सब मेले मे निकल गये। २. चला जाना। उ० वह बहुत दूर निकल गया, अब आपकी बात न सुनेगा। ३ न पकड जाना, भाग जाना। उ० चोर सबके सामने से निकल गया। ४ घट जाना, अलग हो जाना। उ० बहुत चीजें निकल भी तो गई है, आखिर वज़न कम क्यो न हो ?

निकल पड़ना–१ चल देना। उ० जब निकल ही पडा हूँ तो चला जाऊँगा। २ बाहर आना। उ० निकल पडना तो पता चलेगा, अभी तो भीतर से न बोलते हो। ३ बहुत क्रोधित होना। उ० मैं मना ही करता रहा और तुम निकल पडे।

निकाल डालना–१ अलग करना, छाँटना। उ० इनमे जो आम सडे हो, उन्हे निकाल डालो। २ बेच देना। उ० कुछ माल निकाल डालो।

निकाल देना–१ बाहर करना। उ० ऐसे नीच को अपने घर से निकाल दो। २ कम करना। उ० १० मे से ५ निकाल दो।

निकालना या निकाल लाना–किसी स्त्री को भगा लाना। उ० ऐसे शादी नही होती तो कही से किसी को निकाल ही लाओ।

निकाल लेना या निकाल ले जाना–किसी औरत को भगा ले जाना। उ० मेरे गाँव के गुडे उसकी लडकी को निकाल ले गए।

निकाह पढाना–विवाह करना। उ० सलीमा बडी हो गई, अब कही निकाह पढा दो। इस्लामी मज़हब।

निगाह पर चढना–१ अप्रिय लगना। २ प्रिय लगना।

निगहबानी करना–दे० 'निगाहबानी करना'।

निगाह अच्छी न होना–बदलचन होना।

निगाह चार होना–सामना होना।

निगाह उठाना–इच्छा करना।

निगाह टेढ़ी होना–असतुष्ट या रुष्ट होना।

निगाहबानी रखना–दे० 'निगाहबानी करना'।

निगाह मे गिर जाना–पूर्व प्रतिष्ठित मर्यादा मे कमी आना।

निगाहबानी करना–देखभाल करना। उ० जब तक मैं न आऊँ, मेरे घर की निगाहबानी करना।

निगोड़ा-नाथा होना—बिना वारिस के होना। उ० बेचारा निगोड़ा-नाथा हो गया, अब तो और खाने बिना मरेगा।

निचला बैठना—सभ्यता से बैठना। उ० निचला बैठना सीखो।

निछक्के मे—एकान्त मे। उ० निछक्के मे जाकर पढो तो कुछ याद भी हो।

निछावर करना—१. बलिदान करना, वारना। उ० मैं उसके लिए अपना प्राण तक निछावर करने को तैयार हूँ। २ ओइछ कर रुपया-पैसा ग़रीबो को देना। उ० बहुत दिन पर यह शुभ दिन आया है, कुछ निछावर करो।

निछावर होना—बलिदान होना, वारा जाना। उ० भारत की स्वतंत्रता के लिए सैंकडो वीर निछावर हुए। तुम भी निछावर होने के लिए तैयार रहो।

निज करके—अवश्य, ज़रूर। उ० निज करके मैं आऊँगा।

निज का—अपना। उ० इनमे निज की जो चीजें हैं, उन्हें अलग कर दो।

नित खोदना नित पानी पीना—रोज़ कमाना रोज़ खाना।

निद्रा देवी की शरण लेना—सो जाना।

निन्नानवे के फेर मे आना—धन बढाने की फ़िक्र मे रहना। उ० जो निन्नानवे के फेर मे आ गया, वह क्या अच्छी तरह रहेगा ?

निन्नानवे के फेर मे पड़ना—रुपया बटोरने के चक्कर मे पडना। उ० निन्नानवे के फेर मे पडा आदमी खाना-पीना भी भूल जाता है।

निवट जाना—१ फुरसत पाना। उ० इस काम से निवट गया। २. भोग लेना।

निवड जाना—खतम हो जाना, बाकी न रहना। उ० फ़ुरकत की शब मे ज़ीस्त ने अपनी वफा न की, कब्ले सहर चिराग हमारा बिगड गया।

निबाह देना—१. किसी के साथ बसर कर देना, गुज़ार देना। उ० लैला का नाम ज़िंदा है अब तक जहान मे, तुम भी निबाह दो किसी अहले वफा के साथ। २ किसी तरह ज़िंदगी बिताना। उ० भगवान ! मेरी भी निबाह दो।

निबुआ-नोन चटा देना या चाटना—कुछ भी न देना या पाना।

निमकौड़ी बीनना—आलोचना करना, नुक्ताचीनी करना। उ० मैंने जो किया है, ठीक किया है, आपको निमकौडी बीनने की कोई आवश्यकता नही है।

नियत बांधना—दृढ निश्चय करना। उ० वह शादी न करने की नीयत बाँध चुका है।

नियत बिगडना—दे० 'बदनियत होना'।

नियत में फर्क आना—दे० 'नियत बिगडना'।

नियम का पालन करना—क़ायदे के अनुसार काम करना। उ० सबको अपने नियम का पालन करना चाहिये।

नियम का भंग करना—नियम के खिलाफ करना। उ० नियम का भग करने वाला दण्ड का भागी होगा।

नियम भंग करना—दे० 'नियम का भग करना'।

निरने मुंह—दे० 'नहार-मुँह'।

निरश मुंह—दे० 'नहार-मुँह'।

निशान उठाना—१. नेता बनना। उ० ४२ के विद्रोह का निशान गाधी जी ने ही उठाया था। २. बगावत करना। उ० स्वतन्त्रता के लिए यहाँ कई बार निशान उठाये गए।

निशान करना—अपने वार का लक्ष्य करना। उ० पहले निशान करो तब बदूक चलाओ।

निशान खडा करना—दे० 'निशान उठाना'।

निशान देना—१ चिह्न बताना। उ० कोई निशान दे दो तो पकडने मे आसानी रहेगी। २ पता बताना। उ० उसने तो यही का निशान दिया था।

निशान बनाना—मारने के लिए लक्ष्य निश्चित करना। उ० मैंने उसी बिंदु को निशान बनाया है।

निशाना बनना—दे० 'निशाना होना'।

निशाना बांधना—निशाना मारने के लिए हथियार साधना। सीध ठीक करना। उ० देखो बहेलिया निशाना बांध रहा है।

निशाना मारना—देख कर अपने निशान को मारना। उ० मैंने निशाना तो मारा, परन्तु चूक गया।

निशाना लगाना—दे० 'निशाना मारना'।

निशाना साधना—दे० 'निशाना बांधना'।

निशाना होना—मारा जाना। वार के लिए लक्ष्य होना। उ० वह ४२ मे पुलिस की गोलियों का निशाना हो गया।

निष्कंटक करना—सब अडचनो को दूर करना।

निसबत होना—मुक़ाबिला करना। उ० उन दोनो की निसबत क्या दे रहे हो, अरे कहाँ राजा भोज कहाँ भोजवा तेली।

निसा भर—मन भर। उ० आज तो तुमने निसा भर शराब पी।

निसार करना—न्यौछावर करना, वारना। उ० हज़ार हैफ कि समझे न तुम हमे और हम हमेशा करते रहे तलक निसार अपना।

निसार होना—न्यौछावर होना, कुर्बान होना। वारी जाना। उ० गिर्द फिरती हैं चार के 'मजरूह', यानी होती निसार आँखें हैं।

निहाल कर देना—दे० 'निहाल करना'।

निहाल करना—सतुष्ट कर देना। उ० आज के भोज मे तो उन्होने करनो को निहाल कर दिया।

निहाल होना—प्रसन्न होना। उ० आज तो आप घडे निहाल हैं।

निहोरा मानना—कृतज्ञ होना। उ० इस दया के लिए मैं आपका निहोरा मानता हूँ।

नींद आ जाना—१ सो जाना। आँख लग जाना। उ० जो नीद आ गई तुमको तो हाँ समझ लूंगा, नही-नही ये तुम्हारी मुझे पसद नही।

नींद उचट जाना—दे० 'नीद उचटना'।

नींद उचटना—नीद जाती रहना, नीद खुलना। उ० उनकी याद के कारण मेरी नीद उचट गई। सोते-सोते जब पुकार उठता हूँ अपने यार को, मरकदो के सोने वालो की उचट जाती है नीद।

नींद उड जाना—ज़रा भी नीद न आना। उ० सोऊँ मैं किस तरह इन आँखो मे कब आती है नीद, दूर से सूरत को मेरी देख उड जाती है नीद।

नींद उडाना—नीद उचाट करना, पलक से पलक न लगने देना। उ० तुम्हारे हिज्र ने ऐसी मेरी उडाई नीद, हज़ारो करवटें बदली मगर न आई नीद।

नींद का दुखिया—अत्यन्त शयन करने वाला (व्यग्य)। उ० यह तो बेचारा नीद का दुखिया है, केवल १६ घटे सोता है।

नींद खराब करना या कर देना—सोते में विघ्न डालना। उ० तुमने आकर मेरी नीद खराब कर दी।

नींद खुलना—उठना, जागना। उ० आज तो मेरी नीद सुबह ही खुल गई थी।

नींद खोना—सोने मे देर करना। उ० १० बज चुके हैं, जाओ, नीद न खोओ।

नींद गँवाना—दे० 'नीद खोना'।

नींद जाना—नीद टूट जाना, जग जाना।

नींद न आना—१. आँख न लगना। उ० कल वस्ल मे भी नीद न आई तमाम शब, एक बात-बात पर थी लडाई तमाम शब। २ चैन न मिलना।

नींद पडना—ऊँघाई आना। उ० नीद पड़ी न आज बरसो से, न जाने वे तो गए नीद क्यो गई?

नींद भर सोना—खूब सोना। पूरी नीद सोना। उ० महीनो बाद तो हम नीद भर सोये।

नींद-भूख भूल जाना—बहुत बेचैन होना।

नींद मारना—सोना। उ० आप यहाँ नीद मार रहे हैं और मैं मर रहा हूँ।

नींद लेना—दे० 'नीद मारना'।

नींद हराम करना—सोने न देना। उ० नीद न हराम करो, कही और जाकर बड़बडाओ। हराम नीद की एकरार वस्ल जना ने, इलाही कोई किसी का उम्मीदवार न हो।

नींद हराम होना—बिल्कुल न सोना। उ० परीक्षा की तैयारी मे भी नीद हराम हो गई हैं।

नीक लगना—अच्छा लगना। उ० यह मकान तो बड़ा नीक लगता है।

नीच-ऊँच समझना—अच्छी तरह जानना, अच्छे और बुरे दोनो पक्ष समझना। उ० नीच-ऊँच समझ कर काम मे हाथ लगाना, नही तो धोखा खाओगे।

नीच-ऊँच समझाना—१. गुण-दोष बताना। किसी समस्या के दोनो पक्ष समझाना। उ० मैंने तो नीच-ऊँच समझा दिया, अब तुम जानो और तुम्हारा काम जाने। २. गलती-सही समझाकर टाल देना। उ० नीच-ऊँच समझा कर विदा करो, क्या उसके पीछे पडे हो?

नीचा-ऊँचा दिखाना—१ लज्जित करना। उ० क्यो हर घडी मुझे नीचा-ऊँचा दिखाते हो। मैं बेवकूफ़ ही सही, पर तुमसे मतलब? २ पराजित करना। उ० वह तुम्हें नीचा-ऊँचा

दिखाने के फेर मे पडा है। ३ वेइज्जत करना।

नीचा-ऊँचा सुनाना—दे० 'ऊँचा-नीचा सुनाना'।

नीचा खाना—१ शर्मिदा होना। उ० आज तो वह नीचा खा गया। २ हार जाना। उ० कमज़ोर थे, इसलिए नीचा खा गए। ३. तिरस्कृत होना। उ० नीचा खाकर जीने से तो मर जाना ही अच्छा है।

नीचा दिखाना—१ दे० 'नीचा-ऊँचा दिखाना'। २ ऐंठ दूर करना। उ० उसने तो खूब नीचा दिखाया।

नीचा देखना—दे० 'नीचा खाना'।

नीची दृष्टि से देखना—१ निरादर करना, बुरा समझना। उ० आज तो सभी कांग्रेस को नीची दृष्टि से देखते हैं। २ बुरी नियत से देखना।

नीचे गिरना—पतित होना।

नीचे होकर रहना—दबकर रहना।

नीठ-नीठ करके—किसी तरह से। उ० नीठ-नीठ करके वह पास हो गया है, यही बहुत है।

नीम लगाकर आम खाना चाहना—बुरा काम करके भला फल पाने की आशा करना।

नीयत डावाँडोल होना—ईमान मे अतर आना। उ० वह इतना ईमानदार था, पर थोडा-सा धन देख कर उसकी नीयत डावाँडोल हो गई।

नीयत डिगना या डिग जाना—१ ईमान डिगना। दिल मे वेईमानी आना। उ० १० रुपये पर ही नीयत डिग गई? २ बुरा काम करने की इच्छा होना।

नीयत बदल जाना—१ विचार बदल जाना। उ० उसकी वात से ऐसा साबित होता है कि अब उसकी नीयत बदल गई है। २. बुरी नीयत होना। उ० तुम्हारी नीयत बदल गई, अब तुम्हारा विश्वास नही।

नीयत बद होना—१ बुरे विचार का होना। उ० जहाँ किसी की बहू-बेटी देखता है, तुरन्त उसकी नीयत बद हो जाती है। २ बेईमान होना। उ० थोडे से लाभ के लिए बद नीयत होना ठीक नही है।

नीयत भरना—दे० 'मन भरना'।

नीयत लगी रहना—इच्छा या चाह रहना। उ० तुम्हारी छडी पर हमारी नीयत लगी है।

नीर-क्षीरवत् होना—पूर्णरूपेण मिलना। उ० नीर-क्षीरवत् होने की मैत्री ही स्थायी होती है।

नीर-क्षीर विवेक करना—सत्य-असत्य विचार करना।

नीर ढल जाना—बेहया हो जाना। उ० उसका तो नीर ढल गया है, उसे क्या?

नीर ढलना—आँसू ढलना। उ० तुम तो ऐसे हो कि नीर ढलते देर ही नही होती।

नील करना—दे० 'नील डालना'।

नील का खेत होना—दोष या कलक की जगह होना। उ० वह स्थान नील का खेत है। जरा सँभल कर जाना।

नील का टीका लगाना—बदनाम करना। उ० क्यो बेकार मे मुझे नील का टीका लगाते हो? उससे मेरा कोई सबध नही था।

नील की सलाई फिरवा देना—नेत्रहीन कर देना। उ० मौर्य-युग मे नील की सलाई फिरवा देना साधारण दंड था।

नील घोटना—व्यर्थ मे किसी उलझन मे पडना। उ० मैं क्यो नील घोटूँ? मुझे कोई अपना काम नही है क्या?

नील डालना—बडी मार मारना, खूब मारना। उ० पुलिस ने मारे डडो के उसके शरीर पर नील डाल दी और बेहोश हो गया।

नील बिगडना—१ अफवाह फैलाना। उ० उसके विषय मे तो खूब नील बिगडा है। २ हानि होना। उ० व्यापार मे तो खूब नील बिगडा। ३ आचरण खराब होना। उ० गुडो के साथ मे पडकर तुम्हारा भी नील बिगड गया। ४ चेहरा बदरंग होना। उ० शेर को देखते ही उसका नील बिगड गया। ५ बुरा समय आना। उ० आजकल तो हमारा नील बिगडा है। ६. बुद्धि मे न घँसना। उ० उसका तो नील बिगडा है, कुछ भी कहो, समझता ही नही।

नीला पड़ना—१ नीले रग का हो जाना। उ० नदी का पानी नीला पड़ गया है। २ भयभीत होना। ३. दुर्बल होना।

नीला-पीला होना या हो जाना—१ चेहरे का रग बिगड जाना। उ० थोडी-सी वात पर वह नीला-पीला हो गया। २ क्रोधित हो जाना। उ० नीले-पीले क्यो होते हो, मैं इसका जिम्मा तो लिए नही था।

नीलाम पर चढ़ना–नीलाम होना। उ० जब वह गया तो उसकी सारी चीज़ें नीलाम पर चढ चुकी थीं।

नीलाम होना–नीलाम से बिकना, बोली पर बेचा जाना। उ० हूराने खुल्द बोलती हैं बढ के बोलियाँ, नीलाम हो रहा है तुम्हारे शहीद का।

नीली-पीली आँखें करना–बहुत गुस्से से देखना। उ० ग़ैरो से लडाते ये नुकीली आँखें। क्यो करते हो हम पै नीली-पीली आँखें।

नीले-पीले दीदे करना–नाराज़ होकर देखना।

नींव का पत्थर होना–१ मूल सहारा होना। उ० वही तो तुम्हारी नीव का पत्थर है उसे कही न जाने देना। २ आरम्भ या शुरू का होना। उ० अभी नीव का पत्थर है, आगे देखो क्या होता है?

नींव जमाना–१ शुरू करना। उ० चद्रगुप्त ने मौर्य राज्य की नीव जमाई। २ दृढ करना। उ० अकबर ने मुगल राज्य की नीव जमाई। ३ गर्भ स्थित करना। उ० तुमने तो नीव जमा दी।

नींव डालना–स्थापना करना।

नींव पडना–१. मकान की नीव पडना। उ० हमारे मकान की नीव पड गई है। २. सहारा होना। ३ शुरू होना। उ० झगडे की नीव तो उसी दिन पड गई।

नींव भरना–१ नीव के गड्ढे को भरना। उ० मकान बनाने का विचार बदल गया, अत नींव भर दी गई। २ नीव तक दीवार का उठ जाना।

नींव होना–मूल कारण होना। उ० इस झगडे की नीव तुम ही हो।

नुक़ताचीनी करना–ऐब निकालना, दोष ढूंढना। उ० कुछ काम भी करो, केवल नुकताचीनी ही न करो।

नुक़सान उठाना–घाटा या हानि उठाना। उ० हमे अरहर के व्यापार मे नुक़सान उठाना पडा।

नुक़सान करना–१ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होना। उ० शराब सभी को नुक़सान करती है। २ बरबाद करना। उ० व्यर्थ मे पैसे नुक़सान न करो।

नुक़सान पहुँचना–घाटा होना। उ० उसके साझे के कारण ही हमे नुकसान पहुँचा।

नुक़सान पहुँचाना–हानि करवाना। उ० भरसक किसी को नुक़सान न पहुँचाओ।

नुक़सान भरना–घाटा पूरा करना। उ० वह तो चला गया और मुझे सारा नुकसान भरना पडा।

नुकीला स्वर–तीखा, हृदय पर आघात करने वाला स्वर।

नुक़्तये नज़र–दे० 'दृष्टि-बिंदु'।

नुत्फा ठहरना–गर्भ रहना। उ० उसके घर मे नुत्फा ठहरा है।

नुत्फा हराम होना–क्षुद्र या महानीच होना। उ० उसका क्या, उसकी तो सारी पार्टी नुत्फा हराम है।

नुमाइशी काम–दिखावटी काम, सिर्फ दिखाने योग्य काम। उ० आपने आज तक गम्भीरता-पूर्वक भी कोई काम किया है, या नुमाइशी काम ही करते रहे हो?

नुस्खा लिखना–दवाओ की सूची लिखना। उ० वैद्य ने मेरे काढे का नुस्खा लिख दिया है।

नुस्खा बाँधना-नुस्खे के अनुसार दवा देना या बाँधना। उ० जाओ वह तुरन्त नुस्खा बाँध देगा।

नूर का तडका–बहुत सवेरे। उ० तुम तैयार रहना, मैं नूर के तडके पहुँचूंगा।

नूर बरसना–बहुत खूबसूरत होना। उ० नूर-जहाँ के चेहरे से नूर बरसता था।

नेउर होना–चुपके से आने-जाने वाला होना।

नेकी उतारना–नेकी का बदला देना।

नेकी कर कुएँ में डालना–भलाई करके भूल जाना।

नेकी-बदी–बुराई-भलाई। उ० ससार मे नेकी-बदी रह जाती है।

नेग करना–अच्छी घडी मे प्रारभ करना। उ० नेक करो। काम तो हो ही जायेगा।

नेग देना–इनाम या दक्षिणा देना। उ० उसने ब्राह्मणो को बहुत नेग दिया। पवनियो को नेग दे दो।

नेग लगना–१ शुभ कार्य मे दक्षिणा लगना। उ० शादी-विवाह में खूब नेग लगता है। २ अच्छे काम मे आना। उ० उसकी कमाई नेग लगी।

नेम-उपवास करना–नियम-सयम से जीवन बिताना।

नेवता फिरना–घर-घर जाकर निमन्त्रित करना।

नेवा नास करना–सत्यानाश करना।

नेवा नास खोना–बर्बाद या सत्यानाश करना।

नेवा नास जाना–सत्यानाश हो जाना। उ० तेरा नेवा नास जाय।

नेवा नास होना–सत्यानाश होना ,जड़-बुनियाद से जाना।

नेजा हिलाना–भाला-बरछी फेरना। उ० तुम्हारे नेजा हिलाने से मैं नही डर सकता।

नेह जोड़ना–प्रेम करना।

नेह टूटना–स्नेह-सम्बन्ध न रहना।

नैन आकाश पर चढना–बहुत गर्व करना।

नैन गँवाना–१. अन्धा होना। उ० अपने नैन गँवाय के दर-दर मांगे भीख। २ मुहताज होना।

नैन से झड़ी लगना–बहुत रोना।

नैनो का तारा–दे० 'आँखो का तारा'।

नोक की लेना–डीग मारना। उ० चलो हटो, केवल नोक की लेते हो, समय पर कुछ नहीं करते।

नोंक-झोंक–ठाट-बाट, धूम-धाम। उ० बडी नोक-झोक से आ रहे हैं।

नोक बनाना–सँवारना, बनाना-चोनाना। उ० नोक बनाने से वच्चा सुन्दर नही हो सकता।

नोकर-चाकर–१ नौकर, इत्यादि। उ० उनके नोकर-चाकर आ रहे हैं। २ छोटे या निम्न स्तर के आदमी। ३ तुच्छ, अपने से छोटा। उ० मुझे जो नोकर-चाकर समझता है, मैं उसे भी वही समझता हूँ।

नोकर-चाकर–दे० 'नौकर-चाकर'।

नोक रह जाना–शान रह जाना। उ० किसी तरह इसकी नोक रह गई।

नोन-तेल-लकड़ी की चिंता–गृहस्थी के भरण-पोषण की चिंता।

नौ दिन में अढ़ाई कोस चलना–बहुत धीमी गति से काम करना।

नोन-राई उतारना–दे० 'राई-नोन उतारना'।

नौकरी देना–दासत्व करना। नौकरी करना। उ० वह तो २० रु० पर रात-दिन नौकरी देता है।

नौकरी बजाना–दे० 'नौकरी देना'।

नौकरी से लगना–नौकर होना। उ० वह तो नौकरी से लग गया।

नौ-दो-ग्यारह होना–झट चल देना। टसक जाना। उ० वह रुपया लेकर नौ-दो-ग्यारह हो गया।

नौ निध (निधि) बारह सिध (सिद्धि) होना–१ सुख मे होना। उ० उसके घर तो नौ निध बारह सिध हैं। २ कामना पूर्ण होना। उ० जब पास हो जाऊँ तो नौ निध बारह सिध हो जाय।

नौबत आ जाना–१ हालत बिगड़ जाना। २ दशा हो जाना। उ० कुछ ही दिनो मे बेकार की नौबत आ जाएगी।

नौबत की टंकोर–दे० 'नौबत बजाकर'।

नौबत को पहुचना या पहुँच जाना–हालत होना। उ० इस समय सारा देश भूखो मरने की नौबत को पहुँच गया है।

नौबत झड़ना–१ उत्सव या प्रसन्नता मनाया जाना। उ० विवाह मे सभी के यहाँ नौबत झड़ती है। २ तेज या धाक होना। उ० उसकी तो यहाँ नौबत झड़ती है।

नौबत बजना–दे० 'नौबत झड़ना'।

नौबत बजा कर–खुले आम, ढिंढोरा पीट कर। उ० डाकुओ ने नौबत बजा कर डाका डाला।

नौबत होना–दुर्दशा होना। उ० आज तो बडी नौबत हुई, होश रहा तो फिर उनके यहाँ न जाऊँगा।

न्यौता करना–किसी के निमत्रण पर सामान भेजना या सामान आदि लेकर जाना। उ० उनका भी न्यौता करना है।

न्यौछावर करना–दे० 'निछावर करना'।

न्योड़ा कर धोना–खूब मल कर धोना। उ० न्योडा कर सर धो डालो।

प

पक का पंकज होना—धूल का हीरा या गुदडी का लाल होना। बुरी जगह मे अच्छी चीज का पैदा होना। उ० वह चमार का लडका पक का पकज है।

पक मे गिरना—दे० 'पक मे पडना'।

पक मे पडना—आफत मे पडना। उ० मैं भी ऐसे पक मे पडा कि कुछ कहते नही बनता।

पख जमना—१. मौत नज़दीक आना। उ० इस चीटे को पख जम रहे हैं। [कहा जाता है कि चीटे मरने को होते है तो उन्हे पख जम जाता है।] २. न रहने का लक्षण होना। उ० यह लडका फिर भगेगा। मैं देख रहा हूँ, इसे पख जम रहे हैं। ३ बुरे रास्ते पर जाना। उ० अब तुम्हे भी पख जमने लगे।

पख तौलना—बल आज़माना। उ० अभी से पख तौल रहे हो। बडे होकर तो कयामत करोगे।

पख न मारना—न पहुँच पाना, पहुँच न सकना। उ० वहाँ तुम पख नही मार सकते। वह जगह बडी अगम्य है।

पख पसारना—१ पर फैलाना। २ ओढने की चादर को इस प्रकार ओढना कि एक दामन लटकता रहे।

पख लगना—दे० 'पख जमना'।

पखा करना—पखे से हवा करना। उ० अभी मैं पिता जी को पखा कर रहा हूँ, फिर आना।

पखा झलना—दे० 'पखा करना'।

पखा डुलाना—दे० 'पखा करना'।

पखे लग जाना—हौल दिल हो जाना, दिल का तेज़ी से धडकना।

पगत उठना—भोज आदि मे भोजन करने वालो का खाकर उठना। उ० पगत उठ गई, जूठा हटा दो।

पगत बैठना—बहुत से लोगो का एकसाथ बैठ कर भोजन करना। उ० पगत बैठ रही है, तुम भी आ जाओ।

पगु हो जाना—कुछ करने लायक न रहना।

पच की दुहाई—अत्याचार या कष्ट दूर करने के लिए जनता से निहोरा। उ० वह बुढिया पच की दुहाई दे रही है।

पंच की भीख—१ जनता की कृपा, सबकी दया। उ० इस कार्य के लिए मैं पच की भीख चाहता हूँ। २. सार्वजनिक चदा। उ० पंच की भीख का यह फड है, इसका दुरुपयोग न करो।

पचगव्य पीना—किसी पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए पचगव्य (गोबर, गोमूत्र,घी, दूध तथा दही) पीकर शुद्ध होना। उ० उसमे चमार के साथ खा लिया है, जब तक पचगव्य न पियेगा, घर मे न आने दूँगा।

पचत्व को प्राप्त होना—मरना। उ० वह बुढिया आज सुबह पचत्व को प्राप्त हो गई।

पच-परमेश्वर—पाँच आदमी मिल कर जो कहे, वह ईश्वर के कहने के समान है। उ० चाहे कुछ हो, पच परमेश्वर की बात तो सबको माननी पड़ेगी।

पच बदना—दे० 'पच मानना'।

पच मानना—लडाई-झगडे के निर्णय के लिए एक या कई आदमी को न्यायकर्त्ता मानना। उ० जो निष्पक्ष हो, उसी को पच मानना चाहिये।

पच-सुहाता करना—सबको भला लगने वाला काम करना।

पचायत जोडना—पचो को जमा करना। उ० बिना पचायत जोडे काम चलने का नही।

पंछी का पर भी न मार सकना—किसी की भी पहुँच न होना।

पंजर-पंजर ढीला होना—१ एकदम थक जाना। उ० कई दिनो से काम करते-करते मेरा पजर-पजर ढीला हो गया है। २ बुढापे के कारण बहुत थक जाना। उ० उसका तो पजर-पजर ढीला हो गया है।

पजर होना—दुर्बल होना। उ० इतने ही दिन की बीमारी से वह पंजर हो गया है।

पजा करना—दे० 'पजा लडाना'।

पंजा फेरना—दे० 'पजा मोडना'।

पजा-छक्का करना—जुआ खेलना। उ० पजा-छक्का करने से बहुतो के दीवाले होते देखे हैं, पर किसी को कुछ कमाते नही देखा।

पजा फैलाना—लेने की कोशिश करना। उ० आप व्यर्थ मे पजा फैला रहे हैं, वह चीज़ आपको नही मिल सकती।

पंजा बढ़ाना–दे० 'पजा फैलाना'।

पंजा मारना–झपट्टा मारना। उ० चील पजा मार कर लडके के हाथ की मिठाई ले गई।

पजा मोड़ना–पजा लडाने मे दूसरे का पजा मरोडना। उ० तुम मेरा पजा नही मोड सकते।

पंजा लड़ाना–हाथ मे हाथ डाल कर मरोडने की कोशिश करना। उ० क्या आप भी मुझ जैसे कमज़ोर आदमी से पजा लडा रहे है ?

पजा ले जाना–दे० 'पजा मोडना'।

पजे झाड़ कर पीछे पड़ना–दे० 'हाथ धोकर पीछे पडना'।

पजे झाड कर लिपटना–सताने के लिए तैयार होना।

पजे मे आना–१ अधिकार मे आना। उ० वह आपके पजे मे कभी नही आ सकता। २ पकड मे आना।

पजे मे लाना–अधिकार मे करना। उ० यो उसे पजे मे लाना वडा कठिन है, पर कोई-न-कोई रास्ता निकालना ही होगा।

पंजे से छूटना–चगुल या वश मे से निकल जाना। उ० उसके पजे से छूटना मुश्किल है।

पजे से निकलना–दे० 'पजे से छूटना'।

पजो के वल चलना–१ अभिमान करना। उ० पजो के बल चलने वाले कभी तरक्की नही करते। २ वहुत तेज़ चलना।

पडित होना–१ विद्वान् होना। २ आडवर फैलाने वाला या ढोग रचने वाला होना। ३. सफाई से रहने वाला होना। ४ पुजारी होना। ५ बुराइयो (झूठ, हिंसा, व्यभिचार) से दूर रहने वाला होना।

पथ गहना–रास्ता लेना। उ० अपना पथ गहो, मेरे काम से तुम्हे क्या मतलब ?

पथ चलाना–नया धर्म या सप्रदाय चलाना।

पथ दिखलाना या दिखाना–१ शिक्षा देना। उ० पथ दिखाना बडा सरल है, पर अनुसरण करना उतना ही कठिन। २ रास्ता दिखाना। उ० मुझे पथ दिखला दो।

पथ देखना–इन्तज़ार करना। उ० आज चार दिनो से आपका पथ देख रहा हूँ, पर कही दिखाई तक न पडे।

पंथ निहारना–दे० 'पथ देखना'।

पंथ पर लगाना–उचित काम मे लगाना। उ० अपने लडको को पथ पर लगा दो, नही तो पछताओगे।

पंथ पर लाना–उचित रास्ते पर लाना। उ० लडके को पथ पर लाओ, नही तो खराव हो जायगा।

पथ लगना–पीछा करना, पीछे पडना। उ० भाई मेरे पथ न लगो।

पथ सेना–रास्ता देखना। उ० कब से पंथ से रहा हूँ, मगर वही नहीं आया।

पकड़ छूटना–वश न रहना।

पकड़ जाना–कैद होना। पकड मे आना। उ० वह भी पकडा गया।

पकड़-धकड़ होना–गिरफ्तारी होना। उ० उस रात के डाके के सिलसिले में आज खूब पकड-धकड हो रही है।

पकड पकडना–वाद-विवाद मे बात पकडना। उ० पकड न पकडो, कायदे से बात करो।

पकड मे आना–चुगल मे आना या फँसना। उ० इतने दिन बाद तो पकड मे आये हो, अब बोलो।

पकवाई देकर कच्चा खाना–रुपये खर्च करने पर भी काम खराब होना। उ० मूर्खों को पकवाई देकर भी कच्चा खाना पडता है।

पका आम होना–बिल्कुल वृद्ध होना। मरने के करीब होना। उ० वह तो पका आम है, उसका क्या विश्वास, जाने कब चू पडे।

पका-पकाया मिलना–बना-बनाया मिलना, बिना मेहनत के मिलना। उ० भाई इस समय सभी चीज़ें पकी-पकायी मिल जाती हैं, अत बडा आराम है।

पकौड़ी-सी नाक–फूली हुई नाक। उ० उनकी पकौडी-सी नाक अच्छी नही लगती।

पक्का करना–१ ठीक करना, तैयार करना। उ० उसे गवाही करने को पक्का कर दो, क्योकि कल ही तारीख है। २ निश्चित करना। उ० करना हो तो आज पक्का कर दो। ३ मज़बूत या बलवान बनाना। उ० अब इसको पक्का कर दिया, कभी टूट नही सकता। ४ सुर्खी, चूने आदि से गच पीटना। उ० इस छत को पक्का कर दो। फर्श पक्का नही है।

पक्का कागज़—टिकट वाला कागज । उ० पक्का कागज़ पर लिखवा लो, नही तो उस वेईमान का क्या ठिकाना !

पक्का काम होना—१ असली सोने का या चाँदी का काम होना । उ० यह पक्के काम की साडी है । २ ऐसा काम होना, जिसके खराब होने या बिगडने का सदेह न हो । उ० कागज पर लिखवा लेने से पक्का काम हो गया, अब वे कभी नही इन्कार कर सकते ।

पक्का खाना—घी मे बना भोजन । पूडी-कचौडी आदि । उ० अगर पक्का खाना हो तो मैं आपके यहाँ खा सकता हूँ ।

पक्का घर—ईंट-चूने से बना मकान । उ० पक्का घर बहुत पैसे खाता है ।

पक्का पान होना—बहुत वृद्ध होना । उ० वह तो पक्का पान हो गया है, उसका क्या ठिकाना ।

पक्का पानी—१ खूब औटाया हुआ जल । उ० ज्वर मे पक्का पानी पीना चाहिये । २ स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद पानी । उ० वहाँ का पक्का पानी तुम्हे फायदा करेगा ।

पक्का रग—१. न छूटने वाला रग । उ० किसी पक्के रग मे रजाई का पल्ला रग दो । २ काला रग । उ० वह पक्के रग का लडका बडा शरारती है ।

पक्की कर लेना—१ ठीक कर लेना । उ० बात पक्की कर लेना, यह नही कि वक्त पर मुकर जायें । २ वादा कर लेना । उ० मैंने तो पक्की कर ली, अब हट नही सकता ।

पक्की बात होना—१ किसी बात का निश्चय हो जाना । उ० अब पक्की बात हो गई है । २ टस से मस न होना ।

पक्की रसोई—घी मे पका हुआ भोजन ।

पक्ष करना—तरफदारी करना । उ० न्यायाधीश को किसी का पक्ष करना उचित नही ।

पक्ष खींचना—दे० 'तरफदारी करना' ।

पक्ष गिरना—शास्त्रार्थ मे हार होना ।

पक्ष ग्रहण करना—तरफदारी करना । उ० वह हमेशा अपनी ही जाति का पक्ष ग्रहण करता है ।

पक्ष निर्बल पड़ना—१. मतिपुष्टि न होना । उ० शास्त्रार्थ मे उनका पक्ष निर्बल पड रहा है । २. किसी पक्ष का किसी बात मे कमजोर होना ।

पक्ष मे होना—किसी ओर होना । उ० मैं आपके पक्ष मे हूँ ।

पक्ष लेना—१ किसी की तरफदारी करना । २ मददगार होना । उ० आप मेरा पक्ष लीजिएगा ?

पख निकालना—नुक्स निकालना । उ० तुम उसके हर काम मे पख निकालते हो, यह ठीक नही है ।

पख फैलाना—१. दे० 'पख निकालना' । २ झगडा फैलाना ।

पख मचाना—१ शोर मचाना । २ वेहूदी बातें कहना ।

पख लगाना—विघ्न डालना । उ० इसमे क्यो पख लगाते हो ?

पखेरू का पख न मारना—किसी का भी आना-जाना न होना ।

पगडडी लेना—तग रास्ते पर चलना । उ० पहाडो मे पगडडी लेकर ही जाना पड़ता है ।

पगडी अटकना—मुकाबिला होना । उ० उन दोनो की पगडी अटकी हुई है, देखें नौकरी किसको मिलती है ।

पगड़ी उछलना—१ दुर्दशा होना । उ० उन सभी की यहाँ पगड़ी उछली । २ वेइज़्ज़त होना ।

पगडी उछालना—१ हँसी उडाना । उ० इतने आदमियो के बीच किसी की पगडी उछालना ठीक नही है । २. दुर्दशा करना । उ० सिपाहियो ने बदमाशों की खूब पगडी उछाली ।

पगड़ी उतरना—इज़्ज़त बिगडना । उ० यहाँ आने से वेचारे की पगडी उतर गई ।

पगड़ी उतारना—१ इज्ज़त खराब करना । उ० किसी शरीफ आदमी की पगडी उतारना ठीक नही है । २ कुछ न छोडना, लूट लेना । उ० ठगो ने पथिक की पगडी उतार ली ।

पगडी की शरम रखना—इज़्ज़त का ख्याल करना । उ० अपने बाप-दादो की पगडी की शरम तो रखो ।

पगड़ी नीची होना—वेइज्ज़ती होना ।

पगडी फेर कर रखना—बात बदल जाना । उ० आपने तो पगडी फेर कर रख दी, क्या यही तय हुआ था ?

पगड़ी पर हाथ डालना—इज़्ज़त को नुकसान पहुँचाना ।

पगड़ी बँधना—१. बाप-दादो का अधिकार मिलना । उ० अब उसके लडके को पगडी बँधेगी । २. इज्ज़त मिलना । उ० भारत को आगे बढाने की पगडी गाधी जी को बँधी है।

पगड़ी बगल मे ले लेना—प्रतिष्ठा बचा लेना । उ० तुमने मेरी पगडी बगल मे ले ली, नहीं तो मैं कही का न होता ।

पगड़ी बदलना—दोस्ती करना । उ० भले आदमियो से पगडी बदलो । इश्के बुता में देखा यह लुत्फ सब पे तुर्रह । बदली गई है पगडी शेख और वरहमन मे ।

पगडी बाँधना—१ बडी पदवी देना । उ० किसी योग्य आदमी को पगडी बाँधना चाहिये । २ उत्तराधिकार देना । उ० दशरथ ने राम को पगडी बाँधने की सोची थी । ३ इज्ज़त पाना, गौरव पाना । उ० अपने बाबा के बाद तुम्ही ने पगडी बाँधी है ।

पगडी मे खाक डालना—१. वेइज्ज़ती करना । उ० कम से कम यहाँ उसकी पगडी मे खाक न डालो । २ धिक्कारना । उ० उसकी पगडी मे क्यो खाक डालते हो, आखिर गलती तुमसे भी तो होती है ।

पगडी मे फूल रख जाना—बदनामी करा जाना । वेइज्ज़त करवाना । उ० वह उसकी पगडी मे फूल रख गया है ।

पगड़ी रखना—१ इज्ज़त बचाना । उ० समय पर आपने रुपये देकर मेरी पगडी रख ली । २ नम्रता दिखाना । उ० उसने सैंकडो बार उसके सामने पगडी रखी, पर उसे तनिक भी दया न आई ।

पग धरना—जाना, पहुँचना ।

पग धोना—१ पैर धोना । उ० पानि परात को हाथ छुयो नहि नैनन के जल सो पग धोए । २ सेवा करना । उ० वह तुम्हारा पग धोने को तैयार है, उसका काम कर दो ।

पग पसार देना—मर जाना । उ० आज उसने पग पसार दिये ।

पच करना—तरफदारी करना । पक्ष लेना । उ० चलो हम समझे, इतनी पक्ष न करो, जानते हैं कि दिल मे पिसते हो ।

पचड़ा गाना—१ देवी की या ब्रह्म की प्रार्थना करना । २ अपनी या किसी दूसरे की दुःख-भरी या झझट-भरी बातें सुनाना । उ० क्या पचडा गाते हो ?

पचड़ा फैलाना—प्रपच या पँवाडा फैलाना । उ० यहाँ अपना पचडा न फैलाओ ।

पचड़ा ले बैठना—ऐसी चर्चा छेड़ना, जिसमे विशेष रुचि न हो ।

पचड़ा सुनाना—दे० 'पचडा गाना' ।

पच मरना—परिश्रम या प्रयत्न करते-करते परीशान हो जाना । उ० मैं पच मरा, पर उन्होने एक न सुनी ।

पचा डालना—दे० 'पचा बैठना' ।

पचा बैठना—खा जाना, हडप बैठना । उ० सभी का माल तुम पचा बैठते हो, पर कभी सेर को सवा सेर अवश्य मिलेगा ।

पच्चर अडाना—किसी के काम मे अडगा या बाधा डालना । उ० मेरे काम में पच्चर अडाया तो कुशल नही ।

पच्चर करना—दे० 'पच्चर ठोकना' ।

पच्चर ठोंकना—१ परीशान करना । उ० तुम सहायता क्या करोगे, पच्चर ही ठोकते रहते हो । २ दे० 'पच्चर अडाना' ।

पच्चर मारना—होते काम को किसी युक्ति से रोक देना । उ० अब पच्चर न मारो, नही तो मैं कही का न रहूँगा ।

पच्चर लगाना—दे० 'पच्चर अडाना' ।

पच्ची हो जाना—पूर्णत मिल जाना । उ० दवा को पानी मे पच्ची हो जाने दो ।

पछड़ जाना—दे० 'पिछड जाना' ।

पछाड खा-खाकर रोना—गिर-गिर कर बहुत अधिक विलाप करना ।

पछाड खाना—१ बेहोश होकर गिर जाना । २ बार-बार गिरना । उ० वह बेचारी पछाड खाकर रो रही है ।

पछाड देना—हरा देना या गिरा देना ।

पछाड़ी-अगाड़ी बाँधना—पूर्णत चारो ओर से कस देना कि कही हिला-डुला या निकाला न जा सके । उ० ऐसी पछाडी-अगाडी बाँधूंगा कि घूमना निकल जायगा ।

पछाड़ी-अगाड़ी लगाना—दे० 'पछाड़ी-अगाड़ी बाँधना' ।

पछोड़ डालना–अन्नादि को साफ कर डालना। उ० जल्दी पछोड डालो, नही तो चक्की वद हो जायगी।

पजावे का पजावा खखाड हो जाना–दे० 'पजावे का पजावा झाँवा हो जाना'।

पजावे का पजावा झाँवा हो जाना–१ सब काम बिगड जाना। २ सारी चीजें बरबाद हो जाना। ३ घर भर, जाति भर, जमात भर या राष्ट्र भर के आदमियो का बिगड जाना।

पजावे का पजावा बिगड जाना–दे० 'पजावे का पजावा झाँवा हो जाना'।

पट उघड़ना–दे० 'पट खुलना'।

पटक देना–१ ज़मीन पर गिरा देना। २ हरा देना। ३ वहुत लज्जित कर देना। ४ प्रतिष्ठा खराव कर अपमानित कर देना। ५ सुपुर्द कर देना।

पटकनिया खाना–दे० 'पटका जाना'।

पटका जाना–१ किसी के द्वारा कुश्ती मे हराया जाना। उ० अभी आज तक गामा किसी से पटका नही गया। २ हराया जाना। ३ ज़मीन पर गिराया जाना। ४ अपमानित किया जाना।

पटका बाँधना–१ कमर कसना, पूरी तरह किसी काम के लिए तैयार होना। २ लडने के लिए तैयार होना।

पटखना देना–ज़मीन पर ज़ोर से दे मारना।

पटखनियाँ खाना–ज़मीन पर गिर-गिर पडना, लोटनिया खाना।

पट खुलना–१ दरवाज़ा खुलना। २ मदिर का दरवाजा खुलना। ३ रहस्यमयी वातो का सामने आना। उ० अब पट खुलता है तो देखो क्या-क्या रग आता है।

पटतर देना–उपमा देना, तशवीह देना। उ० तुम्हारी पटतर किससे दें, तुम तो अपूर्व हो।

पट देना–दे० 'पट भिडाना'।

पट-पट बोलना–१ पट-पट ज़बान चलाना, तेज़ बोलना। २ लडको का विना हिचक बोलना।

पट पड़ना–१ कम हो जाना, ठीक न चलना। उ० रोजगार पट पड गया। २ कुश्ती मे नीचे गिरना। ३. पेट के बल सो जाना या पट जाना।

पट भिड़ाना–१ दरवाज़ा बद करना। २ मदिर का दरवाज़ा बद करना।

पट भेड़ना–दरवाज़ा बद करना।

पटम होना–१ अधा होना। २ चौपट होना।

पट मारना–दे० 'पट भिडाना'।

पटरा कर देना–तबाह या बर्बाद कर देना। उ० कहत ने पटरा कर दिया।

पटरा करना–१. पूर्ण नष्ट-भ्रष्ट कर देना। उ० मकान पटरा कर दिया। २ बहुत से आदमियो को मार गिराना। ३ फल आदि पेड से वहुत सख्या मे गिराना। उ० पेड पर चढकर आमो को पटरा कर दिया।

पटरा फेरना–लूट लेना, सफाया कर देना।

पटरा हो जाना–बहुत नुकसान होना।

पटरा होना–१ नष्ट होना। २ मर जाना। ३ बहुत सख्या मे ज़मीन पर पटरे की तरह बिछ जाना।

पटरी जमाना–१ घोडे पर ठीक तरह टाँगो को कस कर आसन जमाना। २ काम बना लेना। ३ काम बनाने के लिए घात लगाना या रास्ता निकालना।

पटरी पढ़ाना–१ मूर्ख बनाना। २ धोखा देना। उ० पटरी न पढाओ, इसे किसी तरह पूरा करो।

पटरी पर आना–असलियत पर आना। सही रास्ते पर आना। उ० तुम कितना भी इधर-उधर भागो, पर अन्त मे पटरी पर आना ही पडेगा।

पटरी पर लाना–रास्ते पर लाना। उ० उसको पटरी पर लाना आसान नही है। फिर भी एक बार कोशिश करके देख लो।

पटरी बैठना–१. एक प्रकृति का होना। उ० हमारी उनकी पटरी खूब बैठती है। २ मित्रता होना। ३ काम निकालने का रास्ता हो जाना।

पटरी बैठाना–दे० 'पटरी जमाना'।

पट लगाना–दे० 'पट भिडाना'।

पट लेना–पट नामक दाँव कुश्ती मे लगाने की युक्ति करना। उ० पट लेकर मैंने ऐसा मारा कि वे चारो खाने चित्त हो गए।

पटाका जमाना–थप्पड मारना । उ० चार पटाका जमाओ, अपने आप ही ठीक हो जायगा ।

पटाका देना–दे० 'पटाका जमाना' ।

पटाका लगाना–दे० 'पटाका जमाना' ।

पटाख से बोलना–कड़ाके की आवाज़ से या तेज़ी से बोलना ।

पटाख़ा–शोख़ और अल्हड (युवती) । उ० पटाखा न बनो, कुल के शील का भी ध्यान रखो ।

पटापटी का पर्दा–कसीदा किया हुआ पर्दा ।

पटापटी की गोट–रग-विरगी तथा कसीदा कढी हुई गोट ।

पटा-फेर करना–विवाह की एक रस्म करना जिसमे वर-वधू के आसन अदल-बदल दिए जाते हैं ।

पटा बाँधना–पटरानी बनाना, पट्टमहिषी बनाना । उ० चौदह सहस तिया मे तोको पटा बँधाऊँ आज ।

पटिया काढ़ना–माँग काढना । बालो को दोनो ओर झाड कर बीच मे माँग निकालना ।

पटिया पारना–दे० 'पटिया काढना' ।

पटिया लेना–अपने अनुकूल बना लेना ।

पटिया सँवारना–दे० 'पटिया काढ़ना' ।

पटील डालना–१ समाप्त कर देना । उ० आज काम पटील डालो । २ किसी तरह जल्दी कर डालना ।

पटील देना–दे० 'पटील डालना' ।

पट्टा करना–दे० 'पट्टा लिखना' ।

पट्टा चुकाना–विवाह आदि मे वर-पक्ष का कन्या-पक्ष के पवनियो को नेग चुकाना ।

पट्टा तोड़ना–१ कुत्ते आदि पालतू पशुओ का अपने मालिक के यहाँ से भाग कर कही और चला जाना । २ भग जाने का इरादा करना ।

पट्टा तोड़ाना–दे० 'पट्टा तोडना' ।

पट्टा लिखना–लिखित रूप मे किसी चीज़ का अधिकार दूसरे को देना । उ० वह ज़मीन मैंने उन्हे पट्टा लिख दी ।

पट्टा लिखवाना–किसी ज़मीन आदि का अधिकार अपने नाम लिखवाना । उ० मैंने वह ज़मीन उनसे पट्टा लिखवा ली ।

पट्टा सिर से बाँधना–१. गौरव देना । २ आरोप लगाना ।

पट्टी का गाँव–ऐसा गाँव जिसके बहुत से ज़मीदार हो और इस कारण कुप्रबध हो । उ० पट्टी के गाँव मे कौन रहेगा ?

पट्टी जमाना–१ व्यवस्था कर लेना । २ अपना रोब जमा लेना । ३ बालो को सँवार कर कोई चिपकने वाली चीज़ लगा कर बैठाना ।

पट्टीदार होना–१ हिस्सेदार होना । २ नज़दीक का होना ।

पट्टीदारी अटकना–पट्टी के कारण या हिस्से के कारण कोई झगडा खडा होना । उ० मेरी पट्टीदारी नही अटकी है कि उनसे झगडा करूँ ।

पट्टीदारी करना–१. किसी के बराबर अपना अधिकार जताना । २ बराबरी करना । उ० यहाँ पट्टीदारी करने आए हो या निमत्रण खाने ।

पट्टीदारी चलना–हिस्से आदि के सबध से लाग-डाँट चलना । उ० उन दोनो मे खूब पट्टीदारी चलती है ।

पट्टीदारी होना–हिस्से का सबध होना । उ० उनसे मेरी पट्टीदारी है ।

पट्टी पढना–१ छलछद सीखना । उ० यह पट्टी तुमने कहाँ पढी । २ कुछ सीखना या पढना ।

पट्टी पढ़ाना–१ गुरु को शिष्य का पढाना । २ चारा देना, धोखा देना, बहकाना । उ० आप मुझे पट्टी नहीं पढा सकते ।

पट्टी पुजना–विद्यारभ होना ।

पट्टी बताना–दे० 'पट्टी पढाना' ।

पट्टी बाँधना–१ मरहम-पट्टी करना । उ० उसे चोट लगी है, ज़रा पट्टी बाँध दो । २ जल-चिकित्सा मे कपडे की भीगी पट्टी बाँधना ।

पट्टी मे आना–किसी के धोखे या बहकावे मे आना । उ० पट्टी मे आकर मैंने यह बेवकूफी कर दी ।

पट्टी सँवारना–दे० 'पटिया सँवारना' ।

पट्ठा चढना–किसी नस का चढ या तन जाना ।

पट्ठा जवान–खूब तगडा और युवक । उ० हाँ तो वह खूब पट्ठा जवान है ।

पट्ठा-पछाड—१. तगडी औरत। उ० वह तो पट्ठा-पछाड है, उसे औरत कौन कहेगा ? २ बहुत मजबूत।

पट्ठों मे घुसना—बिलकुल अपना बनना। गहरा मित्र बनना। उ० वह तुम्हारे पट्ठो मे घुस कर धोखा देगा।

पड़ जाना—१ बीमार पड जाना। उ० अधिक मेहनत के कारण वे भी पड गए। २. दे० 'पडता खाना'। ३. मिलना, प्राप्त होना। उ० एक रुपया रोज़ यहाँ पड जाता है। ४ खर्च होना।

पड़त फैलाना—अन्दाज़ा लगाना, अनुमान करना।

पड़ता खाना—लागत और अभीष्ट लाभ मिल जाना। उ० पडता खाता हो तो बेच दो।

पड़ता निकलना—सब ख़र्च-वर्च देख कर औसत दाम निश्चित करना। उ० पडता निकालूँ तो दाम बताऊँ।

पड़ता पडना—दे० 'पडता खाना'।

पड़ता फैलाना—दे० 'पडता निकालना'।

पड़ता बैठाना—दे० 'पडता निकालना'।

पडता रहना—औसत रहना।

पडताल करना—१. छानबीन करना। २ पटवारी का खेतो मे देख कर कागज़ मे लिखना कि किसने कौन खेत बोया है। उ० मुशी जी पडताल करने आये हैं।

पडताल पड़ना—बराबर जूते पडना, खूब पिटना।

पड़ता सहना—दे० 'पडता खाना'।

पडती उठना—१ परती या ऊसर भूमि का जोता जाना। २ जोतने के लिए लगान निश्चित करके पडती ज़मीन किसी को देना।

पडती छोडना—खेत को न जोतना। उ० उन्होंने खेत पडती छोड दिया।

पडती पडना—न जोता जाना। उ० वह खेत तीन वर्ष से पडती पडा है।

पडना—१. विपत्ति, दु ख या मुसीबत आना। उ० पडी है उन पर तो सहेगा कौन ? २ बीमार पडना। उ० वे भी पडे। ३ खर्च पडना। उ० बडा पडता है। ४ परिश्रम पडना। ५ आमदनी होना। ६ काम या प्रयोजन आना। उ० पडने पर सभी आते हैं, यो कोई नहीं पूछता।

पड़ मरना—मरते दम तक साथ न छोडना। इस तरह रहना कि मर कर ही अलग होना।

पडाके का परदा—दे० 'पटा-पटी का पर्दा'।

पडाके की गोट—दे० 'पटा-पटी की गोट'।

पडा रहना—दे० 'पडे रहना'।

पडाव डालना—१ रुकना, डेरा डालना। उ० आज कहाँ पडाव डालोगे ? २. फौज या सरकारी अफसरो का डेरा डालना।

पडाव पडना—१ रुकना, ठहरना। २. वडे अफसर या सेना आदि का रुकना।

पडाव मारना—१ वडे साहस का काम करना। उ० पडाव नही मारा है कि इनाम दूँ। २ पडाव के यात्रियो को लूटना। उ० उनका पडाव मारने के लिए डाकू जा रहे है।

पडा होना—बने रहना, रहना। उ० आज चार रोज़ से यही पडे हो, कही और जाओ।

पडिया के ताऊ—बुद्धू।

पड़े रहना—१ बराबर लेटे रहना। उ० डाक्टर ने पडे रहने की आज्ञा दी है। २ शात रहना। उ० उन्हे बकने दो, तुम पडे रहो।

पडोस करना—पडोसी होना, रहना। पडोस मे ठहरना। उ० ऐसी जगह पडोस मत करो।

पढ कर सिर पर डालना—जादू करना।

पढना-लिखना—शिक्षा पाना। उ० आज के ज़माने मे पढना-लिखना आवश्यक है।

पढ पत्थर होना—बिलकुल अनपढ होना।

पढाना-लिखाना—१ शिक्षा देना। उ० लड़को को पढाने-लिखाने का प्रबन्ध करो। २ सम-झाना-बुझाना। उ० पढा-लिखा कर उसे भेजना, नही तो भडाफोड हो जायगा।

पढा-लिखा—१. शिक्षित। २. समझाया-बुझाया।

पतग काटना—१ किसी की पतग अपनी पतग से काट देना। २ नौकरी से अलग कर देना। उ० उनकी पतग तो आपने काट दी, अब वे क्या करें ? ३ सबध-विच्छेद करा देना।

पतंग बढाना—डोरा अधिक छोड कर पतग को और दूर या ऊपर करना। उ० पतग वढा कर उसको काटो।

पतग लडाना—दो पतगो को लडाना। उ० वह पतग लडा रहा है।

पतगा होना—दे० 'पतिंगा होना'।

पतगे लगना—आग लगना। बहुत ज़ोर का गुस्सा आना।

पत उतारना—अपमानित करना, इज्ज़त ले लेना। उ० उनकी तुमने खूब पत उतारी।

पत खोना—इज्ज़त गँवाना। उ० अपनी पत न खोओ।

पत गँवाना—दे० 'पत खोना'।

पत जाना—इज्ज़त जाना। साख बिगडना।

पतझड आना—अवनति-काल आना। उ० अब उनका भी पतझड आ गया।

पतझर आना—दे० 'पतझड आना'।

पतपानी—इज्ज़त। उ० उसने अपना पतपानी बेच दिया।

पतपानी खोना—दे० 'पत खोना'।

पतपानी गँवाना—दे० 'पत गँवाना'।

पतपानी रखना—इज्ज़त-आबरू रखना। उ० अब तो किसी तरह मेरा पतपानी रखो।

पतपानी लेना—दे० 'पत उतारना'।

पत रखना—दे० 'पतपानी रखना'।

पतरे खोलना—भेद खोलना। कलई खोलना। उ० अभी पतरे खोलता हूँ, तब पता चलेगा।

पतला कान—जल्दी ही किसी बात पर विश्वास कर लेने वाला।

पतला पड़ना—१. दुर्दशाग्रस्त होना। २. दुबला होना।

पतला हाल—दुर्दशा, बुरी दशा। उ० उनका पतला हाल है।

पता लेना—दे० 'पत उतारना'।

पताका उड़ना—१ अधिकार होना। उ० देखें कश्मीर पर किसकी पताका उडती है? २ सबसे बडा होना। उ० व्याकरण मे पाणिनि की पताका उड रही है। ३ प्रसिद्धि होना। ४ यश फैलना।

पताका उड़ाना—१ अधिकार करना। २ विजयी होना।

पताका गिरना—१ हार जाना। २ नाम डूब जाना।

पताका फहराना—१ दे० 'पताका उडना'। २ दे० 'पताका उडाना'।

पता-ठिकाना—किसी व्यक्ति या वस्तु का स्थान और साधारण परिचय। उ० अपना पता-ठिकाना तो बताओ।

पता-निशान—वे बाते जिनसे किसी के सबध मे कुछ जान सकें। उ० उनका पता-निशान तो बताओ।

पतिंगा होना—१ बहुत बडा प्रेमी होना। २. प्रेम मे प्राण दे देने वाला होना। ३ बलिदान हो जाना।

पति करना—किसी को पति बना लेना। उ० उसने फिर पति कर लिया है।

पते का—जानकार, गुप्त बातो का ज्ञान रखने वाला, अच्छा। उ० वह बडे पते का आदमी है।

पते की—१ बहुत अच्छी या बडी। उ० पते की बात तो तुमने अब कही है। २ भेद प्रकट करने वाली। उ० कुछ पते की कहो तो काम चले।

पते की सुनाना—१. चुभती हुई कहना। २ पते की बात या भेद की बात कहना।

पते ले डालना—सताना, नाक मे दम करना।

पते लेना—दे० 'पते ले डालना'।

पत्तल परसना—पत्तल सामने रख कर उसमे खाना परसना। उ० पत्तल परसो लोग कभी से बैठे हैं।

पत्तल परोसना—पत्तल पर भोजन परसना।

पत्तल लगाना—दे० 'पत्तल परोसना'।

पत्ता कट जाना—कोई सरोकार न रहने देना, सबध छूट जाना।

पत्ता खडकना—आहट मिलना। उ० पत्ता खडका, बदर भडका।

पत्ता चाटना—१. बाजार की चीज़ खाना। २ जूठन खाना। उ० पत्ता चाटने वालो की भी इज्ज़त है।

पत्ता तोड कर भागना—सिर पर पैर रख कर भागना, बहुत तेज़ भागना। उ० वह मुझे देखते ही पत्ता तोड कर भागा। [इसका सबध एक खेल से है, जिसमे पत्ता तोड कर तुरन्त भागा जाता है।]

पत्ता न तोड़ने देना—कुछ भी न करने देना।

पत्ता भी न हिलना—१ ज़रा भी हवा न बहना। उ० आज तो पत्ता भी नही हिल रहा है। २ ज़रा भी आहट न मिलना। उ० पत्ता भी न हिले, नही तो साँप भग जायगा।

पत्ता लगना—पत्ते से सटे होने के कारण फल मे दाग पड जाना। उ० यह आम सडा नही है, सिर्फ पत्ता लगा है।

पत्ता हो जाना–भग जाना, बहुत जल्दी गायब हो जाना। उ० बन्दूक की आवाज़ सुनते ही हिरन पत्ता हो गया।

पत्ते को देखना जड़ न देखना–ऊपरी टीमटाम पर ध्यान देना, बात के मूल तक न पहुँचना।

पत्ते खेलना–ताश खेलना।

पत्ते पर अपना मास बिकवाना–तुच्छ वस्तु के लिए महत्त्वपूर्ण वस्तु देना या अपनी इज़्ज़त बिकवाना।

पत्ते पर बैठ कर पेड़ काटना–खुद अपना नुकसान करना।

पत्तेबाज़ी करना–जुआ खेलना। उ० सुना है, तुम भी पत्तेबाज़ी करने लगे हो।

पत्थर का कलेजा–अत्यत कठोर हृदय। ऐसा हृदय जिसमे करुणा, दया आदि न हो। उ० उनका पत्थर का कलेजा है। लडका मर गया, पर आँखो मे आँसू तक नही आए।

पत्थर का छापा–लीथो की छपाई।

पत्थर का दिल–दे० 'पत्थर का कलेजा'।

पत्थर का हृदय–दे० 'पत्थर का कलेजा'।

पत्थर की छाती–१ दे० 'पत्थर का कलेजा'। २ ऐसी छाती जो कभी हिम्मत न हारे।

पत्थर की लक़ीर–सदा बनी रहने वाली, पक्की, स्थायी। उ० ज़बानी बात का क्या विश्वास? लिखवा लो तो पत्थर की लकीर हो जाय।

पत्थर को जोंक लगाना–असभव बात करना। उ० उस मूर्ख को कुछ समझाना पत्थर को जोक लगाना है।

पत्थर को मोम बनाना–कठोर व्यक्ति को भी नरम बना देना।

पत्थर गिरना–दे० 'पत्थर पडना'।

पत्थर चटाना–पत्थर पर रगड कर तेज़ करना। उ० चाकू को ज़रा पत्थर चटा दो।

पत्थर छाती पर धरना–ज़बर्दस्ती दिल को रोकना। सब्र करना।

पत्थर डालना–दे० 'खाक डालना'।

पत्थर ढोना–१. अत्यन्त परिश्रम का काम करना। उ० सगदिल बस कि तेरे इश्क मे ढोए पत्थर, चश्म से चश्मए कुह सार कि रोए पत्थर। २ बेकार वक्त बरबाद करना।

पत्थर-तले से हाथ निकलना–किसी आफत से मुक्त होना।

पत्थर-तले हाथ आना–बुरी तरह फँस जाना। उ० उसका पत्थर-तले हाथ आ गया है, बेचारे की कुछ मदद कर दो।

पत्थर-तले हाथ दबना–दे० 'पत्थर-तले हाथ आना'।

पत्थर निचोड़ना–१ असभव बात करना। २ जिससे किसी को कुछ न मिलता हो, उससे कुछ निकाल लेना। उ० पत्थर निचोडना तो मैं जानता हूँ, उस कजूस सेठ से भी १०० रु० मार लाया।

पत्थर पड़ना–१ ओले पडना। उ० पत्थर पडने से फसल खराब हो गई। २. चौपट हो जाना।

पत्थर पर दूब जमना–अनहोनी बात या काम होना। उ० उस बाँझ का गर्भवती होना पत्थर पर दूब जमना है।

पत्थर पसीजना–१ अनहोनी बात होना। २ अत्यन्त कठोर आदमी मे दया आना। उ० आज उसकी दशा देख कर पत्थर भी पसीज गए।

पत्थर पानी हो जाना–निर्दयी के दिल मे दया का सचार होना। उ० हमारी आह तेरा दिल न नरमावे तो या किस्मत, वरना देख आइना को पत्थर हो गया पानी।

पत्थर पिघलना–दे० 'पत्थर पसीजना'।

पत्थर बनना–निर्दयी और कडे हृदय का बनना।

पत्थर बरसना–ओले पडना। उ० वो मुक़द्दर है जो माँगू मेह बरसने की दुआ, बरसें पत्थर अब्र से बालाए सर बरसात मे।

पत्थर मारना–१ कष्ट देना। २ पागल हो जाना।

पत्थर लुढकाना–किसी की तबाही या मौत चाहना।

पत्थर-सा फेंक मारना–१ दुरुस्ती या अक्खडपन से जवाब देना। २. शील न करना।

पत्थर से सिर फोड़ना–१ असभव बात करने के लिए सिर खपाना। उ० क्यो पत्थर से सिर फोड रहे हो, टूटी छड़ी फिर उसी तरह की कैसे हो सकती है। २. मूर्ख को पढाना।

पत्थर से हाथ निकलना–मुसीबत या सकट से छूटना। उ० किसी तरह पत्थर से हाथ निकले तो तुम्हारा जन्म भर आभारी रहूँ।

पत्थर होना–१ कडा होना। २. कठोर हृदय का होना। उ० वह तो पत्थर है, किसी के दु ख-सुख मे भी नही सुनता।

पथ पर चलना–किसी मत को मानना।

पथराव करना–पत्थर से मारना।

पथ्य से रहना–खाने-पीने मे सयम से रहना। उ० पथ्य से रहो, नही तो बीमारी उभड जायगी।

पदचिह्नों पर चलना–किसी के दिखाए मार्ग पर चलना।

पनाह ढूंढ़ना–शरण के लिए सुरक्षित स्थान ढूंढना।

पनाह देना–१ दुश्मनो से बचाना। २ सहारा देना। शरण मे लेना। उ० तुम्ही उसे पनाह दे सकते हो।

पद-रज सिर पर चढाना–बहुत आदर करना।

पनाह पाना–शरण पाना।

पनाह माँगना–१ किसी बुरी वस्तु से दूर रहने की कामना करना। उ० उससे तो मैं पनाह माँगता हूँ। २ शरण माँगना।

पनाह लेना–सुरक्षित स्थान मे शरण लेना। उ० मैं कहाँ पनाह लूँ ? एक ही तो जगह थी, वहाँ तुम जा बैठे।

पनीर चटाना–काम निकालने के लिए खुशामद करना। उ० उसके पनीर चटाने मे कभी मत आना।

पनीर जमाना–कोई ऐसी बात करना जिससे भविष्य में बहुत लाभ हो। उ० पनीर जमा कर तो वह पत्र देगा।

पनीरी जमाना–१ पौधा लगाना। २ अपने ढब पर लाना। ३ बुनियाद डालना।

पन्ने उलटना–सरसरी निगाह से देखना।

पन्ने रँगना–व्यर्थ मे लिखना।

पपड़ी आना–तहें जमना, परत बनना।

पपड़ी जमना–दे० 'पपडी आना'।

पपड़ी पड़ना–दे० 'पपडी आना'।

पयान करना–चल देना, जाना। उ० आज उन्होंने भी घर के लिए पयान कर ही दिया।

पयाल गाहना–दे० 'पयाल झाड़ना'।

पयाल झाड़ना–ऐसा श्रम करना जिसका कोई फल न हो। उ० फिरि-फिरि कहा पयालहि झाडे।

परम्परा ढोना–परम्परा का निर्वाह करना।

पर और बाल निकलना–१ सीधा न रह जाना। ससार को समझने-बूझने लगना। २. ऊधम मचाना। उ० अब तुम्हे भी पर और बाल निकलने लगे।

पर कट जाना– १. प्रधान शक्ति या शक्ति के आधार का समाप्त हो जाना। उ० उसके मरने से मेरे पर कट गए। २ व्यर्थ हो जाना।

पर कतर देना–दे० 'पर काट देना'।

पर काट देना–१ अपग कर देना। उ० भगवान् ने मेरा पर ही काट दिया, नही तो आज दिखा देता। २ शक्तिहीन कर देना। ३ बेकार कर देना।

पर कैंच करना–पर काटना, बेबस करना। उ० किसी तरह उसका पर कैंच करो, नही तो वह कहा नही मान सकता।

पर कैंच देना–दे० 'पर काट देना'।

परछाईं से डरना–बहुत डरना। उ० वह तो मेरी परछाई से डरता है।

परछाईं से भागना–दे० 'परछाई से डरना'।

परछाईं न पडना–ज़रा भी असर न होना।

परछा करना–फैसला करना, मामला तय करना, झगडा खतम करना। उ० हंस के बोला यार मैं मारे खुशी के मर गया, किस्सा तूलानी था दो बातो मे परछा कर दिया।

परछा होना–१ झगडा तय होना। फैसला होना। २. भीड कम होना।

पर जमना–सीधे-सादे व्यक्ति का शरारती होना। उ० अब तुम्हे भी पर जमने लगे।

पर जलना–१. हिम्मत न पडना। साहस न होना। २. पहुँच न होना। उ० वहाँ जाने मे बडो के भी पर जलते हैं।

पर झाड़ कर–१ बिना रू-रियायत के। २ साफ, बिना किसी का ध्यान दिये। उ० वह पर झाड कर भाग निकला।

पर टूटना–१ दे० 'पर कट जाना'। २ दे० 'पर जलना'।

परत की परत उखाड़ना–दे० 'बाल की खाल निकालना'।

परती—परती के मुहावरों के लिए परती देखिए ।

परती लेना—नहर या तालाब से [illegible] ओराना ।

परदा उठाना—गुप्त बात या रहस्य खोलना ।

परदा खोलना—दे० 'परदा उठाना' ।

परदाज करना—१ उजला करना, चमकाना । २ चाँदी-सोने के जेवर पर जिला करना ।

परदा डालना—छिपाना । [illegible] । उ० इस किले पर किसी तरह परदा डालो, नहीं तो बदनामी होगी ।

परदा न होना—दुराव या अलगाव न होना ।

परदाफाश करना—छिपी बात खोल देना ।

परदाफाश होना—छिपी [illegible] होना । उ० उनका भी परदाफाश हो ही जाता है ।

परदा रखना—बात बाहर न जाना । उ० वह परदा रखती है ।

परदे की ओट में शिकार करना—छिप कर किसी से निन्द्य कार्य करना, छिप कर मार करना ।

परदे-परदे—छिपे-छिपे । उ० परदे परदे तुमने अपने सारा [illegible] किए ।

परदे में छेद होना—१ परदे में [illegible] होना । २ गुप्त रहस्य का कुछ कुछ प्रकट होना, बात का बिलकुल छिपी न रह पाना ।

परदेश में छाना—विदेश या किसी अन्य स्थान पर रहना । बाहर रहना । उ० उसका पति परदेश में छाया है और वह बेचारी बड़ा परेशान है ।

पर न मारना—कदम न रखना, पहुँचने की मजाल न होना । उ० यहाँ तो तुम्हारे जैसे पर नहीं मार सकते ।

परनाले का पत्थर चौबारे में लगना—छोटे व्यक्ति को सम्मान का स्थान मिलना ।

परले दर्जे का—बिलकुल, बहुत बड़ा । उ० तुम तो परले दर्जे के शरारती हो ।

पर लेना—पर कुतरना, पर काटना ।

परले पार होना—खतम होना । समाप्ति पर आना । उ० किसी तरह मेरी समस्या तो परले पार हुई ।

परले सिरे का—दे० 'परले दर्जे का' ।

परलोकगामी होना—मर जाना । उ० क्या व्यर्थ के फेर में पड़े हो, जब एक दिन परलोकगामी होना ही है तो इतना झमेला क्यों ?

परलोक बिगड़ना—ऐसा कार्य करना, जिससे सद्‌गति न हो ।

परलोक सिधारना—दे० 'परलोकगामी होना' ।

परवरिश करना—भरण पोषण या पालन पोषण करना । उ० मेरी परवरिश मेरी मौसी ने की है ।

परवाह न करना—ध्यान न देना, तुच्छ समझना । उ० वह [illegible] की परवाह ही नहीं करता ।

परवान चढ़ना—१ बढ़ना, ऊपर तक पहुँचना । २ विवाहित होना ।

परवाने जान छिड़कना—१ [illegible] । २ [illegible] ।

परवाना होना—१ आसक्त होना । मोहित होना । उ० यह [illegible] के पीछे परवाना हो गया है । २ किसी के पीछे मर मिटने को तैयार होना । ३ [illegible] के पीछे परवाना हो गए ।

परवाह करना—१ [illegible] ध्यान में रखना । उ० अभी तक परवाह [illegible] है । २ ख्याल करना । उ० उसकी परवाह करो, नहीं तो पछताओगे ।

पराए हाथों होना—दूसरे के वश में होना ।

पराकाष्ठा को पहुँचना—चरम उत्कर्ष या अवनति को पहुँचना । उ० उसकी चिंता पराकाष्ठा को पहुँच गई है ।

पराक्रम चलना—शक्ति का काम करना, काम होना । उ० आजकल मैं किसी पर पराक्रम नहीं चलता है ।

परा बाँधना—कतार बनाना, बराबर बराबर खड़ा करना ।

पराया मुँह ताकना—दूसरे के आसरे या सहारे होना, अपने पैर पर न खड़ा होना । उ० जो मुँह ताकते पराया मुँह, तो द[illegible] में न [illegible] जाएँ ।

पराया समझना—१ अलग रखना । उ० मैं तो किसी को भी पराया नहीं समझता हूँ । २ अच्छा-बुरा जानना । ३ दूर का समझना, अपना नजदीकी न समझना ।

पराये घर की होना—लड़की की शादी होना । उ० राधा अब पराये घर की हो गई है ।

पराये बिरते पर शिकरा पालना—अन्य के भरोसे काम करना । उ० जवानी में क्या पराये

विरते पर शिकरा पालते हो, बुढापा मे तो यह करना ही है।

पराये माल पर दीदे लाल होना–अन्य के धन या वल पर ऐंठना। उ० पराये माल पर उनके दीदे लाल हैं ? शर्म आनी चाहिए।

परायी पीड़ा पाना–दूसरो के दुख-दर्द को समझना।

परिंदों का भी पर न मारना–बिल्कुल शाति रहना। उ० वहाँ तो परिंदे भी पर नही मारते।

परिंदो के पर कतर देना–दुर्बल या अशक्त कर देना।

परेखा करना–नतीजा निकालना, समझना, ख्याल करना, विचार करना। उ० एक नगरी के राजा आठ, न्यारा-न्यारा सबका ठाठ, बूझ-वाझ कर किया परेखा, एक वही मे सवका लेखा (गजी)।

परेट जमाना–कतार वाँधना।

परे विठाना–१. दूर विठाना। २ किसी को मात करना, हरा देना। उ० उसने तो ऐसा अच्छा खाना पकाया कि वावरची को परे विठा दिया।

परे बैठना–दूर या अलग रहना। उ० क्यो परे वैठते है, निकट आइए।

परे बैठाना–अलग रखना। उ० अब अछूतों को परे वैठाने का ज़माना लग गया।

परे रहना–दे० 'परे वैठना'।

परोसा थाल होना–सरल काम होना।

पर्दे विठाना–वाहर फिरने वाली स्त्री या लडकी को पर्दे मे रखना।

पर्दे मे गिरदह लगाना–परदे मे रहने के वावजूद आचरण का भ्रष्ट होना।

पर्दे में सूराख करना–१ पर्दे मे रह कर वुरा काम करना। २ टट्टी की ओट शिकार खेलना।

पर्वत को राई गिनना–१ मुश्किल काम को आसान समझना। २ बडे को छोटा समझना। उ० समझदार आदमी भला पर्वत को राई कैसे गिन सकता है ?

पलंग को लात मार कर खडा होना–१ लडका पैदा होने के बाद कुछ दिन आराम से रहना। २ किसी बडी वीमारी से अच्छा होना। उ० वेचारा अभी तो पलग को लात मार कर खडा हुआ था, पर फिर पड गया।

पलग तोडना–बेकार चारपाई पर पडे रहना। उ० क्या पलग तोडते हो, क्यो नही कुछ करते ?

पलंग लगाना–चारपाई पर सेज लगाना। विछौना विछाना। उ० पलग लगा दो, आते ही होंगे।

पलक की ओट–नज़र से दूर।

पलक झपकते–तुरत, क्षण मात्र मे। उ० पलक झपकते ही वह गायव हो गया।

पलक झपकना–१ दहशत या भय हो जाना। उ० भूत के भय से पेड को देख कर ही पलक झपक गई। २ नीद आना। उ० पलक झपक रही है, सोने दो। ३ ध्यान वँटना। उ० पलक झपकी और वह भगा, जरा उस पर कडी नज़र रखना।

पलक न पसीजना–आँसू न आना। दया न आना। उ० तू चश्मे-गिर या उससे ऐ दूद आह मत रख, क्या दखल है कहे जो उसकी पलक पसीजे।

पलक पसीजना–करुणा से पलको का गीला होना। उ० कैसे कठोर हृदय हो कि यह देख कर तुम्हारी पलक भी नही पसीजती ?

पलक-पाँवड़े विछाना–आदर से स्वागत करना। उ० आइए ऐ मिलाप के पुतले। हम पलक-पाँवडे विछा देंगे।

पलक विछाना–सप्रेम स्वागत करना। किसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। उ० आपके लिए हर जगह पलकें विछाई जाती हैं।

पलक भंजना–थोडा भी लापरवाह होना। उ० पलक भँजी और सारा माल गायव।

पलक भाँजना–आँखो से इशारा करना। उ० पलक न भाँजो, मैं सव कुछ समझ रहा हूँ।

पलको से पाँव झाडना–वहुत आदर करना।

पलक मारना–१ सो जाना। उ० मुझे थोडी देर पलक मार लेने दो। २ नज़रो से सकेत करना। उ० पलक मार कर ही काम निकाल लिया।

पलक लगना–झपकी आना, नीद आना। उ० आज चार दिन के वाद पलक लगी है, ज़रा सोने दो।

पलक लगाना–नेत्रो को वन्द करना। सो जाना। उ० यहाँ पलक न लगाओ, वही सोया जायगा।

पलक से पलक लगाना–दे० 'पलक लगाना'।

पल की पल में–झट, थोड़ी देर में। उ० पल की पल में सब हो जायगा, [illegible] रहिए।

पलकें बिछी हुई होना–[illegible] के लिए [illegible] और आँख से तैयार होना। उ० [illegible] उनकी [illegible], आज [illegible]।

पलकें भारी होना–नींद आना।

पलकों का [illegible] लेना–[illegible]।

पलकों से जमीन झाड़ना–१. दे० 'पलकों से नमक उठाना'। २. दे० 'पलकें बिछी हुई होना'।

पलकों से तिनका चुनना–दे० 'पलकों से नमक उठाना'।

पलकों से नमक उठाना–१. [illegible] ते सेवा करना। उ० माता पुत्र के लिए पलकों से नमक उठाती है। [illegible] उ० [illegible] आदमी हो, पलकों से नमक उठाता है।

पलकों से नमक चखना–[illegible] करना। [illegible] सहना। [illegible] नमक की [illegible] जब किसी [illegible] पड़ता है तो [illegible] यह नमक चखना [illegible] होगा।]

पलट आना–लौटना। उ० जल्दी ही पलट आऊँगा।

पलट जाना–१. बदल जाना। [illegible] जाना। उ० तुम्हारा जीभ [illegible] जीभ है, तुरन्त पलट जाते हो। २. [illegible] जाना।

पलटा खाना–दे० 'पलट जाना'।

पलटा लेना–उलटना। उ० समय पलटा लेगा।

पलड़ा भारी होना–(तुलना में) स्थिति अच्छी होना।

पलथी मारना–स्थिर होकर पैरों को मोड़ कर बैठना। उ० पलथी मार कर बैठो, बहुत देर होगी।

पल मारते–पलक झपते। तुरत। उ० यह काम तो पल मारते हो जायगा।

पल मारना–पलक गिरने जितना समय होना। थोड़ी देर होना। उ० वह पल मारते ही लुप्त हो गया।

पलस्तर उखाड़ना–दे० 'पलेथन निकालना'।

पलस्तर ढीला करना या कर देना–[illegible] [illegible] [illegible]।

पलस्तर [illegible]–दे० 'पलस्तर ढीला करना'।

पलस्तर [illegible] देना–दे० 'पलस्तर ढीला करना'।

पलीता [illegible]–[illegible]।

पलेथन निकलना–[illegible] [illegible]।

पलेथन [illegible]–[illegible] [illegible]।

पलेथन [illegible]–[illegible]।

प[illegible] [illegible]–[illegible] [illegible] [illegible]।

पल्ला [illegible]–१. [illegible] [illegible]।

पल्ला [illegible]–[illegible] [illegible]।

पल्ला [illegible]–[illegible] [illegible]।

पल्ला [illegible] होना–[illegible]।

पल्ला छूटना–१. [illegible] होना। २. [illegible]। उ० [illegible] पल्ला छूटा [illegible]।

पल्ला पकड़ना–१. [illegible] करना। उ० [illegible] पल्ला था पकड़ो। २. [illegible] लेना, [illegible] लेना। उ० तुम तो पल्ला पकड़ लेती हो।

पल्ला पसारना–१. आँचल पसार कर विनती करना। उ० हम भगवान् के आगे पल्ला पसारो। २. माँगना। उ० क्यों दर-दर पल्ला पसारे फिरते हो?

पल्ला पार होना–काम बन जाना।

पल्ला भारी होना–तर्क दृढ़ होना। उ० उनका पल्ला बहुत भारी है, वे जीत जायेंगे।

पल्ला लेना–[illegible] लेना। उ० पल्ला न लो, जरूरी काम है।

पल्ले आना—दे० 'पल्ला आना'।

पल्ले पडना—१ ज़िम्मे पडना। उ० सारा घाटा हमारे ही पल्ले पडा। २ हिस्से मे आना। उ० वहाँ की ज़मीन तो तुम्हारे पल्ले पडी होगी ? ३ याद करना या रखना। उ० हमारी बात तो तुम्हारे पल्ले पडती नही। ४ शादी होना। उ० वही लडकी तुम्हारे पल्ले पडी।

पल्ले पर आना—हठ पकडना, ज़िद्द पर आना। उ० क्या लडको की तरह पल्ले पर आते हो ?

पल्ले पर रहना—१ किसी के पक्ष मे रहना। उ० वह तो सदा असहायो के पल्ले पर रहता है। २. किसी के भरोसे रहना। उ० वह भी हमारे ही पल्ले पर रहता है।

पल्ले पर होना—दे० 'पल्ले पर रहना'।

पल्ले पार होना—ज़बर्दस्ती पार हो जाना।

पल्ले बाँधना—१ पास लेना। २ सहारे करना।

पल्ले से बँधना—ज़िम्मे आना। उ० ऐसी ज़िम्मेदारी मेरे पल्ले से बँधी कि क्या कहूँ ?

पवन का भुस होना—कोई महत्त्व न होना। उ० उसकी बातें तो पवन का भुस होती हैं।

पवन बिठाना—जादू करना। किसी के दिल को जादू से बेकरार करना। मोहित करना।

पशम उखाडना—कुछ कर सकना। उ० तुम मेरा पशम भी नही उखाड सकते हो।

पशम न उखाडना—कुछ न कर सकना।

पशम न समझना—तुच्छ समझना। कुछ न समझना। उ० तुम्हारे जैसे आदमियो को मैं पशम भी नही समझता।

पशम पर मारना—दे० 'परवाह न करना'।

पशम समझना—तुच्छ समझना। उ० वह तो तुझे पशम समझता है।

पशु होना—१ मूर्ख होना। २ निर्दय होना।

पशेमाँ होना—शर्मिदा होना। लज्जित होना।

पशमकुन्दा न होना—कुछ न हो सकना, खाक न होना।

पश्म न उखडना—कुछ न हो सकना। उ० उनसे तो पश्म भी न उखडेगी।

पश्म पर मारना—परवाह न करना। गरज न रखना। खातिर मे न लाना।

पसगा भी न होना—कोई मूल्य न होना। किसी लायक न होना। उ० वह तो वैसे आदमियो मे पसगा भी नही है।

पशोपेश करना—हिचकना, आगा-पीछा करना।

पसंद आना—अच्छा लगना। उ० तुम्हारी चाल-चलन हमे पसद आती है।

पसद करना—उ० वह तो उसी को पसद करता है।

पसलियाँ ढीली करना—भीतरी मार मारना। उ० ऊपर से तो मालूम नही होता है, लेकिन उसने पसलियाँ ढीली कर दी हैं।

पसलियाँ तोडना—दे० 'पसलियाँ ढीली करना'।

पसली फड़क उठना—दे० 'पसली फड़कना'।

पसली फडकना—१ किसी बात के होने का लक्षण होना। २ तबीयत घबडाना। ३ होशियार हो जाना। ४ जोश आना।

पस व पेश सोचना—आगा-पीछा सोचना। ऊँच-नीच सोचना, बुरा-भला सोचना।

पसीना बहाना—अधिक परिश्रम करना।

पसीना हरा होना—पसीना सूखना या खुश्क होना।

पसीने की कमाई—मेहनत से पैदा किया गया रुपया। उ० इन गरीबो की पसीने की कमाई न लो।

पसीने की जगह खून बहाना—किसी बात की बहुत परवाह करना। किसी के लिए प्राण देने को तैयार रहना। उ० तुम निडर होकर चलो, मैं तो तुम्हारे पसीने की जगह अपना खून बहाने को तैयार हूँ।

पसीने-पसीने होना या हो जाना—एकदम शर्मिदा होना। उ० वह तो तुम्हे देख कर पसीने पसीने हो गया।

पसीनो मे डूबना—खूब पसीना आना।

पसेरी मे पाँच सेर की भूल करना—बहुत बडी भूल करना।

पस्त करना—हरा देना, गिरा देना। उ० उसे एकदम पस्त न करो।

पहरा देना—चौकसी करना। उ० वह रात को पहरा देता है।

पहरा पड़ना—रखवाली होना। उ० मालगोदाम पर पहरा पड़ता है।

पहरा बदलना—पहरेदारो की बदली होना। उ० थोडी देर मे पहरा बदलेगा।

पहरा बैठाना—दे० 'पहरा पडना'।

पहरा बैठाना—रखवाली के लिए चौकीदार निश्चित करना।

पहरावनी देना—कपडो की भेंट देना।

पहरे मे डालना–१ किसी आदमी को पहरे के लिए नियत करना । उ० आज मुझे पहरे मे न डालिए । २ कैद मे रखना ।

पहरे मे बैठाना–दे० 'पहरे मे डालना' ।

पहरे मे रखना–१ जेल मे पहरेदारो द्वारा रक्षित रखना । २ दे० 'पहरे मे डालना' ।

पहरे मे होना–रखवाली मे होना । उ० वह तो पुलिस के पहरे मे है ।

पहल करना–किसी काम को शुरू करना ।

पहल निकालना–छाँट कर कोण को ठीक करना । उ० अभी इसमे पहल निकालना बाकी है ।

पहली बिस्मिल्लाह गलत–काम की शुरुआत ही अशुद्ध । उ० पहली बिस्मिल्लाह गलत हो तो पूरा कैसे पडे ?

पहली सीढी–किसी काम का पहला कदम ।

पहलू गरम करना– बगल मे बैठना या बैठाना ।

पहलू तोही करना–किनारा करना, दूरी पर जाना ।

पहलू दबाना–फौज या दुर्ग पर किसी ओर से हमला करना ।

पहलू निकलना–कोई प्वाइन्ट ढूंढना । उ० कोई पहल निकाला तो जीत हो जाय ।

पहलू पर होना–अपने वसूल पर होना ।

पहलू बचाना–दे० 'आँख बचाना' । दे० 'जी चुराना' ।

पहलू बदलना–१ करवट बदलना । २ रग बदलना । उ० इतनी जल्दी-जल्दी पहलू न बदलो ।

पहलू बसाना–१ पडोस मे जाकर रहना । उ० तुमने तो मेरा पहलू बसा दिया । २ गोद मे बैठाना ।

पहलू मे बैठना–गोद मे बैठना ।

पहलू मे बैठाना–गोद या बगल मे बैठाना ।

पहलू मे रहना–समीप रहना । उ० वह तो मेरे पहलू मे ही रहता है ।

पहाड उठाना–बडा काम सर पर लेना । उ० जब शक्ति नही है तो क्यो पहाड उठाते हो ?

पहाड कटना–१ आफत दूर होना ।

पहाड काटना–१ मुश्किल काम करना । २. नामुमकिन काम करना ।

पहाड के पत्थर ढोना–दे० 'पहाड काटना' ।

पहाड़ खड़ा होना–बडी रुकावट होना ।

पहाड गुज़रना–दे० 'नागवार गुज़रना' ।

पहाड-जैसा दिन–लम्बा दिन जो किसी प्रकार न बीते ।

पहाड टालना–आफत मे जान बचाना । उ० पहले पहाड टाल लूं तो बात करूँ ।

पहाड टूटना–दे० 'आसमान टूट पडना' ।

पहाड टूट पड़ना–दे० 'पहाड टूटना' ।

पहाड़ से टक्कर लेना-१ भारी दुश्मन का मुकाबिला करना । २ मूर्खता करना । उ० पहाड से टक्कर लेने मे कौन-सी होशियारी है ।

पहाड हो जाना–मुश्किल से कटना, भारी हो जाना । उ० दु ख की रातें पहाड हो जाती हैं ।

पहुँचने वाला–जाने के योग्य । उ० जो पहुँचने वाला हो, उसे भेजो ।

पहुँचा पकडना–ज़बर्दस्ती करना । उ० पहुँचा न पकडो, नही तो बुरा होगा ।

पहुँचा हुआ–१ जानकार, सिद्ध, पारंगत । २ घुटा हुआ ।

पहुनाई करना–मेहमानिवाज़ी करना ।

पहेली बुझाना–घुमा-फिरा कर कहना । उ० पहेली न बुझाओ, सीधी बात कहो ।

पांच की सात लगाना–थोडे को बहुत बढा-चढा कर कहना ।

पाँच-सात भूल जाना–चालाकी भूल जाना ।

पाँचो उँगली घी मे होना–सुख से दिन कटना । चक होना । आनन्द ही आनन्द होना । उ० आजकल तो आपकी पाँचो उँगली घी मे हैं ।

पाँचों उँगली बराबर न होना–सब कुछ एक-सा न होना । सबका बराबर न होना ।

पाँचो सवारों मे नाम लिखाना–बडे आदमियो की श्रेणी मे आना । उ० पाँचो सवारो मे नाम लिखाने के लिए उसने भी रुपये दे दिए हैं ।

पाँवो से बाहर होना–कही का न रहना ।

पाँव अडाना–अडंगा डालना, बाधा डालना । उ० तुम तो व्यर्थ मे पाँव अडाते फिरते हो ।

पाँव उखड़ जाना—१ स्थिर न हो सकना। २ अपने पद या स्थान से डावाँडोल हो जाना या हट जाना। उ० एक बार पाँव उखडा तो फिर जमना मुश्किल है। ३ हार जाना।

पाँव उठ जाना—दे० 'पाँव उखड जाना'।

पाँव उठा कर चलना—जल्दी-जल्दी कदम रखना। उ० ज़रा पाँव उठा कर चलो, नहीं तो देर हो जायगी।

पाँव उठाकर जाना—दे० 'पाँव उठा कर चलना'।

पाँव उठाना—दे० 'पाँव उठा कर चलना'।

पाँव उतर जाना—पाँव का किसी गाँठ पर सरक जाना।

पाँव ऊँच-नीच पड़ना—१ गलती होना। २. पर स्त्रीगमन या पर पुरुष-गमन सम्बन्धी गलती होना। उ० बेचारी का पाँव ऊँच-नीच पड गया तो समाज कलंकित करता है, पर इसके लिए समाज के अतिरिक्त कौन दोषी है?

पाँव कट जाना—आना-जाना न होना। उ० बदमाशों का घर से पाँव कट जाय तो अच्छा है।

पाँव क़ब्र मे लटकना—मरने के करीब होना। उ० पाँव क़ब्र मे लटकाये हो और बेईमानी करते हो।

पाँव काँपना—१ किसी काम को सोच कर डरना, हिम्मत न पड़ना। उ० इस काम का तो नाम सुनते पाँव काँपता है। २ डरना। ३ कमज़ोरी होना। उ० उसका तो पाँव काँपता है, वह काम क्या करेगा?

पाँव की जूती सिर को लगाना—१ बहुत इज्ज़त करना। २ छोटो का बडे के मुँह लगना।

पाँव की ठकुराई का सिर पर चढ़ना—दे० 'पाँव की जूती सिर को लगना'।

पाँव की मेहदी घिस जाना—पैर गंदा हो जाना, [बहुत सुकुमार बनने वाले के प्रति व्यग्य]। उ० ज़रा चले न चलो, कोई पाँव की मेहदी तो न घिस जायगी।

पाँव-खाक होना—१ अपने को निहायत नाचीज समझना। २. किसी के अधीन होना। उ० मैं आपका पाँव-खाक नही हूँ।

पाँव खींचना—१ बंद करना। उ० चहल-कदमी से पाँव खीचो। २. करने से इन्कार करना। उ० वहाँ चलने से पाँव न खीचो।

पाँव गाड़ना—१. जम जाना। उ० यहाँ पाँव न गाडो, अपना रास्ता लो। २ अपनी बात पर अटल रहना।

पाँव-चप्पी करना—खुशामद करना। चापलूसी करना। उ० मुझे पाँव-चप्पी करना नही आता।

पाँव चलना—बच्चे का सर्वप्रथम चलना।

पाँव चापना—सेवा करना, खुशामद करना। उ० जो गला चाँप-चाँप देते है, पाँव हम चाँप है रहे उनका।

पाँव चूमना—दे० 'पाँव-चप्पी करना'।

पाँव छूटना—मासिक होना।

पाँव जोड़ना—दे० 'पग जोडना'।

पाँव झनझाना—डर या अन्य कारणो से पाँव सुन्न हो जाना।

पाँव टिकना—कही जम कर रहना। उ० तुम्हारे तो पाँव कहीं टिकते नही।

पाँव टिकाना—किसी जगह ठहरना।

पाँव टूटना—१ बहुत थक जाना। उ० आज तो आते-जाते पाँव टूट गए। २ किसी बडे सहायक का समाप्त हो जाना। उ० वह मरा क्या, मेरे पाँव टूट गए।

पाँव डगमगाना—१ मजबूती से पैर न जमना। उ० पाँव डगमगा रहा है, गिर जाओगे। २ जड का हिल जाना। उ० पाँव डगमगाया तो फिर जमना बहुत मुश्किल है।

पाँव डिगना—१ अटल न होना। उ० देखना बात से पाँव न डिगे, नही तो बदनामी होगी। २ चरित्र का भ्रष्ट होना।

पाँवड़े बिछाना—बहुत आदर-सत्कार करना।

पाँव-तले की चींटी—तुच्छ। उ० तुम तो उसके पाँव-तले की चींटी हो।

पाँव-तले की चींटी होना—बुरी तरह कुचला-मसला या बरबाद हो जाना। उ० जातियाँ बेतरह दबी कुचली, चींटियाँ पाँव के तले की हैं।

पाँव-तले की ज़मीन (धरती) सरक जाना—१ बहुत कष्ट, शोक या करुणा से ज़मीन मे धँसने का भाव दिल मे आना। उ० फेल होने का समाचार सुनते ही उसके पाँव-तले की ध[illegible]। २ बहुत डर जाना।

पांव-तले की मिट्टी निकल जाना—दे० 'पांव-तले की ज़मीन सरक जाना'।

पांव-तले मलना—पामाल करना। नष्ट-भ्रष्ट करना।

पांव तोड़ कर बैठना—१ स्थायी रहना। उ० विश्व मे अशाति पांव तोड कर बैठी है। २ पस्तहिम्मत होकर बैठना।

पांव तोडना—बहुत दौडना-धूपना। उ० पांव तोड कर हार गया, पर पता न चला।

पांव थरथराना—हिम्मत हार जाना। उ० उसका तो अभी से पांव थरथराने लगा, वह लडेगा क्या?

पांव धरती पर न रखना—१ दे० 'फूला न समाना'। २ ऐंठना, घमड करना।

पाव धरना—१ आना। २ प्रणाम करना। ३. आरभ करना।

पांव धोकर पीना—१ पूज्य बनाना। उ० गुरुजी का पांव धोकर पी लो। २ बहुत खुशामद या आदर करना।

पांव न धुलवाना—अपनी सेवा के योग्य भी न समझना। बिल्कुल नाचीज़ समझना।

पांव निकलना—व्यभिचारी होना, आचरण-हीन होना। उ० पांव निकला तो खानदान का नाम डूब जाएगा।

पांव निकालना—१. भ्रष्टाचार करना। २ धूर्त होना। ३ सीमा का उल्लघन करना।

पांव पकडना—१ पैर छूकर प्रार्थना करना, सहारे के लिए प्रार्थना। उ० पांव हम तो रहे पकडते ही, पर कहाँ बाँह आपने पकडी? २ खुशामद करना।

पांव परखना—दे० 'पग धोना'।

पांव पडना—१. पैर -पर सर रखना। उ० वह बडी नम्रता से तुम्हारे पाँव पडता है। २ नम्रता तथा दीनता से विनय करना। उ० यदि पांव पडने लगे तो क्षमा कर देना। ३ खुशामद करना।

पांव पर गिरना—दे० 'पांव पडना'।

पांव पर पांव रख कर बैठना—१ निश्चित होकर बेकार बैठना। उ० नौजवान आदमी को भला पांव रख कर बैठना चाहिए, अरे कुछ करो भी। २ लापरवाह होना। उ० सारी जिम्मेदारी तुम्हारे सर है, पांव पर पांव रख कर न बैठो।

पांव पर पांव रखना—हूबहू नकल करना। उ० रवि बाबू के पांव पर पांव रखते हैं और अपने को बनते हैं मौलिक कवि। यही तो आज के साहित्यिक हैं।

पांव पर सिर झुकाना—दे० 'पांव पडना'।

पांव पर सिर रखना—दे० 'पांव पडना'।

पांव पसारना—१ खर्च करना। उ० तेते पांव पसारिए जेती लाँबी सौर। २. निश्चित होना। उ० अब क्या करना है, पांव पसार कर सोओ। ३ मर जाना। उ० एक दिन सबको पांव पसारना है। ४ जगह घेरना। उ० कहाँ तक पांव पसारना चाहते हो? आखिर कुछ हद भी है।

पांव-पांव चलना—पैर से या पैदल जाना। उ० बहुत निकट है, पांव-पांव चला जाऊँगा।

पांव पीटना—१ अथक कोशिश करना। उ० उसने बहुत पांव पीटे, पर कुछ बस न चला। २ छटपटाना। उ० वह पीड़ा के मारे रात भर पांव पीटते रहा।

पव पीट-पीट कर मरना—बडा कष्ट सहन कर मरना। उ० कितने ही रोज़ पांव पीट-पीट कर मर जाते है, पर कोई पूछता तक नही। यही तो हमारा समाज है।

पांव पूजना—१. पूज्य मानना। २ अपनी लड़की की शादी करना। अपनी लडकी देना। उ० जब उनका पांव पूजा है तो भला उनकी चीज़ कैसे लूं?

पांव फँसना—'पक मे पड़ना'।

पांव फिसलना—१ गलती होना। उ० तुम्हारे तो पांव फिसलते ही रहते हैं। २ आचरण-सबधी गलती होना। उ० उसके भी पांव फिसल ही गए।

पांव फूंक-फूंक कर रखना—सोच-समझ कर आगे बढना। उ० तुम्हारी बातो मे वह नही आएगा। बडा पुराना है, और पांव फूंक-फूंक कर रखता है।

पांव फूंक-फूंक रखना—१ बहुत धीरे-धीरे, देख-देख कर आगे बढना। २ बहुत डर कर और बच कर आगे बढना। उ० फूंक से आप उड़ न जायेंगे, पांव क्यो फूंक-फूंक हैं रखते।

पांव फूलना—१ भयभीत होना। उ० शेर का नाम ही सुन कर उसके पांव फूलने लगे। २ थक जाना। उ० आज चलते-चलते पांव फूल गए। ३ गर्भवती होना।

पाँव फेरने जाना—१ बच्चा होने के बाद मायके (नैहर) जाना। उ० वहू पाँव फेरने गई है। २ बरबाद करने जाना। उ० गया तो था पाँव फेरने, पर देख कर दया आ गई।

पाँव फैला कर सोना—निश्चित होकर सोना। उ० अब तो सब कामो से छुट्टी मिल गई, कुछ आराम से पाँव फैला कर सोना है। यहाँ पाँव फैला कर न सोओ। बडी खतरनाक जगह है।

पाँव फैलाना—और पाने के लिए हठ करना। उ० देखो जितनी शक्ति थी, दे दिया, अब पाँव फैलाना व्यर्थ है।

पाँव बढाना—१ जल्दी-जल्दी चलना। उ० पाँव बढाओ सात बजे पहुँचना है। २ आगे बढना। उ० डरो नहीं, पाँव बढाओ, मैं साथ मे हूँ। ३ अपनी शक्ति बढाना। उ० राजाओं को पाँव बढाते ही जाना चाहिए। ४ उन्नति करना।

पाँव बाहर निकालना—१ स्त्री या लडकी का व्यभिचारिणी होना। उ० वह तो पाँव बाहर निकालने लगी। २ अलग हो जाना। उ० मैंने उस काम से पाँव बाहर निकाल लिए। ३ अपना हिस्सा आदि वापस ले लेना। ४ आज्ञा न मानना। ५. इतराना और अपने को अपने सामर्थ्य से अधिक समझना। उ० पाँव बाहर निकालने मात्र से तुम्हे कोई नहीं बडा कह सकता।

पाँव बिचलना या बिचल जाना—१. धर्म तथा सत्य से हटना। उ० देखना कुछ भी हो, पर पाँव न बिचले। २ फिसल जाना। उ० काई पर पाँव बिचल जाएगा। ३ निश्चय से टलना। उ० थोडा-सा लाभ देख कर उसके पाँव बिचल गए।

पाँव बीच मे होना—१ उत्तरदायी होना। उ० तुम्हारा पाँव बीच मे है और तुम्हें मामले की खबर भी नही? २ दुविधा मे पडना। उ० आजकल तो पाँव ऐसा बीच में है कि कुछ समझ से नही आता कि क्या करूँ?

पाँव बीच से निकाल लेना—सबंध तोड लेना। उ० थोड़ी-सी बात पर उन्होंने उस संस्था के बीच से पाँव निकाल लिए।

पाँव भर जाना—१ थकावट से पैर भारी मालूम होना। उ० अब तो भाई पाँव भर गए, ज़रा आराम कर लेने दो। २ तेज़ या भर क़दम चलना। उ० पाँव भर जाओगे तो समय पर पहुँच जाओगे।

पाँव भारी होना—१ बुरी अवाई होना। उ० पता नही इस साल किसका पाँव भारी है कि सब काम बिगडता ही रहता है। २ गर्भवती होना। उ० वहू का पाँव भारी हो गया है।

पाँव भी न धुलवाना—बहुत निरादर करना। तुच्छ समझना। उ० मैं तो आपसे पाँव भी नही धुलवा सकता।

पाँव-मुरीद—आज्ञा पालने वाला। उ० तुम्ही तो उनके पाँव-मुरीद हो।

पाँव मे कँपकँपी होना—दे० 'पाँव काँपना'।

पाँव मे घनचक्कर होना—दे० 'पाँव मे सनीचर होना'।

पाँव मे पर लगना—बहुत तेज़ चलना। उ० भाई तुम्हारे पाँव मे तो पर लगा है, मैं नही भेंट सकता।

पाँव मे बेड़ी पड़ना—१ ज़ोर से न चला जाना। उ० चलो न, क्या पाँव मे बेडी पडी है? २ बधन या चक्कर मे पडना। उ० हमारे पाँवो मे बेड़ी पडी है। तुम्हे क्या पता? ३ विवाह होना। उ० पाँव मे बेडी पडत है ढोल बजाय बजाय। ४ क़ैद होना।

पाँव मे मेहदी लगना—चलने मे आलस्य करना। उ० पाँव मे मेहदी लगी है, क्योकि नही चल रहे हो।

पाँव में सनीचर होना—बहुत चलने या इधर-उधर घूमने वाला होना। हर वक्त चलते रहना। उ० तुम्हारे पाँव मे तो सनीचर है, कभी घर पर तो तुम्हें देखता ही नही।

पाँव मे सिर देना—दे० 'पाँव पर सिर रखना'।

पाँव रखने का ठिकाना न होना—रहने की बिल्कुल शरण न होना। उ० बेचारे शरणार्थियो को पाँव रखने तक का ठिकाना नहीं है।

पाँव रगड़ना—दे० 'पाँव पीटना'।

पाँव रह जाना—बिना शक्ति के होना। दुर्बल हो जाना। उ० बीमारी से केवल पाँव रह गया है।

पाँव रोपना—१ पाँव जमाना, अडना। २ रुकना। उ० वहाँ पाँव रोपो तो मैं भी चलूँ।

पाँव लगना—१ पैर छूकर नमस्कार या प्रणाम करना। उ० छोटो को बडो का पाँव लगना चाहिये। २ बहुत प्रार्थना करना। उ० तुम्हारे पाँव लगता हूँ, छोड दो।

पांव लगा होना—बार-बार आने-जाने वाला होना। उ० वह तो पाँव लगा हो गया है, जब देखो पहुँचा रहता है।

पांव लड़खड़ाना—दे० 'पाँव मे कँपकपी होना'।

पांव लेना—दे० 'पाँव लगना'।

पांव समेटना—१ दे० 'पाँव सिकोडना'। २ सबध-विच्छेद करना। उ० बहुत से लोगो ने अब काग्रेस से पाँव समेट लिये। ३ मर जाना। बेचारे ने आज सदा के लिए पाँव समेट लिये हैं। ४ अधिकारो मे कमी करना।

पांव साबित रखना—हिम्मत न हारना, न हटना।

पाँव सिकोड़ना—पैर बटोरना। उ० पाँव सिकोड लो ताकि मैं बैठ सकूँ।

पाँव से पांव बांध कर रखना—१ सावधानी मे पास रखना। उ० अब उसे पाँव से पाँव बाँध कर रखा करो, नही तो बिगड जाएगा। २ अलग न होने देना।

पांव से पांव बांधना—हिरासत मे रखना, निगह-बानी करना।

पाँव से पांव भिडाना—करीब या नजदीक होना।

पांव सो जाना—पैर सुन्न हो जाना, पैर मे झुनझुनी होना। उ० बैठे-बैठे पाँव सो गए।

पाँव-हाथ निकालना—शक्ति के बाहर ऐठ कर चलना। उ० न जाने किसके बल पर वह पाँव-हाथ निकालने लगा है।

पाँसा उलटना—१ परिस्थिति का एक-ब-एक परिवर्तित हो जाना। २ काम हो रहा हो तो अत मे अप्रत्याशित फल सामने आना या फल का बदल जाना। उ० ऐसा पाँसा उलट गया कि अत मे उनकी जीत हो गई।

पाई करना—टाइप का केस खराब करना। उ० केस पाई न करो। [यह प्रेस मे बोला जाता है।]

पाएँचा भारी करना—किसी जगह जम कर बैठ जाना। बाहर न निकलना।

पाक करना—१ शुद्ध करना। २ समाप्त करना। उ० झगडा पाक करो और चलो।

पाक होना—मिटाना, समाप्त होना। उ० किसी तरह झगडा पाक हुआ।

पाकठ हो जाना—पक्का होना, अनुभवी होना। उ० इस मुहल्ले मे जो भी आता है, कुछ ही दिनो मे पाकठ हो जाता है।

पाकेट गरम करना—१. घूस लेना। उ० आज-कल तो पाकेट गरम करने का ही जमाना है। २. रुपया मिलना या लेना।

पाखंड फैलाना—१ आडबर करना। २ धोखा फैलाना। ३ जाल बिछाना।

पाखाना फिरना—दस्त करना। उ० वह पाखाना फिरने गया है।

पाग जोडना—झूले मे आमने सामने बैठ कर एक खास तरह से झूले की रस्सी मे पाँव उलझाना।

पागल होना—किसी धुन मे मस्त होना।

पाजामे से बाहर होना—१ क्रोधित होना। उ० क्यो पाजामे से बाहर हो रहे हैं, जरा धीरज तो धरिए। २ जोश मे आना।

पाट देना—भर देना, ढेर लगा देना। उ० उसने तो लूट के माल से अपना घर पाट दिया।

पाटा फेरना—बरबाद कर देना। उ० तुमने सारे काम-धाम पर पाटा फेर दिया।

पाठ पढाना—बहकाना। धोखा देना। उ० मुझे क्या पाठ पढा रहे हो, मैं तो स्वय पढाता हूँ।

पाणिग्रहण करना या होना—विवाह करना या होना।

पाताल की खबर लाना—बहुत दूर से समाचार ले आना। उ० मैं तो पाताल की खबर ला सकता हूँ, यहाँ की तो बात ही क्या।

पातो आ लगना—अवनति होना। बुरी हालत को पहुँचना। उ० यही आदत रही तो वह थोडे दिनो मे पातो आ लगेगा।

पाद-पीठ बनना—रौंदा जाना।

पाद बद होना—डर जाना, भयभीत होना। उ० इतने मे ही पाद बद हो गए।

पान की तरह फेरा जाना—बहुत सेवा होना।

पान चीरना—बेकार के काम मे वक्त बरबाद करना। उ० दिन भर पान चीरते रहे, यदि काम करना होता तो वहाँ न जाते।

पानदान का खर्च—पान या शौक का ऊपरी व्यय। उ० दस रुपये तो उसके पानदान का खर्च है।

पान देना—प्रतिज्ञा कराना। हाँ करवाना। उ० उसने पान दे दिया, अब तो करना ही पडेगा।

पान-पत्ते तक सीमित होना—सामान्य मित्रता का नाता होना।

पान-पनही खिलाना–आदर और निरादर करना । उ० मुंह देख कर पान-पनही खिलाना चाहिए ।

पान-फूल पर रहना–बहुत सुकुमार होना ।

पान-फूल-सा–दे० 'फूल-सा' ।

पान बनाना–तरह-तरह से मसाले डाल कर पान का बीडा लगाना ।

पान लगाना–दे० 'पान बनाना' ।

पान लेना–साहस करके मैदान मे उतरना । किसी काम को पूरा करने के लिए बीडा उठाना । उ० मुझसे लडने के लिए कौन पान लेता है ?

पानी आना–१ वर्षा होने को होना । २ कुएँ मे पानी आना । ३ आँख मे चोट लगने से पानी निकलना ।

पानी उठाना–पानी सुखाना ।

पानी उतर जाना–१ लाज न रहना । उ० जिस स्त्री का पानी उतर गया, वह भी क्या स्त्री है ? २ पालिश छूटना । उ० बर्तनो का पानी उतर गया । ३ हाथी आदि को नये पानी से पेट आदि फूलने की बीमारी होना । उ० इस हाथी को पानी उतर आया है, ठीक से दवा करो ।

पानी उतरना–दे० 'पानी उतर जाना' ।

पानी उतारना–अपमानित करना । उ० तुमने मेरा पानी उतार लिया ।

पानी करना–१ शात कर देना । उ० उसके स्वभाव ने सारा क्रोध पानी कर दिया । २ करुणा से भर देना । उ० वह जब गाता है तो हृदय को पानी कर देता है । ३. आसान कर देना । ४ बर्बाद करना ।

पानी की तरह साफ होना–एकदम स्पष्ट होना ।

पानी की चपरी होना–तत्त्वहीन होना ।

पानी का बतासा–दे० 'पानी का बुलबुला' ।

पानी का बुलबुला–अस्थायी, क्षणिक । उ० जीवन पानी का बुलबुला है, जो करना हो जल्दी कर लो ।

पानी का हगा मुह पर आना–अपने किये का फल पाना ।

पानी की तरह बहाना–अधाधुध खर्च करना । उ० वह तो रुपया पानी की तरह बहाता है ।

पानी की धौंकनी लगना–बहुत प्यास लगना । उ० हैजे मे पानी की धौंकनी लगती है ।

पानी की लहरें गिनना–व्यर्थ तथा असभव काम करना । उ० इस पानी की लहरो को गिनने मे कौन बुद्धिमानी है ?

पानी के घडे पड़ना–दे० 'सौ-सौ घडे पानी पडना' ।

पानी के मोल–बहुत सस्ता । उ० अलाउद्दीन के समय मे अन्न पानी के मोल था ।

पानी के रेले मे बहाना–नष्ट कर देना । उ० क्यो अपना जीवन पानी के रेले मे बहाते हो ?

पानी को भी न पूछना–जरा भी आदर-सत्कार न करना ।

पानी खुलना–वर्षा बंद होना । उ० पानी खुले तो चलूँ ।

पानी खोना–इज्जत खोना ।

पानी चढना–सौन्दर्य बढना ।

पानी चढाना–१. ऊँचाई पर पानी ले जाना । २ सिचाई करना । ३ खूब पानी पीना । उ० पानी चढा लो, फिर रास्ते मे न मिलेगा । ४ बहकाना ।

पानी छाँटना–चेचक के ढलने पर पानी के छींटे देना ।

पानी टूटना–कुएँ मे पानी की कमी होना । उ० आज तो पूर चलने से कुएँ का पानी टूट गया ।

पानी ढलना–१ सुन्दरता या चमक-दमक न रहना । उ० जब पानी ढल गया तो कौन पूछे ? २ तनिक भी लाज न रहना । उ० जिस लडकी का पानी ढल गया, उससे कौन शादी करेगा ?

पानी तोडना–१ मल्लाहो का नाव से पानी काटना । २ पानी की कमी कर देना । उ० बाढ के पानी को रास्ता निकाल कर कम कर देना ।

पानी दिखाना–जानवरो के सामने पीने के लिए पानी रखना ।

पानी देना–१ पितरो को तर्पण करना । उ० पितृ-पक्ष मे पानी दिया जाता है । २ पालिश करना । ३ धार तेज करना ।

पानी देने वाला–वशज ।

पानी न पचना—१ बहुत बेचैनी होना । २ कोई भी बात अपने तक न रख पाना ।

पानी न माँगना—तुरत मर जाना ।

पानी पडना—दे० 'पानी के घडे पडना' ।

पानी पर नींव डालना—अस्थायी या अदृढ काम करना । उ० मुझे पानी पर नीव डालना नही आता, जो भी काम करता हूँ, पोख्ता करता हूँ ।

पानी पर नींव होना—अदृढ या अस्थायी होना ।

पानी पाँडे होना—पानी पिलाने वाला होना । [इसका प्रयोग स्टेशनो पर प्राय होता है ।] उ० पानी पाँडे यही हैं, पानी माँगो ।

पानी-पानी करना—बहुत शर्मिन्दा कर देना । उ० तुमने तो पानी-पानी कर दिया ।

पानी-पानी होना—लज्जित होना । उ० वह तो भरी सभा मे पानी-पानी हो गया ।

पानी पिलाना—नीचा दिखाना । उ० तुम तो बात ही बात मे पानी पिला देते हो ।

पानी पी कर जात पूछना—कोई काम करके पछताना, बेवक्त अफसोस करना । उ० पानी पीकर जात क्यो पूछते हो ? जो होना था, हो चुका ।

पानी पीटना—१ बहुत परिश्रम का काम करना । उ० क्या पानी पीट रहे थे कि थक गए हो ? २ बेकार का काम करना । उ० क्या पानी पीट रहे हो ?

पानी पी-पी कर कोसना—रह-रह कर कोसना, प्रतिक्षण गाली देते रहना । खूब कोसना । उ० उसी दिन से वह तुम्हे पानी पी-पी कर कोस रहा है ।

पानी पी-पी कर दुआ देना—हरदम दुआ देना, दिल से दुआ देना । उ०, हमसे मस्तो की कहाँ होती 'मुख़य्यर' गुज़राँ, पानी पी-पी के दुआ देते हैं मयख़ाने को ।

पानी फिर जाना—दे० 'पानी फिरना' ।

पानी फिरना—ख़राब हो जाना, बरबाद हो जाना । उ० उसकी इज्ज़त पर पानी फिर गया ।

पानी फेरना—बरबाद कर देना । उ० उसने बने-बनाए काम पर पानी फेर दिया ।

पानी बचाना—प्रतिष्ठा रखना, लाज बचाना । उ० आपने मेरा पानी बचा लिया, नही तो मैं कही का भी नही रहता ।

पानी बदलना—स्वास्थ्य-सुधार के लिए जगह परिवर्तित करना ।

पानी बुझाना—कोई गर्म चीज़ पानी मे डाल कर बुझाना ।

पानी भरना—तुलना मे हीन होना ।

पानी मथना—बेकार प्रयत्न करना ।

पानी मरना—१ पानी का सूखना । उ० अभी उस मैदान मे बरसात का पानी मरा नही है । २ निर्लज्ज होना । ज़रा भी लाज न रह जाना । ३ इज्जत चली जाना ।

पानी मे आग लगना—१ अनहोनी का होनी होना । असभव का सभव होना । २ अकारण झगडा होना । उ० आज तो बात ही बात मे आग लग गई । ३ शात व्यक्ति का गुस्सा करना ।

पानी मे आग लगाना—१ असभव को सभव करना । उ० गाधी जी ने अपने व्यक्तित्व से पानी मे आग लगा दी । २ अकारण झगडा कराना ।

पानी मे का नमक होना—पूरी तरह मिल जाना ।

पानी मे गिर जाना—नष्ट हो जाना ।

पानी मे फेंकना—व्यर्थ मे गवाँ देना । उ० उसने सारा माल पानी मे फेंक दिया । तुमने यह १०० रु० पानी मे फेंक दिए ।

पानी मे बस कर मगर से बैर करना—जहाँ रहना हो, वहाँ के बलवान व्यक्ति से बैर करना ।

पानी मे बहाना—दे० 'पानी मे फेंकना' ।

पानी रखना—प्रतिष्ठा बचाना । उ० आज तो भगवान ने पानी रख लिया ।

पानी लगना—१ कही की जलवायु का बुरा प्रभाव पडना । उ० कलकत्ते का पानी लग जाने से वह काला पड गया है । २. सग-साथ का प्रभाव पडना । उ० कितना भी बचो, पानी लग ही जाता है ।

पानी लेना—१ इज्जत बिगाडना । उ० क्यो बेचारे का पानी ले रहे हो ? २ आबदस्त लेना ।

पानी सिर से ऊँचा होना—१ झगडा काबू से बाहर हो जाना । उ० जब पानी सिर से ऊँचा हो गया तो फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है । २ किसी परिस्थिति का अपने वश से बाहर होना ।

पानी से पतला—१ बहुत बेइज्ज़त । उ० वह तो पानी मे पतला होकर रहता है । २ आसान । उ० मुश्किल काम भी हिम्मत करने से पानी से पतला हो जाता है ।

पानी से पहले पुल वाँधना—व्यर्थ मेहनत करना। आवश्यकता से पहले परिश्रम करना।

पानी होकर वह जाना—वरवाद हो जाना, नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० उसका यह पाप का रुपया पानी होकर वह जायगा।

पानी होना—१ शात होना। उ० समझा देने से वह पानी हो गया। २ गल जाना। उ० सारा वर्फ पानी हो गया।

पाप उदय होना—करनी का फल मिलना। उ० आपका पाप भी अवश्य उदय होगा।

पाप कटना—कष्ट मिटना। उ० किसी तरह पाप कटा।

पाप कमाना—बहुत पाप का काम करना। उ० क्यो पाप कमाते हो, कुछ पुण्य भी करो।

पाप की गठरी सिर पर रखना—बहुत पापी होना। उ० जो पाप की गठरी सिर पर रखता है, वही दुर्दशा भी भोगता है।

पाप गलना—पाप दूर होना।

पाप चढ़ना—१ किसी से पाप होना। उ० तुम्हारे पर पाप चढ रहा है। २ पाप का जमा होना। उ० अगर पाप चढेगा तो एक दिन फूटेगा भी।

पापड पीटना—दे० 'पापड वेलना'।

पापड वेलना—१ बहुत दुख झेलना, ठोकर खाना। उ० कही भी जाकर पापड वेल लूंगा, पर यह काम मैं नही करूँगा। २ कठिन काम करना। ३. बहुत परिश्रम करना।

पाप बटोरना—दे० 'पाप कमाना'।

पाप बिसाना—पाप करने का फल सर पर आना। उ० उस पर पाप बिसा रहा है, जरा उसकी दशा तो देखो।

पाप मोल लेना—समझ-बूझ कर बुरा काम करना। उ० सब लोग पुण्य करते हैं, तुम पाप ही मोल लेते हो।

पापोश पर मारना—ठुकराना।

पापोश के बराबर न समझना—तुच्छ या नीच समझना। कुछ भी न समझना। उ० मैं तो आपको पापोश के बराबर भी नही समझता।

पापोश न मारना—किसी को इतना तुच्छ समझना कि ठुकराना भी नही।

पाबंद करना—१ रोकना, बाँध देना। २. वक्त ठीक कर देना। उ० आने के लिए उसे पाबन्द कर दो।

पाबन्द होना—१. नौकर या सेवक होना। उ० मैं आपका पाबन्द नही हूँ। २. जिम्मेदार होना। उ० इसके लिए कौन पाबन्द होगा।

पाबोस होना—१ पाँव छूना, चरण छूना। २ झुकना, हार मानना। उ० मैं पाबोस नही हो सकता।

पामाल करना—वरवाद या नाश करना। उ० खुदा के लिए पामाल न करो।

पाम्ही पडना—रेख आना। मस भीजना। उ० अभी तो पाम्ही पड रही है, उसे २५ वर्ष का कौन कहेगा?

पायजामे से बाहर होना—दे० 'पाजामे से बाहर होना'।

पाया मजबूत होना—स्थिति दृढ होना।

पाये का आदमी—१ निष्ठावान् व्यक्ति। २ प्रतिष्ठित व्यक्ति।

पार उतर जाना—१ सफल होना। उ० परीक्षा मे पार उतर जाऊँ तो अपने को धन्य समझूं। २ काम समाप्त होना। ३ मर जाना। ४ मुक्त होना। उ० किसी तरह भवसागर से पार उतर जाऊँ, बस यही इच्छा है।

पार उतरना—दे० 'पार उतर जाना'।

पार उतारना—१ ठिकाने लगाना। उ० तुमने उसे किसी तरह पार उतार दिया। २ मुक्ति देना, उद्धार करना। उ० भगवान ही पापी को पार उतारेंगे।

पार पडना—सहन होना, वर्दास्त होना।

पार-पाटी करना—दे० 'बाँस-पाटी करना'।

पार पाना—१ अत पाना। उ० उसका पार पाना कठिन है। २ विजय पाना। उ० जब पार पा जाओ तो मानूँ। वह किसी के सामने झुकने वाला आदमी नही है।

पार लगना—दे० 'पार उतरना'।

पार लगाना—दे० 'पार उतारना'।

पार लँघाना—दे० 'पार उतारना'। उ० इस नाव को जिस तरह बने, पार लँघाओ।

पार होना—१ स्वार्थ पूरा होना। काम निकलना। उ० पार होने पर कौन पूछता है? २ काम पूरा हो जाना। उ० क्या मकान पार हो गया? ३ सम्बन्ध तोडना। उ० उनसे तो मैं पार हो गया।

पारा उतरना—क्रोध शात होना। उ० ऐसा तमाचा कसूँगा कि पारा उतर जायगा।

पारा उतारना—शान्त करना। गुस्सा मिटाना। उ० समझाने से न मानोगे तो तमाचे से तुम्हारा पारा उतारना पडेगा।

पारा चढना—गुस्सा आना। उ०आपका तो पारा चढा ही रहता है।

पारा तेज होना—दे० 'पारा चढना'।

पारा-पारा करना—टुकडे-टुकडे करना। धज्जी-धज्जी उडाना। उ० इसे पारा-पारा न करो, कभी काम ही आएगा।

पारा पीना—बच्चा न होने के लिए पारा खाना। उ० उसने पारा पी लिया है, अब बच्चा न होगा।

पारा पिलाना—किसी चीज को बहुत भारी करना। उ० इस लाठी मे पारा पिलाया है क्या?

पारा भरा होना—बहुत वजनी होना। [पारा बहुत भारी होता है]। उ० इस लाठी मे पारा भरा है।

पारावार उमडना—अधिकता होना।

पालसन का डिब्बा—खुशामद।

पाल डालना—गदरे फल को फूस या भूसे आदि मे रख कर पकाना।

पालसन लगाना—खुशामद करना।

पाला गिरना—दे० 'पाला पडना'।

पाला पड़ना—१ ठडक पडना। उ० आजकल खूब पाला पड रहा है। २ वास्ता होना। उ० कभी हमसे पाला पडे तो इसकी सारी ऐंठ निकाल दूं। ३ पस्त होना। उ० सारी उमंगो पर पाला पड गया है।

पाला मार जाना—सर्दी के कारण नष्ट हो जाना। उ० खेती को तो पाला मार गया।

पाले पडना—वास्ता मे आना। उ० परेहु कठिन रावण के पाले।

पाशनाकूली के लिए जाना—पीछे लगना। उ० पुलिस उनके पाशनाकूली के लिए गई है।

पाश-पाश करना—टुकडे-टुकड करना, तार-तार करना।

पासग बराबर भी न होना—दे० 'पासग भी न होना'।

पासग भी न होना—कुछ तुलना न होना। कुछ भी हैसियत न होना। उ० अमेरिकनो के आगे जापान पासग भी नही था तो भला हारता क्यो नही?

पासग होना—तुच्छ होना। कोई मूल्य न होना। उ० उसकी बातो का क्या लिए हो, वह तो पासग है। वह तो तुम्हारे आगे पासग है।

पास कर देना—१ पढा देना। उ० उसे भी पास कर दो। २ एक कक्षा आगे कर देना। ३ कार्य ठीक कर देना या मजूर कर लेना। उ० उसने तो पास कर दिया, अब तुम्हारी देर है।

पास आना—करीब आना।

पास करना—१ तरफदारी या लिहाज करना। २ कामयाब होना, उत्तीर्ण करना।

पास कर लेना—इम्तहान मे सफल होना। उ० उसने पास कर लिया।

पास जाना या आना—सभोग के लिए किसी औरत के पास जाना या आना। उ० वह तो उसके पास जाता है।

पास न फटकना—नजदीक न जाना। उ० उसी दिन से वह तुम्हारे पास नही फटकता है।

पास-पास—१ परस्पर। उ० दोनो पास-पास बैठ कर बातें करते थे। २ करीब-करीब। उ० पास-पास न बैठो, नही तो नकल करोगे।

पास फटकना—१ नजदीक जाना। उ० उसके पास न फटकना। २ पास आना। उ० मेरे तो पास न फटकना।

पास-पडोस—आसपास। उ० पास-पडोस मे कोई कुआँ हो तो पानी लाओ।

पास-पास होना—टुकडे-टुकडे होना।

पास होना—उत्तीर्ण होना, परीक्षा मे सफल होना।

पासा उलटना—१ जुए आदि मे दाँव हार जाना। उ० उसका तो पासा ही उलट गया। बेचारा हजारो रुपये हार गया। २ भाग्य बदलना। उ० इस साल तो मेरा पासा ही उलट गया। सारा काम बिगड गया। ३ कुअवसर आना। ४ सुअवसर आना।

पासा पडना—१ जुआ मे अनुकूल दाँव पडना। उ० इस बार मेरा पासा पडा है। २ सुअवसर आना। उ० पासा पडने पर सब ठीक हो जाएगा। ३ भाग्य अनुकूल होना। उ० इस रोजगार मे मेरा ही पासा पड़ा है।

पासा पलटना—दे० 'पासा उलटना'।

पासा फेंकना–तक़दीर की आज़माइश करना। उ० पासा फेंको, शायद लग जाय।

पासा सीधा पड़ना–भाग्य अनुकूल होना।

पिंजड़े का पक्षी होना–बधन मे होना।

पिंड अछूता होना–स्त्री का ऐसा कोरा होना, जिसके साथ किसी ने समागम न किया हो। उ० पिंड अछूता है तो उसी विधवा से क्यो नही विवाह कर लेते ?

पिंड कोरा होना–दे० 'पिंड अछूता होना'।

पिंड छुडाना–अनचाहे व्यक्ति या स्थिति से पीछा छुडाना।

पिंड छोड़ना–१ पीछा छोड़ना। उ० कुछ लेकर भी पिंड छोड देता तो अच्छा होता। २ जान छोडना। उ० मेरा पिंड छोड दो, मुझे जाना है। मेरा पिंड छोडो, मैंने तुम्हारा कुछ भी नही बिगाडा है।

पिंड पड़ना–पीछे लगना। उ० मैंने साफ कह दिया कि मेरे पिंड न पडो।

पिंडा धोना–नहाना, स्नान करना, शरीर पर पानी डालना।

पिंडा फीका होना–हल्का बुखार होना। उ० कुछ अजब हाल मेरे जी का है, देखो पिंडा अभी से फीका है।

पिघल कर पानी हो जाना–दया से भर उठना।

पिचकारी छूटना–तरल पदार्थ का पतली धार से निकलना। उ० लाठी लगते ही सर से खून की पिचकारी छूटने लगी। उसे दस्त की पिचकारी छूट रही है।

पिचकारी छोड़ना–पानी या रगीन पानी आदि को पिचकारी से फेंकना। उ० फागुन मे रग की पिचकारी छोड़ी जाती है।

पिचकारी देना–दस्त के लिए एनीमा देना। उ० उसे अस्पताल मे पिचकारी दी गई।

पिचकारी निकलना–दे० 'पिचकारी छूटना'।

पिछड़ जाना–१ पीछे रह जाना। २ हार जाना।

पिछला दिन–गत दिवस। उ० पिछले दिन वे आए थे।

पिछला पहर–रात में १२ से ४ का समय। उ० आज तो मुझे पिछले पहर भी नींद न लगी।

पिछली रात–१ अर्द्ध-रात्रि के बाद। उ० पिछली रात को कोई रो रहा था। २ गत रात। उ० पिछली रात तो मैंने कुछ नही खाया।

पिछले पाँव फिरना–आकर तुरत लौट जाना। उ० उसने ऐसी डाँट चढायी कि बेचारा पिछले पाँव फिर गया।

पिछाडी मारना–लात मारना। उ० घोडा पिछाडी मारता है।

पिटा हुआ–बार-बार किया हुआ या कहा हुआ, अनवीन।

पिटारी का खर्च–पानदान का खर्च। जेब खर्च। उ० अपनी विधवा विमाता को पिटारी का खर्च तो दे दिया करो।

पिट्टना पड़ना–विलाप करना। रोना-धोना होना। उ० वहाँ कैसा पिट्टना पडा है, कोई मर गया है क्या ?

पिट्टस पड़ना–दे० 'पिटना'।

पित्त उबलना–दे० 'नथना फूलना'।

पित्त खौलना–दे० 'नथना फूलना'।

पित्त गरम होना–जल्दी गुस्सा आना। उ० तुम्हारा पित्त तो बडी जल्दी गरम हो जाता है।

पित्त डालना–१ पीले रग की कै करना। उ० क्या खाए थे कि पित्त डाल दी। २ पित्त की कै करना।

पित्तर-पानी पड़ना–१ बेहोश होना। उ० मारे गरमी के तो उसका पित्तर-पानी पड गया है। २ दिल को किसी के नुकसान से शाति मिलना।

पित्ता उबलना या खौलना–दे० 'पित्त उबलना'।

पित्ता निकालना–१ काम करवा कर जी मारना। उ० वह तो उतनी ही देर मे पित्ता निकाल लेता है। २ डाटना-डपटना। उ० हमेशा पित्ता निकालना ठीक नहीं है।

पित्ता-पानी करना या होना–१ बहुत काम करना। उ० आज तो पित्ता-पानी कर दिया। २. हिम्मत पस्त कर देना।

पित्ता-पानी पडना–दूसरे के नुकसान से सतोष होना। उ० उसका खलिहान जल गया, तुम्हारे तो पित्ता-पानी पड गया होगा।

पित्ता मरना–तेज़ी और गुस्से का जाता रहना। उ० अब उनका पित्ता मर गया।

पित्तामार काम–सदा बैठे रहने वाला काम। उ० मुनीमी का काम बड़ा पित्तामार है।

पिता मारना–१ मुश्किल काम से घबड़ाना। उ० पित्ता मारने के बाद मेरे आफिस मे टिक सकते हैं। २ क्रोध को भीतर ही रखना। ३ दिल मारना।

पित्ता ले डालना–परीशान करना। उ० तुमने तो मेरा पित्ता ले डाला।

पित्ती उछलना–पित्ती या जलपित्ती का मर्ज़ होना।

पिनक में आना–१ अफ़ीमची का नशे मे आना, ऊँघना। उ० यह तो रह-रह कर पिनक मे आता है। २ क्रोध मे आना।

पिनाक होना–कठिन काम होना। उ० पिनाक तो नही है कि न कर सकूंगा, आखिर काम ही तो है।

पिये हुए होना–शराब पीकर मस्त होना। उ० यह तो पिये हुए हैं, देखो मुँह महक रहा है।

पिल पड़ना–मन से लग जाना। उ० पिल पडने से सभी काम आसान हो जाता है।

पिलाना या पिला देना–अच्छी तरह दिमाग़ मे बैठा देना। उ० उसे ऐसा पिलाया है कि कयामत तक न भूलेगा। बयान गवाहो को पिला दिया गया है।

पिस जाना–१. नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। उ० सारे किसान युद्ध मे पिस गए। २. लज्जित होना। उ० आज तो खूब पिसे। अब होश रहा तो न बोलेंगे।

पिसपा होना–हार जाना, भाग जाना, पीठ दिखाना।

पिसान होना या हो जाना–दब कर चूर्ण हो जाना। उ० गाडी के नीचे दब कर वह पिसान हो गया।

पीं बोलना–किसी चीज़ से दब कर हाय करना। उ० एक ही बार दबाने ने उसने पी बोल दिया।

पीछा करना–१ पोकियाना, भगाना, दौडाना। उ० उसने डाकुओ का देर तक पीछा किया। २ परीशान करना। उ० तुमने तो ऐसा पीछा किया कि उसे जवाब देना पड़ा।

पीछा छुड़ाना–१ छुटकारा पाना। उ० किसी तरह पीछा छुडाया। २ अलग होना। उ० जल्दी ही उनसे पीछा छुडा लूंगा।

पीछा छूटना–१ कष्टदायक चीज़ का समाप्त होना। उ० वर्षा हो जाय तो अकाल से पीछा छूटे। २ छुटकारा मिलना। उ० तुमसे पीछा छूटे तो कुछ करूँ।

पीछा छोड़ना–१. साथ छोडना। उ० उसका पीछा छोड दो तो तुम ठीक हो जाओगे। २ परीशान करना छोड देना। उ० उस बेचारे का पीछा छोड़ दो। अब वह हार मान गया।

पीछा दिखाना–१ हार कर भाग जाना। उ० थोडी देर के ही झगड़े मे पीछा दिखा दिया। २ धोखा देना। उ० समय पर पीछा दिखाना ठीक नही है। ३ इन्कार करना।

पीछा देना–१ पीछा करना। पीछे-पीछे लगा रहना। उ० उसका पीछा देना बेकार है, क्योकि उससे कुछ काम नही हो सकता। २. वचन देकर मदद न करना। उ० समय पर पीछा देना मुझे नही आता।

पीछा पकड़ना–१ हर वक्त किसी के साथ रहना। उ० बुद्धिमान का पीछा पकडो तो बुद्धिमान बन सकते हो। २. अपने बचाव या सहायता आदि के लिये शरण या सहारा पाना। उ० बचना चाहते हो तो कोई अच्छा पीछा पकडो।

पीछा भारी होना–पीछे या सहायक रूप मे किसी अच्छे या बडे व्यक्ति का होना। उ० पीछा भारी है, नहीं तो कभी मार डाले गए होते।

पीछे चलना–१ नक़ल करना। अनुकरण करना। उ० बडे आदमियो के पीछे चलने से छोटे भी बड़े हो जाते हैं। २ गुरु मानना।

पीछे छूटना–१ रास्ते मे पीछे रह जाना। उ० हम तीन आदमी साथ चले थे, पर सब पीछे छूट गये। २. भेद लेने को जासूस लगना। उ० उनका पता लगाने को कई पीछे छूटे हैं। ३ भागे आदमी को पकडने को आदमी ठीक करना। ४. किसी विषय मे या पथ पर घट कर होना या पीछे छूट जाना।

पीछे छोड़ना–१ पकडने के लिए भेजना। उ० चार पुलिस उस चोर के पीछे छोड़े गये हैं। २ भेदिया लगाना। ३ आगे बढ जाना, अपने पथ के लोगो को पार कर आगे बढना। उ० बहुतों को पीछे छोड़ कर तो इस पद पर पहुँचा है।

पीछे डालना–१ पीछा करना। उ० शिकार के पीछे घोड़ा डाल दिया। २ रुपया बचाना। उ० कमाई में से बुढ़ापे के लिए कुछ पीछे डालो।

पीछे दौड़ाना–पीछे-पीछे भेजना। उ० जल्दी लड़के को पीछे दौडाओ, नही तो वे दूर निकल जाएंगे।

पीछे पड़ना–१ पीछे लगे रहना, मौके-बे-मौके कहते रहना। उ० तुम तो यार पीछे पडे हो, कहना मानते ही नही। २ ऐब देखना। उ० बहुत से लोग आज कांग्रेस के पीछे पडे हैं। ३ किसी काम को कराने के लिए तुल जाना। उ० हम लोग इसके पीछे पड गए हैं।

पीछे पड़ा रहना–१. बार-बार कहना। उ० बडे आलसी हैं, पीछे पडे रहो तो काम कर देंगे। २ परीशान करना। उ० इन गरीबों के पीछे पडे रहने से क्या होगा ?

पीछे पैर देना–निश्चय से हटना।

पीछे फिरना–किसी कार्य को शुरू करके फिर विमुख होना। कोई वायदा करके हट जाना।

पीछे भेजना–१ भेदिया लगाना। २ किसी को पकडने के लिए आदमी भेजना।

पीछे लगना–१ अपने मतलब से किसी के साथ साथ घूमना। पीछे लगा रहना। उ० पीछे लगे हो तो काम हो ही जायगा। २ पीछा करना। साथ रहना। उ० ऐसी यह आदत पीछे लगी कि अब छूटती ही नही। ३ अनुकरण करना।

पीछे लगाना या लगवाना–१ साथ रख कर सहारा देना। उ० उसने तो मशीन लाकर कई आदमियों को पीछे लगा लिया है। २ अकारण अपने पर आफत लाना। उ० तुमने तो यह आफत अपने पीछे लगा ली है। ३ मत्थे मढना। उ० उसने इस आदमी से कहला कर सारा काम मेरे पीछे लगा दिया। ४ साथ भेजना। उ० लडके को भी पीछे लगा दो, चला जाएगा।

पी जाना–गो रखना, बरदाश्त कर जाना। उ० इतनी बढ कर बातें हुई, परन्तु वह सब पी गया। मैं पी गया, नही तो लडाई हो जाती।

पीटना–पछताना। उ० जब काम बिगड गया तो पीटने से क्या लाभ ?

पीठ उधेडना–दे० 'पीठ की खाल उधेडना'।

पीठ का–तरउपरिया, बाद का पैदा। उ० मेरी पीठ का भाई मर गया।

पीठ का कच्चा–सवारी मे कष्टदायक घोडा। उ० तुम्हारा घोडा अभी पीठ का कच्चा है।

पीठ का सच्चा–पक्का घोडा। उ० ऐसा पीठ का सच्चा घोड़ा है कि कभी अडने का नाम नही लेता।

पीठ की खाल उधेडना या उधेड देना–पीठ पर खूब मार कर खाल उधेड देना। उ० उसने मारते-मारते पीठ की खाल उधेड दी। ठीक से काम करो, नही तो पीठ की खाल उधेड दूँगा।

पीठ की रीढ़ होना–आधार होना।

पीठ खाली होना–असहाय होना। उ० जाओ रपट लिखाओ। तुम्हारी पीठ खाली नही। डर किस बात का ?

पीठ चारपाई से लग जाना–चारपाई पर पडा रहना, उठ-बैठ न सकना। उ० फोडे से उसकी पीठ चारपाई से लग गई है।

पीठ टूट जाना–१ भारी बोझ के कारण पीठ मे दर्द होना। २ मूल आधार नष्ट हो जाना।

पीठ ठोकना–१ उत्साह देना। उ० एक बार पीठ ठोक दी और वह कूद पडा। २ शाबाशी देना। उ० दौड मे प्रथम आया था तो मैंने भी पीठ ठोकी। ३ स्नेह दिखाना, पुचकारना। उ० बिल्ली की पीठ ठोक दो, वह मुँह चाटने लगेगी। ४ उऋण करना। उ० सेठ ने उसका हिसाब करके पीठ ठोक दी।

पीस डालना–१ दुःख ढाहना, कष्ट देना। उ० जमीदारो ने तो किसानो को पीस डाला। २ नाश कर देना। उ० पिछले युद्ध मे अंग्रेजो ने जापानियो को पीस डाला।

पीठ तोड़ना–पस्तहिम्मत करना। उ० उसकी पीठ न तोडो, आगे बढने दो।

पीठ दिखा कर जाना–१ अनुरागहीन होना। उ० वह स्त्री को पीठ दिखा कर दो वर्ष के लिए चला गया। २ हार कर भागना। उ० उस दिन पीठ दिखा कर गए, आज बढ-चढ कर बातें कर रहे हो।

पीठ दिखाना या दिखलाना–हार कर भाग जाना, भाग जाना। उ० शत्रु ने मैदाने-जग में पीठ दिखाई।

पीठ देना—१ विदा होना। उ० आज मेहमानो ने किसी तरह पीठ दी। २ दे० 'पीठ दिखाना'। ३. समय पर काम न आना। उ० मौके पर मित्र पीठ नही देता है। ४. सोना। उ० ज़रा पीठ दे लो, थके हो। ५ मुंह फेरना। उ० मेरी ओर क्यो पीठ देती हो? ६ उपेक्षा दिखाना। उ० गदगी देख कर ही मैंने पीठ दी। पीठ न दो। वह तुम्हारे घर मेहमान आया है।

पीठ नपाना—मार खाना।

पीठ पर—दे० 'पीठ पर का'।

पीठ पर का—दे० 'पीठ का'।

पीठ पर खडा होना—सहायक होना।

पीठ पर खाना—भागते हुए पीठ पर मार खाना। उ० तुमने तो वहाँ पीठ पर खायी, हम देख रहे थे।

पीठ पर बल होना—सशक्त सहायक होना।

पीठ पर सवार होना—हर समय साथ लगे रहना।

पीठ पर हाथ फेरना—दे० 'पीठ ठोकना'।

पीठ पर होना—१ मददगार होना। उ० उसकी पीठ पर कोई नही है, तभी तो भीख माँगता है। २. पीठ पर का या बाद का पैदा होना। उ० हमारे पीठ पर एक भाई है। ३ सदा बना रहना। उ० वह हर घडी पीठ पर रहता है, कभी फुरसत ही नही मिलती। ४ सदा तैयार रहना।

पीठ-पीछे—१ आड मे, अलग। उ० वह तो पीठ-पीछे मेरी शिकायत ही करता होगा। २ पीछे-पीछे। उ० क्या पीठ-पीछे लगे हो?

पीठ फेरना—१ चले जाना। उ० तुम्हारे व्यवहारो से ट्टी उसने पीठ फेर ली। २ मुंह मोड लेना। उ० उसने तो देखते ही पीठ फेर ली।

पीठ फोड डालना—दे० 'पीठ की खाल उधेडना'।

पीठ बचा कर साथ देना—उस सीमा तक ही साथ देना, जहाँ तक अपना नुकसान न हो।

पीठ मे छुरा भोकना—विश्वासघात करना।

पीठ लगना—१ जानवरो की पीठ मे घाव होना। उ० अभी बच्चा है, ज्यादा न चढो, नही तो पीठ लग जाएगी। २ चारपाई पर पडे रहना। उ० उसकी पीठ सालो से लगी है। ३ पछाड खाना। उ० किसी की भी पीठ लगी, तो किसकी जीत कही जाय?

पीतल की नथ पर गुमान करना—मामूली वस्तु पर गर्व करना।

पीठ लगाना—पछाड देना। उ० गामा ने विश्व मे सभी की पीठ लगा दी।

पीपल के पत्ते की तरह काँपना—अत्यधिक भयभीत होना।

पीर न आना—१ किसी के दु:ख मे सहानुभूति न होना। उ० तुम तो इतने कठोर हो कि पीर ही नही आती है। २ स्त्रियो को प्रसव के समय कष्ट न होना।

पीला पड़ना—दे० 'पीला होना'।

पीला होना—१ शरीर मे खून की कमी होना। उ० तुम तो पीले पड गए हो। २ भयभीत होना। उ० शेर को देखते ही वह पीला हो गया।

पीली फटना—सुबह होना, उषा निकलना। उ० कल पीली फटते ही तुम्हारे घर आऊँगा।

पीलू पडना—१ फल आदि मे कीडे पड जाना। उ० अब तो बैंगन मे पीलू पड गए होगे। २ सडना। उ० पाप करोगे तो बुढौती मे पीलू पडेंगे।

पीस कर पी जाना—बिल्कुल बर्बाद कर देना, समूल नाश कर देना। उ० वह इतना बली नही है कि तुम्हे पीस कर पी जाय।

पीसना—१ परिश्रम करना। उ० वह कई वर्षो से ए० जी० आफिस मे पीस रहा है। २ प्रयास करना, प्रयत्नशील होना। उ० कितना भी पीसो, काम होने-हवाने का नही।

पीसना पीसना—१ कठिन मेहनत करना। उ० गाँव मे पीसना पीस कर ही तो उसका गुज़र होना है। २ काम मे देर लगाना। उ० तुम हर एक काम मे पीसना पीसने लगते हो।

पुकार देना—कहला देना, घोषित कर देना। उ० इस बात की पुकार दे दी गई, फिर भी वे नही आये तो मैं क्या करूँ?

पुकार पड़ी होना—अधिक माँग होना। प्रसिद्धि होना। उ० आजकल सिंगर मशीन की पुकार पडी है।

पुचारा देना—१ दे० 'पुचारा फेरना'। २ खुशामद करना।

पुचारा फेरना–१ नष्ट कर देना। उ० इस नालायक ने सारी इज्जत पर पुचारा फेर दिया। २ फुसलाना, वहकाना। उ० उस पर पुचारा फेर कर ही काम हो सकता है। ३ पुताई या सफेदी करना।

पुचारे में आना या आ जाना–धोखे की बातो मे आ जाना। उ० तुम्हारे पुचारे मे आकर हमने अपने को ही नष्ट कर दिया।

पुजापा फैलाना–१. वाह्य आडबर बना रखना। उ० पता नही कुछ तत्त्व है या नही, पर उसने बड़ा पुजापा फैला रखा है। २ अनियमित रूप से वस्तु रखना। उ० बडे गन्दे हो जी, क्यों यह सब पुजापा फैला रखा है।

पुटका पडना–आफत या मौत आना। उ० भगवान करे, तुम्हारे पर पुटका पड़े। [यह गाली स्त्रियाँ या जनखो के मुँह से ही प्रधानत सुनी जाती है।]

पुट्ठे पर हाथ रखने देना–१ जानवर का चचल होना। उ० उसका घोडा तो पुट्ठे पर हाथ ही नही रखने देता। २ न छूने देना। उ० वह तो कभी पुट्ठे पर हाथ ही नही रखने देता।

पुट्ठे पर हाथ रखना–१ उत्तेजना देना, चलने को उत्तेजित करना (बैल)। उ० पुट्ठे पर हाथ रखते ही बैल हवा हो जाता है। २ सहारा देना, पीछे से सहायता का भरोसा देना। उ० आपने उसके पुट्ठे पर हाथ रखा है, नही तो उसकी मजाल न थी कि यो कह दे।

पुण्य करना और कुएँ मे डाल देना–नेकी करके भूल जाना।

पुतला बाँधना–निरादर या बेइज़्ज़त करना। उ० क्यो उसका पुतला बाँधते हो, याद नही है, तुम्हारे लिए उसने कितने कष्ट भोगे?

पुतलियाँ नचाना–१ पुतलियो का तमाशा दिखाना। २ आँख से इशारे करना।

पुतलियाँ फिरना–१ गर्व करना। उ० उसकी तो अब पुतलियाँ फिरने लगी। २ मर जाना। उ० हैजे मे सैंकडो की पुतलियाँ फिर गई। ३ मरने के समीप होना। उ० उसकी पुतलियाँ फिर गई हैं।

पुतलियों मे घर करना–आँखो मे रहना, सदा याद रहना। उ० तुम्हारी पुतलियो मे उसने घर कर लिया है।

पुतली का तारा–दे० 'नैनों का तारा'।

पुतली फिर जाना–दे० 'पुतलियाँ फिर जाना'।

पुनि-पुनि–पुन-पुन, बार-बार। उ० पुनि-पुनि कहत, न मानत तू क्यों?

पुरखे तर जाना–पूर्वजो की सुगति होना। उ० गगा के आने से भगीरथ के पुरखे तर गये।

पुरचक देना–ऐसी बातें करना, जिससे लड़को आदि को बुरा काम करने का और उत्साह मिले।

पुरचक पाना–बुरे कामो के लिए इशारा या मदद पाना।

पुरसा देना–१. मौत की खबर देना। नाई का घर-घर जाकर बताना। २ मरे हुए के घर की औरतो के साथ और घर की औरतो का रोना।

पुरसिश करना–पूछना, दरयाफ्त करना, तहकीक करना।

पुरान-चिरान होना–दे० 'पुराना-चिराना होना'।

पुराना खुर्राट–१. तजुर्बेकार, अधिक आयु का और अनुभवी। उ० उसकी बातें तो पुराने खुर्राट की तरह होती थी। २. बहुत वृद्ध। उ० वह पुराना खुर्राट है, भला शादी क्या करेगा?

पुराना घाघ–१ चतुर वृद्ध, अनुभव वाला। होशियार। उ० वह पुराना घाघ है। २ सभी बातो को जानने वाला। ३ भितरघाउम, जिसे कोई जान न सके। उ० है वह पुराना घाघ, जरा होशियार रहना।

पुराना चंडूल–बहुत दिनो का मूर्ख, भारी मूर्ख। उ० वह तो पुराना चंडूल है। उसे यह क्या समझाने चले हो?

पुराना-चिराना होना या हो जाना–१ दे० 'पुराना-धुराना होना'। २. पूर्ण परिचित होना।। घुल-मिल जाना। उ० परसो वे पहुँचे होगे और कल पुराने-चिराने हो गए होंगे।

पुराना-धुराना होना–बेकार या फटा-पुराना होना। उ० इसे कोई पुराना-धुराना कपडा हो तो दे दो।

पुरानी खोपड़ी–दे० 'पुराना खुर्राट'।

पुरानी राह पर चलना–पुराने ढंग से ही कार्य करना।

पुरानी लकीर पीटना–प्राचीन परंपरा का अनुयायी होना। उ० हम सभी पुरानी लकीर पीट रहे हैं।

पुरुषार्थ थकना–शक्ति क्षीण होना।

पुर्जा दुरुस्त करना–सारी स्थति को ठीक करना।

पुर्जे उडना–१. टुकड़े-टुकडे उडना, कीमा-कीमा होना। २ खूब मार पडना। उ० थी खबर गर्म कि 'गालिब' के उडेंगे पुर्जे, देखने हम भी गए थे यह तमाशा न हुआ।

पुर्जे निकालना–१ सीमा पार करना। उ० आधुनिक युग मे तो सभी ने पुर्जे निकाल लिए हैं। २ पुराने कागज़-पत्तर निकालना। उ० पुर्जे निकालने मे देर होगी, इसी तरह समझ लो। ३ मशीन के टुकडे अलग करना। उ० पुर्जे निकालने पर मशीन की खराबी दिखाई देगी।

पुर्जे-पुर्जे उडाना या उडा देना–१ एक-एक टुकडा अलग करना। उ० बहुत बनोगे तो इसके पुर्जे-पुर्जे उडा दूंगा। २ जीर्ण-शीर्ण कर देना। उ० ले जाते वक्त तो कहा था कि ज्यो की त्यो ला देंगे, और ले आए हो पुर्जे-पुर्जे उडा कर।

पुर्जे-पुर्जे करना–दे० 'पुर्जे-पुर्जे उडाना'।

पुर्जे-पुर्जे होना–१ प्रत्येक टुकडा अलग होना। उ० इसके तो पुर्जे-पुर्जे हो गए हैं, तुम स्वय समझ लो। २ जीर्ण-शीर्ण होना। उ० यह कपडा तो अब पुर्जे-पुर्जे हो गया।

पुल टूटना–बहुत भीड होना। उ० मेले मे आदमियो का पुल टूट पडा।

पुल बंधना–ढेर लग जाना, अधिक हो जाना। उ० वहाँ तो आदमियो का पुल बँधा है।

पुल बाँधना–१ बढा-चढा कर कहना। उ० तुम्हे तारीफ का पुल बाँधना खूब आता है। २ हद निश्चित करना। उ० एक पुल बाँध दो, नही तो रोज की झौं-झौं ठीक नही। ३ नदी पर पुल बनाना।

पुश्तक मारना–दुलत्ती मारना, घोड़े या गदहे या ऊंट का पिछला पैर उठा कर लात मारना।

पुश्त दिखाना–भाग जाना, हार जाना, लडाई मे भाग जाना, पीठ दिखाना।

पूंछ उखाडना–दे० 'पोछ उखाडना'।

पूंछ पकड कर चलना–१ सहारा लेकर आगे बढना, महारा लेना। उ० मुझे किसी की पूंछ पकड कर चलना पसद नही है। २ पीछे-पीछे चलना। उ० कुछ लोग बडो की पूंछ पकड कर चलने मे ही अपनी प्रतिष्ठा समझते हैं।

पूंछ पकड़ना–आश्रय लेना।

पूंजी खोना–घर का धन बरबाद करना। उ० उसने व्यापार मे सारी पूंजी खो दी।

पूंजी गंवाना–दे० 'पंजी खोना'।

पूंजीदार बनना–अपने को धनी समझना। धनी होने का गर्व करना। उ० चार पैसे हो गए, अब वह भी पूंजीदार बनता है।

पूए पर चीनी पडना–१ अच्छाई मे और अच्छाई होना। २ भाग्य का बहुत ज़ोर पकडना।

पूछ होना–प्रतिष्ठा होना।

पूछगाछ होना–दे० 'पूछताछ होना'।

पूछताछ होना–१ आदर-सत्कार होना। उ० आपकी तो खूब पूछताछ हुई होगी। २ जाँच होना, इन्क्वायरी होना।

पूजा करना–१ भक्तिभाव से आदर करना। २ घूस देना। ३ मारना।

पूडी टूंगना–द्विरागमन के अवसर पर बहू का एक पूडी खाकर एक विशिष्ट रीति करना। उ० अब बहू पूडी टूंगने जा रही है।

पूत के पांव पालने मे नज़र आना–बचपन से ही चरित्र का पता लगना।

पूरा उतरना–१ ठीक-ठीक होना या हो जाना। उ० घबराओ नही, सब पूरा उतरेगा। २ सख्या या वजन मे पूरा होना। उ० जितना उसने भेजा था, वह पूरा उतरा। ३ सही होना। उ० उम्मीद है कि उसकी सारी बातें पूरी उतरेंगी।

पूरा डालना–१ खातमे पर पहुँचाना। २ निबाहना। गुज़ारना। ३ कमी को पूरा करना।

पूरा पडना या पड जाना–काम हो जाना। काम के लिए पर्याप्त होना। उ० वह सौ रुपये पाता है, तब भी पूरा नही पडता। इतने रुपये से पूरा पड जाने की आशा है।

पूरा होना–१ अच्छी तरह हो जाना, समाप्त हो जाना। उ० तुम्हे धन्यवाद, तुम्हारी बातें पूरी हो गईं। २ कम न होना।

पूरी उतरना–१ देखने-सुनने के बाद जैसी की तैसी होना। उ० उसकी बातें पूरी उतरी। २ छोटी न होना। उ० मुझे तो शुबहा था कि दरियाँ छोटी होगी, पर पूरी उतरी। ३ कम न होना। उ० मैं सोचता था कि पुस्तकें कम होगी, पर पूरी उतरीं।

पूरे दिनों से होना—गर्भ का पूरा होना, बच्चा होने का दिन समीप आना। उ० वह पूरे दिनो से है, ज़रा ध्यान रखना।

पूरे पड़ना—ठीक उतरना। कम न होना। उ० ४० रु० पूरे पड़ेंगे।

पूरे होना—१. समाप्त होना। उ० उसके जीवन के दिन पूरे हो गये। २ पूर्ण होना।

पूले-तले गुज़रान करना—किसी तरह झोपडी मे गुज़र करना। गरीबी मे दिन बिताना। उ० भारत के सभी किसान पूले-तले गुज़रान करते हैं।

पृथ्वी का रसातल मे जाना—घोर अनिष्ट होना।

पृथ्वी डोलना—काँपना, सबका आतंकित होना।

पेग बढना—हौसला बढना।

पेंदे का हलका—१ क्षुद्र, नीच, ओछा। उ० विश्वास करो, कोई मैं पेंदे का हलका नही हूँ। २. छोटे चूतर वाला। उ० पेंदे की हलकी औरतें अच्छी नही लगती हैं। ३. वह बर्तन जिसके नीचे का भाग पतला या कमज़ोर हो। उ० यह लोटा पेंदे का हलका है।

पेंदे के बल बैठना—१ पराभव मानना, हारना। उ० सामने आते ही वह पेंदे के बल बैठ गया। २ स्थिर होकर बैठना। अच्छी तरह बैठना।

पेच उठाना—दु खी होना, गम उठाना। उ० कोई आये या जाय, मैं क्यो पेच उठाऊँ।

पेच काटना—१ उलझन दूर करना। उ० किसी तरह यह पेच काटो तो प्राण बचें। २ पतग लडा कर काटना। उ० अच्छा मौका है पेच काटने का।

पेच खाना—भीतर ही भीतर दुःखी होना। उ० घर वालो से मैं बहुत पेच खाए हूँ।

पेच खेलना—१ पतग की डोरी दूसरे से उलझाना। उ० चलो पेच खेला जाय। २ लडको का खेल खेलना, जिसमे दो या तीन लडके तागे मे ककड बाँध कर पतग की तरह लडाते हैं।

पेच घुमाना—१ विचार मे परिवर्तन कर देना। उ० मैं तो उसका पेच घुमा सकता हूँ। २. परिस्थिति को परिवर्तित करना। उ० कहो तो ऐसा पेच घुमा दूँ कि उसका जाना स्थगित हो जाय।

पेच डालना—१. फंसाना। उ० पेच डाल कर पतग काट दो। २ रुकावट डालना। उ० ऐसा पेच डालो कि वह जाने न पाये।

पेच ढीला होना—अल्पबुद्धि होना, पागल होना। उ० तुम्हारा भी पेच ढीला हो गया लगता है।

पेच-ताव खाना—ताव दिखाना, क्रोधित होना। उ० तुम तो अपने नौकरो पर खूब पेच-ताव खाते हो।

पेच देना—चालबाज़ी चलना। उ० तुम तो पेच देने के आदी हो गए हो, मगर मेरे साथ तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए।

पेच पडना—१ उलझन पडना। उ० ऐसा पेच पड गया है कि कुछ कहा ही नही जाता। २. दो पतगो का उलझना। उ० आज तो बडा अच्छा पेच पडा था। ३ कारण पडना। उ० कुछ ऐसा पेच ही पड गया कि मैं न आ सका।

पेच मे आना—१ धोखे मे आना। उ० तुम तो मेरे पेच मे आ गए हो, अब कहो क्या करें? २ यश, अधिकार या चगुल मे आना। उ० उसके पेंच मे आओगे तो फिर निकलना मुश्किल होगा।

पेच लडाना—१ पतग लडाना। २. तागे मे ईंटो के टुकडे बाँध कर लडाना। उ० देखो लडके पेच लडा रहे हैं।

पेच हाथ मे होना—अपने अधिकार मे होना। उ० उसका पेच तो मेरे हाथ मे है, जिधर चाहे उधर घुमा दें।

पेट ऐंठना—पेट मे दर्द या मरोड होना। उ० पेट ऐंठ रहा है।

पेट का कुत्ता—खाने के लिए जीने वाला। उ० पेट के कुत्ते मत बनो, कुछ करो भी।

पेट का गहरा—बहुत चलाक या गम्भीर।

पेट काटना—कम खाकर बचाना। उ० लडके को पेट काट कर बेचारे ने पढाया था, आज वह मर गया।

पेट का धधा—१. भोजन बनाने का काम। उ० तुम तो स्वयं पेट का धधा करते हो। २ पेट पालने के लिए किया गया काम। उ० ससार पेट के धन्धे मे व्यस्त है।

पेट का पानी न पचना—बात गुप्त न रख सकना। बात न रख सकना। उ० मैं तुमसे कुछ नही बता सकता, क्योकि तुम्हारे पेट का पानी ही नही पचता।

पेट का पानी न हिलना—१ बिना परिश्रम के हो जाना। उ० लडको की शादी हो गई और

पेट का पानी भी न हिले । २ रहस्य न खुलना । उ० वह तो ऐसा घुइस है कि उसके पेट का पानी तक नही हिलता है ।

पेट का हलका होना—वात न पचाने वाला होना । उ० मैं तुमसे न कहूँगा, तुम तो पेट के हलके हो ।

पेट की आँत भीतर सिमट जाना—क्रोध या आश्चर्य होना ।

पेट की आग—१ तेज़ भूख । उ० हमारे पेट की आग विना खाए नही बुझेगी । २ वात्सल्य, प्रेम । उ० पुत्र माने या नही, पर माँ के पेट की आग कव मान सकती है ।

पेट की आग बुझाना—खाना खाना । उ० पेट की आग वुझा कर तो चलूँगा ।

पेट की ख़वर न लेना—भोजन का प्रवन्ध न करना । उ० उस बुढिया की पेट की खवर तक नही लेते और वनते हो उसके दामाद ।

पेट की चोट्टी—यह उस स्त्री के लिए कहा जाता है, जिसे बच्चा होने को हो, किन्तु पेट अधिक न फूला हो । उ० वह पेट की चोट्टी है, विना डाक्टर को दिखाए गर्भ का पता नही चल सकता ।

पेट की थाह लेना—मन मे छिपी वात का अन्दाज़ लेना ।

पेट की वात—गुप्त वात, हृदय की वात । उ० तुमसे तो मैं पेट की वात भी नही छिपाता हूँ, और तुम मुझे कुछ समझते ही नहीं ।

पेट की वात न पूछना—दे० 'पेट की खबर न लेना' ।

पेट की मार देना या मारना—खाने को न देना । उ० हाथियो को पेट की मार देकर वश मे किया जाता है ।

पेट के लाले पड़ना—खाने को भी न होना ।

पेट के लिए दौड़ना—जीविका के लिए परिश्रम करना । उ० ये कुली धूप मे पेट के लिए दौड़ रहे हैं ।

पेट को धोखा देना—खाने मे से वचाना । उ० पेट को धोखा देकर ही तो चार पैसे जमा किए हैं ।

पेट को लगना—भोजन की इच्छा होना । उ० सोने दो, पेट को लगेगी तो स्वय उठेगा ।

पेट खलाना—अपनी भूख दिखाना । उ० पेट न खलाओ, मै सव जानता हूँ ।

पेट खाली होना—१. भीतर खोखला होना । उ० आजकल मँहगी मे वडो का भी पेट खाली है । २. भूखा होना ।

पेट गदराना—पेट पर बच्चा होने के चिह्न दिखलाई देना । उ० वहू का पेट गदरा रहा है ।

पेट गिरना—गर्भपात होना । उ० उसका पाँच माह का पेट गिर गया ।

पेट गिरना या गिरवाना—गर्भपात कराना । उ० उसने तीन माह का पेट गिरवा दिया ।

पेट गुड़गुडाना—अपच से पेट मे गडवडी होना । पेट मे गुड-गुड शब्द होना । उ० चना खा लेने से पेट गुडगुडा रहा है ।

पेट चलना—१ पाखाना होना । उ० उसका सुवह से पेट चल रहा है । २ गर्भ का बच्चा चलना । उ० कल तक पेट चल रहा था, पर आज कुछ पता नही चल रहा है, कही बच्चा मर तो नही गया ।

पेट छँटना—तोद कम होना । उ० कसरत करने से ही उसका पेट छँट गया ।

पेट छूटना—दस्त जारी होना ।

पेट जलना—१ भूख लगना । उ० सुवह से कुछ नही खाया, अव पेट जल रहा है । २ क्रोध आना । उ० ऐसे आदमियो को देख कर तो मेरा पेट जलता है । ३ खाने को न मिलना । उ० वेचारे का पेट जल रहा है ।

पेट जारी होना—दे० 'पेट चलना' ।

पेट जिलाना—सुख-दु.ख से पेट पालना । उ० ससार मे पेट जिलाने नही आए हो, कुछ कार्य भी करो ।

पेट ठडा करना—१ बच्चो से सतोष करना । और अधिक बच्चा होने की इच्छा न रहना ।

पेट थामे फिरना—दे० 'पेट पकडे फिरना' ।

पेट दिखाना—१ पेट की वीमारी दिखाना । उ० अस्पताल मे पेट दिखाया, परन्तु डाक्टर ने कुछ कहा नही ? २ गर्भ पहचनवाना । उ० उसने दाई को पेट दिखाया । ३ भूख दिखाना । उ० उसे तो पेट दिखाने पर भी दया नही आई ।

पेट देना—गुप्त वात कह देना । उ० उसे पेट न दो, उसका कोई विश्वास नही ।

पेट न भरना—भूख न मिटना। पूरा न पड़ना। उ० इतने रुपये मे भी उसका पेट नही भरता।

पेट पकड़ कर भागना—१ पाखाने जाना। उ० खाकर वह तुरन्त पेट पकड कर भागता है। २ भयभीत होकर भागना। उ० राक्षस को देखते ही वह पेट पकड कर भागा।

पेट पकड़े फिरना—भूख से परीशान होकर फिरना। उ० दिन भर पेट पकड़े फिरता है, पर कही कुछ मिलता ही नही।

पेट पकला होना या मे पकला होना—हँसते-हँसते पेट फटना। उ० आज तो सिनेमे मे पेट पकला हो गया।

पेट पतला होना—१ पैसे की कमी होना। उ० खर्च के मारे पेट पतला हो गया। २ विवशता होना। ३. कृपणता होना।

पेट पतुही होना—भूख या दुबलापन के कारण पेट का सट जाना। उ० वच्चे का पेट पतुही हो गया है, कुछ खिला दो। दो ही महीने वाहर रहने मे पेट पतुही हो गया।

पेट पर छुरी चलाना—रोजी छीन लेना।

पेट पर पट्टी बाँधना—भूखा रहना। पेट मे कुछ न डालना। उ० जब जन्म ले लिया तो कमाना ही पडेगा, पेट पर पट्टी बाँधने से तो काम नही चलेगा।

पेट पाटना—खूब खाना। उ० तुमने तो वैठ कर पेट पाट लिया, अब मैं खाऊँ या भूखे मरूँ, तुमसे कुछ मतलब नही।

पेट पानी होना—१. पतला पाखाना होना। उ० उसका पेट तो पानी हो गया है। २ भय खाना। उ० चीते को देखने ही पेट पानी हो गया।

पेट पालना—१ दे० 'पेट जिलाना'। २ स्वार्थी होना। उ० परोपकार भी किया करो, अपना पेट तो सभी पालते हैं।

पेट पीटना—१ व्याकुल होना। उ० उसके लिए पेट न पीटो, आ जाएगा। २ अपने को भूखा दिखाना। उ० भिखारी पेट पीट कर खाना माँग रहा है।

पेट-पीठ एक होना—भूख से [illegible] का अदर धँस जाना। उ० इन भिखारियों का पेट-पीठ एक हो गया है।

पेट-पीठ से लगना—दे० 'पेट-पीठ एक होना'।

पेट-पोछना—आखिरी वच्चा। उ० तुम तो अपनी माँ के पेटपोछने पुत्र हो।

पेट फटना—१ पेट मे दर्द होना। उ० हँसते-हँसते पेट फट गया। २ द्वेष या जलन होना। उ० उसे उन्नति करते देख कर तुम्हारा पेट क्यो फटता है? ३ धैर्यहीन होना। धैर्य न रहना। उ० यहाँ अकेले तो पेट फटा जाता है।

पेट वडा होना—लालची होना, माँग करना।

पेट फाड कर खाना—अधिक खाना।

पेट फूलना—१ स्पर्धा होना। २ बुरा लगना। उ० तेली का तेल जले, मसालची का पेट फूले। ३ जानने के लिए व्याकुल होना। उ० मुझे भी वता दो, मेरा पेट फूल रहा है।

पेट बँधना—नियम से खाना। उ० उसका पेट तो वँध गया है केवल दो वार खाता है।

पेट वढना—१ अधिक भोजन करना। उ० उसका पेट आजकल बढ गया है। २ लालची वढना। दूसरे की चीज़ लेने की इच्छा होना। उ० तुम्हारा पेट वढ गया है, जो ही पाते हो, ले लेते हो।

पेट बांधना—कम तथा नियम से भोजन करना। उ० अपना पेट बाँध लो तो कष्ट न होगा।

पेट भर जाना—१ घबडा जाना। उ० तुम्हारी वातो से पेट भर गया। २ पूंजी वाला हो जाना। उ० अव तो उसका पेट भर गया है। ३ और कमाने की इच्छा न होना। ४ सतोष हो जाना।

पेट भरना—१ तृप्त होना। उ० अव तो शायद पुत्र से पेट भर गया होगा। २ पूरा भोजन करना। उ० अभी पेट भरा या नही। ३ रद्दी-सद्दी खाकर पेट जुडाना।

पेट भाड होना—बहुत अधिक खाने वाला होना।

पेट मसोसना—भूखो मरना। उ० वेचारा पेट मसोस रहा है, उसे कुछ दे दो।

पेट मार कर मर जाना—आत्महत्या करना, अपना प्राण स्वय दे देना। उ० वह घर मे पेट मार कर मर गया।

पेट मारना—१ खुदकशी करना। उ० उसने जहर खाकर पेट मार लिया। २ दे० 'पेट को खोखा देना'।

पेट-मुंह चलना—दस्त और उलटी होना।

पेट मे आंत न मुंह मे दांत—अति वृद्ध । बहुत बूढा । उ० ८० साल का हुआ, अब तो न पेट मे आंत न मुंह मे दांत ।

पेट मे आग लगना—बहुत भूख लगना । उ० कुछ दे दो, पेट मे आग लगी हुई है ।

पेट मे खलबली पड़ना—व्याकुलता होना, घबडाना । उ० बात जानने के लिए पेट मे खलबली पड गई ।

पेट मे घुसना—पेट का भेद लेना । रहस्य जानना । उ० वह पेट मे घुस कर सब जान लेता है ।

पेट मे चींटे की गिरह होना—बहुत कम भोजन करना । उ० बीमारी के बाद मेरे पेट मे चीटे की गिरह हो गई है ।

पेट मे चूहो का कलाबाजी करना या खाना—दे० 'पेट मे चूहो का दौडना' ।

पेट मे चूहो का दौड़ना—बहुत भूख लगना । उ० अब तो भाई जल्दी खाना लाओ, पेट मे चूहे दौड रहे हैं ।

पेट मे चूहो का फुदकना—दे० 'पेट मे चूहो का दौडना' ।

पेट मे छछूंदर छुछुवाना—किसी बात को जानने के लिए बहुत उत्सुकता होना ।

पेट मे छुरी भौंकना—आहत करना ।

पेट मे जाना—किसी चीज का हज़्म हो जाना ।

पेट मे पानी होना—दे० 'पेट मे खलबली पडना' ।

पेट मे डाढ़ी (दाढ़ी) होना—छोटे बच्चो का ज्ञानी होना । कम उम्र मे ही बहुत अनुभवी और बुद्धिमान होना । उ० लडका देखने मे तो छोटा है, पर उसके पेट मे दाढी है ।

पेट मे डालना—१ बिना भूख के भी खा लेना । उ० हर समय पेट मे डालता रहता है । २ छिपा रखना । उ० सारा रहस्य उसने पेट मे डाल लिया ।

पेट मे पांव होना—छल-कपटी होना, धोखेबाज होना । उ० उसके पेट मे पांव हैं, जरूर दगा देगा ।

पेट मे पानी न पचना—सब कुछ कह देना । पेट मे बात न पचना । उ० तुम्हारे पेट मे पानी क्यो पचे, तुम तो उन लोगो से अवश्य ही कह दोगे ।

पेट में बल पड़ना या पड़ जाना—हँसते-हँसते पेट का दुखने लगना । उ० जोकर को देख कर ऐसी हँसी आई कि पेट मे बल पड गया ।

पेट मे बात की गंध न पचना—बात को अपने तक ही सीमित न रख पाना ।

पेट मे रखना—दे० 'पेट मे डालना' ।

पेट मे होना—१ इच्छा होना । उ० मेरे पेट मे एक मकान बनवाने की है । २ पास होना । जानकारी मे होना । उ० चोरी का सारा माल इन्ही के पेट मे है । ३ भीतर होना । ४ कब्जे मे होना ।

पेट मोटा हो जाना—१ बहुत घूस खाना । उ० आज के मंत्रियो का पेट बहुत मोटा हो गया है । २ धनी हो जाना ।

पेट रहना या रह जाना—गर्भ रहना । उ० उनकी अविवाहिता लडकी को पेट रह गया है ।

पेट लगना या लग जाना—दे० 'पेट-पीठ एक होना' ।

पेट से निकालना—खोई वस्तु पाना । भीतर से निकालना । उ० मैं तो उसके पेट से निकाल लूंगा ।

पेट से पांव निकालना—१ ऐंठ कर चलना । उ० ज़रा साहब का चपरासी हो गया तो पेट से पांव निकालने लगा है । २. दुष्कर्म करना । उ० पेट से पांव निकालने मे बदनामी होगी ।

पेट से होना—लडका होने को होना । उ० उनके घर मे पेट से हैं ।

पेटा छोड़ना—पतग का ढीला हो जाना । पतग का तागा अधिक छोडना । उ० अधिक पेटा न छोडो, नही तो कट जाएगी ।

पेटा तोड़ना—१ पतग की डोरी तोडना । उ० आज मैंने कई पेटे तोडे । २ भीतरी हानि करना । उ० उसने तो इसका पेटा ही तोड दिया ।

पेटी उतरना—पेटी छीन जाना, नौकरी से हटना । उ० एक जुर्म मे सिपाही की पेटी उतर गई ।

पेटी पड़ना—१ तोद बढना । उ० आजकल तुम्हें पेटी पड़ रही है । २ मोटा होना । उ० जाने कौन अन्न खाता है कि इतनी जल्दी पेटी पड गई ।

पेड़ काट कर पत्ता सींचना—आधार नष्ट कर के वस्तु को बनाये रखने का व्यर्थ यत्न करना।

पेड लगाना—१ वृक्ष उगाना। उ० वन महोत्सव मे अनेक पेड लगाए गए। २ काम प्रारभ करना। उ० किसने पेड लगाया, किसने फल चखा।

पेर की किलनी होना—खोद-विनोद करना। उ० तुम तो प्रत्येक बात मे पेर की किलनी हो जाते हो।

पेश आना—१ उपस्थित होना। उ० यह तो विचित्र बात पेश आई। २ व्यवहार करना। उ० बडो से साथ नम्रता से पेश आओ।

पेश करना—१ हाज़िर करना। उ० साहब के सामने अर्ज़ियाँ पेश करो। २ उपहार देना। उ० बडे दिन के अवसर पर कुछ तो पेश करना ही पडेगा।

पेश चलना या जाना—शक्ति रहना। उ० जब तक मेरा पेश चलेगा, वह पढता रहेगा।

पेश पाना—जीत जाना। उ० तुममे कौन पेश पा सकता है।

पेशवाई करना—१ स्वागत के लिए आगे बढ कर जाना। उ० लोग बारात की पेशवाई करने गए हैं। २ रक्षार्थ सग मे जाना। उ० हमारी पेशवाई गाँव मे किसी ने नही की।

पेशानी पर बल पडना—चिन्ता या क्रोध या खिन्नता प्रकट होना।

पेशाब करना या कर देना—१ घृणा करना, न चाहना। उ० अब तो ऐसी चीज़ो पर पेशाब करता हूँ २ हदस जाना, डर जाना, डर कर पेशाब करना। उ० मार पडने के साथ ही वह पेशाब करने लगा। ऐसी मार लगाऊँगा कि पेशाब कर दोगे।

पेशाब का चिराग़ जलाना—बहुत तेज़ होना, रोब या दबदबा होना। उ० इस क्षेत्र मे तो उनकी पेशाब का चिराग जलता है।

पेशाब की धार पर मारना—महानीच समझना, क्षुद्र जानना। उ० तुम जैसे को तो मैं पेशाब की धार पर मारता हूँ।

पेशाब की राह बहा देना—रडीबाजी मे सारा धन खर्च कर देना। उ० उसने तो पूर्वजो की कमाई पेशाब की राह बहा दी।

पेशाब खता होना—दे० 'पेशाब निकल पडना'।

पेशाब निकल पड़ना—डर के मारे पेशाब हो जाना। उ० इतनी मार पडी कि पेशाब निकल पडी।

पेशाब बद होना—१. बहुत डरना। उ० शेर को देखते ही उसका पेशाब बद हो गया। २ हैज़े की बीमारी का बढना। उ० हैज़े मे उसका पेशाब भी बद है।

पेशाब से चिराग़ जलाना—दे० 'पेशाब का चिराग जलना'।

पेशाब से सिर मुडवाना—बात पूरा न होने पर नीच से नीच दड स्वीकार करना। उ० उसने स्पष्ट शब्दो मे कह दिया कि यदि बात पूरी न होगी तो पेशाब से सिर मुडवा लूँगा।

पेशाब से सिर मूडना—चेला बनाना। उ० जोगी ने लडके का सिर पेशाब से मूड दिया।

पेसोपेश करना—असमजस करना, दुविधा में पडना। उ० पेसोपेश करने से काम न चलेगा, जल्दी कुछ तय करो।

पेसोपेश मे पड़ना—दे० 'पेसोपेश करना'।

पैग बढाना—जान-पहचान बढाना। उ० ऐसे आदमियो से पैग बढाने से कोई लाभ नही।

पैडा देखना—आश्रय या सहारा देखना।

पैडा मारना—दे० 'पीछे पडना'।

पैड़े पडना—दे० 'पैडा मारना'।

पैग़ाम डालना—सबध करने की बातचीत करना। रिश्तेदारी करने की खबर भेजना।

पैतरा दिखाना—नयी-नयी युक्ति दिखाना।

पैर के तलवे चाटना—खुशामद करना।

पैतरा बदलना—१ कुश्ती लडने के ढब से इधर-उधर पैर रखना। उ० अभी तो पैतरा बदलना सीख रहा है। २ चाल चलना। उ० मेरे साथ पैतरा न बदलो, नही तो ठीक कर दूंगा।

पैतरे बदल कर चलना—बनकर या ऐंठ कर चलना। उ० केवल साल भर से तो कसरत करता है, पर पैतरे बदल कर चलने लगा है।

पैज पड जाना—ज़िद्द हो जाना। उ० उसे वहाँ जाने की पैज़ पड गई है।

पैदा करना—१ जन्म देना। उ० उसने चार पुत्र पैदा किये। २ कमाना। उ० लाखो पैदा किया, पर सब चला गया।

पैदा होना—आय होना। उ० आजकल खेती से बडी पैदा है।

पैबद लगाना—१ बात सुधारना । उ० जब से बाहर गया, पैबद लगाना खूब सीख लिया है। २ फटे कपडे मे दूसरा कपडा जोड कर सीना। उ० धोती मे पैवद लगाओ । ३ बात बढाना या बढाकर कहना । उ० कृपा कर पैवन्द न लगाइए ।

पैमाना भर जाना—आयु के दिन पूरे होना। उ० बेचारे का पैमाना भर गया है, अब तो दो-चार दिन का मेहमान है।

पैर आंख से लगाना—आदर करना ।

पैर उखडना—न ठहर सकना, भागना । उ० दुश्मनो के आगे उसके पैर उखड गए ।

पैर ऊँचे-नीचे पडना—अनुचित काम करना ।

पैर का धोवन भी न होना—मुकाविले मे कुछ भी न होना। उ० आप तो उसके पैर के धोवन भी नही हैं।

पैर का धोवन होना—मुकाविले मे बहुत छोटा होना । उ० विद्वता मे वह आपके पैर का धोवन है।

पैर की ठोकर खाना—उपेक्षित और अपमानित होना ।

पैर की जजीर होना—बन्धन होना ।

पैर की जूती होना—तुच्छ होना ।

पैर कीचड मे फंसना—बुरे कार्य मे फंसना ।

पैर की धूल झाडना—सेवा करना, खुशामद करना । उ० उसके पैर की धूल चौबीस घटे झाडो, पर वह तुम्हारा काम करने का नही।

पैर की धूल भी न होना—दे० 'पैर का धोवन भी न होना' ।

पैर की धूल होना—अपेक्षाकृत बहुत नीचा, कम या तुच्छ होना । उ० वह तो तुम्हारे पैर की धूल है ।

पैर छांदना—जाने से रोकना । उ० पैर न छांदो, वहाँ बडा जरूरी काम है।

पैर छूटना—मासिकधर्म के समय रजस्राव अधिक मात्रा मे होना । उ० उसके पैर छूट रहे हैं।

पैर पटकना—बहुत प्रयास करना, बहुत दौडना। उ० कितना भी पैर पटको, वह खत तुम्हे मिलने से रहा ।

पैर पर सिर रखना—दे० 'पांव पर सिर रखना' ।

पैर मे सनीचर होना—दिन-रात चलने वाला होना । उ० तुम्हारे पैर मे सनीचर है, जब सुनो कही गए हैं ।

पैर से जा लगना—पाँव मे सर रखना । दीनता दिखाना । उ० वह उसे देखते ही पैरो से जा लगा, पर उसे ज़रा भी दया नही आई ।

पैर सौर से बाहर निकालना—सामर्थ्य से बाहर जाना ।

पैर हवा मे पडना—बहुत खुश होना ।

पैरा हुआ—चतुर, पारगत । उ० नेहरू विदेशी नीति मे पैरे हुए हैं, धोखा नही खा सकते ।

पैरों के नीचे से जमीन खिसक जाना—अप्रत्याशित घटना से हक्का-बक्का रह जाना ।

पैरो तले गगा बहाना—बहुत समृद्ध होना ।

पैरो तले घास न जमने देना—विलम्ब न करना ।

पैरो मे पर लगना—दे० 'पांव मे पर लगना' ।

पैरों मे बेडी डाल देना या डालना—१ कडा निरीक्षण करना। उ० उसने तो सारे परिवार वालो के पैरो मे बेडी डाल दी है । २. कही आने-जाने न देना ।

पैरो मे मेहदी लगाना—दे० 'पांव मे मेहदी लगाना' ।

पैसा उठना—खर्च होना। उ० मेरा तो इतना पैसा उठता है कि मैं आश्चर्य मे पड जाता हूँ ।

पैसा उठाना—खर्च करना । उ० प्रतिष्ठा के लिए तो वह पैसा उठाने मे ज़रा भी नही हिचकता।

पैसा कमाना—धन कमाना । उ० उसने घूस लेकर खूब पैसे कमाये ।

पैसा खींचना—१ दूसरे से धन लेकर इकट्ठा करना । उ० तुम्हारी अनुपस्थिति मे वह खूब पैसा खीचता है। २ पैसा लेना । उ० पैसा खीचने मे वह बडा होशियार है ।

पैसा जोड कौडी पकड़ होना—धन एकत्र करने वाला, कजूस होना ।

पैसा डूबना—नुकसान होना । उ० इस साल बडा पैसा डूब गया ।

पैसा ढो ले जाना—१ एक देश की सपत्ति दूसरे देश मे ले जाना । उ० अग्रेज़ भारत का बडा पैसा ढोकर ले गए । २ धन चुरा ले जाना ।

पैसा धोकर उठाना—१ पूजा के लिए पैसा पवित्र करके अलग रखना। उ० मन्दिर के पुजारी ने पैसा धोकर उठाया । २ सच्चाई से पैसा पैदा करना । उ० पैसा धोकर उठाया करो, नही तो अग न लगेगा ।

पैसा-पैसा करना—धन के लिए चिंता करना। उ० कुछ करना तो चाहता नहीं है, केवल पैसा-पैसा करने से पैसा कहाँ से आ सकता है।

पैसा लगाना—व्यापार मे धन खर्च करना। उ० इस साल फिर मैंने काफी पैसे लगाये।

पैसा समेटना—खूब धन कमाना। उ० आजकल वह व्यापार मे खूब पैसा समेट रहा है।

पैसे की गर्मी होना—धन के कारण घमंड होना।

पैसे के तीन धेले भुनाना—१ मितव्ययिता से काम चलाना। उ० आमदनी कम है और खर्च ज्यादा, बेचारा पैसे के तीन धेले भुनाकर काम चलता है। २. कंजूसी करना।

पैसे पर रख कर बोटियाँ उड़ाना—बहुत कष्ट देना। उ० अंग्रेजो ने पैसे पर रख कर भारतीयो की बोटियाँ उडाई।

पैसे-पैसे को तरसना—निर्धन होना। उ० उससे क्या माँगते हो, वह तो स्वयं पैसे-पैसे को तरसता है।

पोंछ उखाड़ना—न कर पाना। उ० उसे पकडने चले हो? उसकी तो तुम पोंछ उखाडोगे।

पो बोलना—१ दीवाला होना। उ० कलकत्ता बैंक ने पो बोल दिया। २ हार मानना। उ० दो ही प्रश्न पूछने मे तो उसने पो बोल दिया।

पोक्टर खुलना—समझ मे आना, दिमाग मे चीज बैठाना। उ० राम औतार का पोक्टर खुल गया है। अब वह पास हो जायगा।

पोटा तर होना—धन-दौलत की तरफ से बेफिक्र होना। खुशहाल होना। उ० उसका तो पोटा तर है, वह क्यो चिंतित हो?

पोटी दूह लेना—१ कमजोर या बेकार बना देना, खोखला बना देना। २ नष्ट कर देना। उ० जब भरम की दूह ली पोटी गई लाज चोटी की नही जब रख सके।

पोढा आसामी—धनवान।

पोत पूरा करना—पूरा लगान देना। उ० कुछ भी हो, जमीदार का पोत तो पूरा करना ही है।

पोत पूरा होना—कमी पूरी होना। उ० अभी तो पिछले घाटे का ही पोत पूरा न हुआ।

पोता फेरना—नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० तैमूर ने दिल्ली पर पोता फेर दिया।

पोथी पर बेठन—१ जो अधिक लिखा-पढा न हो। उ० भारत के अधिकाश लोग तो पोथी के वेठन हैं। २. पुस्तक या विद्या पास रहने पर भी मूर्ख रहने वाला व्यक्ति। उ० वह तो पोथी का वेठन है।

पोदना-सा—छोटा-सा। उ० पोदना-सा तो है, पर बात बूढो की तरह करता है।

पोप लीला होना—पाखंड होना, दिखावा होना।

पोल खोलना या खुल जाना—भंडाफोड होना। उ० सारे रहस्य की पोल आज एक क्षण मे खुल गई।

पोल खोलना—रहस्य बताना। भंडा फोडना। उ० सारी पोल केवल तुमने खोल दी।

पोले तले गुजरान करना—झोपडे मे रहना, मुसीबत में जीवन व्यतीत करना।

पोशाक बढ़ाना—कपडे उतारना, लिबास उतारना।

पौन चलाना या मारना—जादू करना या मारना। उ० पौन चला कर उसने अनेक खेल दिखाये।

पौन बिठाना—किसी के गले भूत लगाना। दूसरे का भूत दूसरे पर लगाना।

पौने सोलह आना—करीब-करीब, अधिकांशत। उ० पौने सोलह आने आशा है कि वह नही आएगा।

पौ फटना—सवेरा होना। उ० पौ फटते ही मैं आ जाऊँगा।

पौ बारह पड़ना—विजय का मौका आना, जीत का दाँव पडना।

पौ बारह होना—१ जीत होना, बन आना। उ० तुम्हारी तो पौ बारह है। २ जीत का दाँव पडना। उ० पौ बारह हो तो अपने को भाग्यशाली समझना।

प्याज के-से छिलके उतार कर रख देना—बुरी हालत बना देना। उ० अधिक बोले तो प्याज के-से छिलके उतार कर रख दूंगा।

प्यादे से फरजी होना—छोटे पद से उठकर बड़े पद पर प्रतिष्ठित होना।

प्याला देना—मद्य पिलाना। उ० साहब को प्याला दो।

प्याला पीना—१ मद्यपान करना। उ० वह तो रोज ही प्याला पीता है। २ विषपान करना। उ० वह प्याला पीकर मर गया। मीरा पर प्याला पीने का असर ही नही हुआ।

प्याला बहना—दे० 'पेट गिरना'।

प्याला भर जाना या भरना—१ हद हो जाना। सीमा पार कर जाना। उ० रावण के पाप का प्याला भर गया था। २ मृत्यु का दिन आना। उ० अब तो इस वृद्ध का प्याला भर गया।

प्यास बुझाना—१ पानी पीना। उ० मैंने ठंडे पानी से प्यास बुझाई। २ जलन ठंडी करना। उ० बिना भगवान के मेरी प्यास कोई नही बुझा सकता।

प्यास मरना—१ मरते वक्त पानी तक न मिलना। उ० उसके कौन था ? बेचारा प्यासा मर गया। २. तरसते हुए मरना। उ० वह तुम्हारे दर्शन का प्यासा मरा।

प्यास मारना—पानी पीने की इच्छा को रोकना। उ० गर्मी का दिन है, प्यास न मारो।

प्यास लगना—पानी पीने की इच्छा होना। उ० मुझे प्यास लगी है।

प्यासा होना—तीव्र इच्छा वाली होना।

प्रकाश डालना—विवेचन करना, समझाना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To throw Light का अनुवाद हैं।] उ० सबसे पहले प्रो० शांडिल्य इस विषय पर प्रकाश डालेंगे।

प्रण रखना—प्रतिज्ञा पूरी करना।

प्रतीति खाना—विश्वास करना।

प्रथम श्रेणी का—बहुत अच्छा। [यह अंग्रेजी First class का अनुवाद है।] उ० उसके कपडे प्रथम श्रेणी के थे।

प्रपंच फैलाना—ढोंग बनाना। उ० उसने ऐसा प्रपंच फैलाया कि सभी ने विश्वास कर लिया।

प्रश्नो की झडी लगना—बहुत से प्रश्न खडे होना।

प्रसाद पाना—१ भोजन करना। उ० अभी प्रसाद पाए या नही ? २ परिणाम मिलना। उ० किए का अच्छा प्रसाद मिला। ३ भगवान के भोग लगाये खाद्य पदार्थ मे से पाना। उ० कथा हो गई, अब प्रसाद पाओगे।

प्रस्थान धरना या धर देना—जाने के लिए शकुन रखना। उ० कल दिक्शूल है, अत आज ही प्रस्थान धर दिया।

प्राण अरगाना—प्राण सूखना। उ० शेर को देखते ही उसका प्राण अरगा गया।

प्राण उड जाना—१ अत्यंत भयभीत हो जाना। उ० बाढ का दृश्य देखकर तो प्राण उड गए। २ देखकर हक्का-बक्का रह जाना। उ० उन्हे देखकर तो मेरे प्राण उड गए।

प्राण कंठगत होना—दे० 'प्राण कंठ मे होना'।

प्राण कंठ मे होना या आना—मरणासन्न होना। उ० मुँह मे तुलसीदल डाल दो, उसके प्राण कंठ मे है।

प्राण खाना—परेशान करना। उ० मेरा प्राण न खाओ, कुछ काम करने दो।

प्राण गले को आना—दे० 'प्राण मुंह को आना'।

प्राण छुटाना—जान छुडाना। उ० किसी तरह प्राण छुटा कर भागा।

प्राण छूटना—दे० 'शरीर छूटना'।

प्राण छोड़ना—मर जाना। उ० स्वतंत्रता संग्राम मे अनेको वीरो ने प्राण छोडे।

प्राण जाना या निकलना—मर जाना। उ० देखते ही देखते प्राण निकल गया।

प्राण जुडाना—मन को सुख पहुँचाना।

प्राण डालना या डाल देना—१ जीवन दान देना। २ जीवित-सा बनाना। उ० चित्रकार ने तो इस चित्र मे प्राण डाल दिया है।

प्राण त्यागना—दे० 'प्राण छोडना'।

प्राण देना—१ बहुत प्यार करना। उ० वह तो अपने बच्चो पर प्राण देता है। २ मर जाना। उ० बेइज्जती उठाने से प्राण दे देना अच्छा है। ३. कुर्बान होना। उ० मैं देश पर प्राण देने को तैयार हूँ।

प्राणपण से—जी-जान से। उ० आप धीरज धरिये, मैं प्राणपण से आपकी सहायता करूँगा।

प्राण पयाण होना—दे० 'प्राण छोडना'।

प्राण बचाना—१ दे० 'जान छुडाना'। २. रक्षा करना। उ० उसका प्राण बचाओ, नही तो मर जायगा।

प्राण मुंह को आना—१ दे० 'प्राण कंठ मे होना'। २. अति कष्ट उठाना। उ० इन गरीबो के तो प्राण मुँह मे आ गए हैं।

प्राण मुट्ठी मे लिए रहना—दे० 'प्राण हथेली पर लेना'।

प्राण मे प्राण आना—भय दूर होना। उ० निर्जन वन मे कुछ साथियो को मैंने देखा तो प्राण मे प्राण आया।

प्राण रखना—मृत्यु से बचना। उ० उसकी दवा ने मेरा प्राण रखा।

प्राण लेकर भागना—जान बचा कर भागना। उ० राजपूत लडाई मे प्राण लेकर नही भागते।

प्राण लेना या ले लेना–१ मार डालना। उ० शिकारी ने चिडिया का प्राण ले लिया। २ कष्ट देना। उ० मेरे प्राण मत लो।

प्राण हथेली पर लेना–मृत्यु के लिए तैयार रहना। उ० प्रताप ने स्वतत्रता के लिए प्राण हथेली पर लिया था।

प्राण हरना–मारना। उ० जब प्राणदान का अधिकार नही है तो प्राण हरने का अधिकार कैसे ?

प्राण हारना–१ पचत्व मे मिलना। उ० रानी सौरध्री ने इज्जत के लिए प्राण तक हारा। २ साहसहीन होना। उ० आगे बढो, प्राण हारने से काम नही चलेगा।

प्राणो पर आ पडना या बनना–जान खतरे मे पडना। उ० उस दिन के युद्ध मे प्राणो पर आ बनी थी।

प्राणो पर खेलना–मृत्यु की परवाह न करना। उ० वह तो सदा प्राणो पर खेलता है।

प्राणो से हाथ धोना–मर जाना। उ० शेर से भिड कर उसने प्राणो से हाथ धोया।

प्राप्त होना–मिलना। उ० आज तो कुछ भी प्राप्त न हुआ।

प्रीति की बेल बोना–प्रेम करना।

प्रूफ उठाना–कपोज करने के बाद सही-गलती देखने के लिए कागज पर छापना। उ० प्रूफ उठा कर लेखक के पास भेजो।

प्रेम की डोर में बंधना–स्नेह के वशीभूत होना।

प्रेम के प्यासे होना–स्नेह की तीव्र इच्छा होना।

प्रेम सुख से फूले होना–स्नेह से परिपूर्ण होना।

प्रेम से दग्ध होना–प्रेम से पीडित होना।

प्रेम मे पगना–प्रेम मे बँधना।

फ

फंक करना–दे० 'फका करना'।

फंक मारना–दे० 'फका मारना'।

फका करना–नष्ट करना। उ० उसने बाप-दादो की सब जायदाद फका कर डाला।

फंका मारना–१ मुँह मे फका डालना। उ० उसका इतना बडा मुँह है कि पाव-पाव भर दाने का एक एक फका मारता है। २ मुँह मे फकी डालना।

फकी देना–१ दवा देना। उ० वे फकी देते हैं। २ पेट आदि की बीमारियो मे चूर्ण देना। उ० पेट मे बडा दर्द है, एक फकी दे दो।

फद कटना–१ बधन कटना। उ० किसी तरह फद कटा तो। २ पीछा छूटना। उ० भाई, कोई ऐसा उपाय करो कि इस दुष्ट से फद कटे।

फद काटना–१ दुख दूर करना। २ पीछा छुडाना। ३ मुक्ति देना। उ० भगवान् ही फद काटेंगे।

फदा देना–दे० 'फदा लगाना'।

फदा पडना–फँसाने के लिए जाल का फेंका जाना। उ० तुम पर फदा पडने वाला है, जरा होशियारी से रहो।

फदा लगना–१ धोखा चल जाना। उ० अगर इस बार फदा लग गया तो अवश्य ही जीत जाऊँगा। २ जाल लगना। उ० फदा लग रहा है देखो कुछ चिडियाँ मिलेंगी ही।

फदा लगाना–१ जाल लगाना। उ० ऐसा फदा लगाया है कि निकल कर जा नही सकते। २ गाँठ लगाना। उ० इस रस्सी मे एक फदा लगा दो।

फदे मे पडना–१ धोखे मे पडना। उ० इनका आपके फदे मे पडना बडा कठिन है। २ वशीभूत होना। उ० अब आप मेरे फदे मे पडे। ३ आफत या सकट मे पडना। उ० मैं गजब के फदे मे पडा हूँ।

फदे मे फँसना–दे० 'फदे मे पड़ना'।

फँसना–१ प्रेम होना, स्त्री-पुरुष का अनैतिक सबध होना। उ० लडका उससे फँस गया है इसी से रोजाना आता है। २ धोखे मे आना।

फक्क करना–छुडाना। उ० उसे इस मुकदमे से फक करना किसी के मान का नही है।

फक्क पड जाना–दे० 'फक हो जाना'।

फक्क रहना–बधन से मुक्त रहना। उ० मेरे लिए फक रहना बडा मुश्किल है।

फक्क हो जाना–घबरा जाना। चेहरे का रग उड जाना। उ० मुझे देखते ही वह फक हो जाता है।

फकीर होना या हो जाना–१ गरीब होना। उ० शराबखोरी तथा जुआ मे वह फकीर हो

गया। २. साधू हो जाना। उ० अब उसे दुनिया से क्या मतलब ? वह तो फ़क़ीर हो गया है।

फक्कड़ लड़ना–गाली-गलौज करना।

फक्कड होना–१ मस्त होना। उ० घर के सभी मर गए, अब फक्कड होकर घूम रहा हूँ। २ अकेला होना। ३ बदज़बान होना। मस्ती मे कुछ भी कह देने वाला होना। ४. बेहद हँसी होना।

फगुआ खेलना–१. होली मे रग आदि एक-दूसरे पर डालना। उ० मैं आज आपके यहाँ फगुआ खेलने आया हूँ। २ शादी मे एक रस्म करना, जिसमे वर-पक्ष के लोग वधू-पक्ष पर गुलाब जल या रग से फाग खेलते हैं और कुछ रुपये पाते हैं।

फज़ीलत की पगड़ी–बहुत विद्वान् होने का चिह्न। उ० उसकी फज़ीलत की पगडी देख कर बडे-बडे डर जाते हैं।

फजीलत की पगडी बाँधना–१ बडप्पन या श्रेष्ठता का चिह्न अपने साथ रखना। उ० वह फज़ीलत की पगडी बाँधे फिरता है। २. बहुत बुज़ुर्ग होना।

फज़ीहत करना–दुर्दशा करना। उ० आपने तो उसकी बडी फज़ीहत की।

फज़ीहत होना–दुर्दशा होना। उ० उसकी बडी फज़ीहत हो रही है।

फटकना-पछोरना–सूप से अनाज साफ करना। उ० फटक-पछोर कर चावल साफ़ कर दो।

फटकने न देना–पास न आने देना।

फटका करना–फुर्ती करना। उ० फटका कर भई, शाम को यह काम दे देना है।

फटका जोड़ना–तुकबदी करना। उ० फटका तो सभी जोड सकते हैं, पर कविता करने वाले इने-गिने ही होते हैं।

फटका न खाना–तुरन्त मर जाना।

फटकाना खाना–तुरन्त मर जाना। तडपने का भी मौक़ा न मिलना।

फटकार खाना–डाँट खाना। डाँटा-डपटा जाना। उ० दिन-रात फटकार खाना तुम्हे कैसे अच्छा लगता है ?

फटकार बताना–भला-बुरा कहना। उ० तुम्हें रोज़ फटकार बताता है, फिर भी अपनी आदतो से बाज़ नही आते !

फटकार बरसना–१ गाली-गलौज होना। उ० दोनो भाइयो मे खूब फटकार बरसी। २ खूब डाँटा जाना। उ० आज तो उन पर ऐसी फटकार बरसी कि छठी का दूध याद आ गया होगा।

फटके चलना–१ अरुचि दिखाना। २ दूर या अलग रहना। उ० दुष्ट आदमियो से फटके चलो।

फट पड़ना–१ एकाएक क्रोध आना। उ० वह मुझे देखते ही फट पडा। २ सहसा पहुँचना। उ० आप कहाँ से फट पड़े ?

फटफट होना–१ झगडा होना। उ० दोनो भाइयो मे आज खूब फटफट हुई। २ दुर्दशा होना। उ० अब तक तो अकेले थे, कोई बात नही थी, अब बीबी आ गई, ऐसी फटफट होगी कि याद करोगे।

फट से–झट, तुरन्त। उ० फट से यह काम कर डालो तो और काम दूं।

फटा जाना–बहुत अधिक कष्ट होना। उ० मेरा फोडा दर्द से फटा जा रहा है।

फटा पड़ना–१ जल्दी मोटा होना। २ किसी बात का अधिकता से होना। बहुत अधिक होना। उ० हुस्न फटा पड रहा है।

फटा-फटा रहना–उदासीन रहना।

फटियल रहना–१ फटे-चिथडे पहने रहना। उ० वह सर्वदा फटियल रहता है। २ अलग रहना। उ० वह हम लोगो से फटियल रहता है। ३ पागल की तरह गदा, मस्त, फटेहाल और गरीबी की हालत मे रहना।

फटी हालत होना–बुरी दशा होना।

फटे बाँस-सा स्वर–मोटी और कटु आवाज।

फटे में पाँव देना–दूसरे के झगडे मे पडना। उ० अगर इनके फटे मे पाँव दोगे तो तुम भी मार खा जाओगे।

फटेहाल होना–दरिद्र होना। बुरी दशा मे होना। उ० वह बेचारा आजकल फटेहाल हो गया है, नही तो कभी दरवाज़े पर हाथी झूमते थे।

फटेहाल रहना–दे० 'फटेहाल होना'।

फट्ठा उलटना–दे० 'फट्ठा लौटना'।

फट्ठा लौटना या लौट जाना–दीवाला निकालना। उ० उस बैंक का आज फट्ठा लौट गया।

फडक उठना–१ प्रसन्न होना । उ० वह मुझे देख कर फडक उठता है । २. जोश मे आना या उत्तेजित होना । उ० उसकी कविता सुन कर लोग फडक उठे ।

फडक जाना–१ मोहित होना । २ पुरजोश होना, उत्तेजित होना । ३ बेचैन होना । ४ खुश होना ।

फ़तूर उठाना–दे० 'फतूर खडा करना' ।

फतूर खडा करना–खुराफात या उपद्रव खडा करना । उ० क्यो हमेशा फतूर खडा करते रहते हो ?

फफक कर रोना–फूट-फूट कर रोना ।

फफूंदी लगना–नमी के कारण सफेदी जम जाना । उ० गम से हुए हैं बाल हमारे सफेद 'वहर', सर को फफूंदी लग गई आँखो की सील से ।

फफोले फूटना–दिल की जलन निकलना । उ० वह हार गया, अब तो शायद तुम्हारे फफोले फूट गए होगे ।

फफोले फोड़ना–१. दिल की जलन प्रकट करना । उ० क्यो फफोले फोडते हो, कोई भी तुम्हारे लिए कुछ करेगा नही, उलटे लोग हँसेंगे । २ दिल को शात करना ।

फफ्फस होना–देखने मे मोटा-ताजा पर बलहीन होना । उ० वह फफ्फस है, उससे आप ज़रा भी न डरें ।

फब जाना–१ सुन्दर लगना । उ० कोट आपको खूब फबा । २ अवसर के उपयुक्त लगना । उ० उसका कहा ऐसा फब जाता है कि तबीयत खुश हो जाती है ।

फबती उडाना–हँसी उडाना । उ० भरी सभा मे उसकी फबती उडाना ठीक नही ।

फबती कसना–दे० 'फबती कहना' ।

फबती कहना–१ मज़ाक मे लगने वाली बात कहना । चुभने वाला व्यग्य करना । उ० अगर उस दिन की तरह फिर फबती कहोगे तो उससे लडाई हो जायगी । २ मौके की बात कहना । उ० ऐसी फबती कहता है कि सुनने वाले दग रह जाते हैं ।

फरट होना–१ दे० 'छूमतर होना' । २ बददिमाग होना । ३ खिलाफ होना ।

फ़रक़-फ़रक़ होना–दूर-दूर होना । उ० उसके बगीचे के पेड फरक़-फरक हैं ।

फरना-फूलना–१ दूध-पूत से या धन-धान्य और सतान से पूर्ण होना । २ सफल मनोरथ होना । उ० भगवान करे तुम फरो-फूलो ।

फरफद दिखाना–नखरा या चोचला दिखाना । उ० स्त्रियाँ फरफद दिखाना खूब जानती हैं ।

फरफद रचना–माया फैलाना । छल-कपट फैलाना । उ० उसे फरफद रचना खूब आता है ।

फरागत करना–१ पूरा करना । उ० उस काम को फरागत करके यहाँ से जाना । २ पाखाना करना ।

फरागत जाना–पाखाने जाना ।

फरागत पाना–छुटकारा पाना । उ० इस कलक से फरागत पाना बडा कठिन है ।

फरागत होना–१ निश्चित होना । उ० आपका पत्र मिल गया, अब मैं फरागत हो गया । २ पाखाना होना । उ० मैं फरागत होने जा रहा हूँ । ३ मुक्त होना ।

फरार होना–चल देना, पुलिस आदि से छिप कर भग जाना । उ० चोर सिपाही को देखते ही फरार हो गया ।

फरेब करना–धोखा करना ।

फरेब देना–धोखा देना । उ० वह फरेब देकर मुझसे रुपये ऐंठना चाहता था ।

फरोख्त करना–बेचना । उ० वह सडको पर तरकारी फरोख्त करता है ।

फर्क करना–१ भेद करना, आपस मे । उ० मेरे परिवार मे लोग किसी बात का फर्क नही करते । २ श्रेणी बनाना, अलग-अलग करना । उ० फर्क करके सारा सामान रख दो । ३ अलग करना, हटाना । उ० फर्क करो ऐसे आदमी को ।

फर्क पडना–१ अन्तर पडना । उ० इस रास्ते से जाने मे तुम्हे काफी फर्क पड़ेगा । २ मनमोटाव या विरोध होना, अन्तर आना । उ० कल तक तो दोनो दाँतकाटी रोटी खाते थे, आज ज़रा-सी बात पर फर्क पडा तो एक-दूसरे के प्राण के भूखे हो रहे है ।

फर्ज़ करना–१ कल्पना करना । उ० फर्ज करो कि वह न आया तो क्या होगा ? २ आज्ञा देना या तरीका बताना । ३ कर्तव्य का पालन करना ।

फर्ज़ी होना–जाली होना । उ० यह रसीद फर्ज़ी होगी तो तुम जानना ।

फ़र्द मे नाम चढ़ना–लिस्ट मे नाम लिखना। उ० बारातियो की फर्द मे उसका भी नाम चढा दो।

फर्द मे नाम लिखना–दे० 'फर्द मे नाम चढाना'।

फर्माइश करना–कोई वस्तु माँगना। किसी वस्तु के बनवाने का आर्डर देना। उ० एक अच्छी पलग की फर्माइश कर दो, उसका गवना इसी महीने होगा।

फर्माइशी करना–जूतो से मार खाना।

फर्याद करना–१ निर्णय देना। उ० इस मुकदमे की फर्याद वे ही करेंगे। २ शिकायत करना। उ० बिना फर्याद किए इसमे कुछ न होगा। ३ न्याय करना।

फर्राटा भरना–दे० 'फर्राटा मारना'।

फर्राटा मारना–तेज़ी से दौडना। उ० चोर पुलिस को देख कर फर्राटा मारते हुए निकल गया।

फर्श कर देना–मारपीट कर जमीन पर गिरा देना। उ० बदतमीज़ कही का। चुप रहो नही तो फर्श कर दूंगा, तू अभी मेरे गुस्से को जानता नही।

फ़र्शी सलाम–खूब झुक कर किया जाने वाला सलाम।

फल आना–फल निकलना। उ० इस पेड मे हर साल काफी फल आते हैं।

फल का पडना–फफोले पडना।

फल खाना–परिणाम भुगतना। उ० जैसा पेड लगाया है, वैसा फल खाओ, इसमे किसी का क्या वस ?

फल जाना–१ छोटे-छोटे दाने निकलना। उ० गर्मी मे देह दानो से फल जाती है। २ फल लगना। उ० आम पेड मे फल गए होगे।

फलना-फूलना–दे० 'फरना-फूलना'।

फल पाना–दे० 'फल मिलना'।

फल मिलना–किए का फल पाना, परिणाम भुगतना। उ० जो इन गरीबो को सतायेगा उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। काँटे तो तुमने बोये, उसका फल किसे मिलेगा ?

फलाँग भरना–कूदना, उछलना। उ० वह फलाँग भरता हुआ निकल गया।

फलाँगमारना–दे० 'फलाँग भरना'।

फली के दो टूक करना–१ नाता तोडना। लगाव न रखना। उ० उससे फली के दो टूक ही करना अच्छा है। २. कुछ न करने के बराबर काम करना।

फसकडा मारना–१ पलथी मारना। उ० फसकडा मार कर बैठने आए हो या कुछ करने। २ बेहूदगी से बैठना।

फसद खुलवाना–दे० 'सिर खुलवाना'।

फसली बुखार–मौसम के कारण आने वाला बुखार।

फसाद उठाना–दे० 'फसाद खडा करना'।

फसाद करना–झगडा-फसाद करना।

फसाद खडा करना-झगडा उठाना। उ० तुम्हारा काम तो बस फसाद खडा करना है।

फसाद दबना–झगडे का दब जाना। उ० फसाद दबे तो कुछ किया जाय।

फसाद मचाना–दे० 'फसाद खडा करना'।

फस्द लेना–दे० 'फस्द खुलवाना'।

फस्द खुलवाना–१. शरीर से दूषित रक्त निकलवाना। २ पागलपन की चिकित्सा करवाना।

फहमाइस करना–१ आज्ञा देना। २ उपदेश देना।

फाँका करना–उपवास करना, भोजन न करना। उ० आज तीन दिन से फाँका कर रहा हूँ।

फाँका मारना–किसी चीज़ को फाँकना। उ० इस दवा को फाँका मार कर पानी पी लेना।

फाँड़ा कसना–दे० 'फाँडा बाँधना'।

फाँडा पकडना–आदमी को इस तरह पकडना कि भगने न पाये।

फाँड़ा बाँधना–कटिबद्ध होना। उ० फाडा बाँध कर चलो और उसे पूरा करके ही आया जायगा।

फाँद मारना–कबूतर को फदे के ज़रिए पकडना।

फाँद लगाना–दे० 'फाँद मारना'।

फाँस गडना–दे० 'फाँस चुभना'।

फाँस चुभना–किसी बात का दिल मे चुभना। उ० उस दिन उसके दिल मे ऐसी फाँस चुभी कि आज तक इधर नही आया।

फांस निकलना–१ कटक दूर होना। उ० बडी मुश्किल से फांस निकला है, अब फिर मैं वहाँ न जाऊंगा। २ चुभने वाली बात का दूर होना।

फांस निकालना या निकाल देना–१ कटक दूर करना। उ० अगर यह फांस निकाल दो तो मैं जीवन भर एहसान न भूलूं। २ चुभी बात को भूल जाना या दिल से निकाल देना।

फांस लगना–दे० 'फांस चुभना'।

फांस लाना–फंसा लाना, पकड लाना, गिरफ्तार कर लाना। धोखा से ले आना। उ० उसे किसी तरह फांस लाओ।

फांसी खड़ी होना–जान का डर होना। उ० मेरे लिये तो वहाँ फाँसी खडी है, मैं वहाँ न जाऊंगा।

फांसी चढ़ना–फाँसी द्वारा मारा जाना।

फांसी चढाना–१ गले मे फदा डाल कर या अन्य ढग से प्राण लेना। २. प्राणदण्ड देना। ३ बहुत कष्ट देना। उ० फांसी नही चढायेंगे कि झूठ बोलूं।

फांसी देना–दे० 'फांसी चढाना'।

फाक़ा पडना–उपवास होना। उ० आज कई दिन से फाका पड रहा है, जाने कब अन्न के दर्शन होंगे ?

फाके मस्त होना–दरिद्रता मे भी प्रसन्न रहना।

फाकों का मारा–बहुत भूखा। भूख से मरता हुआ। उ० दरवाजे पर एक फाकों का मारा आदमी आया है, उसे कुछ खिला दो।

फ़ाक़ों मरना–भूखो मरना। उ० इस अकाल मे लाखो आदमी फाको मर गये।

फाड खाना–१ चिडचिडाना। २ टुकडे करना। ३ बहुत क्रोधित होकर बोलना। ४ चीरफाड कर खाना। उ० शेर फाड खाने को दौड़ा।

फाड़ खाने को दौड़ना–१ काटने को दौडना। २ झल्लाना, बहुत क्रोधित होना। उ० जब भी बात करो, वह फाड खाने को दौडता है।

फाफाकुटनी–इधर की बात उधर करने वाली स्त्री। उ० यह फाफाकुटनी है, इससे होशियार रहना, नही तो झगडा लगा देगी।

फायदे का–लाभदायक। उ० यह पुस्तक आपके फायदे की है, इसे अवश्य पढिये।

फारखती लिखना–बेबाकी की रसीद लिखना। उ० रुपये पा गए, अब फारखती लिख दीजिये।

फाल बांधना–उछल कर लाँघना। उ० खरगोश फाल बाँधते हुए निकल गया।

फाल भरना–कदम रखना। उ० लम्बे-लम्बे फाल भरो, अभी बहुत दूर जाना है।

फालिज गिरना–लकवा मारना, अग सुन्न पड जाना। उ० पूरे शरीर पर फालिज गिर गया है, अब उसका जीवन बेकार हो गया।

फावडा चलाना–१ खेत मे काम करना। उ० हम लोग दिन भर फावडा चलाते हैं, तिस पर भी पेट भर भोजन नही मिलता। २ बहुत परिश्रम करना। ३ फावडे से ज़मीन खोदना।

फावड़ा बजना–खुदाई होना। उ० वहाँ फावडे बज रहे हैं।

फावडा बजाना–१ खोदना। २ खोद कर गिराना।

फाश करना–प्रकट करना, स्पष्ट करना। सब को जना देना। उ० मुझसे न बनो, नही तो सारा रहस्य फाश कर दूंगा।

फिकरा कसना–कोई चुभती हुई बात कह देना।

फिक्र करना–चिंता या ख्याल करना। उ० अपने स्वास्थ्य की भी फिक्र करो।

फिक्र लगना–ख्याल बना रहना। चिन्ता बनी रहना। उ० मुझे रात-दिन आपकी फिक्र लगी रहती है।

फिचकुर निकालना–बहुत परिश्रम लेना। इतना काम करना कि मुंह से झाग निकलने लगे। उ० अभी बच्चा है, काम करा कर फिचकुर न निकालो।

फिटकार खाना–धिक्कारा जाना।

फिटकार लगना–शाप पडना। उ० उसकी फिटकार लगते देर नही लगती।

फिट्टा मुंह–फीका पडा हुआ चेहरा। उ० आज वह फिट्टा मुंह क्यो है ?

फितूर खड़ा करना–दे० 'फतूर खडा करना'।

फिरंट रहना–विमुख रहना।

फ़िरकी का नक्कीकस–मलखभ की एक कसरत।

फिर क्या है–तब क्या पूछना है ? सब ठीक है। उ० वह जा रही है और तुम जा ही रहे हो, फिर क्या है ?

फिरना—किसी ओर झुकना, बदलना। उ० उसका क्या है, जिधर चाहो फिर सकता है।

फिर पडना—किसी पर क्रोधित होना या बिगड कर बुरा-भला कहना। उ० आप मुझ पर क्यो फिर पडे ?

फिर-फिर—बार-बार। कई दफा। उ० क्या फिर फिर एक ही चीज पूछते हो ?

फिराक मे रहना—खोज मे रहना। उ० इस ग्राम के सब लोग उस चोर की फिराक मे रहते हैं, देखे कब तक पकडा जाता है।

फिसर-फिसर होना—चुपचाप सलाह होना।

फीका पिडा होना—हलका ज्वर होना [औरत की बोली में प्रयुक्त]।

फीका लगना—अच्छा न लगना। उ० इसके आगे सारा मजा फीका लगता है।

फीकी बात—नीरस बात।

फुटानी निकल जाना—मौज-मस्ती निकल जाना, पस्त हो जाना।

फुदकी मारना—छलांग मारना।

फुरफुरी लेना—उडने को पख हिलाना। उ० चिडिया फुरफुरी ले रही है, उसे पकड लो, नही तो उड जायगी।

फुरसत पाना—१ अवकाश पाना, छुट्टी पाना। उ० जब फुरसत पाना तो ५ मिनट के लिए मेरे यहाँ भी चले आना। २ काम से छूटना। उ० आज वहाँ से फुरसत पा गया।

फ़ुरसत मे—खाली समय मे। उ० आपका काम मैं फुरसत मे कर दूंगा, आप घबरायें नही।

फुरहरी लेना—थरथराना, काँपना। उ० उसके नाम पर फुरहरी क्यो लेते हो ? वह तुम्हारा कुछ कर नही सकता।

फुरेरी आना—रहम, खौफ या सरदी से रोंगटे खडे होकर शरीर मे कपन आना।

फुलझडी—चचल युवती। उ० कल किस फुलझडी को साथ लिये घूम रहे थे ?

फुलझडी छोड़ना—मजाक करना। उ० लो भई आते ही फुलझडी छोड दी, भई कुछ खा-पी तो लो।

फुल्लासरे मे आना—१ धोखे मे आना। २. किसी के बूते पर गर्व करना।

फुसफुसी कहना—चुपके से कहना। उ० सब बातें उनसे फुसफुसी कह दिया करो।

फूंकना-तापना या फूंक-ताप डालना—बेकार खर्च कर देना। बर्बाद करना, गँवाना। उ० उसने अपने बाप-दादो की सारी जायदाद फूंक-ताप डाली।

फूंक निकल जाना—जान निकल जाना। उ० महीनो की बीमारी के बाद आज उसकी फूंक निकल गयी।

फूंक-फूंक कर पैर रखना—बहुत सावधानी से काम करना। उ० वह बहुत होशियार है, हमेशा फूंक-फूंक कर पैर रखता है।

फूंक मारना—मुंह से हवा देना। उ० आग जलाने के लिए फूंक मारा जाता है।

फूंक देना—खर्च कर डालना।

फूंक मार कर उडा देना—सरलता से नष्ट या समाप्त कर देना।

फूंक से पहाड उडाना—असम्भव कार्य करने का प्रयत्न करना।

फूट डालना—भेद डालना। उ० घर-घर फूट डालना ही नारद का काम था।

फूट-फटक रहना—अनबन रहना। उ० दोनो मे आजकल फूट-फटक रहती है।

फूट-फूट कर रोना—बहुत रोना। उ० वह बुढिया आज फूट-फूट कर रो रही थी। मालूम हो रहा है कि उसके यहाँ कोई मर गया है।

फूट बहना—रो पडना। उ० देखा आखिर कि न फोडे की तरह फूट बहे, हम भरे बैठे थे क्यो आपने छेडा हमको।

फूट-सा खिलना—पक कर फटना। उ० अनार फूट से खिले हैं।

फूटा भाग्य—प्रतिकूल भाग्य, अभाग्य।

फूटी आँख का तारा—बहुत प्यारा लडका। उ० उस बुढिया का वह फूटी आँख का तारा था, पर वह भी आज चल बसा।

फूटी आँखो न देख सकना—जलना, कुढना। उ० वह मेरे लडके को फूटी आँखो नही देख सकती।

फूटी आँखो (नजरों) न भाना—बहुत बुरा लगना, तनिक भी न सुहाना। उ० अपनी चाल से वह फूटी आँखो भी नही भाता।

फूटी कौडी भी नहीं—एक पैसा भी नही।

फूटी ढोल की तरह गले पड़ना—अनचाहा बोझ बनना।

फूटी सहना आँजी न सहना–सर्वनाश सह लेना, पर कष्ट न सह पाना।

फूटे मुँह से न बोलना–दो बात भी न करना। कटे-कटे रहना। न चाहना। उ० क्या बात हो गई है कि वह तुझसे फूटे मुँह से भी नही बोलता।

फूल–शव जलाने के बाद बचा अवशेष। उ० उसका फूल प्रयाग लाया जा रहा है।

फूल आना–फूल लगना। उ० पेडो मे फूल आ रहे हैं।

फूल उठना–मुसलमानो मे किसी की मौत के तीसरे दिन बाद 'सोम की फातहा' का अदा होना।

फूल उतारना–फूल तोडना। उ० पूजा के लिए फूल उतार कर ले आओ।

फूल कर कुप्पा होना–दे० 'फूल कर नक्कारा होना'।

फूल कर तुम्मा होना–दे० 'फूल कर कुप्पा होना'।

फूल कर नक्कारा होना–खुशी से फूल जाना। किसी खुशी से बहुत प्रसन्न होना। उ० फूल कर नक्कारा न होओ, यह कोट तुम्हारे लिए नहीं है।

फूल की छड़ी से भी न छूना–बहुत लाड-प्यार से रखना।

फूल चुनना–फूल तोडकर इकट्ठा करना। उ० वह बाग मे फूल चुन रहा है।

फूल झडना–१. मुँह से मधुर बातें निकलना। उ० उसके मुँह से फूल झडना देखकर तबीयत प्रसन्न हो जाती है। २. चिराग़ का गुल झडना या गिरना। ३ फूल झड गया, अब रोशनी ठीक होगी।

फूलना-फलना–धन-धान्य तथा सनति आदि से पूर्ण रहना। उ० बुढिया ने खुश होकर कहा, जाओ बच्चा तुम सर्वदा फूलते-फलते रहोगे।

फूल तोड़ना–दे० 'फूल चुनना'।

फूल-सा–बहुत सुकुमार। उ० राजकुमार का शरीर फूल-सा है।

फूल सूंघ कर रहना–बहुत कम खाना। उ० मुझे तो विश्वास नही होता था, पर वह तो सचमुच फूल सूंघ कर रहती है।

फूल होना–१ आनद और सुख होना। २ दे० 'त्रिशूल होना'।

फूला फिरना–१ घमड मे रहना। उ० तुम आजकल क्यो फूले फिरते हो? २ आनद मे रहना।

फूली फिरना–१ किसी स्त्री का गर्व से भरा रहना। २ किसी स्त्री का बहुत प्रसन्न रहना। उ० फूली आँगन मे फिरै आँगन आँगि समात।

फूले अग न समाना–बहुत प्रसन्न होना। उ० परीक्षा में पास हो जाने पर वह फूले अग नही समा रहा है।

फूलो का गहना–१ फूलो की माला। उ० उस स्त्री के गले मे फूलो का गहना है। २ सुकुमार और सुन्दर। उ० तुम्हारा बेटा तो फूलो का गहना है।

फूलो की सेज पर सोना–बडे आराम से रहना।

फेंट कसना–१ कमर कस कर तैयार होना। उ० फेंट कसो, अब देर करना ठीक नही। २ इरादा पक्का करना। ३ अच्छी तरह धोती पहनना।

फेंट धरना–जाने या जाने न देना, रोकना। उ० जब भी जाता हूँ, वह मेरा फेंट धर लेती है।

फेंट पकड़ना–दे० 'फेंट धरना'।

फेंट बांधना–दे० 'फेंट कसना'।

फेंफडा जलाना–किसी की खैरख्वाही करना।

फेंफडी पडना–ओठ सूखना। उ० प्यास के मारे उसकी फेंफडी पड गई है।

फेंफडी बँध जाना–बात न निकलना। उ० वह ऐसा-वैसा नही है, उसके सामने चलोगे तो फेंफडी बँध जायगी।

फेंफडी बांधना–दे० 'फेंफडी पडना'।

फेर की बात–घुमाव की बात। उ० तुम सर्वदा फेर की बात किया करते हो। यह मुझे अच्छा नही लगता।

फेर खाना–१ घुमाव का रास्ता तय करना। उ० मैं तो इसी रास्ते जाऊँगा, उधर उतना फेर खाने कौन जाय? २ परीशान होना। उ० आज बडा फेर खाना पडा।

फेर देना–१. मोडना, घुमाना। उ० उसका मुंह फेर दो। २. लौटा देना। उ० उनका सामान फेर दो।

फेरन-फारन–उतारा हुआ कपडा।

फेर पड़ना—१ [illegible] उ० [illegible] राना [illegible] होता । [illegible] विरही के [illegible] फेर [illegible] कमी होता । उ० [illegible]

फेरफार की बात—१ [illegible] के [illegible] फेरफार [illegible] बात । [illegible] मुझे [illegible]

फेर में आना—दे० [illegible]

फेर में डालना—१ [illegible] कठिनाई में [illegible] । उ० [illegible] कर [illegible] दिया । [illegible]

फेर में पड़ना—१ [illegible] बार कुछ फेर में [illegible] हो गया । [illegible] उ० [illegible] कठिनाई में [illegible] फेर [illegible]

फेर लगाना—१ [illegible] उ० [illegible] जायगा । [illegible] फेर [illegible]

फेरि-फेरि—बार बार । [illegible] और [illegible] फेरि फेरि [illegible] है ।

फेरी देना—परिक्रमा करना, घूमना । [illegible] बाज़ [illegible] फेरी दे [illegible] है ।

फेरी पड़ना—भाँवर होना । परिक्रमा करना ।

[illegible]

फेर [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible]

फेरा [illegible]

फेसला [illegible]

फेर [illegible]

फौज [illegible]

फौज [illegible]

फौ [illegible]

फोड़ा [illegible]

फोड़ [illegible]

फोड़ा [illegible]

फोड़ा [illegible]

फ [illegible]

फौजी [illegible]

फौज [illegible] [illegible] हो गया । [illegible]

फौलादी [illegible] [illegible]

ब

बेगई करना—[illegible] । उ० [illegible] बेगई करता है ।

बट होना—ऐसा होना [illegible] न हो । उ० वह बट है, आखिर [illegible] रुपया-पैसा बनाये ?

बटाधार करना या होना—नाश बर्बाद करना या होना ।

बदस होना—मूक होना ।

बद करना—१ रोकना । [illegible] बन्द करना [illegible] । उ० [illegible] सिपाहियों ने उसे [illegible] कर लिया ।

बदली बजा लाना—[illegible] करना । उ० मेरे [illegible] बजा [illegible] तैयार [illegible] हैं, मैं [illegible] बजा लाने को तैयार हूँ ।

बद बद जुदा करना या कर देना—१. टुकड़े [illegible] देना । उ० सिपाही ने मारा-मारा पार

का वद-वन्द जुदा कर दिया। २. तोड-फोड देना।

बंद-वंद टूटना–दे० 'हाथ-पाँव टूटना'।

बद-वंद ढीला करना–खूब पीटना। पीट कर थका देना। उ० अगर ज़्याता तग करोगे तो मारते-मारते वन्द-वन्द ढीला कर दूंगा।

वंद-बंद पकडना–अच्छी तरह जकड लेना। उ० वीमारी ने उसका वन्द-वन्द पकड लिया है।

वंदर का आदी का स्वाद न जानना–मूर्ख व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण वस्तु के महत्त्व को न पहचानना।

बन्दर की तरह आँख बदलना–वात-वात मे गुस्सा होना। उ० वन्दर की तरह आँख वदलना ठीक नही है, अगर यही हालत रही तो दूसरे भी तुम्हारे साथ यही व्यवहार करेंगे।

वंदर की तरह नचाना–हैरान करना। उ० काम करना हो तो कर दो, वन्दर की तरह नचाने से क्या लाभ ?

बदर की बला तबेले के सिर पडना–किसी की मुसीवत किसी और के ऊपर आना।

बन्दर के हाथ मणि होना–अयोग्य के पास अच्छी वस्तु होना। उ० इस निरक्षर के साथ बी० ए० पास लडकी की शादी वन्दर के हाथ मणि होने के समान है।

बन्दर को आइना दिखाना–अयोग्य या असमर्थ व्यक्ति से कुछ अच्छे काम या वात की आशा रखना।

बन्दरघुडकी देना–ऐसी धमकी देना जो केवल डराने के लिए ही हो। उ० वन्दरघुडकी देने से मैं डर नही सकता। पुलिस की वन्दरघुडकी देने मे वह नहीं आ सकता।

बंदर-बाँट–दो के झगडे मे अपना लाभ।

वदरभवकी देना–दे० 'वदरघुडकी देना'।

बद होना–१ रुकना। उ० जव मेह वद हो तो हम लोग वाज़ार चले। २ कैद होना। उ० अव यदि कुछ करना तो वद होने के लिए तैयार होकर करना।

बदूक़ चलाना–बदूक मे गोली भर कर निशाने पर छोडना। उ० वदूक चलाने के पहले निशाना ठीक कर लो।

बदूक़ छतियाना–वदूक चलाने को तैयार होना। उ० बदूक छतिया कर खडे हो जाओ, अव शेर जगल मे आ रहा है।

बदूक़ छोडना–दे० 'वदूक चलाना'।

वदूक़ भरना–वदूक़ चलाने के लिए गोली भरना। उ० वह वदूक भर ही रहा था कि शेर ने उस पर आक्रमण कर दिया।

वदूक़ मारना–दे० 'वदूक चलाना'।

वदूक लगाना–दे० 'वदूक चलाना'।

वधक धरना–दे० 'वधक रखना'।

वधक रखना–कोई चीज़ या रुपया लेने के लिए कोई चीज़ रेहन रखना। उ० गहने वधक रखकर तो कुछ रुपये लाया था।

वधक से बुरा–वहुत बुरा। उ० यह तो वधक से भी वुरा हुआ।

बधन ढीला करना–कडाई या सख़्ती कम करना। उ० पिता जी ने अब बन्धन ढीले कर दिए, इसी से ये बच्चे विगड रहे हैं।

वधन मे पडना–१ गिरफ्तार होना। उ० उस वडे चोर का पुलिस के वधन मे पडना कठिन है। २ मोहमाया मे पडना। उ० बधन मे पडने पर ईश्वर की भक्ति कैसे हो सकती है ?

वधी गत वजाना–सव जैसा कहते तथा करते हैं, वैसा ही करना।

वँधी रक़म–निश्चित रकम।

बध्या-पुत्र होना–असभव होना। उ० तुमसे इस काम का होना वध्या-पुत्र होना है।

वश डुबोना–परिवार मे कलक लगाना। उ० नीच काम करके तुमने वश डुबो दिया।

वश डूब जाना या डूबना–१ वश के सभी लोगो का मर जाना। २ वश की वदनामी होना। उ० तुम्हारे इस काम मे वश डूब गया।

वक-झक करना–बकवाद करना। प्रलाप करना। उ० क्यो वक झक करते हो ?

वक-ध्यान लगाना–ढोग करना, कपट करना।

वकना-झकना–वडवडाना, विगड कर व्यर्थ की वाते करना। उ० वह तो पागल की तरह वकता-झवता रहता है।

वकबक करना–दे० 'वकझक करना'।

बकरा होना–१ वहुत कामी होना। २ छोटी दाढी वाला होना।

बकरी होना–१ दिन भर खाने वाला या मुँह चलाने वाला होना। २ वहुत पान खाने वाला होना। ३ कमज़ोर होना।

बकरे की माँ का खैर मनाना—जो नुकसान होने ही वाला है, उसे टालने का व्यर्थ प्रयास करना ।

बकवाद करना—दे० 'बकवास करना' ।

बकवास करना—१. बकबक करना । उ० बकवास मत करो, सीधे थाने चलो । २ तर्क-वितर्क करना । उ० क्या हर बात पर बकवास किया करते हो ?

बकार निकलना—दे० 'बकारी फूटना' ।

बकार फूटना—दे० 'बकारी फूटना' ।

बकारी फूटना—मुँह से बात निकलना । उ० बकारी तो फूटती ही नही और बहस करने आए हैं ।

बकुची बाँधना—हाथ-पैर बटोर कर गठरी के आकार का बन जाना । उ० वह बकुची बाँध कर नदी मे कूद पडा । मारे सर्दी के वह बकुची बाँधे है ।

बकुची मारना—दे० 'बकुची बाँधना' ।

बखिया उधेडना—भडा फोडना, भेद खोलना । उ० अगर ज्यादा बढ-बढ कर बात करोगे तो यही सब बखिया उधेड दूंगा ।

बखेडा खड़ा करना—झझट करना, झझट तैयार करना । उ० मेरा सत्यानाश करने के लिए ही उसने बखेडा खडा किया है ।

बखेड़ा चुकाना—झझट मिटाना । उ० बखेड़ा चुकाने के लिए कुछ खर्च भी करना पडे तो मैं तैयार हूँ ।

बखेड़ा फैलाना—झझट करना, झगडा करना । उ० क्या बखेडा फैला रहे हो ?

बखेड़ा मचाना—दे० 'बखेडा फैलाना' ।

बखेड़ा होना—झझट होना ।

बख्शीश देना—१ जागीर देना । २ इनाम देना । उ० चलते समय उनके नौकरो को बख्शीश अवश्य देना ।

बख्श देना—छोड देना । उ० उसने सिपाही से कहा कि जो माँगो मैं देता हूँ, पर मेरी जान बख्श दो ।

बगछुट भागना—बहुत तेजी से भागना ।

बग़ल गरम करना—१ प्रसग करना । २ रुपया लेना । ३. घूस लेना । उ० उन गरीबो से बगल गरम करते तुम्हें शर्म नही आती ?

बग़ल मे ईमान छिपाना—दे० 'बगल मे ईमान दबाना' ।

बग़ल मे ईमान दबाना—बेईमानी करना । उ० क्या दस रुपयो के लिए बग़ल मे ईमान दबा रहे हो ?

बग़ल मे ईमान रखना—दे० 'बगल मे ईमान दबाना' ।

बग़ल मे दबाना—अधिकार करना, ले लेना । उ० वह मेरा सब सामान बगल मे दबाकर चलता बना ।

बगल मे धरना—चुरा कर छिपा लेना । उ० उसे बगल मे न धरो, मैं सब देख रहा हूँ ।

बगल में मारना—१ बगल मे लेना । उ० किताब बगल मे मारे और चलने को तैयार हो गए । २ धोखा देकर ज़बर्दस्ती किसी चीज़ पर अधिकार कर लेना ।

बगल में मुँह डालना—शर्मिन्दा होना । उ० अब हार कर बगल मे क्यों मुँह डालते हो ?

बगल सूँघना—दे० 'होंठ चबाना' तथा 'बगलें झाँकना' ।

बग़ल हो जाना—एक तरफ हट जाना । उ० अगर वह बगल न हुआ होता तो उसका भी सिर फूट जाता ।

बगला-भगत होना—कपटी या धोखेबाज़ होना । उ० उसकी बात का विश्वास मैं नहीं कर सकता हूँ, वह तो बगला-भगत है ।

बगली घूँसा—छिप कर किया हुआ वार । उ० बगली घूँसा तो सियारो को पसद है । हम शेर तो सामने वार करते हैं ।

बगली डूबना—पूँजी बरबाद होना । उ० इस व्यापार मे तो उसकी बगली डूब गई ।

बगली देना—नकब लगाना । उ० बगली देकर चोरो ने मेरा सब धन निकाल लिया ।

बग़ली मारना—१ जेब कतरना । उ० मेले मे बगली मारने वाले बहुत से घूमते रहते हैं । २. बगल से ज़मीन आदि खोदना । उ० बगली मार कर इस दीवाल को गिरा दो ।

बगलें झाँकना—१ इधर-उधर भागने की कोशिश करना । उ० वह मुझे देखते ही बगलें झाँकने लगता है । २ जवाब न दे सकने के कारण लज्जित होना । उ० अब जवाब दीजिए, बगलें झाँकने से काम न चलेगा । ३ सोच-विचार मे पडना ।

बगलें बजाना–१ खूब-खुशी मनाना। उ० अब क्या है ? बगलें बजाओ। तुम्हारी वाली तो हो ही गई। २ हँसी उडाना। उ० ऐसा मूर्ख है कि उसे देख कर सभी बगलें बजाते हैं।

बगले का हंस हो जाना–अयोग्य व्यक्ति का योग्य बन जाना।

बचन छोड़ना–दे० 'वचन तोडना'।

बचन डालना–माँगना। उ० जिससे कुछ मिल सके, उसी से वचन डालना चाहिये।

बचन तोडना–कह कर न करना। बात देकर बदल जाना। उ० वचन तोडने वाले का कोई विश्वास नही करता।

बचन देना–प्रतिज्ञा करना। उ० मैंने उससे वचन दे दिया है, अत अवश्य जाऊँगा।

बचन निभाना–दे० वचन पालना'।

बचन पालना–जो कुछ कहना, उसे करना। उ० वचन पालने के लिए प्राण की भी परवा नही की जाती।

बचन-बध करना–१ बात मे अच्छी तरह जकड लेना। उ० पहले ही बचन-बध कर लो तो शायद काम कर दे, वर्ना कोई आशा नही है। २ बचन ले लेना। उ० बचन-बध कर चुके तो वह इन्कार नही कर सकता।

बचन-बद्ध करना–दे० ' बचन-बध करना'।

बचन बांधना–दे० 'वचन लेना'।

बचन मे बांधना–प्रतिज्ञा कराना। उ० उसे वचन में बाँध लो, फिर वह स्वय ही कर देगा।

बचन हारना–दे० 'बचन देना'।

बचाव करना–हिफाजत करना। रक्षा करना। उ० उसका बचाव करना तुम्हारे जिम्मे है।

बच्चा देना–प्रसव करना। उ० यह गाय बच्चा देने वाली है।

बच्चा होना–१ अनुभवहीन होना। २ बहुत खिलाडी होना। ३ गभीर न होना। उ० तुम अभी बच्चे हो।

बच्चे-बच्चे की जबान पर होना–हर किसी के द्वारा कहा जाना।

बच्चो का खेल–बहुत सरल काम। उ० यह बच्चो का खेल है, इसे करने मे क्या है ?

बछड़े का खूंटे के बल उछलना– कोई सहारा पाकर ही बडी-बडी बातें या घृष्टता करना।

बछिया का ताऊ–दे० 'बछिया का बावा'।

बछिया का बावा–मूर्ख, बेवकूफ। उ० वह तो पूरा बछिया का बावा है।

बजा कर–१ खुल्लमखुल्ला। उ० वह इतना दुष्ट है कि बजा कर सबको गाली देता है, पर किसी की हिम्मत नही पडती कि उससे कुछ बोले। २. ठोक-ठोंक कर, अच्छी तरह देख कर। उ० सौदा बजा कर खरीदो।

बजाना-ठोंकना–दे० ठोकना-बजाना'।

बजा लाना–पालन करना। उ० मेरा नौकर बडा आज्ञाकारी है। उसे जो भी आज्ञा देता हूँ, तुरन्त बजा लाता है।

बज्र गिरना–घोर अनिष्ट करना।

बज्र पड़ना–आफत आना, नाश होना। उ० ऐसे आततायी पर तो बज्र पडना चाहिए।

बज्र बहरा–दे० 'बज्र पत्थर'।

बटाऊ होना–१ चल देना, चलता होना। २ अस्थायी होना।

बटुक-विलासी–छोटी उम्र के लडको से अनुचित सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति।

बटेर का बह जाना–बटेर का दुबला हो जाना। [बटेरबाजो की भाषा मे प्रयुक्त होता है।]

बट्टा काटना–दस्तूरी या दलाली आदि निकाल लेना। उ० बेचते समय सोनार हर एक गहने मे बट्टा काट लेते हैं।

बट्टा लगना–१ कलक लगना। उ० झूठे-मूठे उसके नाम मे बट्टा लग गया। २ हानि होना। उ० व्यर्थ मे १ रु० का बट्टा लग गया।

बट्टा लगाना–१ कलक लगाना। उ० इतने बडे आदमी के नाम मे बट्टा लगाना मामूली बात नही है। २ हानि करवाना। उ० तुमने व्यर्थ मे २ रु० का बट्टा लगाया।

बट्टे-खाते डालना–दे० 'बट्टे-खाते लिखना'।

बट्टे-खाते लिखना–हानि के लेखे मे डालना। उ० जो १० रु० कल खो गया, उसे बट्टे-खाते लिख दो।

बडबड करना–बकवाद करना, प्रलाप करना। उ० बहुत बडबड मत करो।

बड़बड़ लगाना–दे० 'बडबड करना'।

वड़भागी होना–सौभाग्यवान् होना ।

बडाई देना–सम्मान करना, आदर करना । उ० जो बडाई देने लायक होगा, उसे लोग देंगे ही, तुम्हें क्यो जलन होती है ?

वड़ाई मारना–दे० 'डींग हांकना' ।

बडा गाल होना–बढ-बढ कर बोलना ।

वडाई मारना–शेखी हांकना ।

बड़ा घर–१ धनी घराना । उ० मेरे गाँव मे इनका सबसे बडा घर है । २ जेलखाना । उ० वह चोर अभी आज ही वडे घर की हवा खाकर आया है ।

वडी नाक होना–मान-अपमान का वहुत ध्यान होना ।

व ा नाम करना–नाम फैलाना । उ० उसने अपने परिवार का बडा नाम किया ।

बड़ा (बड़े) पेट वाला–१ सहनशील । २ वहुत खाने वाला । ३ ऐसा आदमी जो वाते पचा सकता हो ।

बडा वोल मारना–दे० 'शेखी मारना' ।

वडी-बडी बातें करना–दे० 'डींग हांकना' ।

वडी बात न होना–कोई मुश्किल न होना । उ० उसके लिए यह काम कोई वडी वात नही है ।

बडी बात होना–१ मुश्किल काम होना । उ० इस काम का करना आपके लिए बडी वात है । २ केवल वात ही बात होना । उ० उनकी वडी बात होती है ।

वडे घर की हवा खाना–जेल जाना ।

वडे वाप का बेटा होना–१ विचित्र होना । उ० आप तो बडे वाप के बेटे हैं, मुकाबिला कौन कर सकता है ? २ बहुत धनीमानी होना । उ० वह तो वडे वाप का बेटा है, उसके लिए सब कुछ सभव है ।

बढ कर चलना–अभिमान करना । उ० वढ कर चलने वालो का मुँह नीचा हो जाता है ।

बढ-चढ कर–दे० 'चढ-बढ कर' ।

वढ़-चढ कर होना–बडा या बढ़ कर होना । उ० वे दोनो शरारत मे एक दूसरे से वढ-चढ कर हैं ।

वढ़-बढ़ कर वोलना–दे० 'शेखी बघारना' ।

वढ चलना–घमड करना । उ० पेट भरते ही वे वढ़ चले ।

वढ़ावे मे आना–किसी के ललकारने या जोश देने से जोश मे आना या किसी कठिन काम करने मे प्रवृत्त होना । उ० तुम उनके वढावे मे मत आना, नही तो खतरे में पड जाओगे ।

वत-चल होना–वहुत वकवासी होना ।

वतासे-सा घुलना या घुल जाना–१ जल्द नष्ट होना । २ जल्दी दुर्बल होना । गम या वीमारी से कमजोर होना । उ० यदि ऐसे रहोगे तो बतासे-से घुल जाओगे ।

वतासे-सा बैठ जाना–दे० 'वतासे-सा घुलना' ।

वत्ती दिखाना–प्रकाश दिखाना । उ० उसे वत्ती दिखा दो, रास्ते मे बडा अँधेरा है ।

वत्तीस धार होकर निकलना–फूट-फूट कर बहना । अपने किये पापो का फूट-फूट कर निकलना ।

वत्तीसी खिलन–हँसी आना । उ० वात-वात मे उसकी बत्तीसी खिल जाती है ।

वत्तीसी झड पड़ना–दाँत गिर पडना । उ० इसी उम्र मे उसकी वत्तीसी झड पडी ।

वत्तीसी दिखाना–१ हँसना । उ० वात-वात मे वत्तीसी दिखाना कहाँ की सभ्यता है ? २ बेहूदी हँसी हँसना । ३ दाँत दिखाना ।

वत्तीसी वजना–१ गहरा जाडा लगना, जाडे मे दाँत वजना । उ० यहाँ जनवरी मे वत्तीसी वजने लगती है । २ कहा-सुनी होना । उ० वात ही बात मे वत्तीसी वज गई ।

वद कर–१ जान-बूझ कर । उ० जिस काम को मैं मना करता हूँ, उसे तुम वद कर करते हो । २ ललकार कर । उ० न जाने क्यो यह मुझसे वद कर झगडा करता है । ३ वाजी वद कर । उ० आओ वद कर खेल लो ।

वद कर कहना–पूरे निश्चय के साथ कहना । उ० मैं वद कर कहता हूँ कि आपका काम हो जायेगा ।

वदन चुराना–लज्जा से शरीर छिपाना । उ० वह मुझे देखते ही बदन चुराने लगी ।

बदन टूटना–शरीर-दर्द होना । उ० आज सुवह से मेरा वदन टूट रहा है ।

वदन फल जाना–फोडे-फुसी होना । उ० उसका वदन गर्मी से फल गया है ।

वदन मे आग लग जाना–बहुत क्रोध आना ।

वदन मे खाज पैदा होना–अपने आप या अपने हाथो खराब होना ।

बदनियत होना या हो जाना–१ बेईमान होना। उ० उसे अब रुपया न देना, वह तो बदनियत हो गया है। २ बुरे विचार का होना। उ० उसके घर की जवान लडकियाँ तुम्हारे घर नही आ सकती, तुम बदनियत हो गए हो।

बद मे–बदले मे। उ० चावल के बद मे मुझे गेहूँ दे जाना।

बदर निकालना–किसी के जिम्मे रकम निकालना। उ० उसने हिसाब करके मेरे बदर १०० रु० निकाले हैं।

बदला देना–उपकार के बदले उपकार या अपकार के बदले अपकार करना। उ० आपने कष्ट मे मेरी सहायता की है, मैं इसका बदला अवश्य दूँगा।

बदला लेना–किसी की बुराई करने पर उसके साथ बुराई करना। उ० तुमने उसे मारा है, इसका बदला वह अवश्य लेगा।

बदले–१ हर जगह पर, एवज मे। उ० इस छोटी चारपाई को हटा कर उसके बदले बडी रखो। २ हानि भरने के लिए। उ० क़लम खो जायगा तो इसके बदले दूसरा कलम देना होगा।

बदा होना–भाग्य मे लिखा होना। उ० अब तो चलते हैं, जो बदा होगा सो होगा।

बदी चेतना–बुराई चाहना। उ० किसी की बदी चेतना महापाप है।

बद्दू हो जाना–नक्कू हो जाना। ऐसा हो जाना कि रास्ते मे लोग उँगली उठायें।

बधावा बजना–लडका पैदा होने पर गाना-बजाना होना।

बधिया करना–१ बैल या कुत्ते आदि को नपुसक बनाना। २ भीरु, कायर या डरपोक बनाना। उ० डरा-डरा कर उस बेचारे को इन लोगो ने ऐसा बधिया किया कि आज शेर की कौन कहे, सियार के आगे भी नही खडा हो सकता।

बधिया बैठना–१ घाटा होना। २ दिवाला निकलना।

बन कर खेल बिगडना–बना-बनाया काम बिगड जाना। उ० आपकी वजह से बन कर खेल बिगड गया।

बन पडना–हो सकना। उ० अगर मुझसे बन पडा तो मैं आपका काम अवश्य कर दूँगा।

बन का कुआं होना–बेकार होना। निरर्थक होना।

बन-बन की लकडी चुनना–१. मारे-मारे फिरना, २. बहुत दौडधूप करना।

बनवास देना–जगल मे रहने की आज्ञा देना। घर से बाहर निकालना। उ० दशरथ ने रामचन्द्र को बनवास दे दिया था।

बनवास लेना–१ बस्ती छोड कर जगल मे रहना। उ० पिता की आज्ञा से रामचन्द्र ने बनवास लिया। २ सन्यास लेना। उ० चौथेपन मे लोग बनवास लेते हैं।

बना कर–अच्छी तरह, भलीभाँति। उ० बना कर लिखो।

बना-बनाया–पूरा, ठीक, पूर्ण होने के करीब। उ० मेरा बना-बनाया काम आपकी वजह से ख़राब हो गया।

बनाये रखना–जीवित रखना, जीता रहने देना। उ० भगवान आपको बनाये रखे।

बनारसी चाल चलना–बहुत होशियारी से धोखा देना।

बना रहना–१ जीता रहना। उ० भगवान करे आप सर्वदा बने रहे। २ मौजूद रहना, ठहरा रहना। उ० आप जब तक चाहे, यहाँ बने रहे। ३ अच्छी दशा को पहुँचना। ४ किसी कार्य मे योग्य होने की झूठी मुद्रा बनाना। ४ निभना, पटना।

बनाव-चोनाव करना–१ शृगार करना। उ० वह तो रात-दिन बनाव-चोनाव मे ही रहती है। २. बनावट की बातें करना। ३ किसी के स्वागत की व्यर्थ मे बहुत कृत्रिम तैयारी करना।

बनिया होना–१ कजूस होना। २ रुपये-पैसे वाला होना। ३ बहुत गदा रहने वाला होना। ४ मोटा या तोंद वाला होना।

बनिया-बक्काल होना–१ कायर, भीरु या डरपोक होना। २ कजूस होना।

बनिये का-सा चलना–कजूसी करना। उ० तुम तो हमेशा बनिये का-सा चलते हो। तुम्हारे लिए वह जमीन न ली जायगी।

बबर होना–बहुत वीर तथा खूँख्वार होना। उ० मेरे ही लिए बबर है, या उसके सामने भी खडे हो सकते है ?

ववल पडना–दुखी की आह पडना। उ० आप अगर गरीवो को सतायेंगे तो जरूर ववल पडेगा।

ववूल लगा कर आम चाहना–कर्म के विपरीत फल चाहना।

वमचख मचाना–झगडा करना, कहा-सुनी करना।

वम वोल जाना या वोलना–१ कुछ न रहना। खाली हो जाना। उ० अगर इसी तरह खर्च करोगे तो थोडे ही दिन मे सव खजाना वम वोल जायगा। २ मर जाना। उ० एक ही लाठी मे वह वम वोल गया।

वम भोलानाथ होना–वडा ही सरलहृदय होना।

वयार करना–पखा करना, पखा हिलाना, जिससे हवा लगे। भोजन करत कनक की थारी। द्रुपद सुता तहँ करति वयारी।

वर आना–वढ कर निकलना। उ० झूठ वोलने मे आपसे तो कोई वर आ नही सकता।

वरकत उठना–वैभव आदि का खातमा हो चलना। उ० अव तो उनके घर से वरकत उठ चली।

वरकत होना–उन्नति होना। उ० अगर आप गरीवो की मदद करोगे तो आपकी खूव वरकस होगी।

वरजवान–विल्कुल याद। उ० यह कविता मुझे वरजवान है।

वर पाना–दे० 'वर आना'।

वारपा करना–१ खडा करना। उ० यहाँ कोई झगडा वरपा न करो। २ ज़ाहिर करना।

वरफी खाने के वाद गुड खाना–अच्छी वस्तु के वाद वुरी वस्तु मिलना।

वरस दिन का दिन–वर्ष मे एक वार आने वाला त्योहार। उ० आज वरस दिन का दिन है, खूव नाच-रग होना चाहिये।

वरस पडना–वहुत कुछ वुरी-भली वातें कहने लगना। क्रोध से उवल पडना। उ० गलती तो उसकी है नही और आप उस प॰ वरस पडे।

वरसो लग जाना–(किसी काम मे) वहुत समय लगाना। उ० सरकारी कामो मे तो वरसो लग ही जाते हैं।

वरावर का–समान, वरावरी करने वाला। उ० वरावर के लड़के से लडना ठीक होगा।

वर्फ होना–१ वहुत शीतल होना। उ० मरने के समय सवका शरीर वर्फ हो जाता है। २ ठडा होना, मर जाना। उ० सर्दी से वह कुत्ता वर्फ हो गया।

वर्रे के छत्ते छेडना–दे० 'हड्डे के छत्ते छेडना'।

वर्षा होना–खूव आना, भरपूर मिलना। उ० इस रोजगार मे तो रुपयो की वर्षा होती है।

वल पुरखना–पूरी शक्ति लगाना। उ० वल पुरखो तो चक्की उठ जाय।

वलि का वकरा–दूसरो के लिए मारा जाने वाला।

वला सिर पर लेना–जान-वूझ कर झझट मे पडना।

ववडर उठाना–ववाल उठाना, झगडा उठाना। हो-हल्ला मचाना। उ० क्या छोटी-सी वात के लिए ववडर उठा रहे हो।

ववडर का तिनका होना–१ अस्थिर होना। २ वेसहारा होना।

ववडर मचाना–दे० 'ववडर उठाना'।

ववाल पालना–झगडा-झझट मोल लेना।

वश का–जिस पर अधिकार हो। उ० अव वह सयाना हुआ, हमारे वश का नही है।

वश चलना–कावू चलना शक्ति काम करना। उ० यदि मेरा वश चलता तो मैं उसे निकाल कर छोडता।

वश मे होना–अधिकार मे होना। उ० वे आपके वश मे हैं तो आप उनसे जो चाहे करा सकते हैं।

वश होना–अधिकार होना। उस लडके पर हमारा कोई वश नही है।

वस का–इच्छा के अधीन। उ० वह मेरे वस का आदमी नही है।

वसेरा करना–वसना, ठहरना, निवास करना। उ० अँधेरा होने को आया, अव आज यही वसेरा किया जाय।

वसेरा देना–आश्रय देना।

वसेरा लेना–दे० 'वसेरा करना'।

वस्ता वाँधना–१ किताव-कापी आदि वटोर कर उठने की तैयारी करना। उ० लडके वस्ता वाँध ही रहे थे कि मास्टर साहव आ गये और फिर पढ़ाने लगे। २ जाने की तैयारी

करना । उ० अब बस्ता बाँधिए, आपकी यहाँ ज़रूरत नही है । ३ सामान बटोरना । उ० भाई, अब अपना बस्ता बाँधो, मेरे लिए भी जगह होनी चाहिए ।

बहक कर बोलना—गर्व या जोश मे आकर बढ-बढ कर बोलना । उ० अभी तो बहुत बहक कर बोल रहे हो, जब काम पडेगा तो भागते नज़र आओगे ।

बहता हुआ जोडा—बहुत अधिक अडे देने वाला जोडा । उ० कबूतर का यह बहता हुआ जोडा है । [इस मुहावरे का प्रयोग विशेषत कबूतर के लिए होता है ।]

बहती गगा मे हाथ धोना—किसी ऐसी बात से फायदा उठाना, जिससे सब लाभ उठा रहे हो या जो सबके लिए खुला हो। अच्छा अवसर देखकर फायदा उठा लेना । उ० सभी कोशिश करके पास हो रहे हैं तो तुम क्यो फेल होते हो ? तुम भी बहती गगा मे हाथ धो लो ।

बहती नदी मे पांव पखारना—दे० 'बहती गगा मे हाथ धोना' ।

बहत्तर घाट का पानी पिये होना—बहुत धूर्त और अनुभवी होना ।

बहरा पत्थर—बहुत अधिक बहरा । उ० यह मेरा नौकर तो बहता पत्थर है, इसे मैं नही रख सकता ।

बहार पर आना—१ विकसित होना, फूलना । २ जवान होना । ३ हरा-भरा होना । ४ उन्नति के ऊर्ध्व बिन्दु पर होना ।

बहार लूटना—१ रौनक मिटाना । उ० विदेशियो ने भारत की सारी बहार लूट ली । २ मौज करना । सैर-सपाटा करना ।

बहाल करना—दोबारा उसी जगह पर रखना । उ० चौकीदार को बहाल कर दो ।

बहाल रखना—कायम रखना, बदस्तूर रखना ।

बहाल होना—१ फिर से मुकर्रर होना । २ स्वस्थ होना । उ० आजकल वह बहाल है ।

बहुत से पापड बेलना—बहुत तरह के काम कर चुकना । उ० मैं बहुत से पापड बेल चुका हूँ, अब आपके बतलाने की आवश्यकता नही है ।

बांग देना—१ आवाज़ देना, पुकारना । २ बोलना ।

बांछें खिलाना—बहुत प्रसन्न होना ।

बाँस टूटना—जबर्दस्ती रोके हुए भाव का फूट निकलना ।

बाँस की जड मे घमोई होना—नुक़सान पहुँचाने वाला होना ।

बाँस टूटना—बाँसो से पिटना । उ० उस पर खूब बाँस टूटे ।

बाँस पर चढ़ना—बदनाम होना ।

बाँस पर चढाना—बदनाम करना ।

बाँस-पाटी करना—मर्दों का औरतो को अश्लील गालियाँ देना । उ० वह आते ही आते बाँस-पाटी करने लगा, ज़रा समझा देना, फिर ऐसा करेगा तो सर रँग दूंगा ।

बाँसा फिर जाना—मृत्यु के चिह्न दिखलाई पडना ।

बाँसो उछलना—बहुत खुश होना । खुश होकर कूदना ।

बाँह गहे की लाज होना—सहारा देने के वचन के कारण साथ निभाना ।

बाँह की छाँह लेना—शरण मे आना ।

बाँह टूटना—मुख्य सहायक का न रहना । उ० बडे लडके के मरने से मेरी बाँह टूट गई, नही तो आपमे इतनी हिम्मत नही थी कि सर उठाते ।

बाँह त्यागना—सहारा छोडना, निराश्रय करना । उ० तौउ भई ही दीन अति पति त्यागी मो बाँह ।

बाँह देना— सहारा देना । उ० ज़रा बाँह दे दो तो मैं पार हो जाऊँ ।

बाँह पकडना—१ विवाह करना । २ पनाह या शरण देना ।

बाँह बुलद होना—१ ताकतवर होना । २ हिम्मत या जोश वाला होना ।

बाई आँख फरकना—दे० 'बायीं आँख फरकना' ।

बाई का झोक—१ आवेश । उ० बाई के झोक मे मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया, माफ कीजियेगा । २ वायु का प्रकोप । उ० बाई के झोक मे वह बक-बक कर रहा है ।

बाई चढना—१ घमड आदि के कारण बेकार की बातें करना । उ० अधिक बाई न चढा, नही तो दो-चार थप्पड जड दूंगा । २ वायु का प्रकोप होना । ३ झक या सनक सवार होना ।

बाई पचना—१ शेखी मिटना। उ० एक ही मुकदमे मे सारी वाई पच गई। २. वायु का प्रकोप शात होना।

बाई पचाना—घमड तोडना। उ० इस साल तुम्हारी वाई न पचायी तो असल वाप का वेटा नही।

बाक़ी न उठा रखना—सव कुछ कह या कर डालना।

वाग उठाना—१ लगाम हाथ मे लेना। २ घोडा दौडाना।

बागडोर हाथ मे होना—१ प्रबध हाथ मे होना। २ वश मे होना।

बाग-वाग होना—वहुत खुश होना। उ० तुम्हे देख कर तबीयत वाग-वाग हो गई।

वाग मुडना—१ चेचक के दानो का मुरझाना। २ चलते घोडे का रुख बदल जाना।

वाग मोडना—किसी ओर घुमाना। उ० सिक्दर ने अपने लश्कर की वाग हिन्दुस्तान की तरफ मोडी।

बाछें आना—होठो के कोनो का पक जाना।

बाछें खिल जाना—हँसी आ जाना।

बाछें ठूढी तक आना—१ वहुत ज्यादा हँसना। २ वहुत खुश होना।

बाछें पकना—दे० 'बाँछें आना'।

बाछें फटना—दे० 'बाँछे आना'।

बाज आना—१ खोना, रहित होना, छोड देना। उ० अव हम उस १०० रु० से वाज आये। २ आदत छोडना, अलग होना। उ० हमने तुमको लाख समझाया, पर तुम शरारत से वाज़ नही आते।

बाज करना-रोकना, मना करना।

वाज रखना—दे० 'बाज करना'।

बाज रहना—दूर रहना, अलग रहना। उ० मैं ऐसी नौकरी से वाज रहना चाहता हूँ।

बाज़ार उतरना—भाव या दाम घटना। उ० कपडो का बाज़ार उतर रहा है।

वाज़ार करना—चीज़ खरीदने को वाज़ार जाना। चीजें खरीदना। उ० मैं वाज़ार करने जा रहा हूँ, जो-जो चीज़े लानी हो, वतला दो।

बाज़ार के भाव पिटना—१ खूब मार खाना। २. इस तरह पिटना कि सबको खवर हो जाय।

वाज़ार खुलना—दूकानो का खुलना। उ० आज वाजार नही खुलेगा।

वाज़ार गर्म होना—१ महँगी होना। उ० आजकल गुड का वाजार गर्म है। २ खूब ग्राहक होना। ३ खूब काम चलना। ४ ज़ोरो पर होना। उ० वीमारी का वाज़ार गर्म है। ५ किसी वात की वहुत अधिकता होना।

वाज़ार चलते हाथ पटकना—वात-वात मे मार-पीट कर वैठना।

वाज़ार तेज होना—१. वाजार मे खूव माँग होना। २ चीज़ो का महँगा होना। उ० कपडे का वाज़ार तेज़ है। ३ व्यवसाय या काम मे वढती या उन्नति होना। उ० आजकल तुम्हारा वाज़ार खूब तेज़ है।

वाजार दिखाना—किसी चीज़ को वेचने के लिए वाजार मे ले जाना।

वाज़ार वद होना—अधा होना। उ० क्या तेरा वाज़ार वन्द है कि सामने की चीज़ नज़र नही आती?

वाज़ार मदा होना—खरीद-फरोख्त या क्रय-विक्रय कम होना। उ० आजकल गुड का वाज़ार मदा है।

वाज़ार मे आग लगना—चीजें वहुत महँगी होना।

वाज़ार मे वैठना—वेश्यावृत्ति अपनाना।

वाज़ार लगना—वाजार मे दूकान लगना। उ० आपके गाँव का वाजार किस दिन लगता है?

बाज़ार लगाना—चीज़ो को वेतरतीव फैलाना। उ० क्या वाजार लगा रखा है, ज़रा ठीक से रखो।

वाजारू आदमी—वदचलन आदमी।

वाज़ी मारना या मार लेना—१ दाँव जीतना। उ० कुश्ती मे उसने दस हज़ार की वाज़ी मार ली। २ जीत जाना। उ० तुमने तो वाजी मार ली।

वाज़ी लगाना—शर्त वदना। उ० वाज़ी लगा कर खेल लो, तुम जीत नही सकते।

वाज़ी ले जाना—किसी वात मे आगे वढ जाना। जीत जाना। उ० परीक्षा मे मेरा लडका सव लडको से बाज़ी ले गया।

वाज़ी हारना—१ मात खाना (शतरज)। २ शर्त हारना।

वाट करना—१ रास्ता वनाना। २ नया रास्ता खोलना।

बाट जोहना–प्रतीक्षा करना, रास्ता देखना। उ० बाट जोहते-जोहते रात हो गई, पर वह नही आया।

बाट जोहने आँखें पथरा जाना–बहुत प्रतीक्षा करते-करते थक जाना।

बाट दिखाना–प्रतीक्षा करवाना

बाट देखना–दे० 'बाट जोहना

बाट पडना–१ पीछे पडना, तग करना। उ० तुम क्यो मेरे बाट पडे हो, आखिर क्या चाहते हो ? २ डाका पडना। ३ हरण होना।

बाट पारना–डाका डालना। रास्ते मे लूट लेना। उ० बाट पारने वालो से होशियार होकर जाना।

बाट मारना–दे० 'बाट पारना'।

बाट लगना या लगा देना–१ रास्ता बताना। उ० आप बाट लगा दें, मैं चला जाऊँगा। २ मूर्ख बनाना। उ० आप क्यो उस सीधे आदमी को बाट लगाते हैं ? ३ किसी काम के करने का ढग बताना।

बाटली चापना या चाप देना–रस्से को खीच कर पाल तानना। उ० बाटली चाप दो तो नाव तेज़ चलेगी, हवा इस वक्त अनुकूल है।

बाढ उडाना–एक साथ तोपें या बन्दूकें दागना।

बाढ छोडना–दे० 'बाढ उडाना'।

बाढ झाडना–दे० 'बाढ उडाना'।

बाढ दगना–तोप का लगातार छूटना। उ० बादशाह के आते ही बाढ दगने लगी।

बाढ पर चढाना–१ उकसाना। उ० उसे बाढ पर चढाओगे तो तुरन्त लड पडेगा। २ धार तेज़ करना।

बाढ मारना–दे० 'बाढ उडाना'।

बाढ रखना–धार रखना। शान पर रखना। तेज़ करना।

बात आँचल मे बाँधना–दे० 'बात गाँठ मे बाँधना'।

बात आई-गई होना–बात का भूल जाना।

बात आगे बढाना–चर्चा और आगे बढाना।

बात आना–१ सगाई आना। २ इलज़ाम आना, कलक आना। उ० बात उन पर आई।

बात उगल देना–गुप्त बात को कह देना।

बात उछालना–१ उपहास करना। २. आम-चर्चा होना।

बात उठाना–१ चर्चा छेडना। उ० यहाँ उनकी बात न उठाओ, नही तो झगडा हो जायगा। २ नागवार बातो को बर्दाश्त करना। ३ आज्ञा पालन न करना। ४ बात न मानना।

बात उडना–१ चारो ओर बात फैलना। उ० यह झूठी बात उडी है, इसमे कुछ भी सत्य नही। २ बात का तेज़ी से चारो ओर फैल जाना।

बात उलटना–अपने कहे को बदल कर कहना। उ० बात मत उलटो।

बात करते–दे० 'बात कहते'।

बात कहते–तुरन्त, झट। उ० वह ऐसा फुर्तीला है कि बात कहते काम कर देता है।

बात का कच्चा–अपनी बात पर न रहने वाला। उ० वह तो बात का कच्चा है, उसकी बात का मुझे विश्वास नही।

बात काटना–१ बात मे दखल देना। उ० मेरी बात काटोगे तो ठीक न होगा। २ जो कहा गया हो, उसके खिलाफ कहना। बात का प्रतिकार करना। उ० जो कुछ भी मैं तुमसे कहता हूँ, तुम उसे काट देते हो।

बात का तुर्रा होना–प्रमुख या खास बात मे कुछ और मिला देना। उ० साफ ही बात का तुर्रा हो गया है, नही तो भला कही यह हो सकता है।

बात का धनी–मुँह से जो कह दे, उसे पूरा करने वाला। उ० वह बात का धनी है, उसका मुझे पूरा विश्वास है।

बात कान पडना–बात का सुना जाना। उ० जहाँ यह बात उसके कान पडी, वह तुरन्त आएगा।

बात का पक्का–दे० 'बात का धनी'।

बात का पूरा–दे० 'बात का धनी'।

बात का बतंगड करना–१ छोटे से मामले को खूब बढा-चढा कर कहना। उ० बात का बतगड मत करो, सच्ची बात बतलाओ। २ छोटे झगडे को बढा देना। उ० बात का बतगड करने से तुम्हारी ही हानि होगी।

बात का बतंगड बन जाना या होना–१ थोडी बात का बढ जाना। २ छोटे झगडे का बहुत बढ जाना।

बात का हेठा—दे० 'बात का कच्चा'।

बात किये फूल झड़ना—मृदुभाषी तथा कोमल होना। उ० उसकी बात किये तो फूल झड़ते हैं।

बात की झड़ी लगना—बहुत बातें होना।

बात की तह तक पहुँचना—पूरे भेद को जान लेना।

बात की बात मे—फौरन, तुरन्त। उ० आप घबड़ायें न, मैं बात की बात मे इस काम को कर दूंगा।

बात कुर्सीनशीन होना—१ किसी बात का माना जाना। २ बोलवाला होना। उ० आजकल उनकी बात कुर्सीनशीन हो रही है।

बात को आँचल मे बाँधना—किसी का कहा अच्छी तरह याद रखना। उ० मेरी बात आँचल मे बाँध लो।

बात खाली जाना—बात का न माना जाना। कहना व्यर्थ होना। उ० मैं जानता हूँ कि वहाँ मेरी बात खाली जायगी।

बात खुलना—भेद या रहस्य प्रकट होना। उ० वह बात भी आज खुल गई।

बात खोना—बेइज्जत या अपमानित होना, प्रतिष्ठा गँवाना। उ० तुमने अपनी बात खो दी।

बात खोल कर कहना—बात स्पष्ट करके या समझा कर कहना।

बात गढना—१ झूठी बात कहना। उ० तुम्हे बात गढना बहुत आता है। २ बात को बढा कर कहना।

बात गाँठ मे बाँधना—बात को न भूलना। याद रखना। उ० इस बात को गाँठ मे बाँध लो, नही तो पछताओगे।

बात गिरह मे बाँधना—दे० 'बात गाँठ मे बाँधना'।

बात घूंट जाना—१ सुनी-अनसुनी करना। उ० तुम हर एक बात घूंट जाते हो, यह ठीक नही। २ जाने देना।

बात घोंट जाना—दे० 'बात घूंट जाना'।

बात चबा जाना—कुछ कहते-कहते रुक जाना। उ० आप क्यो बात चबा गये, जो कहना हो कह डालिए।

बात चलना—जिक्र छिड़ना। उ० तुम्हारी बात तो नहीं चली।

बात चलाना—जिक्र छेड़ना। उ० वहाँ मेरी बात मत चलाना।

बात टालना—१ सुनी-अनसुनी करना। २ ध्यान न देना।

बात ठहरना—१ सगाई ठीक होना। २ किसी बात का निश्चय होना। उ० ठहरी क्या बात किया मना ये किसने जो आज, कोई शख्स उसने न भेजा मेरे बुलवाने को।

बात डालना—कहा न मानना। उ० बात डालने वालो से मैं कुछ नही कहना चाहूँगा।

बात तक पहुँचना—दे० 'बात पाना'।

बात दुहराना—१ पूछी हुई बात फिर कहना। २ किसी की कही हुई बात का उलट कर जवाब देना।

बात न करना—१ घमडी होना। उ० वह तो अब बात ही नही करता। २ तुच्छ समझना। उ० मैं तुमसे बात नही करता। ३ बहुत डरना। ४ नाम न लेना।

बात न पूछना—निरादर करना। उ० कौन जायगा, वह तो बात तक नही पूछता है।

बात नीचे डालना—अपनी बात का खडन होने देना। अपनी बात के ऊपर किसी और की बात होने देना। उ० वह ऐसी मुँहज़ोर है कि एक बात भी नीचे नही डालती।

बात पकडना—१ तर्क करना, वाद-विवाद करना। उ० जरा होशियारी से बात करना, वह बात खूब पकडता है। २. कथन मे दोष दिखाना। उ० आपको तो बस बात पकडना आता है।

बात पक्की करना—१ दृढ निश्चय करना। उ० बात पक्की कर लो तो मैं भी आऊँ। २ बात को अच्छी तरह निश्चय कर लेना। उ० बात पक्की करो, नही तो मैं फेर मे न पड़ूँगा।

बात पर आना—ज़िद पर आना। हठ पर उतरना। उ० बेकार मे बात पर न आओ।

बात पर जाना—१ बात का ख्याल करना। उ० आप भी लडको की बात पर जाते हैं। २ बात का विश्वास करना। उ० उनकी बात पर न जाइए, नही तो धोखा खाएंगे।

बात न पूछना—कोई महत्त्व न देना, तुच्छ समझना।

बात तौल कर कहना—समझ-बूझ कर बात कहना, सोच-विचार कर बात मुंह स निकालना।

बात पर तुल जाना—करने पर तत्पर हो जाना। उ० उसकी आदत है कि जिस बात पर तुल जाता है, उसे करके ही छोडता है।

बात पर याद आना—किसी प्रसग पर किसी अन्य प्रसग का याद आना।

बात पलटना—दे० 'बात बदलना।

बात पाना—१ असल मतलब समझ जाना। उ० वह बात पा गया है, इसी से यहाँ नही आया। २ भेद पाना। उ० मैं भी दो-एक दिन मे बात पा जाऊँगा।

बात पी जाना—दे० 'बात घूँट जाना'।

बात पूछना—१ खबर लेना। उ० वह आपकी तो बात पूछता ही नही, दूसरो की क्या बात है? २ कदर करना।

बात पेट मे डालना—बात को किसी से न कहना। उ० बात जो भेद डाल दे उसको, जो सकें डाल पेट मे डालें।

बात फूटना—१ मुँह से शब्द निकलना। २ भेद खुलना। उ० देखिए, अगर बात फूटी तो बडा बुरा हो ा।

बात फेंकना—ताने मारना, बोली बोलना। उ० उसने बात फेंक कर हम लोगों मे झगडा लगा दिया।

बात फेरना—बात पलटना, बदल कर दूसरा प्रसग चलाना, दूसरी बात करना।

बात फैलना—दे० 'बात उडना'।

बात फैलाना—१ बात बढाना। २ किसी भेद या बात को दूर-दूर तक प्रचलित करना। उ० देखिए बात फैलाइए नही।

बात बघारना—१ बातें बनाना, तत्वहीन बातें करना। २ डीग हाँकना।

बात बढना या बढ जाना—झगडा होना, बात होते-होते झगडा हो जाना। उ० पहले तो लोग, योही आपस मे कह-सुन रहे थे, पर धीरे-धीरे बात बहुत बढ गई।

बात बढा कर कहना—छोटी बात को बडी बना कर कहना।

बात बढाना—१ झगडा कराना। उ० आप बात बढा कर खुद चलते बने। २ झगडा करना। उ० बात न बढाओ, नही तो पछताओगे।

बात बदलना—१ एक बात कह कर उसके विरुद्ध दूसरी बात कहना। उ० बात बदलने वाले का विश्वास कोई नही कर सकता है। २ प्रण करके हट जाना। उ० बात बदलते तुम्हे शर्म नही आती।

बात बनाना—१ दे० 'बात गढना'। २. काम बनाना। ३ प्रतिष्ठा स्थापित करना।

बात बहना—दे० 'बात उडना'।

बात बाँधना—झूठी दलील देना। उ० बेकार मे बात न बाँधो।

बात-बात मे—हर एक बात मे। उ० तुम तो बात-बात मे अडचन डालती हो।

बात बिगाडना—१ काम बिगाडना। उ० तुमने बोल कर सारी बात बिगाड दी। २ इज्जत मे फरक लाना।

बात मन मे बैठना—बात उपयुक्त लगना। किसी बात का मन मे घर कर लेना।

बात मानना—कहा मानना। उ० मेरी बात मान लो।

बात मारना—१ घुमा-फिरा कर असल बात न कहना। उ० बात न मारो, साफ बतलाओ। २ ताना मारना।

बात मुँह पर रखना—दे० 'बात मुँह पर लाना'।

बात मुँह पर लाना—चर्चा कर बैठना, कहना। उ० किसी के सामने यह बात मुँह पर न लाना।

बात मे फी निकालना—नुक्ताचीनी करना। उ० तुम भी क्या बात मे फी निकालते हो, अरे चलने भी दो।

बात मे बात निकालना—बाल की खाल निकालना। किसी के कथन मे दोष निकालना। उ० बात मे बात निकालना आपको बहुत आता है।

बात रख लेना—कहा मान लेना। उ० उसने मेरी बात रख ली।

बात रह जाना—इज्जत रह जाना। उ० मेरी भी बात रह गई।

बात लगना—बात चभना किसी कडई बात का बुरा लगना। व्यग्य आदि की चोट लगना। उ० कल उन्हें मेरी बात लग गई, इसी से नही बोल रहे हैं।

बात लगाना—कान भरना, निन्दा करना। उ० उसने बात लगा कर हम दोनो मे झगडा करा दिया।

बात खाना—१. [illegible]

बात में रस आना—[illegible] है।

बात से बात निकलना—[illegible]

बात हवा में उड़ाना [illegible]

बात टालना—दे० [illegible]

बात [illegible] [illegible]

बात [illegible]—दे० [illegible]

बात [illegible]

बातें [illegible]

बातें [illegible]

बातें [illegible]—[illegible]

बातें [illegible]

बातें [illegible]—[illegible]

बातें [illegible]—[illegible] माना।

बातें [illegible]—[illegible]

बातें सुनाना—[illegible] [illegible] है।

बातें सुनाना—[illegible] [illegible] करेगा ?

बातों आना—दे० 'बातों में आना'।

बातों का धनी—[illegible] है, उससे टूट [illegible] नहीं सकता।

[illegible]

बादल [illegible]

बादल [illegible]

बादल [illegible]—[illegible] [illegible] रहे हैं [illegible] होगी।

बादल [illegible]—[illegible] [illegible]

बादल से बातें करना—१. [illegible] [illegible] बातें कर रहे [illegible] २. दे० 'बात होना'।

वादल मे थिगली लगाना—असभव काम करना। उ० इस वैज्ञानिक युग मे ससार वादल मे थिगली लगा रहा है। वादल मे थिगली न लगाओ, भला कही मरा आदमी जी सकता है ? यदि ऐसा हो जाय तो ईश्वर और आदमी मे फ़र्क ही क्या रहे ?

वादलो से बातें करना—दे० 'आकाश से वाते करना'।

वाधा डालना—रुकावट या व्यवधान डालना। उ० वह मेरे हर एक काम मे वाधा डालता है।

वाधा पड़ना—१ रुकावट खडी होना। उ० इस काम मे तो वडी वाधाएँ पड रही हैं, इसका पूरा होना कठिन दिखाई पड रहा है। २ हानि होना।

वाधा पहुँचना—दे० 'वाधा पडना'।

वानक वनाना—वेश धारण करना।

वान डालना—आदत डालना। उ० तबाकू पीने की वान न डालो।

वान पडना—आदत पडना। उ० शराव पीने की वान पड गई है।

वाना वदलना—वेष वदलना। उ० तुमने भी वाना बदल लिया।

वाप के जाए होना—असली होना। (एक कसम के रूप मे प्रयुक्त)।

वाप तक जाना—वाप तक को गाली देना। उ० वाप तक गये तो कुशल नही।

वाप तक पहुँचना—दे० 'वाप तक जाना'।

वाप-दादा का नाम डुवाना—पूर्वजो की प्रतिष्ठा नष्ट करना।

वाप वनाना—१ अपने पिता के बरावर समझना। इज़्ज़त करना। २ खुशामद करना। उ० वक्त पर सभी गदहे को वाप बनाते हैं।

वाबा आदम के वक्त का—वहुत पुराना, वहुत पुराने विचारो का।

वावा आदम निराला होना—सारा रवैया अलग होना।

वाम्हन होना—पोगा होना। उ० तुम तो पूरे वाम्हन हो।

वायाँ देना—१. वचा जाना। उ० रास्ते में कहीं वे दिखाई भी पडे तो वाएँ दे जाते हैं। २. जान-बूझ कर छोडना।

वायाँ पाँव पूजना—हार मानना। उ० मैं तुम्हारा वायाँ पाँव पूजता हूँ, मुझे छोड़ दो।

वायें हाथ का खेल होना—वहुत आसान काम होना।

वायें होना—प्रतिकूल होना। उ० वह आजकल मेरे वायें है, मेरी रक्षा नही कर सकता।

वायीं आँख फरकना—मर्दो के लिए अशुभ तथा औरतों के लिए शुभ होना। उ० मेरी वायीं आख फरक रही है। कुछ शुभ होगा क्या ?

वारनिश करना—चमकीला रग चढाना। उ० कुर्सी पर वारनिश कर दो तो अच्छी लगेगी।

वारह पत्थर वाहर करना—[illegible] से वाहर करना। विल्कुल वाहर करना। उ० मैं तुम्हें वारह पत्थर वाहर करके छोडूंगा।

वारह पानी का—वारह वरस का सुअर।

वारह-वाट करना या कर देना—तितर-वितर करना। अलग-अलग करना। उ० वाप की सब जायदाद लडको ने वारह-वाट कर दी।

वारह-वाट होना—१ तितर-बितर होना, बिखरना। २ सत्यानाश होना।

वारह-वानी होना—कलकरहित होना ? खरा और शुद्ध होना।

वार-वार—फिर-फिर, पुन-पुन। उ० मैंने एक वार तुम्हे मना कर दिया तो फिर वार-वार आने की क्या ज़रूरत ?

वारीक़ियाँ निकालना—नुक्ताचीनी करना। उ० वारीकियाँ निकालना हो तो मैं अपनी तसवीर नही दिखला सकता।

वारीक़ियों मे उतरना—सूक्ष्म अध्ययन करना।

वारी-वारी से—एक के पीछे एक। एक-एक करके। उ० सव लोग एकसाथ मत आओ, वारी-वारी से आओ।

वाल आना—१ वालो का जमना। २. दे० 'वाल पडना'।

वाल उतरना—मूँडन होना। उ० कल वच्चे के वाल सगम पर उतरेंगे।

वाल का कंवल बनाना—छोटी वात को वड़ी कर दिखाना। राई का पर्वत करना। बात का वतगड करना।

वाल की खाल खींचना—दे० 'वाल की खाल निकालना'।

वाल की खाल निकालना—१ वारीकी निकालना। २ नुक्ताचीनी करना। ३ वात मे वात निकालना।

वाल की नोक वरावर—तनिक भी, थोडा भी।

वाल खडे होना—डर से या सर्दी से वालो का खडा होना।

वाल न वांकना—दे० 'वाल भी वाँका न होना'।

वाल निकालना—१ दरार पडना। २ दे० 'वाल पडना'।

वाल पडना—फूट जाने के कारण वाल-जैसा निशान पडना, टूटने का चिह्न जाहिर होना। [इसका प्रयोग मोती, शीशा, नग तथा तलवार आदि के लिए होता है।] उ० शीशे मे वाल पड गये है। वाल-पडा मोती मैं क्या करूँगा?

वाल वनाना—१ हजामत वनाना। २ वालो को सॅवारना। ३ वालो को घुँघराला करना।

वाल-वरावर—१ वहुत महीन। २ तुच्छ। उ० तुम्हे वह वाल-वरावर समझता है।

वाल-वरावर न समझना—तुच्छ समझना। उ० वह अपने सामने मुझे वाल-वरावर भी नही समझता।

वाल वाँका न होना—आँच न आना। कुछ भी न होना। उ० उनका वाल वाँका न हुआ और तुम पिट गये।

वाल-वांधा निशाना उडाना—विल्कुल ठीक निशाना लगाना।

वाल-वांधी कौडी उडाना—दे० 'वाल वाँधा निशाना उडाना'।

वाल-वाल ऋणी होना—वहुत कर्ज होना।

वाल-वाल गजमोती पिरोना—एडी से चोटी तक शृ गार करना।

वाल-वाल दुश्मन होना—सवका दुश्मन हो जाना। एक भी मित्र न रह जाना।

वाल-वाल वचना—साफ वचना, आफत मे पडते-पडते वचना। उ० मैं तो वाल-वाल वचा, नही तो उस दिन ऐसा पैर फिसला था कि कुएँ मे चला ही गया होता।

वाल वेका न होना—दे० 'वाल वाँका न होना'।

वाल भी वाँका न होना—कुछ भी हानि न पहुँचना। उ० झगडे मे तो वह भी गया था, पर उसका वाल भी वाँका न हुआ।

वाल सन होना—वुढापा आना, वाल सफेद हो जाना।

वाल से वारीक होना—१ वहुत वारीक होना। २ अत्यन्त दुर्वल होना।

वाला देना—दे० 'वाला वताना'। उ० जव भी कुछ मांगने जाता हूँ, वह वाला दे जाता है।

वाला वताना—१ टालना, वहाना करना। २ धोखा देना।

वाला-वाला—१ वाहर-वाहर। उ० आप वाला-वाला चले गये, मेरे यहाँ आये भी नही। २ ऊपर ही ऊपर। ३ ऐसे कि कोई जान न पाये।

वालिश्त भर का—छोटा।

वालू की भीत—शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु। उ० विनसत वार न लागही ओछे जन की प्रीत। अवर डवर सांझ के ज्यो वालू की भीत।

वालू से तेल निकालना—असभव काम करना। उ० तुमसे कुछ लेना तो वालू से तेल निकालना है।

वावन तोले पाव रत्ती—विल्कुल दुरुस्त। उ० आपकी सभी वाते वावन तोले पाव रत्ती हुआ करती है।

वावन-वीर—वडा चतुर और चालाक। उ० आप ऐसे वावन-वीर से भला कौन पार पा सकता है?

वावन हाथ होना—वहुत साधन-सम्पन्न होना।

वावले की वड—पागल व्यक्ति की वेकार की वाते।

वासा करना—१ आराम करना। २. रात मे सोना।

वासी कढी मे उवाल आना—१. वुढापे मे जवानी की उमग आना। उ० अच्छा आप भी नाच देखेंगे? इसी को वासी कढी मे उवाल आना कहते हैं। २ किसी वात का समय एकदम वीत जाने पर उसके सम्वन्ध मे कोई वासना पैदा होना। ३ असमर्थता मे समर्थता के भाव आना।

वासी भात मे भी खुदा मियाँ का हिस्सा होना—तुच्छ वस्तु भी भगवान की कृपा से मिली, यह मानना।

वासी मुँह—विना कुछ खाये-पिये। उ० वासी मुँह दवा खानी चाहिये।

बाहबाही पाना–दे० 'बाहवाही लूटना'।

बाहबाही लूटना–लोगो की प्रशसा का पात्र बनना। उ० दूसरे का माल बाँट कर उसने खूब बाहवाही लूटी।

वाहबाही लेना–दे० 'बाहबाही लूटना'।

वाहर की हवा लगना–बाहर के वातावरण या स्थिति का कुप्रभाव या सुप्रभाव पडना।

बाहर जाना–पाखाना होने के लिए घर से बाहर जाना। उ० बाहर जा रही हूँ, जरा पानी दे दो। [इसका प्रयोग देहात की औरतो मे ही केवल होता है।]

वाहुबल तौलना–शक्ति का अदाज़ करना।

विख की गाँठ–दे० 'बिष की गाँठ'।

विख की पुडिया–दे० 'विष की गाँठ'।

विगड़ा दिल–बात-बात मे रुष्ट हो जाने वाला।

विच्छू का डंक होना–बहुत ज़हरीला या दु ख-दायी होना। उ० तुम तो बिच्छू के डक हो।

बिच्छू की तरह डँसना–बहुत कड़ुई बात कहना। उ० तुम तो बिच्छू की तरह डँसते हो, तुम्हारे पास कौन बैठेगा ?

बिच्छू होना–१ सबको काटने वाला या कष्ट देने वाला होना। २ मार कर हट जाने वाला होना।

विजय करना–१ जीतना। २ भोजन करना। उ० चलिए बिजय कर लीजिये।

विधना के अक्षर–कर्म-रेख, भाग्य। उ० विधना के अक्षर कौन मिटा सकता है ?

विधाता की लिखनी–दे० 'विधना के अक्षर'।

विधाता के अक्षर–दे० 'विधना के अक्षर'।

बिधि बैठना–१ मेल बैठना। उ० हमारी उनकी बिधि नही बैठेगी। २ सब बातो का ठीक होना। उ० फिर क्या है तुम्हारी विधि बैठ गई।

बिपत्ति उठाना–कष्ट सहना। उ० यहाँ आकर मुझे बहुत विपत्ति उठानी पड़ी है।

विपत्ति काटना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

विपत्ति झेलना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति डालना–किसी को तकलीफ मे डालना। किसी पर आफत ढाना। उ० क्यो उस अनाथ पर बिपत्ति डालते हो ?

विपत्ति भुगतना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

बिपत्ति भोगना–दे० 'बिपत्ति उठाना'।

विपत्ति मोल लेना–बेकार अपने ऊपर झझट लेना। उ० बिपत्ति मोल लेकर आपने बडी मूर्खता की।

विपत्ति सिर पर लेना–दे० 'बिपत्ति मोल लेना'।

बिरादरी से खारिज होना–दे० 'बिरादरी से बाहर होना'।

विरादरी से बाहर होना–जातिच्युत होना। वर्ग से बाहर होना। उ० जब से उसने यह नीच काम किया, उसको बिरादरी से बाहर हो जाना पडा।

बिलखीबनेवा होना–मारे-मारे फिरना, कही का न होना। उ० भगवान करें तुम बेलखीबनेवा हो।

बिल ढूँढ़ते फिरना–अपनी रक्षा का उपाय खोजते फिरना। उ० वह तुम्हारे डर से बिल ढूंढते फिर रहा है।

बिलारी के भाग छींका टूटना–सयोग से बिना परिश्रम के कोई चीज़ हाथ लगना।

बिल्ली-कुत्ते जैसे लडना–बहुत बुरी तरह लडना। उ० तुम्हारे पडोस मे लोग सदा बिल्ली-कुत्ते जैसे लडते रहते हैं।

बिल्ली के गले मे घंटी बाँधना–कठिन कार्य करना, खतरे का काम करना।

विष का बुताया हुआ–दे० 'ज़हर का बुझाया'।

बिष की गाँठ–खराबी पैदा करने वाला। बुराई की जड। उ० यही तो बिष की गाँठ है, सब झगडा इन्ही का खडा किया हुआ है।

बिष की पुडिया–दे० 'विष की गाँठ'।

बिस्मिल्ला ही ग़लत होना–शुरू से ही भूल होना, प्रारभ मे ही गडबड होना।

बिस्तर गोल करना–बिदा होने के लिए या जाने लिए प्रस्तुत होना।

बीच खेत–खुले मैदान, सबके सामने। उ० बीच खेत वह उसे कत्ल करके भाग गया।

बीच की दीवार होना–मनमुटाव का कारण होना।

बीच पडना–१ बदल जाना। परिवर्तन होना। उ० कोटि जतन कोऊ करे परे न प्रकृतिहिं बीच। नल बल जल ऊँचे चढ़ै अत नीच को

नीच। २ मध्यस्थ बनना। उ० जब वह बीच पडा है तो अवश्य झगडा तय हो जायगा।

बीच बाज़ार मे कपड़े उतरवाना—सबके सामने नगा करना। बहुत बेइज्ज़त करना। उ० बीच बाज़ार मे कपडे उतरवा कर न छोडा तो मुझे असल न समझना।

बीच मे कूदना—व्यर्थ टाँग अडाना। उ० बीच मे न कूदो, नही ठीक न होगा।

बीच मे पडना—दे० 'बीच मे कूदना'।

बीच मे रख कर कहना—१ कसम खाना। उ० मैं आपको बीच मे रखकर कहती हूँ कि सर्वदा आपका कहना मानूंगी। २ मध्यस्थ, बिचवई या तिसरइत मान कर कहना। उ० उन्हें बीच मे रख कर कहो तो मैं मान लूं।

बीच रखना—१ भेद रखना। उ० कीन्ह प्रीति कछु बीच न राखा। लछिमन राम-चरित सब भाखा।

बीजारोपण करना—प्रारम्भ करना, प्रारभिक नीव रखना, शुरुआत करना।

बीडा उठाना—१ कोई काम करने का सकल्प करना। उ० उसने इस काम को करने का बीडा उठाया है। २ मुस्तैद होना।

बीनी पाक करना—नाक साफ करना।

बीस पडना—१ मजबूत होना, बलिष्ठ होना। उ० गामा इमामबख्श से बीस पडते हैं। २ अधिक अच्छा होना। उ० यह पुस्तक बीस पडती है।

बीस बिस्वा—निश्चय, निस्सदेह। उ० बीस बिस्वे समझो, हम सबेरे ही पहुँच जायँगे।

बीस से उन्नीस होना—तुलना मे कुछ घट कर होना।

बीस होना—बलशाली होना। बढ कर होना। उ० वह तुमसे बीस है।

बुक्का-फाड़ कर रोना—फूट-फूट कर जोर से रोना।

बुख़ार दिल से निकालना—दिल का गुबार या गुस्सा निकालना। उ० बुखार दिल से निकालो तो हम मिलें तुमसे।

बुझती आग मे घी देना—शात होते हुए क्रोध को किसी बात से पुन भडका देना।

बुढ़ापे की लकड़ी—वृद्धावस्था का सहारा।

बुत्त देना—१ धोखा देना। २ बहाना करना।

बुत्ता बताना—दे० 'बुत्ता देना'।

बुद्धि का कोण खाली होना—बेवक़ूफ होना।

बुद्धि घास चरने चला जाना—विवेकहीन होना, विचार करने मे असमर्थ होना।

बुद्धि पर परदा पडना—बुद्धि मंद होना। उ० उसकी तो बुद्धि पर परदा पडा है, वह क्या खाकर बात सुलझायेगा ?

बुरा फँसना—१ कष्ट मे पडना। आफत मे पडना। उ० इस बार ऐसा बुरा फँसा हूँ कि कुछ कहते नही बनता। २ बेकार मे फँसना। उ० आप तो बुरे फँसे।

बुरा मानना—१ बुरा मान जाना, नाराज़ होना। उ० सच कहने मे बुरा मानने की कौन बात ? २ बैर रखना, खार खाना। उ० क्यो बुरा माने बैठे हो ?

बुरे रास्ते पर चलना—गलत काम करना।

बुलबुल पालना—बीमारी पालना, झझट पालना। उ० रोज़ाना सिनेमा देखने जाते हो, यह कहाँ की बुलबुल पाल ली तुमने ?

बुलबुल फँसाना—दे० 'शिकार फँसाना'।

बूंदाबांदी होना—बहुत थोडा-थोडा पानी बरसना। उ० बूंदाबांदी हुई है, कोई खास पानी नही बरसा है।

बूंदें गिरना—थोडा-थोडा पानी बरसना। उ० आज सुबह ही से बूंदे गिर रही हैं।

बूंदें पड़ना—दे० 'बूंदें गिरना'।

बेंत की तरह कांपना—बहुत अधिक डरना, थर-थर कांपना। उ० उसका लडका मुझे देखते ही बेंत की तरह काँपता है।

बेगार टालना—बिना मन के कोई काम कर देना। उ० बेगार टालने से न करना ही अच्छा है।

बेच खाना—खो देना, गँवा देना। उ० बाप-दादो की सब जायदाद उसने बेच खायी।

बेज़बान होना—बहुत सीधा, अधिक न बोलने वाला। उ० वह बहुत बेज़बान आदमी है।

बेजान होना—उत्साह या शक्ति से हीन होना।

बेटा-बेटी—औलाद, सतान। उ० उसके एक भी बेटा-बेटी नही है।

बेडा पार लगाना—दे० 'बेडा पार करना'।

बेडा पार करना—१ किसी को सकट से पार लगाना। मझधार से उबारना। उ० इस

समय तो भगवान ही बेडा पार करेगा। २ मुक्त करना, स्वर्ग देना। उ० अपना किया ही बेडा पार करता है।

बेड़ा पार होना–१ कष्ट से छुटकारा मिलना। उ० बडी कोशिश करने के बाद उसका इस विपत्ति से बेडा पार हुआ है। २ मुक्ति होना। ३. काम खतम होना। उ० चलो, यह तो बेडा पार हुआ।

बेतुकी हाँकना–बेसिर-पैर की बात कहना। उ० आप ख़ूब बेतुकी हाँकते हैं, भला वह ऐसी बाते कह सकता है।

बे-ते करना–किसी को तुच्छ समझते हुए उसके साथ अशिष्टतापूर्वक बाते करना। रेरी मारना। बदतमीज़ी से बात करना। उ० बड़े हो तो अपने घर के। अगर बे-ते किया तो जबान खीच लूँगा।

बे-नकेल के ऊँट होना–किसी के कहने मे न होना।

बे-पर की उड़ाना–गप्प हांकना।

बेपेंदी का लोटा–१ वह सीधा-सादा आदमी जो दूसरो के कहने ही पर चले। उ० आप तो बेपेंदी के लोटे हैं, आखिर कुछ समझ भी है या नही ? २ जिसका कोई ठिकाना न हो। बिना सिद्धात का आदमी। ढुलमुल-यकीन। उ० वह तो बेपेंदी का लोटा है, उसके समर्थन का क्या विश्वास ?

बेभाव की पडना–१ बहुत अधिक मार पडना। उ० उस पर तो ऐसी बेभाव की पडी कि अब तक बेहोश है। २ खूब फटकार पडना। उ० काम तो थोडा ही बिगडा पर बेभाव की पड ही गई।

बेर देकर मोती लेना–बेवकूफ बनाना घटिया वस्तु देकर बढिया वस्तु लेना। उ० तुमसे भगवान बचाये, तुम तो बेर देकर मोती लेने वाले हो।

बेल फैलना–१ किसी चीज की उन्नति या विकास करना। उ० अब तो बेल फैल गई आनँद फल होई। २ वश-वृद्धि होना। उ० उनकी बेल खूब फैल रही है।

बेल बढना–वश-वृद्धि होना। उ० भगवान करे, आपकी बेल बढे।

बेसतर करना–१ बेइज्जत करना। २ नगा करना। उ० क्यो बेचारे को बेसतर कर रहे हो ?

बेवक्त की शहनाई बजाना–बेवक्त का काम करना। कोई काम ऐसे समय करना जब उसे करना उचित न हो। उ० क्या बेवक्त की शहनाई बजा रहे हो ? पडोसी का लडका मरा है और तुम्हे रेडियो सुनने की सूझी है।

बे-सिर-पैर की बात कहना–अनहोनी या असभव बात कहना, ऊलजलूल कहना। उ० फिर गए सिर जब हमारे सिर धरे, बात बे-सिर-पैर की कहने लगे।

बेहयाई का जामा ओढना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना'।

बेहयाई का जामा पहनना–निर्लज्ज हो जाना। उ० उस औरत ने तो बेहयाई का जामा पहन लिया है। आज उन गुडो के साथ खुले आम घूम रही थी।

बेहयाई का बुरका ओढना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना।'

बेहयाई का बुरका पहनना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना'।

बेहयाई की चादर ओढना–दे० 'बेहयाई का जामा पहनना'।

बैठ कर खाना–बिना कुछ काम किये बैठे बैठे खाना।

बैठने का ठिकाना करना–जीविका का सामान्य उपाय करना।

बैठते-उठते–हरदम, सदा। उ० वह बैठते-उठते राम-नाम जपता है।

बैठी रहना–१ बिना ब्याहे रह जाना। २ प्रतीक्षा मे रहना।

बैठे-बिठाये–१ निरर्थक, अकारण। उ० बैठे-बिठाये यह झगडा मोल ले लिया। २ अचानक। उ० बैठे बिठाये यह आफत कहाँ से आ पडी ? ३ बिना परिश्रम के, आसानी से। उ० बैठे-बिठाये १०० रु० मिल गये।

बैठे रहो–१ अलग रहो। उ० तुम बैठे रहो, यह काम हो जायगा। २ शात रहो। उ० बैठे रहो, नही तो काम बिगड जायगा। ३ आराम से रहो। उ० तुम बैठे रहो, मैं ही इसके लिए काफी हूँ।

बैर करना–१ दुश्मनी करना। उ० उनसे बैर करके क्यो आफत मोल लेते हो ? २ ईर्ष्या रखना।

बैर काढना–बदला लेना। उ० क्षत्रिय और साँप बारह वर्ष तक का बैर काढते हैं।

वैर ठानना—दे० 'वैर करना'।

वैर डालना—दुश्मनी पैदा करना। उ० उन दोनो मे किसी तरह वैर डालो तो अपना काम बन जाय।

वैर निकालना—दे० 'वैर काढना'।

वैर पडना—दुश्मनी होना। उ० आजकल दोनो मे वैर पडा है।

वैर बिसाहना—झगडा मोल लेना। जान-बूझकर झगडा लेना। उ० वैर विसाहा है तो परिणाम के लिए भी तैयार रहना।

वैर मानना—१ दुश्मनी रखना। २ बुरा मानना। उ० इतनी-सी वात पर उनसे वैर मान गये।

वैर मोल लेना—दे० 'वैर विसाहना'।

वैर लेना—१ दुश्मनी रखना। २ वदला लेना। उ० होशियार रहना वह वैर लिए विना शात नही वैठने का।

वैल के-से दीदे निकालना—विना कुछ समझे यो ही ताकते रहना।

वैल से दूध निकालना—जहाँ पर कुछ प्राप्ति की आशा न हो, वहाँ से भी कुछ निकालने की चेष्टा करना असम्भव कार्य करना।

वैल होना—मूर्ख होना। उ० वह तो वैल है, उसे शादी ठीक करने के लिए क्यो भेजते हो?

वैस चढना—जवानी जाना।

वैसाख का गदहा होना—अत्यन्त मोटा होना। उ० यार, तुम तो दस ही दिन मे वैसाख के गदहे हो गए! [कहा जाता है कि वैसाख मे गदहे इसलिए मोटे हो जाते हैं कि गर्मी के कारण पृथ्वी पर घास की कमी देख कर वे सोचते हैं कि सब घास हम चर गए।]

वैसाखी छोडना—सहारा छोडना।

वोझ उतरना—१ किसी कठिन काम से छुट्टी पाना। उ० आज परीक्षा खतम हो गई, बडा भारी बोझ उतर गया। २ पाप कटना।

वोझ उठाना—कठिन काम की जिम्मेदारी लेना।

वोझ उतारना—१ चिन्ता दूर करना। उ० धीरे-धीरे महाजन का रुपया देकर अपना वोझ उतार दो। २ वेगार टालना। उ० यह आप काम कर रहे हैं या केवल वोझ उतार रहे हैं। ३ हलका या शांत करना। ४ पाप काटना।

वोटी-वोटी काटना—१ शरीर के खड-खड करना। उ० दुश्मनो ने उसे बोटी-वोटी काट कर फेंक दिया। २ वहुत कष्ट से मारना। उ० वोटी-वोटी मत काटो। एक ही वार मार डालो।

वोटी-वोटी फडकना—जोश आना। उ० उसकी कविता सुन कर वोटी-वोटी फडकने लगी।

वोतल ढलना—खूब शराब पिया जाना। उ० वहाँ वोतल ढल रही है और आप इवादत का नाम ले रहे हैं।

वोया हुआ काटना—करनी का फल पाना।

वोरिया-वधना उठाना—जाने की तैयारी करना। उ० तुम्हारा काम हो गया हो तो वोरिया-वधना उठाओ।

वोरी वांधना—चलने की तैयारी करना। उ० वोरी वांध लो। अव यहाँ से चला जायगा।

वोल उठना—एकाएक कुछ कहने लगना। उ० वह बीच सभा मे कुछ वोल उठा।

वोल जाना—१ मर जाना। उ० एक ही लाठी मे वह वोल गया। २ खतम हो जाना। उ० मिठाई वोल गई और मँगा लो। ३ थक जाना। ४ दीवाला निकलना। उ० वह वैक तो वोल गया।

वोलती मारी जाना—मुँह से शब्द न निकलना। उ० साहव के सामने जाते ही उसकी वोलती मारी जाती है, और यो ऐसी वात करता है, जैसे साहव का साहव हो।

वोलवाला रहना—१ सम्मान रहना। रोव-दाव रहना। उ० आजकल उसका यहाँ खूव वोल-वाला है। २ धाक रहना। रोब रहना। ३ प्रसिद्धि रहना।

वोलवाला होना—रोव या दवदवा होना। उ० उसका यहाँ खूव वोलवाला है।

वोल मारना—ताना देना। व्यग्य करना। उ० क्या वोल मारते हो, मेरा भी कभी समय पलटेगा।

वोली कसना—दे० 'वोल मारना'।

बोली छोडना—दे० 'वोल मारना'।

बोली बोलना—दे० 'वोल मारना'।

वोली मे मिठास घोलना—अत्यन्त मधुर बातें वोलना।

वोह देना—नहलाना। उ० हाथी को वोह दे दो।

वोहनी होना—सवेरे पहले-पहल विक्री होना। उ० वोहनी हो जाय तो उधार ले **जाना**

बोल लेना–गोता लगाना। उ० हाथी बोह-ले रहा है।

बौखला जाना–हैरान हो जाना, परीशान हो जाना। उ० तुम ज़रा-ज़रा-सी बात पर बौखला क्यो जाते हो, ज़रा धीरज से काम लिया करो।

बौछार करना–बहुत देना। खूब फेंकना या लुटाना। उ० वह गालियो की बौछार कर रहा है। रुपयो की बौछार न करो।

बौछार पड़ना–चारो ओर से (सबकी) फटकार पड़ना।

बौने का चांद पकड़ना–छोटे व्यक्ति का बड़ा काम करना।

बौरा जाना–दे० 'बौखला जाना'।

व्यवस्था देना–दे० 'व्यवस्था देना'।

व्योहार चलाना–सूद पर रुपया देना। उ० आजकल व्योहार चलाने का काम बहुत कम हो गया है।

व्योंत खाना–ठीक हिसाब-किताब बैठना। उ० व्योंत खाये तो मेरा भी प्रबन्ध कर देना।

व्योंत बांधना–किसी तरह प्रबन्ध करना। उ० मेरे लिए भी दस रुपये का व्योंत बाँध दो।

ब्रह्मांड चटकना–खोपडी फटकना। उ० सिर के दर्द से मेरा ब्रह्माड चटक रहा है।

ब्रह्मा का अपने हाथो से सँवारना–अत्यन्त कुरूप या सुन्दर होना।

ब्रह्मा की शाम होना–प्रलय निकट होना।

ब्रह्मा के अक्षर–दे० 'बिधना के अक्षर'।

ब्रह्मा बनना–किसी काम को करने वाला या बनाने वाला बनना। उ० जिस काम के ब्रह्मा बनना चाहते हो, उसमे कुछ करोगे भी।

ब्राह्मण और बाम्हन का अतर होना–ऊपर से थोडा और भीतर से बहुत अतर होना। उ० तुम दोनो मे ब्राह्मण और बाम्हन का अतर है।

भ

भंकारी मारना–बहुत साधारण और छोटा क़ाम करना। उ० भंकारी मारकर आप अपने को बहुत बहादुर समझते हैं।

भग के भाडे मे जाना–बेकार जाना। उ० सारा परिश्रम भग के भाडे मे गया।

भग खाये होना–नसे की सी या पागलपन की बातें करना, उलटे-सीधे काम करना।

भंग छनना–भग पिया जाना। उ० वहाँ तो भग छनती है, तुम जैसे सच्चे साधुओ का गुज़र नही।

भग छानना–भाँग पीना। उ० वह खूब भग छानता है।

भटा-सा उडा देना–एक ही बार मे दो भाग कर देना। उ० उसने एक ही लाठी मे उसका सिर भटे-सा उडा दिया।

भंडफोड मचाना–तोड-फोड करना। उ० यहाँ भंडभोड न मचाओ।

भड होना–बरबाद होना। उ० तुम लागो की लापरवाही से मारा धन भड हो गया।

भडा फूटना–भेद खुलना। उ० भडा फूटते ही सब डाकू पकड लिये गये।

भंडाफोड़ करना–दे० 'भडा फोडना'।

भडा फोडना–भेद खोलना। उ० इस चोरो का भडा न फोडना, नही तो सब-लोग फँस जायँगे।

भडारा करना–बहुत से साधुओ को भोजन कराना। उ० महथ भडारा कर रहे हैं

भडारा देना–दे० 'भडारा करना'।

भँवर की नाव होना–घूम-फिर कर उसी स्थान पर बने रहना।

भँवर मे डालना–फेर मे डालना। उ० भँवर मे डालूंगा तो हुलिया बिगड जाएगी।

भँवर मे पडना–चक्कर मे पडना। उ० अभी तो बहुत बहकते हो, पर जब भँवर मे पडोगे तो छठी का दूध याद आ जायगा।

भखना या भख करना–खाना। उ० तुम्हे तो कभी सतोप ही नही होता है, जब देखो कुछ न कुछ भखते ही रहते हो।

भगत बनना–भला बनने का ढोंग करना।

भगल करना–नकल मचाना। उ० बीमार नही है, भगल कर रहा होगा।

भगल गांठना–१ छल-कपट करना। २ ढ़ाग करना। ३ इद्र-जाल या बाजीगरी करना।

भगल निकालना—दे० 'भगल गाँठना'।

भगल मचाना—दे० 'भगल करना'।

भगवान के घर जाना—मर जाना।

भगवा पहनना—संन्यास लेना।

भगदड़ मचना—किसी डर या दुर्घटना आदि से लोगों का इधर-उधर भागना। उ० हाथी के बिगड़ते ही मेले मे भगदड मच गई।

भगीरथ प्रयास करना—जी-जान से प्रयत्न करना।

भगा ले जाना—किसी की स्त्री को अपने साथ चुपके से ले भागना।

भटका फिरना—१ खोज मे इधर-उधर मारे-मारे भटकना। उ० क्या भटके फिरते हो। अब वह नही मिलेगा। २ गुमराह फिरना। गलत रास्ते पर जाना। उ० वह क्या साधना करेगा, वरसो से भटका फिरता है।

भठ देना—बुरी जगह फेंकना। उ० आपने अपनी लड़की भठ दी।

भट्ठी दहकना—किसी का कारवार जोरो पर होना। उ० आजकल उसकी भट्ठी खूब दहकी हुई है। उसका क्या पूछना है?

भट्ठी में फेंकना—नष्ट करना। वरबाद करना। दूर करना। उ० भट्ठी मे फेंको, ऐसी वातो को।

भट्ठी-सा—बहुत दुःखदायी।

भड़क उठना—१ नाराज होना। २ आन्दोलन का उठना। ३ आग का तीव्र होना।

भड़ास निकालना—दिल का गुबार निकालना।

भद्रा लगाना—अडचन पैदा करना। उ० शुभ कार्य में भद्रा लगाना ठीक नही।

भनक पड़ना—किसी तरह पता चल जाना। सुनगुन मिलना। उ० हमारे कान मे पहले ही इसकी कुछ भनक पड गई थी।

भभकी देना—घुड़की देना। उ० आपके भभकी देने से मैं नहीं डर सकता।

भभकी में आना—डर जाना, घुडकी से डर कर वश में आना। उ० तुम्हारी भभकी मे आकर उसने अपना बहुत नुकसान कर दिया।

भभूका बनना—दे० 'भभूका होना'।

भभूका लाल होना—बहुत क्रोधित होना। उ० वह तो आज भभूका लाल है।

भभूका होना—क्रोधित होना। उ० मेरी बात सुनते ही वह भभूका हो गया और मारने दौडा।

भभूत रमाना—१ साधुओ की तरह राख लगाना। उ० आजकल भभूत रमाने वाले सैकडो मिलते हैं। २. साधू होना, ससार से विरक्त होना। उ० लडका मरा, पत्नी मरी, अव जीवन मे कोई रस नही, भभूत रमाना ही मेरे लिए सर्वोत्तम है।

भभ्भड़ पडना—भगदड मचना। उ० सेनापति के मरते ही फौज मे भभ्भड पड गया।

भय खाना—भयभीत होना, डरना। उ० भय खाने की क्या वात है, मैं तो यहाँ हूँ ही।

भरती का—व्यर्थ का, जगह पूरा करने के लिए। उ० यह सब भरती की ईंटें है। भरती के शब्द कविता को विगाड देते हैं।

भर नजर देखना—अच्छी तरह देखना। उ० उसे मैं भर नजर देख लूंगा तो मुझे सतोष हो जायगा।

भर नींद सोना—दे० 'नीद भर सोना'।

भर पाना—चुकता होना। उ० रुपया भर पाने पर मैं भी दस्तखत कर दूँगा।

भरम खुलना—गुप्त रहस्य खुलना। भेद खुलना। जवतक भरम वना है, ठीक है, खुलने पर वह कौडी का तीन हो जायगा।

भरम खोना—विश्वास गँवाना। उ० इतने बडे आदमी का भरम खोना ठीक नही है।

भरम गँवाना—१ अपना भेद खोलना। उ० वेकार मे आप अपना भरम गँवाकर आपत्ति मे पड गये। २ इज्जत गँवाना।

भरे घर का चोर—किसी वस्तु की अधिकता देख कर हतबुद्धि हुआ व्यक्ति।

भरम बिगाडना—१ भेद खोलना। उ० आने के साथ ही भरम न बिगाडो, कुछ वात हो लेने दो। २ बनी-बनाई प्रतिष्ठा भग करना।

भरमार कर देना—ज्यादती करना। ढेर लगा देना। उ० मैं तो ऐसा-वैसा समझता था, पर उसने तो वरात मे सामान की भरमार कर दी।

भरा-पूरा—सब प्रकार से पूर्ण। उ० ईश्वर सर्वदा भरा पूरा रखे।

भरी जवानी—पूर्ण यौवनावस्था।

भरे मुँह गिरना—१ आतुर होना। २ मुँह के बल गिरना।

भरोसा आना—विश्वास होना।

भर्राया स्वर—रुलाई या करुणा के कारण भारी हुआ स्वर।

भर्रे पर चढ़ाना—दम पर चढाना, झाँसे मे लाना। उ० भर्रे पर चढा कर उसे भी शराव पिला दी।

भला-चंगा—शरीर से स्वस्थ। उ० वह भला-चगा है, बीमार तो नही है।

भला-बुरा—हानि और लाभ। उ० तुम अपना भला-बुरा समझ लो, नही तो बाद मे पछताओगे।

भले ही—परवाह नही, चाहे जो हो। उ० वे भले ही मुझसे न बोलें, पर मैं उनके यहाँ जाने से नही रुक सकता।

भविष्य काला होकर सामने नाचना—भविष्य अधकारमय जान पडना।

भसुर होना—ऐसा होना जिसे छूआ न जा सके। उ० यह घडी तुम्हारे लिए भसुर है क्या, कि नही छू रहे हो?

भस्म होना—१ जल जाना। उ० मेरा घर आग लग जाने से भस्म हो गया। २ बर्बाद हो जाना, नष्ट हो जाना। उ० नशेबाजो मे उसका धन भस्म हो गया।

भाँग खा जाना—होश मे न रहना। पागल की तरह हो जाना। उ० गाँव का गाँव भाँग खा गया है।

भाँग छानना—भाँग की पत्तियो का पीस कर नशे के लिए पीना। उ० भाँग छानने वालो से मुझे बडी नफरत है।

भाँजी मारना—शिकायत करना। उ० दूसरो की भाँजी मारने मे तुम्हे क्या आनन्द आता है?

भाँडा फूट जाना—गुप्त वात प्रकट हो जाना, भेद खुल जाना। उ० जब षड्यत्र का भाँडा फूट जायगा तो वडी खलवली मचेगी।

भाँड़े भरना—पछताना। उ० काम विगड जाने पर भाँडे भरना वेकार है।

भाँडे मे जी देना—किसी पर दिल लगा होना। उ० भाँडे मे जी दिए हो क्या, जो ऐसी दशा हो गयी है?

भाँडे मे जी होना—किसी पर दिल लगा रहना। उ० को तुम उत्तर देय हो पाँडे। सो वोले जाको जिव भाँडे।

भाँति-भाँति के—अनेक प्रकार के। उ० उनके निमत्रण मे भाँति-भाँति के पकवान वनाए गए थे।

भाग खड़ा होना—१ हार जाना, मैदान छोड़ देना, वरावरी न कर सकना। उ० तुम्हें देखते ही लडाई के मैदान से वह भाग खडा होगा।

भाग-दौड़ की ज़िन्दगी—अत्यन्त व्यस्त जीवन।

भागते की लँगोटी—डूवते रुपये का कुछ हिस्सा, जाती चीज़ का कुछ हिस्सा। उ० भागते की लँगोटी मिल जाय, तो वही वहुत है।

भाग्य की लिखनी—दे० 'विधाता की लिखनी'।

भाग्य के अक्षर—दे० 'विधना के अक्षर'।

भाग्य अंधेरा होना—वदकिस्मती होना।

भाग्यलक्ष्मी सो जाना—भाग्य का प्रतिकूल हो जाना।

भाड़ खाना—हराम की कमाई खाना।

भाड़ झोकना—१ तुच्छ काम करना। उ० उसे तो भाड झोकने का भी शऊर नही है। २. व्यर्थ समय गँवाना। उ० वहाँ क्या इतनी देर भाड झोकते रहे? ३ भाड मे ईंधन डालने का काम करना।

भाड मे झोकना—दे० 'भाड मे डालना'।

भाड मे डालना—१. नष्ट करना। उ० भाड मे डालो या रखो, मुझे इससे क्या काम? २ जलाना। ३ फेंकना। उ० भाड़ मे डालो इसे, मुझे अव कोई काम नही।

भाड मे पडना—दे० 'चूल्हे मे पडना'।

भाड़ लीप कर हाथ काला करना—वुरा काम करके वुराई पाना।

भाड़ा देकर वह जाना—जिस काम पर पैसा लगाया जाय, उसका खराव हो जाना। उ० भाडा देकर वह जाना किसे स्वीकार होगा? मैं ऐसे काम पर एक पैसा नही खर्च करूँगा।

भाडे का टट्टू—१ मज़दूरी पर काम करने वाला। उ० कितना भी काम करेगा तो आखिर भाडे का ही तो टट्टू है, घर के आदमी की और वात होती है। २ विना सिद्धान्त का आदमी। उ० उसका कोई सिद्धान्त थोडे है, वह तो भाडे का टट्टू है। तुम चार पैसे दे दो तो तुम्हारा भी प्रचार कर देगा।

भादों का भैंसा होना—अत्यन्त मोटा होना। उ० तुम तो भादो के भैंसे होते जा रहे हो।

भादो का मेढक होना—अत्यन्त मोटा होना।

भाप लेना—१ वफारा लेना। उ० भाप ले तो फोडा फूट जाय। २ अनुमान से जान लेना। उ० उसने तुम्हारी चाल भाप ली, तभी तो नही आया।

भाभड-मट्टी—दे० 'भाभस-मट्टी'।

भाभस-मट्टी—कम उम्र मे अधिक उम्र का लगने वाला शरीर। उ० तुम्हारी तरह उसकी भाभस मट्टी नही है।

भारी पत्थर चूम कर छोड देना—किसी ऐसे काम के ख्याल को दिल से निकाल देना, जिससे मतलब न पूरा हो। उ० हमने उस सगदिल से मुँह मोडा। भारी पत्थर था चूम कर छोडा।

भारी पैर होना—गर्भ रहना, गर्भवती होना। उ० भारी पैर होने की सबसे बडी निशानी यह है कि मिचली आने लगती है।

भारी लगना—न रुचना, भारस्वरूप ज्ञात होना। उ० मेरा आना भारी लगता हो तो न आया करूँ।

भारी होना—मुश्किल होना। उ० यह बहुत भारी काम है, तुमसे न होगा।

भाव उतरना—किसी चीज़ का दाम घट जाना। उ० आजकल गल्ले का भाव उतर गया है।

भाव करना—दे० 'भाव-ताव करना'।

भाव का भूखा—प्रेम चाहने वाला।

भाव गिरना—दे० 'भाव उतरना'।

भाव चढना—दाम बढ जाना। उ० आजकल कपडे का भाव चढ गया है।

भाव-ताव करना—दाम ठीक करना। उ० भाव-ताव करके सौदा ले लो।

भावनाएँ सोई होना—इच्छाएँ दवी होना।

भाव बताना—१ कोई काम न करके केवल हाथ-पैर मटकाना या नखरा दिखाना। २ भाव समझाना, नृत्य आदि मे विना वोले वात स्पष्ट करना, हाथ आदि से भाव स्पष्ट करना। उ० वह नाचना तो जानती है, पर अभी भाव बताने की कला मे कच्ची है।

भावो को ताडना—आशय समझ जाना। उ० वह ज्योही मेरे पास आया, मैं उसके भावो को ताड गया।

भिगो-भिगो कर मारना—१ जूतियाँ भिगो कर मारना ताकि चोट ज्यादा लगे। २ डाँटना-फटकारना। ३. वेइज्जती करना। ४ शर्मिदा करना।

भिड के छत्ते छेडना—किसी खौफनाक या डरावने से वैर करना। उ० उस पर नालिश करके भिड के छत्ते न छेडो।

भीग कर देखना—प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखना।

भीगी विल्ली होना या हो जाना—बिलकुल चुप हो जाना। दब कर रहना। उ० पिता जी के सामने तो यह भीगी बिल्ली हो जाता है, पर मुझे कुछ गिनता ही नही।

भीड चीरना—भीड को हटा कर जाने का रास्ता बनाना। उ० भीड को चीरता हुआ वह आगे बढ गया।

भीड छँटना—भीड न रह जाना। भीड का हट जाना। उ० मेले मे भीड छँट गई है।

भीड पडना—मुसीबत पडना।

भीत के विना चित्र बनाना—विना सिर-पैर की वात करना। असभव बात करना। उ० भीत के विना चित्र न बनाओ, कुछ इस दुनिया की वात करो।

भीत मे दौडना—अपनी शक्ति से ज्यादा काम करना। उ० भीत मे न दौडो, नही तो बीमार पड जाओगे।

भीतर का कुआँ—ऐसी उपयोगी चीज जिससे कोई लाभ न उठा सके। उ० तुम्हारा सारा ज्ञान मेरे लिए भीतर का कुआ है।

भीतर की आँखें अंधी होना—आन्तरिक अनुभूति शून्य होना, अदूरदर्शी होना।

भीतर पैठकर देखना—असली बात मालूम करना। उ० भीतर पैठ कर देखने पर मालूम होगा कि वह कैसा आदमी है?

भीतर-ही-भीतर—१ मन ही मन। उ० भीतर ही भीतर वह मुझसे जलता है। २ चुपके-चुपके। उ० भीतर-ही-भीतर उसने सारा काम कर लिया और मुझे वतलाया तक नही।

भीम का हाथी—जाकर न लौटने वाला। उ० तुम तो भाई, भीम के हाथी हो। तुम्हे मैं कहीं नही भेज सकता।

भीम होना—बहुत बहादुर और विशालकाय होना। उ० वह तो आजकल भीम हो गया है।

भुगत लेना—निपट लेना। उ० आप चुप रहे, मैं उनसे भुगत लूंगा।

भुज मे भरना—दे० 'आलिंगन करना'।

भुजा उठा कर कहना—१ घोषणा करके कहना। २ प्रतिज्ञा करके कहना। उ० मैं हाथ उठा कर कहता हूँ कि तुम्हारा खून करके रहूँगा।

भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना। उ० मैं भुजा उठाता हूँ कि इस काम को अवश्य करूँगा।

भुजाओं मे बांध लेना—कस कर आलिंगन करना।

भुजाएँ फड़क उठना—युद्ध के लिए उत्साहित होना।

भुजा ठोक कर लड़ना—वीरतापूर्वक ललकार कर लड़ना।

भुट्टे-सा उड़ाना—साफ काट डालना। उ० उसने सैकडो का सिर भुट्टे-सा उडा दिया।

भुन-भुन करना—१ कुढ कर अस्पष्ट स्वर मे कुछ कहना। उ० क्या भुन-भुन कर रहे हो, जो कहना हो साफ कहो। २ धीरे-धीरे बोलना। ३ नाक मे बोलना।

भुरकुस निकलना या निकल जाना—१ चूर-चूर होना। उ० मिठाई का तो भुरकुस निकल गया। २ किसी काम का न रह जाना, बर्वाद या नष्ट हो जाना। उ० मार के मारे उसका भुरकुस निकल गया है।

भुरकुस निकालना—१ नष्ट कर देना। उ० डाकुओ ने तो उनका भुरकुस निकाल लिया। २ मारते-मारते बेदम करना। उ० पुलिस ने तो चोर का भुरकुस निकाल लिया। ३ बेकार कर देना। उ० तुमने तो मेरी साइकिल का एक ही बार मे भुरकुस निकाल दिया।

भुरता करना या कर देना—मसल कर या दबा कर एक मे एक मिला देना। उ० तुमने तो रसगुल्लो को भुरता कर दिया।

भुस के मोल मलीदा होना—कुछ कदर न होना। उ० अभी क्यो घबराते हो, तुम जैसे बदमाश का तो भुस के मोल मलीदा होगा।

भुस भरवाना—बहुत कडी सज़ा देना। उ० अगर फिर कभी ऐसी शरारत करोगे तो भुस भरवा दूंगा।

भुस मे आग लगा कर तमाशा देखना—झगडा करा कर अलग हो जाना और परिणाम का मज़ा लेना।

भूँज या भून डालना—बहुत तंग करना।

भूँजी भाँग न होना—कुछ न होना, बिल्कुल गरीब होना। उ० उसके पास तो भूँजी भाँग भी नही है।

भूख-प्यास चली जाना—खाने-पीने का होश भी न रहना, आत्म-विस्मृत हो जाना।

भूख मरना या मर जाना—भूख का समाप्त हो जाना। उ० नावक्त होने से मेरी भूख मर जाती है।

भूख लगना—१ खाने की इच्छा होना। उ० जब भूख लगेगी तो मैं खा लूंगा। २ किसी प्रकार की इच्छा होना।

भूख से आँख नाचना—भूख से आँखें निकली पडना।

भूखा रहना—भोजन न करना। उ० वह बीमार है, इसलिए आज भूखा रहेगा।

भूखे-प्यासे—बिना खाये-पिये। उ० वह भूखे-प्यासे अब तक काम कर रहा है।

भूखो मरना—खाना न मिलने का दुःख सहना। उ० इस महँगी मे लाखो आदमी भूखो मर रहे हैं।

भूड़ के खेत पर गोता मारना—ऐसे काम से कुछ पाने की आशा करना, जहाँ से प्राप्त होना असम्भव हो।

भूत चढना—१ बहुत हठ होना। उ० तुम्हें तो हर एक बात का इसी तरह भूत चढ जाता है। २ कुपित होना। उ० उनसे मत बोलो, इस समय उन पर भूत चढा है। ३ शामत सवार होना। उ० तुम पर भूत चढा है तो मैं उतार दूं।

भूत बन कर लगना—किसी तरह पीछा न छोडना। उ० तुम तो भूत बन कर लग रहे हो। मैं यदि ऐसा जानता तो तुमसे मैत्री ही न करता।

भूत बनना—१ नशे मे चूर होना। उ० वह भाँग छान कर भूत बन गया है। २. बहुत क्रोध मे होना। उ० मेरी बात सुनकर तो वह भूत बन गया। ३ किसी काम मे पूर्ण लीन होना। उ० वह जिस काम मे लगता है, भूत बनकर लगता है।

भूत सवार होना—दे० 'भूत चढना'।

भून देना—गोलियो से मार देना।

भूत की तरह जुट जाना—किसी काम को पूरा किये बिना न छोडना, किसी काम को करने मे बुरी तरह लग जाना।

भूमिहार के गाँव मे रहना—१ कुछ भूमिहार के गुण वाला होना। २. दे० 'भूमिहार होना'। उ० भूमिहार नही हो तो भूमिहार के गाँव मे रहते तो हो, तुम्हारा विश्वास नही।

भूमिहार होना—धोखेवाज़, अपना मतलब साधने वाला तथा मक्कार होना। उ० वह भी भूमिहार ही है।

भूमि होना—पृथ्वी पर गिरना। उ० लाठी लगते ही वह भूमि हो गया।

भूल कर बैठना या भूलना—किसी की सहायता पर अभिमान करना। उ० आप क्या उनके ऊपर भूल कर बैठे हैं? वे आपकी कुछ भी सहायता नही कर सकते।

भूल-भुलैया मे पडना—ऐसे झझट मे पडना, जिससे निकलने की राह न दिखे।

भृकुटी टेढी करना—नाराज़ होना। उ० भृकुटी टेढी करके आप उसका क्या कर सकते हैं?

भेजा खाना—वहुत बकवक कर तग करना, सर खाना। उ० मेरा भेजा मत खाओ, यदि नही मानोगे तो मैं कही और चला जाऊँगा।

भेडियाधसान—बिना सोचे-समझे दूसरो का अनुकरण करना। उ० भारत मे भेडियाधसान खूब चलती है।

भेष वदलना—१ अपनी सूरत छिपाना। पोशाक वदलना। दूसरा रूप धारण करना। उ० वहुत से बादशाह भेष वदल कर अपने राज्य मे घूमा करते थे।

भैंस काटना—गरमी का रोग होना। [यह प्रयोग प्राय गुडो-बदमाशो मे चलता है।]

भैंस के आगे बीन वजाना—किसी के आगे ऐसी कला का प्रदर्शन करना, जो उसको बिल्कुल न समझे। उ० भैंस के आगे बीन वजावे भैंस वैठि पगुराय।

भैंस से बीन की दाद लेना या होना—जो किसी विषय मे वारे से कुछ भी न जाने, उससे उसकी प्रशसा चाहना।

भैंस होना—१ सुस्त और ढीला होना। २ मूर्ख होना। ३ काला होना। ४ औरत का बहुत मोटी और काली होना। उ० वह तो भैंस है उससे कौन शादी करेगा?

भैंरो नाचना—उजाड होना। उ० वहाँ तो भैंरो नाचने लगी। [यहाँ भैंरो का स्त्रीलिंग प्रयोग होता है।]

भोग लगाना—देवताओ को चढाना। उ० वह भोग लगा कर खाना खाता है।

भोग सुनाना—गालियाँ सुनाना। उ० अगर तुम मुझसे व्यर्थ मे लडोगे तो मैं ऐसे भोग सुनाऊँगा कि याद करोगे।

भोर का तारा—प्रभावहीन, निस्तेज।

भोर होना—१ तवाह होना। उ० लडकी की शादी मे इतना रुपया खर्च हुआ है कि मेरा तो भोर हो गया।

भौंह चढाना—नाराज़ होना। उ० आप मेरे ऊपर भौंह चढा रहे हैं?

भौंह जोहना—१. खुशामद करना। उ० वह दिन-रात मेरा भौंह जोहता रहता है। २. मुख देखना। उ० अपने मालिक का भौंह जोहकर काम किया करो।

भौंह ताकना—रुख देखना। उ० मालिक का भौंह ताक कर नौकर को कुछ कहना चाहिये।

भौंह तानना—दे० 'भौह चढाना'।

भौंह मे वल होना—चेहरे पर असतोष या तनाव का भाव होना।

भौंचक रह जाना—हक्का-बक्का हो जाना। उ० इनके विचित्र काम को देख कर कितने ही भौचक रह गये।

भ्रम की यवनिका फटना—भ्रम दूर होना।

भ्रम के हिडोले मे झूलना—बहुत बडे भ्रम मे होना।

भ्रमर-वृत्ति होना—इधर-उधर से लेने की वृत्ति होना। उ० उस लेखक की भ्रमर-वृत्ति है, उसमे मौलिकता वहुत कम है।

भ्रू मटकाना—सान बुझाना। इशारा करना। उ० भ्रू न मटकाओ, साफ कहो।

म

मँगता होना–भिखमगा होना। उ० वह तो मँगता है, उसे अपनी इज़्ज़त का क्या ख़्याल हो सकता है ?

मँगनी करना–तिलक या वरिच्छा करना, सगाई करना। उ० आज लोग उनकी मँगनी करने जायँगे।

मँगनी देना–उधार देना। उ० घडी, कलम और साइकिल मँगनी देने से ख़राब हो जाती हैं।

मँगनी माँगना–उधार माँगना। उ० शादी आदि के अवसर पर बहुत-सी चीज़ें मँगनी माँगी जाती हैं।

मगला लड़का–ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार विवाह के लिए अनुपयुक्त लडका। उ० मगला लडके से कौन शादी करेगा ?

मगलामुखी–वेश्या।

मगली लडकी–ज्योतिष-शास्त्र के अनुसार विवाह के लिए अनुपयुक्त और बुरी लडकी। उ० यह तो मगली है, इससे कौन ब्याह करेगा।

मँजा होना–सधा और अभ्यस्त होना।

मजिल कटना–बहुत लबा सफर तय होना। उ० किसी तरह आज मज़िल कटी।

मजिल मारना–बहुत दूर पैदल चलना। उ० मैं आज मज़िल मार कर आ रहा हूँ।

मझा घटना–तेज़ी घटना। एक ही डाँट मे मझा घट गया।

मझा देना–लेस चढाना। उ० पतग के तागे पर मझा दे दो।

मडल बाँधना–१ घेरना। उ० बादल खूब मडल बाँधे हुए हैं। २ चारो ओर अँधेरा छा जाना। ३ चक्कर काटना।

मडी उठना–बाजार या मडी का बद होना। उ० मडी उठ गई, अब चलो।

मडी लगना–बाज़ार खुलना। उ० मडी ८ बजे लगती है।

मझधार मे छोड़ना–१. विपत्ति के समय साथ छोड देना। २ किसी बात को अनिश्चित अवस्था मे छोड देना।

मत-तत–उद्योग, प्रयत्न। उ० कुछ मत-तत मे मेरा विश्वास नही है।

मत्र चलाना–वश मे कर-लेना, प्रभाव डालना।

मंत्रणा करना–राय-मशविरा करना। उ० वे लोग मत्रणा कर रहे है।

मंत्रणा देना–परामर्श या सलाह देना।

मत्र देना–१ सलाह देना। उ० वह मेरे मत्र देने पर चलता है। २ चेला बनाना। उ० मैंने बहुत से अहीरो को मत्र दिया है। ३. युक्ति या उपाय बतलाना। उ० इसको मत्र तो मैं दूँगा, पहले तुम उसको तो करो।

मत्र फूँकना–१ बहका देना। उ० उन्होने मंत्र फूँक दिया, नही तो वह अवश्य मेरा काम कर देता। २ मत्र का जादू करना। उ० मत्र फूँक कर उडा दूँगा। ३ मत्र द्वारा बीमारी आदि हटाना। उ० उसे मत्र फूँकना आता है।

मत्र-यत्र–१. मत्र इत्यादि। २ जादू टोना।

मदा पडना–गिर जाना, नीचे आना। उ० आजकल अनाज का भाव मदा पड गया है।

मदा बोलना–१ धीमी-धीमी आवाज़ मे बोलना। उ० आज क्या बात है कि आप मदा बोल रहे है। २. किसी बात का दिल से समर्थन न करना। उ० आप तो मदा बोल रहे हैं। अपनी राय साफ दीजिये। ३ डरना। डर कर धीमी आवाज़ मे बोलना। उ० तुम्हारे सामने वह मदा बोलता है।

मक़दूर से बाहर पाँव रखना–योग्यता से बढकर काम करने की कोशिश करना। उ० मकदूर से बाहर पाँव न रखना, नही तो बेवकूफ बनना पडेगा।

मक़दूरी चलना–अधिकार होना। उ० उस पर आपकी मकदूरी नही चल सकती।

मकान बैठ जाना–मकान का कमज़ोर होने के कारण गिर जाना।

मक्खन मलना–दे० 'मक्खन लगाना'।

मक्खन लगाना–चापलूसी करना। उ० उसे मक्खन लगाना खूब आता है।

मक्खियाँ भिनकना–बहुत गदा होना। उ० उसके घर तो मक्खियाँ भिनकती हैं।

मक्खी उड़ाना–दे० 'मक्खी मारना'।

मक्खी का सर–बहुत थोड़ा।

मक्खी की तरह निकाल फेंकना–एकदम अलग कर देना। उ० उसने अपने दुष्ट लडके को घर से मक्खी की तरह निकाल फेंका।

मक्खी की मक्खी मारना–बेकार का काम करना। उ० वह दिन भर मक्खी की मक्खी मारा करता है।

मक्खी घोंटना–दे० 'जीती मक्खी घोटना'।

मक्खीचूस होना–कजूस होना। उ० वह बडा मक्खीचूस है। खर्च करने का तो नाम ही नही जानता।

मक्खी छोडना और हाथी निगलना–छोटे पापो से बचना आर बड पाप करना। उ० बिडला गरीबो का खून चूस कर लाखो इकट्ठा करता है और दूसरी ओर दो-चार-दस दान कर देता है, यानी मक्खी छोड कर हाथी निगलता है।

मक्खी जीती निगलना–१ जान कर हानि का काम करना। उ० मक्खी जीती निगलना बेवकूफी का काम है। उ० २ पाप का ख्याल न करना। उ० उसका क्या ? वह तो मक्खी जीती निगल सकता है। ३. जान कर किसी बुराई को होने देना।

मक्खी नाक पर न बैठने देना–१ किसी को एहसान करने का समय न देना। उ० वह तुरत बदला चुका देता है, मक्खी तक नाक पर नही बैठने देता। २. अभिमान से किसी के सामने न दबना। उ० यदि तुम मक्खी नाक पर नही बैठने देते हो तो इसमे तुम्हारी शिकायत ही है। ३ कजूस होना।

मक्खी पर मक्खी मारना–बिना सोचे-विचारे बिलकुल वैसा ही अनुकरण करना।

मक्खी मारना–१ बिलकुल निकम्मा रहना। उ० क्या दिन भर मक्खी मारते हो ? क्या मक्खी मार रहे हो ? २. बेकार का काम करना।

मखमल मे गाढ़े का पैबन्द–अच्छे तथा श्रेष्ठ के साथ तुच्छ तथा सामान्य का अनमेल मेल।

मखाने के पत्ते से मुंह पोछना–टापते रहना।

मखौल उडाना–उपहास करना।

मग–मग के मुहावरे के लिए 'बाट' और 'राह' देखिए।

मगज़ उडना–१. बदबू या शोर से दिमाग खराब होना। उ० मेरा यहाँ आते ही मगज़ उड जाता है। २. दिमाग का थका होना। उ० आज कुछ न बोलो, मेरा मगज़ उड रहा है।

मगज़ उड़ाना–१ बहुत बोल कर परीशान करना। उ० आपने तो उसका मगज उडा दिया, अब भी तो चुप रहिये। २. पागल कर देना।

मगज़ के कीड़े उड़ाना–१. बहुत बोलना। उ० क्या मगज़ के कीडे उडा रहे हो ? २ बहुत तर्क लगाना। उ० कृपाकर मगज़ के कीडे न उडाइए।

मगज़ खाना–दे० 'मगज़ उडाना'।

मगज़ खाली करना–१ बहुत अधिक दिमाग लडाना। उ० इस प्रश्न पर मैंने बहुत मगज़ खाली किया, पर कुछ भी न निकला। २ व्यर्थ बकवाद से दिमाग थका देना। उ० तुमने तो मेरा मगज़ खाली कर दिया। ३ पागल बना देना।

मगज़ खौलना–१ बहुत काम करने से दिमाग का ठीक न रहना। उ० आफिस मे आज मेरा मगज़ खौलने लगा। २ गर्मी से दिमाग ठीक न रहना। उ० आजकल दोपहर को मेरा मगज़ खौलने लगता है। ३ क्रोध से दिमाग ठीक न रहना। उ० उसकी अभिमान-पूर्ण बातें सुनकर मेरा मगज़ खौलने लगा। ४ बदबू के कारण दिमाग ठीक न रहना।

मगज़ चलना–१ बुद्धि चलना। उ० इन बातो मे उसका मगज़ खूब चलता है। २ गर्व करना। उ० अच्छा अब आपका भी मगज़ चलने लगा। ३ पागल होना।

मगज़ चाटना–दे० 'मगज़ उडाना'।

मगज़ पचाना–१ बहुत दिमाग लडाना। उ० बहुत मगज़ पचाया, पर कुछ समझ मे नही आया। २. समझाने के लिए बहुत बकना। तुमसे क्या मगज़ पचाऊँ, तुम्हारे समझ मे तो कुछ आ नही सकता।

मगज़-पच्ची करना–दे० 'मगज़ खाली करना'।

मगज़ भिन्नाना–दे० 'मगज़ उडना'।

मगज़ मारना–किसी मूर्ख को कुछ समझाने का प्रयत्न करना। उ० एक घंटे से मगज़ मारता हूँ, पर इस लडके की समझ मे खाक नही आया।

मगन होना–बहुत खुश होना । उ० लडका खिलौना पाते ही मगन हो गया ।

मगर-अगर करना–टालना, आनाकानी करना । उ० अगर न देना हो तो साफ इन्कार कर दो, मगर-अगर की क्या जरूरत ?

मगर से बैर कर पानी मे रहना–अपने ही साथ के सशक्त लोगो से वैर करने की मूर्खता करना ।

मगरूरी चकचूर हो जाना–गर्व दूर हो जाना ।

मछरहट्टा या मछलीहट्टा बनाना या होना–शोर गुल करना या होना ।

मजमून बाँधना–कल्पना करना, नये भावो की उद्भावना करना । उ० गालिब ऐसा मजमून बाँधता था कि लोग सुन कर दग रह जाते थे ।

मजमून मिलना–दो लेखको के भाव मिल जाना । उ० यह तो मजमून मिला है, इसे नकल नही कह सकते ।

मजमून लडना–दे० 'मजमून मिलना' ।

मजल मारना–मजिल मारना । बहुत बडा रास्ता तय करना । उ० मजल मार कर आ रहा हूँ, जरा आराम करने दो ।

मजा आ जाना–१ हँसी का सामान मिलना । उ० अगर हममे मे कोई यहाँ पानी मे गिर जाय तो मजा आ जाय । २ आनन्द आ जाना । उ० सूखी रोटी खानी थी, मगर पके आमो के आ जाने से मजा आ गया ।

मजा उडाना–१ आनन्द लेना । उ० हम सभी लोग यहाँ खूब मज़े उडा रहे हैं । २ स्वाद लेना । उ० जरा इसका भी मजा उडाओ ।

मजाक उडाना–१ बेवकूफ बनाना । उ० किसी का मजाक उडाना ठीक नही है । २ हँसी-ठट्ठा करना । उ० आप तो मजाक उडा रहे हैं, यहाँ प्राणो पर आ पडी है ।

मजा किरकिरा होना या हो जाना–रग मे भग पडना । उ० पिताजी के आ जाने से खेल का सारा मजा किरकिरा हो गया ।

मजा चखाना या चखा देना–बदला लेना । उ० अच्छा आज बच भी गये तो दो-चार दिन मे ही इसका मजा चखा दूँगा ।

मजा देखना–दे ०'मजा लेना' ।

मजा पड़ना–आदत पडना । उ० ताश का उसे मजा पड गया है, दिन-रात खेला करता है ।

मजा लूटना–दे० 'मजा उडाना' ।

मजा लेना–१ तमाशा देखना । उ० लडको मे लडाई हो रही है और आप मजा ले रहे हैं । २ आनन्द लेना । ३ स्वाद लेना । उ० बाजरे की रोटी का मजा लेना चाहते हो तो घी और गुड से खाओ ।

मज़े का–१ अच्छा, बढिया । उ० खूब मज़े की नाच थी, रात भर देखा । २ मस्त । उ० वह मज़े का आदमी है ।

मज़े मे–१ आनन्द से । उ० मैं दो वर्ष से वहाँ मज़े मे हूँ । २ अच्छी प्रकार, पूर्णरूपेण । उ० इस काम को मज़े मे कर देना ।

मज़े से–दे० 'मज़े मे' ।

मझधार मे छोडना–बीच मे छोडना । ऐसे समय या ऐसी परिस्थति मे छोडना जब किसी ओर भी जाना सभव न हो । उ० मुझे मझधार मे मत छोडो ।

मझधार मे पडना–आफत मे फँसना । उ० मझधार मे पडने पर भगवान के सिवा कोई मदद नही कर सकता ।

मटकी देना–आँख मटकाना । उ० उस छोटी लडकी का मटकी देना बडा अच्छा लगता है ।

मटरगश्त करना–दे० 'मटरगश्ती करना' ।

मटरगश्ती करना–बेकार इधर-उधर घूमना । उ० क्या मटरगश्ती करते हो, कुछ काम भी करो ।

मटियामेट कर देना–तहस-नहस करना । उ० अग्रेजो ने भारत को मटियामेट कर दिया ।

मट्टी पलीत करना–१ दुर्दशा करना । उ० उस दिन तो आपने मेरी मट्टी खूब पलीत की । २ नष्ट कर देना ।

मठना–काट-छाँट कर ठीक करना । उ० इस छडी को मठ दो ।

मठ मारना–खराब करना । बिगाडना । उ० बनाने वालो के छक्के छूट जाते हैं और तुम लोगो को मठ मारते देर नही लगती ।

मठा-मूसल धमकना–व्यर्थ की बडी-बडी बातें करना ।

मणि फेंक कर काँच बटोरना–मूल्यवान् वस्तु का तिरस्कार कर व्यर्थ की वस्तु का सग्रह करने की मूर्खता करना ।

मढ़ आना–घिर आना। उ० आज सुबह ही से बादल मढ आये है।

मत देना–१. वोट देना। २. राय देना।

मत मारी जाना–समझ न रहना। मूर्ख हो जाना। उ० उसकी तो मत मारी गई है, इसी से तो ऐसी बात करता है।

मत मे आना–बुद्धि मे आना, समझ मे आना। उ० अगर तुम्हारे मत मे आये तो तुम भी इस काम को कर डालो।

मतलब के यार–अपना काम पडने पर मित्र बनने वाले। उ० मतलब के यारो से मुझे बडी नफरत है।

मतलब की घात चलना–अपना स्वार्थ ही देखना। उ० वे तो सर्वदा मतलब की घात चलते हैं।

मतलब गाँठना–स्वार्थ-साधना। उ० बहुत से लोग मतलब गाँठने के लिए ही मित्रता करते है।

मतलब निकालना–दे० 'मतलब गाठना'।

मतलब हो जाना–१ मतलब पूरा हो जाना। उ० मतलब हो जाने पर कौन किसका होता है ? २ बुरा हाल होना। उ० इतनी ही दूर आने मे उसका मतलब हो गया। ३ मर जाना।

मतली-सी होना–जी मचलाना। उ० आज सुबह ही से मुझे मतली-सी हो रही है।

मता करना–१ षड्यन्त्र करना। २ धोखा फैलाना। ३ राय-बात करना। उ० क्या मता कर रहे हो ?

मति कच्ची होना–कम समझ होना।

मति हर लेना–बुद्धि, विवेक नष्ट कर देना।

मति थकना, पगु हो जाना–किंकर्त्तव्य-विमूढ हो जाना।

मत्था टेकना–१ सिर नवाना। उ० गुरु के सामने सबको मत्था टेकना चाहिये। २. झुकना, विनम्र या विनीत होना। ३ हार मानना। उ० आखिर उसके सामने तुम्हे मत्था टेकना ही पडा।

मत्था मारना–१. बहुत सोचना-विचारना। उ० उसने बहुत मत्था मारा, पर कुछ समझ मे न आ सका। २. बहुत समझाना। उ० मैंने लाख मत्था मारा, पर उसकी समझ मे नही आया।

मत्थे डालना–जिम्मे लगाना। उ० उसने सारी हानि मेरे मत्थे डाल दी।

मथ डालना–एक ही बात को बार-बार कहे जाना।

मथानी पडना–गडबडी होना। उ० यदि मथानी पडी तो तुम ज़िम्मेदार होगे।

मथानी बहना–दे० 'मथानी पडना'।

मद चूर करना झारना– गर्व दूर करना।

मदद पहुँचना–सहायता मिलना। उ० युद्ध-स्थल पर अंतिम समय मे मदद पहुँची।

मदद बाँटना–पारिश्रमिक बाँटना। उ० आज तो ठेकेदार ने सबकी मदद बाँट दी।

मद पर आना–१. जोश मे आना। उ० मद पर आएगा तो सब कर डालेगा। २. जवानी मे आना। उ० पाठा साठा मे मद पर आता है।

मद से अधा होना–बहुत घमड मे होना।

मधुप वृत्ति होना–दे० 'भ्रमर-वृत्ति होना'।

मन अटकना–१ आसक्ति होना, मुहब्बत होना। उ० केवल एक बार के ही मिलन मे दोनो का मन अटक गया। २ मन का रुक जाना।

मन आधा होना–हतोत्साह होना।

मन आकाश मे उडना–मन मे बहुत-सी कल्पनाओ का उठना।

मन आना–१ इच्छा होना। उ० मन आ गया है, कर ही डालूंगा। २. जान पडना। उ० मेरा मन आता है कि वह नही आएगा।

मन उलझना–दे० 'मन अटकना'।

मन कच्चा करना–१ साहस न करना। उ० मन कच्चा न करो, एक बार और आज़मा लो। २ बहुत भावुक होना। ३ दुख या आफत पड़ने पर अधिक रोना या डरना। उ० मन कच्चा न करो, धैर्य से सहो।

मन करना–चाह होना, कामना होना। उ० मन करता है कि मैं भी चला जाऊँ।

मन कसर-मसर करना–मन मे दुविधा होना।

मन का मारा–दुखी आदमी। उ० वह तो स्वय मन का मारा है, उसे न सताओ।

मन का काला होना–खोटा होना, मन से साफ न होना।

मन का आईना–मन के भावो को प्रकट करने वाला।

मन का मैला–छली, कपटी। उ० भाई, मन के मैले आदमियो से तो मुझे बड़ी नफरत है।

मन का शूल—मन की वेदना ।

मन की थाह लेना—किसी के मन मे क्या है, इसका अदाज़ लगाना ।

मन की गाँठ खोलना या खोल डालना—१ जी खोल कर कहना । २ मनमुटाव दूर करना । उ० आज होली के दिन मिल कर मन की गाँठ खोल डालो ।

मन की मन मे रहना—इच्छा पूरी न होना । उ० वहुत कुछ सोचा था, परतु कुछ कह न सका, मन की मन मे ही रह गई ।

मन के लड्डू खाना—निरर्थक आशा मे प्रसन्न होना । काल्पनिक या ख़याली प्रसन्नता से प्रसन्न होना । उ० मन के लड्डू खाने से भूख नही जाती ।

मन खट्टा होना—१ घृणा होना । पसद न पडना । उ० जब मन खट्टा हो गया तो फिर उसके लिए दिल कहाँ ? २ खटक जाना, अतर पड जाना । उ० उससे मन खट्टा हो गया ।

मन खराव होना—१ मन फिरना । उ० उसकी ओर से तुम्हारा मन खराव हो गया है । २ नाराज़ होना । ३. मन का चल जाना या लुब्ध हो जाना । उ० उसे देख कर मन खराव हो गया । ४ बीमार होना ।

मन खिल उठना—अत्यधिक प्रसन्न होना ।

मन खोलना—स्पष्ट करना । उ० मन खोल कर कहो, तुम्हे कुल कितने रुपये चाहिए ?

मन चकरी होना—अस्थिर मन होना ।

मन चलना—१ इच्छा होना । उ० अच्छी-अच्छी चीज़ो के खाने के लिए किसका मन नही चलता है ? २ मन का उच्छृखल होना । मन का बुरे पथ पर जाना । उ० अभी मन चलने लगा तो वडे होकर क्या करोगे ?

मन चुराना—मन मोह लेना ।

मन चौगुना होना—हिम्मत वढना । उत्साह होना । उ० इनाम पाने से लडको का मन चौगुना हो जाता है ।

मन छोटा करना—हताश-निराश होना ।

मन टँगा रहना—किसी व्यक्ति या वस्तु की चिन्ता लगी रहना ।

मन टटोलना—हृदय की वात जानना, थाह लेना । उ० मैंने उनका मन टटोला, वे कुल १०० रु० देना चाहते हैं ।

मन टूटना या टूट जाना—१ जी उचट जाना । उ० यहाँ से मेरा मन टूट गया । २. उत्साह जाता रहना । उ० क्या करूँ अब तो मन टूट गया । ३. प्रेम का समाप्त हो जाना । उ० तुमसे मन टूट गया ।

मन ठहरना—चित्त स्थिर होना । मन लगना । उ० वस एक ही पर मन ठहरा है ।

मन डाल-डाल दौडना—मन का अस्थिर होना, मन मे नाना प्रकार की वातें आना ।

मन डोलना—१ लालच होना । उ० उसकी चीज़ देखकर तुम्हारा मन भी डोल गया । २ मन मे चचलता आना । उ० आसन लगा कर ज्यो ही ध्यानस्थ होता हूँ, मन डोलने लगता है ।

मन ढलना—किसी का पक्ष करना या किसी एक ओर होना । उ० आपका मन तो उधर ढल गया ।

मन देना—१. मन से करना, जी लगाना । उ० मन देकर पढो तो पास हो जाओगे । २ ध्यान देना । उ० परीक्षा निकट है, मन देकर कक्षा मे वैठो । ३ मुग्ध होना । मोहित होना । उ० किसको मन दे दिया है कि यहाँ रहते ही नही ?

मन धरना—मन लगाना । उ० मन धर के काम किया करो ।

मन पढ़ना—मन का भाव जानना ।

मन फटना—तबीयत हट जाना । उ० उससे मेरा मन फट गया है, अब वात करने को भी जी नही चाहता ।

मन फेरना—१ एक ओर से दूसरी ओर चित्त हटाना । उ० जाने क्यो उसने मुझसे मन फेर कर अब उनसे लगाया है । २ मनोरजन या मनबहलाव करना । उ० वह मन फेरने दिल्ली गया है ।

मन फेरवत करना—एक रास्ता से पीछा छुडाना । अधिक दिन से सेवन की जाने वाली चीज की जगह दूसरी चीज़ को स्थान देना । उ० रोटी खाते-खाते तबीयत ऊब गई । एक दिन चावल वना कर मन फेरवत कर लो ।

मन वॅटना—ध्यान दूसरी ओर लगना ।

मन वढ़ना या वढ़ जाना—१ जोश या उत्साह वढना । उ० पुरस्कार पाने से मन वढता है । २ उच्छृखल होना । उ० अब लडके का मन वढ रहा है ।

मन वल्लियो उछलना—वहुत प्रसन्न होना ।

मन बहलाना—मनोरजन करना । उ० पार्क मे जाकर मन बहला आओ ।

मन बिगड़ना—१. घृणा होना । उ० बीमारी के बाद इन चीजों से मन बिगड गया है । २ मिचली आना । उ० क्या खा लिया कि मन बिगड़ गया है ? ३ मस्त हो जाना । ४ मन बिगड़ जाना ।

मन बुझना—दे० 'मन टटोलना' ।

मन बूढ़ा होना—मन मे यौवनोत्साह का न रह जाना ।

मन भटकना—मन का स्थिर न रहना ।

मन भरना या भर जाना—१ तबीयत ऊब जाना । उ० अब तो नौकरी से मन भर गया । २. विश्वास होना । उ० दस्तखत हो गई तो मन भर गया, नही तो खटका बना रहता । ३. संतोष हो जाना ।

मन भाना—पसंद आना । उ० तुम्हारी छडी मेरे मन भा रही है ।

मन भारी करना—दुःखी होना, उदास होना । उ० शुभ अवसर के दिन मन भारी न करो ।

मन मैला होना—मन साफ होना, कोई दुविधा न होना ।

मन मसोस कर रह जाना—विवश या निरुपाय होकर रह जाना ।

मन मानना—१. इच्छा पूरी होना । उ० मिठाई से मन मान गया । २ सतोप होना । उ० उसने बहुत कहा, पर मन ही नही मानता । ३. विश्वास होना । उ० तुम्हारी बात पर तो मन नहीं मानता है ।

मनमाना—१. मनचाहा, यथेप्ट । उ० उसने तो शादी में मनमाना रुपया खर्च किया । २ मन-चला, अनियंत्रित । उ० उसका क्या, वह तो पूरा मनमाना है ।

मन मार कर बैठ जाना—१ हताश होना । उ० इतनी सी हानि से मन मार कर बैठ गए ? २. इच्छा दबा लेना । उ० वहाँ जाना था, पर खर्चे की कमी से मन मार कर रह गया ।

मन मार कर रह जाना—दे० 'मन मार कर बैठ जाना' ।

मन मारना—१. दे० 'मन भारी करना' ।

मन मिट्टी होना—मन निरुत्साहित होना ।

मन मिलना—१ दोस्ती होना । उ० उन दोनो का मन मिल गया । २. अनुराग होना । उ० बहुत पहले से दोनो का मन मिल चुका है । ३ एक स्वभाव का होना । उ० जब तक मन न मिले, मित्रता कैसी ? ४ मन की बात का पता चलना । उ० देखो मैं कोशिश करूँगा, यदि उसका मन मिला तो कुछ किया जायगा ।

मन मुँह को आना—हृदय की बात कहने की तीव्र इच्छा होना ।

मन मे आँधी चलना—मन मे विचारो का सघर्ष चलना ।

मन मे आना या आ जाना—१. जी चाहना, इच्छा होना । उ० मन मे आना है कि उससे सबध कर लूं । २ दिल पर जगह करना, हृदय मे स्थान करना । उ० वह तुम्हारे मन मे आ गई है । ३ अच्छा लगना । ४. ठीक ज्ञात होना, उचित लगना । उ० उसके मन मे आ तो गया है, देखो करता है या नही ।

मन मे कट कर रह जाना—१ बहुत लज्जित होना । २ तीखी बात से मन पर आघात होने पर भी कुछ कह न पाना ।

मन मे कहना—१ अपने आप सोचना या समझना । उ० तुमने तो बहुत भला-बुरा कहा, पर वह मन मे कह कर रह गया । २. अपने से कहना धीरे-धीरे कहना । उ० अपना पाठ दोहराना ही चाहते हो तो मन में कहो । इतने जोर से कहोगे तो मैं कहाँ जाऊँगा ?

मन मे घर करना—१ स्नेह या प्यार होना । २ किसी बात का मन मे जम जाना ।

मन में चोर बैठना—दे० 'दिल मे चोर बैठना' ।

मन मे छुरी रखना—मन मे दुर्भावना रखना ।

मन मे जमना—१ ठीक जँचना, अच्छा लगना । उ० तुम्हारी बातें मेरे मन मे जमती नही हैं । २ ख्याल होना । उ० उसने इतना कहा, पर मेरे मन मे एक न जमी । ३ मन में बैठ जाना, याद हो जाना । उ० एक बार भी अच्छी तरह मन मे जमे तो फिर न भूले ।

मन मे ठानना—निश्चय करना, इरादा करना । उ० उसने आगे पढने की मन मे ठान ली है ।

मन मे डौल करना—मन मे विचार करना, युक्ति सोचना ।

मन मे तूफान उठना—विचारो का आन्दोलन होना ।

मन में दरार पड़ जाना—मन मे अन्तर पड़ना ।

मन में नक्श करना—चित्त मे अच्छी तरह जमाना या जमा लेना । उ० इसे मन मे नक्श कर लो, शायद परीक्षा मे आ जाय ।

मन में नक्श कराना—अच्छी तरह मन या हृदय मे अंकित करा देना । उ० उस दिन उसकी कविता ने उस कल्पित कहानी का दृश्य मन मे ऐसा नक्श करा दिया कि भुलाने से भी नही भूलता ।

मन मे फटकने न देना—मन मे तनिक भी न लाना ।

मन मे बसना—१ हृदय मे स्थान करना । उ० उसकी सूरत मेरे मन मे बसी है । २ हृदय मे स्थान पाना । उ० मेरे मन मे बसना चाहो तो मेरा कहा करो ।

मन मे बैठना—दे० 'मन मे जमना' ।

मन में भरना—१ विश्वास देना । २ हृदय मे बैठाना । उ० किसी तरह उसके मन मे भर देते तो मेरा जी छूट जाता ।

मन मे भाना पर मूडी हिलाना—मन मे अच्छा लगना, पर ऊपर से उसे स्वीकार न करना ।

मन मे मथानी फिरना—मन मे उद्वेलन होना ।

मन मे मरोड करना—छल-कपट रखना । उ० अब हमसे क्या मन मे मरोड करते हो ?

मन मे रखना—१. गुप्त रखना । उ० जब तक कुछ हो न जाय, सारा रहस्य मन मे रखो । २. स्मरण रखना । उ० इतनी बात मन मे रखूं तो जगह ही न मिले ।

मन मे लाना—१ समझना, सोचना । उ० मन मे लाकर देखो तो पता चले । २ हृदय मे रखना, हृदय मे स्थान देना । प्यार करना ।

मन मैला करना—१ क्रुद्ध होना, अप्रसन्न होना । उ० जरा-सी बात पर मन मैला करते हो । २ मन दूषित करना । उ० झूठ बोल कर मन मैला न करो ।

मन मोटा होना—१ विराग होना, घृणा होना । उ० अब तो उसका मन ससार से मोटा हो गया है । २. मनमोटाव होना । उ० उससे तो मेरा मन मोटा हो गया है, क्योकि वह बडा बनता है ।

मन मोडना—दे० 'मन फेरना' ।

मन मोहना—मुग्ध कर लेना । उ० हाव-भाव दिखा कर उसने मेरा मन मोह लिया ।

मन रखना—१ कही मान लेना । उ० आखिर उसका मन रखने मे तुम्हारी क्या हानि है ? २ इच्छा पूरी करना । उ० जब भी कुछ कहता हूँ, वह सदा मेरा मन रख देता है ।

मन रमाना—१ चिंता छोड कर दिल प्रसन्न करना । उ० क्या उदास बैठे हो, जाकर कही मन रमाओ । २ चित्त लगाना । उ० आजकल किस चीज मे मन रमाये हो ?

मन रीता करना—मन की बात कह कर मन हल्का करना ।

मन लगना—जी लगना । उ० आजकल पढने मे मन नही लगता है ।

मन लगाना—१ किसी काम मे चित्त जमाना । उ० परीक्षा निकट है, मन लगा कर पढो । २ प्रेम करना । उ० उधर मन न लगाओ ।

मन लेना—दे० 'मन टटोलना' ।

मन साधना—मन को वश मे करना ।

मनसूवा बाँधना—१ साहस करना । उ० मनसूबा बाँध कर तो आया था, परतु हुआ कुछ नही । २ ऊँचे महल बनाना, मन मे खूब ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करना । उ० मनसूबा न बाँधो, पता नही होगा या नही ।

मन से उतरना—१ प्रतिष्ठा मे कमी होना । उ० कांग्रेस तो सभी के मन से उतर गई है । २ स्मरण न रहना । उ० जरा ठहरो, इस समय यह बात मन से उतर गई है ।

मन से उतारना—१ चित्त से हटाना । उ० जब प्रेम नही रहा तो मन से उतारने मे क्या हानि ? २ भूल जाना । उ० मेरी बात कही मन से उतार न देना ।

मन से जूझना—मन की लालसाओ पर विजय पाने की कोशिश करना ।

मन से दूर होना—१. भूल जाना । २ मन न मिलना ।

मन सोना होना—निर्दोष मन होना ।

मन हरना—दे० 'मन मोहना' ।

मन हरा होना—प्रसन्नचित्त होना । उ० आज कुछ मिला है क्या, कि तुम्हारा मन इतना हरा हो गया है ?

मन हलका होना—मन से चिंता या दुःख दूर होना ।

मन हाथ मे लेना—अपने अधिकार मे करना। उ० चीन का मन तो रूस ने अपने हाथ मे ले लिया है।

मन ही मन—स्वयमेव, चुपचाप। भीतर ही भीतर। उ० मन ही मन समझ लिया, कहने की क्या ज़रूरत है?

मन होना—इच्छा होना। उ० मन होता है कि खूब पढे, पर व्यय का प्रश्न सामने आ जाता है।

मनादी करना—ज़ोर से कहना। घोषित करना। उ० सडक पर क्या मनादी कर रहा था, सुना या नही?

मनुहार करना—१ विनय या खुशामद करना। उ० चाहते हैं कि कोई मनुहार करे तो आऊँ। २ स्त्री का पुरुष को या पुरुष का स्त्री को मनाना। उ० वे दोनो खूब मनुहार करते है।

मनोरथ छूछा पडना—मनोकामना अपूर्ण रह जाना।

मन्नत उतारना—मनौती पूरा करना। उ० बच्चे की मन्नत उतार दी गई है।

मन्नत मानना—मनौती मानना। उ० अन्नपूर्णा की मन्नत मानो तो शायद काम हो जाय।

मन्सूबे बाँधना—दे० 'मनसूबा बाँधना'।

मयस्सर होना—मिलना। उ० इस गरीब को दूध कहाँ मयस्सर होता है?

मरकट के हाथ मरकत होना—दे० 'बन्दर के हाथ मणि होना'।

मर करके—बड़ी कठिनाई मे, बडा कष्ट सह कर। उ० मर करके तो इस काम का पूरा किया है।

मरजाद—(मरजाद के मुहावरो के लिए 'इज़्ज़त' और 'मर्यादा' के मुहावरे देखिए।)

मर जाना—१ मोहित होना। उ० तुम तो देख कर ही मर गए। २ सर्वनाश होना। उ० मैं तो इतने ही मे मर गया।

मर-जी कर—१ किसी भी तरह। उ० मर-जी कर इसे पूरा कर दिया। २ बहुत परिश्रम करके। उ० पूरा तो करेगा, मगर मर-जी कर।

मरना—१ मोहित होना, न्यौछावर होना। उ० मैं इसकी खूबसूरती पर मरता हूँ। २. प्राण देना। ३ बहुत कष्ट सहना। ४. बहुत परिश्रम करना। उ० क्यो मरते हो?

मरना-जीना—१ सुख-दु ख। उ० मरना-जीना तो सभी के साथ लगा है। २ बहुत परिश्रम करना। उ० इस छोटे से काम के लिए मरने-जीने की क्या जरूरत है?

मरने की छुट्टी न मिलना—काम मे बहुत व्यस्त रहना। बिल्कुल अवकाश न मिलना। उ० क्या करे बेचारा, ए० जी० आफिस की नौकरी ही ऐसी है कि मरने की भी छुट्टी नही मिलती।

मरने पर भी नहीं—कभी भी नही।

मर पचना—किसी के लिए मर मिटना। उ० तुम तो मर पचे और उसने शाबासी तक नहीं दी।

मर मिटना—बरबाद हो जाना। उ० सैनिक युद्ध मे मर मिटे।

मरम्मत करना—१ जीर्ण-शीर्ण चीज़ को सुधारना। उ० अब मदिर की मरम्मत कर देना आवश्यक है। २ खूब पीटना। उ० आज तो थानेदार ने चोर की खूब मरम्मत की।

मरहठी घिस-घिस करना—झझट पैदा करना। उ० तुम तो मरहठी घिस-घिस कर रहे हो, अब कभी यहाँ न आना।

मरहठी घिस-घिस होना—काम मे गडबडी होना। उ० तुम लोगो से तो मरहठी घिस-घिस हो रही है। ऐसो की यहाँ क्या आवश्यकता थी?

मरहठी मचाना—लूटपाट मचाना। उ० मरहठो ने कभी खूब मरहठी मचाई थी।

मरहम पट्टी करना—घाव पर मरहम लगाकर पट्टी बाँधना। उ० उसकी मरहम-पट्टी कर दो।

मरहम रखना—१ सात्वना देना। २ बिगडी बात को बनाना। ३ किसी नाराज़ व्यक्ति को मनाना।

मरहला डालना—झगडा-फसाद तैयार करना। उ० क्या मरहला डाल रहे हो?

मरहला तय करना—१ झगडा तय करना। उ० पच ने मरहला तय कर दिया। २. कठिन काम को पूरा करना। उ० अभी तो एक ही मरहला तय कर सका।

मरहला पडना–झझट या झमेला आना । उ० इधर ऐसे मरहले पडे कि भर पेट सो भी न सका ।

मरहला मचना–दे० 'मरहला पडना' ।

मरहला मचाना–झमेला डालना या मचाना । उ० तुमने तो ऐसा मरहला मचाया कि जान को आ गई ।

मरा जाना–१ किसी पर आसक्त होना, मोहित होना। उ० क्यो उस कलूटी पर मरे जाते हो ? २ जान लडा कर परिश्रम करना । उ० इसी काम के लिए आप मरे जा रहे हैं ?

मरा हुआ–१ निस्तेज, जिसका प्रयोग या महत्व काम हो गया हो । २ बुरा ।

मरातिब तय करना–भविष्य के झगडे मिटाना । उ० यदि आप मरातिब तय कर देते तो रोज की झक्षट से जान बच जाती ।

मरी पड़ना–१ ताऊन फैलना । उ० कई जगहो पर जोरो से मरी पडी है । २ भुखमरी फैलना । उ० उस साल बगाल मे मरी पडी थी ।

मरूकरि के–कठिनता से । उ० रसखानि तिहारी सो एरी जसोमति भागि मरूकरि छूट न पाई ।

मरूरा देना–ऐंठना । उ० मेरा पेट मरूरा दे रहा है ।

मरे को मारना–दु खी को और दु ख देना । उ० ये किसान तो स्वय मरे है, अब क्या मरे को मार रहे हो ?

मरोड की बात–घुमाव-फिराव की बात । उ० देखो, मरोड की बात न करो, जो बात हो, सीधे कह दो ।

मरोड़ खाना–१ झझट या उलझन मे पडना । उ० तुम तो उससे मझियाई करके खूब मरोड खा रहे हो ।

मरोड गहना–गुस्सा करना । उ० सुनो भी तो, तुरत मरोड क्यो गहते हो ?

मरोड़ पकडना–दे० 'मरोड गहना' ।

मरोडा उठना–पेट मे दर्द होना । उ० चना खा लेने से ही मरोडा उठ रहा है ।

मरोडी करना–खीचातानी करना । उ० बात मान लो, मरोडी करने से क्या लाभ ?

मर्ज की दवा होना–दे० 'दर्द की दवा होना' ।

मर्जी मे आना–चाहना, इच्छा होना । उ० जब मर्जी मे आये तो करना, कोई जल्दी नही है ।

मर्द आदमी होना–बहादुर आदमी होना । उ० मर्द आदमी है, जाएगा तो करके ही आएगा ।

मर्म लेना–भेद लेना, भेद जानने का यत्न करना ।

मर्म-वेधी बातें–मन को पीडा पहुँचाने वाली बातें ।

मर्म को छू लेना–मन या बात की गहराई तक पहुँचना ।

मर्यादा के द्वार तोड़ना–मर्यादा का उलघन करना ।

मर्याद रहना–१ प्रतिष्ठा रहना । उ० जीकर मर्यादा न रही तो कुछ न रहा । २ बारात का विवाह के तीसरे दिन ठहर कर भोज मे शामिल होना । उ० आज मर्याद रहेगी ।

मर्सिया पढना–शोक मनाना ।

मलदल कर छोड देना–नष्ट-भ्रष्ट करना । उ० सारा सामान तुमने मलदल कर छोड दिया ।

मलना-दलना–दे० 'मलदल कर छोड देना' ।

मलार गाना–१ प्रसन्नता से गाना गाना । प्रसन्न होना । उ० शादी हो गई, अब तो मलार गाता रहता है । २ चैन से रहना । उ० आप तो मलार गा रहे है, बीतती मुझ पर है ।

मलाल निकालना–पुराने वैर का बदला लेना । उ० समय पर सारा मलाल निकाल लूंगा ।

मलाल मिटाना–दे० 'मालल निकालना' ।

मलिया बाँधना या बाँध देना–रस्सी को मोड कर बाँधना । उ० मलिया बाँध लो तो खुलने का डर नही रहेगा ।

मलियामेट करना या कर डालना–सत्यानाश करना । उ० पाकिस्तान ने कश्मीर को मलियामेट कर डाला ।

मलोले आना–पश्चात्ताप होना । उ० अब मलोले आकर क्या करेंगे ?

मलोले खाना–तकलीफ झेलना । उ० अब तो वे खूब मलोल खा रहे हैं ।

मलोले निकालना–दे० 'मलाल निकालना' ।

मल्हार गाना–दे० 'मलार गाना' ।

मवास करना–ठहरना, डेरा डालना । उ० औधडे लोग मसान के पास मवास करते है ।

मवासी तोडना—१ गढ तोडना । २ विजय करना । उ० कब दत्तै मवासी तोरी । कब सुकदेव तोपची जोरी ।

मशक्कत की कमाई—बडे परिश्रम से अर्जित धन ।

मशविरा करना—राय करना, समझना-बूझना । उ० वह तुम्हारे यहाँ मशविरा करने आया है ।

मशाल जलाकर (लेकर) ढूंढना—चारो ओर तलाश करना । अच्छी तरह ढूंढना । उ० मशाल जलाकर ढूंढो, शायद मिल जाय ।

मशीखत बघारना—डीग हाँकना । उ० अब क्या मशीखत बघारते हो, सारा पोल तो खुल गया ।

मष्ट करना—चुप्पी साधना । चुप हो जाना । उ० अपनी वार तो बोलता है, पर दूसरे की वार मष्ट कर लेता है ।

मष्ट धरना—दे० 'मष्ट करना' ।

मष्ट भरना—दे० 'मष्ट करना' ।

मसकर लगाना—खुशामद करना ।

मस भींजना—रेख या मूँछ निकलना । उ० अभी तो केवल २० वर्ष का है, मस भीज रही हैं ।

मसमसा जाना—भीतर ही भीतर कुढना । उ० तुम्हारी बातें सुन कर वह मसमसा गया ।

मसविदा बांधना—दे० 'मसौदा गांठना' ।

मसल देना—नष्ट कर देना ।

मसान जगाना—१ शव फूंकना । उ० लोग मसान जगाने जा रहे हैं । २ श्मशान पर मंत्र सिद्ध करना । उ० औघड मसान जगाते हैं ।

मसान पडना—सुनसान होना । उ० जेठ की दुपहरी मे तो चौक मे भी मसान पड जाता है ।

मसें भींगना—दे० 'मस भीजना' ।

मसौदा करना—किसी बात के लिए सोच-विचार करना । उ० उनके पास जाकर मसौदा कर लो, शायद कुछ जानते हो ।

मसौदा गांठना—प्रयत्न करना, युक्ति चलाना । उ० कितना भी मसौदा गांठो, वह नही आ सकता ।

मस्त मौला होना—परवाह न करने वाला मस्त व्यक्ति होना ।

मस्ती झड़ना—ऐंठ दूर होना । उ० अब तो सारी कमाई खर्च हो गई, मस्ती झड गई होगी ।

मस्ती निकालना—१ इच्छा पूरी या दूर करना । उ० मस्ती निकाल रहे हो क्या ? २ गर्व चूर-चूर करना, इतराना दूर करना । उ० घबराओ नही, मैं अभी उसकी मस्ती निकालता हूँ ।

महनभोग मे को इकटी होना—दे० 'दही मे का मूसर होना' ।

महनामथ मचाना—झौं-झौं करना, झगडा मचाना । उ० चीज मेरी थी और उसने महनामथ मचाकर तग कर डाला ।

महरें बांधना—पति का स्त्री को खर्च निश्चय करना । उ० तलाक देने पर उन्हे महरें बाँधना पडेगा ।

महसूल मारना—किराया या चुगी न देना । उ० महसूल मार कर सरकार का नुकसान न करो ।

महाजन का पेट भरना—बाकी चुकाना ।

महाजन होना—१ धनी होना । २ सूद पर रुपये देने वाला होना । उ० हमारे महाजन तो वही हैं । ३ बडी तोद वाला होना ।

महारथी होना—समर्थ होना, क्षमता सम्पन्न होना ।

महावरा पडना—आदत पड जाना । उ० उसे तो मार खाने का महावरा पड गया है ।

महीन काम—सफाई का काम । सावधानी का काम । उ० घडी का महीन काम है, तुम न खोलो ।

महीना चढना—१ पिछले महीने का गर्भ रहना । उ० वहू को महीना चढ गया है । २ नियत समय के बाद तक रजस्वला न होना ।

महीने से होना—रजस्वला होना । उ० वह तो महीने से है, खाना नहीं छू सकती ।

महूरत करना—शुभ दिन से काम प्रारम्भ करना । उ० बच्चा बडा हो गया है, नाग पचमी से पढाई का महूरत करेगा ।

महेर डालना—१ उलझन डालना । उ० हर काम मे महेर डालने की आदत-सी तुम्हें पड गई है । २ देर करना । उ० समय हो गया है, अब महेर न डालो ।

माँ के पेट से लेकर निकलना—सिखे-सिखाये पैदा होना ।

मांग उजड़ना–वैधव्य होना। उ० वेचारी की इसी अवस्था मे मांग उजड गई।

मांग काली करना–दे० 'मांग मे कोयला दलना'।

मांग-कोख से सुखी रहना–पति तथा वच्चो से भरा-पूरा रहना। उ० ईश्वर करे तुम मांग-कोख से सुखी रहो। [आशीर्वाद है, जो स्त्रियो को दिया जाता है। इसका प्रयोग भी प्राय स्त्रियाँ ही करती हैं।]

मांग-चह कर–इधर-उधर से मांग कर, भीख मांग कर। उ० आज भी मांग-चह कर खाने भर को ले आया हूँ।

मांग जलना–दे० 'मांग उजडना'।

मांग-तांग कर काम चलाना–इधर-उधर से लेकर काम निकालना। उ० मांग-तांग कर काम चला लो, रुपया होगा तो दे देंगे।

मांग धोना–विधवा करना। विधवा होने की गाली देना। उ० तुम मेरी मांग धोओगे तो भगवान तुम्हारी मांग धो देंगे। [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।]

मांग-पट्टी करना–वाल मे कघी करना। वाल झाडना। उ० अभी तो वह मांग-पट्टी कर रही है, देर लगेगी।

मांग-पट्टी मे लगा रहना–शृंगार करने मे व्यस्त रहना, वनाव-चोनाव मे लीन रहना। उ० नयी वहू तो अभी आठो याम मांग पट्टी मे ही लगी रहती है।

मांग फाडना–वाल काढना। उ० पुरुष भी अव वीच से मांग फाडते हैं।

मांग फूंकना–दे० 'मांग धोना'।

मांग बांधना–वाल सवांरना। उ० अभी चलना है, जल्दी मांग वांध लो।

मांग भरना–१ मांग मे सिंदूर लगाना। उ० सौभाग्यवती स्त्रियाँ मांग भरती हैं। २ विवाह कर लेना। उ० उससे तुमसे प्रेम है तो क्यो नही उसकी मांग भर देते ?

मांग मूड़ना–सर के पूरे वाल वनाना, काटना या मुडना। उ० मांग मूडी मांग मूडी कतरा कर छूरी। आयल वनरा ले गयल मूड़ी।

मांग मे कोयला दलना–मांग काली करना। विधवा करना। उ० भगवान तुम्हारी मांग मे कोयला दलें। [यह एक गाली है, जिसे एक स्त्री दूसरे को देती है।]

मांग लाल करना–मार कर सर फाड़ डालना। उ० मार कर मांग लाल कर दूंगा, नहीं चुप रहो।

मांग सफेद करना–दे० 'मांग धोना'।

मांग से ठंडी रहना–सौभाग्यवती रहना। उ० भगवान करे तुम मांग से ठंडी रहो।

मांगे देना–मंगनी देना। उ० भोखेमाओं को कौन मांगे देगा।

मांझ पड़ना या पड जाना या होना–फर्क आना। अतर पडना। उ० उन दोनो में मांझ पड़ ही गयी।

मां-वहन एक करना–वदजवानी करना, गालियाँ देना। उ० तुम्हारी यह आदत वहुत बुरी है, जरा-सी वात पर मां-वहन एक कर देते हो।

मां-वहन करना–१ इज्जत से बोलना। उ० कैसा सभ्य लडका है, सभी को मां-वहन करता रहता है। २ मां या वहन के लिए अपशब्द कहना। गाली देना। उ० देखो मां-वहन ना करो, नही तो मैं भी वना दूंगा।

माडेम मे थापना–पितरो की तरह आदर करना। उ० वह तो वड़ों को माडेम में थापता है।

माई का लाल–वहादुर। कौन माई का लाल है, जो इस काम को कर दे।

माई-वाप समझना–१ सव कुछ समझना। २ सहायक समझना। ३ सरपरस्त समझना।

माट का माट विगड़ना या विगड़ जाना–सारे की वुद्धि मारी जाना। उ० यहां तो माट का माट विगड गया है।

माट विगडना या विगड़ जाना–प्रकृति में अंतर आ जाना। उ० तुम्हारा माट विगड़ गया है, अव वह वात नही रही।

माटी का लोना–सुस्त और वेवकूफ आदमी। उ० उसे मैं होशियार समझता था, पर वह तो माटी का लोना है।

माटी की सूरत होना–वहुत वेवकूफ होना। सीधा होना।

माटी फांकना–वैर रखना, ईर्ष्या करना। उ० आप मेरे नाम पर मांटी क्यों फांकते हैं ?

माटी में मिलना–१ बर्वाद हो जाना । २ मर जाना । उ० हर जर्रा खाक तेरी गली का है वेकरार, याँ कौन-सा सितमजदा मिट्टी मे मिल गया ।

माटी मे रुलना–दे० 'माटी मे मिलना' ।

माटी लगना–१ घर की दीवारो का मिट्टी लगाकर मरम्मत होना । २ मरना [स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त एक गाली ।] ३ तुम्हारी माटी लगे । तुम माटी लगो ।

मात करना–१ लज्जित करना । नीचा दिखाना । उ० वह लडका तो बोलने मे अच्छो-अच्छो को मात कर देता है । २ हरा देना । उ० भीम ने गदा-प्रहार मे किसको मात नही किया ?

मात खाना–१ शर्मिन्दा होना । उ० जाते ही मात खा गए न । २ हारना । उ० उसके आगे तो सभी मात खा जाते हैं ।

मात जाना–१ गर्वित हो जाना । उ० वह तो अपने बल पर मात गया है । २ दे० 'मात खाना' । ३ केंचुल से खूब ढक जाना । उ० यह साँप मात गया है । ४ मस्त या पागल हो जाना ।

मात देना–१ बाजी ले जाना, हराना । उ० चालाकियो से अपनी बँचे मेरे हाथ से, वरना मैं दे चुका था उन्हे कल तो मात साफ । २ शतरज मे विपक्षी को हराना । ३ मातम-पुरसी करना, किसी के मरने पर उसके घर जाकर दु ख प्रकट करना तथा घर वालो को सान्त्वना देना ।

मातम-पुरसी करना–सवेदना प्रकट करना ।

मात होना–१ हार जाना । २ परीशान होना । ३ लज्जित होना ।

माता का दूध लजाना–अपनी कायरता के कारण लज्जा का विषय बनना ।

माता ढलना–चेचक का सूखना । उ० तीसरे ही दिन माता ढल गई ।

माता निकलना–चेचक के दाने निकलना । चेचक होना । उ० सारे गाँव मे माता निकली हैं ।

माता पूजना–शीतला या काली आदि की पूजा करना ।

माथा ऊँचा करना–प्रतिष्ठा पाना, सगर्व खडे होना ।

माथा कूटना–१. सिर पर हाथ रख कर शोक करना । उ० अब क्या माथा कूटते हो, वह जी नही सकता । २. पछताना । उ० माथा कूटने से क्या लाभ, जो होना था, वह हो गया । ३ सर पीटना ।

माथा खपाना–माथापच्ची करना । दिमाग लडाना । उ० बहुत माथा खपाया, पर वह न समझ सका ।

माथा खाली करना–दे० 'माथा खपाना' ।

माथा गरम होना–क्रोध आना ।

माथा घिसना–दे० 'माथा रगडना' ।

माथा चढना–१ घमड होना । २. गुस्सा होना ।

माथा टकराना–१. कठिन मानसिक परिश्रम करना । उ० कितना भी माथा टकराओ, यह काम तुमसे नही होगा । २ पैरो पर माथा रख कर प्रार्थना करना । उ० बहुत माथा टकराया, पर उसने एक न सुनी ।

माथा टेकना–१ पैरो मे सिर रख कर प्रणाम करना । उ० माथा टेकना भारत की प्राचीन परम्परा है । २ झुकना, रोब मानना । उ० तुम्हे माथा न टेकना पडा तो नाम नही ।

माथा ठनकना–१ किसी बात के लिए सदेह होना । उ० तार पाते ही मेरा माथा ठनकने लगा कि क्या हुआ । २ सर मे दर्द होना ।

माथा ठोकना–भाग्य को दोष देना ।

माथा पकड़ कर बैठ जाना–हताश होकर बैठ जाना ।

माथा नीचा होना–लज्जित होना ।

माथापच्ची करना–सिर खपाना । बहुत बकना । उ० क्या उस बेवकूफ के साथ माथा-पच्ची कर रहे हो ?

माथापिट्टन करना–दे० 'माथापच्ची करना' ।

माथा पीटना–दे० 'माथा कूटना' ।

माथा भडकना–१. सर में दर्द होना । २ चौकन्ना होना ।

माथा मारना–१ अधिक मानसिक परिश्रम करना । उ० बहुत माथा मारा, पर प्रश्न न सुलझ सका । २ कोशिश करना । उ० माथा मारो, शायद काम बन जाय ।

माथा रगड़ना—१ खुशामद करना । उ० माथा रगडते-रगडते तग आ गया, पर उसने एक न सुनी । २. प्रार्थना करना ।

माथा सिकुड़ना—असतोष प्रकट होना ।

माथे की मणि होना—अत्यन्त प्रिय होना ।

माथे चढना—१ शरारत करना । २. सहक जाना, सर चढना । उ० देखो इतना माथे न चढो, नही तो सजा पाओगे । ३. वेअदव हो जाना । उ० यह छोकरा तो वडो के माथे चढ गया है ।

माथे जाना—१ सर पडना, इल्जाम लगना । उ० आप होशियार रहे, यह आपके माथे जायगा । ज़िम्मे पडना । उ० यह खर्च आपके माथे जायगा ।

माथे टीका होना—१ विशेप गुण होना । उ० क्या कोई काग्रेस के माथे टीका है कि वही राज्य करे । २. राजगद्दी पर वैठना । उ० आज कुँवर साहव के माथे टीका होगा ।

माथे पडना या पड जाना—उत्तरदायित्व आना । उ० घर का झझट मेरे माथे पड गया है ।

माथे पर त्योरी चढना—क्रोधित होना ।

माथे पर आना या आ जाना—मुँह पर क्रोध की झलक दिखाई देना । उ० उसकी गुस्ताखी सुनते ही उनके माथे पर वल आ गया ।

माथे पर वल पडना—दे० 'माथे पर वल आना' ।

माथे पर वायें पाँव के अँगूठे से टीका लगाना—अत्यन्त तुच्छ समझना ।

माथे पर सींग होना—कोई विशेषता होना ।

माथे मढना—ज़िम्मे लगाना । उ० देखो चीज़ें फूटने वाली है, इन्हें माथे न मढो ।

माथे मानना—प्रेम से अगीकार करना । उ० गुरु की आज्ञा माथे मान कर पूरी करो ।

माथे मारना—घृणा से देखना । तुच्छ समझना । उ० मुझसे क्या मतलव, मैं उसकी लाख की चीज भी माथे मारता हूँ ।

माथे से कीडे कुलबुलाना—किसी काम को करने की इच्छा होना ।

माथे रोली-चावल चढाना—तिलक करना ।

मादरख्वाही करना—माँ की गाली देना ।

मान करना—१ नाराज़ हो जाना । उ० नायिका नायक पर मान करके वैठी है । २ आदर करना । उ० वडो का मान करना हमारा धर्म है ।

मान मथना—घमड या शेखी चूर करना । उ० हमारा मान मथने का साहस किसे है ?

मान मनाना—नाराज़ की मनुहार करना । नाराज़ आदमी को मनाना । उ० घर के वडे हैं, मान मनाकर लाने मे क्या हर्ज़ है ?

मान-महत करना—आदर-सत्कार करना । उ० वडो का मान-महत किया करो ।

मान मोरना—अपनी नाराज़ी दूर करना, प्रसन्न हो जाना । उ० वह तो ज़रा-सा तेल लगा देने से मान मोर लेगा, हाँ, तुम्हारी वात मैं नही कह सकता ।

मान रखना—१. प्रतिष्ठा की रक्षा करना । उ० हज़ारो खर्च करके तो उसका मान रखा । २. वात रखना ।

माफ करना—१. क्षमा करना । उ० इस वार मुझे माफ कर दो, फिर ऐसा काम न करूँगा । २ अलग रहने, दूर जाने, शात रहने या चुप रहने के लिए व्यग्यात्मक ढग से कहना । उ० माफ कीजिए, मैं आपको यहाँ नही देखना चाहता ।

माफी चाहना—१. क्षमा चाहना । उ० मैं गलती के लिए माफी चाहता हूँ । २ अलग रहने की इच्छा करना । उ० आप अपने घर जायें, मैं माफी चाहता हूँ ।

मामला करना—१ कोई वात पक्की या तय करना । उ० आज मामला कर दिया, चलो इससे भी फुरसत मिली । २ फैसला करना । ३ मुकदमा चलाना । उ० उन्होने मुझ पर मामला किया है । ४ षड्यत्र या चालवाज़ी करना ।

मामला किरकिरा होना—१ ठीक किया हुआ काम विगडना । उ० आपकी वजह से सारा मामला किरकिरा हो गया । २ मज़ा विगाडना । उ० नमक अधिक होने से मामला किरकिरा हो गया ।

मामला गठना—मतलव पूरा होना ।

मामला गर्म होना,—तूल पकडना—झगडा आगे वढना या तेज़ होना ।

मामला गोल होना—कुछ गोल-माल होना ।

मामला ढीला होना—सफलता की आशा न होना ।

मामला पक्का करना–१ बात निश्चित या ठीक करना । उ० किसी तरह बातचीत करके मामला पक्का किया । २ सभोग करना । उ० इतने दिन के बाद आज मामला पक्का किया । ३ शादी ठीक करना ।

मामला बनाना–१ काम ठीक करना । उ० वे मामला बनाने आये थे, उलटे बिगड गया । २ काम निकालना । उ० आजकल के मित्र मामला बना कर चलते बनते हैं ।

मामी पीना–अपना दोष न मानना । उ० गाधी जी मामी पीने वालो से घृणा करते थे ।

मायके की जूती मे खुशबू आना–मायके की किसी भी चीज़ का अच्छा लगना ।

माया जोडना–रुपया जमा करना । उ० जब एक दिन मर ही जाना है तो माया जोडने से क्या लाभ ?

मारकडे की आयु होना–बहुत बडी आयु होना । जल्दी न मरना । उ० उस बुढिए की आयु तो मारकडे की आयु हो गई है, आज दो साल से चारपाई पर है, पर मरती नही ।

मार खाना–१ घाटा सहना । उ० वहाँ जाकर कुछ रुपयो की मार हमने भी खाई । २ पीटा जाना । उ० आज बडी भारी गलती हो गयी है, घर पहुँचने पर मार खानी ही पडेगी ।

मारग मारना–रास्ते मे राहगीरो को लूटना । उ० मारग मारना सबसे बडा पाप है ।

मारग लगना–१. राह लेना, जाना । उ० तुम्हे हम लोगो के झगडे से क्या मतलब, तुम अपने मारग लगो । २ काम करना, काम पकडना । उ० कोई मारग तो लगो या यो ही खाना मिलेगा ।

मारग लेना–दे० 'मारग लगना' ।

मारते-मारते अँचार कर कर देना–बहुत मारना ।

मारते-मारते गठरी बना देना–बहुत ज्यादा मारना ।

मारते-मारते भुरकुस कर देना या निकाल देना–बहुत मारना।

मार बैठना–१ पीट देना । उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मार बैठूंगा । २ खा जाना, ले बैठना, न देना । उ० वह मेरे ५०० रु० मार बैठा ।

मार-मार कर वैद्य बनाना–१ किसी अयोग्य को ज़बर्दस्ती योग्य बनाना । २. जबर्दस्ती करना ।

मार मारना–खुदकशी करना । आत्महत्या करना । उ० मैंने कहा तग हूँ मार मरूँ क्या करूँ, हँस के लगे कहने हाँ कुछ तो किया चाहिए ।

मार-मार करना–१ जल्दी मचाना । उ० मार-मार करके तुमने मेरा काम बिगाड दिया । २ छिः-छि करना, पसद न करना । उ० तुम्हारा यह काम सुन कर सभी मार-मार करेंगे ।

मार-मार किये जाना–कोशिश किए जाना, कोशिश मे कसर न रखना । उ० जीत और हार तो ईश्वर के हाथ है, परतु अपनी तरफ से मार-मार किये जाओ ।

मार मे जाना–रुपया डूबना, रुपये का मारा जाना । उ० तुम्हारा रुपया कुछ मार मे तो नही गया ।

मार लाना–चुरा लाना । नाजायज़ तरीके से कुछ लेकर भाग आना । उ० वह लाखो रुपये मार लाया ।

मार लेना–१ जीत लेना । ले लेना । उ० तुमने तो सौ की चीज़ पचास मे मार ली । २. चुरा लेना । उ० मैं कितना भी होशियार हूँ, तुम कुछ न कुछ मार ही लाते हो ।

मार से भूत भागना–मार या पीटे जाने से ससार मे सभी का डरना । उ० मार से भूत भागता है, तुम तो आदमी ही हो । ज़रा ठीक मे रहो ।

मारा जाना–१ धन न मिलना । उ० इस बैंक मे मेरे भी १००० रुपये मारे गये । २ मार डाला जाना । उ० इस झगडे मे मेरा भाई भी मारा गया । ३ परेशान किया जाना । (अशिष्ट प्रयोग)

मारा पडना–कत्ल होना । उ० मारा पडा मैं जुम्बिशे अबरू से बेगुनाह, रुतबा शहीद का तेरी शमशीर मे हुआ ।

मारा फिरना–१. आवारा फिरना । २. वाही-तबाही फिरना । ३ मारा-मारा फिरना । उ० या खुदा पहुँचा 'तजम्मुल' को मदीना की तरफ, हिंद मे मारा फिरे बेज़ोर बेज़र कब तलक ?

मारा-मारा करना–१. खूब दौड-धूप करना । २ परिश्रम करना । ३. जल्दी मचाना ।

मारा-मारा फिरना—ठोकर खाना, वेकार इधर-उधर घूमना। उ० क्यो दिन भर मारे-मारे फिरते हो, कही कुछ काम करो।

मार्के का काम—महत्त्वपूर्ण काम। उ० यह तो तुमने बडे मार्के का काम किया।

मार्के की बात—खास वात, महत्त्वपूर्ण बात। उ० यह तो तुमने वडे मार्के की वात कही।

मार्ग का दीपक—पथ-प्रदर्शन।

मार्ग खुलना—क्रम चल पडना।

मार्ग में रोडे बिछाना—प्रगति और विकास मे बाधक बनना।

माल उडा देना—माल बहुत खर्च करना या गँवा देना। उ० तुमने पिता के मरते ही सारा माल उडा दिया।

माल उगलवा लेना—गायब धन ले लेना। उ० चाहे वह जैसे भी दें, मैं अपना सब माल उगलवा लूंगा।

माल उडाना—१ माल हडप लेना। उ० उसने दूकान से काफी माल उडा लिये। २ बढिया खाना। उ० आज बरात मे खूब माल उडाया।

माल काटना—१ पैसा कमाना। उ० इस नौकरी मे तो खूब माल काट रहे हो। २. अच्छी चीजो का रसास्वादन करना। उ० खूव माल काटने को मिल रहा है, इसी से लाल हो गए हो। ३ माल या पैसा चुराना। ४ सुदरियों के साथ विहार करना।

माल चीरना—१ डरा कर माल ले लेना। उ० वच्चो से क्यो माल चीरते हो? २ नाजायज़ तरीके से रुपया कमाना।

माल-टाल—१ सपत्ति। उ० उसके पास खूव माल-टाल है। २ अच्छा खाना। पकवान। उ० आज दावत मे खूब माल-टाल मिलेगा।

माल तीर करना—किसी बहाने किसी दूसरे का माल अपनी जगह पहुँचा देना। उ० उसका सब माल तीर कर दो, फिर देखा जायगा।

माल निगलना—किसी का धन हडप लेना। उ० वह दूसरो का माल बहुत जल्दी निगल जाता है।

माल पचाना—धन हज़म करना। माल, धन या रुपया इस प्रकार रख लेना कि किसी को पता न चले। उ० इतनी वडी चोरी का माल पचाना आसान काम नही है।

माल पी जाना—दे० 'माल पचाना'।

माल-मता—धन। उ० मेरा सब माल-मता लेकर चोर भाग गया।

माल-मलीदा उड़ाना—मौज से खाना, पीना और आराम करना।

माल मारना—दूसरे का धन दवा वैठना। उ० क्यो उसका माल मारते हो?

माल हजम करना—दे० 'माल पचाना'।

माला चढाया जाना—सम्मान और महत्त्व मिलना।

माला फेरना—भजन करना। उ० आजकल के साधु दिन को माला फेरते हैं और रात को चोरी करते हैं।

मावा निकालना या निकाल देना—खूव पीटना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मावा निकाल लूंगा।

माशा-तोला होना—तोल मे एकदम पूरा होना। उ० उसकी दूकान की चीज़ें माशे-तोले होती हैं।

माशा भर—तनिक सा, वहुत थोडा।

मास नोचना—१ परीशान करना। उ० हम गरीव का मास नोचने से आपको क्या मिलेगा? २ तग करके लेना। उ० मास नोचकर वसूल किया गया धन भला किसके काम आयगा?

मास नोच-नोच कर खा जाना—दे० 'मास नोचना'।

माहुर की गाँठ—१ विष से भरा, वडा जहरीला। उ० यह ओपधि माहुर की गाँठ है। २ व्यग्य या कटुवचन वोलने वाला मनुष्य। ३ वडा चालवाज़ और फितूरी।

मिज़ाज आना—१ अभिमान होना। उ० थोडा धन होते ही उसे मिज़ाज आ गया। २ क्रोधित होना।

मिज़ाज खराव होना—क्रोधित होना। उ० तुम्हे देखते ही उसका मिजाज खराव हो गया। २ रंज होना। दुःखी होना। ३ पागल होना। उ० आजकल उनका मिज़ाज खराब है।

मिज़ाज गर्म होना—१ पागल होना। २ क्रोधित या गुस्से मे होना।

मिज़ाज न मिलना—वहुत गर्वीला होना। उ० आजकल उसका मिज़ाज ही नही मिल रहा है।

मिज़ाज पाना–१ स्वभाव जानना। उ० वडे आदमियो का मिज़ाज पाना बहुत कठिन है। २ किसी विशिष्ट समय मे मन की स्थिति जानना। उ० मिज़ाज पाकर बात चलाना, नही तो कही गडबड न हो जाय।

मिज़ाज-पुर्सी करना–१ खूब मारना। २ कुशल-समाचार पूछना।

मिज़ाज पूछना–१. ख़बर लेना। उ० अरे कभी-कभी उनका मिज़ाज भी पूछ लिया करो।

मिज़ाज बिगडना–दे० 'मिज़ाज खराब होना'।

मिज़ाज बिगाडना या बिगाड देना–१ क्रोध करना। उ० बात-बात मे मिज़ाज बिगाडना ठीक नही है। २ ऐंठ निकालना, दिमाग ठीक कर देना। उ० चुप रहो, नही तो दो थप्पड मे मिज़ाज बिगाड दूँगा। ३ चढा देना, वढावा देना। उ० तुम्ही ने उसका मिजाज बिगाड दिया है, नही तो उनकी हिम्मत नही थी कि हम सबको ऐसे डाँटते।

मिज़ाज मे आना–१ समझ मे आना। उ० आपकी बात मेरे मिज़ाज मे आ गई। २ घमंड करना। उ० आप आजकल मिज़ाज मे आ गए हैं। जात तो दूर रही सलाम तक नही लेते।

मिजाज सीधा होना–घमड मे चूर होना। उ० एक लाठी लगते ही मिज़ाज सीधा हो जायगा।

मिजान करना–दे० 'मीज़ान लगाना'।

मिट जाना–१. फिदा होना। २ अत्यधिक महत्त्व प्रदान करना।

मिट्टी अजीज़ होना–स्थान प्यारा होना। उ० मेरे लिए यहाँ की मिट्टी अजीज़ है।

मिट्टी उठना–शव का शवयात्रा के लिए उठाया जाना।

मिट्टी करना या कर देना–वरबाद करना। उ० उसने बाप-दादो की सारी जायदाद मिट्टी कर दी।

मिट्टी की तरह फेंकना–अत्यन्त तुच्छ समझ कर उपेक्षा करना।

मिट्टी के माधो–मूर्ख।

मिट्टी के शेर–वनावटी बहादुर।

मिट्टी के मोल–वहुत सस्ता। उ० आजकल मिट्टी के मोल तो कुछ भी नही है।

मिट्टी खराव करना–१ बरबाद करना। उ० उसने ही सारे परिवार की मिट्टी खराव की। २ बुरी हालत करना। उ० इतनी दूर पैदल चलाकर मेरी मिट्टी मत ख़राव करो।

मिट्टी ख़राव होना–१ दुर्दशा होना। उ० उस बुढिया की मिट्टी खराव हो रही है। २ इज्ज़त जाना। नीचे गिरना। ३ जिंदगी चौपट होना।

मिट्टी-खराबी–वरवादी। विनाश। उ० यहाँ मेरी मिट्टी-खराबी हो रही है।

मिट्टी छुए सोना होना–साधारण चीज़ भी छू जाने से अमूल्य हो जाना। भाग्यवान् होना। उ० आजकल उसका क्या पूछना है, उसके मिट्टी छुए सोना होता है।

मिट्टी ठिकाने लगना या लग जाना–लाश का जलाया जाना। उ० वेचारा पचखा मे मरा था, आज कही जाकर तो उसकी मिट्टी ठिकाने लगी।

मिट्टी डालना–१ अवगुणो को छिपाना। उ० अवगुण तो सभी मे होते हैं, पर भले आदमी उन पर मिट्टी डालते रहते हैं और असभ्य खोले रहते है। २ छोड देना। उ० मिट्टी डालो ऐसी आदत पर। ३ मरने के बाद गाड देना। खोद कर तोप देना। ४ खोद कर गाडना। [यह गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है।]

मिट्टी ढह जाना–१ बुढापे के निशान दीखना। उ० उसकी मिट्टी अब ढह गई। २ मरने के करीब होना। ३ मर जाना। उ० भगवान करे, तुम्हारे मिट्टी ढह जाय। [यह एक प्रकार की गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।]

मिट्टी पकडना–पृथ्वी पर जम जाना। उ० जब वह मिट्टी पकड लेता है तो कोई लाख करे नही उठता। मैं मिट्टी पकड लूंगा तो मुझे कौन पछाड सकता है। [इसका प्रयोग पहलवानो की भाषा मे ही विशेष होता है।]

मिट्टी पलीत करना–दे० 'मिट्टी खराब करना'।

मिट्टी मे मिलना या मिल जाना–१ बरबाद होना। उ० ससार की सभी चीजें मिट्टी मे मिल जाने वाली है। २ मरना। उ० आज वह वेचारा मिट्टी मे मिल गया। ३ वेइज्ज़त होना। ४ नीचे गिरना।

मिट्टी मे मिलाना—नष्ट करना । समाप्त करना । उ० अपनी बनी इज्ज़त क्यो मिट्टी मे मिलाते हो ?

मिट्टी होना—१ मैला होना । उ० लडके के सब कपडे मिट्टी हो गये । २ ख़राव होना, वरबाद होना । तुम्हारी वजह से मेरा सब काम मिट्टी हो गया । ३ मर जाना । उ० एक दिन सभी मिट्टी होंगे ।

मिठा-मिठा कर बोलना—बहुत नम्रता और प्रेम से बातें करना ।

मिती काटना—ब्याज काटना । उ० इस रुपये मे से मिती काट कर वाकी लौटा दो ।

मिती चढाना—तिथि लिखना । तारीख डालना । उ० रजिस्टर मे इस मास की मिती चढा दो ।

मिती पुगना—दे० 'मिती पूजना' ।

मिती पूजना—हु डी के रुपये देने का आखिरी दिन आना । हुडी की मियाद का ख़त्म होना । उ० आज इस हु डी की मिती पुज गई, रुपये ले आओ ।

मिन-मिन करना—दे० 'मगर-अगर करना' ।

मियाँ-मिट्ठू बनाना—१. प्रशसा करके फुला देना । उ० वह सबको मियाँ-मिट्ठू बना कर अपना काम निकाल लेता है । २ तोते की तरह बिना समझाये शब्द याद करा देना । उ० वह सीखें हैं जो बोलियाँ सब सिखा दें, मियाँ-मिट्ठू अपना सब उसको बना दें ।

मियाद काटना—जेल काटना । सज़ा के दिन काटना । उ० मियाद काट कर मुझे निकलने तो दो, बच्चू की फिर से टाँग न तोडी तो मेरा नाम नही ।

मियाद बोलना—सज़ा के दिन सुनाना । उ० जज ने आज उसे चार वर्ष की मियाद बोल दी ।

मिर्च लगना—दे० 'मिर्चे-सी लगना' ।

मिर्चे-सी लगना—बुरी लगना । बहुत कड़ुई लगना । उ० उसकी बात मुझे मिर्चे-सी लगती है ।

मिलने से रहना—न मिलना । उ० यह चीज़ तुम्हें मिलने से रही ।

मिलाप रखना—मेल रखना । उ० भाइयो से मिलाप रक्खो ।

मिला लेना—अपने पक्ष मे कर लेना ।

मिली-भगत होना—किसी दुरभिसंधि मे योग देने वाला होना ।

मिल्लत का—मिलनसार । उ० वह इतना वडा आदमी होते हुए भी वडी मिल्लत का है । मिल्लत के आदमी बड़े भाग्य से मिलते हैं ।

मिसरा लगाना—१ समस्या-पूर्ति करना । उ० वह कवि तो है, पर उसे मिसरा लगाना एकदम नही आता । २. किसी वात के जोड की फवती वात या किसी शेर पर फवता शेर कहना । उ० उस दिन तो तुमने ऐसा मिसरा लगाया कि वे दग रह गए ।

मिसरी की डली—बहुत मीठी । उ० जो बात कहो साफ हो, सुथरी हो, मिसरी कीं डली हो ।

मिसरी की डली दिखाकर विष देना—धोखा देना, कहना कुछ करना कुछ ।

मिसिल उठाना—पुस्तक के अलग-अलग फर्मों को सीने के लिए एक क्रम से लगाना । उ० आज मिसिल उठा रहा हूँ, कल तक शायद पूरी कर दूँ । [इसका प्रयोग दफ्तरियों की भाषा मे होता है ।

मिसिली चोर—बहुत भारी चोर । उ० वह मिसली चोर है ।

मिस्सी-काजल करना—बनाव-चोनाव करना । सिंगार-पटार करना । उ० बहू तो रात-दिन मिस्सी-काजल करने मे ही रहती है ।

मीज़ान लगाना—अकों को जोडना । उ० सब अकों का मीज़ान लगा कर जल्दी दो ।

मीजा पटना—स्वभाव मिलना । उ० बिना मीजा पटे मित्रता ठीक नही चलती ।

मीजा मिलना—दे० 'मीजा पटना' ।

मीठा-ठग—प्रिय बाते करके ठग लेने वाला ।

मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थू करना—अच्छा-अच्छा ले लेना और बुरी चीजों को छोड देना ।

मीठा मुँह करना—दे० 'मुँह मीठा करना' ।

मीठी आँच पर पकाना—१. भीतर-भीतर कष्ट पहुँचाना । २ थोडी आँच पर धीरे-धीरे पकाना ।

मीठी होना या हो जाना—१ लाभ होना । उ० मुझे आपके यहाँ आने मे क्या मीठा है, जो रोज़ आऊँ ? २ अच्छा, मधुर या मृदुल

होना। उ० अब उसका स्वभाव बहुत मीठा हो गया।

मीठी चुटकियाँ उड़ाना—दे० 'मीठी चुटकी लेना'।

मीठी चुटकी लेना—१. मधुर तथा विनोदमय, किन्तु कटु व्यंग्य करना। मीठी चुटकी लेना उर्दू वाले खूब जानते हैं। २ हँसी उडाना, लिहाडी लेना। उ० आने भी दो, ऐसी मीठी चुटकी ली जायगी कि फिर आने को नाम न लेंगे।

मीठी छुरी—कपटी। ऊपर से मीठा पर भीतर से छुरी की तरह तीखा और कटु। उ० आप तो मीठी छुरी हैं, आपका मैं विश्वास नही कर सकता।

मीठी छुरी मारना—१ मधुर शब्दो मे तीखा व्यग्य करना। उ० ऐसी मीठी छुरी मारी कि दिल मसोस कर रह गए। २ ऐसी नीति वरतना जो ऊपर से तो ठीक, भीतर से कटु हो। उ० उससे सचेत रहना, वह मीठी छुरी मारता है।

मीठी नींद सोना—१ सुख से सोना। उ० जब से मेरी परीक्षा समाप्त हो गई, मैं खूब मीठी नीद सोता हूँ। २. ऐसी नींद सोना, जिसमे अपने किसी बहुत प्रिय का मधुर स्वप्न दिखाई दे।

मीठी मार—१. भीतरी या अन्दर की चोट। उ० उसे मीठी मार मारो ताकि कोई कुछ कह भी न सके। २ मधुर ज़बान मे किया गया तीखा व्यग्य। उ० उसकी मीठी मार सब नही समझ सकते।

मीन की सनीचरी होना—सभी के लिए बुरे दिन आना। उ० आजकल पूरे ससार पर मीन की सनीचरी है।

मीन-मेख निकालना—१ दोप निकालना। उ० तुम सबके काम मे मीन-मेख निकालना ही जानते हो कि कुछ करना भी।

मीनाकारी छाँटना—१ वेकार दोप निकालना। उ० किसी दूसरे के काम मे मीनाकारी छाँटना ठीक नही। २ वडी बारीकी के बारे मे वात करना। उ० मीनाकारी न छाँटिए, मैं आपकी गहराई नाप चुका हूँ।

मुँडकरी मारना—दु खी होकर वैठना। घुटनो मे सिर देकर वैठना। उ० क्या वात है कि आप आज मुँडकरी मारे वैठे हैं।

मुँडवाना—नुकसान या घाटा करवाना।

मुंतकिल करना—दूसरे को देना। उ० उसने अपना सारा धन भतीजे को मुतकिल कर दिया।

मुँह आना—१ हुज्जत करना। वाद-विवाद करना। उ० दुष्टो के मुँह आना मूर्खता है। २ मुँह मे छाले पडना। उ० मुँह आ गया है, कुछ खाए नही बनता।

मुँह उजला करना—१ मान हासिल करना। इज्जत पाना। उ० यह काम करके उसने अपना मुँह खूब उजला किया। २ इज्जत वढाना। उ० उसका मुँह मैंने खूब उजला किया।

मुँह उजला होना—१ प्रतिष्ठा रह जाना। उ० इस चोरी से जान छूटे तो मुँह उजला हो। २ इज्ज़त या आवरू का वढना। उ० उसका तो दिन-पर-दिन मुँह उजला हो रहा है।

मुँह-उजाले—बहुत तडके। उ० विद्यार्थियो को मुँह-उजाले उठकर पढना चाहिये।

मुँह उठा कर कह देना—जो मुँह मे आवे, कह देना। उ० मुँह उठाकर कह देना मूर्खता है। वात सोच-समझ कर कहनी चाहिये।

मुँह उठाये चले जाना—निडर या वेधडक चले जाना। उ० आप वहाँ मुँह उठाये चले जाइये, कोई रोक नही है।

मुँह उतरना—१ चेहरे पर रौनक न रहना। उदासी छाना। उ० आजकल क्यो तुम्हारा मुँह उतरा हुआ है, क्या कुछ तवीयत खराब है?

मुँह करना—१ लिहाज करना। उ० अपने वडो का मुँह करना चाहिये। २ देखना। उ० उधर मुँह करो।

मुँह का आग उगलना—अप्रिय या कटु वचन कहना।

मुँह का उतार-चढ़ाव—चेहरे का भाव-परिवर्तन।

मुँह का कच्चा—१ झूठा। उ० वह मुँह का कच्चा है, उसका कौन विश्वास करे? २ सबसे कह देने वाला। उ० वह मुँह का कच्चा है, उससे यह बात न कहो। ३ घोडा जो लगाम का झटका न सह सके, और बहुत जल्द जिसके मुँह मे घाव हो जाय।

मुँह का कड़ा—१ सख्त, तेज़ या कडी ज़बान वाला। उ० वह मुँह का कडा है, उससे मैं

कुछ नही कह सकता। २. घोडा जो सवार के इशारे के मुताबिक चले। उ० मुंह के कडे घोडे बहुत कम मिलते हैं।

मुंह का कौर—आसान काम।

मुंह का कौर छिन जाना—रोज़ी छिन जाना।

मुंह का टांका टूटना—कुछ कह पाना। उ० भला बोले तो मुंह का टाँका तो टूटा।

मुंह का पानी उतर जाना—अपमानित या लज्जित होना।

मुंह काला करना—१. बदनामी करना। उ० आपने ही मेरे परिवार का मुंह काला किया। २ अनुचित सहवास करना। उ० तुम्हे उसके साथ मुंह काला करते शर्म नही आई ?

मुंह की खाना—१. बुरी तरह गिरना या हारना। उ० तुम तो ऐसी मुंह की खाओगे कि कुछ दिन तक याद रखोगे। २ वाद-विवाद या बातचीत मे परास्त होना। ३ धोखा खाना। ४ प्रतिष्ठा खोना, बेइज्ज़त होना। ५ लज्जित या शर्मिन्दा होना। उ० ऐसी मुंह की खाने पर भी जब तुम नही चेते तो इस जन्म मे चेतना सभव नही ज्ञात होता।

मुंह की बात छीनना—जिस बात को दूसरा कहने वाला हो, उसी को पहले ही कह देना। उ० वार्त्तालाप मे मुंह की बात छीनना असभ्यता है। उसे मुंह की बात छीनना ही आता है।

मुंह की मक्खी न उड़ा सकना—१ बहुत कमज़ोर हो जाना। कमज़ोरी के कारण हाथ भी न उठा सकना। उ० दस दिन की ही बीमारी मे वह ऐसा हो गया है कि मुंह की मक्खी नहीं उडा सकता। २ लकवा आदि के कारण हाथ आदि अगो का बेकार हो जाना।

मुंह की लाली रखना या रह जाना—प्रतिष्ठा बनाये रखना या बना रह जाना।

मुंह के तोते उड जाना—कुछ बोला न जाना। उ० बाप के सामने तो मुंह के तोते उड जाते हैं, और माँ से लडता है।

मुंह के बल गिरना—१ धोखा खाना। उ० वह उसकी बात मे आकर ऐसा मुंह के बल गिरा कि कहा नही जाता। २ ठोकर खाकर गिरना। ३ शर्मिन्दा होना। ४ इज़्ज़त गँवाना।

मुंह के भाव पढना—चेहरा देखकर व्यक्ति के भावो को जान लेना।

मुंह ख़राब होना—गदी बात कहना, गाली देना। उ० आप ऐसे सज्जन व्यक्ति को मुंह नही ख़राब करना चाहिये।

मुंह खिलना—प्रसन्न होना।

मुंह खुलना या खुल जाना—१ उद्दडता से बोलने की आदत पडना। उ० जिसका मुंह खुल गया, फिर बन्द होना कठिन है। २ मर जाना। ३ बोलना, बोलने की हिम्मत पडना। उ० उनके सामने तो मेरा मुंह ही नही खुलता।

मुंह खुश्क हो जाना—दे० 'मुंह सूखना'।

मुंह खोल कर रह जाना—१. कहते-कहते शरमा कर चुप हो जाना। उ० क्यो आप मुंह खोल कर रह गये, कहिये क्या बात है ? २. अवाक् या आश्चर्यचकित रह जाना।

मुंह खोलना—१ गाली देना। उ० इस प्रकार मुंह खोलते तुम्हे शर्म नही आती ? २. माँगना। उ० सबसे मुंह खोलना ठीक नही। ३ घूंघट हटाना। उ० वह मुंह खोलकर तुम्हे देख रही है।

मुंह गिर जाना—उदास हो जाना।

मुंह चलना—१. व्यर्थ की बातें निकलना। उ० उसका मुंह हर समय चलता रहता है। २ खाते रहना। उ० लडको का मुंह हरदम चलता रहता है। ३ कै होना। उ० आज मेरे बच्चे का मुंह चल रहा है।

मुंह चढ़ाना—१ गुस्सा होना। उ० बहू तो बात-बात मे मुंह चढा लेती है। २ मुंह लगाना। उ० उस नीच को मुंह न चढाओ, नही तो पछताओगे।

मुंह चलाना—१ बकना, बडबडाना। उ० वह रात-दिन मुंह चलाया करता है। २ खाना खाना। ३. गाली देना। उ० ज्यादा मुंह चलाते हो तो मार खा जाओगे।

मुंह चाटना—खुशामद करना। उ० वह बडो का मुंह चाटकर अपना काम कर लेता है।

मुंह चिढाना—चिढाने को मुंह टेढा करके दिखाना। उ० लडके एक-दूसरे को बहुत मुँह चिढाते हैं।

मुंह चुराना—सामना न करना। उ० लेने के समय तो छाती तानकर आते हो, और देने के समय मुंह चुराते हो।

मुंह चूम कर छोड़ देना—१. लज्जित करके छोड देना। २ बहुत आगे न बढना। उ० मुंह चूम कर छोड देने वालो मे से मै नही हूँ।

मुंह छूना–१ दिखाने के लिए कहना । उ० मुंह छूते हो या सचमुच खाने चलूं । २. दिखावटी बात करना । उ० तुम्हे मुंह छूना बहुत आता है।

मुंह जरा-सा निकल आना–शर्म से चेहरा फक पड जाना, बहुत लज्जित होने ।

मुंह जहर होना–मुंह कड़ुवा होना । उ० इस दवा को खाते ही मेरा मुंह ज़हर हो गया ।

मुंह जुठारना–१. नाम मात्र को खाना । उ० अगर भूख न लगी हो तो मुंह ही जुठार लो । इतने से मुझे सन्तोष हो जायगा । २ शादी आदि शुभ कार्यों मे थोडा दही मीठा खाना ।

मुंह जोडना–नजदीक-नज़दीक मुंह करना । उ० आज वे दोनो मुंह जोड कर बात कर रहे थे ।

मुंह झटक जाना–चेहरा उतर जाना, दुर्बल हो जाना । उ० दो ही दिन की बीमारी मे उसका मुंह झटक गया ।

मुंह झुलसना–१ देकर दूर करना । उ० इसका मुंह झुलस दो, यह सुबह ही से माँग रही है । २. मुंह मे आग लगाना । [यह एक गाली है जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती है] उ० मुझसे मजाक करोगे तो मैं तुम्हारा मुंह झुलस दूंगी ।

मुंह झौंसना–दे० 'मुंह झुलसना' ।

मुंह टूट जाना–अपमानित होना, बोलती बद हो जाना ।

मुंह टेढ़ा करना–१ चेहरे से नापसदगी दिखाना । उ० मेरी खरीदी चीजें देखकर मुंह मत टेढा करो । २. घृणा प्रदर्शित करना । ३. गर्व करना ।

मुंह डालना–१ खाने की चीज पर जानवरो का मुंह लगाना । उ० देखो, बैल ने मुंह डाल दिया । २ मुर्गों का आपस मे लडना ।

मुंह ढांकना–मरने पर रोना । उ० उसके मरते ही घर के सभी लोगो ने मुंह ढांक लिये । [इसका प्रयोग केवल मुसलमान या उनके सपर्क मे आने वाले कायस्थ लोग करते हैं ।]

मुंह तक आना–१ लबालब भरना । उ० इस बरतन मे दूध मुंह तक आ गया है । २ ओठ तक आना, जबान पर आना । उ० यह बात उस समय भी मेरे मुंह तक आई थी, पर कह नही सका ।

मुंह ताकना–१ कुछ न करना । उ० मुंह ताकने मे यह काम न होगा, शुरू करो । २ पाने की आशा से मुंह जोहना । उ० वह भिखारी तुम्हारा मुंह ताकता रह गया, पर तुमने कुछ भी नही दिया । ३ टकटकी से देखना । उ० क्या मुंह ताकते हो ? ४ लज्जित या शर्मिंदा होकर देखना । उ० तुमने ऐसा डाँटा कि वह बेचारा मुंह ताकने लगा ।

मुंहतोड जवाब देना–तुरत ठीक-ठीक उत्तर देना । मुंह बद करने वाला उत्तर देना । उ० उसका मुंहतोड जवाब देना सुन कर सब लोग दग रह गए ।

मुंह तो देखो–योग्यता तो देखो । उ० पहले अपना मुंह तो देखो, पीछे इस नौकरी के पीछे पडना ।

मुंह थकना–बहुत बोलने से थक जाना । उ० आज सुबह से बोलते-बोलते मुंह थक गया, पर तुम्हारी समझ मे न आया ।

मुंह थकाना–बहुत बोलकर अपने को शिथिल करना । उ० क्यो बक-बक करके मुंह थकाते हो ?

मुंह थुथराना–मुंह फुलाना । उ० जब भी कोई काम करना होता है तो वह मुंह थुथराकर बैठ जाती है ।

मुंह दर-मुंह कहना–१ सामने कहना । उ० उसके मुंह-दर-मुंह कहो तो ठीक होगा । छिप कर कहने क्या लाभ है ? २ मुंहतोड जवाब देना । उ० मुंह-दर-मुंह कहने मे वह एक ही है ।

मुंह दिखाने लायक न रहना–ऐसी स्थिति मे पड जाना कि दूसरो का सामना न किया जा सके ।

मुंह देख कर बात करना–१ खुशामद करना । उ० मैं किसी का मुंह देखकर बात नही करता । २ पात्रता का विचार कर बात बोलना । मुंह देखकर बीडा देना । उ० मुंह देखकर बात की जाती है, भला उसे वे-ते करना उचित था ।

मुंह देखकर बात कहना–दे० 'मुंह देखकर बात करना' ।

मुंह देख कर बीडा देना–पात्रता का विचार कर किसी के साथ व्यवहार करना । आदमी का स्तर देखकर उसके साथ पेश आना । उ चतुर आदमी मुंह देखकर बीडा देते है ।

मुँह देखता रह जाना—आश्चर्य-चकित रह जाना। उ० उसकी बातें सुनकर मैं मुंह देखता रह गया।

मुँह देखना—१ सुबह चारपाई से उठते ही दर्शन होना। उ० जो आपका मुँह देख लेगा, उसे दिन भर खाना न मिलेगा। २ शीशे मे देखना। उ० मुँह तो देखो, यह रग कैसे लग गया है? ३ आश्चर्य से देखना। उ० उसकी वात सुनकर मैं मुंह देखता रह गया।

मुँह-देखे का—ऊपरी, दिखावटी, सामने का। उ० मुंह-देखे का प्रेम कोई प्रेम नही है।

मुँह धो रखना—आशा न रखना (व्यग्य तथा विनोद या क्रोध)। उ० आप मुँह धो रखें, मैं कलकत्ता से आपकी माँगी हुई सारी चीजें लेता आऊँगा।

मुँह न खोल सकना—१. कुछ न कह सकना। २ जोर न पकड सकना।

मुँह न देखना—१ घृणा, भय या शर्म से सामने न होना, न मिलना-जुलना। उ० मैं उसका मुँह नही देखना चाहता। २ घृणा करना।

मुँह न फेरना—१ इन्कार न करना। उ० वह कठिन से कठिन काम करने से भी मुँह नही फेरता। २ विमुख न होना। ३ बरावरी मे या सामने खडे रहना।

मुँह न होना—योग्यता न होना, समर्थ न होना।

मुँह निकल आना—१. चेहरा उतर जाना, कमजोर एव दुर्बल होना। उ० दो ही दिन की बीमारी मे उसका मुंह निकल आया। २ शर्मिंदगी या डर के चिह्न मुंह पर दिखाई देना।

मुँह नोच लेना—चुपकर देने या तिलमिला देने वाला उत्तर देना।

मुँह पकड़ना—बोलने देना। उ० तुम बात-बात मे अपने पिता जी का मुंह पकड लेते हो, यह ठीक नही है।

मुँह पड़ना—साहस होना। उ० जिसका मुंह पडे, वह इस शेर को पानी दे, मैं तो नही दे सकता।

मुँह पर—सामने। उ० पीठ-पीछे तो लोग किसको क्या नहीं कहते? कोई मुंह पर कहे तो बतलाऊँ।

मुँह पर आग रखना—दे० 'मुंह फूंकना'। [यह स्त्रियो की एक गाली है।]

मुँह पर कालिख पोतना—कलंकित या अपमानित करना।

मुँह पर चाँटा लगना—१ अपने किये बुरे कर्म का फल पाना। २ अपमानित होना।

मुँह पर चूना पोतना—अपमानित करना।

मुँह पर जाना—१ कहने का विश्वास करना। उ० उनके मुँह पर न जाओ। २. लिहाज करना। कहने का लिहाज करना। उ० आपके मुँह पर जाता हूँ, नही तो सबको यही ठीक कर देता।

मुँह पर थूकना—१ शर्मिन्दा करना। उ० अगर नीच काम करोगे तो सभी मुँह पर थूकेंगे। २ अशिष्टता का व्यवहार करना।

मुँह पर न रखना या रख देना—१ स्वाद भी न लेना। उ० ऐसी अच्छी मिठाई बनी थी, पर उसने मुँह पर भी नही रखी। २ नाराज होकर देना। उ० बहुत चीज वाला बना है तो ले जाकर उसके मुँह पर रख दो।

मुँह पर नाक न होना—शर्म न होना। उ० बहू के मुँह पर तो नाक ही नही है, वह घूंघट काढे क्यो?

मुँह पर पानी फिर जाना—चेहरा प्रसन्न होना। चेहरा खिल जाना। उ० परीक्षा-फल सुनते ही उसके मुँह पर पानी फिर गया।

मुँह पर फिटकार बरसना—मुख मलिन होना, चेहरा उतरा हुआ होना। उ० क्यो मुँह पर फिटकार बरस रही है? कोई खास बात हो गई है क्या?

मुँह पर फेंकना—नाराजी से देना। उ० रोज अपनी पुस्तक पर ताव दिखलाता था, आज मैंने उसके मुँह पर फेंक दी।

मुँह पर बडाई करना—किसी की उपस्थिति मे उसकी तारीफ करना।

मुँह पर बरसना—चेहरे से स्पष्ट मालूम होना। उ० मुँह पर बरस रहा है कि वह खूनी है।

मुँह पर बसन्त खिलना—दे० 'मुँह पर वसन्त फूलना'।

मुँह पर वसन्त फूलना—१ चेहरा पीला होना उ० आजकल क्यो आपके मुँह पर वसन्त फूल रहा है। २ चेहरा प्रसन्न और प्रफुल्लित होना। उ० हाँ शादी हो गई, अब मुँह पर क्यो न वसन्त फूले!

मुँह पर बात आना—१ कुछ कहने की इच्छा होना। उ० मुँह पर बात आई, पर फिर शर्मा गई और न कह सकी। २ कहना। उच्चरित करना। उ० गन्दी बात मेरे मुँह पर नही आ सकती। ३ सयोग से बात का निकल जाना। उ० मुँह पर बात का निकल जाना। उ० मुँह पर बात आ गई, अब क्या कहूँ ?

मुँह पर बारह बजना—दे० 'मुँह पर फिटकार बरसना'।

मुँह पर मारना—दे० 'मुँह पर फेकना'।

मुँह पर मुरदनी छाना—१ चेहरा पीला पड जाना। उ० उसके मुँह पर मुरदनी छाई हुई है। २ लज्जा या भय के कारण मुँह पर उदासी छाना। ३. बहुत कमजोरी होना। ४ रक्त की कमी होना। ५ मृत्यु के चिह्न दिखाई देना।

मुँह पर मोहर करना—दे० 'मुँह बन्द करना' तथा 'मुँह पकडना'।

मुँह पर रखना—१. तमाचा मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मुँह पर रख दूँगा। २ सामने रखना। उ० किताब ले जाकर उसके मुँह पर रख दो (क्रोध मे प्रयुक्त)।

मुँह पर लाना—कहना। उ० आज से ऐसी गदी बात मुँह पर न लाना।

मुँह पर स्याही पुत जाना—अपमानित या कलकित होना।

मुँह पर हवाई उडाना—शर्म या डर से मुँह के रग का बदरग हो जाना। उ० मुझे देखते ही उनके मुँह पर हवाई उडने लगी।

मुँह पर हाथ रखना—दे० 'मुँह पकडना'।

मुँह पसार कर दौडना—बहुत लालच के साथ किसी की चीज को लेने के लिए बढना। उ० क्या मुँह पसार कर दौड रहे हो, शर्म नही आती ?

मुँह पसार कर रह जाना—दे० 'मुँह बाकर रह जाना'।

मुँह पाट होके पडना—मुँह छिपाकर औंधे पडना।

मुँह पाना—१ रुख देखना। उ० मालिक का मुँह पाना तो कुछ अर्ज़ करना। २ सम्मति पाना। उ० उनका मुँह तो पा गया हूँ, अब कहो तो कर डालूं।

मुँह पिटाना—१. चूल्हे-भाड मे जाना। उ० जाओ, अपना मुँह पिटाओ। मुझसे क्या मतलब ? २. बुरी दशा को प्राप्त होना। उ० तुम अपना मुँह पिटाओ, मुझसे क्या मतलब ? [रोब या घृणा मे इसका प्रयोग किया जाता है।]

मुँह पीला पड जाना—१ उदास हो जाना। २. भय या लज्जा के कारण मुँह का श्रीहीन हो जाना ३ घबरा जाना।

मुँह-पेट चलना—कै-दस्त होना। उ० आज सुबह ही से उसका मुँह-पेट चल रहा है।

मुँह फक़ होना—दे० 'मुँह पर हवाई उडना'।

मुँहफट—बिना कुछ ध्यान दिये अश्लील और कडई बात कह देने वाला। उ० अगर वह इसी तरह मुँहफट रहा तो कही मार भी खा जायगा।

मुँह फटना—१ सूखी हवा या खून की खराबी से ओठ या पूरे चेहरे का फटना। उ० मुँह फटा है, हँसा नही जाता। २ चूने से मुँह मे घाव होना। उ० मेरा मुँह फट गया है, इसलिए कुछ खा-पी नही पाता।

मुँह फाड कर कहना—बेहयाई से कहना। उ० वह ऐसा नीच है कि हर एक बात मुँह फाड कर कहता है।

मुँह फाड देना—१ पराजय स्वीकार कर लेना। २. दीन-हीन बन जाना।

मुँह फाड़ना—१ आश्चर्य से देखना। २ बहुत अधिक चाहना या माँग करना। ३. असभ्यता मे बोलना।

मुँह फिर जाना—दे० 'मुँह फिरना'।

मुँह फिरना—१ मुँह टेढा हो जाना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो ऐसा तमाचा मारूँगा कि मुँह फिर जायगा। २ लकवा मार जाना। उ० बेचारे का मुँह आज दो मास हुए, फिर गया। ३ दे० 'मुँह मोहठ जाना'।

मुँह फुकाना—मर कर मुँह मे आग लगवाना। उ० तुम तो मुँह फुकाने लायक हो। [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ करती हैं।]

मुँह फुला कर बैठना—दे० 'मुँह फुलाना'।

मुँह फुलाना—रुष्ट होना। नाराज होना। उ० सही-सही बताओ, क्यो मुँह फुलाये हो ?

मुंह फूंकना—१ मुर्दे का मुंह जलाना। उ० शव जलाया नहीं गया। मुंह फूंक कर फेंक दिया गया। २. मुंह झुलसना। उ० मुझसे मजाक करोगे तो तुम्हारा मुंह फूंक दूंगी। [यह एक गाली है जिसका प्रयोग स्त्रियां करती हैं।]

मुंह फूलना—क्रोध आना। उ० तुम्हारा वात-वात मे मुंह फूल जाता है।

मुंह फेरना—१. विमुख होना। उ० मेरे मुंह फेरते ही वे चले गये। २ हराना। उसने शत्रु का मुंह फेर दिया। ३. दूर होना। उ० बुरी आदतो से मुंह फेरो। ४ उपेक्षा दिखाना। उ० वह तुमसे मिलने आया है और तुम मुंह फेर रहे हो? ५ घृणा करना, घृणा से मुंह दूसरी ओर कर लेना।

मुंह फैलाना—१ लालच करना। उ० ज्यादा मुंह मत फैलाओ, जो भाग्य होगा, वही मिलेगा। २ जम्हाई लेना। उ० क्या अशिष्ट की तरह मुंह फैला रहे हो, रूमाल क्यों नहीं लेते?

मुंह वन्द कर देना—हराना। उ० मैंने शास्त्रार्थ मे उनका मुंह वद कर दिया। दे० 'मुंह वद करना'।

मुंह वन्द करना—१ चुप होना। उ० अपना मुंह वद करो, नही तो सारा मामला विगड जायगा। २ चुप कराना, न वोलने देना। उ० इन सवका मुंह वद करो। ३ हारना। उ० शास्त्रार्थ मे हमारे पडित जी को तो अपना मुंह वंद करना पडा।

मुंह वन्द कर लेना—१. कुछ न वोलना। उ० जव भी कुछ पूछता हूँ, वह मुंह वद कर लेता है। २. किसी दूसरे को न वोलने देना। उ० उसका मुंह क्यो वद कर लेते हो?

मुंह वन्द होना—१. चुप हो जाना। २. हार जाना।

मुंह बन जाना—१ ऐसा चेहरा वनना जिससे नाराजगी प्रकट हो। उ० छोटी-छोटी वात से भी उनका मुंह वन जाता है। २ सूरत विगड जाना, मुंह चिन्चुक जाना या कमजोरी के कारण सट जाना। उ० एक ही दिन की वीमारी मे मुंह वन गया। ३ शर्मिन्दा हो जाना।

मुंह बनाना—दे० 'मुंह वन जाना'।

मुंह वांध कर वैठना—मौन धारण कर वैठना। उ० जहाँ किसी का व्याख्यान होता हो, वहाँ मुंह वांध कर वैठना चाहिये। मुंह वांध कर वैठने से काम न चलेगा, कुछ कहना भी पड़ेगा।

मुंह वाकर दौड़ना—दे० 'मुंह पसार कर दौडना'।

मुंह वाकर रह जाना—१ चकित हो जाना। उ० मेरे काम को देख कर वहुत से लोग मुंह वाकर रह गये। २ शरमा कर रह जाना। उ० कुश्ती मे हारने पर वह मुंह वाकर रह गया।

मुंह वाये होना—१. उत्कठित होना। २ सामने प्रस्तुत होना, वहुत चाहना।

मुंह वा देना—१. आश्चर्य करना। उ० ऐसा तमाशा दिखलाऊँगा कि मुंह वा दोगे। २ २ मर जाना। उ० एक ही लाठी मे उसने मुंह वा दिया। ३ लज्जित हो जाना।

मुंह वाना—१ लेने की इच्छा करना। उ० हर एक चीज के लिए तो तुम मुंह वाते हो। २ जम्हाई लेना। ३ अशिष्टता से ठहाका मारना। ४. लज्जित होने पर भी हँसना।

मुंह विचकाना—१ घृणा या असतोष प्रकट करना। २ उपेक्षा करना।

मुंह विगडना—१ चेहरा खराव होना। उ० चेचक निकलने से उसका मुंह विगड गया। २ मुंह का स्वाद खराव होना। उ० दवा खाते ही मेरा मुंह विगड़ गया। ३ घृणा होना, न चाहना। उ० तुम्हे देखते ही उसका मुंह विगड जाता है, वह तुम्हे नही चाहता।

मुंह विगाडना—१ मार कर चेहरा विगाडना। उ० मगर ज्यादा शरारत करोगे तो मुंह विगाड दूंगा। २ असतोप प्रकट करना। उ० मुंह क्या विगाडते हो और ले लेना। ३ मुंह का स्वाद खराव करना। उ० आपने मुझे दवा खिला कर मेरा मुंह विगाड दिया। ४ गर्व खतम करना। उ० अगर ज्यादा वढ-वढ कर वात करोगे तो यही मुंह विगाड दूंगा। ५ नाराजी प्रकट करना। ६ घृणा प्रदर्शित करना। ७ लज्जित करना। ८ लालची वनाना।

मुंह वुरा वनाना—दे० 'मुंह विगाडना'।

मुंह भर आना—१ जी ललचाना। उ० मिठाई देखकर मेरा मुंह भर आया। २ कै आना।

उ० आज सुवह ही से मेरा मुँह भर आ रहा है।

मुंह भर के—१. जितना जी चाहे, अच्छी तरह । उ० मुँह भर के खा लो, किसी चीज की कमी नही है। २ लवालव। उ० इतना ही दूध उस गिलास मे मुँह भर के हो जायगा ।

मुंह भरना—१ खूव खिलाना । उ० उसका मुँह भर दो तो उसे सतोष होगा । २ घूस देना । उ० उसका मुँह खूव भरो तो वह काम करेगा । ३ बोलने न देना । उ० यह तुम्हारी मुँह भरने की आदत मुझे पसन्द नही ।

मुंह-भराई देना—घूस देना, रिश्वत खिलना, चाँदी का जूता मारना । उ० आजकल विना मुंह-भराई दिये अपना काम भी नही होता ।

मुंह भर बोलना—अच्छी तरह बात करना, प्रेम से वोलना । उ० वह किसी से मुँह भर वोलता भी नही ।

मुंह-मांगी मुराद पाना—मनचाही वस्तु पाना, इच्छा पूरी होना । उ० यदि मेरा काम कर कर दोगे तो मुँह-माँगी मुराद पाओगे ।

मुंह मारना—१ कान काटना, वढकर या अच्छा होना । उ० यह लडका तो वडे-वडे गवैयो का भी मुँह मारता हैं। २. लज्जित करना, नीचा दिखाना । उ० तुम्हारा उसने मुँह न मारा तो कहना ।

मुंह मीठा करना—१ मिठाई खिलाना । उ० अगर मेरा काम कर दोगे तो तुम्हारा मुँह मीठा कर दूँगा ।

मुंह मीठा होना—१ लाभ होना । उ० तुम्हारा भी मुँह मीठा अवश्य हुआ है । २ मिठाई मिलना । उ० मुँह मीठा होने की उम्मीद हो तो तुम्हारा परीक्षा-फल वतला दूँ ?

मुंह मुरझाना—चेहरे पर उदासी झलकना ।

मुंह मे आना—कहे जाने के लिए मुँह मे आना। उ० जो मुँह मे आए, वह सव कह डालना कहाँ की वुद्धिमानी है ?

मुंह मे उत्तर न आना—कुछ कह न पाना ।

मुंह मे और पेट मे और होना—कहना कुछ, पर नियत और कुछ दूसरी ही होना ।

मुंह मे कालिख लगना—कलक का टीका लगना, वहुत वदनामी होना । उ० इस नीच काम के कारण तुम्हारे मुँह मे कालिख लग गई ।

मुंह मे कालिख लगाना—खूव वदनाम करना । उ० मेरे मुँह मे कालिख न लगाओ ।

मुंह मे खून लगना—आदत पडना । चाट पडना । उ० एक दिन मिठाई क्या मिली, तुम्हारे मुँह मे खून लग गया ।

मुंह मे घी-शक्कर होना—अपने अनुकूल वात किसी से सुनने पर प्रसन्न होकर उसको साधुवाद देने के भाव से ऐसा कहा जाता है ।

मुंह मे ज़वान न होना—१ वोलने की ताकत या हिम्मत न होना । उ० मालिक के सामने तो तुम्हारे मुँह मे ज़वान ही नही होती, और उस नौकर वेचारे,को डाँटते हो । २. वहुत धीरे से वोलना । उ० मुँह मे ज़वान नही है क्या, ज़रा ज़ोर से वोलो ।

मुंह मे ठेंपी देना—१. कुछ न वोलना, चुप्पी साधना । उ० मुँह मे ठेंपी देने से काम न चलेगा, कुछ वोलो भी । २. कुछ न वोलने देना । उ० उसके मुँह मे ठेंपी न दो, उसे भी कहने दो ।

मुंह मे तिनका लेना—दीनता प्रकट करना । उ० उसने मुँह मे तिनका लेकर कहा कि मुझे कुछ खाने को दे दो ।

मुंह मे तुलसी रखकर वात कहना—सत्य और ठीक वात कहना ।

मुंह दांत मे होना—सामर्थ्य होना ।

मुंह मे धूल देना—घृणा करना, दूर हटाना, तुच्छ समझना । उ० जो न जुगति पिय मिलन की धूरि मुकति मुंह दीन ।

मुंह मे पानी भर आना—१ जी ललचाना । उ० खाने की कोई चीज़ देखते ही उसके मुँह मे पानी भर आता है । पता नही कैसे घर मे पला है ? २ जी मिचलाना । उ० आज सुवह से ही मुँह मे पानी भर आ रहा है ।

मुंह मे वोलना—धीरे से वोलना । क्यो मुँह मे वोल रहे हो, साफ कहो ।

मुंह मे, राम वगल मे छुरी होना—दिखाने के लिए साधु, पर वैसे कपटी होना ।

मुंह लगाम देना—१ सोच-समझ कर वोलना । उ० मुँह मे लगाम दो, आखिर अखलाक कव सीखोगे ? २. न वोलने देना । ३ न खाने देना ।

मुंह मे लगाम न होना—१ वेसमझे वक देना । विना विचारे जो आए कह देना । उ० जिसके मुँह मे लगाम नही है, वह भी क्या आदमी है ।

मुंह मोड़ना–१ विमुख होना । उ० लडाई से मुंह मोडना कायरो का काम है । २ काम करने मे आगा-पीछा करना । उ० अगर न करना था तो पहले ही कह देते, हाँ करके मुँह मोडना ठीक नही है ।

मुंह मोहठ जाना–१ हार जाना । २ सामना या लडाई करने लायक न रह जाना । उ० एक ही बार मे मुँह मोहठ गया ।

मुंह रखना या रख लेना–१ बात रखना । उ० इस बार मुंह रख लो, फिर कभी न कहूँगा । २ इज्ज़त रखना । ३ लिहाज़ या ध्यान रखना ।

मुंह लगना–१ सबध रखना, बहुत बोलना-चालना । उ० बुरो के मुँह न लगो । २ किसी के सिर चढना । उ० बडो के मुँह न लगो । ३ जवाब-सवाल करना । उ० सबके मुँह लगना ठीक नही है ।

मुंह लगाना–१ अधिक प्रेम करना । उ० नीचो को मुँह लगाना ठीक नही है । २ सिर चढाना । उद्दड बनाना । उ० लडके को मुँह न लगाओ । ३ अपने से अधिक बोलने-चालने देना ।

मुंह लटकाना–नाराज होना । उ० बस थोडी-बात पर मुँह लटका लिया ।

मुंह लायक बीडा होना–किसी व्यक्ति के योग्य वस्तु या व्यवहार होना ।

मुंह लाल करना–१. पान खिलाना । उ० अरे भाई कुछ न दिया तो कम से कम मुंह तो लाल कर दो । २ तमाचा मार कर मुह लाल कर देना । उ० अगर ज्यादा बदमाशी करोगे तो मुँह लाल कर दूंगा । ३ क्रोधित होना । उ० थोडी बात पर मुँह लाल मत करो ।

मुंह लाल होना या हो जाना–शर्म या गुस्से से मुँह लाल होना । उ० मेरी बातें सुनते ही उनका मुंह लाल हो गया । पराये पुरुष का सामना होते ही उसका मुँह लाल हो जाता है ।

मुंह लेकर रहना या रह जाना–काम पूरा न होने पर लज्जित हो जाना । उ० गया था माँगने कि अवश्य दे देंगे, पर बेचारा मुंह लेकर रह गया ।

मुंह संभालना–१ बुरी बातें न बोलना । उ० मुँह सँभाल कर बोला करो, नही तो मार खा जाओगे । २ बोलना सीखना, ज़बान हिलाना सीखना । उ० पहले मुंह संभालो, फिर बात करना ।

मुंह सफेद होना–दे० 'मुंह फक होना' ।

मुंह सिकोड़ना–१ चेहरे से नाराज़ी या अन्य-मनस्कता दिखाना । उ० उसने मुंह सिकोडते हुए 'हाँ' कहा । २ घृणा या नापसदगी प्रकट करना । उ० मेरे खरीदे सामानो को देखकर तो वह मुंह सिकोडने लगता है ।

मुंह सीधा करना–सतोष होना ।

मुंह सीना–दे० 'मुंह पकडना' ।

मुंह सुजाना–दे० 'मुंह फुलाना' ।

मुंह सूखना–१ ज़बान सूखना । गला सूखना । उ० अब प्यास के मेरा मुंह सूख रहा है । २ मुंह पर डर या शर्म के चिह्न दिखाई देना, चेहरा फीका पडना । उ० मुझे देखते ही उसका मुंह सूख गया ।

मुंह से अक्षर न फूटना–कुछ भी न बोल पाना ।

मुंह से आह भी न निकलना–तनिक भी दुख न प्रकट होने देना ।

मुंह से दूध की बू आना–लडका होना, अनुभव-हीन होना, लडकपन की बू आना । उ० अभी उसके मुंह से दूध की बू आती है, वह क्या जाने कि ससार कैसा है ?

मुंह से कच्ची-पक्की निकालना–दुर्वचन कहना, अनुचित कहना, गाली देना ।

मुंह से दूध टपकना–दे० 'मुंह से दूध की बू आना' ।

मुंह से निकालना–उच्चरित करना, कहना । उ० मैं गदी बातें कभी मुंह से नही निकाल सकता ।

मुंह से फूटना–उच्चरित होना, कहना । उ० कुछ मुंह से फूटे भी ।

मुंह से फूल की तरह झडना–मुंह से मीठी तथा प्यारी बात निकलना । उ० उसकी इतनी मीठी आवाज़ है कि उसके मुंह से गाली भी फूल की तरह झडती है । वह बोलती है तो मुंह से फूल की तरह झडता है ।

मुंह से फूल झडना–मुंह से मधुर और प्यारी बातें निकालना । उ० वैसा आदमी तो मैंने देखा ही नही, बोलता है तो मुंह से फूल झडता है ।

मुंह से वात छीनना—दूसरे की वात काट कर स्वय कहना। उ० मुंह से बात न छीनो मैं कह लूं तो तुम भी कहना।

मुंह से वोली न आना—कुछ भी न कह पाना।

मुंह से भाप न निकलना—विलकुल भयभीत और अवाक् हो जाना। जरा भी न वोल पाना। उ० डाकुओ को देखते ही वह इतना डर गया कि मुंह से भाप तक न निकली।

मुंह से लार गिरना—देख कर या सुन कर किसी चीज के पाने की लालच होना। उ० मुझे मिठाई खाते देख कर उसके मुंह से लार गिरने लगा।

मुंह से लार टपकना—दे० 'मुंह से लार गिरना'।

मुंह से लाल झडना—प्रिय और मधुर वाणी निकलना। उ० जब वोलने लगता है तो मुंह से लाल ही झडता है, ऐसा आदमी तो मैंने देखा ही नही।

मुअम्मा खुलना—दे० 'पाले खुलना'।

मुअम्मा हल होना—भीतरी रहस्य खुल जाना। उ० वड़ा वढकर वातें करता था, आज सारा मुअम्मा हल हो गया।

मुक़दमा ठोकना—न्याय के लिए अदालत की शरण जाना। मुकदमा चलाना या दायर करना।

मुक़दमा लडना—वैरी से कचहरी की लडाई लडना। उ० दोनो भाई परस्पर मुकदमा लड रहे हैं।

मुक़दमेवाज़ी होना—मुकदमा लड़ा जाना। उ० उन लोगो मे खूव मुकदमेवाज़ी हो रही है। यह मर्ज वडा वुरा है।

मुक़दमे मे वकील होना—अनिवार्य होना। उ० चावल के साथ दाल जैसे मुक़दमे मे वकील है तो विना उसके चावल का खाना कैसा?

मुक़द्दर आज़माना—भाग्य की परीक्षा करना। उ० एक वार और परीक्षा मे वैठकर मुकद्दर आज़माओ, शायद सफल ही हो जाओ।

मुक़द्दर चमकना—भाग्य चमकना। अच्छे दिन आना। उ० व्यापार मे उसका मुकद्दर खूव चमका हुआ है।

मुक़र्रर-सिकर्रर—कई वार। उ० वह मुक़र्रर-सिकर्रर आ चुका, ले-देकर छुट्टी करो।

मुक़ाविले पर आना या आ जाना—विरोध के लिए सामने आना। उ० मुकाविले पर आओगे तो मूंछ वीन लूंगा।

मुक़ाम करना—ठहरना। उ० हमने पिछली रात वहाँ मुक़ाम किया था।

मुक़ाम देना—किसी के मर जाने पर उसके घर मातमपुरसी करने जाना। उ० वह रात ही का मरा है, मुकाम दे आओ।

मुक़ाम वोलना—सरकारी अधिकारी का पडाव पड़ना। उ० साधारणत जिलाधीश यहाँ मुकाम वोलते हैं।

मुक़ीम होना या हो जाना—ठहरना। उ० मैं तो सालो से प्रयाग मे ही मुक़ीम हूँ।

मुक्का चलाना—मुट्ठी वाँध कर मारना। उ० इतने ज़ोर से मुक्का चलाया कि खुद गिर पडा।

मुक्का मारना—दे० 'मुक्का चलाना'।

मुक्का लगना—सहसा हृदय पर चोट लगना। वड़ा भारी आघात पहुँचना। उ० उनकी मृत्यु का समाचार तो मुक्का-सा लगा।

मुक्त-कठ से—विना किसी हिचक के, पूरी तरह से।

मुक्ति का द्वार—मुक्ति-प्राप्ति का साधन।

मुख कुम्हलाना—दुःखी, निराश, हताश या मलिन होना।

मुख-भंजन करना—अपमानित करना।

मुख़ातिव होना—रुख फेरना, किसी की ओर मुंह करके वातें करना। उ० वह भी कुछ कहना चाहती है, मुखातिव हो जाओ।

मुख़्तार होना—प्रतिनिधि होना। उ० वह काग्रेस का मुख्तार है।

मुग्ध रहना—१ मोहित रहना। उ० वह तो उस लडकी की वात ही पर मुग्ध रहता है। २ मौन रहना। उ० उनके उपदेश सुनकर सव लोग मुग्ध रह गए। ३ रहस्य छिपाना। उ० सव कुछ जानकर भी मुग्ध रहता है।

मुद्दत काटना—१ सूद लेना। उ० अव तक रुपये तुम्हारे पास थे, उसकी मुद्दत तो काटने दो। २. समय विताना। उ० किसी तरह मुद्दत काट रहा है। ३ वहुत वडा समय विताना। उ० अभी तो मुद्दत काटनी है, आज ही से क्या घवराऊं?

मुज़म्मा लगाना—रुकावट या ओट पैदा करना। उ० हमारे कामों मे क्यो मुज़म्मा लगाते हो?

मुज़म्मा लेना–१. छिपे-छिपे लेना। उ० वह तो मुज़म्मा लेना ही पसद करता है, सामने नहीं आता। २ पता लगाना। उ० कल के झगडे का मुज़म्मा लेने गया था।

मुज़रा करना–किसी रकम को दूसरी रकम मे से काट लेना। उ० १० रु० हमारे निकलते थे, वह हमने उसमे मुज़रा कर लिये।

मुज़रा लेना–१. कटौती लेना। उ० वह तो मुज़रा लेता है, कौन उसके यहाँ खरीदेगा। २ मुलाकात करना। ३ देखना।

मुटाई चढ़ना–१ घमड आना। उ० जिसके बल पर मुटाई चढी है, मैं खूब जानता हूँ। २ मोटा होना। उ० क्या खाते हो भाई, तुम पर तो वडी मुटाई चढी है।

मुटाई झाड़ना या झाड़ देना–१ खूब पीटना। उ० शरारत न करो, नही तो सारी मुटाई झाड दूंगा। २. गर्व चूर करना। उ० एक वार मे तो सारी मुटाई झाड दिया, अब क्या खाकर वोलेंगे ?

मुट्ठी खोलना–उदारता पूर्वक देना।

मुट्ठी गरम करना–१. घूस लेना। उ० वेईमानी से मुट्ठी गरम करना पाप है। २ रुपया पाना। ३ घूस देना। उ० उनकी मुट्ठी गर्म करो तो काम तुरत हो जाय।

मुट्ठी गरम होना–१ रुपया मिलना। उ० आजकल तो उसकी मुट्ठी खूब गरम हो रही है। २ घस मिलना। ३ पास मे रुपया होना।

मुट्ठी ढीली होना–वहुत खर्च करना।

मुट्ठी वन्द रखना–कम खर्च करना। उ० कमा रहे हो, मुट्ठी वद रखो नही तो पछताओगे।

मुट्ठी वन्द होना–१ भीतरी भेद छिपा रहना। उ० आपस मे सुमति है, इसीसे तो मुट्ठी वद है। २ खर्च कम होना। उ० मुट्ठी वद है, नही तो अव तक बाद का दिया रुपया खतम हो गया होता।

मुट्ठी मे रखा होना–अपने पास होना। उ० मेरी मुट्ठी मे रुपया रखा होता तो अवश्य दे देता।

मुट्ठी मे होना–१ अधिकार मे होना। उ० आजकल इगलैंड ता अमेरिका की मुट्ठी मे है। २ पास मे होना। उ० १००० रु० तो मुट्ठी मे हैं, ५०० रु० कही से और खोज लो तो चला जाय।

मुठभेड होना–१ मुकाबिला होना। उ० चौसा मे शेरशाह तथा हुमायूँ मे मुठभेड हुई। २ भेंट होना। उ० आते हुए रास्ते मे उनसे मुठ-भेड हुई थी। ३ लडाई होना।

मुड-मुड कर पछाड़ खाना–बहुत विलाप करना, दुखी होना, गिर-पडकर रोना, विलखना।

मुड़ कर न देखना–कतई ख्याल न करना। उ० मैं गया था, पर उसने जाने क्यो मुड कर भी न देखा ?

मुतास लगना–पेशाव लगना। उ० उसे मुतास लगी है।

मुनादी करना–घोषणा करना।

मुफलिसी मे आटा गीला होना–गरीवी या मुसीवत मे और भी मुसीबत या गरीबी आना।

मुफ्त की रोटियाँ तोडना–विना काम के दूसरे पर वैठे जीविका चलाना। विना काम दूसरे का खाना। उ० जवान होकर मुफ्त की रोटियाँ तोड रहे हो, शर्म नही आती ?

मुफ्त मे–१ वेकार मे, विना किसी लाभ के। उ० उसका प्राण मुफ्त मे गया। २ सेंत मे, विना मूल्य का। उ० मैने उसे छडी मुफ्त मे दे दी।

मुवादला करना–१ अदला-बदली करना। २ परिवर्तन करना।

मुवादला होना–परिवर्तन होना।

मुवारकबाद देना–बधाई देना।

मुवारकवादी गाना–खुशी के गीत गाना।

मुबारकवादी देना–बधाई देना। उ० भाई तुम्हारी सफलता पर मुबारकवादी देता हूँ, स्वीकार करो।

मुरडा करना–सुखाना, अशक्त करना। उ० हफ्तो बिना खिलाये रखकर वैद्य ने मुझे तो मुरडा कर दिया।

मुरडा होना–अशक्त होना। सूखना। उ० दो दिन के ज्वर मे मुर ा हो गए।

मुरचग झाडना–चैन से काटना। उ० एक तु ्ो तो मुरचग झाड रहे हो।

मुरदा उठना–स्त्रियो का मरने के लिए गाली देना। उ० वह सदा मुरदा उठने को ही कहा करती है। भगवान करे तुम्हारा मुरदा उठे।

मुरदा करना–१ मार कर अशक्त करना। उ० साँप को मार कर सबो ने मुरदा कर दिया। २ मार डालना।

मुरदा होना—१ शक्तिहीन होना। २ ऐसा होना जिसे कभी जोश न आये। उ० तुम तो मुरदे हो, क्या खाकर उनका बदला लोगे ?

मुरदे की हड्डियाँ उखाडना—१ बीती हुई बात को कहना। उ० अब मुरदे की हड्डियाँ न उखाडो, नही तो फिर झगडा हो जायगा। २ पूर्वजो की बुराई करना। उ० हमसे निपट लो, मुरदे की हड्डियाँ उखाडने से क्या लाभ ?

मुरदे से शर्त बाँध कर सोना—गभीर निद्रा लेना। बहुत सोना। उ० तुम तो मुरदे से शर्त बाँध कर सोते हो, जगाने पर भी नही उठते।

मुरदे से शर्त बद कर सोना—दे० 'मुरदे से शर्त बाँध कर सोना'।

मुरव्वत करना—१ दया करना। रहम करना। उ० बडे आदमी तो हैं, पर मुरव्वत करना नही जानते। २ शील करना। ३ बुड्ढे हैं, मुरव्वत करनी पडती है, नही तो दिखा देता।

मुरव्वत का मुँह मलना—अशिष्ट होना।

मुरव्वत तोडना—प्रेम का व्यवहार मिटाना। उ० थोडी-सी बात पर जिंदगी भर की मुरव्वत तोड दी।

मुराद पाना—कामना पूर्ण होना। उ० भगवान की पूजा करो तो तुम भी अपनी मुराद पाओगे।

मुराद पूरी होना—इच्छा पूर्ण होना। उ० मनुष्य की सारी मुरादें कभी पूरी नही होती।

मुराद माँगना—इच्छा-पूर्ति की प्रार्थना करना। उ० ईश्वर से मुराद माँगो, वह पूरा करेगा।

मुराद मानना—किसी काम के लिए मनौती करना। उ० उसने पास होने पर कथा सुनने की मुराद मानी है।

मुरादों के दिन—जवानी, युवा अवस्था। उ० मुरादो के दिन हैं, कुछ कर लो नही तो पछताओगे।

मुर्गी के आगे हीरा रखना—दे० 'भैस के आगे बीन बजाना'।

मुर्दनी छाना—उदासी होना, गमगीनी छाना। उ० खुशी के समय तुम्हारे पर क्यो मुर्दनी छाई हुई है ?

मुर्दा करना—दे० 'मुरदा करना'।

मुर्दा-दिल होना—उत्साहहीन होना।

मुर्दे को जिंदा करना—उत्साहीन व्यक्ति मे जीवन फूँक देना।

मुलतानी करना—मुलतानी रग मे रँगना। उ० कपडे को मुलतानी कर दो।

मुलाकात कराना—जान-पहचान कराना। उ० मुझे उससे मुलाकात करा दो।

मुलाक़ात पैदा करना—जान-पहचान बढाना। उ० वह तो ऐसा चालू है कि सभी अफसरो से मुलाकात पैदा कर लेता है।

मुलाजिमत अख्तियार करना—नौकरी करना। उ० व्यापार मे लाभ न देख कर उसने मुलाजिमत अख्तियार कर ली।

मुलाहिजा करना—१ जाँच करना। उ० मुलाहिजा करने पर पता चला कि उसकी बीमारी पुरानी है। २ गौर करना, देखना। उ० हुजूर जरा इधर मुलाहिजा करें।

मुल्तवी करना—स्थगित करना। उ० दफा २८० के सारे मुकदमे मुल्तवी कर दिए गये।

मुवाफिकत करना—१. पक्ष करना। २ वह तो अपने जाति वालो की मुवाफिकत करता है। २ प्रेम से रहना, प्रेम रखना। उ० आपस में मुवाफिकत करो।

मुश्किल आसान होना—मुश्किलाहट दूर होना। उ० तुमको देखकर मुश्किलें आसान हो जाती हैं।

मुश्कें कसना—हाथो को पीठ पर ले जा कर बाँधना। उ० थानेदार ने चोर को मुश्कें कस दी।

मुष्ठ मार कर बैठना—कुछ न बोलना। चुप हो जाना। उ० अपना काम बना कर वह मेरी बार मुष्ठ मार कर बैठ गया।

मुसलमान होना—१ क्रूर होना। २ मूर्ति आदि से घृणा करने वाला होना। ३ बेधर्म होना। ४ गोभक्षक होना।

मुसलाधार बरसना—ज़ोरो से वर्षा होना। उ० मुसलाधार बरसेगा तो यह झोपडी एक दिन भी न टिकेगी।

मुसीबत का नगारा बजना—मुसीबत का नज़दीक आना। उ० है मुसीबत का नगारा बज रहा, पाँव पर रख पाँव हम हैं सो रहे।

मुसीबतो का पहाड़—बहुत-सी मुसीबते।

मुहडा लेना—दे० 'मुहरा लेना'।

मुहरा करना—चमकाना, पालिश करना, रगड़ना।

मुहर लगना—१ स्वीकृति मिलना। २. प्रमाणित होना। ३ प्रभाव पड़ना। ४. भली-भाँति बन्द करना।

मुहरा लेना—१ सामना करना। उ० अपने को समझकर तो उसका मुहरा लो। २ लड़ाई लड़ना। उ० उससे मुहरा लेने के लिए बल चाहिए।

मुस्कान दौड़ जाना—चेहरे पर हल्की मुस्कान दौड़ जाना।

मुहरे पर रखना—१. शतरज मे किसी के ज़ोर पर कोई मुहरा रखना। २ सामने या निशाने पर रखना।

मुहर्रम की पैदाइश होना—सर्वदा दुःखी रहना। उ० उसकी तो जैसे पैदाइश ही मुहर्रम की है, सदा रोता ही रहता है।

मुहर्रमी सूरत—अपशकुन चेहरा, रोनी सूरत। उ० शुभ काम में अपनी मुहर्रमी सूरत क्यो आगे लाते हो?

मुंहा-मुंही होना—१ परस्पर रुष्ट होकर बोला-चाली होना। कहा-सुनी होना। उ० थोड़ी बात पर दोनो मे मुंहा मुंही हो गई। २ प्यार से परस्पर मुंह चूमना। उ० मिलते ही नोनो मे मुंहा-मुंही होने लगती है।

मुहाविरा पड़ना—दे० 'मुहावरा पडना'।

मुहिम सर करना—लड़ाई जीतना, मोर्चा जीतना।

मूंग की दाल खाने वाला—१. डरपोक। उ० मूंग की दाल खाने वाले क्या रात को कही जा सकते हैं! २ बीमार। उ० वह मूंग की दाल खाने वाला है, सभी चीज़ें नही खा सकता। ३ कमज़ोर।

मूंग दलना—दे० 'छाती पर मूंग दलना'।

मूंछ उखाड़ना—१. शेखी मिटाना। उ० यदि अब बोले तो मूंछें उखाड लूंगा। २ बेइज्जती करना। उ० चोरो ने सेठ की मूंछें उखाड ली।

मूंछ ऐंठना—घमंड मे मूंछ के बाल फेरना। उ० इतना होने पर उसका मूंछ ऐंठना न छूटा।

मूंछ के बाल ऊँचे होना—गर्व होना, यश या बड़प्पन मिलना।

मूंछ के बाल बिनना—बहुत दुर्दशा होना या बहुत अपमानित होना। उ० खोलिए पलकें दया कर देखिए। मूंछ के भी बाल अब हैं बिन रहे।

मूंछ नीची होना—१ लज्जित होना। उ० बेचारे की मूंछें आज नीची हो गई। २. बेइज़्ज़ती होना। उ० नालायक़ पुत्र के कारण ही तुम्हरी मूंछ नीची हुई।

मूंछें नोच लेना—दे० 'मूंछ बीन लेना'।

मूंछ पेशाब से मुड़वाना—दे० 'दाढी पेशाब से मुड़वाना'।

मूंछ बीन लेना—१ बेइज़्ज़त कर देना। २ गर्व चकनाचूर कर देना। ३ अच्छी तरह दंडित करना। उ० फिर ऐसा कहा तो मूंछ बीन लूंगा।

मूंछें उखड़ना या उखड़ जाना—१. शेखी मिटना। उ० आज तो उनकी मूंछें उखड गई। २ बेइज़्ज़ती होना। उ० जवान लडकी के ३ दिन तक ग़ायब रहने से उसकी मूंछें उखड गई।

मूंछो की लाज रहना—प्रतिष्ठा रह जाना।

मूंछो पर ताव देना—शूरता का बाना दिखाना। गर्व और वीरता प्रदर्शित करने के लिए मूंछें ऐंठना। उ० मूंछन पर ताव दै दै चढत कँगूरन पै।

मूंछो पर हाथ फेरना—दे० 'मूंछो पर ताव देना'।

मूंड़ कर खाना—मूर्ख को फँसा कर रुपया या धन लेना। उ० उसके साथियो ने उसे खूब मूंड कर खाया।

मूंड़ चढ जाना या चढ़ना—बेअदबी करना। मुंह लगना। उ० यह तो लडका बड़ो के मूंड चढ गया है।

मूंड़ चढ़ाना—मुंह लगाना। उ० छोटो को मूंड न चढाओ।

मूंड़ मारना—१ बहुत दिमागी मेहनत करना। उ० बहुत मूंड मारा, लेकिन वह सवाल समझ में न आ सका। २ परिश्रम करना। उ० मूंड मारना व्यर्थ है। कुछ हो नही सकता। ३ सर काटना। उ० एक ही हाथ मे मूंड मार दिया।

मूंड़ मुंड़ाना—साधू हो जाना। सर मुडा कर साधू होना। उ० नारि मुई घर सपति नासी। मूंड़ मुड़ाय भए सन्यासी।

मूँडी काटना—१ धड से सर अलग करना मार डालना। उ० भगवान तुम्हारी मूँडी काटें। [इसका प्रयोग स्त्रियो की भाषा मे होता है। यह एक गाली है।] २ बहुत बडी हानि करना। ३. बहुत बेइज़्ज़ती करना।

मूँडी मरोडना—१ सर ऐंठ कर जान मारना। उ० उसने साँप की मूँडी मरोड दी। २ चालबाज़ी से नुकसान पहुँचाना। उ० उस ग़रीब की मूँडी न मरोडो।

मूँडी हिलाना—हाँ करना या कर देना।

मूढे पर बैठना—रडी की तरह खिडकी या मुडेरी पर बैठना। उ० क्या मूढे पर बैठती हो, नीचे आओ।

मूआ-टूटा—१ जिसके पास कोई पूँजी न हो। उ० उस मूए-टूटे से कौन शादी करेगा ? २ कमज़ोर। उ० उस मूए-टूटे बैल से खेती नही हो सकती।

मूर्च्छा जागना—मूर्च्छा के बाद होश आना।

मूठ करना—तीतर या बटेर पक्षी को हाथ मे लेना।

मूठ चलाना—जादू-टोना करना। उ० वह मूठ चलाने मे बडा तेज़ है।

मूठ मारना—१. कबूतर को मुट्ठी मे पकडना। २ हस्तक्रिया या हस्तमैथुन करना। उ० उसे मूठ मारने की आदत है। ३. दे० 'मूठ चलाना'।

मूठ लगना—जादू का असर होना। उ० डीठि-सी डीठि लगी उनको, इनको लगी मूँठि-सी मूठि गुलाल की।

मूठी मे रहना—अधिकार या वश मे रहना। उ० दिन बिताएँ चाब मूठी भर चना, पर किसी की भी न मूठी मे रहे।

मूत की धार न सूझना—बिल्कुल न दिखाई देना। उ० अब तो उसे मूत की धार भी नही सूझती।

मूत की धार पर मारना—दे० 'पेशाब की धार पर मारना'।

मूत देना—बहुत भयभीत हो जाना। उ० उसके डाँटते ही उसने मूत दिया।

मूत निकल पडना—दे० 'मूत देना'।

मूर्ख चपाट होना—बहुत बडा बेवकूफ होना। उ० वह तो मूर्ख चपाट है, उसकी समझ मे यह बात नही आ सकती।

मूर्ति बन जाना—निश्चल बैठा रहना।

मूल गँवाना—अपने पास की वस्तु या पूँजी को भी खो देना।

मूली-गाजर समझना—दे० 'गाजर-मूली समझना'।

मूल्य होना—मान होना, महत्त्व होना।

मूसलाधार वृष्टि होना—देर तक ज़ोरो से वर्षा होना।

मूसलों ढोल बजाना—१ बहुत प्रसन्न होना। उ० यदि मैं पास हो जाऊँ तो मूसलो ढोल बजाऊँ। २ ढोल बजा कर कहना। उ० तुम तो दूसरे की बेइज्जती करने के लिए मूसलो ढोल बजाते हो।

मूसलों से ढोल बजाना—दे० 'मूसलो ढोल बजाना'।

मृगजल होना—अयथार्थ चीज़ होना। कुछ न होना। उ० उस पर तुम व्यर्थ आशा कर रहे हो, वह मृगजल है।

मृत्यु की छाया सिर पर मंडराना—मृत्यु निकट जान पडना।

मृत्यु के मुख मे पडना—मृत्यु होना, नष्ट होना।

मृत्यु बुलाना—जान-बूझ कर ऐसा काम करना, जिसमे मृत्यु का भय हो।

मेढ लडवाना—दो आदमियो मे लडाई करवाना। बमचख करवाना। उ० ग़ैर को आबे दमे तेग पिलाओ कि मुझे, मेढे लडवाने से क्या फायदा है पानी पर ?

मेहदी बाँधना—मेहदी का पत्ता पीस कर लगाना। उ० उसने तो मेहदी बाँधी है, आज कुछ कर नही सकती। मेहदी बाँधने से हाथ लाल हो जाता है।

मेहदी रचना—१ मेहदी का रग आना। २ मेहदी से शरीर पर चित्र या डिज़ाइन बनाना।

मेहदी रचाना—दे० 'मेहदी लगाना'।

मेंहदी लगना—हाथ बिल्कुल बझा होना, काम न कर सकना। उ० हाथो मे मेहदी लगी है क्या, कुछ कर नही सकते ?

मेहदी लगाना—दे० 'मेहदी बाँधना'।

मेख करना—दे० 'मेष करना'।

मेख ठोकना—१ हाथ-पैर मे कँटिया ठोकना। उ० प्राचीन काल मे मेख ठोकने की एक सज़ा थी। २ हराना, ज़ोर करना। उ० तुम तो खूब मेख ठोकना जानते हो।

मेख मारना—१. कँटिया ठीक कर हिलना-डुलना बंद कर देना । उ० पहले मेख मारना भी एक दंड था । २. कोई ऐसी बात कह देना जिससे होता हुआ काम न हो । उ० तुमने तो उसके काम मे मेख मार दी । ३ काम में बाधा डालना । उ० मेख मारने की बडी बुरी आदत तुममे है ।

मेढक या मेढकी का घोड़े के संग नाल ठोंकना—दे० 'हाथी के संग गाँडे खाना' ।

मेढक या मेढकी को ज़ुकाम होना—१ अनहोनी होना । उ० कलियुग में तो मेढक को भी ज़ुक़ाम होने लगा है । २ किसी चीज़ के योग्य न होने पर भी उसे चाहना । उ० अच्छा, मेढक को भी ज़ुक़ाम होने लगा ।

मेदा कड़ा होना—१ कोष्ठबद्धता होना । उ० हमेशा गडबड खाते रहने से मेदा कडा हो गया है । २ मेदा ऐसा होना कि जल्दी दस्तावर चीज़ या दवा का असर न हो । उ० उनका मेदा कडा है, जुलाब की मात्रा ज़रा बढा देना ।

मेदा साफ होना—कब्ज़ियत दूर होना । उ० एक पुडिया जुलाब मे मेदा साफ हो गया ।

मेरे मुँह से होना—मेरी वजह से होना । उ० मेरे मुँह से वह काम हो गया, नही तो कोई भी नही कर पाता ।

मेल करना—शत्रुता मिटाना । संधि करना । उ० अब तुम लोग मेल कर लो ।

मेल खाना—१. दो चीज़ो का आपस मे अच्छा लगना । उ० इस कोट और पैंट का मेल नही खाता । २ पटना, पटरी बैठना । उ० उन लोगो मे मेल नही खाता ।

मेल बैठना—दे० 'मेल खाना' ।

मेल मिलना—दे० 'मेल खाना' ।

मेला-सा लगना—बडी भीड होना । उ० तमाशा देखने के लिए मेला-सा लगा था ।

मेला होना—संधि होना । उ० दोनो दलो मे मेल हो गया है ।

मेष करना—हिचकना । उ० क्या मेष करते हो, चलना हो तो चलो, नहीं तो साफ जवाब दो ।

मेहनत उठाना—कष्ट सहना । उ० मेहनत उठा कर पढ लो, नही तो ज़िंदगी भर रोओगे ।

मेहनत की रोटी खाना—मेहनत करके जीविका चलाना ।

मेहमानी करना—१. आवभगत करना । उ० वह मेहमानी करना खूब जानता है । २. बडी मार मारना । उ० पुलिस ने चोर की अच्छी मेहमानी की ।

मैं खोना, मैं मेरी खोना—अहंभाव दूर करना ।

मैं-मेरा करना—अज्ञानवश अपने अस्तित्व को पृथक् मानना ।

मैं-मैं करना—खुद अपनी तारीफ करना । उ० हर वक्त मैं-मैं करते तुम्हे शर्म नही आती ।

मैदान करना—१ खुला स्थान छोड़ना । उ० घर के सामने थोड़ा-सा मैदान कर लो । २ ढेर लगा देना । उ० व्यापार मे तो उसने रुपये का मैदान कर दिया । ३ संग्राम करना । उ० कौरव-पांडव १८ दिन तक मैदान करते रहे ।

मैदान छोड कर भागना—युद्ध-स्थल से भागना । भिड़ंत से पीठ दिखाना । उ० राजपूत मैदान छोड कर भागना अपनी शान के खिलाफ समझते थे ।

मैदान छोडना—दे० 'मैदान छोड़ कर भागना' ।

मैदान जाना—पाखाना होने जाना । उ० मैं मैदान जा रहा हूँ ।

मैदान पाना—दे० 'मैदान हाथ आना' ।

मैदान मारना—जीत जाना । विजयी होना । उ० महाभारत मे पांडवो ने मैदान मार लिया ।

मैदान मे आना—रंगभूमि मे उतरना या आना । लडने के लिए मैदान मे आना । उ० अर्जुन के मैदान मे आते ही कौरव-दल मे भगदड मच जाती थी ।

मैदान मे उतरना—दे० 'मैदान मे आना' ।

मैदान मे कदम रखना—कोई काम शुरू करना ।

मैदान साफ होना—रास्ता कंटकहीन होना । उ० पृथ्वीराज के हारते ही गोरी का मैदान साफ हो गया ।

मैदान हाथ आना—विजयी होना । उ० अंत मे मैदान मुसलमानो के हाथ आया ।

मैदान हाथ से निकल जाना—मौका निकल जाना ।

मैदान होना—१ लडाई होना । उ० पानीपत मे कुल तीन मैदान हुए । २. ढेर होना । उ० यहाँ तो लाशो का मैदान हो गया है । ३ पाखाना होना, टट्टी होना । उ० मैदान होने जा रहा हूँ ।

मैल का बैल बनाना–छोटी बात का बतगड करना। उ० उसका क्या विश्वास, वह मैल का बैल बनाने मे बड़ा तेज है।

मैल न आना–बुरा न मालूम देना, नागवार न गुज़रना। उ० बनी या गम मे कि आया दम अपनी आँखो मे, और उस पै मैल हमारी न आँख पर आया।

मैल रखना–वैमनस्य या द्वेष रखना। उ० अब मैल न रखो प्रेम से रहो।

मैल लाना–रज लाना, गमगीन और उदास होना। उ० तबीयत पर मैल न लाओ।

मैल हाथ की होना–दे० 'हाथ की मैल होना'।

मैला करना–१ दूषित करना, बदनाम करना। उ० एक मछली सारे तालाब को गदा कर देती है। २ गदा कर देना। उ० पानी मैला न करो।

मैले सिर से होना–ऋतुवती होना। उ० वह तो मैले सिर से है, आखिर कैसे छुए ?

मोची के मोची रह जाना–पहले की-सी बुरी स्थिति मे रह जाना।

मोजरा करना–१. रडी का गाना सुनना। उ० मोजरा करने के लिए आपको १० रु० देने होगे। २ मुलाकात करना।

मोजरा होना–रडी का गाना होना तथा लोगो का चारो ओर बैठकर उसका आनद लेना। उ० उसके यहाँ तो रोज़ मोजरा होता है।

मोटा असामी–रुपये वाला आदमी, ऐसा आदमी जिससे अधिक रुपये मिलने की आशा हो। उ० वेश्याएँ मोटे असामी को चाहती हैं।

मोटाई उतरना–१ दुबला होना। उ० बेचारे की मोटाई एक ही दिन की बीमारी मे उतर गई। २. घमड चूर होना। उ० सामना होते ही सारी मोटाई उतर जायगी।

मोटाई चढना या चढ़ जाना–१ शेखी, गर्व बढना। उ० चार पैसे हो गए, अब मोटाई चढ गई है। २. कुदज़ेहन होना। उ० तुम्हारी बुद्धि पर मोटाई चढ गई है।

मोटाई झडना–दे० 'मोटाई उतरना'।

मोटा खाना मोटा पहनना–साधारण स्थिति मे गुज़र करना।

मोटा-झोटा–१. साधारण दर्जे का। उ० ये मज़दूर मोटा-झोटा खा कर निर्वाह करते है। २ हृष्ट-पुष्ट। उ० मोटा-झोटा आदमी है, कोई बहुत कमज़ोर नहीं है। ३ उजड्ड।

मोटा दिखाई देना–धुँधला दीखना। केवल मोटी या बडी चीज़ों का ही दिखाई देना। उ० अवस्था गिरी, अब तो मोटा दिखाई देता होगा।

मोटा पेट–पूँजीपति, अधिक पैसे वाला। उ० मोटे पेट वालो को ग़रीबो के दुख से क्या हमदर्दी हो सकती है ?

मोटा बोल मारना–कटु वचन बोलना।

मोटा भाग–बड़ा हिस्सा।

मोटा भाग्य–भाग्यहीन। बुरा भाग्य। उ० क्या करें, मोटा भाग्य है।

मोटा-महीन–अच्छा-बुरा।

मोटा शिकार–पूंजी वाला आदमी। ऐसा आदमी जिसे फाँसने पर अच्छी आमदनी हो। उ० मोटा शिकार मिल जाय तो काम बन जाय।

मोटी अक़ल–ऐसी अक़ल या बुद्धि, जो अच्छी न हो।

मोटी चिड़िया–दे० 'मोटा शिकार'।

मोटी चुनाई–साधारण भद्दे ईटो की जोडाई। उ० मोटी चुनाई है, इसे कोई भी कर सकता है।

मोटी तह जमी होना–किसी प्रभाव का इतना गहरा होना कि और कोई असर न पडे।

मोटी बात–साधारण बात। सबके जानने की बातें। उ० मोटी बात भी नही समझते हो तो मैं क्या करूँ ?

मोटी भूल–अक्षम्य भूल। बहुत बडी भूल। उ० कोई लडके तो हो नही, इतनी मोटी भूल तुमसे नहीं होनी चाहिए।

मोटी डाल पकड़ना–सबल का पक्ष लेना।

मोटी आमदनी–बहुत आमदनी।

मोटे तौर पर–१ मोटे हिसाब से। उ० मोटे तौर पर पाँच आदमी आएँगे। २ साधारणतया।

मोटे हिसाब से–मोटे तौर से, मोटे रूप से, मोटा-मोटी। उ० मोटे हिसाब से तुम्हारे यहाँ १०० रुपये निकलते हैं।

मोतियो से मुँह भरना—खूब दान करना, काफ़ी धन दे डालना । उ० यदि उन्हें एक पुत्र हो जाय तो ब्राह्मणो का मुँह मोतियो से भर देंगे ।

मोती की-सी आब उतरना—बडी इज्ज़त का खराब हो जाना । उ० इस नीच काम के करने से तुम्हारी मोती की-सी आब उतर जाएगी ।

मोती गरजना—मोती मे बाल पडना । मोती का कडकना या चटकना ।

मोती ढलकना—बहुत रोना । उ० यह खबर सुनते ही उसकी आँखो से मोती ढलकने लगा ।

मोती पिरोना—१ बहुत सुन्दर अक्षर लिखना । उ० वह तो कापियो मे मोती पिरोता है । २. महीन काम करना । उ० मोती नही पिरोते हो कि इतनी रोशनी पर्याप्त नही है ।

मोती बींधना—१ मोती छेदना । उ० मोती बीध कर हार बनाओ । २ नाता होना । उ० इन दोनो की मोती बिंध जाय तो अच्छा हो ।

मोती में बाल पड़ना या पड जाना—मोती का चिहर जाना, फूटने के कारण मोती मे बाल-जैसा निशान पड जाना । उ० इस मोती मे तो बाल पड गए हैं, किसी चीज़ से धक्का लगा दिया क्या ?

मोती रोलना—कम मेहनत से अधिक कमाना । उ० उसका क्या है ? वह तो मोती रोलता है ।

मोम करना—दया या रहम से मुलायम करना, नरम करना । उ० उसके कष्ट ने मेरे कलेजे को मोम कर दिया ।

मोम का पुतला—१. बनावटी, कृत्रिम । २. क्षण-भंगुर ।

मोम का हो जाना—१ अति दयावान् हो जाना । उ० वह दूसरे के कष्टो को देख कर मोम का हो जाता है । २ बिना दृढता या सिद्धान्त का हो जाना । उ० मोम का न होओ, नही तो कोई पूछेगा नही ।

मोम की गुड़िया—अत्यन्त कोमल (लडकी) ।

मोम की नाक होना—१. तुरत विचार बदलने वाला होना । उ० वह तो मोम की नाक है, जिधर चाहो घुमा लो । २. शर्मदार होना । उ० हमारी कोई मोम की नाक है, जो कोई काट लेगा ।

मोम की मरियम—कोमल औरत । उ० वह मोम की मरियम है, ज्यादा न चलाओ ।

मोम दिल होना—कोमल हृदय होना ।

मोम होना—दे० 'मोम का हो जाना' ।

मोमियाई निकालना—१ कठिन परिश्रम करवाना । उ० वह तो धूप मे मोमियाई निकाल लेता है । २ खूब मारना । उ० ज़रा-सी बात पर मोमियाई निकाल ली ।

मोरचा खाना—मोरचा खाने से खराब हो जाना । उ० कडाही मोरचा खा गई है ।

मोरचा जीतना—शत्रु की सेना पर विजय करना । उ० सिकदर ने पोरस का मोरचा धोखे से जीत लिया ।

मोरचाबन्दी करना—रक्षार्थ सेना को सजा कर स्थान-स्थान पर रखना । उ० पिछले युद्ध मे अंग्रेज़ो ने अच्छी मोरचाबन्दी की थी ।

मोरचा बाँधना—दे० 'मोरचाबन्दी करना' ।

मोरचा लेना—लडाई करना । उ० मोरचा लेना तो मेरे बल का पता चलेगा, ऐसे क्या दिखाऊँ ?

मोरी छूटना—पतली दस्त बहुत अधिक मात्रा मे होना । उ० उसकी तो मोरी छूट रही है, डाक्टर बुलाओ ।

मोरी पर जाना—पेशाब करने जाना ।

मोरी मे बहाना—बुरे कामो मे धन व्यय करना । उ० इस कपूत ने बाप की दौलत मोरी मे बहा दी और अब पैसे-पैसे को मोहताज है ।

मोल करना—१. दाम की कमी-बेशी के बारे मे झक-झक या मोल-तोल करना । उ० क्या मोल करते हो, लेना हो तो ले लो, नही तो अपना रास्ता नापो । २ दाम के विषय मे अच्छी तरह जाँच-पडताल, या पूछ-ताछ करना । ३ बिना मोल किए न लेना ।

मोल-तोल करना—दे० 'मोल करना' ।

मोल-तोल चुकाना—दे० 'मोल करना' ।

मोल-तोल होना—१. दाम तय होना । उ० मोल-तोल हो गया है, दाम देकर चले जाओ । २. क़ीमत के सबध मे झकझक होना ।

मोल देना—बेचना । उ० मुझे यह मोल दे दीजिए ।

मोल न होना—बेशकीमत होना ।

मोल लेना—खरीदना । उ० मुझे एक पुस्तक मोल लेनी है ।

मोह की धार मे बहना—मोह मे डूबा रहना ।

मोहड़ा मारना—सर्वप्रथम काम कर डालना । उ० उसने तो मोहडा मार कर इनाम ले लिया ।

मोहड़ा लगाना—१ पछाडना । उ० देखते-देखते उसने मोहडा लगा दिया । २ अनाज का बोरा खोल कर रखना या खुला रखना । उ० दूकान मे मोहडा लगा दो ।

मोहनी डालना—मुग्ध करना । उ० उसके स्वरूप ने तो तुम पर मोहनी डाल दी, जब देखो उसी के यहाँ रहते हो ।

मोहनी लगना—मोहित होना । उ० देखते ही देखते मोहनी लग गई ।

मोहरा लेना—१ भिड जाना । उ० तुम तो मोहरा लेने से डरते ही नही हो । २ फौज का मुकाबिला करना । उ० रसियन फौजो ने अमेरिकनो से खूब मोहरा लिया है ।

मोह लेना—मोहित कर लेना । उ० उसकी चितवन ने तो सैकडो को मोह लिया ।

मौक़ा चूकना या चूक जाना—उचित समय का उपयोग न करना । उ० अब आप तो मौका चूक गए, नही तो काम मे आसानी हो जाती ।

मौक़ा ताकना—दे० 'मौका देखना' ।

मौक़ा देखना—१ अवसर या उचित समय खोजना । उ० समाजवादी राज्यारूढ होने का मौका देख रहे हैं । २ घात देखना, घात या दाँव की प्रतीक्षा करना । उ० घात देख रहा है, उससे होशियार रहना ।

मौका देना—१ अवसर देना । उ० हमे भी मौका दे दो तो हम दिखाएँ । २. कुछ वक्त या समय देना । उ० मौका दो, इतनी जल्दी मे उस तसवीर को रँगना सभव नही ।

मौक़ा पडना—१ समय आना । उ० मौका पडने पर सब लोग पहचाने जाते हैं । २. जरूरत होना । उ० कोई मौका पडे तो मुझ-से रुपया ले लेना । ३ विवाह-शादी आदि सुअवसर आना । उ० मौका पडने पर निमन्त्रित करूँगा ।

मौक़ा पाना—१. समय पाना । उ० यदि मौका पा गया तो आ जाऊँगा । २ उचित अवसर पाना । उ० घबडाओ न, मौका पाकर सब हो जायगा । ३ दाँव या घात पाना । उ० मौका पाया कि उनकी मट्टी पलीत की ।

मौक़ा महल—उचित अवसर, मौक़ा । उ० मौक़ा महल आने दो तो दावत करूँगा, यो किस बात पर खिलाऊँ ?

मौक़ा मिलना—१ दाँव पाना । उ० कोई मौका ही नही मिलता है कि उसे छकाऊँ । २ समय मिलना । उ० मौका मिलना कठिन है, कैसे जाऊँ ? ३ किसी काम के करने के लिए सुअवसर मिलना ।

मौक़ा हाथ लगना—दे० 'मौका मिलना' ।

मौक़े का—१. उचित समय या अवसर का । उ० उसने ऐसे मौके की बात कही कि मेरी जबान बद हो गई । २ अच्छे स्थान पर । उ० यह मौक़े का मकान है ।

मौक़े को हाथ से जाने देना—स्वर्णावसर का उपयोग न करना । अवसर चूकना । उ० यदि मौके को हाथ से जाने दोगे तो पछताओगे ।

मौज आना—१ इच्छा मे आना । उ० मौज आ गई तो सब कर डालेगा । २. मस्ती मे आना । उ० इस वक्त मौज आई है, कुछ न बोलो ।

मौज उठना—मन मे उमग उठना । उ० आज मौज उठ रही है, चलो पार्क घूम आयें ।

मौज उड़ाना—मजा मारना । उ० आजकल खूब मौज उडा रहे हो ।

मौज करना—दे० 'मौज उडाना', 'मौज मारना' ।

मौज खाना—लहर मारना, हिलोरें लेना । उ० नदी मौज खा रही है ।

मौज पाना—राय या अनुमति का पता पाना । मर्जी जानना । उ० बिना तुम्हारी मौज पाए वह कैसे कर सकता है ?

मौज मारना—१ चैन से दिन बिताना । उ० महँगी मे कोई भी नही मौज मार रहा है । २. लहराना । उ० नदी का पानी मौज मार रहा है । ३ मस्ती लेना, नशे मे गस्त रहना । उ० भग पीकर मौज मारना ही उसका काम है ।

मौज मे आना—१ मन मे आना। उ० मौज में आया तो कर ही डालूंगा। २ मस्ती मे आना। उ० मौज मे आता है तो नाचने लगता है।

मौजूद रहना—१. उपस्थित रहना। उ० आप मौजूद रहेगे तो काम जल्दी हो जाएगा। २ तत्पर रहना। उ० वह सदा काम पर मौजूद रहता है। ३ निकट रहना।

मौत आना—१. मरने का दिन आना, मृत्यु आना। उ० उसकी मौत आ गई है। २. बहुत बडी आफत आना। झझट आना। उ० किताबो की विक्री का सीजन नही आया, यह मेरी मौत आई है।

मौत का तमाचा—१ मृत्यु का स्मरण कराने वाला काम। उ० इस घटना ने तो उसे मौत का तमाचा लगाया है, अब वह पाप का काम नही कर सकता। २ बहुत तेज़ तमाचा। उ० ऐसा मौत का तमाचा मारा कि उसे भी होश हो गया।

मौत का शिकार होना—मृत्यु को प्राप्त होना।

मौत का सिर पर खेलना—मृत्यु समीप होना।

मौत का पसीना—मृत्यु के चिह्न। उ० कल ही से उसके शरीर पर मौत का पसीना दिखाई दे रहा है।

मौत के घाट उतारना—मार डालना।

मौत के दिन पूरे करना—ऐसे दुःखदायी दिन बिताना, जिनमें मौत ही सभव हो। उ० वह तो मौत के दिन पूरे कर रहा है।

मौत के मुंह मे झोंकना—जान-बूझ कर किसी से खतरनाक काम करवाना।

मौत के हाथ होना—मौत के मुंह मे होना।

मौत को गले लगाना—किसी अच्छे कार्य के लिए मर मिटना। उ० स्वतत्रता-सग्राम मे हजारो ने हँसते हुए मौत को गले लगाया था।

मौत को दुलत्ती मारना—मुसीबत मोल लेना। उ० तुम क्यो खाते-पीते हुए मौत को दुलत्ती मारते हो।

मौत सिर पर आना—१ मृत्यु निकट होना। उ० तुम्हारे सिर पर मौत आ गई है, तभी तुम उसे मारने जा रहे हो। २ बुरे दिन आना। उ० ससार के सर पर मौत आ गई है।

मौत से लड़ कर आना—बडे खतरनाक काम से बचना। बहुत बडे खतरे से त्राण पाना। उ० वह तो मौत से लडकर आया है, नही तो मर ही गया होता।

मौत बुलाना—ऐसा काम करना, जिससे मौत हो जाय। उ० कूद कर क्यो मौत बुला रहे हो?

मौन खोलना—मौन तोडना। बोलना। उ० अभी तो साधू ने मौन नही खोला है।

मौन गहना—१ चुपचाप रहना। उ० ज्यादा बोलने से मौन गहना अच्छा है। २ जवाब न देना। उ० मौन गहने से काम न चलेगा, उत्तर तो देना ही होगा। ३ स्वीकार करना, अर्द्धस्वीकार करना।

मौन तजना—दे० 'मौन खोलना'।

मौन धारण करना—दे० 'मौन गहना'।

मौन बाँधना—दे० 'मौन रहना'।

मौन रहना—चुप रहना। उ० हमहुँ कहब अब ठकुर सुहाती। नाही त मौन रहब दिन राती।

मौन लेना—दे० 'मौन गहना'।

मौन सम्हारना—दे० 'मौन धारण करना'।

मौर बँधना—विवाह होना। उ० ईश्वर करे, तुम्हें मौर बँधे।

मौर बांधना—१ विवाह के समय सिर पर सेहरा पहनना। उ० बाँध मौर अरु छत्र सिर बेगि होहु असवार। २ राजा बनाना।

मौरी बँधना—लडकी का विवाह होना। उ० भला राधा के सर मौरी तो बँधी। बेचारी को लँगडी होने के करण कोई पूछता ही नही था।

मौरूसी होना—१ खानदानी होना। उ० टी० बी० की बीमारी तो उसकी मौरूसी है। २ स्थायी रूप से अपने कब्जे मे होना। उ० यह ज़मीन तुम्हारे बाप की मौरूसी नही है।

मौसर आना—प्राप्त होना, मिलना। उ० तुम्हे यह चीज़ कभी मौसर नही आ सकती।

म्यांऊँ का ठौर—खौफनाक स्थिति, जिसको सहज ही पकडना या सँभालना सभव न हो।

म्यांऊँ का मुंह—खतरनाक या भयावह चीज, सबसे कठिन समस्या। उ० म्यांऊँ का मुंह तो यही है।

म्यांऊँ का मुंह पकडना—मुश्किल काम करना। उ० म्यांऊँ का मुंह कौन पकडेगा, सब तो छोटे ही कामो पर तैयार है?

म्यांऊं-म्यांऊं करना—१ भय से धीरे-धीरे बोलना। उ० क्या म्यांऊँ-म्याऊँ करते हो, साफ़ कहो। २ नाक से बोलना।

म्यांव-म्यांव करना—दे० 'म्यांऊँ-म्यांऊँ करना'।

म्यान से निकलना—१ तलवार का बाहर आना। २. दे० 'म्यान से बाहर होना'।

म्यान से बाहर होना—बहुत क्रोधित होना। उ० पहले बात सुन लो, तब म्यान से बाहर होना।

म्लेच्छ होना—१ बहुत गदा होना। २ बहुत कृपण होना। उ० तुम तो बड़े मलेच्छ हो, एक पैसा भिखारी को कभी भी नही देते।

य

यंत्र-मन्त्र—दे० 'मन्त्र-यत्र'। उ० डाकिनी साकिनी खचर भूचर यत्र- मत्र भजन कलमषारी।

यक़ीन करना—विश्वास या एतबार करना। उ० मेरे पर भी कुछ यकीन कीजिए।

यक़ीन लाना—विश्वास करना उ० आप यकीन लायें या न लायें, मैं तो सही-सही कह ही रहा हूँ।

यक़ीन होना—विश्वास होना। उ० इस बात पर यकीन ही नही होता है।

यदा-कदा—जब-तब, कभी-कभी। उ० यदा-कदा आप यहाँ भी आ जाया करें।

यम का केश पकड़ना—मृत्यु का आना।

यम का डडा लगना—मृत्यु का निकट आना।

यम का पाश—मृत्यु का फदा।

यम की यातना देना—बहुत कष्ट देना। उ० इस रोग ने तो मुझे यम की यातना दी।

युम के मुँह से छुड़ाना—मरते हुए की रक्षा करना।

यमपुर को घर बनाना—मृत्यु को प्राप्त होना।

यमपुर पहुंचना—मर जाना।

यमपुर पहुंचाना—१ मार डालना। उ० अगर ज्याद बढ-बढ कर बोलोगे तो अभी यमपुर पहुंचा दूंगा। २. दुर्दशा करना।

यमपुर भेजना—दे० यमपुर पहुँचाना'।

यमपुरी—[यमपुरी के मुहावरो के लिए यमपुर देखिये।]

यमलोक पहुंचाना—दे० 'यमपुर पहुँचाना'।

यमलोक भेजना—दे० 'यमपुर पहुँचाना'।

यश कमाना—नाम हासिल करना। उ० यश कमाना आसान है, पर उसकी रक्षा करना कठिन है।

यश गाना—प्रशसा करना, बडाई करना। उ० झूठे यश गाना खुशामद करना है।

यश मानना—एहसान मानना। उ० मैं आपका बहुत यश मानता हूँ।

यश मिलना—नेकनामी मिलना। उ० कुछ ऐसा सयोग है कि बात-बात मे उसे यश मिल जाता है।

यश में धब्बा लगना—(पहले से प्रतिष्ठित) सम्मान मे अतर पड़ना (यश-विरोधी बात या काम आदि से)।

यश लूटना—१ दे० 'यश कमाना'। २ आसानी से यश कमाना।

यह बात ही क्या है—यह कोई कठिन काम नही है। उ० यह बात ही क्या है, जो मैं आपसे सहायता लूं।

यहां का यहीं—दुनियां का दुनियां मे ही। उ० यहाँ की सब चीजें यही रह जाती हैं।

याद करना—१ पछताना। उ० इस वक्त तो आप मुझे मार कर घर से निकाल रहे हैं, पर बाद मे याद करेंगे।

याद में—होश मे। उ० वे अब याद मे नही हैं।

यारमारी करना—मित्र बन कर धोखा देना। उ० यारमारी करने वालो का कभी कल्याण नही होता।

यारी कुट करना—दोस्ती छोड़ना। उ० उससे यारी कुट कर दो।

यारी-कुट्टी करना—दे० 'यारी कुट करना'।

यारी गाँठना—१. दोस्त बनाना। २ दोस्ती निभाना। उ० उनसे यारी न गाँठो, अपने मतलब पर वे छोड नही सकते।

यारी जोड़ना—मित्रता स्थापित करना। उ० इतनी जल्दी तुमने किस-किस से यारी जोड़ ली?

युगधर्म—परिस्थिति या समय के अनुसार व्यवहार। उ० युगधर्म आज नही कहता है कि अछूतो को अछूत समझो।

युग फोड़ना—दोस्तो मे फूट पैदा करना। उ० तुमने वह युग फोड कर क्या पाया?

युग बीतना—बहुत दिन बीतना। उ० तब से युग बीत गया, पर वे नहीं आए।

युग-युग—बहुत दिनो तक। उ० भगवान करे आप युग-युग जीएं।

युग-युगान्तर से—बहुत दिनो से। उ० युग-युगान्तर से इनके यहाँ यह प्रथा चली आ रही है।

युग लगना—समय का बहुत बडा ज्ञात होना। उ० वियोग मे एक रात भी युग लगती है।

युगांतर उपस्थित करना या कर देना—समय पलट देना। क्राति ला देना। उ० गाधी ने तो अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे युगातर उपस्थित कर दिया।

युगातर लाना—दे० 'युगातर उपस्थित करना'।

युद्ध माँड़ना—लडाई ठानना। उ० निरखि यदुवश को रहस मन मे भयो, देखि अनिरुद्ध युद्ध मांड्यो।

युधिष्ठिर होना—बहुत बडा सत्यवादी होना। उ० आप युधिष्ठिर नही हैं कि आपकी बात सही मान लें।

यों ही—१. बिना किसी विशेष ध्येय के। उ० मैं तो उनके यहाँ यो ही गया था। २ मुफ्त मे। उ० यह चीज़ आपको यो ही नही दे सकता। ३ बिना कारण के।

यो ही सही—इस तरह भी स्वीकार है। उ० खैर, यो ही सही, तुम काम तो करो।

योग-क्षेम पूछना—कुशल-मगल पूछना। उ० वे मिलें तो बिटिया के यहाँ का भी योग-क्षेम पूछना।

यौवन उभरना—१ जवानी आना। उ० उसका यौवन उभर रहा है, अब उसकी शादी कर दो। २ रौनक़ पकडना। ३ सुन्दर होना, सुन्दरता स्पष्ट होना।

यौवन ढलना—१ जवानी बीतना। बुढापा आना। उ० जब इस समय कुछ न कर सके तो यौवन ढलने पर क्या करोगे। २ रौनक़ समाप्त होना।

यौवन पर आना—दे० 'यौवन उभरना'।

र

रंक का राय और राय का रंक होना—समय मे बहुत बडा परिवर्तन होना। उ० भाई यह दुनिया है, रक का राय और राय का रक होते देर नही लगती।

रंग आना—१ रग अच्छी तरह चढना। उ० एक बार और रँग दो तो साड़ी का रग आ जायगा। २ मज़ा मिलना। उ० जाफरान छोडने के बाद भग का रग आता है। ३ रौनक़ आना। उ० बिजली लग जाने के बाद मकान का रग आयेगा।

रग उखडना या उखड जाना—१. धाक न रहना, स्थिति प्रतिकूल होना। उ० पहले यहाँ उसे बहुत आमदनी थी, पर अब तो रग उखड गया। २ मज़ा बिगड जाना। उ० तुम्हारे जाते ही यहाँ सारा रग उखड गया।

रग उड़ना या उड़ जाना—१ रग का फीका पड जाना। उ० अगर साडी को धूप मे पसारोगे तो उसका रग उड़ जायगा। २ धाक खतम होना। उ० अब तो उनका रग उड गया। ३ नशा खतम हो जाना। ४. शर्म या डर से चेहरे की रौनक समाप्त हो जाना। उ० मेरे सामने तो उसका रग ही उड जाता है।

रग उतरना—दे० 'रग उड़ना'।

रग कटना—आनद होना, खुशी मनाया जाना। उ० तुम्हारे यहाँ तो आजकल खूब रग कट रहा है।

रग खुलना—१ शरीर का रग साफ होना। २ प्रभाव और तीव्र तथा स्पष्ट होना। ३ रग का खिल उठना।

रंग खेलना—१ होली के दिन एक दूसरे पर रग डालना। उ० कम से कम होली के दिन तो रग खेल लिया करो। २ मज़ा उडाना। उ० खूब रग खेलो। इम्तहान नज़दीक आयेगा तो पता चलेगा।

रग चढ़ना—१. रग खिलना, रग का ठीक होना। उ० इस साडी पर खूब रग चढा है। २ असर होना। उ० उस पर भग का रग खूब चढता है। ३ स्वस्थ और लाल होना। ४ रसिक होना। उ० आजकल तुम पर भी रग चढ रहा है।

रग चूना—दे० 'रग टपकना'।

रग चोखा करना—१ अधिक प्रभावपूर्ण बनाना। २ सुदर बनाना।

रग जमना या जम जाना—१. धाक जमना। उ० उसका वहाँ खूब रग जम गया। २ मस्ती होना। ३ जीत होना।

रंग जमाना—१ असर डालना। उ० एक बार भी रग जमा दूँगा तो कुछ दिन के लिए ठीक हो जायगा। २ रोब-दाब दिखाना। ३ रोब डालना। उ० तुम तो बातो मे ही रग जमा लेते हो!

रँग जाना—१ पुरानी बात न रह जाना। २. पूर्ण प्रभाव होना।

रंग टपकना—१. युवावस्था का पूर्ण विकास होना। उ० अब तो शरीर से रग टपक रहा है। २ रग झलकना। उ० उसके शरीर से ललाई का रग टपकता है।

रंग-ढंग—१. हालत, दशा। उ० आजकल उसका रग-ढग कैसा है? २ व्यवहार, बरताव। उ० आजकल मेरे साथ उसके रग-ढग अच्छे नही दिखाई देते। ३ लक्षण। उ० आसमान के रग-ढग से तो मालूम होता है कि आज पानी बरसेगा।

रंग-ढग देखना—हाल-चाल देखना। उ० पहले यहाँ का रग-ढग देख लो, फिर जाना।

रंगत आना—मजा आना। उ० तुम्हारे बिना नाच मे रगत नही आती।

रंग दिखाना—१ आफत मे फँसाना। सकट मे डालना। उ० इसने तो हमे खूब रग दिखाया। २ मजा दिखाना। उ० चलो तुम्हे भी रग दिखा लाएँ। ३ फल सामने लाना।

रंग देखना—१ फल देखना। उ० काम तो उन्होंने अपने मन से कर डाला, अब जरा इसका रग देखना, वे मुँह की न खाएँ तो मेरा नाम नही। २ मजा चखना। उ० भग का रग देखना चाहते हो तो मथुरा चलो।

रंग देना—१ अपने प्रेम-पाश मे फाँसने के लिये प्रेम करना। उ० मैं जानता हूँ कि तुम उसे केवल रग दे रहे हो। २ चढाना, भुलावा देना। उ० रग देकर अपना काम निकाल लो, फिर देखा जायगा। ३ धोखा देना।

रग न छोड़ना—अपना स्वरूप और स्वभाव न छोडना।

रंग निकलना—दे० 'रग निखरना'।

रंग निखरना—१ रग का चटकीला होना। उ० सूखने पर रग निखर जायगा तो साडी अच्छी लगेगी। २. गोरा होना। उ० जवानी आने के साथ-साथ लडकियो का रग निखरता जाता है। ३ उन्नति करना। उ० उसका भी रग निखर गया।

रंग पकड़ना—१ जवान होना। उ० उसका लडका रग पकड रहा है, अब शादी की जा सकती है। २ बढना, वृद्धि पर होना। उ० मामला अब रग पकडेगा।

रंग पर आना—दे० 'रग पकडना'।

रंग फक पड़ जाना—दे० 'रग उड़ना'।

रग फक हो जाना—दे० 'फक हो जाना'।

रंग फ़क होना—दे० 'रग उडना'।

रग फीका रहना—काफी असर या रोब न रहना। उ० वह थानेदार है तो बडे रोब-दाब का, पर यहाँ उसका भी रग फीका ही रह गया।

रंग बँधना—१ प्रभाव जमना। रोब जमना। उ० अब यहाँ उसका भी काफी रग बँध जायगा। २ तूल होना। उ० मामले मे अब रग बँधेगा।

रग बदलना या बदल जाना—१ नाराज होना, लाल-पीला होना। उ० आप तो नाहक हम पर रग बदलते हैं। २ हालत मे परिवर्तन आना, दूसरा का दूसरा होना। उ० राजगद्दी पर बैठते ही राजकुमार का रग बदल गया, अब तो वे अपने मित्रो को पहचानते ही नहीं। ३ सिद्धात बदलना। उ० रोज-रोज रग बदलने वाले मुझे पसद नही।

रग बरसना—१ अत्यन्त सुन्दर लगना। २ आनद छाना। उ० शादी के अवसर पर तुम्हारे घर मे रग बरस रहा था। ३ मौज उडना। उ० आजकल उनके यहाँ रग बरस रहा है।

रंग बांधना—१ रोब गाँठना, धाक जमाना। उ० यहाँ रग न बाँधो, वही अपने आफिस मे बाँधना। २. ऊँची बातें या अन्य ऊपरी चीजो से रोब जमाना या असर पैदा करना। उ० उस दिन तो उसने ऐसा रग बाँधा कि सभी लोग दब गए।

रंग बिगड़ना—१ बुरा हाल होना। उ० उसका यहाँ आते ही रग बिगड गया। २ रोब न

रहना, शान न रहना। उ० जब यहाँ मेरा रंग बिगड़ गया तो तुम कितने दिन टिकोगे ?

रंग-बिरंगा—१. बहुत से रंगो का । उ० रंग-बिरंगी साड़ी मुझे बहुत पसंद है। २. बहुत तरह का। उ० रग-बिरंगी बातें मत करो, सीधे जो कहना हो, कहकर अपना रास्ता लो। ३. रसिक। उ० वह रग-बिरंगा आदमी है। ४. विचित्र।

रंग भरना—बात को अतिरंजित करके कहना।

रंग मचाना—१. रण मे खूब युद्ध करना । उ० चढि देह समर उत्तर परन उत्तर द्वार मचाय रंग। २ धूम मचाना। उ० उसने तो खूब रंग मचाया है।

रंग मारना—१ विजय पाना। उ० उसने तो रग मार लिया। २ रग लूटना, मजा लेना उ० रंग मारा तो तुमने।

रंग में ढलना—मन के अनुसार चलना। रास्ते पर जाना। उ० उसका तुम्हारे रग में ढलना जरा मुश्किल है।

रंग में भंग करना—मजा बिगाड़ना। किरकिरा करना। उ० बत्ती बुझाकर तुमने महफ़िल के रंग में भंग कर दिया।

रंग में भंग पड़ना—आनन्द मे बाधा पड़ना। मजा किरकिरा होना । उ० बीच महफ़िल मे पिता जी के आ टपकने से रग में भग पड़ गया।

रंग रलना—आनन्द करना, मौज लूटना। उ० आप तो आजकल खूब रंग रल रहे हैं।

रंग-रलियाँ करना—दे० 'रग रलना' । उ० श्याम करत रग-रलियाँ।

रंग-रलियाँ मचाना—१. आनन्द और चैन से रहना। उ० तुम्हारे यही दिन हँसने-बोलने और रग-रलियाँ मचाने के हैं। २ रमण करना, विहार करना। ३. आनद और खुशी से शोरगुल करना या जोर से हँसना या नाच-रग करना।

रंग-राँची होना—अनुरक्त होना, प्रभाव में होना।

रंग लाना या ले आना—१. रग दिखाना। उ० रग लाती है हिना पत्थर पर पिस जाने के बाद। २ हालत करना। ३ मजा लाना। ४ उन्नति पर होना। उ० उसका व्यापार अब रंग लायेगा। ५. परिणाम दिखलाना । उ० उस दिन की फौजदारी देखो क्या रंग लाती है ?

रंग हटाना—प्रभाव दूर करना । रोब कम करना। उ० तुम्हीं उसका रग हटा सकते हो।

रंग होना—१. अनुराग होना। २ रोबदाब होना।

रँगा सियार—धूर्त, ऊपर से और भीतर से और। उ० इन रँगे सियारों का विश्वास न करो।

रँगा सियार होना—बनावटी होना, ढोंगी होना। उ० आजकल के महात्मा लोग रँगे सियार होते हैं।

रंगीन मिजाज़—रसिया, रसिक।

रँगे हाथ पकड़ा जाना—बुरा काम करते हुए सप्रमाण पकड़ा जाना। (यह to be caught red handed का अनुवाद है।)

रंजक उड़ाना—१ अपान वायु छोड़ना। २ तोप, बन्दूक छोड़ने के लिए बारूद जलाना। उ० वह रंजक भी उड़ाना नही जानता है, और अपने को बहुत बड़ा तोपची समझता है।

रंजक चाट जाना—बन्दूक की बारूद का जल जाना, पर उसका न छूटना । उ० आपकी बन्दूक कैसी खराब है कि सब रंजक चाट गई ?

रंजक देना—गाँजे का दम लगाना। उ० रंजक देना स्वास्थ्य के लिए हानिकर है। रंजक दो तो हम भी शाम को तुम्हारे यहाँ आ जाया करें।

रंजक पिलाना—तोप या बन्दूक की प्याली मे थोड़ा-सा बारूद रखना । उ० चलाने के लिए तोप में रंजक पिला ही रहा था कि दुश्मन आ पहुँचे।

रंजीदा करना—१ नाखुश करना। उ० छोटी-सी बात के लिए आप क्यो उन्हे रंजीदा कर रहे हैं ? २. उदास करना। उ० बेकार मन रंजीदा न करो।

रँडापा झेलना—विधवापन भोगना। उ० हिंदू विधवाओं के लिए रँडापा झेलना कितना बड़ा अभिशाप है, नहीं कहा जा सकता।

रकम उड़ाना—१. रुपये पाना (रिश्वत रूप में)। २ रुपये खर्च करना।

रक़म खा जाना—दूसरे के धन को हड़प जाना।

रकाब पर पैर रखना—१ चलने के लिए बिलकुल तैयार होना। उ० आप जब भी आते हैं, रकाब पर पैर रखे आते हैं। २ घोड़े पर चढ़ना सीखना शुरू करना। उ० अभी रकाब

पर पैर रखना तो आता ही नही और खिचडी मे घोडा माँगते हैं सात वित्ते का ।

रक्त की नदी बहाना–घमासान-युद्ध करना या मारकाट करना ।

रक्त के आँसू रोना–बहुत दु खी होना ।

रक्त पिलना–गदा खून पिलाना । [उ० तुमको रक्त पिला कर तब छोड़ूँगी [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग केवल निम्न स्तर की स्त्रियाँ करती हैं ।]

रक्तपात होना–मार-काट होना, खून-खराबी होना । उ० आज से दो वर्ष पहले इसी ज़मीन के लिए कितना रक्तपात हुआ था ।

रक्त मे होना–जन्म से होना, सहज होना ।

रख छोड़ना–बचा रखना । उ० कुछ रुपये बुढ़ापे के लिए भी रख छोडो ।

रखना पड़ना–१ खलल पडना, बाधा पडना । उ० इस काम मे भी रखना पड गया । २ खराबी या नुक्स होना । ३ झगड़ा पडना ।

रख-रखाव–लालन-पलान । उ० इस लड़के का रख-रखाव भी तुमारे ही ज़िम्मे है ।

रख लेना–१ दबालेना, मार लेना । उ० आपने मेरे लिए जो चीज़ें उनके पास भेजी थी, उन्होने रख ली । २ रखनी या रखेली रखना । उ० उन्होंने एक स्त्री को रख लिया है । ३ जगह देना । उ० अपने आफ़िस में इसे भी रख लो ।

रग उतरना–१ क्रोध उतरना । उ० एक लाठी लगते ही उनका सब रग उतर गया । २ आँत उतरना । उ० जब उनका रग उतरता है तो बहुत परीशान हो जाते हैं । ३. हठ दूर होना ।

रग खड़ी होना–१ शरीर की किसी रग का फूल जाना । उ० उसकी हाथ की एक रग खडी हो गई, डाक्टर को दिखा दो । २ नामर्दी के विरुद्ध चिह्न प्रकट होना । उ० रग तो खडी होती ही नहीं और बाप बनना चाहते हैं चार बेटो का । (अश्लील और ग्राम्य प्रयोग)

रग चढ़ना या चढ जाना–१ क्रोध आना । उ० बात-बात मे उनकी रग चढ जाती हैं । २ हठ के वश होना ।

रग देना–धोखा देना, फँसा देना । उ० इससे बच कर रहना, नही तो यह मौक़ा मिलते ही रगड देगा ।

रगड़ पड़ना–१ अधिक मेहनत पडना । उ० उसे बहुत रगड पड़ी है, इसी से बेचारा थक गया है । २ रगडाई पड़ना । उ० रगड पड़ने से हाथ मे घट्ठे पड गए हैं ।

रगड़ान देना–घर्षण करना, रगडना । उ० अबर और खाल को रगडान देने से बिजली पैदा होती है ।

रग दबना–किसी के दवाव मे होना । उ० तुम्हारी रग उन्ही से दबती है ।

रग-पट्ठे से परिचित होना–अच्छी तरह जानना । उ० मैं उसके रग-पट्ठे से खूब परिचित हूँ ।

रग-पट्ठे से वाकिफ होना–दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रग पर नश्तर मारना–मर्मान्तक प्रहार करना ।

रग-रग पहचानना–अच्छी तरह पहचानना ।

रग-रग फड़फना–शरीर मे बहुत उत्साह होना । जोश आना । उ० जोश की बातें सुनते ही उनकी रग-रग फड़क उठी ।

रग-रग में–सारे शरीर मे । उ० शरारत तो तुम्हारी रग-रग मे भरी है ।

रग-रग में कूट-कूट कर भरी होना–पूर्णरूपेण भरी होना, सारे शरीर मे व्याप्त होना । उ० शरारत तो तुम्हारे रग-रग मे कूट-कूट कर भरी है ।

रग-रग मे घुंघरू बज उठना–बहुत पुलकित हो उठना ।

रग-रग मे बैठना–१. पूर्ण रूप से देह मे प्रभाव करना । उ० पीते ही जहर उसके रग-रग मे बैठ गया और वह मर गया । २ पूर्णत अभिभूत करना । उ० शरारत उसकी रग-रग मे बैठी है ।

रग-रग से–१. अच्छी तरह, पूर्णरूपेण । उ० वह तो रग-रग से जान देने पर तुला हुआ है । २ प्रत्येक अग से । उ० तुम्हारे रग-रग से शरारत टपकती है ।

रग-रेशे मे–सारे शरीर मे । रग-रग मे । उ० शरारत तो तुम्हारी रग-रेशे मे भरी है ।

रग-रेशे से परिचित होना–दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रग-रेशे से वाकिफ होना–दे० 'रग-पट्ठे से परिचित होना' ।

रगें ढीली पड़ना–थक जाना।

रंगों में बिजली दौड़ना–साहस और उत्साह का भाव शरीर में संचरित होना।

रच-रच–धीरे-धीरे, बनाकर। उ० रच-रच कर लिख दो।

रचि-रचि–धीरे-धीरे, सुन्दरता से बना कर। उ० रचि-रचि लिखो कान्ह को पाती।

रज-बराबर–अत्यन्त तुच्छ।

रट लगाना–१. बार-बार कहना। उ० उसे तो राम-राम की रट लगी है। २. धुन लगना, चाह होना। उ० उसे तो यही रट लगी है कि मैं कलकत्ता चला जाऊँ।

रट्टा लगाना–घोटना, याद करना। उ० परीक्षा के दिनो मे रट्टा लगाने से क्या होगा, यदि पहले से नही पढा।

रण में रज रखना–रण जीतना।

रण-बाँकुरा होना–वीर होना।

रति जोड़ना–प्रेम करना।

रत्ती चमकना–दे० 'रत्ती जागना'।

रत्ती जागना–क़िस्मत खुलना। उ० उसकी रत्ती तो सालों से जागी हुई है।

रत्ती भर–ज़रा-सा, थोडा-सा। उ० रत्ती भर भी मैं झूठ नहीं बोलता। रत्ती भर तो काम किया और सर पर बैठना चाहते हैं। रत्ती भर खिलाया, और उसी का एहसान मानूँ।

रत्ती-रत्ती–१ रग-रग, कण-कण। उ० तुम तो मुकदमे का हाल रत्ती-रत्ती जानते हो। २ थोडा-थोड़ा। उ० रत्ती-रत्ती सब दें तो बहुत होगा।

रद्दा चढ़ाना–१. रोब जमाना। २. किसी बात को और अधिक प्रोत्साहित करना।

रपट पड़ना–लुढक जाना, गिर जाना।

रपट्टा मारना–दे० 'रपट्टा लगाना'।

रपट्टा लगना–दौडना, बहुत दौडना। उ० उसने बहुत रपट्टा लगाया, पर उसका काम न हो सका।

रप-रप चलना–दुलकी या तेज जाना।

रप-रप जाना–तेज़ जाना।

रफ़ा-दफ़ा करना–समाप्त करना। उ० इस झगड़े को किसी तरह रफा-दफा करो।

रफू करना–फटे कपडे को तागो से ऐसा सीना कि विशेष ज्ञात न हो। उ० वह रफू करना अच्छा जानती है।

रफू-चक्कर बनना–दे० 'रफू-चक्कर होना'।

रफू-चक्कर होना–भाग जाना, चलता बनना। उ० सिपाही को देखते ही चोर रफू-चक्कर हो गया।

रफ्ता-रफ्ता–शनैः-शनैः, धीरे-धीरे। उ० घबडाओ नही, रफ्ता-रफ्ता सब ठीक हो जाएगा।

रफ्फू करना–दे० 'रफू करना'।

रबदा पड़ना–खूब पानी बरसना। उ० आज सुबह ही से खूब रबदा पड रहा है।

रब्त-जब्त बढ़ाना–दे० 'रब्त बढाना'।

रब्त-जब्त होना–मेल-जोल होना। उ० उनसे कुछ रब्त-जब्त हो तो काम निकल सकता है।

रब्त बढाना–दोस्ती या मेल-जोल बढाना। उ० उस बदमाश से रब्त न बढाओ।

रमजना–ऐसा लडका, जिसके बाप का पता न हो। रडी का लडका। उ० वह तो रमजना है, अपने बाप का नाम क्या लिखाएगा ?

रम जाना–मस्त हो जाना। घुल-मिल जाना। उ० यह तुम्हारी बहुत बुरी आदत है कि जहाँ जाते हो, वही रम जाते हो।

रल-मिल कर रहना–मिल-जुल कर रहना। उ० वहाँ जाना तो लोगो से रल-मिल कर रहना।

रला डालना–इधर-उधर करना। तितर-बितर करना। उ० ऐसा नौकर है कि सारी चीजें रला डालता है।

रला निकल जाना–हिसाब की गलती का दूर हो जाना। उ० अब रला निकल गया, आओ देख लो।

रवाज देना–जारी करना। उ० बुरी बातो को रवाज देने की होशियारी मूर्ख ही कर सकते हैं।

रवाज पकड़ना–प्रचलित होना। उ० रू साम्यवाद धीरे-धीरे भारत मे भी रवाज पकड रहा है।

रवाना करना–भेजना। उ० तुम्हारे जाते ही मैंने सब आदमियो को रवाना कर दिया।

रवाना होना–चल देना। उ० उनके आते-आते हम लोग रवाना हो गए थे।

रवा भर–ज़रा-सा, वहुत थोड़ा। उ० मुझे रवा भर नमक दे दो।

रस आना–आनन्द मिलना।

रसद बँटना–भोजन का सामान मिलना। उ० अभी बारात मे रसद नहीं बँटी है।

रसना खोलना–वोली निकलना। उ० अव तो बच्चा रसना खोलने लगा है।

रसना तालू से लगना–ज़वान वंद करना, चुप होना। उ० उसकी रसना तो तालू से लगती ही नही, दिन-रात वक-वक करता रहता है।

रस वरसना–आनन्द पहुँचना।

रस भग होना–आनन्द का वीच मे ही भग हो जाना।

रस भीजना–१. मज़े का वक्त आना। उ० अव तो इसका रस भीजा है और तुम जाना चाहते हो। २ आना। उ० उसमे जवानी का रस भीज रहा है। ३. रस का पूर्ण रूप से फलना। उ० कल तक आशा है कि रस भीज जायेगा।

रस भीनना–दे० 'रस भीजना'।

रस मे पगना–आनन्द मे पूरी तरह लीन होना।

रस-रस–धीरे-धीरे। उ० रस-रस सूख सरित सर पानी। ममता त्याग करहिं जिमि ज्ञानी।

रस लेना–१. आनन्द लेना। उ० तुम तो यौवन का रस खूव ले रहे हो। २ स्वाद लेना।

रसातल जाना–१ नष्ट होना। उ० रसा रसातल जैहै तवही। २ नर्क मे जाना।

रसातल पहुँचना–१ वरवाद होना। उ० उसके साथ तुम भी रसातल न पहुँचे तो कहना। २ नर्क मे पहुँचना।

रसातल पहुँचाना–१ वरवाद कर देना। उ० अगर उसके साथ तुम दो-चार माह भी रह गये तो वह तुम्हें भी रसातल पहुँचा देगा। २ नर्क में पहुँचाना। उ० तुम्हारे पाप तुम्हे रसातल पहुँचा कर तव छोड़ेंगे।

रसातल भेजना–दे० 'रसातल पहुँचाना'।

रसीद करना–१. लगाना, मारना। उ० चुप रहो, नही ऐसा थप्पड रसीद करूँगा कि सीधे हो जाओगे। २ भेजना। उ० ज़्यादा वोलोगे तो अभी तुम्हें तुम्हारे नगडदादा के पास रसीद कर दूँगा।

रसीद काटना–१. रुपया-प्राप्ति का प्रमाण-पत्र देना। उ० ठहरो, अभी रसीद काट देता हूँ। २. नौकरी या काम पर से हटा देना। उ० ज़्यादा परीशान करोगे तो रसीद काट दूँगा। ३. दूसरे संसार को भेजना। उ० वेचारे को मार कर उसकी रसीद काट दी।

रसे-रसे–दे० 'रस-रस'।

रसोई चढना–भोजन पकना। उ० रसोई चढ गई है, थोडी देर में खाना खाकर तव आओ।

रसोई तपना–दे० 'रसोई चढना'। उ० विप्र पड़ोसी वैद्य आपकी तपै रसोई।

रस्सी का साँप वनना–असत्य वात का भयकर रूप धारण करना। उ० तुम्हारे जैसे वाचालो के मुँह से तो सभी वातें रस्सी का साँप वन जाती हैं।

रस्सी जलने पर भी वल वना रहना–स्थिति के वहुत व्यर्थ परिवर्तन हो जाने पर ही रुकने मे दम आना।

रस्सी ढीली छोडना–नियत्रण मे कमी करना। उ० यदि रस्सी ढीली छोड़ देंगे तो ये सव फिर उपद्रव करने लगेंगे।

रस्सी हाथ मे रखना–अपने वश मे रखना।

रह जाना–१ न जा सकना। उ० उनके आने से मैं भी रह गया। २. पीछे पड़ना। उ० हम सब चले आए और वह कहीं रह गया। ३ शेष रहना। उ० केवल पाँच रुपये रह गए हैं। केवल एक वह रह गया और सब पा गए। ४ कुछ कर न सकना। ५ पडा रहना। उ० मैं असमजस में रह गया, नही तो वता देता।

रहते हुए–मौजूदगी मे। उ० हमारे रहते हुए कोई चूँ नही कर सकता।

रहने देना–१ जाने देना। उ० रहने दो, कल करना। २ परिवर्तन करना। उ० मैंने तो उसकी ही बातो को रहने दिया। रहने दो, वदलने से क्या लाभ?

रहपट देना–१ जल्दी कर देना। २ झापड मारना। उ० दो रहपट दूँगा तो मिज़ाज ठिकाने हो जायेगा।

रह-रह के—१ बार-बार। उ० रह-रह के उसकी याद सता रही है। २ पछता-पछता कर। उ० रह-रह के सोचता हूँ कि मैंने बुरा किया। ३. थोडी-थोड़ी देर पर। उ० रह-रह कर दर्द हो रहा है।

रहस्य खुलना—छिपी बात का पता लगना। उ० अब तो कत्ल का रहस्य खुल गया है।

रहा जाना—सब्र होना। उ० क्या करूँ, रहा नही जाता है।

राई-काई करना या कर डालना—१ टुकडे-टुकडे कर डालना। उ० बच्चे ने उस तसवीर को राई-काई कर डाला। २ जीर्ण-शीर्ण करना। उ० तुमने तो मेरा कोट राई-राई कर डाला।

राई-काई होना—छिन्न-भिन्न होना। उ० सारी चीजें आँधी से राई-काई हो गईं।

राई-नोन उतारना—नज़र लगे हुए बच्चे पर उतारा करके राई और नमक को आग मे डालना, जिससे नज़र के प्रभाव का दूर होना माना जाता है। उ० राई-नोन उतार दो तो लडका ठीक हो जायगा।

राई भर—दे० 'रत्ती भर'।

राई-रत्ती—ज़रा भी, कुछ भी। उ० मैं तो उसकी राई-रत्ती भी हाल नहीं जानता। तुम्हारी वह राई-रत्ती परवा नही करता। इसमे अब राई-रत्ती भी सदेह नही।

राई-रत्ती करके—बहुत थोडा-थोडा। थोड़ा-थोडा करके। उ० राई-रत्ती करके मैंने सारी दवा उसे खिला दी।

राई-रत्ती से परिचय रखना—सब कुछ जानना।

राई से पर्वत करना—छोटी बात को बहुत बढा देना। उ० वह हर एक बात को राई से पर्वत कर देता है।

राक्षस होना—१. बहुत क्रूर होना। उ० वह तो राक्षस है, अपनी औरत को डडो से मार रहा है। २ ऐसा होना जिसे किसी भी बुरी या अरुचिकर चीज़ से घृणा न हो।

राख की चिनगारी—दबा हुआ जोश या उमग।

राख की चिनगारी चमकना—दबे हुए जोश या उत्तेजना का उभडना।

राख डालना—दबा देना, ढक देना।

राख मे मिलना—बरबाद हो जाना।

राग अलापना—१ सगीत गाना। उ० वह तो बडा अच्छा राग अलापता है। २ चर्चा छेडना, बात कहते रहना। उ० तुम तो हर समय अपना ही राग अलापते हो।

राग गाना—अपनी कहानी कहना। राम कहानी सुनाना। उ० यहाँ तो सभी राग गाने वाले हैं, कौन किसकी सुने ?

राग देना—बुत्ता या धोखा देना।

राग पूरना—दे० 'राग गाना'।

राग-रग मे रहना—ऐश-आराम मे रहना। उ० जहाँगीर सदा राग-रग मे रहता था।

राग लाना—१ नया झगडा उठाना। उ० तुम्हे तो बिना कोई राग लाये खाना ही नही पचता। २ नयी बात लाना या पैदा करना।

राछ घुमाना—दूल्हे की सवारी को कुएँ की प्रदक्षिणा कराना। उ० सब हो गया, केवल राछ घुमाना बाकी है।

राज-काज—राज्य का कार्य। उ० राज-काज करना सबके मान का नही है।

राज देना—सम्राट बनाना। उ० दशरथ ने राम को राज देना चाहा।

राज देना—भेद बताना। उ० उसको किसी ने राज दे दिया है।

राज पर बैठना—सिंहासनारूढ होना। उ० बडे भाग्य से राज पर बैठा जाता है।

राज़फाश करना—भेद खोलना। उ० देखो, इस राज़ को फाश न करना, नही तो बहुत बुरा होगा।

राज भग होना—१ राज्य का बर्बाद होना। २ बनी-बनाई गृहस्थी बिगडना। उ० बाप के मरने से उसका राज भग हो गया।

राज रजना—बहुत सुख से रहना। उ० वह यहाँ भी राज रज रहा है।

राज रजाना—ऐश कराना, आराम से रखना। बहुत सुख देना। उ० आप अपनी स्त्री को तो राज रजना चाहते हैं और विधवा लडकी से काम करवाते है, यह कहाँ की शराफत है ?

राज़ी-ख़ुशी—अच्छी तरह, सही-सलामत, कुशल-आनन्द से। उ० राज़ी-ख़ुशी वह यहाँ चला आया।

राज़ी होना—१. सहमत होना। उ० वह हमारी बातो पर राज़ी हो गया। २ सतुष्ट होना। उ० बेचारा ग़रीब आदमी है, दो-चार पैसे मे राज़ी हो जायगा।

राज्य उलट जाना—मटियामेट हो जाना।

राढ़ करना—१. झगडा करना। उ० डगर चलत मोसे कीन्हि राढ, दूध बेचन मो न जाउँगी। २ असभव को भी कर डालना।

राढ बढ़ाना—झगडा-तकरार करना, बात बढाना। उ० यहाँ बेकार मे राढ न बढाओ।

रात आँखो मे काटना—रात जागते बिताना।

रात का दिन काटना—बहुत श्रम करना।

रात की रात—१ रात-रात भर। उ० उसने रात की रात मेहनत की, परतु फेल हो गया। २ रात ही मे या एक ही रात मे। उ० रात की रात आए और चले गए। रात की रात मकान तैयार हो गया।

रात ढलना—रात समाप्त होना।

रात-दिन—सदा,सर्वदा। उ० वह आजकल रात-दिन चारपाई पर पडा रहता है।

रात-दिन का अन्तर—बहुत अतर।

रात-दिन का रोना—सदा का दु ख। उ० यह तो तुम लोगो का रात-दिन का रोना है, मैं कहाँ तक सुनूं ?

रात-दिन बराबर होना—सर्वदा कष्ट मे रहना। उ० हम लोगो के लिए तो रात-दिन बराबर है।

रात बोलना—रात का साँय-साँय करना, रात का भयावनी होना। उ० कुछ शबे वस्ल मे भी चैन न पाया हमने, रात बोले है पडी मुर्ग़ सहर के बदले।

रात भारी होना—मानसिक या शारीरिक कष्ट के मारे रात का न बीतना। उ० आज तो रात भी भारी हो गई।

रातिब देना—जानवरो को रात को अन्न या अन्न की बनी चीज खिलाना। उ० रातिब नही देते हो क्या, देखो हाथी दुबला हो रहा है।

रातिब लगाना—कुत्ते, बिल्ली या हाथी वग़ैरह की रोज़ाना की ख़ुराक मुकर्रर करना।

रान-तले दबाना—१ कब्ज़े मे रखना। उ० तुमने तो उसे अपने रान-तले दबा लिया है, अब जो चाहो करो। २ घोड़े पर सवार होना।

रान से रान बाँधना—दे० 'टाँग से टाँग बाँधना'।

रानी का रूठ कर अपना रनिवास लेना—रूठ कर अपने वश वाली करना।

राम करना—क़ाबू मे लाना। उ० उनको राम किया और काम हुआ।

राम-कहानी कहना—१. दे० 'राग गाना'। २. कोई बहुत लबी कहानी कहना।

राम जाने—१. ईश्वर की सौगध। उ० राम जाने मैंने यह नही किया। २ मुझे नही पता है। उ० राम जाने, वहाँ क्या हुआ ?

राम-नाम सत्य है कहना—शव के साथ "राम-राम सत्य है" कहते हुए चलना। उ० सुनो, कही लोग 'राम-नाम सत्य है' कह रहे हैं।

राम-बाण होना—अचूक होना।

राम-राज्य होना—१ सुखपूर्ण राज्य होना। २. एकाधिकार होना।

राम-राम करके—१ येन-केन-प्रकारेण, किसी तरह। उ० राम-राम करके उसने इस काम को पूरा किया। २ बडी कठिनाई से।

राम-राम करना—१. प्रणाम या नमस्कार करना। उ० मिलें तो राम-राम तो कर लिया करो। २ भगवान का नाम लेना, भजन करना। उ० महात्मा लोग रात-दिन राम-राम किया करते हैं।

राम-राम हो जाना—१ मर जाना। उ० वह बूढा आज राम-राम हो गया। २ दुआ-सलाम हो जाना। उ० मिल गए तो राम-राम हो जाता है, नही तो कोई मतलब नही। ३ दिवाला निकल जाना। उ० उनका तो राम-राम हो गया।

राम-शरण होना—१ साधु होना। उ० वह तो राम-शरण हो गया, अब उसे घर से क्या मतलब ? २ मर जाना। उ० राम-शरण होने के बाद भला किसका डर ?

राय क़ायम करना—कोई निर्णय करना। किसी एक राय पर पहुँचना। उ० देर हो रही है, जल्दी कोई राय कायम की जाय।

रार करना—दे० 'राढ करना'।

रार मचाना–१ झगडा-टटा मचाना । २. झझट मचाना । ३ शरारत करना । उ० कृष्ण रोज ही कुछ न कुछ रार मचाता है ।

राल गिरना–१ पाने की इच्छा होना । लालच होना । उ० जहाँ कोई अच्छी चीज दिखाई दी कि तुम्हारे मुँह से राल गिरने लगती है । २ लड़का होना । कम उम्र का होना ।

राल चूना–दे० 'राल गिरना' ।

राल टपकना–दे० राल गिरना' ।

रावण होना–बहुत अत्याचारी होना । उ० वह तो रावण हो गया है, उसका नाश अवश्य होगा ।

राशि आना–ग्रह का पक्ष मे आना ।

राशि बैठना–१ गोद बैठना । दत्तक पुत्र होना । उ० देखे महथ की राशि कौन बैठता है ? २ दे० 'रासी होना' ।

राशि मिलना–१ दो आदमियो के ग्रहो का एक होना । उ० हमारी-तुम्हारी राशि मिलती है । २ पटरी बैठना । उ० राशि मिल जाय तो कुछ कहूँ ।

रास आना–मुवाफिक होना । उ० दिया है जहर मेरे चारागर ने तग आकर, दवा तो खूब मिली है जो आए रास मुझे ।

रास उठाना–खलिहान उठाना ।

रास कडी करना–१ लगाम खीचना । उ० घोडा चचल है, रास कडी कर लो । २ पूरा अकुश रखना । उ० लडके की रास कडी करो, वरना पछताओगे ।

रास बैठाना–१ गोद लेना । उ० डलहौजी ने रास बैठाने की प्रथा उठा दी थी । २ जन्म-लग्न का एक होना । उ० पहले रास बैठ जाय तो गणना हो । [विवाह ठीक करने के पहले हिंदुओ के यहाँ ज्योतिष के अनुसार रास बैठाते हैं । इसके ठीक होने पर विवाह होता है, अन्यथा नही ।]

रास मिलना–१ एक तरह का या एक स्वभाव का होना । उ० उन दोनो की रास मिलती है । २ गणना ठीक होना ।

रास मे लाना–१ वशीभूत करना, अधिकार मे लाना । उ० पहले उसे रास मे लाओ, फिर तो काम बन ही जायगा । २ रास्ते पर लाना । उ० लडके को रास मे लाओ, नही तो पछताओगे ।

रास रमाना–रास रचाना, रासलीला करना । उ० जाकी महिमा कहत न आवे, सो गोपिन सग रास रमावे ।

रासी होना–१. घर के किसी दूसरे की राशि पर जन्म लेना । (यह बुरा माना जाता है ।) उ० यह लडका मेरे रासी है, जो बच्चा आज पैदा हुआ, बाप के रासी है । २ परीशान करने वाला होना । उ० तुम तो आजकल मेरे रासी हो गए हो ।

रास्ता काटना–१ जाने के पहले किसी का रास्ते को काटते हुए जाना । उ० सियार ने रास्ता काट दिया है । २ तिरछे जाना । उ० रास्ता काट कर चलो, देर हो गई है । ३ काम मे बाधा डालना । मेरा रास्ता न काटो, वरना कुशल न होगा ।

रास्ता दिखाई देना–उपाय समझ मे आना ।

रास्ता छोडना–१ जाने की जगह देना । २ बाधक न होना ।

रास्ता खुलना–रुकावट दूर होना ।

रास्ता देखना–१ प्रतीक्षा या इतजार करना । उ० रास्ता देखते-देखते रात हो गई, पर वह नही ही आया । २ आसरा देखना । उ० मुझे तो केवल तुम्हारा रास्ता देखना है ।

रास्ता नापना–१ रास्ते पर आना । २ आना-जाना । उ० क्या स्कूल का रास्ता नापते हो, जब कुछ आता-जाता ही नही । ३ चले जाना । उ० मुझे अपना रास्ता नापना है, तुमसे क्या काम ?

रास्ता निकालना–युक्ति सोचना ।

रास्ता पकडना–१ रास्ते पर जाना । रास्ता देख कर चले जाना । उ० यही रास्ता पकड कर चले जाओ । २ उचित मार्ग पर जाना । उ० रास्ता पकडो, नही तो बदनामी होगी ।

रास्ता फूटना–कई रास्तो का निकलना । उ० वहाँ तो कई रास्ते फूटते है, मैं किससे जाऊँगा ?

रास्ता बताना–१ चालबाजी चलना । उ० उसने तो तुम्हे अच्छा रास्ता बताया । २ ढग या तरीका बताना । उ० कोई रास्ता बताओ कि मुकदमा तय हो जाय । ३ पथ-प्रदर्शन करना । उपदेश देना । उ० रामचद्र जी ससार को रास्ता बताने आए थे ।

रास्ता बिगाड़ना–आगे के लिए गलत सिलसिला चालू करना।

रास्ता भूलना–बहुत दिनो के बाद आना।

रास्ता रोकना–१ प्रगति मे बाधक होना। २ रास्ते मे आगे न बढने देना।

रास्ता लाना– मुवाफिक करना। उ० उसे किसी तरह रास्ते लाओ।

रास्ता साफ करना–अडचनें दूर करना।

रास्ते पर आना–सत्य पर आना, सच बोलना। उ० रास्ते पर आओ तो तुम्हारा कहा सुनें।

रास्ते का कांटा–मार्ग की बाधा।

रास्ते की धूल बटोरना–गरीब होना, धन के अभाव मे मारा-मारा फिरना।

रास्ते पर आना– १. सुधर जाना, या रास्ता पकड लेना। उ० अब तो वह रास्ते पर आ गया है। २ बात मान लेना। उ० मेरे रास्ते पर आ गए तो अच्छा ही किया। ३ चगुल मे या वश मे आना। उ० अब रास्ते पर आ गए, देखें कैसे चलाते हैं।

रास्ते पर लाना–ठीक करना। सुधार करना। उ० उसे पुलिस ही रास्ते पर ला सकती है।

रास्ते मे आँखें बिछाना–बहुत आदर करना।

राह चलते का पल्ला पकडना–रास्ता चलते झगडा करना। उ० वह तो राह चलते का भी पल्ला पकडता है, तुम तो उसके पडोसी हो। तुम्हारे साथ उसका झगडा आश्चर्य की बात नही।

राह ताक-ताक थक जाना–इन्तजार या प्रतीक्षा करते-करते निराश हो जाना। उ० हम क्या कहे तपाक की बातें, आपकी राह ताक-ताक थके।

राह ताकना–दे० 'रास्ता देखना'।

राह देखना–दे० 'रास्ता देखना'।

राह पडना–१ रास्ता हो जाना। उ० आते-जाते इधर से भी राह पड गई है। २ लूट होना। उ० आजकल जगह-जगह राहे पड रही हैं।

राह पर आना–दे० 'रास्ते पर आना'।

राह बचाना–सामने आने से बचना।

राह बता जाना–१. उपाय बताना। उ० वे तो राह बता गए, पर मेरी समझ मे नही आया। २ टाल देना। उ० राह बताने से काम न चलेगा, मेरे साथ वहाँ तक चलिए। जब भी जाता हूँ, राह बता जाता है।

राह बांधना–रूंध देना, रास्ता बन्द कर देना। उ० खेत की राह बांध दो, नही तो फसल खराब हो जायगी।

राह भारी होना–रास्ता किसी भी प्रकार खत्म न होना।

राह मारना–उन्नति मे बाधा डालना। उ० उसने वहाँ जाकर स्वय अपनी राह मार ली। उसकी राह क्यो मारते हो ?

राह रखना–लेन-देन जारी रखना। उ० ऋण चुका कर ही राह रखी जाती है।

राह लगना–१ पीछे चलना। उ० यह कुत्ता तो तुम्हारी राह लगा है। २ थक जाना। उ० दूर से आया है, राह लग गई है। ३ रास्ता पकडना। उ० इसी राह लगकर चले जाओ। ४ ठीक रास्ते पर चलना। उ० राह लगो, नही तो बदनामी होगी।

राह लेना–चल देना। उ० ज्यादा बक-बक न करो, अपनी राह लो।

राह से चलना–१ उचित व्यवहार करना। उ० सबके साथ राह से चलो, नही तो बदनामी होगी। २ अपने काम से काम रखना। उ० राह से चलो, दूसरे की राह से तुमसे क्या काम ?

राह से बेराह होना–१ उचित मार्ग से अनुचित मार्ग पर जाना। उ० वह तो कुसगत मे पड-कर राह से बेराह हो गया। २ दूसरा धर्म स्वीकार करना।

राही करना–मुसाफिर बनाना। उ० सब सामान देकर इन्हे राही करो।

राही होना–१ रवाना होना। उ० तुम तो सारे सामान से राही हो गए। २ स्थायी न होना। उ० इस ससार मे सभी राही हैं।

राहु का भी केवल चद्रमा और सूर्य को ही ग्रसना–विपत्ति का केवल अच्छो पर ही आना। उ० देखो तो, इतने ऐरे-गैरे थे कोई हैजे मे नही मरा, वह बेचारा सब की खोज-खबर रखता था, चल बसा। राहु भी चद्रमा और सूर्य को ही ग्रसते हैं।

राहु होना–दु खदायी होना। उ० तुम तो उसके लिए पूरे राहु हो।

रिज़क मारना–रोज़ी मारना, जीविका मे बाधा डालना। उ० उन गरीबो का रिज़क क्यो मारते हो ?

रिमझिम पानी बरसना–हल्की बूँदा-बाँदी होना।

रिवाज़ चलना–दे० 'रिवाज़ पड़ना'।

रिवाज़ पड़ना–प्रथा चलना। उ० राजपूतो मे जौहर का रिवाज़ पड गया था।

रिश्वत का बाज़ार गर्म होना–खूब रिश्वत दी और ली जाना।

रिश्वत खाना–घूस लेना। उ० रिश्वत और पाखाना खाना बराबर है।

रिस के मारे–क्रोध के कारण। उ० कहा कहौं यहि रिस के मारे खेलन हौं नहिं जात।

रिस मारना–१ क्रोध को रोकना। उ० बेचारे ने रिस मार ली, नहीं तो झगडा हो जाता। २. रिस का मारना, क्रोध का मारना। क्रोध का शरीर पर बुरा असर होना। उ० तुम्हे तो दिन-रात रिस मारती रहती है, तुम क्या मोटे होगे ?

रीझ पचाना–अपनी प्रसन्नता किसी को जानने न देना। उ० वह नौकरी पाने से बडा प्रसन्न है, पर रीझ पचा रहा है।

रीढ टूटना–असक्त और बेकाम हो जाना।

रीस करना–१ द्वेष करना। उ० रीस करना नीचता है। २ क्रोध करना। उ० बात-बात पर रीस न करो।

रुई–दे० रूई'।

रुख़ देखकर बात करना–आदमी का जैसा चित्त या 'मूड' हो, उसे समझ कर उसके अनुकूल बात करना।

रुख़ देखकर बात न करना–ठीक से या ध्यान से बात न करना। उ० उससे क्या कहे, वह तो रुख देकर बात ही नही करता।

रुख़ देना–१ ख्याल करना। उ० ज़रा मेरी अनुपस्थिति मे इधर भी रुख दीजियेगा। २ राय देना। उ० उन्होंने अभी तक अपना रुख नहीं दिया। ३ हाँ कर देना। उ० आप रुख दे दें तो मैं उसे आनन-फानन मे खतम कर दूँ।

रुख फेरना–१ रज होना। दयादृष्टि हटा लेना। उ० जाने क्यो उन्होंने रुख फेर लिया है। २ दूसरी ओर देखना। उ० मुझे देखकर वह रुख फेर लेती है।

रुख़ बदलना–दे० 'रुख फेरना'।

रुख़ मिलाना–आमने-सामने होना। उ० रुख मिलाते ही वह भाग जाता है।

रुपया उड़ाना–१ बहुत खर्च करना। उ० बाप का रुपया उडाता है, अपना उडानर तो पता चलता। २ रुपया चुरा लेना। उ० कोई यहाँ से दस रुपये उडा ले गया।

रुपया ऐंठना–गलत-सही तरीको से रुपये वसूलना।

रुपया खरा होना–रुपया मिलना या मिलने का निश्चय होना।

रुपया गलना–रुपया खर्च होना। उ० इस मुकदमे मे बहुत रुपया गला।

रुपया गाँठ करना–धन बटोरना। उ० रुपया गाँठ करने के लिए पाप न करो।

रुपया चीरना–दे० 'माल चीरना'।

रुपया जोडना–धन बटोरना। उ० भूखा रह कर रुपया जोडना ठीक नही है।

रुपया टूटना–घाटा होना।

रुपया ठीकरा होना–अधाधुध व्यय होना। उ० उसके यहाँ रुपया ठीकरा हो गया है।

रुपया ठीकरी करना–दे० 'रुपया उडाना'।

रुपया डूबना–१ किसी को दी हुई रकम वसूल न होना (२) रोज़गार मे घाटा होना।

रुपया तुडाना–रुपये की रेज़गारी भुनाना। उ० पाँच रुपया तुडा लो, काम चल जायेगा।

रुपया पानी की तरह बहाना–दे० 'रुपया उडाना'।

रुपया पानी मे फेंकना–बेकार व्यय करना। उ० तुमने तो रुपया पानी मे फेंक दिया।

रुपया फूंकना–१ दुष्कर्म मे धन फेंकना। उ० सारा रुपया उसने जूए मे फूंक डाला। २. बेहिसाब खर्च करना, बहुत खर्च करना। उ० रुपया फूंको नही, उसका ठीक से हिसाब रखो।

रुपये की गर्मी–धन का गर्व होना।

रुपये के दोस्त होना–धन ऐंठने के लिए दोस्ती करना।

रुस्तम का साला बनना या समझना–बहादुर बनना (व्यग्य)। उ० चार दिन से घूर

लगाता है तो अपने को रुस्तम का साला बनता है।

रुस्तम होना—दे० 'भीम होना'।

रूई का गाला—स्वच्छ और मुलायम। उ० यह बिल्ली तो रूई का गाला है।

रूई की तरह तूम डालना या तूमना—१ छिन्न-भिन्न कर डालना। उ० बन्दर ने कपडे को रूई की तरह तूम डाला। २ हर अवगुण को प्रकट करना। उ० अब रूई की तरह तुमने से कोई लाभ नही रहा। ३ खूब गत बनाना। उ० तुमने तो छोटी-सी बात के लिए उसे रूई की तरह तूम डाला। ४ उलट पलट कर खराब कर देना। उ० उसने सारी किताबो को रूई की तरह तूम डाला।

रूई की तरह धुन देना या धुनना—खूब मारना। उ० सिपाहियो ने तो बेचारे को रूई की तरह धुन दिया।

रूई के बादल की तरह उड़ जाना—शीघ्र नष्ट हो जाना, क्षणिक या नश्वर होना।

रूई मे लपेटी आग—ऐसी वस्तु जिसके ससर्ग से नाश निश्चित है।

रूई-सा—सुकुमार, नरम। उ० कैसा रूई-सा बच्चा है!

रूई-सूत मे उलझना—सासारिक कामो मे फँसना। उ० यहाँ आकर तो सभी को रूई-सूत मे उलझना पडता है।

रूखा पड़ना—१ बेमुरौवत होना। उ० इतनी ही झझट मे रूखे पड गये। २ नाराज़ होना। उ० उसके लिए आप क्यो रूखे पडते हैं?

रूखा-सूखा—कुछ भी, भला-बुरा, दाल-दलिया। उ० महँगी मे रूखा-सूखा खाना मिल जाय, यही बहुत है।

रूखा होना—दे० 'रूखा पडना'।

रूप भरना—१ दे० 'स्वाँग भरना'। २. दे० 'स्वाँग रचना'।

रूप की दोपहरी खिलना—रूप पूरे चढाव पर होना।

रूप-माधुरी मे सने होना—अत्यन्त रूपवान् होना।

रूप-रेख—आकार, स्वरूप। उ० भगवान के रूप-रेख का किसी को पता नही।

रूप लेना—शरीर धारण करना। उ० मनुष्यो के लिए भगवान को भी रूप लेना पडा।

रूप हरना—शर्मिन्दा करना। उ० रामचन्द्र ने स्वयवर मे जाकर सभी का रूप हर लिया।

रूमाल पर रूमाल भिगोना—रोकर बहुत आँसू बहाना। उ० उस ऐंग्लो-इडियन लेडी के घर चोरी हो गई है, बेचारी रूमाल पर रूमाल भिगो रही है।

रू से—१ कसम से। उ० ईश्वर की रू से बताओ कि क्या बात है? २ मुताबिक। उ० विधान की रू से तो ऐसा न होना चाहिए।

रूह निकलना—मर जाना। उ० देखते ही देखते उसकी रूह निकल गई।

रूह फटकना—गद्‌गद् हो जाना। उ० परीक्षा-फल सुनते ही उसकी रूह फटकने लगी।

रूल फना होना—भयभीत होना।

रेकार्ड टूटना—पूर्वस्थापित श्रेष्ठतम काम से बढ कर होना।

रेख आना—दे० 'मस भीजना'।

रेख खींचना—१ निचितता से कहना। उ० रेख खीचकर कहता हूँ कि यह अकाट्य है। २ हद या सीमा बनाना। उ० यह मैं रेख खीच रहा हूँ, इसका उल्लघन कभी न करना।

रेख मे मेख मारना—कठिन या असभव काम करना।

रेज़ा-रेज़ा करना या कर देना—चिथड़े-चिथडे कर देना, छिन्न-भिन्न कर देना। उ० बच्चो के सामने कोई चीज़ रखो तो वे रेज़ा कर देते हैं।

रेत पर नाव चलाना—असभव काम करना।

रेल-पेल करना—१ राशि जमा करना। उ० व्यापार मे उसने रुपयो का रेल-पेल कर दिया। २ गाउँज-माउँज रखना, बेतरतीब रखना। उ० क्या पुस्तको का रेल-पेल किये हो? ३ भीड करना। उ० क्या यहाँ रेल-पेल किये हो, हटो भी।

रेल-पेल होना—धक्कम-धुक्की होना, भीड होना। उ० मेले मे तो रेल-पेल होता ही है।

रेल होना—१ दे० 'रेल-पेल होना'। २ बहुत तेज़ चलने वाला होना। उ० तुम तो रेल हो, मैं तुम्हारे साथ नही चल सकता।

रेहन रखना–ज़मीन को बन्धक या गिरवी रखना। उ० मैंने अपनी ज़मीन रेहन रख दी है।

रेहलत करना–१ मर जाना। २ कूच कर जाना।

रोंगटे खडे होना या हो जाना–१ भयभीत होना। उ० रात को इस भूत का ख्याल करते ही मेरे रोंगटे खडे हो गए। २ रोमांचित होना। उसकी कहानी सुन कर मेरे रोंगटे खडे हो गए।

रोआँ-रोआँ कान होना–बात सुनने की तीव्र उत्कंठा होना।

रोआँ काँपना–बहुत भयभीत हो जाना। उ० अँधेरी रात मे अकेले होने से उस दिन मेरा रोआँ काँपने लगा।

रोआँ टेढा करना–कुछ कर सकना। उ० और सब तो दूर रहा, तुम तो रोआँ भी टेढा नही कर सकते।

रोआँ न उखाड़ सकना–कुछ भी न कर सकना। उ० तुम हमारा रोआँ भी नही उखाड सकते।

रोआँ-रोआँ–शरीर के प्रत्येक अवयव। उ० उस कारुणिक दृश्य को देखकर रोआँ-रोआँ रोने लगा।

रोक-टोक करना–रोकना, आने-जाने न देना। उ० जब यह आम रास्ता है तो क्यो रोक-टोक करते हो ?

रोक-टोक मे रहना–देख-रेख मे रहना। उ० आजकल यहाँ बहुत से लोग पुलिस की रोक-टोक में हैं।

रोकड मिलना–१ आय-व्यय का हिसाब बैठना। उ० आज तो मुनीम का रोकड़ बडीदेर मे मिला। २ बडी सम्पित्ति मिलना। उ० क्या हमें रोकड मिला है कि तुम्हे दावत दें।

रोकथाम करना–१ देखभाल करना। उ० इन बच्चो का कोई रोकथाम करने वाला नही रहा। २ बाधा डालना। उ० क्यो रोकथाम करते हो, मुझे जाने दो।

रोकर घर भरना–बहुत रोना। उ० मिठाई के लिए लडका रोकर घर भर रहा है, उसे कही से लाकर दे दो।

रोग का घर–बीमारी का मूल। उ० रोग का घर खाँसी, झगडा की जड हाँसी।

रोग पाल लेना–झंझट लगा लेना, जान की आफ़त ले लेना। उ० तुमने तो उसे बुलाकर एक रोग पाल लिया है।

रोज़ गडहा खोदना और रोज़ पानी पीना–रोज़ कमाना और रोज़ खाना। उ० स्थायी आय का काम करो। यह रोज़ गडहा खोदना और रोज़ पानी पीना कब तक चलेगा ?

रोज़गार चमकना–व्यापार मे खूब लाभ होना। जोरो पर काम चलना। उ० अगर रोज़गार चमक गया तो फिर क्या पूछना है ?

रोज़गार चलना–व्यापार जोरो पर चलना। उ० तुम्हारा रोज़गार तो चल रहा है, फिर भी नही अटता ?

रोज़गार छूटना–काम न रहना, बेकार होना। उ० आजकल मेरा रोजगार छूट गया है।

रोज़गार लगना–खाने-कमाने का प्रबन्ध होना। उ० उसका रोज़गार लग गया है, अब उसे कोई कष्ट नही है।

रोज़गार लगाना–नौकरी लगाना, काम लगाना। उ० अगर आप मेरा कोई रोज़गार लगा दे तो बडा अच्छा हो।

रोज़गार से होना–रुपये कमाना, कोई काम या रोज़गार करता होना। उ० आजकल मैं कुछ रोज़गार से नही हूँ।

रोज़ा खोलना–दिन भर रोज़ा या उपवास रह कर शाम को नमाज़ पढ कर कुछ खाना। उ० अब रोज़ा खोलने का वक्त हो गया, दूकान बद करो।

रोज़ा तोडना–१ उपवास पूरा न करना। उ० दोपहर तक रह कर भूख बर्दाश्त न होने से उसने रोज़ा तोड दिया। २ उपवास खतम होने पर कुछ खाना। ३ दे० 'रोज़ा खोलना'।

रोज़ा बख़्शाते नमाज़ गले पड़ना–लाभ का काम शुरू करते नुकसान होना।

रोज़ी चलना–भोजन, कपडा मिलने भर आमदनी होना। उ० इस महँगी मे किसी तरह रोज़ी चल जाय, यही बहुत है।

रोज़े से रहना–उपवास करना।

रोटियाँ तोड़ना–बिना काम के रोटी खाना। उ० वह महीनो से यहाँ रोटियाँ तोड रहा है, आखिर इस महँगी मे क्या सोचता है ?

रोटियाँ निकलना–खाने का ठिकाना होना। उ० दूकान से किसी तरह रोटियाँ निकल जाती हैं।

रोटियाँ लगना या लग जाना–जीविका के लिए कोई काम या नौकरी लगना। उ० मेरी कही रोटियाँ लग जाती तो निश्चित हो जाता।

रोटियाँ लगाना–जीविका के लिए कोई काम या नौकरी लगाना। उ० कही रोटियाँ लगाओ, नही तो यहाँ से भागना पडेगा।

रोटियो का मारा–भूखा, बिना खाया-पिया। उ० वह भिखारी रोटियो का मारा है, उसे कुछ दे दो।

रोटियो के लाले पडना–दे० 'रोडी को तरसना'।

रोटी-कपड़ा–खाने को भोजन और पहनने को कपडा। उ० मनुष्य के लिए रोटी-कपडा सबसे आवश्यक वस्तु हैं।

रोटी कमाना–रोज़ी प्राप्त करना। उ० रोटी कमाने के लिए तो कुछ करना ही पडेगा।

रोटी की ख़ाक झाड़ना–चापलूसी करना। उ० मेरा काम हो या न हो, मैं किसी की रोटी की खाक नही झाड सकता।

रोटी को तरसना–भूख से मरना। उ० इस महँगी मे वहुत से लोग रोटी को तरस रहे हैं।

रोटी को रोना–दे० 'रोटी को तरसना'।

रोटी चलाना–भोजन-कपड़े का इन्तज़ाम करना। उ० परिवार की रोटी चलाना भाई साहब के जिम्मे है।

रोटी-दाल चलना–दे० 'दाल-रोटी चलना'।

रोटी-दाल से खुश होना–दे० 'दाल-रोटी से खुश होना'।

रोटी पर रोटी रखकर खाना–वडे आनन्द से जीवन बिताना। उ० उसका क्या पूछना है, वह तो आजकल रोटी पर रोटी रखकर खा रहा है।

रोटी-पानी के चक्कर मे होना–जीविका की चिन्ता मे होना।

रोटी-पानी मे लगना–गृहस्थी के काम मे लगा होना।

रोटी पोना–१. भोजन बनाना। उ० वह इतनी बडी हुई, पर उसे आज तक रोटी पोना भी नही आया। २. आटा गूँथकर पकाने के लिए रोटियाँ गढना या बनाना।

रोटी-बेटी होना–खाने और विवाह आदि का सबध होना। एक फिर्के का होना। उ० उन दोनो मे रोटी-बेटी है।

रोडा अटकाना–वाधा डालना। उ० वह मेरे हर काम मे रोडे अटकाता है।

रोता हुआ–बे-रौनक़।

रोते-रोते आँचल भीगना–अधिक रोना। उ० बेचारी का रोते-रोते आँचल भीग गया, उसे किसी प्रकार सान्त्वना दो।

रो-धो कर काम चलाना–किसी तरह काम चलाना। उ० अब इस महँगी मे कपड़ा कहाँ बनता है, रो-धो कर काम चलाओ।

रोना कलपना–दे० 'रोना-गाना'।

रोना-गाना–दे० 'रोना-पीटना'।

रोना-धोना–दे० 'रोना-गाना'।

रोना पड़ना–दे० 'रोना-पीटना पड़ना'।

रोना पीटना–विलाप करना। बहुत रोना। उ० जो होना था सो हो गया, अब रोने पीटने से क्या फायदा?

रोना पीटना पड़ना–गमी छाना, शोक छाना। उ० मुखिया के लडके के मर जाने से सारे गाँव मे रोना-पीटना पड़ा हुआ है।

रोना रोना–कष्ट सुनाना। उ० वे जब भी यहाँ आते हैं, अपना रोना रोने लगते हैं।

रोने का तार बाँधना–दे० 'रो-रो कर घर भरना'।

रोने वाला न रह जाना–निर्वंश मरना।

रोपना–१ याचना करना, माँगना। उ० जिससे कुछ मिलने की आशा हो, उसी के सामने (हाथ) रोपना चाहिये। २. दृढता से रखना।

रोब दिखाना–शान दिखाना। उ० यहाँ किस पर रोब दिखाते हो?

रोब मिट्टी मे मिलाना–दबदबा समाप्त करना, असर या इज्ज़त नष्ट करना। उ० अगर ज्यादा शान दिखाओगे तो सब रोब मिट्टी मे मिला दूँगा।

रो बैठना–१. नाउम्मीद होना, निराश होना। उ० अब रो बैठो, वह न आयेगा। २ रोने लगना।

रोम-रोम जलना–बहुत क्रोध या कुढन होना।

रोम-रोम मे—समूचे शरीर मे । उ० उसके रोम-रोम मे फुड़िया निकली हुई हैं । गुस्सा तो उसके रोम-रोम मे है ।

रोम-रोम गीला होना—बहुत करुणार्द्र होना ।

रोम रोम मे रम रहना—पूर्ण रूप से व्याप्त होना ।

रो-रो कर—१ किसी तरह से, बड़े कष्ट से । उ० जब रो-रो कर ही करना है तो रहने दो, मैं कर लूंगा । २ धीरे-धीरे । उ० तुम हर एक काम को रो-रो कर करते हो । ३ बेमन से । उ० रो-रो कर करना हो तो रहने दो, मैं किसी दूसरे से करवा लूंगा । प्राण देना, बहुत दु खी होना ।

रो-रो कर दिन काटना—कष्ट से समय बिताना । उ० बुढिया रो-रो कर दिन काटती है ।

रोवाँ खड़ा होना—रोमाचित होना । उ० रास्ते मे शेर को देख कर मेरा रोवाँ खड़ा हो गया ।

रोवाँ न उखड़ना—कुछ भी नुकसान न होना । उ० आप क्या बढ़-बढ कर बातें कर रहे हैं, आपसे मेरा एक रोवाँ भी न उखड़ेगा ।

रोवाँ पसीजना—दया आना । उ० उस बुढिया की करुण कहानी सुनकर मेरा रोवाँ पसीज गया ।

रोशनी डालना—१ प्रकाश डालना । विवेचन करना । [अग्रेजी मुहावरा To throw light का अनुवाद है ।] उ० इस मजमून पर कई आदमी रोशनी डालेंगे । २. रोशनी फेंकना, उजेला करना । उ० इधर रोशनी डालो, यहाँ कुछ खरखरा रहा है ।

रौंट करना—चिढ कर बेईमानी करना । उ० क्यो रौंट करते हो ! उसका क्या बिगड़ेगा, तुम्हारा धर्म जायेगा ।

रौंद पर जाना—गश्त के लिए निकलना । उ० सिपाही रौंद पर गए हैं ।

रौग़ने क़ाज़ मलना—दे० 'मक्खन लगाना' ।

रौनक़ जाती रहना—काति या शोभा का समाप्त होना । उ० बीमारी के कारण उसके चेहरे की रौनक जाती रही ।

रौनक़ होना—१ चमक-दमक या काति होना । उ० उसके चेहरे पर रौनक है । २. चहल-पहल होना । उ० आज उसके यहाँ बड़ी रौनक़ है ।

रौरव भोगना—बड़ी दुर्दशा होना । उ० अत्याचार करोगे तो बुढापे मे रौरव भोगोगे ।

ल

लक टूटना—कमर टूट जाना । हिम्मत हार जाना । उ० बस इतने ही मे लक टूट गई ?

लकाकाड होना—१ तेज आग लगना । उ० मेरे गाँव के करीब के कई गाँवो मे कल लकाकाड हो गया । २ बहुत बड़ा घटना होना । उ० यह लकाकाड नही है कि इतना चिल्ल-पो मचा रहे हो ।

लग खाना—लँगड़ाना । उ० हाथी अगले बाएँ पैर से लग खा रहा है ।

लँगड़े की लकड़ी होना—सहारा होना । उ० तुम्ही तो मुझ लँगड़े की लकड़ी हो ।

लगर करना—१ शरारत करना । उ० अगर ज्यादा लगर करोगे तो पीट दूँगा । २ रुकना । आज कहाँ लगर करोगे ?

लगर जारी करना—दान देना । सदावर्त देना । उ० मेरे गाँव के मुखिया ने गाँव मे एक लगर जारी किया है ।

लंगर डालना—१ जहाज या नाव रोकने के लिए लोहे के बहुत बड़े काँटे को पानी मे फेंकना । उ० लगर डाल दो, आगे नही चला जाएगा । २ कही रुकना ।

लगी लगाना—चाल चलना, दाँव-पेंच लगाना, टँगड़ी मारना ।

लगर बाँधना—१. ब्रह्मचर्य धारण करना । उ० लगर बाँधना बड़ा कठिन काम है, सब लोग इसे नही कर सकते हैं । २. पहलवानी करना । ३ जहाज स्थिर करना ।

लगर-लँगोट देना—दे० 'लँगोट देना' ।

लँगोट आगे रखना—दे० 'लँगोट देना' ।

लँगोट कसना—१ कुश्ती लड़ने को तैयार होना । उ० उसने लँगोट कस लिया, अब तुम भी अखाड़े मे जाओ । २ लड़ाई करने पर आमादा होना । उ० बात-बात मे लँगोट क्यो कसते हो ?

लँगोट का कच्चा—व्यभिचारी (व्यक्ति)।

लँगोट का सच्चा—ब्रह्मचारी। उ० वह लँगोट का सच्चा है, उसका मुकाबिला तुम क्या करोगे ?

लँगोट देना—किसी पहलवान को पहलवानी सीखने के लिए चेला बनाना। उ० खलीफा ने मेरे भाई को भी लँगोट दिया है।

लँगोट बांधना—दे० 'लँगोट कसना'।

लगोटिया यार—बचपन का साथी। उ० वह तो हमारा लँगोटिया यार है।

लँगोटी पर फाग खेलना—थोडा ही साधन होने पर विलासी होना। उ० लँगोटी पर फाग खेलना अच्छा नही लगता, कुछ तो शर्म आनी चाहिए।

लँगोटी बँधवाना—बहुत गरीब बना देना। गामाल कर देना। उ० आप बहुत बन रहे है, अगर दो वर्ष भी जीता रह गया तो लँगोटी बँधवा दूंगा।

लँगोटी बिकवाना—१ जो कुछ थोडा-बहुत हो, उसे भी नष्ट करवा देना। उ० लँगोटी तो बँधवाया ही, अब लँगोटी बिकवा कर दम लूंगा। २. नगा करना, बेइज्जत करना। उ० उसकी लँगोटी न बिकवाओ।

लँगोटी लगाये घूमना—१ निर्धन हो जाना, २ साधू हो जाना।

लघन करना—उपवास करना।

लवा करना—१ रवाना करना, भेजना। उ० उसे अब लवा करो, नही तो देर हो जायगी। २ चित्त करना, ज़मीन पर पटक देना। उ० अखाडे मे उतरते ही मैंने उसे लवा कर दिया। आप-ऐसे आदमियो को सेकड भर मे लवा कर दूंगा। ३ हरा देना।

लवा बनना—दे० 'नौ-दो-ग्यारह होना'। उ० खाकर वह लवा बना।

लवा हाथ मारना—बहुत धन प्राप्त करना।

लवा होना—दे० 'नौ-दो-ग्यारह होना'। उ० मज़ा मार कर आप तो लवे हुए और फँसा मैं।

लंबी तनख्वाह पाना—तनख्वाह मे काफी रुपये पाना।

लबी तानना—लेट कर अच्छी तरह सो जाना। निश्चितता से सो जाना। उ० इस समय मेरे अतिरिक्त सब लबी तान कर सो रहे हैं।

लंबी रस्सी देना—बहुत ढील देना।

लबी सांस भरना—१ हताश होना। २ दुख प्रकट करना।

लंबी सांस लेना—दे० 'ऊँची साँस लेना'।

लबे डग भरना—१ बडी प्रगति करना। २ जल्दी-जल्दी चलना।

लंबे हाथ मारना—मोटी रकम पर हाथ मारना। उ० बहुत दिल दरया हो रहा है, कही से लबा हाथ मार कर आये हो क्या ?

लकडतोड होना—नीरस होना।

लकड़ी चलना—१ लाठी से मार-पीट होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो मे लकडी चलने लगी। २ लाठी गदके का खेल होना। उ० जलूस मे लकडी चल रही थी।

लकडी देना—मुरदे को जलाना। उ० मर गया तो कब तक रोते-धोते रहोगे, लकडी देकर आगे का काम देखो।

लकड़ी फेंकना—लाठी मारना। उ० वह लकडी फेंकना बहुत अच्छा जानता है।

लकडी-सा—बहुत दुबला-पतला। उ० बीमारी से वह सूख कर लकडी-सा हो गया है।

लकडी होना—१ सूख कर बहुत कडा हो जाना। उ० यह रोटी तो सूख कर लकडी हो गई है। २ बहुत दुबला-पतला होना। उ० बीमारी से वह लकडी हो गया है।

लकीर का फकीर—आँखें बन्द कर पुराने ढग पर चलने वाला। उ० अब इस नये युग मे लकीर के फकीर होना सरासर मूर्खता है।

लकीर पर चलना—बिना समझे-बूझे पुरानी प्रथा पर चलते चलना। उ० पुराने पडित आज भी लकीर पर चलना सबसे बडा धर्म मानते हैं।

लकीर पीटना—दे० 'लकीर पर चलना'।

लक्ष्मी नारायण करना—१ शुरू करना। २ खाना शुरू करना।

लक्ष्मी-वाहन होना—१ धनवान होना। २ महा-मूर्ख होना।

लग चलना–किसी के पीछे हो लेना। उ० जहाँ उसने किसी मालदार आदमी को देखा, झट उसके पीछे लग चलता है और फिर लूट करके ही साँस लेता है।

लगती बात कहना–१ मर्मभेदी बात कहना, चुभती बात कहना। २ चुटकी लेना।

लगन लगना–१ किसी काम को करने की धुन लगना। २ प्रेम होना।

लगाना-बुझाना–लडाई-झगडा कराना। उ० इन दोनो मे आप लगा-बुझा कर तमाशा देख रहे हैं, यह कहाँ की आदमियत है?

लगाम कसना–नियन्त्रण रखना।

लगा रहना–काम मे लीन रहना। उ० कभी बेकार नहीं रहता है, हमेशा कही न कहीं लगा ही रहता है।

लगाव होना–आकर्षण होना, प्रेम होना।

लगी-लिपटी कहना–बात स्पष्ट न कहना, पक्ष लेना।

लगी को बुझाना–अभिलाषा पूरी करना। उ० उससे शादी करके लगी को बुझा लो।

लगी बुझाना–दे० 'लगी को बुझाना'।

लगे हाथ–साथ ही साथ। उ० लगे हाथ उनके यहाँ भी होते आना, जा तो रहे ही हो।

लच्छन झड़ना–रूप-रग जाता रहना। पहले का सौंदर्य न रहना। काति का खतम हो जाना। उ० रोजे वे साल आँखें को वो अपनी दिखायेगा, रोज़े शवे फेराक के लच्छन झडे हुए।

लच्छन सीखना–सभ्यता सीखना। उ० उसका लडका मेरे यहाँ रहने से काफी लच्छन सीख गया है, नहीं तो पूरा उजड्ड था।

लच्छन से झड जाना–रौनक न रहना। रूप बिगडना। इज्जत घट जाना। उ० चेहरा उतर गया, नक्शे बिगड गए हैं, फिर इन दिनो तो मेरे लच्छन से झड गए है।

लच्छन से झड पड़ना–१ भद्दा और असुदर होना। २ खुशहाली मे फरक आना।

लच्छेदार भाषा–आलकारिक और आकर्षक भाषा।

लज्जा करना–इज्जत का ख्याल रखना। उ० अपने कुल की लज्जा करो।

लज्जा का भी लज्जित होना–अत्यन्त लज्जाजनक स्थिति होना।

लज्जा घोल कर पी जाना–निर्लज्ज हो जाना।

लट छिटकाना–बाल फैलाना। उ० बहुत-सी औरतें सर्वदा लट छिटकाये रहती है।

लट जाना–कमज़ोर हो जाना। उ० वह दस दिन की बीमारी मे एकदम लट गया है।

लट दबाना–अधिकार मे करना। उ० तुमने तो उसकी अच्छी लट दबाई, अब वह चूँ नही कर सकता।

लट पड़ना–बालो का परस्पर चिमट जाना। उ० लट पड गई है, साबुन से धो डालो।

लटिया करना–सूत को लपेट कर आँटी करना। उ० वह जनेऊ बनाने के लिए लटिया कर रहा है।

लटी मारना–गप्प हाँकना। उ० वह दिन भर लटी मारा करता है, जैसे उसको कुछ दूसरा काम ही नही है।

लटरे उतरवाना–मूँडन करवाना। बाल उतरवाना।

लटरे खोले फिरना–१ बाल खोले फिरना। २ नगे सर फिरना। [यह पहले बुरा माना जाता था।]

लटरे ले डालना–बाल नोच लेना।

लटा हाथी भी नौ लाख का होना–आर्थिक स्थिति बिगड जाने पर भी बडे घरो मे बहुत कुछ होना।

लट्टू होना–आशिक होना, मोहित होना। उ० वह उस लडकी पर लट्टू हो गया है।

लट्ठ चलाना–१ लाठी मारना। २ कटी ज़बान चलाना। उ० तुम तो हर वक्त लट्ठ ही चलाते हो, आदमी को देख कर बात करनी चाहिए।

लट्ठ लिये फिरना–विपरीत काम करना। उ० तुम तो अक्ल के पीछे लट्ठ लिये फिरते हो।

लट्ठ-सा मार देना–बहुत कडा मुँहतोड उत्तर देना।

लडकी-लडका–सतान औलाद। उ० उनको एक भी लडकी-लडका नही है।

लड़कों का खेल—सहज बात। उ० यह काम लडको का खेल नही है, जरा सम्हल कर हाथ लगाना।

लड़खड़ाती जीभ—दुविधा या असमंजस से।

लड मिलाना—मेल करना। उ० लड़ाई करके तो लड मिलाने चले हो ?

लड़ाई पर जाना—युद्ध मे जाना। उ० १९१४ मे लाखो जवान लडाई पर गए।

लड़ाई मोल लेना—स्वय झगडा करना। उ० लडाई मोल लेकर तुम स्वय तो बैठ जाते हो और आफत मेरे सर आती है।

लड्डू खिलाना—दावत करना। उ० कल हम सबको लड्डू खिलायेंगे।

लड्डू फूटना—लाभ की बात होना।

लड्डू फोड़ना—लड्डू खाना। उ० वहाँ से लड्डू फोड कर आए हो तो यहाँ सूखी रोटियाँ कैसे अच्छी लगें ?

लड्डू बँटना—लाभ होना। कुछ अच्छी चीज मिलना। उ० वहाँ क्या लड्डू बँट रहा है जो तुम जाओगे ?

लत पड़ना—आदत पडना। उ० उसे बुरे कामो की लत पड गई है, अब न छूटेगी।

लतमर्दन करना—१. पैरो से कुचलना। उ० लतमर्दन न करो, काम हो गया हो तो इसे लौटा आओ। २ खूब मारना, लात से खूब मारना।

लताड़-पाना—भला-बुरा सुनाना।

लताड मे आना—मुसीबत और बला मे फँस जाना। उ० नकर अपनी जाँ को मुज़मइल, अरे इशा उनसे लगा न दिल, तू वरना होवेगा मुनफ़इल कहीं आ गया जो लताड़े मे।

लताड़ मे रहना—१ मुसीबत मे रहना, बर्बाद होते रहना। आफत मे रहना। उ० करें रक़म हम अगर हाले पयमाले दिल, रहे हमेशा कलम की लताड़ मे काग़ज़। २. हमेशा प्रयोग मे रहना।

लत्ता उड़ाना—दुर्गति करना।

लत्ती करना—भाग जाना। उ० सिपाही को देखते ही चोर लत्ती कर गया।

लत्ते लेना—१. मूर्ख बनाना। उ० उस सीधे आदमी के लत्ते लेना ठीक नहीं है। २. मीठी बोली मे व्यग्य करना।

लथपथ करना—सानना, लथेड़ना। उ० उसे कीचड़ मे लथपथ कर दिया।

लथपथ होना—सन जाना, भर जाना। उ० तमाम खून से लथपथ है।

लथाड़ खाना—१ पटका जाना, पछाड़ा जाना। उ० पजाब का एक बडा पहलवान यहाँ लथाड खा गया। २. घुडकी सुनना। उ० आज तो तुम अपने घर ऐसी लथाड खाओगे कि होश हो जायगा। ३ पिछडना। ४ नष्ट किया जाना।

लथाड़ में पड़ना—१ हैरानी मे पडना। उ० मैं तो शादी की लथाड मे पडा हूँ। २ डाट-फटकार सुनना। उ० उनकी लथाड़ मे पड़ चुका हूँ, अब उनके यहाँ काम नहीं कर सकता।

लदवा देना—जेल भिजवा देना।

लपक कर—१ तुरन्त। उ० बाजार से लपक कर १ रु० की मिठाई लेते आओ। २ तेजी से। उ० लपक कर जाओ।

लपका पड़ना—बुरी आदत पडना। उ० उसे चोरी का लपका पड गया है, अब जल्दी छूट नही सकता। तुम्हे झुठ बोलने का लपका पड गया है।

लपकी भरना—लबे-लबे या दूर-दूर टाँक से सीना। उ० मेरी बनियाइन पर जल्दी से लपकी भर दो।

लपट-झपट कर—जल्दी और मिल-जुल कर। उ० आओ लपट-झपट कर काम खतम करा दिया जाय।

लप-लप करना—१ लचकना। लपलपाना। उ० अच्छी तलवार लप-लप करती है। २ चमचमाना। उ० लप-लप करती हुई तलवार देख कर मेरे प्राण सूख गए।

लपेट मे आ जाना—फंदे मे आ जाना। उ० लपेट मे उसका आ जाना बडा ही कठिन है, क्योकि वह बड़ा चतुर है।

लब हिलाना—कुछ कहना।

लबड़-धों-धों करना—गड़बड-सडबड करना। उ० लबड़-धो-धो करना हो तो मेरे ऑफिस से निकल जाओ, यह बनिये की दुकान नही है।

लबड-धों-धों चलना—बेईमानी की चाल सफल होना। उ० आजकल उसकीलबड-धो-धो खूब चल रही है।

लबाड़िया होना–झूठा होना ।

ललाट के अक्षर–दे० 'विधना के अक्षर' ।

ललाट मे लिखा होना–भाग्य मे होना । ईश्वर या ब्रह्मा की ओर से भाग्य मे बदा होना । उ० जो ललाट मे लिखा होगा, वह होकर ही रहेगा ।

लल्ला जानना दद्दा न जानना–लेना जानना, देना न जानना ।

लल्लो-चप्पो करना–दे० 'हाथ-पांव पकडना' ।

लल्लो-पत्तो करना–दे० 'हाथ-पांव पकडना' ।

लव भर–तनिक भी । थोडा-सा, नाम मात्र को । उ० उसे लव भर भी डर नही है । मुझे लव भर ज़हर मिल जाता तो इस जीवन से छुटकारा पा जाता ।

लवलेस न होना–तनिक भी न होना ।

लस्टम-पस्टम–किसी प्रकार ।

लहना चुकाना–लिया हुआ कर्ज़ दे देना । उ० अगर कुछ आमदनी हो तो सबसे पहले लहना चुका दो ।

लहना साफ करना–दे० 'लहना चुकाना' ।

लहर उड़ाना–१ अच्छे स्वर से गाना । उ० वह रात मे ख़ूब लहर उडाता है । २ मौज लेना ।

लहर चढना–१. ज़हर चढना । उ० झारने के बाद सर्प की लहर न चढेगी । २ मस्ती चढना । उ० आज लहर चढी है क्या कि अब तक घूम रहे हो ?

लहर देना–रह-रह कर कष्ट देना । उ० उसकी मृत्यु तो घर भर को लहर दे रही है ।

लहर मारना–१ रह-रह कर किसी प्रकार की पीड़ा उठना । उ० छोटे बच्चे का जाना लहर मार रहा है । २ आनन्द भोगना, मौज करना । उ० तुम तो आजकल ख़ूब लहर मार रहे हो । ३. सीधा न जाकर इधर-उधर मुडना । उ० वह लहरें मारता चलता है ।

लहर में आना–मस्ती मे आना । उ० न भाई-मैं तुम्हारे साथ नही जाऊँगा, कही तुम लहर में आकर कुछ ऐसा-वैसा कर बैठे, तो मैं कही का न रहूँगा ।

लहालोट हो जाना–मोहित हो जाना । उ० उसकी सुन्दरता पर वह लहालोट हो गया है ।

लहू कटना–पाखाने से ख़ून गिरना । उ० बहुत दवा करने पर तो उसका लहू कटना बन्द हुआ ।

लहू का घूंट पीकर रह जाना–क्रोध को ज़ब्त कर जाना ।

लहू का जोश होना–प्रेम का उमडना । उ० लहू का जोश होने पर शत्रुता भी भूल जाती है ।

लहू का प्यास होना–जान लेने पर तैयार होना । उ० तुम्हारे झगडे के ही कारण वह मेरे लहू का प्यासा है ।

लहू मारना–बहुत कष्ट देना ।

लहू खौलना–बहुत क्रोध होना ।

लहू-पसीना एक करना–दिन-रात सख़्त मेहनत करना । उ० इस मकान के बनवाने के लिए मुझे लहू-पसीना एक करना पडा है ।

लहू-पानी एक करना–कठिन मेहनत करना । उ० बेचारे किसान लहू-पानी एक करके तो चार पैसे पाते हैं ।

लहू पिला-पिला कर पालना–१ अपना दूध पिला कर पालना । २ बडे कष्ट से पालना ।

लहू-पीकर रह जाना–गुस्से को मन मे ही रखना । उ० उसकी बात सुनकर मैं लहू पी कर रह गया, नही तो आज बहुत कुछ हो जाता ।

लहू पीना या पी जाना–१ बहुत परीशान करना । उ० वह शरारती लडका मुहल्ले भर का लहू पी रहा है । २. सार या जीवन रस खीच लेना । उ० रोग तुम्हारा लहू पी गया ।

लहू-लुहान होना या हो जाना–ख़ून ख़ून बहना । लहू से लथपथ होना । उ० सांप और नेवला लड़ते-लडते लहू-लुहान हो गए थे ।

लहू सूखना–डर लगना । उ० जगल मे शेर को देखते ही मेरा लहू सूख गया ।

लहू सुखाना–दे० 'ख़ून सुखाना' ।

लहू से हाथ रँगना–मार डालना, हत्या करना ।

लहू होना–ख़ून होना । उ० आँख मे उतरा नही मेरे लहू, जाति का होता लहू है सामने ।

लाँग खुलना–डर जाना । उ० हथियारबद डाकू को देखते ही मेरी लाँग खुल गई ।

लाइन तीन दिन के लिए वद होना–दे० 'महीने से होना'। [यह केवल विद्यार्थियो मे प्रचलित है और प्राय विनोद मे कहा जाता है।]

लाई लगाना–शिकायत करना, चुगली करना। उ० तुमने ही लाई लगाई होगी।

लाई-लुतरी–चुगली-शिकायत। उ० क्यो लाई-लुतरी किया करते हो ?

लाख कहना–वहुत कहना, कितना भी कहना।

लाख का घर राख होना–१ लाख रुपये का घर नाश होना। बहुत वडी हानि होना। उ० लापरवाही से उसका लाख का घर राख हो गया। २ वहुत वडी इज्ज़त का समाप्त होना।

लाख का होना या खाक का–धनी या गरीव। उ० मै लाख का हूँ या खाक का, तुम्हारे घर खाने तो नही जाता हूँ, फिर तुमसे क्या मतलव ?

लाख जी से–दिलोजान से। उ० मैंने लाख जी से चाहा कि वह पढ ले, पर उसने नही ही पढा।

लाख टके की वात–१ अत्यन्त उपयोगी वात। उ० आपने मेरे लिए लाख टके की वात कही। २ वहुत वडी और सारगर्भित वात। उ० यह लाख टके की वात है, समझना तो पता चलेगा।

लाख मन का होना–वहुत वज़नी या भारी होना। उ० कूए बुता मे जाना यो वार-वार क्या है, अपनी जगह पै 'सालिक' पत्थर है लाख मन का।

लाख रुपये की वात–महत्त्वपूर्ण वात, वडे काम की वात।

लाख सिर का होना–१ ईमानदार और वफादार होना। उ० उसका नौकर जो छावनी का काम करता है, लाख सिर का है। २ वहुत वहादुर होना।

लाख-लाख वनाव देना–वहुत अच्छा लगना। उ० उसे पान लाख-लाख वनाव देता है।

लाख सिर मारना–पूरा जोर लगा देना। उ० हमने तो लाख सिर मारा था कि पढ लो, लेकिन तुमने सुना कव ?

लाख से लीख होना–वहुत वडा से वहुत छोटा हो जाना। सव कुछ से कुछ न रह जाना। उ० भाग्य खराव होने पर लाख से लीख होना मामूली वात है। भारतवर्ष लाख मे लीख हो गया है।

लाखा जमाना–मिस्सी की घडी लगाकर पान की सुर्ख़ी जमाना। उ० देखना ऐ 'जौक' होंगे आज फिर लाखो के खूँ, फिर जमाया उसने लाल लव पै लाखा पान का।

लाखा लगाना–दे० 'लाखा जमाना'।

लाखो जूतियाँ पडना–वहुत ज़लील और अपमानित होना।

लाग-पडना–दुश्मनी करना या होना।

लाग डाँट करना या होना–मनमुटाव या अनवन होना, स्पर्धा होना।

लाग की आग–प्रतिद्वन्दिता।

लाखो मे खेल सकना–पास मे खव रुपये होना।

लाग बाँधना–दुश्मनी करना। उ० लगा न दामने दिलदार से कभी अफसोस, सवा ने लाग ये वाँधी मेरे गुवार के साथ।

लागत वैठाना–किसी चीज के वनाने या खरीदने मे दाम लगना। उ० इस मकान के वनवाने मे छः हज़ार की तो लागत वैठी है।

लागत लगना–दे० 'लागत वैठना'।

लाग रखना–शत्रुता रखना। उ० वह मुझसे मन मे लाग रखता है।

लाग लगना–१ प्रेम होना। उ० उससे तो ऐसी लाग लग गई है कि कभी छोडते नही वनता। २ दुश्मनी होना। उ० दोनो मे खूब लाग लगी है।

लाग-लपेट रखना–१ पक्षपात रखना। उ० जो मनुष्य किसी की तरफ लाग-लपेट न रखता हो, वही इनका झगडा तय कर सकता है। २. साफ-साफ न कहना। उ० भाई लाग लपेट न रखो, जो वात हो, साफ-साफ कह दो।

लाचार करना–मजवूर कर देना।

लाचार होना–मजवूर होना।

लाज-भीगी–लज्जापूर्ण।

लाज रखना–इज्ज़त वचाना। उ० वडे लोग लाज रखने मे ही अपने को खतम कर देते हैं।

लाजवन्ती का पौधा होना–वहुत सुकुमार होना, शर्मीला होना।

लाजवाव कर देना–मात कर देना।

लाज से मरना–लाज या शर्म के मारे मुँह ऊपर न उठाना।

लाज़िम होना–वाज़िब होना। उ० तुम्हे सलाम करना लाज़िम है।

लाजो डूबना-उतराना–अत्यन्त लज्जित हो जाना।

लाजो मरना–दे० 'लाज से मरना'।

लाठी के ज़ोर से–मार-पीट के द्वारा।

लाठी चलना–लाठी से मार-पीट होना। उ० वात ही वात मे उन दोनो मे लाठी चलने लगी।

लाठी चलाना–लाठी से मारना। उ० वह लाठी चलाना वहुत अच्छा जानता है। लाठी न चलाओ, नही तो मर जायगा।

लाठी-पोगा करना–सर-फुडव्वल करना।

लाठी मे तेल लगाना–लडने की तैयारी करना।

लाठी लेकर पीछे पड़ना–हर समय कुछ न कुछ दोष ढूँढते रहना, कटु आलोचना करना।

लाड़ करना–प्यार करना।

लात खाना–१ मार खाना। २ वेइज्ज़त होना।

लात चलाना–दुलत्ती फेंकना। उ० घोडी लात चलाती है, ज़रा होशियार रहना।

लात जाना–दूध न देना। उ० मेरी भैंस जव से लात गई, मुझे दूध का वडा कष्ट है।

लात की मारी रोटियां–अपमान से मिला हुआ भोजन।

लात के देवता–मार पडने पर ही ढग पर आने वाला व्यक्ति।

लात मार कर खडा होना–किसी वडी वीमारी से मुक्त होना। उ० भगवान की दया से वह लात मार कर खडा हो गया, मुझे तो विलकुल आशा नही थी।

लात मारना–घृणा या क्रोध के साथ छोड देना। उ० ऐसे काम को तो मैं लात मारता हूँ।

लातालूती करना–मार-पीट करना। उ० सयाने होकर क्या लाता-लूती करते हो?

लाद निकलना–तोद निकलना। उ० वडे-वडे महाजनो का लाद निकल जाता है।

लानत-मलामत करना–वुरा-भला कहना। उ० थोडी गलती के लिए भाई साहव ने वहुत लानत-मलानत की।

लाभ का पांवो तले लोटना–लाभ ही लाभ होना, चारो ओर लाभ होना। उ० साहनी के हाथ मे ही सिद्धि है, लोटता है लाभ पांवो के तले।

लाभ के लोभ मे मूल गंवाना–और पाने की आशा मे पास का भी खो वैठना।

लाभ वाँधना–लडाई का सामान इकट्ठा करना। उ० आज सव लोग लाभ वाँध कर प्रस्थान कर देंगे।

लार गिरना–दे० 'लार टपकना'।

लार गिराना–जी ललचाना। उ० लार न गिराओ, यह तुम्हे न मिलेगा।

लार टपकना–दे० 'जी ललचाना'।

लार लगाना–फँसाना, वझाना। उ० वह लार लगाने के फेर मे है, ज़रा होशियार रहना।

लारा लीरी लगाना–टाल-मटोल करना। उ० लारा न लगाओ, उसके विना मेरा काम नही चल सकता।

लाल अगारा–वहुत क्रोधित। उ० मेरी वात सुनते ही वह लाल अगारा हो गया।

लाल आँखें दिखाना–१ गुस्से से देखना। उ० मैंने आपको क्या कह दिया है, जो आप लाल आँखें दिखा रहे हैं? २ क्रोध करना। उ० लाल आँखे दिखाना हो तो उसे दिखाइये जो आपका कुछ हो।

लाल आँखें निकालना–दे० 'लाल आँखें दिखाना'।

लाल उगलना–वहुत अच्छी और प्यारी वाते कहना। उ० वह जव वोलता है तो लाल उगलता है।

लाल कर देना–दड देना। पीट कर लाल करना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो लाल कर दूंगा।

लालच देना–किसी के मन मे लालच पैदा करना। उ० ठग ने लडके को मिठाई की लालच देकर उसके सव गहने हडप लिए।

लाल झंडा दिखाई देना–दे० 'महीने मे होना'। [इसका प्रयोग केवल नवजवान विद्यार्थियो मे होता है।]

लालन-पालन करना–पालन-पोषण करना । उ० माँ के मरने के वाद भाभी ने मेरा लालन-पालन किया ।

लाल पड़ना–दे० 'लाल होना' ।

लाल-पीला होना–दे० 'लाल होना' ।

लाल फीता शाही–(सरकारी फाइल) सुस्ती व गफलत से काम होना ।

लाल बत्ती जलना–दीवाला होना । उ० उस बैंक मे तो लाल बत्ती जल गई ।

लाल बुझक्कड होना–हर वात का कोई न कोई उत्तर देने के लिए तैयार होना ।

लाल मिर्च–वहुत क्रोधी, बदमिजाज या कटु वचन वोलने वाला ।

लाल साफा–पुलिस ।

लाल होना या हो जाना–१ नाराज़ होना । उ० छोटी-सी वात के लिए क्यो लाल होते हो ? २ वहुत अधिक धन पाकर सपन्न होना । उ० वह गडा हुआ खजाना पाकर लाल हो गया है । ३ स्वस्थ होना । उ० आजकल तो वह दूध खाकर लाल हो गया है । ४ खुश होना । उ० यह बात सुन कर वह लाल हो गया ।

लाला-भइया करना–१. इज्ज़त के साथ वात-चीत करना । उ० वह ऐसा सभ्य है कि सभी से लाला-भइया करता है । २ चापलूसी करना ।

लाले पड़ना–अत्यन्त कमी होना ।

लाव चलाना–पूरा चलाना । उ० मेरे यहाँ खेत सीचने के लिए लाव चलाना पडता है ।

लासा लगाना–फदे मे फँसाना । उ० किसी तरह लासा लगाओ तो उससे कुछ काम निकले ।

लासा होना–पीछा न छोडना । उ० उससे मैं वहुत जान छुडाना चाहता हूँ, पर वह तो लासा हो गया है ।

लासे पर लगाना–धोखे मे लाना । उ० कुछ लालच देकर उसे लासे पर लगाओ तो सारा काम वन जाय ।

लाहौल पढना–दे० 'लाहौल भेजना' ।

लाहौल भेजना–लानत भेजना, धिक्कारना, नफरत ज़ाहिर करना । उ० लाहौल भेजते हैं 'मोखय्यर' शराव पर, हजरत हमारे अव तो वडे पारसा हुए ।

लिए मरना–इल्जाम या कलक लगाना । उ० फूटी किस्मत का गिला है न अजल का शिकवा, तेगे कातिल को लिए मरते हैं मरने वाले ।

लिखना-पढ़ना–तालीम हासिल करना । उ० सभी को लिखना-पढना चाहिए ।

लिख लोढ़ा पढ पत्थर होना–कुछ भी पढा-लिखा न होना । मूर्ख नगाट हो।। । उ० उसका लडका तो लिख लोढा पढ पत्थर है ।

लिखा न मेट सकना–भाग्य मे जो हो, उसे न वदल सकना ।

लिखाना-पढाना–शिक्षा देना, तालीम देना । उ० लडका अव वडा हो गया, उसे लिखाना-पढाना चाहिये ।

लिखा-पढा–पढा-लिखा । शिक्षित । उ० लिखा-पढा आदमी कभी ऐसा बुरा काम नही कर सकता है ।

लिखा पूरा करना–भाग्य का फल भोगना । उ० वह बेचारा लिखा पूरा करता है, नही तो क्या यह भी जीवन है ?

लिफाफा खुल जाना–भेद खुल जाना । उ० उसे छिपाने से क्या लाभ हुआ, आखिर लिफाफ़ा खुल ही गया ।

लिफाफा बनाना–१ ढकोसला रचना । २ ऊपरी बनावट वनाना । ऊपर से काम करना । उ० इस लिफाफा बनाने से तो काम नही चल सकता, कुछ करना है तो ठीक से करो ।

लिफाफा बदलना–१ भडकदार कपडे पहनना । उ० घर मे तो चिथडा लपेटे रहता है, पर वाहर जाना होता है तो लिफाफा वदल लेता है । २ ऊपरी सूरत वदलना । उ० लिफाफा वदल कर मुझे ठगने आए हो ।

लिफाफिया होना–केवल ऊपरी टीमटाम होना ।

लिलार का अब्बर–अभागा ।

लिहाज़ करना–ध्यान रखना । ख्याल करना । उ० उसने मेरा ही लिहाज़ करके तुम्हारा इतना वडा काम मुफ्त मे कर दिया ।

लिहाज़ रखना–शर्म रखना, शील करना । उ० अगर आप मेरा लिहाज़ रखते हैं तो मेरी वात मान लें ।

लिहाडी लेना–उपहास करना, मजाक उडाना । उ० वहाँ जाना नही, नही तो लडके ऐसी लिहाडी लेंगे कि छठी का दूध याद आ जायगा ।

लीक करके–प्रतिज्ञा करके । उ० मैं लीक करके कहता हूँ कि इसका बदला ले कर रहूँगा ।

लीक खिंची होना–मान होना !

लीक खींच कर–दे० 'लीक करके' ।

लीक गाना–गुण गाना ।

लीक पड़ना–चलने से रास्ते मे निशान पड जाना । उ० मेरे खेत मे लीक पड गई है, उसे काँटा रख कर बन्द कर दो ।

लीक पीटना–पुराने रिवाज पर चलना । उ० आज लीक पीटने का समय नहीं है ।

लीक-लीक चलना–दे० 'लीक पीटना' । उ० लीक-लीक गाडी चले लीकहि चले कपूत । लीक छोड़ तीनहिं चलें, सायर सिंह सपूत ।

लीचड़ असामी–देने मे सुस्त आदमी । उ० लीचड असामी को कौन पसद करेगा ?

लीद करना–घोडे आदि का मल त्यागना । उ० घोड़ा लीद कर रहा है ।

लीप देना–चौपट कर देना, गडबड कर देना ।

लीपना-पोतना–सफाई करना । उ० जरा उस कोठरी को लीपा पोता करो ।

लीप-पोत कर बराबर करना–१ सर्वनाश करना । उ० पिता जी की कमाई तुमने लीप-पोत कर बराबर कर दी । २ पोचारा फेर देना । मिटा देना । उ० ऐसा लडका है कि सारे लिखे को लीप-पोत कर बरबाद कर दिया । ३. भुला देना । उ० पढा-लिखा लीप-पोत कर बर्बाद न कर देना ।

लीप-पोत देना–दे० 'लीपना पोतना' ।

लीपा-पोती करना–झूठ-सच बोल कर बात को ढँकने का प्रयत्न करना ।

लुण्ड-मुण्ड करना–सिर गजा करना ।

लुक-छिप कर–गुप्त रूप से । उ० वह लुक-छिप कर ही तो यहाँ रहता है, यदि पुलिस जान जाय तो प्राणो पर आ बने ।

लुक़मा करना–खा जाना, कवर बनाना, हजम कर जाना । उ० शुतुरमुर्ग ऐसा पक्षी है कि उसके सामने जो कुछ पड जाय, सबको लुक़मा कर जाता है ।

लुक्का लगना–दे० 'ढुक्का लगना' ।

लुक्का लगाना–१. झगडा लगाना । २ आग लगाना ।

लुग्गा से होना– दे० 'महीने से होना' । [इसका प्रयोग केवल स्त्रियाँ करती हैं ।]

लुच्चा-लुगाड़ा होना–बदचलन होना ।

लुटिया डुबोना या डुबो देना–१ कलक लगाना । उ० उसने अपने परिवार की लुटिया डुबो दी । २ सर्वनाश करना । उ० तुमने तो आज मेरी लुटिया डुबो दी ।

लुटिया डूबना–१. तबाही या बर्बादी आना । २ नुक़सान होना । उ० लुटिया डूबी रे हरदास, घोड़ी दाना खाय न घास । ३. बेइज़्ज़त होना ।

लुटे-पिटे दिन काटना–किसी तरह जीवन बिताना । बहुत तकलीफ से दिन बिताना ।

लुढकना-पुढ़कना–१. गिरना-पडना । उ० अँधेरा है और पानी बरस रहा है, कही लुढक-पुढक जाओगे तो चोट लग जायगी । २ बहुत विनती प्रार्थना करना । उ० लुढकने-पुढकने से शायद काम बन जाय ।

लुत्ती लगाना–१. आग लगाना । २ झगडा लगाना । उ० तुम्ही ने यह लुत्ती लगाई है ।

लुत्फ़ उठाना–आनद लेना, मज़ा पाना । उ० उसे मैं कलाकार नही मानता, जिसने अपने जीवन का लुत्फ नही उठाया ।

लूक लगाना–आग लगाना । उ० ऐसे नीच के मुँह मे लूक लगाओ । [यह एक गाली है, जिसका प्रयोग स्त्रियाँ ही विशेष करती हैं ।]

लूका लगाना–दे० 'लूक लगाना' ।

लूकी लगाना–दे० 'लूक लगाना' ।

लू खाना–गर्मी के दिन हवा लगना ।

लूट खाना–१ दूसरे का धन किसी न किसी प्रकार लेकर उड़ाना । उ० कारिंदो ने ज़मींदार का धन लूट खाया । २. सारा धन हड़प लेना । उ० चोरो ने बुढिया का धन लूट खाया ।

लूटना-पाटना–लूट-मार करना । उ० चगेज़ख़ाँ लूटने-पाटने आया था ।

लूट पड़ना–बिना कीमत के मिलना । सेत मे मिलना । चीज़ो का मुफ्त मे ले लिया जाना । उ० क्या यहाँ लूट पडी है, जो हाथ हिलाते आये हो, लेना हो तो दाम लेकर आओ ।

लूता लगाना–दे० 'लुत्ती लगाना' ।

लूती लगाना–दे० 'लुत्ती लगाना' ।

लू मारना—दे० 'लू लगना ।'

लू लगना—लू मार देना, गर्म वायु के लग जाने से तबीयत खराब हो जाना। गर्मी के दिनो मे गर्म हवा लग जाना। उ० आज बहुत से लोगो को लू लग गई।

लू-लू बनाना—मूर्ख बनाना। उ० सीधे आदमी का लू-लू बना लेते हो, कोई दूसरा रहता तो बतलाता।

लू-लू बोलना—चिढाना, उपहास करना।

लेंडी कुत्ते की मौत मरना—बुरी मौत मरना। दुर्दशा से मरना।

लेंडी कुत्ते की मौत मारना—१ बड़ी बुरी तरह मारना। २. बहुत आसानी से मारना। उ० गुर्ग शेरो पिलग को वह तुर्क, लेंडी कुत्ते की मौत मार आया।

ले आना—साथ लाना। उ० जब आप आइयेगा तो छोटे बच्चे को भी जरूर ले आइएगा।

ले उडना—१ लेकर चल देना। उ० वह देखते ही देखते मेरी किताब ले उडा। २ छोटी बात को अधिक बना लेना। उ० गाँव वाले तो कुछ भी कहो, ले उडते हैं।

ले-उडा होना—धोखेबाज होना।

लेक्चर झाडना—व्याख्यान देना। उ० ये महाशय लेक्चर झाडने आये हैं या कुछ काम करने ?

लेखनी उठाना—लिखना शुरू करना। उ० लेखनी उठाने के पहले हमारे लेखको को कम से कम भाषा का ज्ञान तो कर लेना चाहिए।

लेखा जाँचना—हिसाब-किताब देखना। उ० दो-चार माह पर मुनीम का लेखा जाँच लिया करो।

लेखा-जोखा—हिसाब।

लेखा डालना—हिसाब खोलना। उ० अपने यहाँ मेरा भी लेखा डाल लो तो हिसाब करने मे आसानी रहेगी।

लेखा देना—१ हिसाब देना। २ पूरी तरह वर्णन करना।

लेखा बराबर करना—झगडा समाप्त करना। उ० तुम्हारा लेखा बराबर करना यहाँ किसी के बस का नही है, बडे साहब के पास चले जाओ।

लेखा माँगना—हिसाब माँगना।

ले डालना—१ बरबाद करना। उ० आपने मेरे लडके को भी ले डाला। २. पूरा करना। उ० तुम घबरते क्यो हो, दो मिनट मे इस काम को ले डालूँगा। ३ खतम कर देना, मार डालना। उ० उसके लडके को चोरो ने ले डाला।

ले डूबना—साथ-साथ दूसरे का भी नाश करना। उ० वह अपने तो बरबाद हो ही गया, मेरे भाई को भी ले डूबा।

लेते जाना—लेकर जाना। साथ मे ले जाना। उ० ये चीजें भी लेते जाना।

ले दही दे दही का प्रश्न होना—अपनी गरज का प्रश्न होना। उ० उन्होने खुद इस चीज के लिए कहा होता तो अवश्य ही अधिक दाम दिया होता, पर तुम स्वय लेकर दिखाने चल रहे हो, अत लेंगे भी तो बहुत कम पर। ले दही दे दही का प्रश्न है न ?

ले-दे करना या होना—१ विवाद होना। २ दुर्गति होना।

ले-देकर—१ किसी प्रकार। उ० ले-देकर इन चोरो से जान बचाया। २. सब मिला कर। उ० ले-देकर उसके पास यही इतने रुपये थे। ३. सब हिसाब करके। लेन-देन का हिसाब करके। उ० ले-देकर तुम्हारे नाम पाँच रुपये निकलते हैं।

ले-दे करना—सवाल-जवाब करना। उ० छोटी सी बात के लिए ले-दे करना ठीक नही था, तुम्ही सह लेते।

लेन-देन न होना—१. कोई सबध न होना। उ० ऐसे दुष्ट आदमियो से लेन-देन ही नही होना चाहिये। २ रुपया-पैसा लेने-देने का व्यवहार न होना। उ० लेन-देन न होती तो वे क्यो दुश्मन बनते ?

लेना एक न देना दो होना—कोई सबध न होना। उ० सबसे अच्छे वे सन्यासी ही हैं, जिन्हे ससार से न लेना एक है न देना दो।

लेना-देना—उधार लेने-देने का सम्बन्ध रखना। उ० बडे-बडे महाजनो से हमारा लेना-देना चलता है।

लेने के देने पडना—जान पर आ पडना। उ० अगर यहाँ से न भाग जाओगे तो लेने के देने पडेंगे।

लेने-देने मे न होना–किसी से कोई सरोकार न रखना। उ० किसी के लेने-देने मे नहीं कोने मे बैठे हैं, तुम्हारा गम सताता है, इसे समझाइए साहब।

ले पालना–अपने यहाँ रख कर पालना। उ० एक अनाथ बच्चा गाँव मे आया है, उसे ही ले पालो।

ले बैठना–दे० 'ले डूबना'।

ले रखना–रख छोडना। रख लेना। उ० यह कपडा मैंने तुम्हारे ही लिए ले रखा था।

लेहाज़ आना–शर्म लगना। उ० सच ही था अहदे वफा लेके दिल उसे देना, आ गया वक्त पै करते हुए तकरार लिहाज़।

लेहाज़ उठा देना–वेशर्म वन जाना।

लेहाज़ टूटना–१ शर्म दूर होना, शर्म न रहना।

लोक-लाज की लोई उतार फेंकना–सामाजिक मर्यादा का उल्लघन कर निर्लज्ज हो जाना।

लोक मे उजागर होना–लोक मे यश होना।

लोचन भर आना–आँखें भर आना। रोने लगना। उ० उस बुढिया की करुण कहानी सुनकर मेरे लोचन भर आये।

लोट जाना–१ मर जाना। उ० एक लाठी मे ही वह लोट गया। २ अचेत होना। उ० भाँग पीते ही वह लोट गया। ३ दीवाला निकल जाना। उ० सेठ जी आज लोट गए।

लोट-पोट करना या कर लेना–१ आराम करना। उ० खाना खाकर कुछ लोट-पोट कर लूँ तो चला जाय। २ मोहित या आकर्षित करना। उ० उसने तो तुम्हे लोट-पोट कर लिया।

लोट-लोट हो जाना–आसक्त हो जाना, रीझ जाना। उ० वह इसे देख कर लोट-पोट हो गया।

लोट होना–१ व्याकुल होना। उ० वह उसके पीछे लोट है। २ आसक्त हाना। उ० वह उसकी सूरत पर लोट हो गया है।

लोटा डुबोना–दे० 'लुटिया डुबोना'।

लोटा-थाली तक विक जाना–दीवाला हो जाना। उ० शराव से इस सेठ की लोटा-थाली तक विक गई।

लोटा-लोटा कर मारना–जमीन पर गिरा-गिरा कर बुरी तरह मारना। उ० हसरत ने उसको मारा आखिर लुटा-लुटा कर।

लोटे भर पानी को भी न पूछना–कोई महत्त्व न देना।

लोढा ढाल करना–चौपट करना, सत्यानाश करना। उ० झटकि पटकि झट लटकि कसि कीन्ही लोढा ढाल।

लोढा डालना–१ वरावर करना। २ सत्यानाश करना। उ० तुमने सारे काम पर लोढा डाल दिया।

लोथ गिरना–युद्ध मे मरे व्यक्तियो का गिरना, लाश गिरना। उ० सन् ४२ मे लोथ गिरना देख कर प्राण काँप जाते थे।

लोथ डालना–मार गिराना। उ० उसने झगडे मे वहुतेरो को लोथ डाला।

लोथ पर लोथ गिरना–ज़ोरो की लडाई होना। उ० जब मैं युद्ध मे पहुँचा तो लोथ पर लोथ गिर रही थी।

लो दही लाव की वात होना–अपनी गरज़ का सवाल होना।

लोन खाना–दे० 'नमक खाना'।

लोन न मानना–नमकहराम होना। उ० उसे कौन अपने घर रखेगा, जिसने अपने पिता का भी लोन न माना। वह भला और किसको मान सकता है।

लोन निकलना–नमकहरामी का फल मिलना।

लोमडी के खट्टे अगूर होना–कोई चीज न मिलने पर उसे वुरा वतलाया जाना।

मारकडे होना–अमर होना। उ० लोमश मारकडे नहीं हो, तुम्हें भी एक दिन मरना है।

लोरी देना–गीत गाकर वच्चो को चुप कराना या सुलाना। उ० लोरी देकर वच्चे को सुला दो। माता का लोरी देना मुझे अब भी नहीं भूला है।

लोह-लट्टू–उजड्ड, असस्कृत।

लोहा करना–कपडो पर इस्तरी करना। कपडो को कडा करके तह लगाना। उ० धोवी मेरे कपडो पर लोहा कर रहा है।

लोहा गहना—युद्ध करना । उ० डरपोक व्यक्ति क्या लोहा गहेंगे, यह काम तो वीरों का है ।

लोहा बजना—दे० 'लोथ पर लोथ गिरना' ।

लोहा बजाना—लड़ाई लेना । उ० मैं उनसे लोहा बजाने को तैयार हूँ ।

लोहा मानना—श्रेष्ठता स्वीकार करना ।

लोहा लेना—१ लड़ना । २ मुकविला करना ।

लोहू का घूंट पीना—क्रोध रोक लेना । उ० लोहू का घूँट पीकर रह गया नही तो उन्हे वतला देता ।

लोहे का चना—बहुत कठिन काम । उ० भाई यह तो मेरे लिए लोहे का चना है, तुम कर डालते तो अच्छा होता ।

लोहे का सोना बनाना—सारहीन वस्तु या महत्त्व-हीन व्यक्ति को महत्त्वपूर्ण बनाना ।

लोहे की कील गाडना—अपनी विजय घोषित करना । अधिकार स्थापित करना ।

लोहे की छाती कर लेना—कठिन से कठिन कष्ट सहने के लिए दिल कड़ा कर लेना । उ० मेरे तीन-तीन लड़के एक दिन मरे, पर मैंने लोहे की छाती कर ली थी और मेरी आँखें गीली तक न हुई ।

लोहे के घाट उतारना—मार डालना । उ० उसने हँसते-हँसते उसे लोहे के घाट उतार दिया ।

लोहे के चने—बहुत कठिन काम । उ० आपके लिए तैर कर गगा पार करना लोहे के चने हैं ।

लोहे के चने चबाना—१ बहुत अधिक मेहनत से काम करना । उ० इस काम को पूरा करने के लिए आपको लोहे के चने चवाने पड़ेंगे । २ असंभव काम करना । उ० उसे जीतना तो मेरे लिए लोहे के चने चवाना है ।

लोहे से आग बरसाना—बहुत वीरता तथा पराक्रम दिखाना ।

लौट-पौट हो जाना—दे० 'लोट-पोट हो जाना' ।

लौ लगना—धुन सवार होना । उ० उसे हर समय पढने की लौ लगी रहती है ।

लौ लगाना—लीन रहना, मग्न रहना । उ० इस समय आपको भगवान मे लौ लगानी चाहिए ।

लौह पुरुष—बडे ही दृढ व्यक्तित्व का आदमी । [यह अंग्रेजी प्रयोग का अनुवाद है ।] उ० पटेल लौह पुरुष थे ।

व

वट होना—दे० 'बट होना' ।

वकालत करना—किसी के पक्ष मे बोलना ।

वकालत चमकना—दे० 'वकालत चलना' ।

वकालत चलना—वकालत के पेशे मे खूब आमदनी होना । उ० उनकी आजकल वकालत खूब चली हुई है।

वकालत जमना—वकालत के पेशे मे लाभ होने लगना । उ० वकालत जम जाय तो एक बढिया-सा बंगला लूं ।

वकूअ मे आना—१ प्रकट होना । २ घटित होना । उ० यह बात कब वकूअ मे आई ?

वक्त आ पहुँचना—१ मरने का वक्त करीब आना । उ० उस बूढ़े का वक्त आ पहुँचा है । २ उचित समय आना । उ० वक्त आ पहुँचा है, उसकी दावत कर डालो । ३ निश्चित समय या वक्त का आना ।

वक़्त काटना—किसी तरह समय बिताना । उ० यहां वक्त काटने के लिए कुछ खेल का सामान होना चाहिये ।

वक्त की चीज़—ऋतु-विशेष मे मिलने वाली चीज़ । उ० यार देहात मे रहते हो, फली वगैरह वक्त की चीजें तो भेज दिया करो ।

वक्त खोना—१ समय नष्ट करना । उ० वक्त खोना बहुत बडा पाप है । २ ठीक अवसर पर चूकना । उ० वक्त तो खो दिया, भला अब क्या हो सकता है ?

वक्त ताकना—मौका देखना । अवसर पाने की घात मे रहना । उ० वक्त ताकते रहो, जब समय आयेगा तो काम तुरन्त बन जायगा ।

वक्त पर—अवसर आने पर । उ० इसे रख छोडो, वक्त पर काम आयेगी ।

वक्त हाथ से दे देना—अवसर चूकना । उ० वक्त हाथ से दे दिया तो बैठ कर पछताओ ।

वक्तृता झाड़ना–भाषण देना।

वक़्फा देना–छुट्टी देना।

वक़्फा मिलना–१ स्कूलो मे पढने के बीच मे अवकाश मिलना। २ छुट्टी मिलना।

वक़्फा होना–छुट्टी होना।

वचन–[वचन के मुहावरो के लिए 'वचन' के मुहावरे देखिए।]

वचन न जाना–दिये हुए आश्वासन या प्रतिज्ञा का पूरा होना।

वचन प्रमाण करना–वचन सत्य प्रमाणित करना।

वचन-बान से मारना–अप्रिय बातो से पीडा पहुँचाना।

वचन मे बँधना–प्रतिज्ञाबद्ध होना, वचनबद्ध होना।

वचन लगना–बात का असर होना।

वज़न रखना–महत्त्व रखना। [यह अंग्रेज़ी मुहावरा To carry weight का छायानुवाद है।] उ० आपकी यह दलील कोई वज़न नही रखती।

वज़न लेना–तौलना। [यह अंग्रेजी मुहावरा To take the weight का अनुवाद है।] उ० इसका भी वज़न ले लो, शायद डाक से भेजा जा सके।

वज़ा होना–मुजरा या मिनहा होना। उ० वह रुपया इसी मे वज़ा हो गया।

वजूद पकड़ना–१ ज़ाहिर होना। उ० अब तो इस चीज़ ने वजूद पकड ली, इसे छिपाना व्यर्थ है। २ होना। स्थित होना।

वधिक की बाँसुरी का मृग बनना–१ पूरी तरह वश मे होना। २. धोखे मे फँस जाना।

वबा आना–१ हैज़ा आदि बीमारियो का आना। २ किसी महामारी का आना। उ० हज़ारो मर गए उस पर, सिसकते है लाखो। अजीब रोग हैं या रब यह क्या वबा आई।

वबालेजान हो जाना–१ बोझ मालूम देना, बुरा लगना। २ जान आफत मे आना।

वर्षा होना–१ बहुत अधिक परिमाण मे ऊपर से गिरना। उ० उसकी शादी मे कल वहाँ जहाज़ से फूलो की वर्षा हुई। २ बहुत अधिक मिलना। उ० आजकल खेती में रुपयो की वर्षा हो रही है।

वली खंगर–धर्मध्वजी, साधू होने का झूठा दावा रखने वाला। उ० आजकल वली खगरो की कमी नही है।

वसीला पैदा करना–आमदनी का रास्ता निकालना। उ० कोई वसीला पैदा करो तो कलकत्ता चला जाय।

वसूल पाना–दूसरे से जो पाना हो, वह मिल जाना। उ० मैंने उससे सब रकम वसूल पाई।

वस्त्र-मोचन होना–सब कुछ चोरी चला जाना।

वह दिन न रह जाना–पहले की-सी स्थिति न रह जाना।

वाक़ा होना–घटित होना। उ० यहाँ तो एक विचित्र किस्सा वाका हुआ है।

वाजिबी ख़र्च–उचित खर्च। उ० जो वाजिबी खर्च होगा, वह तो करना ही पडेगा।

वाजिबी बात–उचित बात। उ० वाजिबी बात कहो, किसी से डरो मत।

वानी फूटना–मुँह से शब्द निकलना।

वादाखिलाफी करना–१ दे० 'वादा टालना'। २ बात देकर उस पर से हट जाना।

वादा टालना–प्रतिज्ञा भग करना। बात देकर टाल देना। उ० वादा टालोगे तो वे भला क्या कहेगे ?

वादा पूरा करना–प्रतिज्ञा पूर्ण करना। वचन को पूरा करना। उ० वादा पूरा करने वालो का सब लोग विश्वास करते है।

वादा रखना–प्रतिज्ञा कराना। उ० उनसे पहले वादा रखा लो, फिर मैं देख लूँगा।

वादी पर आना–अपने हठ पर आना, ज़िद्द पर आना। उ० अपनी वादी पर आऊँ, तो अभी नाच नचा दूँ।

वापस आना–लौट कर आना। उ० वे कल गये और आज वापस भी आ गये।

वापस करना–१ लौटाना, फेरना। उ० यह कपडा ठीक नही है, इसे वापस कर दो। २ लेकर फिर दे देना। उ० किताब वापस की या नही ?

वापस जाना–आकर लौट जाना। उ० उसका भाई आया था, पर तुरत वापस गया।

वापस होना–१ लौट जाना। उ० वे क्यो तुरत ही वापस हो गए ? २ खरीदी चीज़ का लौटाया जाना। उ० वह घड़ी वापस हुई या

नही। ३ दी हुई वस्तु का दिया जाना या मिलना। उ० बारात का सामान वापस हुआ या नही ?

वापिस–['वापिस' के मुहावरो के लिए 'वापस' के मुहावरे देखें।]

वाम अंग फरकना–शरीर के वाम अग मे विशेष प्रकार का स्पन्दन (स्त्रियो के लिए शुभ और पुरुषो के लिए अशुभ माना जाता है।)

वाम वाणी बोलना–कटु वचन बोलना।

वाम होना–१ प्रतिकूल होना। २ दुष्ट होना।

वायदा करना–दे० 'वादा करना'।

वार ओछा पडना–लडाई मे वार का भरपूर हाथ न पडना।

वार करना–हमला करना। उ० आज उस गाँव पर एक भेडिये के झुण्ड ने वार किया था।

वार खाली जाना–चाल सफल न होना। उ० मैंने उसे अपने वश मे करने के लिए बडी कोशिश की, पर वार खाली गया।

वार न लेने देना–दम भरने की भी फुर्सत न देना। उ० आप नौकरो को वार भी नही लेने देते।

वारि पर भीत उठाना–असभव काम करने का प्रयत्न करना।

वारियाँ जाना–न्यौछावर हो जाना। उ० ऐसे भोले लडके पर वारियाँ जाऊँ। [स्त्रियाँ प्यार मे कहती हैं।]

वारी जाना–दे० 'वारियाँ जाना'।

वारी होना–दे० 'वारियाँ जाना'।

वारे-न्यारे करना–१ खूब नफा कमाना, माला-माल होना। उ० उन्होने थोडे ही दिनो मे वारे न्यारे कर लिये। २ सत्यानाश करना। ३ निपटा देना, खतम करना।

वावेला करना–१ शोर मचाना। २ झगडा करना। ३ रोना-पीटना।

वास्ता देना–दुहाई देना, बीच मे डालना। उ० मैं खुदा और रसूल का वास्ता देकर यह कह रहा हूँ।

वास्ता पडना–काम पडना। उ० वास्ता पडेगा तो दौडे यही आओगे।

वास्ता पैदा करना–मिलने का ढग निकालना। उ० उससे मिलने का कोई वास्ता पैदा करो।

वास्ता रखना–सबध रखना। उ० अब आपसे मैं कुछ भी वास्ता न रखूँगा।

वाह-वाही होना–तारीफ होना।

वाही-तवाही फिरना–१ बेकार फिरते रहना। उ० तुम क्यो वाही-तवाही फिरते रहते हो, कुछ काम क्यो नहीं करते ? २ बरबाद हो जाना। उ० उन पर वाही-तवाही फिर गई।

वाही-तवाही बकना–बेहूदा या बेकार बातें बकना।

विचार-सागर मे डूबना–विचारो मे लीन होना।

विजय करना–दे० 'विजय करना'।

विधना के अक्षर–दे० 'विधना के अक्षर'।

विपत्ति उठाना–सकट या कष्ट सहना।

विपत्ति काटना–कष्ट के दिन बिताना।

विपत्ति झेलना–दे० 'विपत्ति उठाना'।

विपत्ति ढहना–एकबारगी आफत आ जाना।

विपत्ति मोल लेना–व्यर्थ मे अपने ऊपर आप झझट मोल लेना।

विपत्ति सिर पर लेना–दे० 'विपत्ति मोल लेना'।

विरह की काती होना–विरह को दूर करने का साधन होना।

विश्वास मे विष घोलना–विश्वास के भाव को ठेस पहुँचाना।

विष का घूँट पीना–अत्यन्त अप्रिय बात को सह जाना।

वेद-वाक्य मानना–पूर्ण सत्य मानना, भगवान की आज्ञा मानना। उ० आपकी हर बात को मैं वेद-वाक्य मानता हूँ। आप जैसा ही कहेंगे, वैसा ही करूँगा।

वेश धारण करना–किसी के स्वरूप या पहनावे की नकल करना।

वेश-भूषा–कपडे इत्यादि पोशाक। उ० उसकी वेश-भूषा अच्छी है।

वैर–वैर के मुहावरो के लिए 'बैर' देखिए।

व्यग्य करना–दे० 'व्यग्य छोडना'।

व्यग्य कसना–दे० 'व्यग्य छोडना'।

व्यग्य छोडना–चुभती हुई बात कहना। तानाजनी करना। उ० मुझ पर ही व्यग्य छोडना है ?

व्यवस्था देना–शास्त्र-विधान बताना। उ० इस विषय मे मनु भगवान क्या व्यवस्था देते है ?

व्याधि-मदिर होना–शरीर मे बहुत बीमारियाँ होना। उ० यह भिखारी तो पूरा व्याधि-मदिर हो गया है। इसके बचने की आशा नही है।

व्रत ठानना–नियम लेना, प्रतिज्ञा करना।

श

शंकर की लकडी–ईख। [कहारो की भाषा मे प्रयुक्त होता है। मूलतः इसका रूप सक्कर या शक्कर की लकडी रहा होगा।]

शंकर होना–अत्यन्त सीधा होना। उ० उनका लडका तो शकर है, उसने झगडा हर्गिज नही किया होगा।

शंख बजना–१ विजय होना। उ० उन लोगो का शख वज गया, अव वे झडा भी फहरायें। २ दिवाला निकलना। उ० इलाहाबाद वैंक मे शख वज गया।

शंख वजाना–१ आनन्द मनाना। उ० शत्रुओ की हार पर कौन नही शख बजाता? २ विजय करना। ३ पछताना। उ० सारा रुपया वह ले गया, अब आप बैठ कर शख बजाइए।

शऊर पकड़ना–१. तमीज सीखना। उ० ज्यो-ज्यो लडका बडा हो रहा है, शऊर पकड रहा है। २ विगड़ना (व्यग मे)। ३ आप तो खूब शऊर पकड रहे हैं।

शक डालना–शुवहा पैदा करना। उ० होने-हवाने के विषय मे शक न डालिए, मुझे करने दीजिए।

शकुन-तकिया–वह शब्द या वाक्य जिसे किसी-किसी को प्रत्येक वात मे कहने की आदत होती है। उ० उसकी 'समझे' शकुन-तकिया है। ['का नाम है कि', 'मतलब कि', 'गँवला जो है कि', 'रामजी', 'जे बासनीक', 'माने', 'समझे' आदि वहुत-सी शकुन-तकिया प्रसिद्ध हैं। शुद्ध शब्द 'सखुन-तकिया' है। इसे तकिया-कलाम भी कहते हैं।]

शकुन देखना–शुभाशुभ विचार करना। ज्योतिप या कुछ अन्य प्रचलित आधारो से भविष्य के वारे मे शुभ-अशुभ या ऐसी ही वातो का विचार करना।

शकुन विचारना–दे० 'शकुन देखना'।

शक्कर से मुंह भरना–१. किसी खुश-खवरी के अवसर पर मिठाई खिलाना। २ मुँह मीठा करना।

शक्ल वनाना–१ चित्र वनाना। उ० उसने एक शेर की शक्ल वनायी है। २ रूप वनाना। उ० यह क्या पागलो-सी शक्ल वना रक्खी है।

शक्ल विगाडना या विगाड देना–१ खूब मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो ऐसी शक्ल विगाड़ूँगा कि होश करोगे। २ सूरत खराव करना। उ० चेचक ने वच्चे की शक्ल विगाड दी।

शक्ल से वेजार होना–किसी की सूरत से घृणा करना।

शगुन लेना–दे० 'शकुन देखना'।

शगुन होना–१. अच्छा फल निकलना। २ मँगनी रीति का अदा होना। ३ दशहरे के दिन नये वर्ष का लगान लेना आरभ होना।

शगूफा खिलना–कोई नया और विलक्षण घटना होना। उ० आज मेरे मुहल्ले मे अच्छा शगूफा खिला। उनके घर की दोनो लडकियाँ गायब हैं।

शगूफा खिलाना–नया रग खिलना, कोई नई और विलक्षण घटना कर वैठना। उ० तुमने तो यहाँ आकर अच्छा शगूफा खिलाया।

शगूफा दिखाना–आफत दिखाना। वला मे फँसना। उ० तुख्म उल्फत मे शगूफा यह दिखाया मुझको। दश्ते पुरखार के काँटो पर लिटाया मुझको।

शड़पा मारना–एकदम घोट जाना। उ० शुतुर-मुर्ग हरएक चीज शडप्पा मार जाता है।

शत्रु को युद्ध मे पीठ न दिखा–कभी हार न होना।

शनाख्त करना–पहचानना। उ० शनाख्त करके अपना सामान ले जाओ।

शनि-दृष्टि पड़ना–वुरी दृष्टि पडना।

शपथ उठाना–कसम खाकर प्रण करना। उ० शपथ उठाकर तो गया है, देखा क्या करना है?

शफक़ फूलना--आसमान मे लाली फैलना। उ० आज सुवह का शफक फूलना वडा सुहावना लग रहा है।

शफा देना–अच्छा करना, नीरोग करना। उ० मुझे शफा देने वाला कोई नही मालूम होता।

शब्दो के कोडे लगना–भला-वुरा कहा जाना।

शब-वास होना–१ रात को रहना। विश्राम करना। २. रात भर सोना।

शवाव आना—वहुत अधिक सुन्दर होना ।

शब्दो के महल वनाना—दे० 'हवाई किले वनाना' ।

शब्दो मे वाँधना—शब्दो द्वारा प्रकट करना ।

शमा वढाना—वत्ती वुझाना । चिराग गुल करना ।

शरई दाढी—वहुत लवी दाढी । उ० उसकी शरई दाढी वडी खूवसूरत लगती है ।

शरई पैंजामा—ऊँचा पैंजामा । उ० शरई पैंजामा कैसे पहनते हो ?

शर चढ़ना—पति की चिता पर चढ कर पति के साथ जल मरना ।

शरण ताकना—आश्रय चाहना ।

शरण रखना—कृपापात्र वनाना, सरक्षण मे लेना ।

शरम खाना—१. सकोच खाना । उ० इसमे शरम खाने की क्या वात है ? २. निर्लज्ज होना । उ० तुम तो शरम खा गए हो, तुम्हारा मुकाविला कौन कर सकता है ?

शरम रखना—१ आवरू वचाना । उ० किसी प्रकार मेरी शरम रख लो, तुम्हारा भगवान भला करेगा । २. लिहाज रखना, अदव रखना । उ० वडो के सामने कुछ तो शरम रखो ।

शरम रहना या रह जाना—इज्जत रहना । उ० किसी तरह शरम रह गई ।

शरम से गड़ना या गड जाना—लज्जा से गड जाना । उ० उसी दिन से वह मुझे देखता है तो शरम से गड जाता है ।

शरम से पानी-पानी होना—वहुत लज्जा आना । अत्यन्त लज्जित होना । उ० आज हम लोगो ने उसे ऐसा वनाया कि वह शरम से पानी पानी हो गया ।

शर्मिदगी उठाना—लज्जित होना । उ० आपकी वजह से हमे भी शर्मिदगी उठानी पडी ।

शरह करना—टीका करना । उ० आजकल वे किसी फारसी किताव की शरह कर रहे हैं ।

शराव ढलना—दे० 'वोतल ढलना' ।

शरारत का पुतला—वहुत शरारती ।

शरीक करना—मिलाना, रखना । उ० मुझे भी अपने रोजगार मे शरीक कर लीजिए ।

शरीक रहना—शामिल रहना । मैं भी आपके काम मे शरीक रहूँगा ।

शरीक होना—दे० 'शरीक रहना' ।

शरीर गलना—शरीर का क्षीण होना ।

शरीर छूटना—मरना । उ० आज उसका शरीर छूट गया ।

शरीर घुला जाना—चिंता के कारण शरीर का दुर्वल हुआ जाना ।

शर्त वाँधना—वाजी लगाना ।

शर्फ ले जाना—आगे निकल जाना, वढ जाना ।

शर्वत का-सा घूँट पीना—कोई द्रव शर्वत की तरह मजा लेते हुए पीना । उ० तुम्हारे लिए मैं जहर भी शर्वत का-सा घूँट पी सकता हूँ । मीरा और सुकरात ने जहर को शर्वत का-सा घूँट पीया ।

शर्म भून कर खा जाना—निर्लज्ज हो जाना ।

शर्मसार करना—शर्मिदा करना ।

शर्म से पानी-पानी होना—लज्जा से डूव जाना । वहुत शर्मिदा होना ।

शल हो जाना—थक जाना । थक कर चूर हो जाना ।

शव की तरह जीना—पौरुषहीन होकर या निर्लज्ज होकर जीना ।

शशदर रहना—आश्चर्य मे पड़ जाना, हैरान हो जाना ।

शस्त वाँधना—निशाना वेधने के लिए सीध लगाना । निशाना दुरुस्त करना । उ० शस्त वाँध कर वन्दूक का घोडा दवाओ ।

शस्त लगाना—दे० 'शस्त वाँधना' ।

शस्त्र डाल देना—हार मान लेना ।

शहद की छुरी होना—ऊपर से मीठा एव मृदुल और भीतर से कटु तथा भयावह होना । उ० आप शहद की छुरी है, आपको मैं खव जानता हूँ ।

शहद लगा कर अलग होना—आग लगा कर दूर होना । झगड़ा लगा कर हट जाना । उ० आप तो शहद लगाकर दूर हो गये, यहाँ मेरी जान आफत मे पडी है ।

शहद लगा कर चाटना—वेकार रखना । कुछ उपयोग न कर सकना । उ० पास तो हो गए, अव सनद को शहद लगा करचाटो ।

शहादत देना—गवाही देना। उ० मेरे खिलाफ शहादत दी तो खैर नहीं।

शहादत लेना—गवाही लेना।

शहीद होना—कुर्बान होना। सत्य के लिए जान देना। उ० सन् ४२ के आन्दोलन मे कितने ही भारतवासी शहीद हो गए।

शॉक गुजरना—कष्टकर होना, हृदय पर धक्का लगना।]'शॉक' शब्द अंग्रेजी शब्द Shock है।] उ० छोटे लडके के मरने से उस पर बहुत शॉक गुजरा।

शाख निकलना—१ ऐब निकलना, बखेडा होना। २ बढना।

शाख निकालना—१ दोष देना। २ नुक्ताचीनी करना। ३ झगडा खडा करना।

शाख लगना—गर्व होना।

शाख लगाना—१ कलम लगाना। डाली काटकर जमीन मे गाडना। उ० इसकी शाख लगानी पडेगी, क्योकि बीज नहीं होते। गुलाब की शाख लगा दो। २ सम्मान करना उ० मैं नही शाख लगाऊंगा तो क्या कोई विलायत से आयेगा ?

शाखसाना पैदा हो जाना—झगडा खड़ा हो जाना। उ० टुकडे दिल है किस कदर गुस्ताख साना हो गया, जुल्फ मे पैदा कहाँ का शाखसाना हो गया।

शाखा वढ़ाना—विस्तार करना।

शाखें निकलना—१ पेड़ का टहनियो मे विकसित होना। २ ऐब निकालना।

शाखोच्चार करना—विवाह के समय वश-परपरा का वर्णन करना।

शागिर्द करना—चेला वनाना। उ० मैं तुम्हारे ऐसे दुष्ट को शागिर्द करना नही चाहता।

शादियाना देना—दे० 'शादियाना बजाना'।

शादियाना वजाना—प्रसन्नता के उपलक्ष मे वधाई बजाना।

शादी मर्ग हो जाना या होना—किसी वात की प्रसन्नता मे एक-ब-एक मर जाना। उ० दम मे शादीए मर्ग हो जाना तेरे खत के जवाव मे देखा।

शान घटना या घट जाना—इज्जत मे कमी आना। उ० अगर तुम मेरे यहाँ खा लोगे तो क्या तुम्हारी शान घट जायगी ?

शान चढाना—१ किसी एक वात को और बढाना, तीव्र बनाना। २ खूब बनाव-सिंगार करना। ३ रगड कर तेज करना। ४. उत्साहीन को उत्तेजित करना।

शान जाना—दे० 'शान घटना'।

शान मारना—शान की वातें करना।

शान मारी जाना—दे० 'शान मे फर्क आना'।

शान मे फर्क आना—इज्जत मे कमी आना। उ० यदि आप मेरा काम कर देंगे तो आपकी शान मे कौन फर्क आ जायगा ? शान मे फर्क आने का अंदेशा हो तो आप मुझ गरीब के दरवाज़े न आया करें।

शान में बट्टा लगना—दे० 'शान मे फर्क आना'।

[illegible]ना से शाना छिलना—कधा से कधा छिलना। अत्यन्त भीड होना। उ० मेले मे इतनी भीड [illegible] शाना से शाना छिल रहा था।

[illegible]ना—वाहवाही देना, उत्साहित करना। [illegible] जीत कर आया है, शावासी दे[illegible] आओ।

शावासी लूटना—प्रशसित होना।

शाम उतरना—शाम होना, दिन ढलना।

शाम की सुबह करना—रात काटना या व्यतीत करना।

शामत आना—१ विपत्ति आना। २ पीटे जाने की घडी आना। उ० मालूम होता है कि तुम्हारी शामत आई है।

शामत का घेरा—जिसकी दुर्दशा का समय आया हो। उ० वह बेचारा शामत का घेरा है, उसकी कुछ सहायता कर दो।

शामत का मारा—दे० 'शामत का घेरा'।

शामत मे फँसना—आफत या विपत्ति मे फँसना।

शामत सवार होना—दे० 'शामत आना'।

शामत सिर पर खेलना—दे० 'शामत आना'।

शाम फूलना—शाम को पश्चिम मे ललाई का प्रकट होना।

शामिल हाल—दुःख-सुख का साथी, सच्चा साथी। उ० वही तो एक मेरा शामिल हाल है, तो साथी किसे कहे ?

शामी लगाना—घोडे के पैर मे नाल लगाना। उ० इक्के के घोडे मे शामी लगाना वहुत जरूरी है।

शासन की कमर ढीली पडना—शासन मे दुर्वलता आना ।

शिकजे मे कसना—अपने वश मे कर लेना, जाल मे फँसाना ।

शिकजे मे खींचना—१ वहुत कष्ट देना । उ० शिकजे मे खीचने से तो अच्छा होगा कि जान से ही मार दो । २ अधिकार या वश मे लाना । उ० पहले मुझे उन्हे शिकजे मे खीचने-दो, फिर तो सारा काम मैं आनन-फानन करा लूँगा ।

शिकन डालना—१ कपडो मे तह डालना । उ० कपडो मे शिकन डाल कर ठीक से रख दो । २ मरोडना, कडापन खराव करना । उ० भला वतलाओ, इस पैंट को क्या खाक पहन कर जाऊँ ? तुमने तो शिकन डाल कर इसे लुगरी कर डाला ।

शिकम शेर होकर खाना—खूब पेट भर खाना ।

शिकस्त खाना या खा जाना—हारना । उ० पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी से शिकस्त खाई ।

शिकस्त देना या दे देना—हराना । उ० उसने दुश्मन को खूब शिकस्त दी ।

शिकायत करना—निन्दा करना । उ० वह लोगो की झूठी शिकायत करता रहता है ।

शिकायत रफा करना—१ रज मिटाना । मन-मुटाव दूर करना । उ० उनकी मेरी-शिकायत रफा कर दो तो मैं उनके यहाँ जाया करूँ । २ दु ख मिटाना । रोग मिटाना । उ० कोई ऐसा हकीम नही मिलता, जो मेरे पेट की शिकायत रफा कर सके ।

शिकायतो का दफ्तर खोल देना—ढेर सारी शिकायते करना ।

शिकार फँसाना—झूठ-सच कह कर लाभदायक व्यक्ति को फँसाना ।

शिकार वनना—१ कुप्रभाव मे आना । २ लक्ष्य वनना ।

शिकार हाथ लगना—१ धनी-मानी का वश मे होना । उ० अगर इस वार कोई शिकार हाथ मे लग गया तो मेरा सव काम वन जायगा । २ आखेट मे किसी शिकार का मिलना । उ० आज तो एक भी शिकार हाथ नही लगा ।

शिकार होना या हो जाना—१ अधिकार मे होना । उ० उनका शिकार होना मेरे लिए वडा कष्टप्रद होगा । २ प्रेम मे फँसना । उ० वे तो उस दुष्टा के शिकार हो गए । ३ मुब्तिला होना । उ० मैं आजकल कई रोगो का शिकार हूँ ।

शिकार फँसाना—मोटा असामी फाँसना । उ० मानते हैं उस्ताद कि तुम्हारे जोड का शिकार फँसाने वाला दुनियाँ मे दूसरा नही है ।

शिकारी व्याह—शिकारी की तरह किया गया व्याह । इसे अपने शास्त्रो मे गधर्व विवाह की सज्ञा दी गई है । उ० महाभारत-काल मे अपने यहाँ वहुत से शिकारी व्याह हुए थे ।

शिकार हाथ से जाता रहना—लाभदायक असामी का वश से निकल जाना ।

शिखर छूना—चरम स्थिति को पाना ।

शिगूफा खिलना—दे० 'शगूफा खिलना' ।

शिगूफा खिलाना—दे० 'शगूफा खिलाना' ।

शिगूफा छोड़ना—दे० 'शगूफा खिलाना' ।

शिगूफा फूलना—दे० 'शगूफा खिलना' ।

शिप्पा जमना या जम जाना—चास लगना, सयोग होना । उ० अगर मेरा यहाँ शिप्पा जम गया होता तो काफी आमदनी हो जाती ।

शिरकत करना—दे० 'शरीक रहना' ।

शिरोधार्य करना—आदर के साथ स्वीकार करना । उ० आपकी आज्ञा शिरोधार्य करता हूँ ।

शिलग मारना—छलाँग मारना ।

शिष्टाचार करना—१ मारना-पीटना । उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो यहीं ऐसा शिष्टाचार कर दूँगा कि याद रखोगे । २ तहज़ीव से पेश आना । ३ वहुत वनावट या तकल्लुफ करना ।

शीत मारना—ठड का गहरा कुप्रभाव होना ।

शीर और शक्कर होना—विल्कुल घुलमिल जाना । उ० वे दोनो तो जैसे शीर और शक्कर हो गये हैं ।

शीराजा खुलना—१. इतजाम खराव होना । २ सिलाई खुल जाना ।

शीराजा टूटना—दे० 'शीराजा खुलना' ।

शील तोडना—१ निठुर होना । क्रूर वनना । उ० मैं ऐसा काम नही कर सकता, जिसमे शील तोडना पडे । २ अशिष्टता करना ।

शील न होना—नम्रता न होना। शालीनता का अभाव होना। उ० उसके पास शील तो है नही, वह कैसे किसी का आदर करे।

शीश नवाना—नत होना, अधीनता स्वीकार करना। प्रणाम करना।

शीशमहल का कुत्ता—१. दीवाना, पागल। उ० बहुत ज्ञानी होने पर मनुष्य का दिमाग़ शीश-महल का कुत्ता हो जाता है। २ घबराया हुआ, परीशान, किंकर्तव्य-विमूढ़।

शीश-वाशा—बहुत नाजुक'। उ० शीश-वाशा चीज़ है, इसे मैं साइकिल पर नहीं ले जा सकता।

शीशी सुंघाना—बेहोश करना। उ० शीशी सुंघा कर मेरा ऑपरेशन कीजियेगा।

शीशे मे उतारना—१ मोहित करना। २ भूत छुडाना।

शीशे मे वाल पडना—फूटने से शीशे मे वाल जैसा चीर का निशान पड जाना। उ० इस शीशे मे वाल पड गया, तस्वीर के लिए अव दूसरा शीशा मँगाओ।

शुक्रिया अदा करना—धन्यवाद देना। उ० आपने मेरे लिए इतनी तकलीफ उठाई, उसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

शुतुरमुर्ग़ होना—१ विपत्ति के समय मुँह तोप कर निश्चित हो जाने वाला होना। मूर्ख होना। २. लवा और मूर्ख होना।

शुष्क व्यवहार—बेमुरौव्वती का व्यवहार।

शूल मिटना—कष्ट का दूर होना।

शूल सहना—कष्ट पाना।

शूल होना—वेदना होना।

शुहरत पैदा करना—मशहूर होना। उ० भारतीय सैनिको ने अच्छी शुहरत पैदा की है।

शेख़ी किरकिरी होना—अभिमान चूर-चूर होना। उ० वहुत डीग हांक रहा था, पर एक ही थप्पड मे सव शेखी किरकिरी हो गई।

शेख़ी जताना—वडाई जाहिर करना, डीग मारना। उ० यहाँ शेख़ी न जताइए। आपकी रग-रग से मैं वाकिफ हूँ।

शेखी झाड़ना—दे० 'शेखी निकलना'।

शेखी निकलना या निकल जाना—नीचा देखना। अपमानित होना। उ० घवराइए नही, आपके दोस्त की तरह आपकी भी शेख़ी दो-चार रोज मे निकल जायगी।

शेख़ी बघारना—दे० 'डीग हाँकना'।

शेख़ी मारना—दे० 'डीग हाँकना'।

शेख़ी हाँकना—दे० 'डीग हाँकना'।

शेर का बच्चा शेर होना—बहादुर व्यक्ति की बहादुर संतान होना।

शेर की आँख से देखना—शत्रुता की नज़र से देखना। उ० क्यों शेर की आँख से देख रहे हैं, मैंने भला आपका क्या बिगाडा है?

शेर की माँद मे घुसना—खतरनाक काम करना।

शेर के कान कतरना—बहुत वीर तथा साहसी होना। उ० उससे लोहा लेना शेर के कान कतरना है। भाई वह डाकू तो शेर के कान कतरता है।

शेर के दाँत गिनना—१ कठिन काम करना। उ० इस नदी को पार करना शेर के दाँत गिनना है। २ दे० 'शेर के कान कतरना'।

शेर-दिल होना—बहादुर होना।

शेर-बकरी का एक घाट पानी पीना—सबल-निर्बल सबको एक समान अधिकार और सुविधा मिलना।

शेर मारना—१ बहादुरी का काम करना। उ० आप ऐसे डरपोक के लिए शेर मारना असभव है। २ कायर या डरपोक होना (व्यग्य)। बहुत छोटा काम करना उ० आप शेर मारते हैं, इसका मुझे खूब पता है।

शेर से पजा लेना—सशक्त का मुकाबिला करना।

शेर होना—निडर या निर्भीक होना, बिना डर का बनना। उ० अपने घर तो कमजोर भी शेर हो जाते हैं। अपने घर पर तो कुत्ते भी शेर होते हैं।

शैतान उठाना—१. झगडा खडा करना। उ० बेकार मे शैतान न उठाओ, तुम्हारा तो कुछ न होगा, यहाँ खून-खराबा हो जायगा। २. शोर मचाना। उ० शैतान उठाना हो तो मैं पुस्तक बन्द कर दूँ।

शैतान का कान फूंकना—बुरे विचार मे लीन होना। उ० मैं समझ रहा हूँ कि शैतान ने आपका कान फूँक दिया है, आप गिरने से बाज नहीं आ सकते।

शैतान का धक्का—बुरी प्रेरणा। उ० शैतान के धक्के से मनुष्य खराब हो जाता है।

शैतान का वच्चा—१ नीचा। उ० शैतान के वच्चे का छुआ पानी मैं नहीं पी सकता। मेरे यहाँ तुम जैसे शैतान के वच्चे की आवश्यकता नही। २ एक गाली। ३ प्रेमपूर्ण शब्द।

शैतान की आँत—वहुत लम्वी। उ० यह डोरी है या शैतान की आँत?

शैतान की खाला—झगडालू औरत। उ० इसका स्वभाव मैं जान गया, यह तो शैतान की खाला है। इस शैतान की खाला को अपने घर मे न आने दिया करो।

शैतान की फटकार पड़ना—वुरी दशा होना।

शैतान के कान काटना—शैतान से भी चतुर होना। उ० तुम तो शैतान के भी कान काटते हो, अव तुम्हारे नज़दीक वह नहीं आ सकता।

शैतान चढ़ना—दे० 'शैतान लगना'।

शैतान लगना—१ भूत सवार होना। उ० उस औरत को शैतान लगा है, इसी से वह अट-शट वक रही है। २ वदमाशी सूझना। उ० शैतान लगा है क्या, जो ऐसा कर कर रहे हो?

शोखचस्मी करना—१ शरारत करना। उ० उन्ही ने परदे मे की शोखचस्मी वहुत हमने तो आँखो की हया की।

शोभा की नदी उमड़ना—शोभा का आधिक्य होना।

शोभा देना—१ सुन्दर लगना। उ० सदर सड़क पर आपका मकान कितना शोभा दे रहा है? २ उचित लगना। उ० आपके लिए ऐसा कहना शोभा नही देता।

शोर मचाना—वहुत ज़ोर से चिल्लाना। उ० सध्या समय लड़के यहाँ वहुत शोर मचाते हैं।

शोरिश वरपा करना—फमाद खडा करना। दगा मचाना।

शोरे की पुतली—वहुत गोरी स्त्री। उ० यह औरत तो शोरे की पुतली है।

शोला-भभूका होना—क्रोध मे आ जाना। लाल हो जाना। उ० यह सुनते ही शोला-भभूका हुई। लगी कहने ऐं! वला क्या हुई।

शोहदपन करना—दे० 'शोहदपन फैलाना'।

शोहदपन फैलाना—वदमाशी करना। लुचपन करना।

शौक चर्राना—दे० 'शौक पैदा होना'।

शौक पूरा करना—इच्छा पूरी करना। दिल की वासनाओं को तृप्त करना। उ० जवानी मे सव शौक पूरा कर लो, नही तो वुढापे मे पछताओगे।

शौक पैदा होना—चाह होना। जोर की चाह होना। उ० जव तुमको मिर्जई पहनने का शौक पैदा हुआ है तो सिलवा लो, यो उसे आजकल लोग पसद नही करते।

शौक फरमाना—उपभोग करना। उ० सिगरेट हाजिर है, शौक फरमाइए।

शौक मिटाना—दे० 'शौक पूरा करना'।

शौक से—१. आनन्द से। उ० आप मेरे यहाँ शौक से रह सकते हैं। २. चाह से। उ० वह आम शौक से खाता है।

श्मशान जगाना—श्मशान में वैठकर मंत्र सिद्ध करना।'

श्रम पाना—थकना, थक जाना।

श्राद्ध करना—मनुष्य की अन्तिम क्रिया या अतिम सस्कार करना। उ० अपने पिता जी का श्राद्ध कव कर रहे हो?

श्री करना—१ शुरू करना। उ० पहले काम को श्री करो, फिर देखा जायगा। २ माथे पर टीका लगाना।

श्रीगणेश करना—कोई काम शुरू करना। भगवान का नाम लेकर श्रीगणेश करो, फिर देखा जायगा।

श्रुतिपथ मे आना—सुनना। उ० यह वात तो आपके श्रुतिपथ मे अवश्य आई होगी।

श्रेय पाना—किसी काम के करने की वडाई पाना। उ० भारत को स्वतत्र करने का श्रेय गाधी जी ने पाया।

श्वास-कास—दमा-खाँसी। उ० वह श्वास-कास से परीशान है।

श्वास खींचना—साँस रोकना। साँस खीच कर भीतर रोकना। उ० श्वास खीच कर इसे उठाओ तो शायद उठ जाय। श्वास खींच कर डूवो।

श्वास छूटना—मरना। उ० वहुत दिनो की वीमारी के वाद आज उसका श्वास छूटा।

श्वास चढ़ाना–दे० 'श्वास खींचना'।

श्वास रहते–जब तक जान रहे। आजीवन। उ० श्वास रहते मैं किसी से डर नहीं सकता। श्वास रहते मैं सेवा करने को प्रस्तुत हूँ।

श्वास रोकना–हवा भीतर खींच कर रोके रहना। उ० श्वास रोक कर उठाओ तो उठ जायगा।

श्वेत यश–निर्मल यश।

ष

षट्चक्र रचना–दे० 'षड्यन्त्र रचना'।

षट्रस भोजन–हर प्रकार का अच्छा-अच्छा भोजन। उ० जो आपके यहाँ षट्रस भोजन बनता है, वह मुझे खूब ज्ञात है।

षड्यंत्र रचना–किसी के विरुद्ध कपटपूर्ण आयोजन करना। उ० तुम षड्यन्त्र रच रहे हो, यह मुझे मालूम है।

षड्राग करना–तीन-पाँच करना। गड़बड़ करना।

षोडश-श्रृंगार करना–पूरा सिंगार करना, अच्छी तरह सजना-बजना। उ० वह षोडश-श्रृंगार करके यहाँ आई है।

षोडश-संस्कार समाप्त होना–सोलहों संस्कार समाप्त हो जाना, मर जाना। संसार से विदा हो जाना। उ० उसके आज षोडश-संस्कार समाप्त हो गए।

स

संकट के बादल मँडराना–चारों ओर से विपत्ति का घेरना।

संकट-चौथ का सफल होना–संकट-चौथ व्रत के बाद संकट का दूर हो जाना। उ० तुम्हारी संकट-चौथ सफल हो गई।

सँकरा जीवन–दुःखपूर्ण जीवन। उ० इस सँकरे जीवन से तबीयत ऊब गई है।

सँकरा समय–मुसीबत के दिन।

सँकरे के साथी होना–विपत्ति में सहायक होना।

सँकरे में पड़ना–विपत्ति में फँसना। उ० आज-कल तो मैं चारों ओर से सँकरे में पड़ा हुआ हूँ।

संकल्प करना–१ दृढ़ निश्चय करना। उ० मैंने संकल्प कर लिया है कि वहाँ नहीं जाऊँगा। २ दक्षिणा देना। उ० उसने शुभ अवसर पर बहुत कुछ संकल्प कर दिया।

संकल्प-विकल्प में पड़ना–असमंजस में पड़ना, दुविधा में पड़ना। उ० मैं तो आज बड़े संकल्प-विकल्प में पड़ा हूँ कि वहाँ जाऊँ या नहीं।

संकुचित हाथ से–कंजूसी से।

संख बजाना–१ रोना। उ० क्या बेकार में संख बजा रहे हो? २. पूजा करना। उ० पुजारी संख बजा कर चला गया।

संख-मख–ठीक, वैसा ही, एक ही तरह का। उ० मेरा ... संख-मख वैसा ही है।

संग डोलना–साथ-साथ घूमना।

संगत करना–१ साथ में रहना। उ० बुरों को छोड़ कर भले लोगों की संगत करो। २. साधुओं की मंडली में होना। ३ खिलाना, साधुओं को खिलाना।

संगदिल होना–कठोर होना। उ० वह तो बड़ा संगदिल है, उससे क्या कहूँ?

संग लगना–पीछे पड़ना। साथ जाना। उ० क्या संग लगे हो, मुझे जाने न दो।

संग लगाना–साथ भेजना। उ० मैंने उसके संग बच्चे को लगा दिया।

संग लेना–साथ ले लेना। उ० मैं अपने संग ले लेता, पर साइकिल में हवा नहीं है।

संग सोना–सहवास या समागम करना। उ० संग सोई तो फिर लाज क्या?

संगीन के बल पर–शस्त्र का भय दिखा कर।

संझवत देना–दे० 'संझा-बत्ती करना'।

संझा फूलना–शाम होना। उ० संझा फूली, तुम नहिं आए, पछी गीत सुनाए।

संजीवनी बूटी–प्राणदान देने वाली जड़ी।

संझा-बत्ती करना–शाम को दीपक जलाना। उ० क्या बैठे हो, जरा संझा-बत्ती तो कर दो, अँधेरा हो गया।

संठ के संठ रह जाना–जड़, मूर्ख रह जाना।

संदेह की हवा बहना–...

संबंध टूटना–सबध न रहना ।

ससार की हवा खाना–सासारिक व्यवहार मे अनुभव प्राप्त करना । उ० चलो-चलो, ८० वर्ष से ससार की हवा खा रहा हूँ, तो अब तुम सिखाने चले हो ।

ससार की हवा लगना–१ सासारिक रग चढ जाना, व्यवहार मे चतुर हो जाना । उ० तुमहूँ लागी जगत गुरु जगनायक जग वायु । तुम्हे भी ससार की हवा लग गई क्या ? २ छली या धूर्त होना । उ० उसे भी ससार की हवा लग रही है ।

ससार त्यागना–१. सन्यासी होना । उ० अब कौन है, जो ससार त्यागे ? २ मर जाना । उ० एक दिन सभी को ससार त्यागना है ।

ससार मे पदार्पण करना–१ जन्म लेना । २ कर्मक्षेत्र मे प्रवेश करना ।

ससार से आवदाना उठना–मर जाना । उ० वडी जल्दी उसका ससार से आवदाना उठ गया ।

ससार से उठना–१ मर जाना । उ० आज वह ससार से उठ गया । २ खतम होना, वीत जाना । उ० सती-प्रथा ससार से उठ गई ।

संसार से चले जाना–मर जाना ।

ससार से ऊपर उठना–असाधारण होना ।

ससार से नाता तोडना–१ वैरागी होना । सन्यासी होना । उ० वह तो ससार से नाता तोड कर जगलो मे रहता है । २ मर जाना ।

ससार से नाता त्यागना–दे० 'ससार से नाता तोडना' ।

ससारी होना–गृहस्थ वनना । उ० प्राचीन काल मे २५ वर्ष के वाद लोग ससारी होते थे ।

सस्था खोलना–सस्था प्रारम्भ करना ।

सकता पड़ना–पिंगल मे विराम भग होना । उ० सतो के पदों मे प्राय सकता पडता है ।

सकुन डालना–शगुन विचारना । उ० सकुन डालो तो कि वह आयेगा या नही ।

सखुन डालना या डाल देना–माँगना, याचना करना । उ० तुम भी सखुन डालो, शायद कुछ मिल जाय ।

सख़ुन देना–प्रण करना, वचन देना । उ० मैं सखुन देता हूँ कि समय पर तुम्हे रुपया अवश्य दूंगा ।

सख्त-सुस्त कहना–भला-बुरा कहना ।

सख्ती करना–निर्दयता का वर्ताव करना । उ० वह अपने अधीनो पर वडी सख्ती करता है ।

सगाई करना–१ शादी करना । उ० तुमने सगाई वडे मेल से की है । २ दोस्ती करना । उ० क्यो उससे सगाई करते हो, वह वड़ा छली है ।

सचमुच–१ असल मे । उ० सचमुच, वह वडा दिलेर आदमी है । २ क्या सचमुच, क्या असल मे । उ० सचमुच वह कवि है या तुम वनाते हो ?

सजीव वर्णन–ऐसा वर्णन, जो हू-वहू और प्रभावपूर्ण हो ।

सटक्का मारना–१ शीघ्रता से जाना । उ० सटक्का मार कर चले जाओ, देर न करो । २ वहुत सटर-सटर वात करना । उ० क्या सटक्का मारते हो, कुछ तो काम करो ।

सटपटाते फिरना–परीशानी मे घूमना । उ० आज वडे सटपटाते फिरते रहे हो, क्या वात है ।

सटर-पटर लगाना–१. पटरी वैठाना । उ० आजकल तुम सेठ से वडा सटर-पटर लगा रहे हो । २ साधारण काम करना । उ० वेकार था, सोचा कुछ सटर-पटर ही लगा लूँ । ३ झझट फैलाना । उ० तुम तो व्यर्थ का सटर-पटर लगाते हो । ४ सवध कायम करना ।

सट्टा-वट्टा लगाना–काम के लिए साधन जुटाना । उ० तुम तो वडी जल्दी सट्टा लगा लेते हो, काम होते देर ही नही लगती ।

सट्टी मचाना–शोर-गुल करना । उ० क्या व्यर्थ के लिए सट्टी मचाये हो ?

सट्टी लगाना–१ चीजें विखेर कर रखना । उ० तुमने तो कमरे मे सट्टी लगा दी है, जरा करीने से रखो । २ विक्री के लिए जगह की तरकारी आदि की दूकानो का खुलना । उ० इस इतवार को सट्टी लगेगी ।

सठिया जाना–वुद्धि मन्द हो जाना । शाब्दिक अर्थ–साठ वर्ष से ऊपर का होना ।

सड़क काटना–चौडा रास्ता तैयार करना । उ० इधर से सडक काट दो तो अच्छा रहेगा ।

सड़क की धूल समेटना–सारहीन को महत्त्व देना ।

सड़क नापना—बेकार घूमना । उ० इसे कोई काम नही मिलता क्या, जो सारे दिन सडक, नापता रहता है ।

सड़क निकालना—दे० 'सडक काटना' ।

सडा करना—दु ख, कष्ट पाते रहना ।

सत छोड़ना—१ सत्य से डिगना । उ० मर जाओ, पर सत न छोडो । २ हिम्मत छोडना । उ० उसने डर कर सत छोड दिया ।

सत निकल जाना—१ ताकत न रहना । २ असलियत का निकल जाना । ३ थक जाना । ४ हार जाना ।

सत पर चढ़ना—१ सती होना । उ० सत पर चढने की प्रथा अब नही रही । २ सत्य के पीछे अपना बलिदान करना या कष्ट सहना । उ० सत पर चढने वाले तो हरिश्चद्र ही थे ।

सत पर रहना—१ पतिभक्त होना । उ० पुराणो मे सत पर रहने की कथाएँ मिलती हैं । २ अपने वचन पर रहना । उ० मैं सत पर रहने वाला आदमी हूँ, डरो नही । सत्य पर रहना, झूठ न बोलना । उ० साधु को सत पर रहना ही उचित है ।

सतर करना—बेइज्जती करना । उ० भरी सभा मे उसकी सतर की गई ।

सत हार जाना—१ हिम्मत हार जाना । २ बूढा हो जाना ।

सतरा-बहतरा होना—१ ७०-७२ वर्ष का होना । २ मस्तिष्क का सतुलन ठीक न रहना ।

सतीत्व बिगाड़ना—स्त्री की इज्जत लूटना । उ० आतताइयो ने साम्प्रदायिक दगे मे अनेक का सतीत्व बिगाड़ दिया ।

सती होना—१. दे० 'सत पर चढना' । २ काम के लिए मर मिटना । उ० लोहार का बैल कुम्हार लेकर सती होवे । मैं तुम्हारे लिए क्यो सती होऊँ ? ३ पति के साथ जीवित स्त्री का चिता मे जलना । उ० वह सती हो गई । ४. बहुत कष्ट सहना । उ० वह अपने पुत्र के लिए सती हो रही है ।

सत्कार करना—१ मार-पीट देना । उ० कुत्ते का अच्छा सत्कार कर दिया, अब वह कभी न आयेगा । २ सम्मान करना । उ० वह अतिथियो का सत्कार करता है ।

सत्त खो देना—जबर्दस्ती समागम करना ।

सत्त बांधना—सत पर स्थिर रहना ।

सत्तर चूहे खाये होना—हर तरह का कर्म किये होना । भले-बुरे अनेक कर्म किये होना ।

सत्ता चलना—कब्ज़ा होना । उ० शताब्दियो तक अग्रेजी सत्ता चलती रही, पर अब छुटकारा मिल गया ।

सत्ता चलाना—अधिकार जताना । रौब गाँठना । उ० इन गरीबो पर क्या सत्ता चलाते हो ?

सत्तू घोलना—बेकार बहस करना । उ० क्या सत्तू घोल रखा है, मतलब की बात कह कर झगडा काटो ।

सत्तू चाटना—दाँत टूट जाने के बाद कुछ खा न सकना । बुढापा आ जाना । उ० अभी से सत्तू चाटने लगे हो तो बुढापे मे क्या करोगे ?

सत्तू-बांध के खोजना—अच्छी तरह कमर कस कर या तैयारी करके किसी चीज या व्यक्ति की तलाश करना । उ० अब की बार सत्तू बाँध के खोजने निकलूंगा, देखें तो कैसे नही मिलती है ।

सत्तू बांध के पीछे पड़ना—बुरी तरह पीछे पड़ना, पूरी तैयारी से पीछे पडना । उ० वह तो तुम्हारे पीछे सत्तू बांध के पड़ा है । मुझे उम्मीद नही है कि आसानी से तुम बच सकोगे ।

सत्तू-सीधा बांध कर पीछे पड़ना—किसी कार्य के करने के लिए पूर्णत तैयार हो जाना, दिल से कार्य मे लग जाना । उ० वह तो पुत्री की शादी के पीछे सत्तू-सीधा बाँध कर पड गया है ।

सत्य छोड़ना—दे० 'सत छोडना' ।

सत्य डिगना—१ धर्म से बिचलना । उ० सब कुछ खो देने पर भी उसका सत्य न डिगा । २ बेईमानी आना । उ० कितना भी [illegible] दिखाओ, उसका सत्य नही डिगेगा ।

सत्य पर रहना—अपने धर्म पर अटल रहना । उ० हरिश्चद्र सब दे देने पर भी सत्य पर रहे ।

सत्यानाश करना—बरबाद करना । उ० गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर का सत्यानाश कर दिया ।

सथराव करना—दे० 'सथराव डालना' ।

सथराव डालना—मार कर बिछा देना, मुर्दों का ढेर लगा देना ।

सथराव पड़ना—मुर्दों का बिछौना बिछ जाना ।

सथराव होना—दे० 'सथराव पड़ना'।

सदके जाना—बलि जाना। बलैया लेना। उ० गोपियाँ श्याम के सदके जाती थीं।

सदमा उठाना—१ शोक सहना। उ० इस साल तो उस बेचारी ने पुत्र-मृत्यु का सदमा उठाया। २ आफत मे फँसना। उ० परोपकारियो को दूसरो के लिए सदमे उठाने पड़ते हैं।

सदमा पहुँचाना—१. शोक देना। उ० इस समाचार ने उसे बडा सदमा पहुँचाया। २ कष्ट देना। उ० उसे सदमा न पहुँचाओ, वह तो स्वय विपत्ति का मारा है।

सदर दरवाज़ा होना—प्रमुख साधन या तरीका होना।

सदा देना—भिक्षा माँगना। उ० देखो द्वार पर कोई सदा दे रहा है, कुछ दे दो।

सदा लगाना—दे० 'सदा देना'।

सनक सवार होना—धुन चढना, किसी काम के लिए धुन सवार होना। उ० उसे तो व्यापार करने की सनक सवार हो गई है।

सनसना जाना—डर जाना, सन्न हो जाना। उ० रात मे उस मुर्दे का ख्याल करके मैं सनसना गया।

सन से निकल जाना—सनसनाते हुए जल्दी से निकल जाना। उ० जहाज़ आया और सन से निकल गया। गोली सन से निकल गई।

सन से होना—आश्चर्य मे पड जाना। उ० उसके मरने का समाचार पाते ही सब लोग सन से हो गए।

सन हो जाना—१ डर के मारे ठक रह जाना। उ० मैं तो रात को पेड देख कर भूत के भ्रम मे सन हो गया। २ घबडाहट मे पड जाना। उ० चारो ओर से शत्रुओ को देख कर मैं सन हो गया। ३ मौन रह जाना। उ० उसके मरने की खबर सुन कर वह सन हो गया।

सनाथ करना—शरण देना, आश्रय देना। सहायक होना। उ० आज बेचारे ने मुझे सनाथ कर दिया।

सना होना—पूरी तरह लिप्त होना।

सनीचर आना—कुसमय आना। आफत आना, बुरे दिन आना, दुर्भाग्य आना। उ० हमारे ऊपर तो सालो से सनीचर आए हैं।

सन्न मार जाना या मारना—सहसा चुप और शात हो जाना। उ० यो तो लोग बहुत बढ-बढ कर बोल रहे थे, पर उसे देखते ही सब सन्न मार गए।

सन्नाटा खींच जाना या खींचना—कुछ न बोलना, चुप हो जाना। उ० जब भी कुछ पूछता हूँ, वह सन्नाटा खीच जाता है।

सन्नाटा बीतना—उदासी मे दिन कटना। उ० सब लोग चले गए, आजकल घर मे सन्नाटा बीत रहा है।

सन्नाटा मारना—दे० 'सन्न मारना'।

सन्नाटे की—डरावनी, सनसनाती हुई। उ० आज तो सन्नाटे की रात थी।

सन्नाटे के साथ—सन करते हुए। उ० गोली सन्नाटे के साथ निकल गई।

सन्नाटे मे आ जाना—आश्चर्य मे पड जाना, हैरान हो जाना। उ० उसके विद्वतापूर्ण भाषण को सुन कर सभी लोग सन्नाटे मे आ गए।

सन्यास लेना—किसी कार्य से विरक्त होना।

सपट्टा मारना—दे० 'सटक्का मारना'।

सपना देखना—कल्पना करना।

सपना-सा होना—मिथ्या होना।

सपना होना—देखने को भी न मिलना। न मयस्सर होना। उ० इन गरीबो को तो दूध-घी सपना है।

सपने मे भी नहीं—कभी नही।

सपने की बात—अयथार्थ बात।

सपर जाना—मर जाना। उ० एक ही लाठी मे सपर गया।

सपाटा भरना—दे० 'सपाटा मारना'।

सपाटा मारना—१ दौड-धूप लगाना। उ० जाने क्यो वह आजकल बडा सपाटा मार रहा है। २ कसरत करना। उ० तुमने तो सपाटा मारना छोड़ दिया। ३ डड करना।

सपाटा लगाना—दे० 'सपाटा मारना'।

सप्तम सोपान पर होना—चरम स्थिति मे होना।

सफर करना—यात्रा करना। उ० तीसरे दर्जे मे सफर करना बड़ा कष्टप्रद है।

सफाई करना या कर देना—१. नेश्त-नाबूद कर देना। उ० तैमूर ने दिल्ली की सफाई कर दी। २ खाकर खतम कर देना। उ० दो ही आदमियो ने सारी मिठाई की सफाई कर दी। ३ जान से मार डालना। उ० हत्यारो ने दो

की सफाई कर दी । ४. समाप्त कर देना । उ० शिकारियो ने चिड़ियो की सफाई कर दी ।

सफ़ाई देना—बिना दोष का सिद्ध करना । उ० सफाई मत दो, मैं सब कुछ जानता हूँ ।

सफाया करना—दे० 'सफ़ाई करना' ।

सफेद को काला करना—भले को बुरा बताना । अच्छे को बुरा बना देना ।

सफेदपोशी—ऊँचे तरीक़े का रहन-सहन ।

सफ़ेद बालों की लाज रखना—बुढापे का सम्मान बनाये रखना ।

सफ़ेद रंग पड़ जाना—१ उदास हो जाना, बिना चमक-दमक के हो जाना । उ० एक ही डाँट मे सफेद रग पड़ गया । २ डर जाना । उ० अभी तो शिकार करने को बड़े उत्सुक हो, जब शेर का दर्शन करोगे तो रग सफेद पड जायगा । ३ किसी बीमारी से ख़ून की कमी होना । उ० इसका रग सफेद पड गया है, कोई दवा करो ।

सफेद या सियाह करना—भला या बुरा करना । उ० मैंने अपने किशवरे दिल का तुम्हें किया मुख़्तार, तुम अब सफेद करो आगे या सियाह करो ।

सफेद हाथी बँधना—खर्च बढने का उपक्रम होना ।

सफेदी आना—वृद्ध होना । उ० अब तो सफ़ेदी आ गई, केवल बच्चो का सहारा है ।

सबकत करना—१. आगे बढना, आगे जाना । २ शुरू करना ।

सबक़ देना—१ उपदेश देना । वह बडा अमूल्य सबक देता है । २ याद करने के लिए पाठ देना । उ० अध्यापक ने हमे यह सबक़ दिया है ।

सबक़ पढ़ाना—१ बहकाना । उ० चलो सबक न पढाओ, मुझे सब पता है । २. सिखाना । उ० अपना सबक़ उसे न पढाओ । ३ पाठ पढाना । उ० आज का सबक पढा दिया गया ।

सबको एक डडे से हाँकना—सबके साथ बराबर बर्ताव करना । उ० न्यायी वही है, जो सबको एक डडे से हाँकता है । राजा के लिए सब को एक डडे से हाँकना ही नीति है ।

सब धान बाइस पसेरी होना—१ सबको एक-सा समझना । २. भिन्न-भिन्न मूल्य की वस्तुओ को एक समझना ।

सब नौबत होना या हो जाना—पूरी दुर्दशा होना । उ० उसी के साथ इनकी सब नौबत हो गई, फिर भी उसका साथ नही छोड रहे हैं ।

सब मिला कर—कुल, संपूर्ण । उ० सब मिला ५० रु० निकले ।

सबील पिलाना—१ मुफ्त पानी पिलाना । २ मुहर्रम के महीने मे मुफ्त मे दूध या शर्बत पिलाना । उ० भर के मश्कें आबलो की अब पिला दीजे सबील, पड गए हैं प्यास से काँटे ज़बाने खार में ।

सब्ज़ क़दम होना—मनहूस और बुरे शकुन वाला होना । उ० वह सब्ज़ है, उसे यहाँ उस दिन न भेजना ।

सब्ज़-बाग़ दिखाना—१ व्यर्थ की आशा देना । उ० तुम्हारा सब्ज़-बाग दिखाना हम खूब जानते हैं, पर करें क्या ? २. चालबाज़ी चलना । उ० सब्ज़-बाग दिखा कर उसने उसका सारा धन ले लिया । ३ हिम्मत बँधाना । उ० यदि तुमने सब्ज़-बाग न दिखाया होता तो मेरा पार न लगता ।

सब्ज़-बाग नज़र आना—आशा होना । उ० उसकी बातो से तो सब्ज़-बाग ही नजर आ रहा है, आगे जो हो ।

सब्ज़ होना—प्रसन्न और फला-फूला होना । उ० सब्ज़ होती ही नही यह सरजमी, तुख्मे ख्वाहिश दिल मे तू बोता है क्या ?

सब्ज़ी पीना—भग पीना । उ० बाज आये रिंद कब अमले ना सवाब से, सब्ज़ी पिएँ जो तोबा करें ये शराब से ।

सब्र कर बैठना—सतोष कर लेना । उ० सब्र किए बैठे रहो, ईश्वर अच्छा ही करेगा ।

सब्र पड़ जाना या पडना—शाप पडना । उ० ग़रीबो को न सताओ, उनका सब्र बडा जल्दी पडता है ।

सब्र समेटना—करुण पुकार का शाप लेना । उ० निरपराधो को सता कर उनका सब्र न समेटो ।

समझ के पीछे लाठी लिए घूमना—नासमझी करना, बेवकूफी की बातें करना ।

समझ पर पत्थर पडना—दे० 'अक्ल पर पत्थर पडना' ।

समझ लेना—बदला देना या लेना । उ० वक्त पड़ने पर मैं भी समझ लूँगा ।

समझ से ऊँची बात–ऐसी बात जो बुद्धि मे न आती हो।

समझाना-बुझाना–१ चिरौरी-मिन्नत करना। उ० समझा-बुझा कर उसे रास्ते पर लाओ। २ समझाना, बतलाना। उ० मैंने बहुत समझाया-बुझाया, पर उसे कुछ जँचता ही नही है।

समय आ जाना–मृत्यु निकट होना।

समय का पलटा खाना–१ स्थिति मे परिवर्तन होना। २ मौसम बदलना।

समर रोपना–लडाई खडी करना। उ० समर रोप कर भगत हैं कायर और कपूत, समर रोप कर लरत हैं मानी, सिंह, सपूत।

समर-सेज पर सोना–युद्ध में मृत्यु को प्राप्त होना।

समस्या सुलझाना–विपत्ति या कठिनाई दूर करना। हल निकालना। उ० गरीबो की समस्या सुलझाने वाला कोई भी दिखाई नहीं पडता।

समाँ बँधना–१. गुण-विशेष से एकाग्रचित्तता होना। २ सौंदर्य या रौनक बढना।

समाँ बाँधना–सगीत, नृत्य या भाषण आदि का इतनी उत्तमता से करना कि सुनने वाले स्तब्ध हो जायँ। उ० भोजपुरी नाटक के रचयिता भिखारी ठाकुर जब स्टेज पर खडे होते थे, तो समाँ बाँध देते थे।

समाँ पाना–फुरसत पाना। उ० जब समाँ पाऊँगा तो उससे भेंट करूँगा।

समाई रखना–१ सह जाना। २ क्षमता होना।

समुद्र-पार उतारना–१ काले पानी की सजा देना। उ० समुद्र-पार उतारने की सजा अब समाप्त हो गई है। २ बहुत कड़ी सजा देना।

सम्हल कर बोलना–मर्यादा मे रह कर बात करना।

सम्हल-सम्हल कर पैर रखना–बडी सावधानी से काम करना या आगे बढना।

सरजाम करना–सरो-सामान की तैयारी करना। उ० उत्सव का सरजाम कर दिया, क्योंकि जा रहे हो?

सर-आँखो पर होना–१ मजूर होना। उ० आपका हुक्म सर-आँखो पर है। २ किसी के स्वागत करने को तैयार होना। किसी की इज्ज़त बख्शना। उ० आप मेरे सर-आँखो पर हैं।

सर करना–१ गोली छोडना। उ० अत मे पुलिस ने सर करना शुरू किया। २. विजय कर लेना। उ० भारत की हाकी टीम ने सभी को सर कर लिया।

सरकशी करना–आज्ञा का उल्लंघन करना। अधिकार से निकलना। उ० अलाउद्दीन के वृद्ध होते ही सारे जागीरदार सरकशी करने लगे।

सरका कूटना–हस्तमैथुन करना।

सरकार की मेहमानी खाना–जेल की सजा भुगतना।

सरता-परता करना–मिला-जुला कर औसत निकालना। उ० यो तो नुक्सान ही दिखाई दे रहा है, सरता-परता करने पर शायद कुछ मिले तो मिले।

सरता-परता बराबर करना–१ नफा-नुक्सान बराबर करना। २. चौपट करना।

सरदार होना–श्रेष्ठ होना।

सरनाम करना–मशहूर करना। उ० गामा के बल ने उन्हें सरनाम कर दिया।

सरनाम होना–मशहूर होना। उ० अहिंसा के कारण गांधीजी ससार मे सरनाम हो गए।

सरपट जाना–दे० 'सरपट दौडना'।

सरपट दौड़ना–बहुत तेज दौड़ना। उ० हमारा घोडा सदा सरपट दौडता है।

सरपट फेंकना–दे० 'सरपट दौडना'।

सर पर सवार रहना–हर घडी सामने मौजूद रहना। उ० २४ घटे नौकरो के सर पर सवार रहता है, साँस तक नहीं लेने देता।

सरफराज करना–वेश्या के साथ प्रथम समागम करना। [बाजारू भाषा मे यह प्रयोग किया जाता है। इसे नथुनी उतारना भी कहते हैं।]

सरसरी तौर पर नजर डालना–बहुत ध्यान से न देखना, यो ही देखना।

सरसों फूलना–दे० 'आँखो मे सरसो फूलना'।

सराय का कुत्ता होना–स्वार्थी मित्र होना। उ० सराय के कुत्ते तो बहुत मिलते हैं, कोई सच्चा भी तो मिले।

सराय की भटियारी—वेश्या तथा झगडालू स्त्री। उ० वह तो सराय की भटियारी है भला उससे कौन बोले ?

सराय होना—अस्थायी ठहराव या निवास-स्थान होना। उ० यह दुनिया सराय है, जो यह समझते हैं, वे उचित रास्ते पर चलते है और जो नही समझते, वे गुमराह होते हैं। यह दुनिया दुरगी है ऊँची सराय कही वाहवाही, कही हाय-हाय !

सरे आम—दे० 'खुले आम'। उ० तुमने तो उसे सरे आम वेइज्जत कर दिया।

सर्द खाना—जाड़ा लगना। उ० आज रात मैं वहाँ सर्द खा गया। कही बुखार न आये।

सर्द-गर्म कहना—भला-बुरा कहना।

सर्द-गर्म मौसम—अच्छा-बुरा समय।

सर्द हो जाना—१ डर से चुपचाप हो जाना। उ० उन्हे देखते ही वह सर्द हो गया। २ मर जाना। उ० वह तो कडाके के जाड़े मे सडक पर ही सर्द हो गया।

सर्दी खाना—ठडक लगना।

सर्दी चढना—जाडा देकर ज्वर आना। उ० क्वार मे प्राय सर्दी चढती है।

सर्दी पड़ना—ठडक पड़ना। उ० कई दिन से खूब सर्दी पड रही है।

सर्दी लगना—ठडक लगना। उ० उन्हे सर्दी लग गई है, कोई दवा दे दो।

सर्राफ़ के से टके—वह सौदा जिसमे हानि न हो। उ० सर्राफ के से टके चाहते हो तो वह मजा व्यापार में कहाँ है ?

सर्वस्व जाता देख कर आधा छोड़ देना—वडे नुक़सान को बचाने के लिए थोडा नुकसान सहना।

सलाई फेरना—अधा करना। उ० ज्यादा वकोगे तो आँखो पर सलाई फेर दूँगा।

सलाम करके चल देना—रज होकर चला जाना। उ० थोडी-सी बात मे ही वे सलामकर के चल दिए।

सलामती से—सकुशल। उ० ईश्वर करे वह सलामती से पहुँच जावे।

सलाम देना—१ नमस्कार कहना। उ० उसने आपको सलाम दिया है। २. दे० 'सलाम बोलना'।

सलाम फेरना—१ रंज होकर नमस्ते या सलाम भी स्वीकार न करना। उ० जाने क्यो उसने मेरा सलाम भी फेर दिया। २ नमाज पढना। उ० मुसलमान पाँच बार सलाम फेरते हैं।

सलाम बोलना—बुलाना [इस अर्थ मे सलाम बोलने का प्रयोग आफिसो मे होता है।] उ० १ अफसर ने चपरासी से कहा कि टाइप बाबू को सलाम बोलो। २. बडे साहब आपको सलाम बोलते हैं।

सलाम लेना—नमस्ते स्वीकार करना। उ० मेरा भी सलाम लीजिए।

सलामी उतारना—प्रतिष्ठा मे तोपो की सलामी देना। उ० नेहरू को अमेरिका मे २१ तोपो की सलामी उतारी गई थी।

सलाह ठहराना—निश्चित राय करना। उ० आखिर क्या सलाह ठहराई गई ?

सल्तनत खूब बैठना—अच्छा प्रबन्ध होना। उ० अकबर की सल्तनत खूब बैठी थी।

सवा बीस होना—वहुत ठीक होना।

सवारी लेना—सवारी के लिए प्रयोग करना। उ० मैं तो घोडे की भी सवारी लेता हूँ और हाथी की भी।

सवाल-जवाब करना—दे० 'जवाब-सवाल करना'।

सवाल देना—१ कचहरी मे नालिश करना। उ० मैंने सवाल नही दिया, उसे क्षमा कर दिया। २ माँग पश करना। उ० मैंने दो सवाल दिए हैं, देखे बडे सरकार क्या करते हैं ?

सवाल हल करना—दे० 'समस्या हल करना'।

सवालो की झड़ी लगा देना—एक के बाद एक प्रश्न पूछे जाना।

सवा सोलह आना—पूर्णत, विना किसी कमी के।

ससरी अटकना—प्राण कठ तक आना। उ० मेरी तो ससरी अटकी है और तुम्हे मजाक सूझ रहा है।

ससुराल की राई पहाड़ लगना—ससुराल की छोटी बात भी बडी लगना।

सस्ता लगना—मूल्य मे कमी होना। उ० आज तो तरकारी सस्ती लगी है।

सस्ते छूटना—१ सरलता से मुश्किल काम का बन जाना। २ कम दाम मे अधिक दाम वाले काम का हो जाना। उ० दस देकर सस्ते ही छूट गए, नही तो सैंकडो देने पडते।

सहस्रमुख से भी वर्णन न कर पाना—अवर्णनीय होना।

सहम चढ़ना—१ लज्जा होना। उ० किसी को देख कर भी तुम्हे सहम नही चढती है? २ डर होना। उ० उस साधू को देख कर लडके पर ऐसी सहम चढी कि वाहर ही नही निकलता।

सहसवाहु होना—वहुत वहादुर होना। उ० आप सहसवाहु हैं तो अपने घर के लिए, यहाँ आपकी एक भी न चलेगी।

सहारा ढूँढ़ना—शरणदाता की तलाश करना। उ० कहाँ सहारा ढूँढते हो, वस ईश्वर को ही अपना समझो।

सहारा देना—१ मदद करना। उ० तुमने उसे वडा सहारा दिया। २ आशा देना। उ० जव सहारा दे चुके हो तो पूरा करो। ३ रोकना। उ० क्यो सहारा देते हो, जाने दो।

सहारा पाना—१ वढावा पाना। उ० वैल सहारा पाते ही गाडी खीच ले गया। २ रुपये की मदद पाना। उ० वह सरकार की ओर से सहारा पाता है।

सहारे की लकड़ी—सहायक।

सही जान पडना—उचित जँचना। उ० उसकी वातें तो मुझे सही जान पडती हैं।

सही पडना—ठीक उतरना। उ० तुम जो कहते हो, वह सही पडता है।

सही भरना—स्वीकार कर लेना। उ० समझ-बूझ कर तो सही भरा करो, नही तो एक दिन धोखा खाओगे।

सही-सलामत—दे० 'सलामतो से'।

साँई के सौ खेत होना—वहुत उपाय होना।

साँच को आँच न होना—सच्चे व ईमानदार व्यक्ति के लिए कोई भय न होना।

साँचे मे ढलना—वहुत खूवसूरत उतरना, अत्यन्त सुन्दर होना। उ० यहाँ एक विचित्र कलाकार आया है। मूर्ति तो साँचे मे ढली वनाता है।

साँचे मे ढला होना—अति सुन्दर स्वरूप का होना। उ० लडका क्या है, साँचे मे ढला है।

साँचे मे ढालना—वहुत खूवसूरत वनाना। उ० खिलौने क्या वनाता है, साँचे में ढाल देता है।

साँझ पड़ना—सध्या होना।

साँठ-गाँठ करना—१ दलाली करना। उ० उसने तो साँठ-गाँठ करके व्यापारी को घाटा दिलवा दिया। २ किसी काम के लिए गुप्ततः किसी से समझौता करना।

साँठ-गाँठ होना—किसी काम के लिए विना किसी को वताए किसी से समझौता होना।

साँड की तरह घूमना—निश्चित होकर घूमना। उ० कोई काम नही है क्या, कि साँड की तरह घूमते हो?

साँड की तरह डकारना—ऊँची आवाज से वोलना। उ० ज़रा धीरे से वोलो, क्यो साँड की तरह डकार रहे हो?

साँधा मारना—दो रस्सियो आदि मे गाँठ लगाकर जोडना। उ० अच्छी तरह साँधा मारना, कही वीच से खुल न जाय।

साँप का पैर पेट मे होना—वुरे आदमी की वुराई या उसकी कटुता भीतर रहना, उसका किसी के द्वारा जल्दी पता न चलना। उ० उसे तुम सीधा समझते हो, वह परले नम्वर का टेढा है। जानते हो साँप के पैर पेट मे होते हैं, तुम्हें उसकी वुराई ऊपर से दिखाई नही पड सकती।

साँप का सूँघ जाना या सूँघना—साँप का काटना। उ० उसे साँप ने सूँघ लिया। उसे साँप सूँघ गया है।

साँप की चाल चलना—टेढे या वक्र होकर चलना। उ० वह साँप की चाल चलना है। ऐसे से होशियार रहना चाहिए।

साँप की तरह केंचुली झाड़ना—१ पुराना वस्त्र छोड कर नया धारण करना। उ० होली मे सभी साँप की तरह केंचुली झाड़ते हैं। २ रूप वदलना। उ० तुम तो हर वक्त साँप की तरह केंचुली झाडते रहते हो।

साँप की पूँछ झडना—मौत का समय आना। उ० मैं जानता हूँ कि साँप की पूँछ झड गई है और मुझे अवश्य ही कुछ करना पडेगा।

साँप की लहर—साँप के काटने पर तकलीफ़ या ज़हर के जोश का दौरा । उ० गेहुँए साँप की लहर खूब आती है ।

साँप की-सी केंचुली झाडना—निखरना, रग आना । साफ-सुथरा होना । उ० आप तो साँप की-सी केंचुली झाड रहे हैं ।

साँप के बिल मे हाथ डालना—जान-बूझ कर खतरे और नुकसान मे पडना ।

साँप के मुंह की छछूंदर होना—दोनो ओर से अनिष्टकारी स्थिति होना ।

साँप के मुंह में उंगली डालना—जान का खतरा मोल लेना ।

साँप के मुंह मे पड़ना—खतरे मे पडना । उ० मैं तो वहाँ जाकर साँप के मुँह में पड गया था ।

साँप के साँप पांव होना—बुरो की बुरी सोहबत होना ।

साँप के साथ खेलना—१ भयकर कार्य करना । २ जान-बूझ कर भयानक काम करना ।

साँप को दूध पिलाना—शत्रु का पालन-पोषण करना । उ० तुम उससे घर का-सा वर्ताव करते हो, यह नहीं जानते कि साँप को दूध पिला रहे हो ।

साँप खेलाना—१. खतरनाक चीज़ से खेलना । उ० जान-बूझ कर साँप खेलाने से क्या लाभ ? २ कष्टप्रद चीज़ या शत्रु को पालना । उ० जब जानते हो कि यह एक दिन तुम्हे हानिकारक होगी तो क्यो साँप को खेला रहे हो ?

साँप-छछूंदर की दशा होना—असमजस या दुविधा मे पडना । उ० यदि नीचे कूदूँ तो मर जाऊँ, न कूदूँ तो पुलिस पकड ले । मेरी तो साँप-छछूंदर की दशा है ।

साँप छाती पर फिरना—बहुत दु ख होना । दिल पर सदमा गुज़रना । उ० छाती पैं उसके क्यो न फिरे साँप कब्र मे, जो हो डँसा हुआ तेरी ज़ुल्फे सियाह का ।

साँप छाती पर लोटना—दिल मे दु ख होना । उ० वह तो ऐसी बात कह गया कि सुनते ही छाती पर साँप लोट गया ।

साँप निकल जाने पर लकीर पीटना—काम या बात हो जाने पर या अवसर बीत जाने पर व्यर्थ प्रयत्न करना ।

साँप मर जाए पर लाठी न टूटना—काम भी बन जाना और हानि भी न होना ।

साँप-सा छाती पर या दिल पर फिरना या लोटना—देखिए ऊपर ।

साँप सूँघ जाना—१ बेजान होना । उ० तुम तो ऐसे पडे हो, जैसे साँप सूँघ गया हो । २ साँप का काट लेना । उ० दिल उसके साया नख़्ल मज़ूह मे ऊँघ गया, निगह का साँप मुसाफिर को आह सूँघ गया ।

साँपा करना—किसी के मरने पर रोना, बिलखना ।

साँपा पड़ना—मातम छाना, कोहराम मचाना । उ० उनके मरने से वहाँ साँपा पडा होगा ।

साँपे जाना—मातमपुरसी करने जाना । उ० उसका भाई मर गया है, ज़रा साँपे जाना है ।

साँय-साँय बात करना—बहुत धीरे बात करना ।

साँस गिनना—मृत्यु की प्रतीक्षा करना ।

साँस अडना—दम अटकना । उ० उनकी साँस अड रही है । उ० क्या आए तुम, जो आए घडी दो घडी के बाद, सीने में होगी साँस अडी दो घडी के बाद ।

साँस उखडना—दमे की बीमारी का दौरा होना । उ० नीचे-ऊपर चढ़ने से उसकी साँस उखड गई ।

साँस उडना—मरणासन्न होना । उ० अब तो उसकी साँस उड रही है ।

साँस उलटी लेना—१. पश्चात्ताप करना । उ० जो होना था, वह हो गया । अब साँस उलटी लेने से क्या फायदा । २ मरने के करीब होना । ३. दमे का उभरना ।

साँस ऊपर-नीचे होना—१ साँस का रुक जाना । उ० वह गिरा और उसकी साँस ऊपर-नीचे होने लगी, मेरी तो तबियत घबडा गई । २ तबियत घबरा जाना । उ० भाई य[illegible] बात सुन कर तो मेरी साँ[illegible] ऊपर नीचे [illegible] है ।

साँस खींचना—१ दम रोकना । उ० साँस खीच कर उठाओ तो उठेगा । २. साँस लेना । उ० लडका साँस जल्दी-जल्दी खीच रहा है । ३ दु खी होना । उ० क्यो साँस खीच रहे हो ? सब ठीक हो जायगा ।

सांस चढ़ जाना या चढ़ना—१. दे० 'सांस उखड़ना'। २. दे० 'सांस उठना'। ३. थकावट आ जाना। उ० उसकी सांस तो बड़ी जल्दी चढ़ जाती है।

सांस चढ़ना—अफसोस होना। उ० इम्तहान की सांस अभी से चढ़ी है।

सांस चढ़ाना—दे० 'श्वास चढ़ाना'।

सांस छूटना—दे० 'श्वास छूटना'।

सांस जहां की तहां रह जाना—दे० 'नीचे की सांस नीचे और ऊपर की सांस ऊपर रह जाना'।

सांस टूट-टूट जाना—रुक-रुक कर सांस आना, मृत्यु के स्पष्ट लक्षण दिखाई देना। उ० सांस कैसे न टूट जाती तब, सांस जब टूट-टूट जाती हैं।

सांस तक न लेना—बिलकुल न बोलना। नम्र हो जाना। उ० वह इतना बक गया, परन्तु तुमने सांस तक न ली।

सांसत का छकड़ा—बहुत बड़ी मुसीबत।

सांस नहों में बसना—बहुत डर लगना।

सांस रहते—जीवन भर। उ० सांस रहते राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता न मानी।

सांस रोक कर—पूरी एकाग्रता से, बिना किसी प्रतिवाद के।

सांस लेना—काम के बीच में आराम करना। उ० सांस लेने की फुरसत नहीं है और तुम आने को कहते हो।

सांस लेने की जगह न होना—बहुत भीड़ होना।

सांसा पड़ना—विपत्ति या आफत का सुबहा होना। उ० सांसा पड़ने के कारण मैं बहुत चिंतित हूं।

साई देना—एडवांस, अग्रिम या बयाना देना। उ० बाजे वाले को साई दे दी।

साई बजाना—जो साई (पेशगी) दे, उसके यहाँ बाजा बजाना। उ० परसों उनके यहाँ साई बजानी है।

साए से भागना—१ नजदीक न आना। उ० वह तो मेरे साए से भी भागता है। २ घृणा करना। ३ डरना।

साका चलना—व्यापार आदि में विश्वास जमना। उ० उसका तो खूब साका चलता है।

साका बांधना—१ रोब या धाक जमाना। उ० उसने तो इन अनपढ़ों पर अच्छा साका बांधा है। २ विश्वास जमाना। उ० साका बांध कर बिना रुपये के भी व्यापार चल सकता है।

साख उठ जाना—पुराना विश्वास न रहना, प्रतिष्ठा नष्ट होना।

साखी पुकारना—गवाही देना, साक्षी देना। उ० मैं अग्नि को साखी पुकारता हूं, मैंने इस काम को नहीं किया।

साग पात समझना—दे० 'गाजर मूली समझना'।

साज छेड़ना—बजाना प्रारम्भ करना। उ० साज छेड़ो, क्या मुंह छिपाए बैठे हो?

साज-बाज करना—१ गड़बड़ी करना, षड्यन्त्र करना। २ मेल-मिलाप करना।

साज-बाज करना—शृङ्गार करना।

साझे की खेती—साझे का काम।

साझे की सुई का ठेले पर लदना—साझे में या पंचायती काम का गैर जिम्मेदारी से होना।

साठे पर पाठे होना—बुढ़ापे में भी पूरी शक्ति रहना।

साढ़े साती आना—१. साढ़े सात वर्ष की शनीचर ग्रह का आना। २ बुरे दिन आना।

सात कोठरी में छिपा कर रखना—गुप्त से गुप्त जगह में छिपाना।

सात घाटों का पानी पीना—सांसारिक व्यवहार में बहुत अनुभवी होना। उ० इसे क्या सिखाते हो, यह तो सात घाटों का पानी पी चुका है।

सात-चौदह की सैर कराना—जेल की हवा खिलाना।

सात जनम में—कभी भी, कितना भी समय बीतने पर। उ० यही दिमाग रहा तो आप सात जनम में भी नहीं पढ़ सकते।

सात तालों के अन्दर रखना—सुरक्षित रखना। उ० वह अपनी चीजें सात तालों के अन्दर रखता है, कोई नहीं पा सकता।

सात धार होकर निकलना—१ पाखाने से पतला होकर बह जाना। २ न पचना। उ० इन

ग़रीबो के खन की कमाई खाते हो, देखना सात धार होकर निकलेगी।

सात परदे मे रखना—बहुत हिफाजत से सँभाल कर रखना। उ० जो होनहार होगी, वह होकर रहेगी, तुम भले ही उसे सात परदे मे रखो।

सात-पाँच—१ धूर्तता, चालाकी। उ० मैं तो भाई सात-पाँच नही जानता हूँ। २ अनेक। उ० यहाँ सात-पाँच आदमी हैं, किसको-किसको खिलाओगे। ३. कुछ। उ० सात-पाँच आदमियो मे भाषण क्या होगा?

सात-पाँच करना—१ धोखेबाजी करना। उ० सात-पाँच करके सारा माल हड़प लिया। २ सवाल-जवाब करना। ३ शुबहा करना। उ० आदमी विश्वास पात्र है, सात-पाँच न करो। ४ बहकाना। उ० सात-पाँच न करो सही-सही बता दो।

सात वार नौ त्यौहार होना—रोज़ ही उत्सव-त्यौहार लगा रहना।

सातवें आसमान पर पर मारना—बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करना।

सात समुन्दर पार करना—१ बहुत दूर जाना। २ अत्यन्त कठिन काम करना।

सातों द्वीप मे खोजना—सब जगह खोजना।

सातो भूल जाना—अपने मे न रहना, होश-हवास भूल जाना। उ० शेर को देखते ही सातो भूल गए।

साथ देना—१ सग चलना। उ० कुछ दूर तक तो मेरा साथ दो। २ मदद करना। उ० तुमने मेरा साथ नही ही दिया, इसका ख्याल रखना।

साथ पुरवना—साथ देना। उ० सच्ची बताओ, हमारा साथ पुरओगे या नही।

साथ लगा जाना—दे० 'साथ लगा फिरना'।

साथ लगा फिरना—पीछे पीछे फिरना, दुम के पीछे फिरना। उ० उसके नजदीक तो मैं उससे जुदा जाता हूँ, लेके साए की तरह साथ लगा जाता हूँ।

साथ लेना—साथ मे या सग मे ले लेना। उ० अँधेरी रात है, किसी को साथ ले लो।

साथ सोकर मुँह छिपाना—घनिष्ठ होकर भी रहस्य न बताना। उ० तुम तो ऐसे आदमी हो कि साथ सोकर भी मुँह छिपाते हो।

साथ हो लेना—पीछे हो लेना, सग मे जाना। उ० तुम भी साथ हो लेना, नही तो रास्ते में डर जायगी।

साध पुरवना—दे० 'साध बुताना'।

साध बुताना—हौसला पूरा करना। उ० इस गरीबी मे सिनेमा देखने को पैसे तो नही हैं, पर साध बुताने के लिए कभी न कभी जाना ही पडता है।

सान चटाना—दे० 'सान चढाना'। उ० चाकू को सान चटा दो।

सान चढ़ाना—सान के ज़रिए किसी हथियार आदि पर धार रखना या उसे तेज करना। उ० कत्ल को किसके चढा ली तेग तूने सान पर, उतरे हैं आँखो मे जख्मों के मेरे खं देख कर।

सान देना—१ शान धरना। एक विशेष प्रकार के पत्थर पर तेज़ करना। उ० चाकू पर सान दे दो। २ मिला देना। उ० उसने मुझे भी झगडे मे सान दिया। ३ किसी द्रव पदार्थ मे मीसना या माँडना। उ० आँटा सान दो।

सान पर चढना—१ शान दिया जाना। विशिष्ट पत्थर पर तेज किया जाना। उ० अभी कैंची सान पर चढेगी। २. निखरना। उ० अपनी कला को अभी और सान पर चढने दो।

सान रखना—दे० 'सान चढाना'।

सान लगाना—दे० 'सान चढाना'।

साफ आसमान देखना—विषय की ठीक-ठीक जानकारी करना।

साफ उड जाना—१ हाथ न लगना। उ० चिड़िया साफ उड गई। २. तुरन्त कट जाना। उ० उसका हाथ मशीन मे पडते ही साफ उड गया।

साफ उडा जाना—स्पष्ट इन्कार कर देना। उ० हमारी वात तो वह साफ उडा गया।

साफ उडा लेना—१ चुपचाप ऐसे ले जाना कि कोई न जाने। उ० उसने तो लड़की को साफ उडा लिया। २ चुपके से ले लेना। उ० उसने तुम्हारा रुपया साफ उडा लिया।

साफ करना या कर देना—१ मार डालना। उ० उसने अनेक को साफ कर दिया। २ नष्ट करना। उ० टिड्डियों ने तो खेती साफ कर दी। ३ खाकर चुका देना। उ० तुमने

अकेले सब खाना साफ कर दिया। ४ खतम कर देना, उडा देना।

साफ कान खोल देना–होशियार कर देना। उ० मैंने तुम्हारा कान साफ खोल दिया, यदि अब कुछ होगा तो मैं नही जानता।

साफ छूट जाना–निर्दोष प्रमाणित होकर बच जाना। उ० उसके ऊपर भी अभियोग था, परन्तु वह साफ छूट गया।

साफ जवाब देना–१ स्पष्ट रूप से इन्कार कर देना। उ० यदि देना हो तो दो, नही तो साफ जवाब दो, सात-पाँच क्यो करते हो? २. दो-टूक उत्तर देना।

साफ-साफ बचना–बाल-बाल बच जाना। उ० झगडे मे वह भी था, परन्तु साफ-साफ बच गया।

साफ-साफ सुनाना–स्पष्ट कहना, खरी-खरी कहना। उ० चाहे आपको बुरी लगे या भली, वह तो साफ-साफ सुनाता है।

साफा देना–खाने को न देना। उ० उसने तो बुला कर साफा दे दिया। अब कभी बुलाएगा तो हर्गिज नही जाऊँगा।

साबका पडना–१ काम पडना। उ० कभी साबका पडे तो देखना कि मैं कैसा आदमी हूँ। २ व्यवहार होना। उ० साबका पडने पर सभी जाने जाते है।

सामना करना–१ मुकाबिला करना। उ० दोनो सेनाओ ने प्लासी मे सामना किया। २ बराबरी करना। उ० चार अक्षर पढ लिया अब बडो का सामना करता है।

सामने आना–१ विरोध मे खडा होना। उ० जरा कोई सामने आये तो बतलाऊँ। २ आमने-सामने होना, चार आँखें होना। उ० समझा है किसे तू गैर बता, अपने न रुखे जेबा को छिपा, परदे को उठा कर सामने आ, तू और नही मैं और नही।

सामने करना–१ आगे लाना। उ० उसे साहब के सामने कर दो, तब छूटेगा। २ कह देना। उ० इस बात को भी सामने कर दो छिपाने से क्या लाभ?

सामने का–१ आँखो-देखा हुआ। उ० मेरे सामने की चीज है, तुम क्या जानो? २ आगे का। उ० मेरे सामने का बच्चा मुझी को पढाता है।

सामने की परोसी थाली छिन जाना–मिली हुई वस्तु का छिन जाना।

सामने की बात–आँखो-देखी बात। उ० जब उसके सामने की बात है तो वह झूठ नही बोल सकता।

सामने दृष्टि करना–मुकाबले से विचलित न होना।

सामने पडना–१ आगे आना। उ० वह तो उस दिन से सामने ही नही पडता है। २ झगडा-फसाद करने लगना। उ० कम से कम माता-पिता के तो सामने न पडा करो।

सामने बोलना–बडो को प्रत्युत्तर देना।

सामने मुंह कर बात न करना–सामने न आना।

सामने होना–शर्म न करना। उ० वह तो मेरे सामने होती है।

सामान करना–तैयारी करना। उ० अब देर न करो, जल्दी सामान करो।

सामान बांधना–सामान तैयार करके प्रस्थान करना, चलने की तैयारी करना। उ० जल्दी सामान बाँध लो, गाडी का समय हो गया है।

सामान मे आना–आपे मे आना, होश मे आना। उ० जरा सामान मे आइए, कुछ पता है किससे बातें कर रहे है

साया डालना–१ मेहरबानी करना। उ० वह अमीर-गरीब सभी पर साया डालता है। २ प्रभाव डालना। उ० उसकी विद्वता ने सभी पर साया डाल दिया है।

साया पडना–प्रभाव होना। उ० यहाँ तो उसका साया खूब पडा है।

साया मे आना–आश्रय मे आना। उ० सब छोड कर भगवान के साये मे जाओ।

साया होना–१ मेहरबानी या दया होना। उ० जब ईश्वर का साया है तो फिर डर किसका? २. भूत आदि का प्रभाव होना। उ० रात को अकेले गया, वही शायद साया हो गया।

साये मे रहना–आश्रित रहना, रक्षित रहना। उ० वह तो बाबू साहब के साए मे रहता है।

साये से भागना–दूर-दूर रहना, डर के कारण सामने न जाना।

साहस का साथ छोड़ना–हिम्मत मे कमी आना।

साष्टाग प्रणाम करना—ज़मीन पर पेट के वल लेट कर आठो अगो से प्रणाम करना। उ० पहले शिष्य गुरु को साष्टाग प्रणाम करते थे।

सिंगार-पटार करना—दे० 'बनाव-चोनाव करना'।

सिंदूर लुटना—विधवा होना।

सिंह का बच्चा—बहुत वहादुर। उ० वह सिंह का बच्चा है, कभी सामना होगा तो पता चलेगा।

सिंह की मूंछ पर हाथ फेरना—दुस्साहस का काम करना।

सिंहनाद करना—ज़ोर से हुँकार भरना।

सिंह-सियार की दोस्ती—१ अनमेल दोस्ती। २ दो दुश्मनो की दोस्ती। ३ बहुत मजबूत एव वडे और बहुत छोटे एव निर्बल की दोस्ती। उ० सिंह-सियार की दोस्ती नही चल सकती।

सिंह होना—१ क्रूर होना। २ अपने क्षेत्र मे अकेले रहने वाला होना। ३ वीर होना, बहादुर होना।

सिक्का जमना—दे० 'सिक्का बैठना'।

सिक्का बैठना—अधिकार या असर होना। उ० यहाँ काग्रेस का सिक्का खूब बैठा है।

सिक्का बैठाना—प्रभाव जमाना। उ० गुणी आदमी को सिक्का बैठाते देर नही लगती।

सिट्टी-पिट्टी गुम होना—डर या भय से होश-हवाश न रहना। उ० जब उसने प्रश्न पूछा तो मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई।

सिट्टी-पिट्टी भूलना—दे० 'सिट्टी-पिट्टी गुम होना'।

सिट्टी भूलना—दे० 'सिट्टी-पिट्टी गुम होना'।

सिड़ सवार होना—दे० 'सनक सवार होना'।

सितम करना—दे० 'सितम ढाना'।

सितम ढाना—जुल्म करना। उ० गरीबो पर सितम ढाओगे तो भगवान तुम पर सितम ढायेगा।

सितार का तार उतर जाना—पहले-सी मस्ती या आनन्द न रह जाना।

सितारा गर्दिश मे होना—मुसीबत मे होना। बदकिस्मत होना। उ० आजकल उनका भी सितारा गर्दिश मे है।

सितारा चमकना—सौभाग्य के दिन होना। उ० भारतवर्ष का सितारा दिन पर दिन चमकता जा रहा है।

सितारा डूबना—बदकिस्मत होना, धाक खत्म होना।

सितारा बुलन्द होना—दे० 'सितारा चमकना'।

सितारा मिलना—१ नक्षत्रो तथा ग्रहो का अनुकूल होना। उ० जब सितारा मिले तो कुछ काम भी हो। २ अनुराग होना। उ० उन दोनो का सितारा मिल गया है।

सिद्ध-हस्त होना—कुशल होना।

सिपर डालना—दे० 'सिपर फेंकना'।

सिपर फेंकना—डर से हथियार डाल कर हार मान लेना।

सिपर होना—सामने आना, रुकावट डालना। उ० कत्ल भी होने न देंगे रश्क मे अगयार को, तेग जब खीचोगे उन पर हम सिपर हो जाएँगे।

सिप्पा जमाना—१ यत्न या उपाय करना। उ० बिना सिप्पा जमाए काम होने की आशा नही है। २ बहुत घुमा-फिरा कर कहना। उ० तुम तो यार सिप्पा जमा कर सभी करवा लेते हो। ३ रोब जमाना। ४ प्रभावित करना। ५ अधिकार करना।

सिप्पा बैठना—१ कोशिश चलना। उ० यदि उनसे सिप्पा बैठ गया तो लड़का कुछ हो जाएगा। २ रोब गालिब होना।

सिप्पा भिड़ना—१ उपाय होना। उ० कोई सिप्पा ही नही भिडता कि काम हो। २. तदबीर से काम हो जाना। उ० उसका तो अच्छा सिप्पा भिडा। ३. पहुँच होना।

सिप्पा भिडाना—उपाय करना, रास्ता निकालना। उ० किसी तरह सिप्पा भिडाओ तो काम हो जाय।

सिप्पा लड़ना—दे० 'सिप्पा भिडना'।

सिप्पा लड़ाना—दे० 'सिप्पा भिडाना'।

सिमट जाना—लज्जा करना।

सियापा चढ़ना—रोना, दुःख होना।

सियार बोलना—एकदम सुनसान होना।

सियार होना—१ चालाक होना। २ कायर, भीरु और डरपोक होना। ३ डर जाना, डर कर दुबक जाना। उ० वह तो मुझे देखते ही सियार हो गया।

सिर-आंखो के बल—बडे उत्साह मे करना।

सिर आंखों पर—सादर स्वीकार।

सिर-आंखो पर बैठाना—बडे सम्मान और सत्कार से स्वागत करना। उ० प० नेहरू को ससार सिर-आंखो पर बैठा रहा है।

[illegible]

सिर खाली करना—१. दे० 'सिर खपाना'। २. अधिक बोलना। उ० आज कक्षा में सिर खाली कर दिया। ३. सिर खाना। उ० आप हमारा सिर खाली न करें, कृपा कर तशरीफ़ ले जायें।

सिर खुजलाना—१. बहाना करना। उ० सिर न खुजलाओ, देना हो तो दे दो। २ मार खाने की इच्छा करना। उ० सिर खुजला रहा है क्या, कि दिया काम नहीं कर रहे हो। ३. लज्जित हो जाना।

सिर खुलवाना—सिर में पाछ लगवा कर खराब खून निकलवाना। उ० पुराने जमाने मे सिर खुलवाने का वहुत रिवाज था।

सिर खोल देना—सिर फोड देना। उ० अधिक वकवक करेगा तो एक ही लाठी मे सिर खोल दूंगा।

सिर पर गाड़ी पहिया करना—अथक परिश्रम करना, खूव दौड़-धूप करना।

सिर गूंथना—सिर के वाल संवारना।

सिर गंजा करना—१. दे० 'सिर के बाल न छोड़ना'। २. बहुत मारना। उ० अब अधिक शरारत करोगे तो सिर गंजा कर दूंगा।

सिर घुटनों में देना—१. लज्जित होना। उ० उसने तो तुरंत सिर घुटनो मे दे दिया। २ सोच-विचार में पड़ना। उ० क्या बात है कि सिर घुटनों में दिये हो।

सिर घूमना—१. घवराहट होना। २. उद्दंड या धृष्ट हो जाना।

सिर चढ़ कर बोलना—अपने आप ज़ाहिर हो जाना। उ० तीन काम—चोरी, हत्या और छिनारी सिर चढ़ कर बोलते हैं।

सिर चढ़ना—१. शरारत करना। २ बहुत मुंह लगना। उ० वड़ों के सिर चढना ठीक नही है। ३ सिर का बलिदान होना। उ० भारत की स्वतंत्रता के लिए अगणित सिर चढे।

सिर चढ़ा—मुंह-लगा। उ० यह तो वडा सिर चढा लड़का है।

सिर चढ़ाना या चढ़ा देना—१. गुस्ताख वनाना। उ० छोटो को कभी सिर न चढाओ। २ सिर बलिदान करना। उ० भगतसिह ने माँ की वेदी पर सिर चढ़ा दिया।

सिर चला जाना—१. मर मिटना। उ० देश के लिये सिर चला जाय तो अच्छा ही है। २. पागल हो जाना। उ० उसका सिर चला गया है।

सिर चीरना—वहुत कोशिश करना। उ० लाख सिर चीरो, पर पास नहीं हो सकते।

सिर छिपाने का स्थान—आश्रय का स्थान, मकान।

सिर छुपाना—किसी को मुंह न दिखाना। उ० वह वेचारा तुम्हारे ही कारण सिर छुपाता घूम रहा है, अव तो माफ़ कर ही दो।

सिर ज़मीन पर रखना—आधीन होना, विनम्र होना।

सिर जाना—१ जिम्मे पड़ना। २. सिर कटना।

सिर जोड कर वैठना—लोगों का विपत्ति पड़ने पर पास मे सात्वना देने के लिए वैठना। उ० उसका पुत्र मर गया, सव लोग सिर जोड़ कर वैठे हैं।

सिर जोडना—१ चित्त एकाग्र करना। उ० सिर जोड कर पढोगे तो पास हो जाओगे। २. सभा या जलसा करना।

सिर झुका कर मान लेना—विना किसी प्रतिवाद के स्वीकार कर लेना।

सिर झुकाना या झुका देना—१. आज्ञा मानना। उ० सबको बड़ों के आगे सिर झुकाना चाहिए। २. शर्मिंदा होना। उ० सामने आते ही उसने सिर झुका दिया। ३. पराजित होना। उ० अत मे उसे सिर झुकाना ही पड़ा। ४. विनम्र वनना। उ० वह सभी के आगे सिर झुकाए रहता है। ५. प्रणाम करना। उ० बड़ों को देख कर सिर झुकाया करो।

सिर टकराना—वहुत प्रयत्न करना। उ० मैंने वहुत सिर टकराया, पर काम न वन सका।

सिर टूटना—झगड़ा-फसाद मे सर फूटना। उ० आज के झगड़े मे वहुतो के सिर टूटे।

सिर ठोकना—पछताना।

सिर डालना—जिम्मे करना। उ० नुक़सान तुमने किया और जुर्माना मेरे सिर डाल दिया।

सिर तोड़ना—दे० 'सिर फोड़ना'।

सिर थाम के बैठना—वहुत शोक करना। उ० क्या सिर थाम के वैठे हो, यह तो संसार का काम ही है।

सिर देना—मर-मिटना। उ० देश के लिए सिर दे दो।

सिर धड़ से अलग करना—दे० 'सिर उतारना'।

सिर धरना—१. स्वीकार करना। उ० आपकी बातें सिर धरता हूँ। २ उत्तरदायी बनाना। जिम्मे करना। उ० मैं नहीं जानता था कि सब मेरे ही सिर धरा जायेगा।

सिर धुनना—दे० 'सर पीटना'।

सिर नंगा करना—दीनता दिखाना। उ० बडो के आगे सिर नगा भी करना पडे तो हर्ज क्या?

सिर न उठा सकना—१. काम मे अत्यन्त व्यस्त होना। २. लज्जा या आदर के कारण सिर झुका रहना। ३ पूर्णतः पराजित होना।

सिर नवाना—१. प्रणाम करना। २ दीनता दिखाना। ३ लज्जित या शर्मिदा होना। ४. नीचा दिखाना। ५ हराना। ६ वेइज्जत करना।

सिर नीचा करना—१ वेइज्जत होना। उ० तुमने नीच काम करके खुद अपना सिर नीचा किया। २. शर्मिदा करना। उ० व्यर्थ के लिये उसका सिर नीचा न करो। ३ हार मान लेना।

सिर नीचा होना—१ वेइज्जत होना। उ० गुडो के साथ रहने से उसका सिर नीचा हो गया। २. लज्जित होना। उ० हार जाने के कारण उस दिन उसका सिर नीचा हुआ।

सिर पकड़ कर बैठना—निश्चेष्ट बैठना, निष्क्रिय होना, दुःखी होना।

सिर पचाना—१ बहुत सोच-विचार करना। उ० लाख सिर पचाओ, सवाल नही हल होगा। २. मेहनत करना। उ० दिन भर सिर पचाता है तो पेट भरता है।

सिर पटक के मरना—बहुत खुशामद या कोशिश करना। उ० सिर पटक के मर गया, पर उसने एक न सुनी।

सिर पटकना—१. चिंता या फिक्र करना। उ० सिर पटकने से क्या लाभ, जो होना था, वह तो हो गया। २. बहुत प्रयास या परिश्रम करना। उ० सिर पटक कर उसने काम कर लिया। ३. सिर पटक कर रोना।

सिर पड़ना—अपने पर आ जाना। उत्तरदायी होना। जिम्मे पड़ना। उ० यह काम मेरे सिर पड़ा है। उनके बाद मेरे ही सिर पड़ेगी।

सिर पर आ जाना—कम दिन शेप रह जाना। पास आ जाना। उ० अब तो परीक्षा सिर पर आ गई। अब तो मौत सिर पर आ गई।

सिर पर आना—दे० 'सिर पडना'।

सिर पर आ पडना—१ बहुत समीप आ पहुँचना। २. बहुत थोडा समय रह जाना।

सिर पर आफत आना—विपत्ति पडना।

सिर पर आरे चलना—१ जुल्म होना। उ० किसानो के सिर पर आरे चलते हैं, पर वे कर ही क्या सकते हैं? २. प्राण पर आ बनना।

सिर पर आसमान उठा लेना—१ बहुत गर्व करना। २ बहुत चीखना-चिल्लाना।

सिर पर उठा लेना—दे० 'आसमान सिर पर उठा लेना'।

सिर पर एक भी बाल न बचना—खूब दुर्गति होना।

सिर पर कफन बांधना—मरने तक को तैयार हो जाना।

सिर पर कोई न होना—कोई सहायक या रक्षक न होना। उ० तुम्हारे बाद घर के सिर पर कोई न होगा।

सिर पर खडा रहना—हर समय आगे रहना। उ० मालिक तो सदा सिर पर ही खडा रहता है।

सिर पर खून चढ़ना—१ क्रोधित होकर किसी का प्राण लेने पर उतारू हो जाना। उ० उससे न बोलो, उसके सिर पर खून चढा है। २ किसी का खून करने के बाद खूनी की ऐसी दशा हो जाना कि देखने वाला समझ जाय कि उसने खून किया है।

सिर पर खून सवार होना—दे० 'सिर पर खून चढना'।

सिर पर खेलना—१ बिल्कुल निकट होना। उ० उसके सिर पर मौत खेल रही है। २. प्राण खतरे मे डालना। उ० सिर पर खेल कर जवानो ने गढ जीता। ३. दे० 'सिर खेलना'।

सिर पर घड़ फोड़ना—दोष देना।

सिर पर घर उठाना—दे० 'आसमान सिर पर उठाना'।

सिर पर चढ़ कर बोलना—दे० 'सिर पर चढ़ना'।

सिर पर चढ़ना—१. अपने आप ज़ाहिर हो जाना। २ उत्पात करना। उ० क्या सिर पर चढ़ रहे हो ? ३. बहुत परीशान करना। ४. किसी चीज़ के करने या कराने के लिए बहुत कहना। ५. अशिष्टता का व्यवहार करना, बेअदबी करना। उ० इस लड़के मे सिर पर चढ़ने की आदत बड़ी बुरी है।

सिर पर छप्पर रखना—१ दबाव डालना, बहुत कहना। उ० उसके सिर पर छप्पर रखने की ज़रूरत न होगी, वह स्वयं कर देगा। २ केश बहुत बढ़ा लेना। उ० क्या सिर पर छप्पर रख लिया है ?

सिर पर छाया रहना—कोई सहारा या आश्रय होना।

सिर पर जूँ न रेंगना—दे० 'कान पर जूँ न रेंगना'।

सिर पर ठीकरा फोड़ना—दोषी ठहराना।

सिर पर जूता पड़ना—जूते से मार पडना।

सिर पर पड़ना—दे० 'सिर पडना'।

सिर पर पांव रख कर भाग जाना—घबड़ा कर भाग जाना।

सिर पर पांव रख देना या रखना—१ जल्दी मे होना। उ० तुम तो जब आते हो, सिर पर पांव रखे ही आते हो। २. उजड्ड बर्ताव करना। उ० तुम तो सभ्य हो, उसके सिर पर पांव न रखो। ३ मात कर देना। ४. बढ कर होना। उ० शरारत में तो तुमने उसके भी सिर पर पांव रख दिया।

सिर पर पृथ्वी उठाना—दे० 'आसमान सिर पर उठाना'।

सिर पर बीतना—दे० 'सिर पर आना'।

सिर पर भूत चढ़ना—दे० 'सिर पर शैतान चढना'।

सिर पर मिट्टी डालना—१ नाराज़ होना। उ० आखिर क्या बात है कि उसके सिर पर मिट्टी डालते हो। २ अरुचि या घृणा दिखाना। उ० ऐसी औरतो के सिर पर मिट्टी डालता हूँ। ३. शोक करना।

सिर पर मुसीबतों का टोकरा पटक देना—बहुत बड़ी मुसीबत मे डाल देना।

सिर पर मौत खेलना—ऐसी खतरनाक स्थिति मे होना, जहाँ मृत्यु-भय हो।

सिर पर रखना—बड़ी आवभगत करना। उ० वह तो अपने पूज्यों को सिर पर रखता है।

सिर पर लेना—१. अपने को जोखिम में डाल कर भी अपने ऊपर लेना या सामना करना। उ० वीर पुरुष, जो भी आता है, उसे सिर पर लेता है। २. सहन करना। उ० सारी हानि अपने सिर पर ले लो। ३. ज़िम्मे लेना। उ० घर का काम मैंने अपने सिर ले लिया।

सिर पर वज्र गिरना—१. बहुत बड़ी मुसीबत पड़ना। २ अप्रत्याशित घटना का हो जाना।

सिर पर विपत्ति का वितान तनना—बहुत मुसीबतों का घेरे रहना।

सिर पर शैतान चढ़ाना—१. बहुत क्रोधित होना। उ० उसके सिर पर तो शैतान चढा ही रहता है, उससे कौन बोले। २. अभाग्य आना, बुरे दिन आना। ३ बुद्धि ठीक न होना।

सिर पर सवार होना—१. तगादा करना। २ धुन लगना। ३ साथ लगे रहना।

सिर पर सहना—खुद सह लेना। उ० मैंने सब कुछ सिर पर सह लिया।

सिर पर साया होना—अभिभावकत्व होना।

सिर पर सींग होना—कोई विशेष गुण या अवगुण होना। उ० उनके सिर पर सींग हैं क्या कि उनको टिकट पहले दे दूँ। उनके सिर पर सींग है क्या कि केवल उन्ही को दडित करूँ ?

सिर पर सुरख़ाब का पर लगना—कोई विशेषता होना।

सिर पर से साया उठ जाना—सहायक या अभिभावक का दिवगत होना।

सिर पर सेहरा बंधना—१. प्रशंसा या शाबाशी मिलना। उ० देखें कि सेहरा किसके सिर बंधता है ? २ विवाह होना। ३ विजयी होना।

सिर पर सेहरा होना—१ प्रशसित होना। उ० सेहरा तो उसी के सिर पर है। २ प्रधान होना। उ० देश का सेहरा नेहरू के सिर पर है।

सिरपरस्ती करना—बचाना, रक्षा करना। उ० मेरी सिरपरस्ती भगवान् ही करेंगे।

सिर पर हाथ धर के रोना—अपने भाग्य पर रोना। उ० जब फ़ेल हो गए तो सिर पर हाथ धर के रोने से क्या लाभ ?

सिर पर हाथ फेरना—१ बहकाना । फुसलाना । उ० कुत्ते के सिर पर हाथ फेर कर लाओ । २. चालबाजी से हड़प जाना । उ० गुंडो ने बेचारी के सिर पर हाथ फेर कर सब ले लिया । ३ प्रेम दिखाना । ४ प्रेम करना । ५. आशीर्वाद देना ।

सिर पर हाथ रखना—१. सहायता करना । उ० उसने तुम्हारे सिर पर हाथ रखा है, नहीं तो बता देता । २ कसम खाना । उ० बच्चे के सिर पर हाथ रख कर कहता हूँ कि यह चीज़ मेरी है । ३. शरण देना ।

सिर पर होना—पालने वाला या मददगार होना । उ० मेरे सिर पर ईश्वर है ।

सिर पीटते फिरना—पछताना, चिंता करना । उ० जब चोरी हो गई तो सिर पीटते फिरने से क्या लाभ ?

सिर पीटना—सिर धुनना । उ० सिर पिट-पिट पछता हिं । वह सिर पीट कर रो रही है ।

सिर पीट लेना—भाग्य पर रोकर बैठ जाना । उ० सिर पीट लेने से काम न चलेगा, इस मामले मे कुछ करो ।

सिर-पूंछ न होना—कोई आधार या तथ्य न होना, मात्र निराधार अफ़वाह होना ।

सिर फिरना—१ बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल उलटी होना । उ० है सुधारो की वहाँ पर आस क्या, हो जहाँ पर सिर धरो का सिर फिरा । उनका सिर फिर गया है, वे इसे नहीं समझ सकते । २ पागल होना ।

सिर फेरना—१ बहकाना । उ० उसका सिर न फेरो । २ इन्कार करना । उ० उसने तो मेरे मांगने पर सिर फेर लिया । ३. मुखातिब न होना, दूसरी ओर देखना ।

सिर फोड़ना—१ सर तोड़ कर अंतिम क्रिया करना । उ० अपनो का भी चिता मे सिर फोडना पडता है । २ लडना-झगडना । उ० शांति से रहो, सिर न फोडो ।

सिर बांधना—केश सवाँर कर बांधना । उ० सिर बांध लो ।

सिर बेचना—१. सैनिक बनना । उ० युद्ध काल मे लाखो ने सिर बेच दिये । २ इज्जत बेचना । उ० सिर बेच कर रुपया न कमाओ ।

सिर भिन्नाना—सर में चक्कर आना । उ० इसकी बात सुन कर मेरा सिर भिन्नाने लगा ।

सिर मढ़ना—दे० 'सिर डालना' ।

सिर-माथे पर बैठाना—बड़ी आवभगत करना । उ० वह उसकी क़द्र जानता है, अतः सिर-माथे पर बैठाता है ।

सिर-माथे पर होना—मान्य होना । उ० आपकी आज्ञा सिर-माथे पर है ।

सिर मारना—१ बहुत मेहनत करना । उ० बहुत सिर मारा, पर पास न हुआ । २ बहुत तलाश करना । उ० लाख सिर मारने पर भी वह नही मिला । ३ समझाना । उ० कितना भी सिर मारो, उसकी मोटी अक़्ल मे कुछ धँसता ही नहीं । ४ गले मढना । उ० उसकी चीज़ उसके सिर मारो ।

सिर मुड़ाना—दे० 'मूड मुंडाना' ।

सिर मुड़ाते ओले पड़ना—आरम्भ में ही काम मे गडबडी पडना या हानि होना । उ० मैंने व्यापार शुरू किया, परन्तु सिर मुड़ाते ही ओले पडे ।

सिर मुडना—धूतता से छीन लेना । उ० तुमने तो उसका सिर ही मूड़ लिया ।

सिर मे बाल होना—शक्ति होना । उ० जब तक सिर मे बाल है, तब तक इसे नहीं छोड़ सकता ।

सिरमौर होना—श्रेष्ठ स्थान पाना ।

सिर रँगना—कपाल फोड़ देना । उ० ज्यादा बकोगे तो सिर रँग दूंगा ।

सिर रहना—बार-बार कह कर परेशान करना । उ० सिर रहने से तबीयत घबड़ाती है, जरा सांस तो लेने दो ।

सिरवा मारना—ओसावन मे हवा न चलने पर कपडे से हवा देना । उ० हवा नहीं है तो सिरवा मार कर ओसावन करवा दो ।

सिर सफेद होना—१ तजुरबा होना । २ अवस्था गिरना । उ० उसका सिर सफेद हो चला है । ३ बाल सफेद होना । उ० आखिर सिर धूप मे तो सफेद हुआ नही है ।

सिर रगड़ कर मर जाना—कितना भी प्रयत्न करना, पर सफल न होना ।

सिर सहलाना—१ स्नेह करना । उ० वह अपने कुत्ते का सिर सहला रहा था । २ खुशामद करना । उ० मुझे दूसरो का सिर सहलाना अच्छा नही लगता ।

सिर सूंघना—आशीर्वाद देना । उ० पंडित जी ने उसका सिर सूंघा ।

सिर से कफ़न बांधना—प्राण की परवाह न करना। उ० वह तो सिर से कफ़न बांधे फिरता है। भगतसिंह सिर मे कफन बांधे फिरता था।

सिर से खेल जाना—१ प्राण अर्पण कर देना। उ० युद्ध में वह सिर से खेल गया। २. जी-जान से लग जाना। ३ प्राण की भी परवाह न करना। उ० इस काम के पीछे मैं सिर से खेल जाऊंगा।

सिर से खेलना—१ दूसरो को लडाना। उ० तुमको सिर से खेलने मे बडा मज़ा आता है।

सिर से चलना—बहुत सम्मान करना। उ० उसके लिए मैं सिर से चलता हूँ।

सिर से तिनका उतारना—उपकार के बदले उपकार करना। उ० यदि उसने मेरा भला किया तो मैं भी कभी सिर से तिनका उतार दूँगा।

सिर से पानी गुज़रना—सहनशीलता की सीमा पार होना। उ० अब तो सिर से पानी गुज़रता है, आगे बर्दाश्त न होगा।

सिर से पैर तक—पूरे बदन मे, अंग-प्रत्यंग मे। उ० अब तो विष सिर से पैर तक फैल गया।

सिर से पैर तक आग लगना—दे० 'सिर पर शैतान चढ़ना'। उ० उसकी बात सुनते ही सिर से पैर तक आग लग गयी।

सिर से बला टालना—१ आफत या झंझट हटाना। उ० उसने रुपया देकर सिर से एक बला टाल दी। २ बिना मन के काम करना। उ० मन से किया है या सिर से केवल बला टाल दी है?

सिर से बोझ उतारना—१ दे० 'सिर से बला टालना'। २ कृतज्ञता मान कर बदला देना। उ० एक बार उसने मेरे लिए किया था, मैंने भी करके सिर से बोझ उतार दिया। ३ बडा काम कर डालना। उ० लडकी की शादी करके सिर से बोझ उतार दिया।

सिर से भूत उतरना—धुन दूर होना।

सिर से लेकर पैर तक देखना—अच्छी तरह देखना।

सिर हथेली पर लिए फिरना—मृत्यु से न डरना, जान की बाज़ी लगा कर कोई काम करना।

सिर हिलाना—१ 'ना' कर देना। उ० माँगने पर उसने सिर हिला दिया। २ सिर हिला कर हाँ करना। उ० बोले तो नही, पर सिर हिला दिया तो कर ही देंगे।

सिर होना—१ अनवरत कोशिश मे रहना। उ० वह नौकरी के सिर हो गया है। २ भाँप जाना। उ० वह देखते ही सिर हो गया है। ३ ज़िम्मे होना। उ० सारा काम मेरे सिर हो गया।

सिरे का—१ चोटी का। उ० वह तो सिरे का नेता है। २ आखिरी। उ० सिरे की पुस्तक मुझे देना।

सिले मे—उसकी जगह पर, बदले मे। उ० तुम करो सिले मे, मैं भी कुछ कर दूंगा।

सिसकियाँ भरना—सिसक-सिसक कर रोना। उ० देखो कमरे मे कौन सिसकियाँ भर रहा है?

सींग काट कर बछड़ो मे मिलना—वृद्ध होकर लडको मे रहना। उ० अब क्या सींग काट कर बछडो मे मिलते हो?

सींग दिखाना—१ विश्वास देकर मौके पर धोखा दे देना। उ० उसने तो ऐन मौके पर सींग दिखा दी। २. निराश आदमी को और चिढाना। उ० सींग न दिखाओ, मेरे भी दिन कभी पलटेंगे।

सींग निकलना—१ शरारती होना। उ० अब तो इसके सींग निकलने लगी है। २. बेवकूफी करना। ३ जानवरो का युवा होना।

सींग पर मारना—ध्यान न देना। उ० वह तो मेरी बात सींग पर मारता है।

सींग समाना या समा जाना—जीविका चलाने का ठिकाना होना। उ० सींग समा जाय तो मैं भी मकान खोज लूँ।

सींगी तोडना—१ गले लगाना। उ० उसने स्त्री को देखते ही सींगी तोडी। २ सींगी से रक्त निकालना। उ० आज भी कुछ हज्जाम सींगी तोडते हैं।

सींगी लगाना—दे० 'सींगी तोडना'।

सींव काँड़ना—दे० 'सींव चरना'।

सींव चरना—ज़बर्दस्ती या हठ करना। उ० क्यों सींव चरते हो, उसे देना होता तो वह दे देता।

सीटी देना—आज्ञा देना। उ० गार्ड ने गाडी खुलने की सीटी दी।

सीठी लगना—निस्सार लगना।

सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ना—शनै-शनै तरक्की करना। उ० एक-ब-एक नहीं चढ सकते हो, अत सीढी-सीढी चढना ठीक है।

सीध आना–मुठभेड करना। उ० तुम्हारे सीध आने का कौन साहस करेगा?

सीध बाँधना–१. निशान लगाना। उ० सिपाही बदूक़ की सीध बाँध रहा है। २ लाइन मे खड़ा होना।

सीधा करना–१ ठीक रास्ते पर लाना। मार कर ठीक करना। उ० उसको पुलिस ने सीधा कर दिया। २. निशान लगाना। उ० वह सीधा कर रहा है।

सीधा दिन–मगल का दिन। उ० सीधे दिन से कार्य शुरू करो।

सीधा-साधा–१. भोला-भाला। उ० वह तो सीधा-साधा लड़का है। २. मामूली तौर पर। उ० गाधी जी सीधे-साधे रहते थे।

सीधी अंगुली घी निकालना–सरलता से काम बनाना। उ० आजकल सीधी अँगुली घी नही निकलता है।

सीधी तरह–सरलता से, आसानी से। उ० सीधी तरह काम न होगा, तो टेढी तरह होगा।

सीधी बात न आना या निकलना–ठीक-ठीक बात न करना।

सीधी बात न बोलना–सत्य और प्रिय बात न बोलना।

सीधी राह–उचित पथ, उचित पथ पर। उ० सीधी राह चलो, नहीं तो बदनामी होगी।

सीधी सुनाना–स्पष्ट शब्दों मे कह देना। उ० मुझे लप्पो-चप्पो नहीं आती, मैं तो सीधी सुनाता हूँ।

सीधे मार्ग पर आना–१ सुधर जाना। २ ठीक और उचित काम करना।

सीधे मुँह बात न करना–रोब से बोलना। उ० ओहदा पा गया, अब तो सीधे मुँह बात ही नही करता है।

सीना उभार कर चलना–इतरा कर गर्व से चलना। उ० चार दिन से धूल लगाता है तो सीना उभार कर चलता है।

सीना कूटना–रज करना, छाती पीटना। उ० बस क्या कहें हाले दिले मातम ज़दा ऐ वाय, सीना ही फ़कत कूटे हैं क्या पीटे हैं सर भी?

सीना चाक होना–छाती टूक-टूक होना, छाती फटना। उ० मिला क्या हज़रत आदम को फल जन्नत से आने का, न क्यो इस गम से ना चाक हो गंदुम के दाने का।

सीना चौड़ा होना–गर्व होना।

सीनाज़ोरी करना–ज़बर्दस्ती करना। उ० चोरी और सीनाज़ोरी। यहाँ सीनाज़ोरी न करो।

सीना तान कर चलना–१. गर्व करना। २. अकड कर चलना।

सीने पर मूँग दलना–सरे आम दुःख देना।

सीने पर साँप लोटना–दे० 'छाती पर साँप लोटना'।

सीने पर सिल धरना–छाती पर पत्थर रखना, ज़ब्त करना, सब्र करना। उ० खानए अग़यार में जाते हैं सुन कर क्या करूँ, सिल मगर सीने पर धर लेता हूँ भारी इन दिनों।

सीने पर हाथ रखना–१. मन को समझा कर सतुष्ट करना। उ० सीने पर हाथ रखो और आगे कदम उठाओ। २ ठढे दिल से विचारना और सत्य बोलना। उ० सीने पर हाथ रख कर कहो, क्या यह काम बुरा नहीं है।

सीने मे अगार होना–मन में वेदना या विद्रोह होना।

सीने से लगाना–१ प्रेम से आलिगन करना। उ० मिलते ही उसने सीने से लगा लिया। २. प्रेम से स्वागत करना। उ० शुभ समाचार को मैंने सीने से लगाया।

सीप से समुद्र उलीचना–नगण्य प्राय साधन से बहुत बड़ा काम करने का असफल प्रयत्न करना।

सीमा से बाहर जाना–मर्यादा से अधिक या बेहद होना। उ० सीमा से बाहर न जाओ नहीं तो बदनामी होगी।

सीर मे–ऐसे कब्जे मे जो कोई ले न सके। उ० उसके पास सीर में ५० बीघे खेत हैं।

सुख का सपना हो जाना–जीवन मे तनिक सुख भी न रह जाना।

सुख की नींद सोना–चैन से दिन काटना। उ० सब तरह से निश्चित होकर वह सुख की नीद सोता है।

सुख की सौंज उठ जाना–सुख समाप्त हो जाना।

सुख मानना–१ प्रसन्न रहना। उ० यह बैल मेरे यहाँ सुख मानता है। २ मुआफ़िक़ रहना। उ० तुम तो सभी से सुख मानते हो।

सुख में राते होना–अत्यन्त सुख में होना।

सुख लूटना–मौज उड़ाना। उ० वह आजकल जवानी का सुख लूट रहा है।

सुग्गे का सेमल होना—भ्रम होना।

सुतली मे पोत पोहना—बेमेल या असगत काम करना।

सुध दिलाना—१ विस्मृत बात का स्मरण कराना। उ० जब मैंने सुध दिलायी तो उन्हे होश पडा, नहीं तो भूल ही गए होते।

सुध बिसरना—सब भूल जाना। उ० गोपियो का प्रेम देख कर ऊधो अपनी सुध बिसर गए।

सुध बिसराना—१ स्मृति न रहना। उ० जाकर उन्होंने सुध बिसरा दी। २ चेतनारहित हो जाना। मस्त हो जाना। उ० मुरली की तान सुनते ही जड-चेतन सभी सुध बिसरा देते थे।

सुध बिसारना—दे० 'सुध बिसराना'।

सुध-बुध जाती रहना—१ होश-हवास न रहना। उ० शेर को देखते ही सुध-बुध जाती रही। २ आसक्त होना।

सुध-बुध मारी जाना—१ मस्त हो जाना, आशिक हो जाना। उ० लैला के पीछे मजनू की सुध-बुध मारी गई थी। २ बेहोश हो जाना। ३ बेअक्ल होना। ४ पागल होना।

सुध रखना—स्मरण रखना। उ० जरा मेरी बात की भी सुध रखिएगा।

सुध लेना—१ खबर लेना। उ० कृष्ण ने जाकर गोपिकाओ की सुध भी न ली। २ रक्षार्थ आना। उ० बिना हरि के कौन मेरी सुधि ले।

सुधाकर लिखते राहू लिखा जाना—अच्छा काम करते बुरा हो जाना।

सुनगुन पाना—दे० 'सुनगुन मिलना'। उ० चिउरा दही के सुनगुन पावो। चौदह कोस दउर ले जावो।

सुनगुन मिलना—किसी तरह पता चल जाना, सुराग मिलना। दे० 'भनक पड़ना'।

सुनगुनाहट पाना—दे० 'सुनगुन पाना'।

सुनती-उडती बात—अफवाह।

सुनना चाहना—खरी-खोटी सुनने की इच्छा होना। उ० क्या कुछ सुनना चाहते हो कि काम ठीक से नहीं करते?

सुन पाना—१. जान लेना। उ० अगर उसने सुन पाया तो खैर नहीं। २. गुप्त बात की थोडी-सी आहट मिलना।

सुनहरा मौका—अनुकूल अवसर [यह Golden chance का अनुवाद है]

सुनी-अनसुनी करना—सुन कर भी उस पर ख्याल न करना। उ० अफसरो की सुनी-अनसुनी न करो, नही तो नाराज़ हो जाएँगे।

सुन्न खींच जाना—एकदम चुप रह जाना, कुछ न कह पाना।

सुन्न हो जाना—१ धक्क से रह जाना, बेजान हो जाना। उ० चोट लगते ही सारा बदन सुन्न हो गया। २ सुस्त हो जाना। उ० वह तो सुन्न हो गया है, कुछ करता ही नहीं।

सुबकियाँ लेना—सिसकी लेकर रोना। उ० वह सुबकियाँ ले रही है, तुमने कुछ कह दिया है क्या?

सुबह का दीपक होना—श्रीहीन होना, मलिन होना, बुझने वाला होना।

सुबह-शाम करना—दे० 'हीला-हवाला करना'।

सुरग लगाना—जमीन के अन्दर खाई खोदकर बारूद भरना। उ० पहले सुरंग लगा कर लडाई जीतना आसान था।

सुर अलग-अलग रहना—एक राय न रहना, आपस मे फूट रहना। उ० सुर सदा है अलग-अलग रहता, एक सुर से कभी नहीं कहते।

सुरत बिसारना—बिलकुल भूल जाना। उ० आपने जाकर सुरत भी बिसार दी।

सुरधाम जाना, सुर पुर की राह लेना—मृत्यु को प्राप्त होना।

सुरपुर सिधारना—मर जाना। उ० आज वह सुरपुर सिधार गया।

सुर मे सुर मिलाना—दे० 'हाँ में हाँ मिलाना'।

सुराग मिलना—भेद का कुछ पता चलना। उ० देखो, कुछ सुराग मिले तो बतायें।

सुराग लगाना—पता चलाना। उ० बिना उसके कोई सुराग नहीं लगा सकता।

सुराग लेना—रहस्य पाना। उ० उसका सुराग लेना आसान नहीं है।

सुर्ख़-रू होना—यशस्वी या प्रतिष्ठित होना।

सुर्ख होना—१ पक कर लाल हो जाना। उ० फल सुर्ख हो गया है। २. क्रोधित होना। उ० क्यो सुर्ख होते हो, सुनो भी तो। ३. मोटा-ताजा और खुशरंग होना। उ० उसे तुम बीमार कहते हो और वह सुर्ख हो रहा है।

सुर्खाब का पर लगा होना—कोई विशेषता होना। कोई विशेष बात होना। उ० सुर्खाब का पर लगा है क्या, कि केवल तुम्हीं को निमंत्रण मिलेगा।

सुर्खाब का पर होना—किसी में कोई विशेषता होना।

सुलगना—भीतर ही भीतर नाराज होना।

सुलफ़ा हो जाना—गायब हो जाना। उ० जब से तुम पड़ोस में आये हो, हमारा सुख-चैन सुलफ़ा हो गया है।

सुला देना—मार कर खतम कर देना। उ० शिवाजी के सिपाहियों ने मुग़लों की सेना सुला दी।

सुलूक करना—व्यवहार करना। उ० सबसे अच्छा सुलूक करो।

सुलूक से रहना—१. मेल-मिलाप से रहना। उ० आपस में सुलूक से रहना सीखो। २ तहज़ीब से रहना। उ० बड़े हुए, सुलूक से रहो।

सुस्त होना—१. कमजोर होना। उ० बीमारी के कारण लड़का सुस्त हो गया। २ आलसी होना।

सुस्ती करना—देर करना, आलस्य करना। उ० काम में सुस्ती न करो, नहीं तो बिगड़ सकता है।

सुहाग उजड़ना—विधवा होना।

सुहाग भरा रहना—माँग भरी-पूरी रहना। पति का जीवित रहना। उ० ईश्वर करे तुम्हारा सुहाग भरा रहे।

सुहाग मनाना—अपने अहिवात की प्रार्थना करना। उ० मैं तो ईश्वर से केवल अपना सुहाग मनाती हूँ। वह अटल रहे तो धन लेकर क्या करूँगी?

सूअर होना—१. बहुत गंदा रहने वाला होना। २. बेवकूफ़ होना।

सूई का पहाड़ होना—ज़रा सी बात का बहुत बढ़ जाना।

सूई का भाला बनना—१. छोटी चीज से अधिक कष्ट मिलना। उ० मेरे लिए तो यही फोड़िया सूई का भाला बन गई है। २. छोटे ऐब का बढ़ जाना।

सूई के नाके से खुदाई को या सब को निकालना—कुदरत के ज़ोर से असंभव को कर दिखाना। उ० था काम यह तेरा ही खुदावंद ताला, ला सूई के नाके से खुदाई को निकाला।

सूई के नाके से हाथी निकलना—कठिन या असम्भव काम होना।

सूख कर काँटा होना—अति दुर्बल हो जाना। उ० वह तो ज्वर से सूख कर काँटा हो गया।

सूखते धान में पानी पड़ना—दुःखी या निराश व्यक्ति में आशा का संचार होना।

सूखा जवाब देना—दे० 'कोरा जवाब देना'।

सूखा टरकाना—बिना इच्छा पूरी किए फेर देना। बिना लिए-दिए लौटा देना। उ० उसने तो तुम्हें सूखा टरका दिया।

सूखा टालना—दे० 'सूखा टरकाना'।

सूखा लगना—१. पसंद न आना। उ० आज का खाना तो सूखा लगता है। २. सुखंडी रोग का होना। उ० बच्चे को सूखा लगा है।

सूखी मुस्कान—ऐसी हँसी, जो हृदय से न निकली हो।

सूखे खेत लहलहाना—कष्ट में सुख या आराम मिलना।

सूखे धान पर पानी पड़ना—मरते-मरते जान बचना। उ० डाक्टर के आने से सूखे धान पर पानी पड़ गया, नहीं तो कोई आशा नहीं थी।

सूखे पर लगना—तट पर जा लगना। किनारे लगना। उ० जहाज जाकर सूखे पर लगा। कोई ऐसी युक्ति करो कि मेरा बेड़ा भी सूखे पर लगे।

सूची-भेद्य अंधकार—गहरा अँधेरा।

सूत की तरह तोड़ना—बिना परिश्रम तोड़ देना, आसानी से तोड़ देना।

सूत की तरह होना—दे० 'सूत बराबर होना'।

सूत धरना—मकान आदि बनाने में सीध में सूत से निशान करना। उ० राजगीर सूत धरता है।

सूत बराबर होना—बहुत महीन होना। उ० लाइन की मोटाई सूत बराबर होनी चाहिए। यह रस्सी तो सूत बराबर है।

सूत-सूत—१. थोड़ा-थोड़ा। २. सारा-पूरा। उ० उसका सूत-सूत गहना चोरी चला गया।

सूतक लगना—छूत लगना।

सूद-दर-सूद लेना—चक्रवृद्धि व्याज लेना। उ० उस ग़रीब से सूद-दर-सूद न लो।

सूद पर देना—व्याज पर रुपया देना। उ० आजकल सूद पर देने का समय नही है।

सूधी कहना—१. दे० 'खरी-खोटी सुनाना'। २ साफ़-साफ़ कहना।

सूधी-सूधी सुनाना—दे० 'सूधी कहना'।

सूधे-सूध—साफ़, स्पष्ट। उ० मैं तो सूधे-सूध कहता हूँ, चाहे किसी को बुरा लगे या अच्छा।

सूना लगना—सुनसान लगना। उ० उनके चले जाने से घर सूना लगता है।

सूप भर—बहुत, बहुत ज्यादा। उ० थोड़ा-सा चाहिए, सूप भर लेकर क्या करूँगा ?

सूरज की तरह चढ़ना—पूर्ण प्रताप से चढाई करना।

सूरज के सम्मुख जुगनूं—तुलना मे अत्यन्त सामान्य या तुच्छ।

सूरज को दीपक दिखाना—१ बहुत गुणी को कुछ बताना। उ० जवाहरलाल को राजनीति बताना सूरज को दीपक दिखाना है। २ बहुत प्रसिद्धि का परिचय देना। उ० नेहरू का भारत मे परिचय देना सूरज को दीपक दिखाना है।

सूरज चढ़ना—कुछ दिन निकलना। उ० सूरज चढ़ने के बाद मैं उठा और हाथ-मुंह धोकर कचहरी चला गया।

सूरज ढलना—१. अवनति होना। उ० उसका सूरज ढल रहा है। २. शाम होना।

सूरज पर थूकना—१. निर्दोष को कलक लगा कर बदनाम करना। उ० सूरज पर थूकने का अर्थ अपने पर थूकना है। सूरज पर थूकोगे तो कभी तुम्हारे साथ भी कोई ऐसा करेगा। २. मूर्खता करना।

सूरज पर धूल फेंकना—दे० 'सूरज पर थूकना'।

सूरज सिर पर चढ़ आना—दोपहर होना।

सूरत आँखों से न उतरना—हर समय ध्यान बना रहना।

सूरत करना—१. प्रयत्न करना। उ० कोई सूरत करो कि मेरा काम हो जाय। २. ध्यान करना। उ० आपने कभी सूरत भी न की।

सूरत दिखाना—१. उपाय बताना। उ० उसने सारी सूरतें दिखा दीं, अब जो चाहो, करो। २ सम्मुख आना। उ० वह तो सूरत भी नही दिखाता है।

सूरत नज़र न आना—कोई उपाय न सूझना। उ० पास होने की कोई सूरत ही नज़र नही आ रही है।

सूरत निकालना—१. सुधार कर अच्छा बनाना। २. कोई युक्ति सोचना।

सूरत बनाना—१. रूप बनाना। उ० तुमने तो नाटक मे भिखारी की अच्छी सूरत बनाई थी। २. मुँह बना कर घृणा दिखाना। उ० उसे देख कर क्यों सूरत बनाते हो ? ३ अपने को दीन प्रदर्शित करना। उ० सूरत बनाने से फीस नही माफ़ होगी।

सूरत-शक़्ल—चेहरे की बनावट। उ० सूरत-शकल से वह चोर मालूम पड़ता है।

सूरत हराम होना—दे० 'इद्रायन का फल होना'।

सूली चढ़ाना—फाँसी की सज़ा देना। उ० गोडसे गाधी-हत्या केस मे सूली चढा दिया गया।

सूली पर जान होना—१ जान जाने का डर होना। उ० उन हत्यारो की जान सूली पर है। २. बहुत परीशान होना।

सेंक-सांक करना—गर्म करना, सेंकना। उ० सेंक-सांक करो, फोड़ा ठीक हो जाएगा।

सेंत का—१ बहुत ज्यादा। २ बिना दाम का।

सेंध मे बैठ कर घूरना—विपत्ति या पकड़े जाने वाली स्थिति मे भी न घबराना।

सेंध लगाना—सेंध मार कर या छेद बना कर चोरी करना। उ० चोरो ने सेंध लगा कर सब कुछ ले लिया।

सेमर का फूल होना—आकर्षक किन्तु धोखे की चीज होना। उ० उसका प्रेम सेमर का फूल है।

सेमर का सुआ—निस्सार वस्तु को महत्त्व देने वाला।

सेर को सवा सेर मिलना—अपने से बड़े का मिलना। छोटे बदमाश को बडा बदमाश मिलना। बुरे का और बुरे से पाला पड़ना। उ० घबराओ नहीं, तुमने तो हम लोगों को

खूब परीशान किया, पर किसी दिन सेर को सवा सेर अवश्य मिलेगा।

सेहत होना—तन्दुरुस्ती ठीक होना। उ० आजकल मैं पहले से सेहत हूँ।

सेहरा बंधना—१ शादी होना। उ० ईश्वर करे कि तुमको सेहरा बँधे। २. विजयी होना। उ० देखें खेल मे सेहरा किसे बँधता है ? ३. प्रशसा होना।

सेहरे जलवे की—वह स्त्री, जो विधिपूर्वक व्याह कर लाई गई हो। उ० मैं सेहरे जलवे की स्त्री हूँ, कोई रखनी नही हूँ। [इसका प्रयोग मुसलमानो में ही होता है।]

सैकड़ो घड़े पानी पड़ना—बहुत शर्मिंदा होना। उ० उस दिन की बात से उस पर घडो पानी पड गया। अब वह यहाँ आने का नाम भी नही ले सकता।

सैन करना—इशारा करना। उ० बोलना नही, जो कहना हो सैन करके ही कह देना, ताकि और लोग समझ न सकें।

सैन बताना—सकेत बता कर कहना। उ० कृष्ण के सो जाने पर यशोदा नौकरो को सैन बताती थी, ताकि उनकी नींद न टूटे।

सैन मारना—आंख से सकेत करना। इशारा करना। उ० उसके सैन मारने पर सब समझ गया।

सोठ की नास लेना—दे० 'सोठ के लड्डू खाना'।

सोठ के लड्डू खाना—चुप्पी साध लेना। कुछ न बोलना।

सोठ हो रहना—खामोश हो रहना।

सोच मे रहना—फ़िक्र मे पड़े रहना। उ० आजकल तुम नौकरी की सोच मे रहते हो।

सोजरा करना—रडी या वेश्या के साथ सहवास करना।

सो जाना—अत्यन्त शिथिल हो जाना।

सोटे लँगोटे में मस्त रहना—अपने मे ही मस्त रहना।

सोते को जगाना—अज्ञान मे पड़े व्यक्ति को सचेत करना।

सोना उगलना—अत्यन्त लाभदायक होना।

सोना तौलना—दे० 'सोने की तौल तौलना'।

सोना सुगध—सुगंधित और सोने की तरह सुदर रग का। उ० सोना सुगध क्यो न कहूँ तुझको ऐ परी, रगत सुनहरी तिस पर यह खुशबू वदन मे है।

सोने का घर मिट्टी होना—अच्छी चीज का बिल्कुल बरबाद हो जाना। उ० जयचंद के कारण भारत-जैसा सोने का घर मिट्टी हो गया।

सोने का संसार—१ सुख-वैभव का संसार। २. सुख की गृहस्थी।

सोने की कटारी—देखने मे लुभावनी, पर विनाशकारी। उ० मैं जानता हूँ कि उसकी बातें सोने की कटारी हैं।

सोने की चिड़िया—१ खूबसूरत तथा प्यारा। २ खूब माल देने वाला व्यक्ति। उ० सोने की चिडिया मिली है, अब मुझे किसी बात का कष्ट न होगा।

सोने की चिड़िया हाथ से निकल जाना—किसी ऐसी चीज का अपने वश मे से चला जाना, जिससे बहुत अधिक लाभ होता रहा हो। उ० अग्रेजो के हाथ से सोने की चिड़िया निकल गई।

सोने की तौल तौलना—बिलकुल ठीक तौलना। उ० भाव जो कहो रख दूँ, पर तौलूंगा सोने की तौल। इस महँगी मे मिट्टी भी सोने की तौल तौली जाती है।

सोने के कौर खाना—१ खूब सम्मान पाना। २. ऐश्वर्य मे रहना। ३. बढिया भोजन करना।

सोने के दिन—सौभाग्य के दिन।

सोने मे सुगंध होना—गुण मे भी विशेष गुण होना। उ० राजा बन कर नम्र होना सोने मे सुगध होना है।

सोने में सोहागा होना या हो जाना—चीज का और निखर जाना या अच्छा हो जाना। उ० अगर इस कोश मे शब्दो की व्युत्पत्ति दे दी जाती तो सोने मे सुहागा हो जाता। बोलता तो अच्छा है, अगर जरा धीरे-धीरे बोलता तो सोने में सोहागा हो जाता।

सोलह आने—पूरी तौर से। उ० मैं सोलह आने सच कहता हूँ, वह नहीं आया था।

सोलह दूनी आठ का पहाड़ा पढ़ाना—खूब उल्टी-सीधी समझाना।

सोलह-सोलह गड़े सुनाना—भला-बुरा सुनाना। उ० उसे सोलह-सोलह गड़े सुनाये, पर उस वेहया ने तनिक भी ध्यान न दिया।

सोलहो आने—दे० 'सोलह आने'।

सोलहों दंड एकादशी—एकदम निराहार।

सोहबत उठाना—साथ मे रह कर गुण-दोष ग्रहण करना। उ० हमने जन्म से ही अच्छो की सोहवत उठाई है।

सौ कसाई के एक कसाई—वहुत कठोर।

सौ कोस भागना—कोई सम्बन्ध न रखना। बहुत दूर रहना। उ० लम्पटो से तो मैं सौ कोस भागता हूँ।

सौ जान से कुर्बान होना—बहुत खुश होना।

सौ बात का एक वतगड़—दे० 'सौ वात की एक बात'।

सौ बात की एक बात—१. खुलासा, साराश। उ० सौ बात की एक बात यह है कि तुम्हें काम करना पडेगा। २. असली बात।

सौ सुनार की के बराबर एक लोहार की करना—एक ही प्रयत्न मे मुँह तोड़ उत्तर देना।

सौ-सौ घड़े पानी पड़ना—दे० 'सैकडो घडे पानी पड़ना'।

सौ-सौ चूहा खाकर विल्ली का हज करने चलना—छल करना, ढोग रचना।

स्टीम भरना—१. उत्साह देना, बढावा देना। उ० उसने ऐसी स्टीम भरी कि वह तुरन्त कूद गया। २ काम करने के लिए खिलाना-पिलाना।

स्नेह जुड़ना—प्रेम होना।

स्याह-सफेद करना—मन के अनुसार भला-बुरा करना। मनमानी करना। उ० उसका राज्य है, चाहे स्याह करे चाहे सफेद।

स्याही आना—वृद्धता आना। उ० अब तो स्याही आ गई, भला कुछ दान-पुण्य तो कर लो।

स्यापा पड़ना—गमी (किसी के मर जाने) मे रोना-चिल्लाना। उ० मरने का तार पाते ही घर मे स्यापा पड गया।

स्वर्ग के तारे—अलभ्य वस्तु। उ० तुम्हारे लिए मैं स्वर्ग के तारे ला सकता हूँ।

स्वर्ग के पथ पर पैर देना—प्राण खतरे मे डालना। उ० जब जानते हो कि वहां वन्य पशु हैं तो स्वर्ग के पथ पर पैर क्यो देते हो ?

स्वाँग करना—१ किसी अन्य का वेष बनाना। उ० वह स्वाँग करने पर पहचान मे आती ही नही। २ बनाव-चोनाव करना। उ० जल्दी स्वाँग करो, नाटक प्रारम्भ होगा।

स्वाँग बनाना—१ रूप बनाना। उ० तुम तो सदा स्वाँग बनाने मे ही रहते हो। २ मज़ाक उडाना। उ० किसी का स्वाँग न वनाया करो।

स्वाँग भरना—१ अनेक वेशो मे उपस्थित होना। अनेक रूप बनाना। उ० कल तो नाटक मे तुम बहुत स्वाँग भर रहे थे। २. दे० 'ढम भरना'।

स्वाँग लाना—धोखा देने के लिए कोई रूप धारण करना।

स्वाद चखाना—किसी को उसके लिए अपराध का दड देना।

स्वारथ होना—सफल होना। उ० तुम्हारे खा लेने से मेरा खाना बनाना स्वारथ हो गया।

स्वाद चखना—अनुभव करना।

स्वार्थ का अखाड़ा होना—सबका स्वार्थ मे लीन होना।

स्वार्थ के ग्राहक होना—स्वार्थी होना।

स्वार्थ मे अन्धा होना—अपना मतलब हल करने के लिये किसी की भी परवाह न करना। उ० स्वार्थ मे इतने अन्धे न हो जाओ कि दीन-दुनिया की भी खबर न रहे।

स्वास्थ्य गिरना—स्वास्थ्य खराब होना।

स्वाहा करना या कर देना—नष्ट-भ्रष्ट करना। उ० हनुमान ने देखते-देखते सोने की लका स्वाहा कर दी।

स्वाहा होना—जल जाना, बरबाद हो जाना। उ० एक ही एटम बम से जापान का एक पूरा नगर स्वाहा हो गया।

ह

हँकार पड़ना—पुकार मचना । उ० आपकी वहाँ हँकार पड रही है, जरा जल्दी जाइए ।

हंगामा मचाना—१ शोरगुल मचाना । २ लड़ाई-झगड़ा मचाना । उ० यहाँ हगामा न मचाओ ।

हंडा फोड़ना—भेद प्रकट करना । उ० अगर इस चोरी का हडा फोड़ देते तो तुम्हें इससे बरी कर देता ।

हँड़िया चढ़ाना—रसोई बनाना । उ० आज हँड़िया नहीं चढाओगे क्या ?

हँफनी मिटाना—दम मारना । उ० जरा हँफनी मिटा लेने दो, आखिर लगातार ८ घटे कैसे काम किया जा सकता है ।

हँस कर बात उड़ाना—ध्यान न देना । हँस कर टालना । उ० मैं काम की भी कहता हूँ तो तुम हँस कर बात उडा देते हो, बाद मे पछताना पड़े तो मैं जिम्मेदार नही ।

हंस का भाग कौए द्वारा लिया जाना—योग्य व्यक्ति को मिलने वाली वस्तु अयोग्य के पास जाना ।

हंस-कौए का साथ होना—परस्पर विरोधियो का साथ होना ।

हँसते मरना—खुशी-खुशी प्राण त्यागना । उ० जाति-हित के लिए मरें हँसते, आह निकले न, दम निकल जावे ।

हँसते-हँसते—१ खुशी से । उ० भगतसिह हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर लटक गये । २ आसानी से । उ० इसे तो तुम हँसते-हँसते कर सकते हो ।

हँसते-हँसते दोहरा हो जाना—बहुत या खूब हँसना ।

हँसते-हँसते पेट मे बल पड़ना—बहुत जोर से हँसना । इतना हँसना कि पेट मे दर्द होने लगे । उ० उसकी बात पर तो हँसते-हँसते पेट में बल पड गया ।

हँसते-हँसते बुरा हाल होना—दे० 'हँसते-हँसते पेट में बल पड़ना' ।

हँसते-हँसते लोट-पोट होना—दे० 'हँसते-हँसते पेट में बल पड़ना' ।

हँसते हुए—दे० 'हँसते-हँसते' ।

हंस बनाते-बनाते कौआ बना देना—अच्छी और योग्य वस्तु बनाते-बनाते बुरी बना देना ।

हँसी उड़ाना—उपहास करना, बनाना । उ० इस सीधे आदमी की क्यो हँसी उड़ा रहे हो ?

हँसी-खेल—सहज बात, आसान काम । उ० अरे यह तो हँसी-खेल है, इसके पीछे क्यो जान दे रहे हो ?

हँसी-खेल समझना—दे० 'हँसी समझना' ।

हँसी छूटना—हँसी आना । उ० आपकी बातें सुन कर उसे हँसी छूट रही थी ।

हँसी-ठठोली—मजाक, दिल्लगी, विनोद । उ० हँसी-ठठोली मे क्यो रोते हो ? दिन रात की हँसी-ठठोली अच्छी नहीं ।

हँसी में उड़ाना—दे० 'हँसकर बात उड़ाना' ।

हँसी मे खाँसी होना—दिल्लगी मे झगड़े की नौबत आना । उ० तुम इसे समझते नही हो, यह बडा दुष्ट है, इसकी वजह से यहाँ हँसी मे खाँसी होते देर नही लगेगी ।

हँसी मे ले जाना—किसी बात को मजाक मे टालना या मजाक समझना । उ० तुम तो मेरी हर बात हँसी मे ले जाते हो । कम से कम सुन तो लिया करो ।

हँसी समझना—साधारण बात समझना, कठिन न समझना । उ० विद्वान् बनना क्या हँसी समझ रक्खा है ?

हक अदा करना—कर्त्तव्य का पालन करना । उ० वे दोस्ती का हक़ अदा कर रहे हैं ।

हक़ दबाना—किसी दूसरे का अधिकार या धन अपने अधिकार मे करना । उ० उसका हक क्यो दबा रहे हो, उसके लड़के-बच्चो को तुम्हीं खिलाओगे क्या ?

हक़ पर लड़ना—अपने अधिकार या अपनी चीज़ के लिए लडना । उ० अपने हक पर लड़ने के लिए तुम्हें कौन रोकेगा ?

हक़ पर होना—उचित बात की या अधिकार की माँग करना । उचित बात का आग्रह करना । उ० जो हक पर होगा, उसी की विजय होगी ।

हक़ मारना—दे० 'हक दबाना' ।

हकर-हकर पानी पीना—दे० 'डगडगा कर पानी पीना' ।

हकर-हकर होना–१. पेट का पतुहा होना। पेट का भीतर कुछ न रहने के कारण सटा रहना। उ० बेचारा हकर-हकर हो गया है, कुछ खिला दो। २ दुर्बल होना। उ० दो ही दिन की बीमारी में हकर-हकर हो गया।

हक़ीक़त में–सचमुच, वास्तव मे। उ० हक़ीकत मे वह बड़ा ईमानदार आदमी है।

हक़ीर जानना–छोटा समझना। उ० वह अपने सामने तुम्हें हक़ीर जानता है।

हक्का-बक्का रह जाना–दे० 'भौंचक रह जाना'।

हक्के लगना–काम में आना। उ० इस चीज को फेंको नहीं, किसी के हक्के लग ही जायगी।

हग भरना–दे० 'हग मारना'।

हग मारना–१ बहुत डर जाना। २ हग देना। ३. बहुत ज्यादा पाखाना करना। ४ किसी चीज़ को बहुत गदा कर देना।

हचर-मचर करना–आगा-पीछा सोच कर टाल-मटोल करना। उ० क्या हचर-मचर कर रहे हो, चलो भी।

हज़म करके डकार तक न लेना–किसी वस्तु या बात को एकदम अपने तई रख लेना, उसकी कोई क्रिया-प्रतिक्रिया न प्रगट करना, पूरी तरह हड़प जाना।

हज़म होना–बेईमानी से लिया हुआ माल का अपने पास रहना। पच जाना। उ० बेईमानी का धन हज़म न होगा।

हजामत करना–दे० 'हजामत बनाना'।

हजामत बनाना–१ लूटना, धन हर लेना। उ० चोरो ने वहाँ उसकी खूब हजामत बनाई। २. बाल काटना। ३ पीटना, खूब मारना। उ० ऐसी हजामत बनाऊँगा कि जिंदगी भर याद करोगे। ३. परीशान करना।

हजामत होना–१ दड होना, मार पड़ना। उ० लड़के की वहाँ खूब हजामत हुई। २ लूट होना। उ० बुढिया के धन की खब हजामत हुई।

हजार मुंह से–अत्यधिक, अनेक प्रकार से।

हज़ार तरह से–बहुत तरह से।

हज़ारो सुनाना–बहुत भला-बुरा कहना। उ० इस छोटी-सी बात पर आप हज़ारों सुना रहे हैं, आपको शर्म नही आती!

हज़ूर में हाजिर रहना–खिदमत में हाज़िर रहना।

हटक मानना–मना करने पर किसी काम के करने मे रुकना। उ० बंसी-धुनि मृदु कान परत ही गुरुजन हटक न मानति। हटक मानो नही तो विपत्ति मे पडोगे।

हठ कर–ज़बर्दस्ती, बलात्। उ० हठ कर वह मेरे घर मे घुस गया, तो आखिर मैं कितना दुतकारता।

हठ करना–दे० 'हठ पकडना'।

हठ ठानना–दे० 'हठ पकडना'।

हठ पकडना–किसी बात के लिए ज़िद्द करना। उ० छोटे बच्चे खूब हठ पकड़ते हैं। क्या बच्चो की तरह हठ पकडते हो?

हठ बांधना–दे० 'हठ पकडना'।

हठ मे पड़ना–हठ करना। उ० मन हठ परा न मान सिखावा। हठ मे पडोगे तो नुक़सान होगा।

हठ रखना–जिस बात के लिए कोई अड़े, उसे पूरा करना। उ० उसका हठ रखना ज़रूरी है, नही तो नाराज़ हो जायगा। हट रखने से लडके और हठी हो जाते हैं।

हड़प करना–ग़ायब करना, बेईमानी से ले लेना। उ० दूसरे का रुपया इसी तरह हड़प कर लोगे?

हड़बड़ करना–जल्दी मचाना। उ० हड़बड करोगे तो काम खराब हो जायगा।

हड़बडी मे पडना–उतावली की दशा मे होना। जल्दी मे पडना। उ० हडबडी में पड कर तुमने काम खराब कर दिया।

हड्डियो की माला होना या हो जाना–दे० 'सूख कर कांटा हो जाना'।

हड्डी-गुड्डी–हड्डी-हड्डी। उ० मारूँगा तो हड्डी गुड्डी भी न बचेगी।

हड्डी-पसली दुरुस्त करना–खूब मारना। उ० अगर वह चोर पकडा गया होता तो उसकी हड्डी-पसली दुरुस्त कर दी जाती।

हड्डी-हड्डी तोडना–दे० 'हड्डी-पसली दुरुस्त करना'।

हड्डे के छत्ते छेडना–दे० 'भिड के छत्ते छेडना'।

हलके इज्ज़त करना–दे० 'कलंक लगना'। उ० हलके इज्ज़त न करो, उनकी भी कुछ इज्ज़त है, और कुछ डर नही तो अपनी ही इज़्ज़त से डरो।

हत्थे चढ़ना—वस या काबू मे होना। उ० वह तो तुम्हारे हत्थे चढने से रहा।

हत्या का टीका माथे पर होना—हत्या के लिए जिम्मेदार होना।

हत्या टलना—झझट दूर होना। उ० चलो किसी तरह हत्या टली, अब होश रहा तो उसके घर कभी न जायंगे।

हत्या लगना—हत्या का पाप लगना। उ० गाय मारने से हत्या लगती है।

हत्या सिर लगाना—झझट का काम देना। उ० यह हत्या सिर लगा कर आप मुझे विपत्ति मे न फंसाइए।

हथउधार देना—दे० 'हथफेर देना'।

हथकंडा—चालाकी की युक्ति।

हथफेर देना—बिना गिरवी रखे या लिखे थोडे दिन के लिए रुपया देना।

हथफेरी करना—१ गबन करना, माल मारना। २ खाने पर हाथ मारना।

हथिया लेना—जबरदस्ती अधिकार कर लेना।

हथियार करना—हथियार से लडना।

हथियार चलाना—१ लडाई करना। २. हथियार से वार करना।

हथियार ठढे करना—लडाई के अस्त्र-शस्त्र को शरीर से उतार कर रखना।

हथियार डाल देना—अपने को शत्रु के हवाले कर देना, हार मान जाना। उ० पिछली लडाई मे जापानियो ने हथियार डाल दिये।

हथियार बांधना—दे० 'हथियार लगाना'।

हथियार लगाना—अस्त्र धारण करना। उ० हथियार लगा कर युद्ध मे जाना चाहिये।

हथेली का आंवला—१ सहज प्राप्त वस्तु। २ अच्छी तरह जानी-समझी बात।

हथेली का फफोला—बहुत सुकुमार वस्तु। उ० हथेली के फफोले नही हो, सीधे से काम करो, नही तो खाना नहीं मिलेगा।

हथेली खुजलाना—१ कुछ मिलने का शकुन होना। उ० आज सुबह ही से मेरी हथेली खुजला रही है, कुछ प्राप्ति अवश्य होगी। २. मारने की इच्छा होना। उ० आज मेरी हथेली खुजला रही है, किसी को मारना होगा क्या?

हथेली देना—सहायता करना। उ० आफत मे फंसे हुये को हथेली देना सबका धर्म है। ज़रा हथेली दे दो मेरा बेड़ा पार लग जाय।

हथेली पर जान रखना या लेना—प्राण की कुछ परवाह न करना। उ० मैं तो देश के लिए हथेली पर जान रखे फिर रहा हूँ।

हथेली पर जान होना—जान जोखिम मे होना। उ० इस समय दुश्मनों की वजह से हथेली पर जान है।

हथेली पर सरसों जमाना—देर से होने वाले काम को अति शीघ्र करना या कोई असंभव काम करना।

हथेली पर सिर रखना—दे० 'हथेली पर जान रखना'।

हथेली में आना—वश में आना। अधिकार मे आना। उ० किसी तरह वह हथेली में आ जाय तो काम बन जाय।

हथेली लगाना—दे० 'हथेली देना'।

हद व हिसाब नहीं—अपार, बहुत ही ज्यादा। उ० आपके झूठ बोलने का हद व हिसाब नहीं है।

हद से ज्यादा—बहुत अधिक। उ० आप हद से ज्यादा झूठ बोलते हैं।

हप कर जाना—१ झटपट खा जाना। उ० देखते-देखते वह सारा भात हप कर गया। २. हड़प लेना।

हबर-हबर करना—१ जल्दी से खाना खाना। उ० हबर-हबर क्या कर रहे हो, क्या गाड़ी छूटी जा रही है। २ जल्दी करना।

हम-प्याला होना—जिगरी दोस्त होना।

हमराह करना—साथ मे करना। उ० उसे भी हमराह कर लो, नहीं तो भूल जायगा।

हमराह होना—साथ चलने वाला होना। उ० मैं भी बद्रीनाथ के लिए आपका हमराह होना चाहता हूँ।

हमल गिरना—गर्भपात होना। उ० उसका आज पांच माह का हमल गिर गया।

हमल गिराना या गिरा देना—गर्भपात कराना। उ० बहुत सी औरतें हमल गिरा देती हैं।

हमल रहना या होना—गर्भ रहना। उ० बहुत दिनो के बाद राजा साहब के घर मे हमल है।

हमेव टूटना या टूट जाना—गर्व चूर्ण होना। उ० भगवान करे, तुम्हारा हमेव टूट जाय।

हमेशा रोते जन्म गुज़रना—एक-न-एक आफत ज़िंदगी भर रहना। उ० बुढ़िया का हमेशा रोते जन्म गुज़रा है।

हरताल फिर जाना—खराब या बर्बाद हो जाना।

हरदी-चूने-सा एक रग हो जाना—कोई भेद न रह जाना।

हरफ़ आना—दोष लगना, कसूर लगना। उ० आपका कहना तो कर रहा हूँ, पर यदि मेरे ऊपर जरा भी हरफ आया तो ठीक न होगा।

हरफ उठाना—अक्षर पहचान कर पढ़ लेना। उ० अब तो बच्चा हरफ उठा लेता है।

हरफ बैठाना—टाइप जमाना, छापे का अक्षर क्रम से रखना।

हरा बाग—व्यर्थ आशा बँधाने वाली बात। उ० आपके सामने जो हरा बाग़ है, उस पर न भूलिए, वह दो दिन से अधिक नही रहेगा।

हरा-भरा रहना—धन एव सतान से भरा-पूरा रहना। उ० ईश्वर करे आप हमेशा हरे-भरे रहें।

हराम की कौड़ी—अनुचित रीति से या मुफ्त मे मिला धन।

हराम घाट उतारना—बुरे रास्ते पर लगाना।

हराम मुँह लगना—१ बुरी कमाई पर रहना। उ० हराम मुँह लगना बडी बुरी चीज़ है। २. मुफ्त का रुपया-पैसा पाने का चस्का लगना। उ० हराम मुँह लगा है, क्यो न मोटे होगे?

हरा हो जाना—१ ताजा हो जाना। उ० एक गिलास शर्बत पिला दो तो वह भी हरा हो जाय। २ प्रसन्न हो जाना। उ० वह तुम्हें देखते ही हरा हो गया। ३. फिर से स्मरण हो आना। ४ आज मित्र के लडके को देखकर मित्र के मरने का घाव हरा हो गया।

हरियाली सूझना—१. आसान समझना। २. खुशी में लीन होना। उ० नई शादी हुई है, उसे तो हरियाली सूझ रही है। ३ भविष्य सुन्दर दिखाई देना। उ० विद्यार्थी-जीवन तक बड़ी हरियाली सूझती है, पर उसके समाप्त होते ही हेकड़ी भूल जाती है।

हर्रे फिटकरी के बिना चोखा रग होना—बिना खर्च या परिश्रम के अच्छा काम होना।

हर्रे लगे न फ़िटकरी—बिना परिश्रम के; मुफ्त में।

हरिश्चन्द्र होना—बहुत बड़ा सत्यवादी होना। उ० आज के ससार में कौन हरिश्चद्र है?

हलकम मचाना—जल्दी करना। उ० हलकम मचाओगे तो काम खराब हो जायगा।

हलक मे उँगली डाल कर निकालना—पचाई हुई चीज़ को वापस लेना। उ० मुझे ऐसा वैसा आदमी न समझो, अगर मेरा रुपया न दोगे तो मैं हलक मे उँगली डाल कर निकाल लूँगा।

हलका करना—बेइज्ज़त करना। उ० भरी सभा मे किसी को क्यो हलका करते हो?

हलकापन दिखाना—तुच्छता दिखाना।

हलका लहू होना—खून देखते ही अचेत हो जाना। उ० उसका लहू हलका है, कल आपरेशन रूम मे जाते ही बेहोश हो गया।

हलका होना—छोटा होना, तुच्छ होना। उ० अगर नीच काम करोगे तो समाज की आँख मे हलके हो जाओगे।

हलकी बात—१. बुरी बात। २. तुच्छ या छोटी बात। उ० ऐसी हलकी बात मुँह पर फिर न लाना।

हलके भारी होना—भार-सा जानना। उ० आप मेरे दो दिन रहने से ही हलके भारी हो रहे हैं, ऐसा जानता तो कभी न रुकता।

हलचल मचाना या मचा देना—१. खलबली मचाना। उ० आपका जोशीला भाषण विद्यार्थियो मे हलचल मचा देगा। २. जोश भड़काना। ३ आन्दोलन करना।

हलचल होना—१ घबराहट होना। उ० महीने मे दस-बारह डाके पड चुके, इससे देहात मे काफी हलचल है। २ खलबली होना। ३ आन्दोलन होना।

हलवा निकालना—खूब मारना। उ० अगर ज्यादा शरारत करोगे तो मैं तुम्हारा हलवा निकाल लूँगा।

हलवे माँडे से काम—लाभ ही से मतलब। उ० तुम्हें तो अपने हलवे माँडे से काम है, किसी का चाहे कुछ भी हो।

हलाक होना—मार डालना। उ० उस नीच ने मेरी बकरी को हलाक कर डाला।

हलाकान होना—परीशान होना। उ० तुमसे तो हलाकान हो गया।

हलाल करना—१ मार डालना। उ० मुर्गी हलाल करो । २ ईमानदारी के साथ व्यवहार करना। उ० जिसका खाना, उसका हलाल करके खाना।

हलाल का—ईमानदारी से पाया हुआ । उ० हलाल के धन से तुम फलोगे।

हल्दी उठाना—विवाह में हल्दी और तेल लगाने का रस्म होना। उ० आज मेरे छोटे भाई की हल्दी उठेगी ।

हल्दी की फुटी गांठ हो जाना—चूर या पस्त हो जाना।

हल्दी चढना—दे० 'हल्दी उठना'।

हल्दी लगना—शादी होना। उ० किसी तरह हल्दी लग जाती तो भगवान को धन्यवाद देता।

हल्दी लगा कर बैठना—१ कोई काम-धाम न करना। उ० हल्दी लगा कर बैठने से काम न चलेगा, कुछ काम करो। २ घमड मे फूला रहना। उ० वह आजकल हल्दी लगा कर बैठा रहता है ।

हल्दी लगी न फिटकरी—मुफ्त मे, विना कुछ खर्च किये। उ० हल्दी लगी न फिटकरी और उसकी शादी हो गई।

हल्फ उठाना—सौगंध खाना। उ० उसने सबके सामने हल्फ उठा लिया तो हाकिम क्या करें?

हल्ला करना—शोर करना। उ० लड़के शाम को खेलते समय बहुत हल्ला करते हैं । उ० हल्ला करने से काम न चलेगा, कुछ लिखित कार्रवाई करो।

हवस पकाना—व्यर्थ कामना करना। उ० तुम तो हवस पकाने के सिवा और कुछ नहीं जानते ।

हवाइयां छूटना—रग फीका पड़ जाना । चेहरा उतर जाना। उ० यह समाचार सुन कर हवाइयां छूटने लगी।

हवाई खवर—अफवाह। उ० हवाई खवर पर विश्वास करना ठीक नही।

हवा उखडना—रोव न रह जाना।

हवा उड़ना—खवर फैलना। अफ़वाह फैलना। उ० वात को अभी गुप्त ही रखो, हवा उडते देर नही लगती।

हवा का रग देखना—समय देखना । उ० हवा का रग देख कर काम करना चाहिये।

हवा के घोड़े पर सवार होना—१. वहुत जल्दी मे होना। उ० आप मेरे यहाँ आते हैं तो हवा के घोडो पर सवार होते हैं। २. वहुत तेज जाना। उ० वह जैसे हवा के घोड़े पर सवार है, देखो न वहाँ निकल गया।

हवा के बबूले फोड़ना—अपने मन के घोड़े दौडाना। ख्याली पोलाव पकाना। उ० एक ओर तो हवा के बबूले फोड़ने वाले साधारणतया इस संसार मे कुछ नहीं कर पाते, पर दूसरी ओर जगत्-प्रसिद्ध कलाकार मूलतः हवा के ववूले ही फोडने वाले होते हैं।

हवा को गिरह में बांधना—न होने वाली बात करने की कोशिश करना, असंभव काम करना। उ० यह काम आपसे न होगा, इसे करना तो हवा को गिरह मे बांधना है।

हवा खाना—१ आना वेकार होना। उ० इस बार आपका आना हवा खाना हो गया, क्योंकि आपका काम नही होगा। २. अच्छे स्थान पर घूम कर साफ हवा का सेवन करना। उ० वे हवा खाने नैनीताल गए हैं।

हवा तक न छूना—कोई असर या संसर्ग न होना।

हवा देना—बढाना, उग्र करना, उत्तेजित करना।

हवा देख कर पाल तानना—परिस्थिति और रुख देख कर काम करना।

हवा न लगना—१ पर्दे मे रहना । २. सुख-सुविधा मे रहना।

हवा न लगने देना—१. तनिक भी पास न फटकने देना, दूर रखना। २. प्रभाव न पड़ने देना।

हवा पर चलना—१ निराधार चलना। उ० हवा पर चलना सरासर वेवकूफ़ी है। २. घमंड करना। उ० थोडा धन हो गया तो हवा पर चलने लगे। यही तुम्हारी विसात है । ३. अनुमान लगाना। उ० हवा पर ही चलते-चलते उसने सच्ची बात जान ली।

हवा पर दिमाग़ होना—वहुत घमड करना। उ० पद पा जाने से उसका दिमाग़ हवा पर है।

हवा पलटना—१. हालत मे सुधार होना। उ० अव तो देश की हवा कुछ पलटी है। २. दशा का खराव होना। उ० देखते हैं तो देश की दशा फिर पलटेगी। पता नही क्या-क्या देखना है?

हवा पीकर रहना—विना आहार के रहना। उ० आजकल वह साधु हवा पीकर रह रहा है।

हवाइयाँ उड़ना या उड़ाना–चेहरे का रंग फीका पड़ जाना या कर देना।

हवाई किला ढा देना–सारी कल्पनाएँ नष्ट करना।

हवाई किला बनाना–ख्याली पुलाव पकाना।

हवा फाँक कर रहना–दे० 'हवा पीकर रहना'।

हवा फिरना–दे० 'हवा पलटना'।

हवा फैलना–किसी विचार का प्रचार होना।

हवा बताना–टाल देना। धता बताना। उ० वह अपना काम निकाल कर तुम्हे हवा बता देगा।

हवा बदलना–दे० 'हवा पलटना'।

हवा बाँधना–दे० 'डीग हाँकना'।

हवा बिगड़ना–१ समय मे फर्क होना। बुरी दशा आना। उ० इस महँगी मे धनियो की भी हवा बिगड गई है। २ वातावरण खराब होना। उ० इस समय हवा बिगडी है, जरा सम्हल कर आया-जाया करो।

हवा में उड़ा देना–कोई ध्यान न देना।

हवा मे महल बनाना–कल्पना लोक मे विचरण करना।

हवा मे गाँठ बाँधना–न होने वाले काम को करने का प्रयास करना। उ० हवा मे गाँठ बाँधना मूर्खता का काम है।

हवा मे से पकडना–सुनी-सुनाई बात को ले लेना।

हवा लगना–साथ का असर पडना। उ० उन दुष्टो की हवा लगेगी तो तुम्हारा लडका भी खराब हो जायगा।

हवाला करना–१ जिम्मे कर देना। उ० पिताजी ने मुकदमे का सब काम मेरे हवाले कर दिया। २. नाम लेना। उ० उनका हवाला कर दोगे तो वे कुछ न लेंगे। ३ नजीर के रूप मे पेश करना।

हवालात करना–१ जेल मे रखना। उ० हकीम इस डाकू को अवश्य हवालात करेगा। २. सजा के पहले नजरबंद या भीतर रखना।

हवाला देना–१. जहाँ से उद्धरण लिया गया हो, उस पुस्तक का नाम, संस्करण, छपाई का सन् तथा पृष्ठ आदि देना। २ संदर्भ देना। ३ नाम लेना। उ० आपका हवाला देते हुए उन्होने अपनी अर्जी दी तो मुझे मानना ही पडा।

हवाले करना–दे देना, सौंपना। उ० जिसकी चीज़ है, उसके हवाले करो।

हवाले पडना या पड़ जाना–वश मे आ जाना। उ० ह्वै है कहा अरविन्द सो आनन इन्दु के आय हवाले पर्‌यो। अब तो आप मेरे हवाले पड गए।

हवास गुम होना–होश ठिकाने न रहना। उ० शेर को देखते ही मेरा हवास गुम हो गया।

हवास ठिकाने होना–चेत मे होना। उ० हवास ठिकाने हो जाय तो उससे बात करो, अभी वह क्रोध मे है।

हवा से अछूता रहना–कोई असर न होना।

हवा से झगडना–दे० 'हवा से लडना'।

हवा से बचना–प्रभाव से बचना।

हवा से बातें करना–१ बहुत तेज चलना। उ० मेरा घोडा गाडी मे जुतते ही हवा से बातें करने लगता है। २ आप ही आप बोलना। उ० वह पागल की तरह हवा से बातें करता है। ३. फुर्तीला होना। ४ जल्द-बाज होना।

हवा से लड़ना–बिना बात के लडना। उ० बहुत सी झगडालू औरतें हवा से लडती हैं।

हवा हो जाना–१ बहुत तेज दौडना। उ० चाबुक पडते ही घोडा हवा हो जाता है। २ गायब हो जाना। उ० वह कहाँ हवा हो गया ?

हस्तक्षेप करना–किसी काम या बात मे दखल देना।

हहा खाना–बहुत विनती करना। उ० क्या हहा खा रहे हो, वह किसी की सुन नही सकता।

हाँक देना–ज़ोर से पुकारना। उ० कौन आपको हाँक दे रहा है ?

हाँक-पुकार कर कहना–सबको सुना कर कहना। उ० उसने हाँक-पुकार कर कहा कि जो मुझसे लड़ना चाहे, लड ले।

हाँक मारना–दे० 'हाँक देना'।

हाँक लगाना–दे० 'हाँक देना'।

हाँ जी हाँ जी करना–दे० 'हाँ मे हाँ मिलाना'।

हाँडी के चावल का पता होना–साधारण से साधारण गुप्त बात का पता होना।

हाँडी मे कालिख लगना–खाने-पीने से तंग होना। उ० इस महँगी मे जिसकी भी हाँडी

मे कालिख लग जाय, उसको धनवान ही समझो।

'हाँ' मे 'हाँ' मिलाना—१ चापलूसी करना। किसी की 'हाँ' में 'हाँ' मिलाना मैं पसन्द नही करता। २ हाँ करना।

हाँ-हाँ करना—स्वीकार करना। उ० अभी तो हाँ-हाँ कर रहा है, पीछे इन्कार कर जायेगा।

हाँ-हजूरी करना—दे० 'हाँ मे हाँ मिलाना'।

हाजिर जवाब—किसी भी बात का ठीक-ठीक और तुरन्त उत्तर देने वाला।

हाज़िरी देना—सेवा मे उपस्थित होना, रहना।

हाट करना—बाज़ार करना। उ० हाट करने जा रहा हूँ।

हाट खोलना—दूकान करना। उ० निरभागी ने खोली हाट। ले गए चोर भरत औ बाट।

हाट चढ़ना या चढ़ जाना—१ बाज़ार में बिकने को आना। उ० कल मेरा आलू भी हाट चढेगा। २ बाज़ार का मँहगा होना। उ० आजकल हाट चढ गया है।

हाथ आना—१ मिलना। उ० था रात शबे वस्ल मे क्या शोर मचाया, हाथ आए तो काटूँ मैं गला मुर्ग़े शहर का। जफाएँ करते हैं थम-थम के इस ख्याल से वो, गया तो फिर नहीं ये मेरे हाथ आने का। उ० अगर कुछ पैसे हाथ आ गये तो मैं आज सिनेमा देखने अवश्य जाऊँगा। २ किसी खेल या तलवार, लाठी आदि चलाने का हाथ जानना। उ० तलवार का एक भी हाथ मुझे नही आता।

हाथ उठा-उठा कर कहना—खुले आम ज़ोर देकर कहना।

हाथ उठा-उठा कर दुआ देना—बहुत प्रेम से दुआ देना। दिल से दुआ देना। उ० वह हाथ उठा उठा कर दुआएँ देती है।

हाथ उठा कर कोसना—खूब कोसना। उ० तुमने उसकी कुछ बुराई की है क्या? वह तुम्हें हाथ उठा-उठा कर कोस रहा था।

हाथ उठा कर देना—१. खुशी से देना। उ० उस गरीब को कुछ हाथ उठा कर दे दो, भगवान तुम्हारा भला करेगा। २ सबको बतला कर देना। उ० देना ही है तो चुपके से दो, हाथ उठा कर क्यो देते हो?

हाथ उठाना—१ पीटना। उ० छोटे बच्चे पर हाथ उठाना ठीक नही है। २ प्रणाम करना। उ० बड़ो को देख कर हाथ उठाना चाहिए। ३ आशीर्वाद देना। उ० साधु ने देखते ही हाथ उठाया।

हाथ उठा बैठना—१. मार बैठना। २ किनारा कसना। अलग होना। उ० कहेंगे हम कि हमको चाहते हो, अगर तुम हाथ उठा बैठे सितम से।

हाथ उठा लेना—छोड़ देना, कोई सरोकार न रखना। उ० क्या काम है बला से जो तू हो असीरे ज़ुल्फ, जब से कि हाथ ऐ दिले-मुज्तर उठा लिया।

हाथ उतर जाना—हाथ के जोड़ का उखड़ जाना। उ० बोझ डाले ना बहुत दस्ते दुआ पर तासीर, मुझको डर है कि मेरा हाथ उतर जायेगा।

हाथ ऊँचा रहना—१. भाग्यवान् होना। २. दे० 'हाथ ऊँचा होना'। उ० दौलत जो तेरे पास है रख याद तू ये बात, खा तू भी और अल्लाह की कर राह मे खैरात। देने से भी इसके तेरा ऊँचा रहेगा हाथ, औ यो भी तेरी गुज़रेगी सो ऐश से औक़ात।

हाथ ऊँचा होना—दानी और खर्चीला होना। उ० तुम्हारे पास धन है, पर तुम्हारा हाथ ऊँचा नही है।

हाथ ओछा पड़ना—पूरा हाथ न पडना। उ० हाथ तो ओछा पडा था गिर पड़े हम आप से, दिल के कातिल को बढाना कोई हमसे सीख जाय।

हाथ ओट लेना—हाथो की ढाल बना लेना। हाथ पर वार रोकना।

हाथ कंगन को आरसी क्या होना—प्रत्यक्ष बात के लिए दूसरे प्रमाण की कोई आवश्यकता न होना।

हाथ कच्चा होना—(किसी काम या कला के करने मे) हाथ मे कुशलता न होना, अनिपुण होना।

हाथ कट जाना—लिख देने के कारण उससे बाहर या अलग जाने की गुन्जाइश न रह जाना। उ० मेरा हाथ कट गया है, नही तो मैं आपका काम बना देता।

हाथ कटा देना—कुछ करने लायक न रह जाना (लिख कर)।

हाथ कमर पर रखना—बहुत कमजोर होना। उ० दो ही दिन के उपवास मे वह हाथ कमर पर रख कर चलने लगा है।

हाथ का खिलौना—१ प्यारी चीज़। उ० यह लडका मेरे हाथ का खिलौना है। २ कठ-पुतली। ऐसी चीज़ जिसे मनमाना नचाया जा सके। उ० आज के राजा तो जनता के प्रति-निधियों के हाथ के खिलौने हैं।

हाथ काट लेना—१ हाथ से लिखवा लेना। उ० आपका हाथ काट लिया है, अब टस से मस नहीं हो सकते। २ बिल्कुल लाचार कर देना।

हाथ कानों पर रखना या रख लेना—आश्चर्य मे पड़ना। उ० उस पाँच वर्ष के लड़के के मुँह ऐसी बातें सुन कर सभी ने हाथ कानो पर रख लिये।

हाथ का पांसा होना—पूरी तरह वश मे होना।

हाथ का मक्खी न उड़ाना—कुछ भी न करना।

हाथ का सच्चा—१ सच्चा आक्रमण करने वाला। उ० हाथ का सच्चा है। उसका वार कभी खाली नहीं जा सकता। उ० उसका भाई हाथ का सच्चा है, उसका विश्वास सभी लोग कर सकते हैं।

हाथ की कठपुतली होना—पूरी तरह वश में होना।

हाथ की मैल होना—तुच्छ वस्तु होना। उ० बिडला के लिए रुपया हाथ की मैल है।

हाथ की लकड़ी होना—सहारा होना।

हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठना—बेकार वक्त जाया करना। उ० आप क्या यहाँ महीनो से हाथ के ऊपर हाथ धरे बैठे हैं, क्यो नही कुछ काम करते ?

हाथ के तोते उड जाना—अक्ल चली जाना। उ० बाप के मरते ही जैसे उसके हाथ के तोते उड गये, अब तो उससे कुछ होता ही नहीं।

हाथ को हाथ न सूझना—बहुत अँधेरा होना। उ० भादो की अँधेरी रात मे हाथ को हाथ नहीं सूझता है।

हाथ ख़ाली जाना—१ वार ठीक न लगना। उ० अगर इस बार भी हाथ खाली गया तो तुम्हारी हार है। २. असफल जाना। बिना कुछ लिए जाना। उ० तुम ऐसे समय मे आये कि इस बार भी हाथ खाली जाओगे। ३

हाथ ख़ाली होना—१. पास मे रुपया-पैसा न होना। उ० भाई इस समय मेरा हाथ खाली है, मुझसे न माँगना। २ हथियार पास न होना। उ० हाथ खाली है, नही तो बताता। ३ कुछ काम न होना। उ० आज मैं हाथ खाली हूँ, अगर घूमने चलोगे तो मैं भी चलूँगा।

हाथ खींचना—काम से हट जाना। उ० जब उन्होंने इस काम से हाथ खींच लिया, तो यह मुझसे अकेले नहीं हो सकता।

हाथ खुजलाना—१. कुछ मिलने का शकुन होना। उ० हाथ खुजला रहा है, कुछ मिलेगा क्या ? २ किसी को मारने की इच्छा होना।

हाथ खून से रंगे होना—हत्यारा होना।

हाथ खोल देना—खुल कर व्यय करना। उ० जहाँ इज्जत का सवाल आता है, वह हाथ खोल देता है।

हाथ गरम होना—द्रव्य मिलना, रिश्वत मिलना।

हाथ घिसना—बेकार तकलीफ़ उठाना। उ० बिना किसी लाभ के क्यो हाथ घिसते हो ?

हाथ चढ़ना—१ वश में आना। उ० अगर वह एक बार भी हाथ चढ गया तो सब काम करा लूँगा। २ मिलना। उ० कुछ हाथ चढे तो क्या कह दूँ।

हाथ चलना—१ पीटना। उ० उसका लड़की पर बहुत हाथ चलता है। २ तेज़ लिखना। ३ किसी भी कला मे अच्छी गति होना।

हाथ चलाना—हाथ से मारना, मारना। उ० लडको पर हरदम हाथ क्यो चलाते हो ?

हाथ चाटना—सब खाकर भी संतोष न होना। उ० आज का भोजन ऐसा बना था और इतना कम था कि सब हाथ चाटते गये।

हाथ-चालाक़—जल्दी से चीज़ ग़ायब करने वाला। उ० उस हाथ-चालाक़ आदमी को घर के अन्दर मत आने दो।

हाथ चूमना—हाथ की कुशलता पर मोहित होकर हाथ चूमना। उ० इच्छा होती है कि इस तसवीर बनाने वाले का हाथ चूम लूँ।

हाथ छोटा होना—कजूस होना।

हाथ छोड़ना—प्रहार करना, मारना।

हाथ जोड़ना—१ वास्ता न रखना। उ० आप ऐसे दुष्टों से हाथ जोड़ना ही ठीक है। २ प्रणाम करना। उ० मास्टर साहब को हाथ जोड़ो।

हाथ जोड़े रहना—आज्ञाकारी होना, सेवा मे उपस्थित रहना।

हाथ झाड़ कर खड़ा होना—यह दिखाना कि मेरे पास कुछ नहीं है। उ० जब कोई काम पड़ता है तो आप हाथ झाड कर खड़े हो जाते हैं।

हाथ झाड़ कर चल देना—सब कुछ छोड कर चल देना।

हाथ झूठा पड़ना—१ बात झूठी निकलना। उ० एक बार भी अगर हाथ झूठा पड गया तो कोई विश्वास न करेगा। २ वार न लगना। उ० अगर इस बार आपका हाथ झूठा न पड़ा होता तो उसका सर धड से अलग हो जाता।

हाथ डालना—हस्तक्षेप करना, दखल देना। उ० मैं आप लोगों के झगडे मे हाथ न डालूंगा।

हाथ तंग होना—पास मे रुपया-पैसा न होना। उ० आजकल हाथ तंग है, बाद मे दे दूंगा।

हाथ ताकना—दूसरे के अधीन होना। दूसरे के भरोसे होना। उ० भगवान न करे कि किसी को किसी का हाथ ताकना पड़े।

हाथ तैयार होना—हस्त कला आदि मे अभ्यस्त एवं कुशल होना।

हाथ तोड़-तोड़ कर खाना—१ दे० 'हाथ चाटना'। २ बहुत खाना।

हाथ थामना—१ मारने से रोकना। २ सहारा देना।

हाथ दबा कर—१ धीरे-धीरे। २ किफायत से।

हाथ दिखा जाना—हाथ की सफ़ाई से कुछ मार ले जाना। उ० बेटा हमे ही हाथ दिखा जा रहे हो, चुपके से घड़ी निकाल कर रख दो।

हाथ दिखाना—१ वीरता दिखाना। उ० कुछ हाथ दिखाओ तो मैं जानूं कि तुम वीर हो। २. नब्ज़ दिखाना। उ० डाक्टर को हाथ दिखाओ तो रोग का पता चलेगा। ३ ज्योतिषी को हाथ की रेखाएँ दिखाना। ४ किसी कला या विद्या में अपनी योग्यता दिखाना। उ० तुम भी हाथ दिखाओ।

हाथ दुमाते आना—दे० 'हाथ हिलाते आना'।

हाथ धरना—१. मदद देना, बचाना। उ० हाथ धरो नहीं तो मैं डूबा। २ विवाह करना। उ० जिसका हाथ धरा, उसका निर्वाह भी करो।

हाथ धोकर पीछे पड़ना—तन-मन से पीछे पडना। उ० अगर हाथ धोकर पीछे पड़ोगे तो अवश्य काम पूरा हो जायगा। वह तुम्हारे पीछे हाथ धोकर पड़ा है।

हाथ धोना—दे० 'हाथ धो बैठना'।

हाथ धो बैठना—१ अधिकार से चला जाना, खो देना। उ० मुकदमा तो खूब लडा, पर खेत से हाथ धो बैठा। यही रवैया रहा तो एक दिन तुम जान से हाथ धो बैठोगे।

हाथ न आना—१. वश मे न आना। २ प्राप्त न होना।

हाथ न सूझना, हाथ से हाथ न सूझना—बहुत अँधेरा होना।

हाथ न धरने देना—१. बात के फंदे मे न आना। उ० जो होशियार होगा अपने ऊपर तुम्हे हाथ न धरने देगा। २ छूने भी न देना। उ० लेना तो दूर रहा, वह मुझे उस चीज़ पर हाथ भी न धरने देगा।

हाथ नाड़ी पर होना—आतरिक स्थिति से अवगत होने की चेष्टा करते रहना।

हाथ पकड़ना—१ रक्षा मे लेना। उ० हाथ पकडे हो तो उसकी जान बचाओ। २ रोकना। ३. बेइज्जत करना।

हाथ पड़ना—वार पडना। उ० एक भी हाथ पडेगा तो खतम हो जाओगे।

हाथ पत्थर-तले दबना—वश मे होना। दबाव मे होना। उ० उसका हाथ पत्थर तले दबा है, नही तो वह सब कुछ कर डालता।

हाथ पर धरा होना—१ ज़बान पर होना। उ० गाली तो उसके हाथ पर धरी होती है। २ पास मे होना, उपलब्ध होना।

हाथ पर सरसों जमाना—शीघ्रता करना, जल्दी चाहना। उ० हाथ पर सरसो न जमाओ नही तो काम बिगड जायगा।

हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना—१ बेआसरा का हो जाना। २ दे० 'हाथ पर हाथ धर कर बैठना'।

हाथ पर हाथ धर कर बैठना—बिना काम के बैठे रहना। उ० तुमको दिन भर हाथ पर हाथ धर कर बैठना कैसे अच्छा लगता है?

हाथ पर हाथ मारना—प्रण करना, बाजी लगाना। उ० उसने हाथ पर हाथ मार कर कहा कि मैं उसे आज जरूर मार डालूंगा।

हाथ पसारना—याचना करना। उ० जिससे कुछ मिलने की आशा हो, उसी के सामने हाथ पसारना चाहिये।

हाथ पसारे जाना—मर जाना, बिना कुछ लिए दूसरे लोक को जाना। उ० ससार मे जो आया है, एक दिन हाथ पसारे जायगा।

हाथ-पांव चलना—१. काम करने की शक्ति होना। उ० जब तक हाथ-पांव चलता है, हम किसी के मोहताज नही हैं। २ चचल रहना। उ० तुम्हारा हाथ-पांव तो चलता ही रहता है, कभी शात तो बैठते ही नही।

हाथ-पांव जोडना—प्रार्थना करना। उ० चोर ने बहुत हाथ-पांव जोड़ा, तब कही सिपाही ने २५ रु० पर उसका मुकदमा तय किया।

हाथ-पांव टूटना—देह मे दर्द होना। उ० आज सुबह ही से मेरे हाथ-पांव टूट रहे हैं।

हाथ-पांव ठंडे पड़ना—दे० 'हाथ-पांव ठडे होना'।

हाथ-पांव ठंडे होना—मरने का समय करीब होना। उ० बुढिया के हाथ-पांव ठडे हो गये हैं, उसे चारपाई से उतार दो।

हाथ-पांव तोड़ना—१ बहुत परिश्रम करना। उ० बहुत हाथ-पांव न तोडो, नही तो बीमार पड जाओगे। २ मार कर अपाहिज कर देना। उ० आज रात को चोरों ने उसके हाथ-पांव तोड दिये।

हाथ-पांव निकालना—बहुत क्रोधित होना। उ० क्या छोटी-सी बात पर हाथ-पांव निकाल रहे हो?

हाथ-पांव पकडना—विनती करना। उ० अरे भाई उसका हाथ-पांव पकड कर किसी तरह मनाओ, नही तो कही चली जायगी तो बड़ी परेशानी होगी।

हाथ-पांव पीटना—दे० 'हाथ-पांव मारना'।

हाथ-पांव फूलना—भय से घबरा जाना। उ० हथियारबन्द डाकुओ को देख कर मेरे हाथ-पांव फूल गये।

हाथ-पांव फैलाना—लम्बा-चौडा काम फैलाना। उ० तुम अकेले क्या कर सकते हो, अगर अधिक हाथ-पांव फैलाना है तो दो-चार नौकर रख लो।

हाथ-पांव बचाना—होशियारी से काम करना। उ० यहाँ हाथ-पांव बचाये रखना, नही तो जीवन बरबाद हो जायगा।

हाथ-पांव मारना—बहुत प्रयत्न करना। उ० कितना हाथ-पांव मारो तुमसे यह काम न होगा।

हाथ-पांव हिलाना—१ परिश्रम करना। उ० जवानी मे खूब हाथ-पांव हिलाना चाहिये। २ काम करना। उ० बिना हाथ-पांव हिलाये खुशहाल नही हो सकते।

हाथ पीला होना—विवाह होना।

हाथ पूरा पडना—हथियार ठीक से लगना। उ० अगर हाथ पूरा पडा होता तो उसका सर धड से अलग हो जाता।

हाथ फेंकना—१ दांव चलाना। २. मारना। ३ जूए मे दांव की कौडी फेंकना।

हाथ फेरना—१ हडप लेना। उ० बहुतेरो के धन पर हाथ फेर कर वह धनी बना है। २ मन्त्र-तन्त्र से झाडना। उ० जरा मेरे बच्चे पर हाथ फेर दो।

हाथ फैलाना—दे० 'हाथ पसारना'।

हाथबंदी होना—थोडा भी मौका न होना। उ० आजकल बडी हाथबन्दी है, अवसर मिलने पर अवश्य आऊँगा।

हाथ बंध जाना—निर्धारित के अतिरिक्त कुछ न कर पाना।

हाथ बटाना—मदद देना। उ० पिता के कामों मे पुत्र को भी हाथ बँटाना चाहिये।

हाथ बटोरना—खर्च मे कमी करना। सोच-समझ कर खर्च करना।

हाथ बढाना—१ दखल देना। उ० आपका इस काम मे हाथ बढाना उचित नही है। २ लालच करना। उ० दूसरो की चीज पर हाथ नही बढाना चाहिये। ३. लेने के लिये हाथ लपकाना।

हाथ बांधना—१ विनती करना। उ० भिखारी उनके सामने हाथ बांधे खडा था, पर उन्होने उसकी एक भी न सुनी। २ मुजरिम के हाथ बांधना, हथकडी डालना।

हाथ बांधे खड़ा रहना—आज्ञा के लिए हर समय हाजिर रहना। उ० मेरा नौकर ऐसा आज्ञाकारी है कि जब देखो हाथ-बांधे खड़ा रहना है।

हाथ बैठना–१ काम का अभ्यास होना। उ० उसका हाथ बैठ गया है, अब वह इस काम को कर लेगा। २ तलवार चलाने मे हाथ जमना। ३ ठीक लिखना आ जाना। उ० लडके का हाथ बैठ गया है, अब ठीक से लिख लेगा।

हाथ बैठाना–मश्क करना। उ० छोटे बच्चो को पटरी पर हाथ बैठाना चाहिये।

हाथ भर का कलेजा हो जाना–साहस बढ जाना। उ० दो-तीन कुश्ती मारने से उसका हाथ भर का कलेजा हो गया है।

हाथ भरना–१ ज्यादा काम करने से हाथ थक जाना। उ० मेरा हाथ भर गया है, अब थोडा आराम करने दो। २ रुपया मिलना। मुट्ठी गर्म होना। ३ घूस देना। उ० उस क्लर्क का हाथ भरो तो काम अपने आप हो जायगा।

हाथ मँजना–दे० 'हाथ बैठना'।

हाथ मजबूत करना–स्थिति दृढ करना।

हाथ मरोड़ना–पछताना।

हाथ मल कर मरना–पछता कर रह जाना।

हाथ मलना–अफसोस करना। पछताना। उ० काम खराब हो जाने पर हाथ मलना बेकार है।

हाथ मारना या मार देना–हड़प लेना। उ० तुम भी उनकी किसी चीज पर हाथ मार दो।

हाथ मिलाना–१ दान देना। उ० हाथ मिलाने वालो का सदा कल्याण हो। २ किसी से अंग्रेजी शिष्टाचार से आगमन या विदाई के समय हाथ मिलाना। (To shake hand)।

हाथ मे क्या न होना–हाथ मे या अधिकार मे सब कुछ होना। उ० कर नही कौन काम हम सकते, क्या नही हाथ मे हमारे है?

हाथ मे खुजली होना–१ मारने की इच्छा होना २ कुछ मिलने का शकुन होना?

हाथ मे झंडा लेना–किसी काम को करने का निश्चय करना।

हाथ मे ठिकरा होना–भिक्षा माँगना। उ० जब हाथ मे ठिकरा है तो इज्जत की क्या परवाह?

हाथ मे दही जमना–हाथ का इतना वश होना कि हिलाया भी न जा सके।

हाथ में दिया होते कुआँ मे गिरना–वचन का साधन होते हुए भी अनिष्ट को प्राप्त होना।

हाथ मे मेहँदी लगना–चुपचाप बैठे रहना, कुछ न करना।

हाथ मे नकेल रखना–अपने वश मे रखना।

हाथ मे सोने का कटोरा होना–दे० 'हाथ मे ठिकरा होना'।

हाथ मे हाथ देना–१ किसी के साथ विवाह कर देना। उ० जब आपने उनके हाथ मे उसका हाथ दे दिया तो अब उसके सुख-दुःख के वे ही जिम्मेदार हैं। २ समर्पण करना। ३ प्रेम से हाथ मिलाना।

हाथ रँगना–१ घूस लेना। उ० हाथ रँगना महापाप है। २ हाथ पर खूब मारना। उ० हाथ पर इतना मारना कि लाल हो जाय।

हाथ रोकना–१ व्यय कम करना। उ० हाथ रोको नही तो बाद मे बडा कष्ट होगा। २ वार बचाना। उ० अगर हाथ न रोके होते तो तुम्हे काफी चोट आती।

हाथ रोपना–१. पीटे जाने के लिए हाथ फैलाना। २ कुछ माँगने के लिए हाथ फैलाना। उ० भगवान न करे कि सूमो के आगे हाथ फैलाना पडे।

हाथ लगना या लग जाना–मिलना। उ० इतना धन कहाँ से आपके हाथ लग गया?

हाथ लगाना–१ बैर का बदला लेना। उ० अभी तो बडा अच्छा लग रहा है, जब हाथ लगाऊँगा तो मालूम होगा। २. दे० 'हाथ चलाना। ३ हाथ से लेना। ४ छूना।

हाथ लपकाना–चोरी करना।

हाथ लाल कर देना या करना–हाथ पर बहुत मारना। उ० मास्टर ने मेरे लडके का हाथ लाल कर दिया।

हाथ लाल करना या कर लेना–बदनामी अपने ऊपर लेना। उ० तुम्हे बचाने के लिए उसने अपना हाथ लाल कर लिया।

हाथ समेटना–हाथ रोकना, कम खर्च करना, खर्च बन्द कर देना। उ० खर्चे से हाथ समेट लो, नही तो बाद मे पछताओगे।

हाथ साफ करना–१ कष्ट देना। उ० असहायो पर हाथ साफ करना महापाप है। २ चुराना या मार लेना। ३ वह तो उधर रहेगा, तब तक तुम हाथ साफ कर लेना। ४ हाथ से

कुछ करने की कला प्राप्त करना । उ० पहले हाथ साफ करो तो मेरे मित्रो की नकल करना ।

हाथ सिर पर रखना—१. प्रणाम करना । उ० बडो को देखते ही हाथ सिर पर रखना चाहिये । २ प्यार करना । पुचकारना । दुलारना । ३ मददगार बनना । रक्षक बनना । ४ किसी के सिर की कसम खाना । उ० अपने लडके के सिर पर हाथ रख कर मैं कह सकता हूँ, मुझे कुछ भी ज्ञात नही ।

हाथ से जाने देना—अधिकार से चला जाने देना । उ० इस जमीन को हाथ से जाने न दो, नही तो फिर नही मिलेगी ।

हाथ से देना—दे० 'हाथ से जाने देना' ।

हाथ से बात करना—मारना-पीटना । उ० तुम सीधी तरह मानोगे या हाथ से बात करनी पड़ेगी ।

हाथ से बेहाथ होना—अपना अधिकार खो देना ।

हाथ सैला होना—पास मे रुपये होना ।

हाथ हिलाते आना—१ असफल लौट आना । उ० वह बडी आशा लगा कर वहाँ गया था, पर हाथ हिलाते आया । २ बिना कुछ लिये आना । उ० अरे ! वह तो हाथ हिलाते आ रहा है ? मालूम होता है कि सामान नही मिला !

हाथापाई करना—दे० 'हाथावाही करना' ।

हाथापाई होना—लडाई झगडा होना । उ० बात ही बात मे उन दोनो मे हाथापाई हो गई ।

हाथावाहीं करना—हाथ से साधारण लडाई-झगडा करना । उ० वे दोनो बात ही बात मे हाथावाही करने लगे ।

हाथावाहीं होना—दे० 'हाथापाई होना' ।

हाथी के खाये कैथ होना—भीतर से खोखला, पर ऊपर से फूल कर गुप्पा होना ।

हाथी के दाँत बिठाना—असम्भव बात करना ।

हाथी के संग गांडे खाना—छोटे का वडे की बराबरी करने की मूर्खता करना । उ० हाथी के सग गाँडे खाने गये तो और क्या होगा ? मूर्खो का यही तो काम है ।

हाथी के साथ गन्ने चूसना—दे० 'हाथी के साथ गाँडे खाना' ।

हाथी झूमना—दरवाजे पर हाथी झूमना, हथियानशीन होना । बहुत धनी मानी होना । उ० उनका क्या है ? उनके दरवाजे पर तो हाथी झूमते हैं ।

हाथी झूलना—दे० 'हाथी झूमना' ।

हाथी पाँव पाना—कठिन सजा पाना ।

हाथी बांधना—१ बहुत व्यय की चीज रखना । उ० तुम्हारे जैसा दरिद्र क्या खाकर हाथी बाँधेगा ? २ धनी होना । उ० तुमने गरीबो का खून चूस-चूस कर हाथी बाँधा है ।

हाथो की फेरी होना—१ अनुचित सम्बन्ध होना । २ चालाकी से चीजो का इधर-उधर होना ।

हाथो के तोते उड जाना—१ बहुत घबरा जाना । उ० वह तो ऐसे चक्कर मे पडा कि उसके हाथो के तोते उड गए । २ अक्ल मारी जाना । उ० ठगो के बीच पड कर मेरे हाथो के तोते उड गए ।

हाथों बिक जाना—पूरी तरह वश मे होना ।

हाथो मे लेना—अपने अधिकार मे या अपने जिम्मे लेना । उ० इस काम को तुम अपने हाथो मे ले लो, शायद ठीक चले ।

हाथो लेना—१ बहुत प्यार करना या मानना । उ० उसके बच्चे को तो लोग हाथो लिए रहते हैं । २ हाथ से मारना ।

हाथो सौंप देना—सरक्षण मे रख देना ।

हाथों-हाथ—१ बहुत जल्दी । उ० यह काम हाथो-हाथ हो जायगा । २ चारो ओर से हाथ बढा कर ।

हाथो-हाथ लेना—१ प्रेम करना, बहुत आदर-सत्कार करना । उ० लडका बहुत होनहार और सुन्दर है, इससे उसे लोग हाथो-हाथ लिए रहते हैं । २ बहुत माँग होना या लिया जाना । उ० उस पुस्तक को लोग हाथो-हाथ ले रहे है ।

हामी भरना—१ 'हाँ मे हाँ मिलाना' । २ हाँ करना । उ० हामी भरा था कभी तुमने यही पर हो आज मुकरते कि था हामी भरा नही ।

हाय पडना—१ आह पडना । उ० गरीबो की हाय पड रही है, इसी से कष्ट भोग रहे हो । २ हाय-हाय मचना । उ० उनके मरने से वहाँ हाय पडी है, तुम्हारी कौन सुनेगा ?

हाय-हाय करना—१ काम मे काफी मेहनत करना। उ० ज्यादा हाय-हाय न करो, नही तो बीमार हो जाओगे। २ दुख प्रकट करना। उ० अब हाय-हाय न करो जो होना था, हो गया। ३ रोना। ४ बहुत चाहना। उ० तुम तो रुपये के लिये हाय-हाय किया करते हो।

हाय-हाय पडी रहना—अभाव का रोना रोना।

हाय-हाय मचाना—१ शिकायत करना। शिकायत के रूप मे शोर मचाना। उ० यहाँ हाय-हाय मचाने की कोई जरूरत नही है, मैं सब समझ रहा हूँ। २ अपने दुख को बुरी तरह या चिल्ला कर जोर-जोर से प्रकट करना।

हार-जीत करना—१ जुआ खेलना। उ० दीवाली छोड कर मैं भी कभी हार जीत नही करता। २ हारने-जीतने का फैसला देना। उ० हार-जीत करो, मैं घर जाऊँ।

हार बैठना—हार जाना। उ० केमार इश्क मे अब क्या लगाएँगे 'आजाद' कि नकद दिल को तो पहिले ही हार बैठे हैं। २ नाक मे दम आ जाना।

हार मानना—हार स्वीकार करना। उ० अभी मैं उनसे हार नही मान सकता।

हार मे रहना—घाटे मे रहना। उ० मैं ही हार मे रहा, तुम तो अपना रुपया पा गए।

हार खाना—हारना। उ० एक वार हार खाने से हिम्मत न हारो, कोशिश करो, शायद जीत जाओ।

हारिल की लकडी होना—सहारा होना।

हाल पतले होना—१ आर्थिक स्थिति खराव होना। २ स्वास्थ्य खराब होना।

हाल-बेहाल होना—१ अच्छी हालत से बुरी हो जाना। उ० समय के फेर से हाल-बेहाल होते देर नही लगती है। २ मरने के करीव होना। उ० उसका हाल-बेहाल है, चलो देख आवें।

हाल लगना—हिलना-डुलना। उ० वर्तन एक दम भरा हुआ है, हाल लगने से दूध गिरेगा।

हालत सगीन होना—जीवन को खतरा होना।

हासिल करना—प्राप्त करना। उ० उसने पार-साल एम० ए० की डिग्री हासिल की।

हासिल होना—मिलना। उ० तुम वहाँ वेकार जा रहे हो, तुम्हे कुछ भी हासिल न होगा।

हा-हा खाना—खुशामद करना। उ० बहुत हा-हा खाने के बाद उसने काम करने का वचन दिया।

हा-हा ही-ही करना—१ हँसी-मजाक करना। उ० हर समय हा-हा ही-ही करना असभ्यता है। २ बहुत हँसना। उ० उसका लडका बीमार है, जरा हा-हा ही-ही न करो।

हिंदी की चिंदी निकालना—१ किसी बात की पूरी खोज करना। २ किसी की दुर्दशा कर डालना। ३ किसी भाषा को बहुत क्लिष्ट करके बोलना। ४ किसी भाषा को बिगाड़ कर बोलना। उ० भाई हिंदी की चिंदी न निकालो, न बोलने आता हो तो बल्कि न बोलो।

हिंदू होना—१ सीधा होना। २. बुढापे मे दिमाग खराब हो जाने वाला होना। ३. भीरु होना। उ० हो तो हिंदू, क्या खाकर यह काम करोगे ?

हिकमत करना—१ यूनानी दवा करना। उ० पढने के साथ-साथ कुछ हिकमत भी करता हूँ। २ उपाय लगाना। उ० कुछ हिकमत करो कि मुझे भी नौकरी मिल जाय।

हिचकी बँध जाना—रोते-रोते साँस अटकने लगना। उ० मास्टर ने लडके को इतना मारा कि उसकी हिचकी बँध गई।

हिचर-पिचर करना—१ आना कानी करना। उ० अगर न देना हो तो साफ इन्कार कर दो, हिचर-पिचर क्यो करते हो ? २ ठीक से काम न करना। उ० ठीक से काम करना, हिचर-पिचर न करना।

हिजो करना—दोष निकालना। उ० हर एक काम मे हिजो करना ठीक नही।

हिजो निकालना—दे० 'हिजो करना'।

हिफ्ज करना—याद करना। उ० आज १० तक का पहाडा हिफ्ज कर लो।

हिम्मत का जवाब देना—कार्य की कठिनता के कारण साहस जाता रहना।

हिम्मत हारना—१ साहस छोडना। उ० हिम्मत न हारो, फिर कोशिश करो, शायद सफल हो जाओ। २ डर जाना।

हियाव करना—हिम्मत करना, दिल कडा करना। उ० हियाव करके फोडे का आपरेशन करा लो।

हिय मे धरना—मन मे विचार लाना ।

हिया सिराना—हृदय को सतोष मिलना ।

हियाव खुलना—डर दूर होना । हिम्मत पडना । उ० हियाव खुलता तो मैं भी चला जाता ।

हिये की आँख खुलना—ज्ञान होना ।

हिरन हो जाना—काफूर हो जाना, भाग जाना ।

हिलके पानी न पीना—वहुत आलसी होना । उ० तुम जव जवानी मे हिलके पानी नही पीते हो तो बुढापे मे क्या करोगे ?

हिल-मिल कर रहना—मेल-जोल मे रहना । उ० परिवार के सभी आदमियो को हिल-मिल कर रहना चाहिये ।

हिल-मिल जाना—मेल होना । मिल जाना । उ० लडका वहाँ हिल-मिल गया था, इसी से आते वक्त उसकी आँखे भर आई ।

हिसाव देना—खर्च-वर्च का व्यौरा देना । उ० जिसे तुम रुपया देना, कह देना कि हिसाव देने के लिये सव ठीक से लिखे रहे ।

हिसाव वैठना—१ सुभीता होना । उ० अगर हिसाव वैठे तो चलिये आज ही ट्रक से लाया जाय । २ तय हो जाना । ३ हिसाव-किताव का ठीक होना ।

हिसाव साफ करना—१ हिसाव के मुताविक सव रुपया दे देना । उ० पहले उसकी दूकान का हिसाव साफ कर दो, तो फिर और लोगो का देना । २. ठीक से पूरा हिसाव कर देना । उ० आज किसी तरह हिसाव साफ करो ।

हिसाव होना—वर्खास्त होना । उ० उसका ता वहाँ हिसाव हो गया, कोई और नौकरी खोज दो ।

हींग हगना—पेचिश होना । उ० आज हफ्तो से वह हीग हग रहा है, उसे कुछ दवा लेते आना ।

हीरा खाना—ज़हर खाकर जान देना । उ० हीरा खाना सबसे वडा पाप है ।

हीरे का टुकडा—१ वहुत चरित्रवान व गुणी व्यक्ति । २ वहुत मूल्यवान और महत्त्वपूण ।

हीरे का रोजगार करने के वाद कांच देखना—महत्त्वपूर्ण के वाद व्यर्थ के चीज मे पडना ।

हीरे की कनी चाटना—दे० 'हीरा खाना' ।

हीला-हवाला करना—वहाना करना । टाल-मटोल करना । उ० भाई एक चीज़ मांगता हूँ, मगर हीला-हवाला न करना ।

ही-ही ठी-ठी करना—१. हँसी-मजाक करना । २. निर्लज्जतापूर्वक हँसना । ३ तुच्छतापूर्वक हँसना ।

हुँकारी भरना—सही भरना, हाँ करना । उ० तुम तो हुँकारी भर कर भी 'ना' कर देते हो । तुम्हारा क्या विश्वास ?

हुडी पटना—हुडी का रुपया मिलना । उ० अगर आप थोडी मेहनत कर देगे तो हुडी पट जायगी ।

हुकूमत करना—राज्य करना । उ० भारतवर्ष मे कभी मुगल भी हुकूमत करते थे ।

हुकूमत चलाना—राज्य का काम करना । राज्य करना । उ० हुकूमत चलाने के लिए वडे होशियार आदमी की जरूरत है ।

हुकूमत जताना—रोव दिखाना । उ० हुकूमत जताओगे ता ठीक न होगा ।

हुक्का-पानी न रखना—जाति से वाहर कर देना । वास्ता न रखना । उ० उस नीच से हुक्का-पानी न रक्खो ।

हुक्का-पानी पिलाना—आदर-सत्कार करना । उ० कोई भी चला जाय, वह हुक्का-पानी जरूर पिलाता है ।

हुक्का-पानी वन्द करना—जाति से निकाल देना । उ० रखनी रख लेने के कारण उसका हुक्का-पानी वद कर दिया गया है ।

हुक्म उठाना—आज्ञा पालन करना । आज्ञानुसार काम करना । उ० यहाँ मैं तुम्हारा हुक्म उठाने के लिए नही आया हूँ ।

हुक्म वजाना—दे० 'हुक्म उठाना' ।

हुज्जत करना—१ तर्क करना । वहस करना । उ० क्यो हुज्जत कर रहे हो, अगर काम न करना हो तो घर चल जाओ । २ हठ करना ।

हुरमत उतारना—दे० 'आवरू उतारना' ।

हुरमत करना—इज्ज़त करना । आदर-सत्कार करना । उ० अपने दरवाज़े सवकी हुरमत करनी चाहिये ।

हुरमत लेना—वेइज्ज़त करना । इज्जत लेना । उ० भरी सभा मे किसी की हुरमत लेना ठीक नही है ।

हुर्रे उड़ाना–बदनाम करना ।

हुर्रे बोलना–हर्षध्वनि करना ।

हुल-हपाडा करना–शोरगुल करना । उ० यहाँ हुल-हपाडा न करो ।

हुलिया तबाह करना–दे० 'हुलिया बिगाडना' ।

हुलिया बिगड़ जाना–१ भय या परेशानी आदि से आकृति का बदल जाना । उ० शेर को देखने ही उसकी हुलिया बिगड गई । २ डर जाना । ३ तगदस्ती होना ।

हुलिया बिगाड़ना या बिगाड देना–१ दुर्दशा करना । उ० उसने तो आज पैदल चला कर मेरी हुलिया बिगाड दी । २ रूप बिगाडना । उ० होली के दिन ऐसी हुलिया बिगाडूँगा कि याद करोगे ।

हुलिया लिखाना–किसी का पता लगाने के लिये रूप, रग और निशान आदि पुलिस मे लिखाना । उ० नही मिल रहा है तो थाने मे उसकी हुलिया लिखा दो ।

हुल्ला-हपाड़ा करना–दे० 'घुमगज्जर मचाना' ।

'हूँ' करना–१ स्वीकार करना । उ० बहुत सोच-समझ कर वे 'हूँ' करते हैं । २. अस्पष्ट स्वीकृति देना । ३ आश्चर्य प्रकट करना । ४ डाँटना या रोकना ।

हूँ न रह जाना–अहंकार दूर होना ।

हूँ से तूँ करना–१ इन्कार करना । २ नाराज़ होना । ३ मरज़ी के खिलाफ जाना ।

हूँ-हाँ करना–१ दे० 'हीला-हवाला करना' । २ वे मन से हुँकारी भरना ।

हूक-हूक कर रोना–फूट-फूट कर रोना । उ० लडके के मरते ही बुढिया हूक-हूक कर रोने लगी ।

हूर की बच्ची–बहुत सदर लडकी ।

हूक लगना–१ चिना [illegible] । २ [illegible] प्राण कठ तक आना ।

हूल देना–आगे बढाना, ठेलना । उ० लोगो को हूल देकर बैठने की जगह करो, वे आ रहे है ।

हृदय उछलना–मन मे खुशी होना । उ० पुत्र को देखने ही माता का हृदय उछलने लगता है ।

हृदय उमड आना–भावातिरेक होना ।

हृदय का अंतर–दे० 'हृदय की गाँठ' ।

हृदय का काँटा निकलना–आशका या दुर्भाव दूर होना ।

हृदय काँपना–१. डरना । २ ठड से कपन होना ।

हृदय का टुकडा–बहुत प्यारा । उ० अपना लड़का किसके हृदय का टुकड़ा नही होता ।

हृदय का चोट खाना–हृदय को पीडा होनी ।

हृदय का शूल होना–१ दु खदायी होना । २ दुश्मन होना ।

हृदय की गाँठ–मनमोटाव । उ० मेरी उनकी हृदय की गाँठ जल्दी दूर नही हो सकती ।

हृदय की कली खिल जाना–प्रसन्नता होना ।

हृदय की गाँठ खोलना–दे० 'मन की गाँठ खोलना' ।

हृदय फटना–१ बहुत कष्ट होना । उ० उसके मरने का समाचार सुन कर मेरा हृदय फट रहा है । २ दिल टूटना, मन फिरना । उचाट होना । उ० उनसे तो मेरा हृदय फट गया ।

हृदय मे गुदगुदी उठना–मन मे बहुत खुशी होना । उ० जिस समय मेरी उसकी भेंट होती है, हृदय मे गुदगुदी उठने लगती है ।

हृदय मे चुभना–हृदय को कष्ट पहुँचना ।

हृदय मे छुरी छिपाना–बुरे विचार मन मे रखना । उ० घनिष्ठ मित्रो के लिए हृदय मे छुरी छिपाना महापाप है ।

हृदय मे फफोले पडना–बहुत पीडा होना ।

हृदय मे हलचल होना–मन मे नाना प्रकार के भावो का उठना ।

हृदय से बोझ हटना–दुश्चिन्ता दूर होना ।

हृदय से लगाना–१ छाती से लगाना । कलेजे से लगाना । उ० उसने आते ही सबको हृदय मे लगा कर भेंट की । २ प्यार करना ।

हृदय हलका होना–दु ख या चिंता का भार कम होना ।

हेकडी करना–ऐंठ दिखाना । उ० चोरी करके हेकडी करते हो, शर्म नही आती ?

हेकडी किरकिरी होना–शान का न रहना । उ० उनकी वजह से तुम्हारी हेकडी किरकिरी हो गई ।

हेकडी दिखाना–१ डाँट बताना । उ० तुम हर समय हेकडी दिखाते हो, मैं भी मौका

पडने पर समझ लूंगा। २ रोब या ऐंठ दिखाना।

हेकड़ी भूल जाना—गर्व चूर-चूर हो जाना। डाँट-डपट भूल जाना। उ० इतनी मार मारूँगा कि हेकड़ी भूल जायगी।

हेटी होना—बेइज्जत होना, इज्जत बिगडना। उ० तेरे हेटी हुई ऐ गुबदे गरदाँ क्या-क्या, उठ गए ख्वाने करम से तेरे मेहमाँ क्या-क्या ?

हेरे-फेरे कराना—बार-बार इधर-उधर दौडाना।

हैदड़ा खोना—बुरा दर्जा करना, गिरना। उ० उसने तो अपना हैदडा अपने हाथो खो रखा है।

हैरान करना—दे० 'तग करना'।

हैसियत रखना—१ मिलकियत रखना। उ० वे भी आपसे कम हैसियत नही रखते। २ शक्ति रखना। उ० तुम-जैसे पाँच को लडाने की हैसियत रखता हूँ।

होठ काटना—दे० 'होठ चबाना'।

होठ चबाना—१. दे० 'हाथ मलना'। २ क्रोधित होना। उ० होठ चबा कर तेवर मत बदलो, मैंने उसे नही बुलाया है।

होठ चाटना—१ और खाने की लालच करना। उ० क्या होठ चाटते हो, अब कुछ नही है। २. शर्मा जाना, झेंप जाना। उ० मैंने ऐसी डाँट बताई कि होठ चाटने लगे।

होठ हिलाना—कुछ बात करना। उ० तुक होठ हिलाऊँ तो यह कहता है न बक बे, और पास जो बैठूं तो सुनाता है सरक बे।

होठों का हिलना—धीरे-धीरे बातचीत होना। उ० क्या तबा मे जूदत है चट दिल की उडा जाना, होठो का यहाँ हिलना, वहाँ बात का पा जाना।

होंठो पर जबान फेरना—प्यास से परीशान होना।

होठो मे कहना—चुपके से कहना। उ० कुछ गर से होठो मे कहे हैं, पै जो पूछो, तो वह वही मुकरता है कि मैं कुछ नही कहता।

होठो मे मुस्कराना—ऐसे हँसना कि दाँत न दिखाई दें। उ० मगर हँसी तेरी गुलशन मे याद आती है, कली-कली जो अब होठो मे मुस्कराती है।

हो आना—किसी से मिल कर लौट आना। उ० आप उनके पास से हो आइये, मैं यही हूँ।

हो पडना—१ लडाई-झगडा होना। उ० बात ही बात मे उन दोनो मे हो पडी। २ घटित होना। उ० जो होना था, हो पडा।

हो रहना—१ पीछे-पीछे चलना। उ० हाथ-पैर रहते हुए आप क्यो किसी के हो रहे हैं ? २ वश मे हो जाना। उ० आजकल आप उस स्त्री के हो रहे हैं।

होका देना—पुकार मचाना, दुहाई देना। उ० इश्क ने जिस दम दयारे दिल मे आ होका दिया, नालए सोज़ाँ ने सीने मे मेरे रोका दिया।

होनहार पेड के पत्ते शुरू से हरे होना—प्रारम्भ से ही भावी श्रेष्ठता का आभास मिलना।

होड़ बाँधना—बाज़ी लगाना। उ० उतने बडे आदमी से किसी बात मे होड बाँधना तुम्हें शोभा नही देता।

होम करते हाथ जलना—अच्छा कार्य करते बुरा फल मिलना।

होली करना—नष्ट करना, जलाना।

होश उडना या उड़ जाना—१. आश्चर्य होना। उ० उसकी बात सुन कर मेरा होश उड गया। २ डर जाना। उ० शेर को देख कर मेरे होश उड गये।

होश काफिर हो जाना—दे० 'होश उड जाना'।

होश की दवा करना—सोच-समझ कर कहना। होश मे रहना। उ० होश की दवा करो, नही तो व्यर्थ मे झगडा हो जायगा।

होश ठिकाने होना—घमड चूर होना। उ० एक ही थप्पड मे उसका होश ठिकाने हो गया।

होश दग रह जाना—दे० 'होश दग होना'।

होश दग होना—आश्चर्य मे होना। उ० पाँच वर्ष के लडके की ऐसी बाते सुन कर सबके होश दग हो गये।

होश फाख्ता हो जाना—दे० 'होश उड जाना'।

होश बिगड जाना—दे० 'होश उड जाना'।

हो-हल्ला मचाना—१ हल्ला मचाना। २ चिल्लाना। ३ ऊधम करना। ४ जल्दी

मचाना। उ० हो-हल्ला न मचाओ, नही तो काम खराब हो जायगा।

हो-हा करना—१ शोर करना। उ० क्या बैठे-बैठे हो-हा किया करते हो? २ विरोध करते हुए शोर करना।

हौआ होना—भयानक या डरावना होना।

हौल आना—खौफ मालूम देना, डर लगना। उ० मैं इश्क का यह न समझी थी डौल, तेरे गम से आने लगा मुझको हौल।

हौल-दिल होना—घबराहट होना। उ० हौल-दिल न हो, सब ठीक हो जायगा।

हौल बैठ जाना—भय समा जाना। उ० लडके के दिल मे हौल बैठ गई है, इसी से स्कूल नही जाता।

हौल-हौली करना—घबरा देना। उ० हौल-हौली करोगे तो काम खराब हो जायगा।

हौस बुझाना—कामना पूरी करना। उ० उसने भी अपनी हौस बुझा ली।

हौसला अफजाई करना—दे० 'हौसला बढाना'।

हौसला छलकना—मन मे इच्छा होना।

हौसला निकालना—इच्छा पूरी करना। उ० आज हौसला निकाल लो, फिर शायद मौका न मिले।

हौसला पस्त होना—उत्साह न रह जाना। उ० अब मेरा हौसला पस्त हो गया है, मुझसे कुछ नही हो सकता।

हौसला बढाना—साहस बढाना, उत्साह बढाना। उ० अगर इसी तरह लडके का हौसला बढाते रहोगे तो वह अवश्य तरक्की करेगा।

हौसला होना—जोश और इच्छा होना। उ० इस समय हौसला है, काम कर देगा।

हौरा-झौरा—झगडा-झझट। उ० हौरा-झौरा मुझे पसद नही।
